बृहत्संहिताकी भूमिका ॥

विदितहो कि आर्यजनों को सब पुरुषार्थ वेदोक्त कर्म करने से प्राप्त होते हैं इसलिये सबमें वेद मुख्य है। वह वेद अंगी है औ शिक्षा कल्प व्याकरण निरुक्त ज्योतिष औ छन्द ये छः उसके अंग हैं। इन अंगोंमें ज्योतिष को वेदके नेत्र ठहरायाहै इसलिये ज्योतिष शास्त्र सब अंगों में प्रधान है। वह ज्योतिश्शास्त्र तीनभागों में विभक्त है। सिद्धान्त संहिता होरा ये तीनभाग हैं। ज्योतिष के इन तीनअंगों में संहिताकोही मुख्य समझना चाहिये। क्योंकि लोकव्यवहारके उपयुक्त पदार्थ संहिता भागमें जितनेहैं उतने और दो भागों में नहीं हैं। गर्ग आदि मुनीश्वरों ने संहिता भागके अनेक ग्रन्थ रचेहैं परन्तु वे ग्रन्थ बहुत बड़ेहैं और एकही ग्रंथके पढ़नेसे सब संहिताके विषयोंका बोधभी नहींहोता। इसलिये परमकारुणिक श्री वराह मिहिराचार्यने उन सब आर्षग्रन्थोंका सारभूत यह ग्रन्थ (बृहत्संहिता) रचा कि इसएकही ग्रन्थके पढ़नेसे लोक व्यवहारोपयोगी सब पदार्थ विदित होजायँ। औ मनुष्य मुनियों के तुल्य त्रिकालज्ञ होजाय परन्तु बड़े २ अनेक प्राचीन ग्रन्थोंका पूरा २ विषय लिखा औ ग्रन्थ विस्तार कियानहीं इसकारण यह ग्रन्थ कठिन होगया।। साधारण पंडित अथवा ज्योतिषी इसके तात्पर्य को नहीं समझ सक्तेहैं। इसलिये विज्ञाति विज्ञ भारत वर्षके परम हितैषी अति दक्षआर्य भाषा औ आर्यजनोंकी उन्नतिके लिये बद्धकक्ष अवध समाचार पत्र संपादकदूसरवंशावतंस श्रीयुत मुन्शी नवलकिशोर (सी,आई,ई) साहबने इसग्रन्थका आर्यभाषामें अनुवादकरनेकेलिये हमको सत्कार पूर्वक नियुक्त किया। हमनेभी कलकत्ता एसियाटिक सो साइटीका छपाहमारा बृहत्संहिता का मूल पुस्तक कश्मीरका लिखा उत्पलभट्ट विरचित टीका सहित हमाराही औ .रा पुस्तक औ श्रीमाली ब्राह्मण बालजी ज्योतिषीका जयपुस्त

क का लिखा सटीक पुस्तक इन तीन पुस्तकों का अवलम्ब लेकर बहुत सावधानहो उत्पल भट्ट कृत व्याख्यानके अनुसार इसग्रन्थ का भाषामें अनुवाद किया । मूलभी बहुत शुद्धतापूर्वक इस अनुवादके साथ रक्खाहै । अर्थात् ऊपर मूल श्लोक लिखकर नीचे भाषामें उसका अर्थ लिखाहै । औ हमारे परममित्र पण्डितवर श्री सरयूप्रसाद जीने इसको सम्यक् शोधन कियाहै ॥

अब सज्जन पाठकगणसे हमारी यह सविनय प्रार्थनाहै कि इस अनुवादके किसी तुच्छदोषकी ओर दृष्टि न करके केवल गुणही ग्रहण करेंगे औ इस एकही अनुपम ग्रन्थको पढ़कर सब संहितापदार्थोंको जान हमारे परिश्रमको सफल करेंगे औ ईश्वरके अनुग्रह से सब कार्योंकी सिद्धि औ वृद्धि पावेंगे ॥

जयपुरराजधानी
कार्तिककृष्ण३० भौमे
संवत् १९४० ॥

(श्रीपण्डितदुर्गाप्रसाद)

बृहत्संहिता की अनुक्रमणिका ॥

बृहत्संहिता का सूचीपत्र समाप्त हुआ ॥

बृहत्संहिता का भाषाअनुवाद ॥

पहिलाअध्याय ॥

शास्त्रोपनयन ॥

दोहा ॥ विबुध मुकुटमणिदीपिका नीराजित दिनरैन ॥
विघ्नहरैं हेरम्बके चरण कमल सुखदैन १
भजोनित्य गौरीगिरिश सकल सिद्धि के हेतु ॥
भक्त मनोरथ कल्पतरु भवसागर के सेतु २

श्री वराहमिहिराचार्य गणितस्कन्ध औ होरास्कन्धको संक्षिप्त करके ज्योतिश्शास्त्र के तीसरे स्कन्ध संहिताको संक्षिप्त करनेकी इच्छासे संहितास्कन्धकी निर्विघ्न समाप्ति होनेके लिये सूर्य भगवान को प्रणाम करतेहैं ॥

जयतिजगतःप्रसूतिर्विश्वात्मासहजभूषणंनभसः ॥
द्रुतकनकसदृशदशशतमयूखमालार्चितःसविता १ ॥

जगत् के प्रसूति अर्थात् उत्पत्तिस्थान जिनसे जगत् उत्पन्नहोताहै विश्वात्मा अर्थात् स्थावर जंगमरूप जगत् के प्राण आकाशके अकृत्रिम भूषण और गलायेहुये सुवर्णके समान अति दे दीप्यमान हज़ारकिरणोंकी जो माला उस करके व्याप्त ऐसे श्रीसूर्यनारायण सर्वोत्कर्ष करके वर्तमानहैं इस प्रकार इष्ट देवता के संकीर्तनसे धर्मकी प्राप्ति औ अधर्म निवृत्तिहोती है अधर्म निवृत्तिसे विघ्नध्वंस औ विघ्नध्वंस होनेसे शास्त्रकी समाप्तिहोती है इसकारण श्रीवराह मिहिराचार्य नें शास्त्रके आरम्भमें इष्टदेवता स्मरणरूप मंगलाचरणकिया १ ॥

प्रथममुनिकथितमवितथमवलोक्यग्रन्थविस्तरस्यार्थम् ॥
नातिलघुविपुलरचनाभिरुद्यतःस्पष्टमभिधातुम् २ ॥

प्रथम मुनि जो ब्रह्माजी उनके किये सत्यरूप विस्तीर्ण शास्त्रके अर्थको विचारकर न बहुत छोटी औ न बड़ी रचनाकरके स्पष्टकहनेके लिये मैं वराह मिहिराचार्य प्रवृत्तहुआ हूं अर्थात् ब्रह्माजी के बनाये अति विस्तीर्ण शास्त्र का तात्पर्य मध्यम रचना करके हम कहते हैं २ ॥

मुनिविरचितमिदमितियच्चिरन्तनंसाधुनमनुजग्रथितम् ॥
तुल्येऽर्थेक्षरभेदादमन्त्रकेकाविशेषोक्तिः ३ ॥

जो कोई कहै कि ब्रह्माआदि मुनियों के बनाये प्राचीन शास्त्र उत्तम हैं मनुष्यों के रचे उत्तम नहीं उनसे यह पूँछना चाहिये कि अक्षरमात्रका भेद होय औ अर्थ उसका वही होय तो मन्त्र बिना क्या विशेष कथन है अर्थात् वेदके मन्त्रों में तो अक्षरोंकी आनुपूर्वी वही रहै तब फल होताहै जो उन अक्षरों को पलटदेवै चाहै अर्थ उसका वहीरहै तौ भी वेदमंत्र फलदायक नहीं होते परन्तु जिन शास्त्रों के अर्थ से तात्पर्य हैं उनके अक्षर पलटने से कुछहानि नहीं अर्थ न बिगड़नाचाहिये इसमें एक दृष्टान्त देतेहैं ३ ॥

क्षितितनयवासरोनशुभकृदितिपितामहप्रोक्तः ॥
कुजदिनमनिष्टमितिवाकोत्रविशेषोनृदिव्यकृते ४ ॥

ब्रह्मप्रोक्त शास्त्र में (क्षितितनयवासरोनशुभकृत्) यह वाक्यहै और हमारे शास्त्र में (कुजदिनमनिष्टम्) यह वाक्यहै दोनों वाक्योंका अर्थ एकही है कि मंगलवार अशुभ है इसमें आपही विचारलेवैं कि देवकृत और मनुष्यकृत में क्या भेदहै इससे यह प्रकटहोता है कि ऋषिकृत शास्त्रोंमें विस्तार औ मनुष्य कृत शास्त्रों में संक्षेपहै अर्थ तो दोनों में समानही है ४ ॥

आब्रह्मादिविनिःसृतमालोक्यग्रन्थविस्तरंक्रमशः ॥
क्रियमाणकमेवैतत्समासतोतोममोत्साहः ५ ॥

ब्रह्माआदि मुनियोंके रचे विस्तीर्ण शास्त्रोंको देखकर कर्मसे औ संक्षेप से यह शास्त्र कियाजाताहै इसलिये मेरा उत्साहहै अब जगत् की उत्पत्ति कहते हैं ५ ॥

आसीत्तमःकिलेदन्तत्रापांतैजसेऽभवद्धैमे ॥
स्वर्भूशकलेब्रह्माविश्वकृदण्डेर्कशशिनयनः ६ ॥

यह जगत् अन्धकाररूपथा उस अन्धकारमें सुवर्ण के तैजस अण्ड के बीच विश्वको सिरजनेहारे औ सूर्य चन्द्र जिनके दोनोंनेत्र ऐसे ब्रह्माजी उत्पन्नहुये जिस अण्डके दोनों टुकड़े एक स्वर्ग और दूसरा भूमिबने ६ ॥

कपिलःप्रधानमाहद्रव्यादीन्कणभुगस्यविश्वस्य ॥

कालंकारणमेकेस्वभावमपरेजगुःकर्म्म ७ ॥

सांख्यशास्त्र के आचार्य कपिलजी इसजगत् का कारण प्रधान अर्थात् प्रकृति को कहते हैं कणादमुनि द्रव्यादि पदार्थों को जगत् का कारण बताते हैं कोई पौराणिक कालको जगत्काकारण मानतेहैं लोकायतिक स्वभावको जगत्का कारण समझते हैं औ मीमांसक कर्म कोही कारण जानते हैं ७ ॥

तदलमतिविस्तरेणप्रसङ्गवादार्थनिर्णयोतिमहान् ॥
ज्योतिःशास्त्राङ्गानांवक्तव्योनिर्णयोत्रमया ८ ॥

इसप्रकार जगत्की उत्पत्ति में अनेक प्रकारके विकल्प हैं इस अतिविस्तार से हमविराम करते हैं क्यों कि यह प्रसंगागत वादका अर्थनिर्णय अतिमहान् है अर्थात् जगत्के कारण का निश्चय विचार करनेलगें वही तो एक शास्त्र बनजावे इसलिये इसका विचार हमनहीं करते हमको तो केवल ज्योतिःशास्त्र के अंगोंका निर्णय यहां कहना है ज्योतिपनाम ग्रह औ नक्षत्रोंका है उनका जिसशास्त्र में विचार कियाजाय वह ज्योतिःशास्त्र कहाता है उसके अंग गणित होरा और संहिता हैं अब तीनोंका लक्षण कहते हैं ८ ॥

ज्योतिश्शास्त्रमनेकभेदविषयं स्कन्धत्रयाधिष्ठितंतत्कात्स्न्योपनयस्यनाममुनिभिःसंकीर्त्यतेसंहिता॥ स्कन्धोऽस्मिन्गणितेनयाग्रहगतिस्तन्त्राभिधानस्त्वसौहोरान्योऽङ्ग विनिश्चयश्चकथितःस्कन्धस्तृतीयोपरः ९ ॥

तीनस्कंधों करकेयुक्त ज्योतिश्शास्त्र अनेक प्रकार के भेदोंका विषय है अर्थात् गोचरहै अथवा उसके विषय अनेकभेदकेहैं उस ज्योतिश्शास्त्र का निरवशेष करके अर्थात् संपूर्ण प्रकारसे जिसमें कथन कियाजाय उसका नाम गर्ग आदि मुनीश्वरों ने संहिता कहा है इस ज्योतिश्शास्त्रमें गणितकरके जहांगति अर्थात् ग्रहोंका प्रत्येक राशिमें गमनसिद्धकिया जाय वहस्कन्ध तन्त्रकहाता है औ उसीको गणितस्कंधभी कहते हैं यह ज्योतिश्शास्त्रका प्रथमस्कंध है जिसमें जन्मयात्रा प्रश्नविवाहआदि का शुभा शुभ फललग्नग्रहों से निश्चयकियाजाय उसअङ्गका जो विशेषकरके निश्चय वह होरास्कंध कहाताहै यह ज्योतिश्शास्त्र का दूसरा स्कंधहै और अबजिसकाकथन करनेलगे हैं वहसंहिता स्कन्धहै यह ज्योतिश्शास्त्र का तीसरास्कन्ध है ९ ॥

वक्रानुवक्रास्तमनोदयाद्यास्ताराग्रहाणांकरणेमयोक्ताः ॥
होरागतंविस्तरतश्चजन्मयात्राविवाहैःसहपूर्वमुक्तम् १० ॥

ताराग्रह जो भौमादि पांचग्रहहैं उनके वक्रमार्ग अस्त उदयआदि मैंने पंचसिद्धान्तिका नामकरण ग्रन्थमें कहे औ होराशास्त्र के बीच यात्रा औ विवाह के

सहित विस्तरसे पहिलेही जन्मका कथ न किया अर्थात् बृहज्जातक बृहद्योग यात्रा औ बृहद्विवाहपटल नामक होरास्कन्धके ग्रन्थपहिले बनाये हैं अब संहिता मात्र कहना अवशिष्ट है १० ॥

प्रश्नप्रतिप्रश्नकथाप्रसंगान्स्वल्पोपयोगान्ग्रहसम्भवांश्च ॥
सन्त्यज्यफल्गूनिचसारभूतंभूतार्थमर्थैःसकलैःप्रवक्ष्ये ११ ॥

इति वराहमिहिरकृतौबृहत्संहितायां शास्त्रोपनयनाध्यायः प्रथमःसमाप्तः १ ॥

गर्गआदि मुनियों के प्रति शास्त्रारम्भमें उनके शिष्यों के किये अतिविस्तृत प्रश्न गर्ग आदि मुनियों करके शिष्योंके प्रतिकहेहुये प्रतिप्रश्न अनेक प्रकार के कथा प्रसंग सूर्य आदि ग्रहोंकी उत्पत्ति इत्यादि असार और गोलविरुद्ध बातें प्राचीन संहिताओं में भरी हैं और उनका उपयोगभी बहुतस्वल्प है इस-लिये उनसब निस्सार पदार्थों को छोड़कर सारभूत औ भूतार्थ अर्थात् दृष्ट प्रत्यय पदार्थोंको इसग्रन्थ में समग्र अर्थों करके अर्थात् जिनअर्थों में और की आकांक्षा न रहै उनकरके कहताहूं ११ ॥

वराहमिहिराचार्य की बनाई बृहत्संहितामें शास्त्रोपनयननाम
पहिला अध्यायसमाप्त हुआ ॥ १ ॥

अथातःसांवत्सरसूत्रंव्याख्यास्यामः ॥
तत्रसांवत्सरोऽभिजातःप्रियदर्शनोविनीतवेषःसत्यवागनसूयकःसमःसुसंहतोपचितगात्रसन्धिरविकलश्चारुकरचरणनखनयनचिबुकदशनश्रवणललाटभ्रूतमांगोवपुष्मान्गम्भीरोदात्तघोषःप्रायःशरीरानुवर्तिनोहिगुणाश्चदोषाश्चभवन्ति १ ॥

अब शास्त्रोपनयन के अनन्तर सांवत्सर सूत्रकहते हैं संवत्सरके शुभाशुभ जाने उसको सांवत्सर कहतेहैं औ जिनकरके अर्थ सूचनकिया जाय वे सूत्रक-हाते हैं ॥

पहिले सांवत्सर अर्थात् ज्योतिषी के लक्षण कहते हैं ॥

ज्योतिःशास्त्रमें ज्योतिषी ऐसा होनाचाहिये कि कुलीन जिसके देखनेसे चित्त प्रसन्नहो उद्भटवेष न रखताहो सत्यवादीहो दूसरेकेगुणों में दोष न लगा-ताहो रागद्वेषरहितहो जिसके हाथपांव आदि अंगों के जोड़ सुश्लिष्ट औ पुष्टहों जो अंगहीन न हो जिसके हाथ पांव नख नेत्र ठोड़ी दांत कान ललाट भ्रू औ शिर सुन्दर अर्थात् उत्तमलक्षणों करके युक्तहोय सुंदर जिसका शरीरहोय जिसका शब्द गंभीर औ उद्भटहोय अर्थात् मेघ औ मृदंगके समान जिसकी

ध्वनिहोय बहुत करके शरीर के अनुसार गुण औ दोषहुआ करते हैं १ ॥

तत्रगुणाः ॥

शुचिर्दक्षःप्रगल्भोवाग्मीप्रतिभानवान् देशकालवित्सात्विको नपर्षद्भीरुःसहाध्यायिभिरनभिभवनीयः कुशलोऽव्यसनीशान्तिकपौष्टिकाभिचारस्नानविद्याज्ञोविबुधार्चनव्रतोपवासनिरतः स्वतन्त्राश्चर्योत्पादितप्रभावः पृष्टाभिधायीअन्यत्रदेवात्ययात् ग्रहगणितसंहिता होराग्रन्थार्थवेत्तेति २ ॥

उस सांवत्सर में अथवा शरीर में जो गुण चाहिये वे कहते हैं॥

शुचि अर्थात् शास्त्र में कहेहुये शौचका अनुष्ठानकरनेवाला और पर धन देवधन आदि में अलुब्ध चतुर सभा में बोलनेको समर्थ शास्त्र के अनुसार बोलनेवाला प्रतिभानवान् अर्थात् पूछनेपर शास्त्रपूर्व कापर विचारकर उत्तर देनेवाला देश औ कालको जाननेवाला निर्मलचित्त सभामें निर्भय सहाध्यायियोंकरके अनभिभवनीय अर्थात् साथ पढ़नेवाले विद्यार्थी जिसको वाद में न जीतसकें शिक्षित गीतनृत्य द्यूत आदिव्यसनों में असक्त शांतिक पौष्टिक अभिचार औ पुष्पस्नान आदि विद्या जाननेवाला देवता पूजन चांद्रायण आदिव्रत औ एकादशी आदि उपवास में तत्पर अपनेरचे जो आश्चर्यको उत्पन्नकरनेवाले स्वयंवह आदि अनेक यंत्र अथवा स्वतंत्र जो ग्रह गणित उसमें आश्चर्यको उत्पन्न करनेवाला जो ग्रहयुद्ध शृङ्गोन्नति ग्रहण आदिका पहिलेही कहना उसकरके उत्पन्न कियाहै अपना उत्कर्षलोक में जिसने पूछनेसे कहने वाला देवात्ययके बिना अनेकप्रकार के उत्पातों से जो अशुभ हो उसको देवात्यय कहते हैं उसके निवारणकेलिये पूछनेबिना भी शांति आदिक कहै ग्रहगणित पंचसिद्धांतिकाआदि संहिता वृहत्संहिता आदि होरा वृहज्जातक आदि ग्रन्थ औ अर्थका जाननेवाला अर्थात् ग्रन्थोंका पाठकरतारहे औ उनका अर्थभी भलीभांति जानताहो॥ ये सब गुण ज्योतिषी में चाहिये २ ॥

तत्रग्रहगणितेपौलिशरोमकवासिष्ठसौरपैतामहेषुपंचस्वेतेपु सिद्धान्तेषुयुगवर्षायनर्तुमासपक्षाहोरात्रयाममुहूर्तनाडीविनाडीप्राणत्रुटित्रुट्यवयवादिकस्यकालस्यक्षेत्रस्यचवेत्ता ३ ॥

उस ग्रहगणितमें पुलिश सिद्धांत रोमक सिद्धांत वसिष्ठ सिद्धांत सूर्यसिद्धांत औ ब्रह्मसिद्धांत ये पांच सिद्धांत हैं इनको जानता होय और युग वर्ष अयन ऋतु मास पक्ष दिन रात्रि प्रहर मुहूर्त घड़ी पल अरु त्रुटि औ त्रुटिके अवयव रूप कालको जानताहो औतत्पर विकला कला अंश राशि औ भगणरूप जो

क्षेत्र उसको भी जानताहो क्षेत्रविभाग औ काल विभाग ये दोनों समानहैं ३॥

चतुर्णांचमानानांसौरसावननाक्षत्रचान्द्राणा
मधिमासकावमसंभवस्यचकारणाभिज्ञः ४॥

चार प्रकार के जो मानहैं सौर सावन नाक्षत्र औ चांद्रइनको जानता होय औ अधिमास औ अवम संभव अर्थात् क्षयादिन के कारण को जानता होय ४॥

षष्ट्यब्दयुगवर्षमासदिनहोराधिपतीनांप्रतिपत्तिच्छेदवित् ५॥

प्रभव विभव आदि साठ वर्षोंकी औ उनके बीच पांच २ वर्ष के बारह युगों की प्रतिपत्ति अर्थात् प्रारंभ औ छेद अर्थात् समाप्तिको जाननेवालाहो औ वर्ष-पति मासपति दिनपति औ होरापति इनकेभीप्रारम्भ औ समाप्तिको जाने५॥

सौरादीनांचमानानामसदृशसदृशयोग्यायोग्यत्वप्रतिपादनपटुः६॥

सौर सावननाक्षत्र चांद्र आदिमानोंके सदृशत्वके प्रतिपादन में कुशल होय अर्थात् सौर वर्ष ३६५ सावन दिन औ १५ घड़ी ३१ पल २२॥ विपल का होता है सावन वर्ष ३६० सावन दिनका होताहै इसीप्रकार चांद्रवर्ष औ ना-क्षत्र वर्ष काभी भिन्न २ प्रमाण है यह सौर आदिमानोंका असदृशत्वहै अर्थात् एकका मान दूसरे के तुल्य नहीं औ येहीचार प्रकारके वर्ष अपने २ मानसे ३६० दिनके होतेहैं जैसा सौर वर्ष ३६० सौर दिनका होताहै चांद्र वर्ष ३६० चांद्र दिनका होता है इत्यादि इसप्रकार मानोंका सदृशत्व अर्थात् एकमान दूसरे मानके तुल्य हुआ इसीभांति योग्यत्व अयोग्यत्वभी जानो जैसा सौर मान युग वर्ष अयन ऋतु औ दिन इनका प्रमाण करनेमें योग्य औ और स्थान में अयोग्य है इसीभांति चांद्र आदिमानोंका भी योग्यत्व अयोग्यत्वजानो ६॥

सिद्धान्तभेदेप्ययननिवृत्तोप्रत्यक्षंसममंडलरेखासंप्रयोगाभ्युदितांशकानांछायायन्त्रदृग्गणितसाम्येन प्रतिपादनकुशलः ७॥

पौलिश आदिक जो सिद्धांत उनके गणित में जो परस्पर भेद उसके प्रतिपादन में कुशलहो इसीभांति ग्रहण ग्रह युद्धआदिमें भी जानो दक्षिणा-यन औ उत्तरायणकी जो निवृत्ति अर्थात् पलटना उसके प्रतिपादन में कुश-लहो कि देखो असुक सिद्धांत की रीतिसे इतनी घटीपर अयन निवृत्ति आती है औ प्रत्यक्ष में इतनी घटीपर हुई उस अन्तरका दिखासके अपने देशमें जो सममंडलरेखा अर्थात् विषुवत् रेखा उसके जोग्रहों का सम्प्रयोग अर्थात् सम्प्र वेश वहां जो उदित हुये अंश अर्थात् अपने अहोरात्र वृत्त संबंधी दिनभाग अर्थात् दिनगत घटी औ शेषघटी उनके प्रतिपादन में चतुरहोय इन सब सिद्धांत भेद आदि पदार्थों को शंकुकी तात्कालिक छायाकरके चक्रचाप तुरीय गोल यष्टिशंकु घटी आदि यंत्रोंकरके और दृग्गणितसाम्य करके प्रतिपादन में

कुशल हो जो गणित से ज्ञात होय वहीवेध आदिसे देखपड़े इसका नाम दृग्गणित साम्य है गणित से जो ग्रहस्पष्टआदि आवें उनको शंकुच्छाया अथवा यन्त्रवेध से प्रत्यक्ष दिखादेने में कुशल होय ७॥

सूर्यादीनांचग्रहाणांशीघ्रमंदयाम्योत्तरनीचोच्चगतिकारणाभिज्ञः८॥

सूर्य आदि ग्रहोंकी शीघ्र मंद गति अर्थात् कोन ग्रह किस ग्रह की अपेक्षा मंदगति है और कौन शीघ्रगति है औ इस मंद शीघ्रगति का क्या कारण है यह जानता होय इसी प्रकार ग्रहों की दक्षिणोत्तर गति औ उच्चनीच गतिका भी कारण जाने ८॥

सूर्याचन्द्रमसोश्चग्रहणे ग्रहणादिमोक्षकालदिक्प्रमाण
विमर्दवर्णदेशानामनागतग्रहसमागमयुद्धानामादेष्टा ९॥

सूर्य औ चन्द्रमा के ग्रहणमें ग्रहणादिकाल अर्थात् स्पर्शकाल मोक्षकाल दिशा अर्थात् असुक दिशासे ग्रहणका प्रारम्भ होगा अमुकदिशा में मध्यग्रहण होगा इत्यादि प्रमाण अर्थात् इतने बिम्बका ग्रासहोगा विमर्द अर्थात् सम्मीलन उन्मीलन का मध्यकालवर्ण अर्थात् ग्रहणके समय सूर्यचन्द्रका धूम्र कृष्ण ताम्र इत्यादि रंग इत्यादिक जो आदेश उनका आदेष्टा अर्थात् कहनेवाला औ अनागत अर्थात् जो अभी हुयेनहीं हैं ऐसे जो ग्रहसमागम औ ग्रहयुद्ध इनका कहनेवाला चंद्रमा के साथ भौमादि ग्रह एक राशि में होयँ उसको समागम कहते हैं औ भौमादि ग्रहोंका परस्पर एकही राशि अंशमें इकट्ठेहोनेका नाम युद्ध है उस समागम औ युद्धको प्रथमही कहदेवै कि अमुकदिनसमागमहोगा अथवा अमुक २ ग्रहका युद्ध होगा औ ठीक उस समय पर आकाश में भी दिखा देवे ९॥

प्रत्येकग्रहभ्रमणयोजनकक्षाप्रमाणप्रति
विषययोजनपरिच्छेदकुशलः १०॥

सूर्य आदि प्रत्येक ग्रहके भ्रमण योजन अर्थात् पृथिवी से कौनग्रह कितने योजन अन्तरपर घूमताहै अर्थात् ग्रहों के योजनात्मक कर्णग्रहोंकी कक्षाओं के प्रमाण औ प्रत्येक देशोंके योजन अर्थात् अमुक देश अमुक देशसे इतने योजन हैं औ उन योजनों को इसप्रकार से जान सक्ते हैं इन सब बातोंके जानने में चतुर होय १०॥

भूभगणभ्रमणसंस्थानाद्यक्षावलम्बकाऽहर्व्यासचरदलकालरा
श्युदयच्छायानाडीकरणप्रभृतिषुक्षेत्रकालकरणेष्वभिज्ञः ११॥

भूमि औ नक्षत्र गणके भ्रमण औ संस्थान अर्थात् स्थिति को जानताहो अक्षांश औलम्बांश जानताहो इष्ट दिनके अहोरात्र वृत्तका व्यास चरदल

काल अर्थात् चर खण्डोंसे सिद्धकाल मेष आदि राशियों के लंकोदय औ स्व-देशोदय छाया नाडी करण अर्थात् शंकुकी छाया जानकर उससे दिन गतघटी अथवा दिन शेष घटी करना इत्यादि सब बातों में अभिज्ञ होय औ क्षेत्रकाल करण अर्थात् क्षेत्रसे काल औ कालसे क्षेत्र करने में अभिज्ञ हो जैसा इष्टघटी पलसे राशि अंश आदिलग्न करलेवे यहकालसे क्षेत्र करनाहुआ औ राश्यादि लग्न से इष्टघटीपल जानना यह क्षेत्रसे काल करना हुआ इन सब बातों में अभिज्ञ होय भगण राशि अंश कला विकला आदिको क्षेत्र औ वर्ष मास दिन घटी पल विपल आदिको काल कहतेहैं बारह राशिका एकभगण होताहै ११॥

नानाचोद्यप्रश्नभेदोपलब्धिजनितवाक्सारो निकषसंतापाभिनिवेशैः कनकस्येवाधिकतरनिर्मलीकृतस्यशास्त्रस्यवक्तातन्त्रज्ञोभवति १२

अनेक प्रकारके चोद्य अर्थात् ठीक बात को उससे विपरीत प्रतिपादन करके तर्क करना जैसा यह कोई कहै कि कन्याके सूर्य में दक्षिण दिशा के बीच जो तारा अति प्रकाशवान् देखपड़ताहै वह ध्रुवहै और उत्तर में जो सूक्ष्मरूप ताराहै वह अगस्त्य है इसको चोद्य कहतेहैं क्योंकि यह उलटी बातहै वास्तव में उत्तरकी ओरका तारा ध्रुवहै और दक्षिणका अगस्त्यहै इस बातको गोलकी रीति से सिद्ध करसके कि दक्षिणका तारा ध्रुव नहीं अगस्त्य है और उत्तरका अगस्त्य नहीं ध्रुवहै इसी प्रकार अनजाने अर्थके जानने के लिये जो वचनवह प्रश्न कहाताहै नानाप्रकारके चोद्य और प्रश्नोंके जो भेद उनकी जो उपलब्धि अर्थात् ज्ञान अर्थात् वादी के किये चोद्य औ शिष्यादि के किये प्रश्नोंका ठीक२ परिहार औ उत्तर करना इनकरके उत्पन्न हुआहै वाक्सार अर्थात् वाणी में सार वक्ता जिसके औ निषक सन्ताप औ अभिनिवेश करके अतिशुद्ध किये सुवर्ण के तुल्य अत्यन्त निर्मल किया जो ज्योतिःशास्त्र उसका प्रतिपादन करनेवाला तन्त्रज्ञ अर्थात् गणितज्ञ ज्योतिषी होता है सुवर्ण के पक्ष में निकषकहिये कसौटीपर घसना सन्ताप अग्नि में तपाना अभिनिवेश सलाकना और कूटना शास्त्रके पक्ष में निषक बारम्बार देखना संतापचित्त परिताप अर्थात् दिन रात शास्त्रचिन्ता से चित्तका व्यग्ररहना अभिनिवेश यत्न अर्थात् सब बातोंकी अशक्ति छोड़ शास्त्रमेंही आसक्तरहना जिसप्रकार स्वभाव निर्मल भी सुवर्ण निकष आदि करके अतिनिर्मल होजाता है उसीभांति शास्त्र भी निषकआदि करके निःसंदेह होजाता है १२ ॥

(उक्तं चात्र गर्गेणमहर्षिणा)

नप्रतिबद्धंगमयतिवक्तिनचप्रश्नमेकमपिपृष्टः ॥
निगदतिनचशिष्येभ्यःसकथंशास्त्रार्थविज्ज्ञेयः १३ ॥

गर्गमहर्षिने भी कहा है॥ शास्त्र में निबद्ध अर्थको प्रतिपादन न करै किसी शिष्यने संदेह निवृत्तिके लिये पूछेहुये एक प्रश्नका भी उत्तर न देवै औ विद्यार्थियों को पढ़ावै भी नहीं वह क्योंकर शास्त्रके अर्थको जाननेवाला समझा जाय अर्थात् ऐसेको मूर्खही समझना चाहिये पण्डितनहीं जानना १३॥

ग्रन्थोन्यथान्यथार्थंकरणंयश्चान्यथाकरोत्यबुधः॥
सपितामहमुपगम्यस्तौतिनरोवैशिकेनार्याम् १४॥

जो पुरुष ग्रंथ तो और प्रकार से होय और उसका अर्थ और का और करै औ करण अर्थात् गणित में गुणन भागहार आदिकर्म तो और करना होय और उसके स्थान में करदेवै और वह मूर्ख पुरुष पितामह अर्थात् अपने बाबाके पास जाकर वैशिक अर्थात् वेश्यापने करके अर्थात् संभोग समय के नखक्षत सीत्कार आदिगुणों से आर्या अर्थात् अपनी माताकी स्तुति करताहै इसकातात्पर्ययहहै कि जैसे कोईमहामूर्ख अपने पितामहके आगे अपनी माता की प्रशंसाकरै कि हमारी मातावेश्यापनेमें बड़ी निपुण है उसके समानकोई दूसरी नहीं है जिस प्रकार यहप्रशंसा अत्यंत अनुचित औ हास्यकरानेवाली है इसी प्रकार ग्रंथका तात्पर्य समझे बिना जोमूर्ख उसका अर्थकरनेलगजाते हैं औगणित कर्मका आशय न जानकर अन्यथा गणित करने में प्रवृत्तहोतेहैं उनका भी यहसाहस अत्यंत अनुचित औहास्यजनक है आचार्य ने यह मूर्खों की हँसी की है १४॥

तन्त्रेसुपरिज्ञातेलग्नेच्छायाम्बुयन्त्रसंविदिते॥
होरार्थेचसुरूढेनादेष्टुर्भारतीवन्ध्या १५॥

गणित स्कंध भलीभांति जाना होय तात्कालिक लग्नभी शंकुच्छाया जल घड़ी अथवा और किसी प्रकार के यंत्र से निश्चित होय औजातक शास्त्र का अर्थभी दृढ़होरहाहोय तो आदेष्टा अर्थात् फलादेश कहनेवाले दैवज्ञकी वाणी कभी मिथ्या नहीं होती १५॥

उक्तंचाचार्यविष्णुगुप्तेन॥

अप्यर्णवस्यपुरुषःप्रतरन्कदाचिदासादयेदनिलवेगवशेनपारम्॥
न त्वस्यकालपुरुषाख्यमहार्णवस्यगच्छेत्कदाचिदनृषिर्मनसापिपारम् १६॥

आचार्य विष्णुगुप्त अर्थात् चाणक्य ने भी कहाहै कि कभी तरता हुआ पुरुष पवन के वेगवशसे समुद्रके भी पारको पहुंचसक्ता है परन्तु इसकाल पुरुष नामक अर्थात् ज्योतिःशास्त्र रूप महासमुद्र का पार ऋषिभिन्न और

कोई पुरुष मनकर के भी कदाचित् नहीं पासका केवल ऋषियों ने ही इस का पार पाया है १६ ॥

होराशास्त्रेपिराशिहोराद्रेष्काणनवांशकद्वादशभागत्रिंशद्भागबला बलपरिग्रहोग्रहाणांदिक्स्थानकालचेष्टाभिरनेकप्रकारबल निर्द्धारणं प्रकृति धातुद्रव्यजातिचेष्टादिपरिग्रहोनिषेकजन्मकालविस्मापनप्र त्ययादेशसद्योमरणायुर्दायदशान्तर्दशाऽष्टकवर्ग राजयोगचन्द्रयो गद्विग्रहादियोगानांनाभसादीनांचयोगानांफलान्याश्रयभावावलोक ननिर्याणगत्यनूकानितत्कालप्रश्नशुभाशुभनिमित्तानि विवाहादीनां चकर्मणांकरणम् १७ ॥

जातकशास्त्रमें जो भेद हैं उनको कहते हैं। होराशास्त्र में भी राशिस्व-रूपहोरा अर्थात् राशिकाअर्द्ध द्रेष्काण अर्थात् राशिका तृतीयांश नवांश द्वादशां-श त्रिंशांश राशियोंका बलाबल ग्रहोंका दिक्स्थान काल चेष्टा करके अनेक प्रकार के बल का विचार ग्रहों की वात पित्त आदि प्रकृति रस रुधिर आदि सातधातु द्रव्यजाति चेष्टा आदि शब्दकरके ग्रहों के सत्वआदि गुणरसस्थान वस्त्र इनसबका ग्रहण गर्भाधान समय औ जन्मसमय के आश्चर्य के करने वाले जो प्रत्यय उनका कथन अर्थात् गर्भाधान के अथवा जन्म के समय दीपक इसदिशा में था उसघरका द्वार अमुकदिशा में है शय्या ऐसी थी प्रसव के समय पितासमीप था अथवा नहीं था ऐसे २ चमत्कारको करने वाले चिह्नों का कहना सद्योमरण आयुर्दाय दशाअन्तर्दशा अष्टकवर्ग राजयोग चन्द्रयोग द्विग्रहादियोग नाभसयोग आदि के फल आश्रयभाव औ दृष्टिके फल निर्याण अर्थात् मरणनिमित्त मरणके अनंतर शुभाशुभ गति अनूक अर्थात् पूर्वजन्म तत्काल कियेहुये प्रश्नलग्न के शुभाशुभफल औ शुभ अशुभको सूचनकरने वाले निमित्त औ विवाह यज्ञोपवीत चौलआदि कर्मों का करना ॥ येसबभेद ज्योतिश्शास्त्र के दूसरेस्कन्ध होराशास्त्र में होते हैं औ ज्योतिश्शास्त्र के पहिले स्कन्ध तन्त्रके भेद प्रथमही (तत्रग्रहगणिते) इत्यादि गद्यमें कहिदिये हैं १७॥

यात्रायांतु तिथिदिवसकरणनक्षत्रमुहूर्त्तविलग्नयोगदेहस्पन्दन स्वप्नविजयस्नानग्रहयज्ञगणयागाग्निलिङ्गहस्त्यश्वेङ्गितसेनाप्रवाद चेष्टादिग्रहषाड्गुण्योपायमङ्गलाऽमङ्गलशकुन सैन्यनिवेशभूमयः अग्निवर्णाः मंत्रिचरदूताटविकानांयथाकालंप्रयोगाःपरदुर्गोलम्भो पायाश्चेति १८ ॥

होरास्कन्ध के अन्तर्गत यात्रा शास्त्र के भेदकहते हैं यात्रा शास्त्रमें भी

नंदा आदि तिथि सूर्यआदिवार ववआदि करण अश्विनी आदि नक्षत्र शिवआदि तीसमुहूर्त इनसब के फललग्न औ योग देहफरकने के फल स्वप्न के शुभाशुभफल विजयके देनेवाले स्नानका विधान ग्रहयज्ञ गणयाग अर्थात् गुह्यकपूजन हवनके समय शुभाशुभ सूचक अग्नि के चिह्न हाथी औ घोड़ों की चेष्टा सेनाके मनुष्यों का प्रवाद अर्थात् परस्पर बातचीत करना चेष्टा अर्थात् सैनिकोंका उत्साह औ अनुत्साह ग्रहों के बलाबल से संधि विग्रह यान आसन द्वैधऔ आश्रय इन छःगुणों की तथासाम दाम भेद दंड इनचार उपायोंकी सिद्धि असिद्धि का विचार यात्रा के समय शुभाशुभ सूचक शकुन सेना के उतरने के लिये शुभ अशुभ भूमिका कहना यात्राके समय शुभाशुभ सूचक हवनाग्नि के रंग मंत्री चर अर्थात् गुप्त पुरुष दूत औ आटविक अर्थात् वनमें रहनेवाले भीलआदि इनके यथाकाल अर्थात् अपने २ समय पर प्रयोग अर्थात् कार्य में नियुक्त करना औ शत्रुके दुर्ग अर्थात् गढ़के लेनेका उपाय ये सब बातें कही हैं १८ ॥

(उक्तंचाचार्यैः)

जगतिप्रसारितमिवालिखितमिवमतौनिषिक्तमिवहृदये ॥
शास्त्रंयस्यसभगणंनादेशानिष्फलास्तस्य १९ ॥

आचार्योंने कहाभीहै कि जिस दैवज्ञका शास्त्र गणितस्कन्ध के सहित सम्पूर्ण जगत्में मानों पसार दियाहो बुद्धिमें मानों लिखिदियाहो हृदयमें मानों धर दिया होय उसका कथन निष्फल नहीं होता । अर्थात् त्रिस्कन्ध ज्योतिश्शास्त्र जाननेवालेकी वाणी मुनियोंकी वाणीकी भांति सत्यहोतीहै १९ ॥

संहितापारगश्चदैवचिन्तकोभवति २० ॥

संहिताका पारगामी अर्थात् संहिताके पदार्थोंका भली भांति जाननेवाला दैव चिन्तक अर्थात् पूर्व जन्मकृत शुभाशुभ कर्मोंके फलका जानने हारा होताहै २० ॥

यत्रैतेसंहितापदार्थाःदिनकरादीनांग्रहाणांचारास्तेषांचप्रकृतिविकृतिप्रमाण वर्णकिरणद्युतिसंस्थानास्तमयोदयमार्गमार्गान्तरवक्रानुवक्रर्क्षसमागमचारादिभिःफलानि । नक्षत्रकूर्मविभागेनदेशेष्वगस्त्यचारःसप्तर्षिचारःग्रहभक्तयोनक्षत्रव्यूहग्रहशृंगाटकग्रहयुद्धग्रहसमागमग्रहवर्षफलगर्भलक्षणरोहिणीस्वात्याषाढीयोगाः सद्योवर्षकुसुमलतापरिधिपरिवेषपरिघपवनोल्कादिग्दाहक्षितिचलनसन्ध्यारागगन्धर्वनगररजोनिर्घातार्घकाण्डसस्यजन्मेन्द्रध्वजेन्द्र चापवास्तुवि

घांगविद्यावायस विद्यांतरचक्रमृगचक्राश्वचक्रवातचक्रप्रासादलक्ष
ण प्रतिमालक्षणप्रतिष्ठापनवृक्षायुर्वेदोदकार्गलनीराजनशांतिखंजन
कोत्पात शांतिघृतकम्बलमयूरचित्रकखड्गपट्टपरीक्षा कृकवाकुकूर्म
गोजाश्वेभ पुरुषस्त्रीलक्षणान्यन्तःपुर चिन्तापिटलक्षणोपानच्छेदव
स्त्रच्छेदचामरदण्डशयनासनलक्षण रत्नपरीक्षादीपलक्षणदन्तका
ष्ठाद्याश्रितानि शुभाशुभानि निमित्तानि सामान्यानि चजगतः प्रति
पुरुषंपार्थिवेच प्रतिक्षणमनन्यकर्माभियुक्तेन दैवज्ञेनचिन्तयितव्या
नि ॥ नचैकाकिनादृश्यन्तेऽहर्निशमवधारयितुंनिमित्तानि । तस्मा
त्सुभृतेनदैवज्ञेनैवाऽन्येतद्विदश्चत्वारोभर्त्तव्याः । तत्रैकेनैन्द्रीचाग्ने
यीचदिगवलोकयितव्या । याम्यानैर्ऋतीचान्येन । एवंवारुणीवाय
व्याचोत्तराचैशानीचेति ॥ यस्मादुल्कापातादीनिनिमित्तानिशीघ्रमु
पगच्छन्तीति । तेषांचाकारवर्णस्नेहप्रमाणदिग्ग्रहर्क्षाभिघातादिभिः
फलानिभवन्ति २१ ॥

जिस संहितामें ये पदार्थहैं । सूर्य आदि ग्रहोंके चार उनचारोंके बीच ग्रहों के स्वभाव विकार बिम्व के प्रमाण शुक्ल आदिवर्ण किरण कांति आकार अस्त उदय दक्षिण उत्तर औ मध्यममार्ग मार्गमध्य वक्रमार्ग नक्षत्रोंके साथ ग्रहों का संयोग नक्षत्रोंमें ग्रहोंकी स्थिति इत्यादि सबबातोंसे फलका कथन । नक्षत्रकूर्म विभागकरके अर्थात् सत्ताईस नक्षत्रोंको भारतवर्षके नवखण्डों में विभाग कर देशोंके शुभाशुभ फलका कहना । अगस्त्यचार सप्तर्षिचार ग्रहभक्ति अर्थात् ग्रहोंका देशद्रव्य औ जीवोंपर आधिपत्य नक्षत्रव्यूह अर्थात् देश द्रव्य आदिपर नक्षत्रोंका स्वामित्व ग्रह शृंगाटक अर्थात् भौमआदि पांच ग्रहों का शृंगाटक आदि रूपसे स्थितहोने करके शुभाशुभ ज्ञान ग्रहयुद्ध ग्रहसमागम ग्रहवर्ष फल मेघोंके गर्भलक्षण रोहिणी स्वाती औ आषाढ़ी योग अर्थात् रोहिणी स्वाती औ पूर्वाषाढ़के साथ चन्द्रमाके समागमसे शुभाशुभ विचार सद्यो वृष्टि लक्षण कुसुमलता लक्षण अर्थात् वृक्षोंके फल पुष्प देखकर जगत्के शुभाशुभ का ज्ञान परिधि परिवेष परिघ पवन उल्कापात दिग्दाह भूकंप संध्याराग गंधर्वनगर पांसुवृष्टि निर्घात आदिके लक्षण औ शुभाशुभफल अर्घकाण्ड अर्थात् अन्नआदिके भावकाज्ञान सस्यजन्म अर्थात् ग्रहोंसे खेतीके शुभाशुभका ज्ञान इन्द्रध्वजपूजा इन्द्र धनुषका लक्षण वास्तुविद्या अंगविद्या अर्थात् अंगस्पर्श से शुभाशुभज्ञान वायसविद्या अर्थात् काककी चेष्टाके फल अन्तर चक्र शकुन में मृगचक्रअश्वचक्र अर्थात् मृग और अश्वोंकी चेष्टाकेफल वातचक्र अर्थात् आठों

दिशाओंके पवनका फल प्रासाद लक्षणप्रतिमा लक्षण प्रतिष्ठापन वृक्षायुर्वेद अर्थात् वृक्षोंकी चिकित्सा उदकार्गल अर्थात् भूमिमें जलका ज्ञान नीराजन शान्ति खंजनपक्षी के लक्षण औ फल उत्पातशान्ति मयूर चित्रक घृतकम्बल अर्थात् पुष्पस्नान खड्ग लक्षण राजाओंके मुकुटका लक्षण कुक्कुट कूर्म अर्थात् कछुआ गौ अजा अश्व हस्ती पुरुष औ स्त्री इनके शुभाशुभ लक्षण अन्तःपुर चिन्ता अर्थात् राजा के अन्तः पुरमें अनुरक्त स्त्रियोंकी चेष्टा पिटका अर्थात् फुनसियों का लक्षण उपानच्छेद औ वस्त्रच्छेद अर्थात् जूते औ वस्त्र के कट जाने आदि के शुभाशुभ फल चामर दण्ड शय्या औ आसन के लक्षण हीरे आदि रत्नोंकी परीक्षा दीप लक्षण औ दंतकाष्ठ अर्थात् दातौन के शुभाशुभ फल आदि शब्दकरके कर्ता के भी शुभाशुभ फल जो शुभाशुभ फल जगत् के सब जनोंके लिये साधारण हैं औ सेनापति आदि प्रत्येक पुरुष में तथा राजा में जो शुभ अशुभफल होते हैं ये सब एकाग्रचित्त होकर ज्योतिषी को प्रतिक्षण चिन्तन करने चाहिये परंतु उन निमित्तों को एकही ज्योतिषी दिनरात नहीं देख सकता इसलिये सुभृत अर्थात् राजाने बहुतसा धन देकर पोषित किया जो मुख्य ज्योतिषी वह अपने पाससे और चार उत्तम ज्योतिषियों का पोषण करै। अर्थात् राजा एक उत्तम ज्योतिषी को बहुतसा वेतन देकर रक्खै औ वह मुख्य ज्योतिषी अपने सहायके लिये अपने पाससे वेतन देकर और चार ज्योतिषी रखलेवे। उन चारों में से एक ज्योतिषी पूर्व दिशा औ अग्नि कोणको देखे। दक्षिण दिशा औ नैऋत्यकोणको दूसरादेखै पश्चिम दिशा औ वायव्यकोणको तीसरा देखै इसीभांति चौथा ज्योतिषी उत्तर दिशा औ ईशान कोणको सावधानी से देखतारहे क्योंकि उल्कापात आदि निमित्त बहुत शीघ्र दिखाई देजाते हैं। औ उन निमित्तोंके आकार वर्ण स्निग्धता प्रमाणआदिकरके औ ग्रह नक्षत्रोंके अभिघात आदिकरके फलका विचार किया जाताहै। इसलिये ये सब बातें सावधानी से ज्योतिषीको जाननीचाहिये २१॥

उक्तंचगर्गेणमहर्षिणा॥
कृत्स्नाङ्गोपाङ्गकुशलंहोरागणितनैष्ठिकम्॥
योनपूजयतेराजा सनाशमुपगच्छति २२॥

गर्गमहर्षिने कहाहै कि ज्योतिः शास्त्रके जो सम्पूर्ण अंग औ उपांग उनमें कुशल जातकशास्त्रमें औ गणितमें जिसकी निष्ठा ऐसे ज्योतिषीका जो राजा सत्कार न करै वह नाशको प्राप्तहोताहै। ग्रह नक्षत्र राशिआदिके जो विचार वे ज्योतिश्शास्त्रके अंग औ स्त्री पुरुष लक्षण वस्त्रच्छेद दीप लक्षण आदि सब उपांग कहाते हैं २२॥

वनं समाश्रितायेपि निर्ममानिष्परिग्रहाः ॥
अपितेपरिपृच्छन्तिज्योतिषांगतिकोविदम् २३ ॥

जो निष्परि ग्रह अर्थात् एकाकी औ निरहंकार तपस्वी वन में रहते हैं वे भी ज्योतिषी को पूछते हैं फिर संसारी मनुष्य तो क्योंकर न पूछें २३ ॥

अप्रदीपा यथा रात्रिरनादित्यं यथा नभः ॥
तथाऽसांवत्सरो राजा भ्रमत्यंधइवाध्वनि २४ ॥

दीपक विना जैसे रात्रि औ सूर्य विना आकाश जिसप्रकार शोभित नहीं होता इसीप्रकार ज्योतिषी विना राजा नहीं शोभित होता औ अन्ध पुरुष जिस प्रकार मार्ग में भ्रमता है इस भांति सबकार्यों में संशययुक्त होकर ज्योतिषी हीन पुरुष भ्रमता है २४ ॥

मुहूर्ततिथिनक्षत्र मृतवश्चायनेतथा ॥
सर्वाण्येवाकुलानिस्युर्नस्यात्सांवत्सरोयदि २५ ॥

मुहूर्त तिथि नक्षत्र ऋतु अयन आदि सब आकुल होजायँ जो ज्योतिषी न होय। अर्थात् इन सबका ठिकाना ज्योतिषी विना नहीं लगता २५ ॥

तस्माद्राज्ञाधिगन्तव्योविद्वान्सांवत्सरोऽग्रणीः ॥
जयंयशः श्रियंभोगान्श्रेयश्चसमभीप्सता २६ ॥

इसकारण जय यश लक्ष्मी भोग औ कल्याण को चाहनेवाले राजा ने विद्वान् औ प्रधान ज्योतिषी का अधिगमन करना चाहिये अर्थात् सब कार्य ज्योतिषी की संमति से राजाको करने चाहिये २६ ॥

नासांवत्सरि के देशेवस्तव्यंभूतिमिच्छता ॥
चक्षुर्भूतोहियत्रैषपापंतत्र न विद्यते २७ ॥

जिस देश में ज्योतिषी न होय वहां संपत्ति की इच्छावाला पुरुष न बसै जिस देश में नेत्रकेतुल्य सबपदार्थोंको प्रत्यक्ष दिखानेवाला ज्योतिषी रहै वहां पाप नहीं रहता २७ ॥

नसांवत्सरपाठीचनरकेषूपपद्यते ॥
ब्रह्मलोकप्रतिष्ठांचलभते दैवचिन्तकः २८ ॥

ज्योतिः शास्त्रका पढ़नेवालापुरुष नरकमें नहींजाता। औ वह दैवचिन्तक पुरुष ब्रह्मलोक में प्रतिष्ठा अर्थात् स्थितिपाता है २८ ॥

ग्रन्थतश्चार्थतश्चैनंकृत्स्नंजानातियोद्विजः ॥
अग्रभुक्सभवेच्छ्राद्धेपूजितःपङ्क्तिपावनः २९ ॥

जो ब्राह्मण सम्पूर्ण ज्योतिः शास्त्रका पाठ औ अर्थ जाने वह श्राद्ध में अग्र-भुक् अर्थात् सबसे आगे भोजन करानेयोग्यहोता है औ वह पूजित पङ्क्तिपावन होताहै अर्थात् जिस पंक्तिमें बैठे उस पंक्ति को पवित्र करदेताहै २९ ॥

म्लेच्छाहिंयवनास्तेषुसम्यक्शास्त्रमिदंस्थितम् ॥
ऋषिवत्तेपि पूज्यन्तेकिम्पुनर्दैवविद्द्विजः ३० ॥

यवनाचार्य आदिक म्लेच्छ हैं परन्तु उन में यह ज्योतिश्शास्त्र भलीभांति स्थित है अर्थात् वशिष्ठ पराशर मयासुर आदिकों से यवनाचार्य आदिकों ने भली भांति ज्योतिः शास्त्र पढ़ाहै इसलिये ऋषियोंके समान वेभी पूजेजाते हैं फिर जो ब्राह्मण दैवज्ञ होय औ ज्योतिः शास्त्रको जानै उसका तो क्यों न पूजन होय ३० ॥

कुहकावेशपिहितैः कर्णोपश्रुतिहेतुभिः ॥
कृतादेशोनसर्वत्रप्रष्टव्योनसदैववित् ३१ ॥

जो कुहक अर्थात् इन्द्रजाल आदि करके फलकहै भूतादिकोंके आवेश करके कहै पिहित अर्थात् कहीं छिपकर बात चीत सुन लेवै औ फिर सभा में आय विधि मिलावै कर्णोपश्रुति अर्थात् कर्ण पिशाची आदि के मंत्रों से अथवा सभाके बीच अपने बालकको भेजदेवै वह सबकी बातचीत सुन आवै औ अपने पिताको सबके पते बतादे औ सबका अभिप्राय कहदे फिर ज्योतिषीजी सभा में जाकर विधि मिलावैं हेतु अर्थात् तर्कपूछनेवालेका आशय जानकर जोप्रश्न कहै उसको कहींभी नहींपूंछनाचाहिये क्योंकि वह ज्योतिषी नहींहैवंचकहै ३१॥

अविदित्वैवयःशास्त्रंदैवज्ञत्वंप्रपद्यते ॥
सपङ्क्तिदूषकःपापोज्ञेयोनक्षत्रसूचकः ३२ ॥

ज्योतिःशास्त्रको विना पढ़ेही जो ज्योतिषी बन बैठे उस पापी औ पंक्ति दूषकको नक्षत्र सूची जानना चाहिये जिसके पंक्ति में बैठनेसे सब पंक्ति अपवित्र होजाय वह पंक्तिदूषक कहाता है ३२ ॥

नक्षत्रसूचकोद्दिष्टमुपवासंकरोतियः ॥
संव्रजत्यन्धतामिस्रंसार्धमृक्षविडम्बिना ३३ ॥

नक्षत्र सूचीका बतायाहुआ जो पुरुष एकादशी आदि उपवासकरै वह उस ऋक्ष विडंबी अर्थात् नक्षत्र सूचीके सहित अंधतामिश्र नाम नरकमेंपड़ताहै ३३॥

नगरद्वारलोष्टस्ययद्वत्स्यादुपयाचितम् ॥
आदेशस्तद्वदज्ञानांयःसत्यःसविभाव्यते ३४ ॥

नगर के द्वारमें जो लोष्ट अर्थात् मृत्तिकाका ढेला उसका उपयाचित अर्थात्

प्रार्थना कभी काकतालीयन्याय से सत्य होजाता है। अर्थात् नगर द्वार आदि किसी प्रधान स्थानमें कोई पत्थर ढेलाआदि रक्खाहो उसको देवता समझ कोई मूर्ख प्रार्थनाकरै कि हे देव जो मेरे पुत्र उत्पन्न होय तो आपका उत्तम उपचारोंसे पूजन करूंगा तो दैवगति से कभी पुत्र उत्पन्न होभी जाताहै तो वह कुछ उस ढेलेका प्रभावनहीं है किंतु ईश्वर की अद्भुत मायाहै। इसीभांति मूर्खोंका जो फलादेश वहभी कभीसत्यसा देख पड़ताहै। परंतु बुद्धिमान् पुरुष यह कभी न समझे कि विना शास्त्र पढ़ेभी फलादेश सत्य होताहै। फलादेश तो जो त्रिस्कन्ध ज्योतिश्शास्त्र को भली भांति पढ़कर कहते हैं उनकाही ठीक मिलताहै यह निश्चयरक्खे ३४॥

संपत्त्यायोजितादेशस्तद्विच्छिन्नकथाप्रियः॥
मत्तःशास्त्रैकदेशेनत्याज्यस्तादृङ्महीक्षिता ३५॥

जो ज्योतिषी संपत्ति करके योजिता देशहो अर्थात् किसी राजसेवक आदि पुरुष को धनदेकर अनुकूल कररक्खै औ उसको साक्षी देकर कहै कि हमने पहिलेही इनसे कहदियाथा कि अमुक पुरुषको ऐश्वर्यमिलैगा अथवा उसके पुत्रहोगा औ वह राजसेवक आदि पुरुष कहै कि हां ज्योतिषीजी महाराज ने मुझसे सब बात प्रथमही कहदीथी। तद्विच्छिन्न कथा प्रियहो। अर्थात् ज्योतिश्शास्त्रवर्जित और कथा जिसको प्यारीलगे ज्योतिश्शास्त्र की चर्चा अच्छी न लगै औ शास्त्रका एक प्रकरणजानकरही अहंकारसे भरगया होय ऐसे ज्योतिषी का राजात्यागकरै ३५॥

यस्तुसम्यग्विजानातिहोरागणितसंहिताः॥
अभ्यर्च्यःसनरेन्द्रेणस्वीकर्तव्योजयैषिणा ३६॥

गणितहोरा औ संहिता ये तीनोंस्कंध ज्योतिःशास्त्रके भलीभांति जाने उस को जयकी इच्छा वाला राजा ग्रहण करै औ उसी ज्योतिषी का पूजन अर्थात् सत्कार करै ३६॥

नतत्सहस्रंकरिणांवाजिनांवाचतुर्गुणम्॥
करोतिदेशकालज्ञोयदेकोदैवचिन्तकः ३७॥

राजाका वह कार्य नतो हजार हाथी करसकेहैं न चार हजार घोड़े करसके हैं जो देशकालका जाननेवाला एक ज्योतिषी करसक्ता है ३७॥

दुःस्वप्नदुर्विचिन्तितदुष्प्रेक्षितदुष्कृतानिकर्माणि॥
क्षिप्रंप्रयान्तिनाशंशशिनःश्रुत्वाभसंवादम् ३८॥

बुरा स्वप्न आयाहो बुरी बातका चिन्तन कियाहो अमंगल का दर्शन हुआ

हो औ दुष्ट कर्म किया हो चन्द्रमा का नक्षत्र सेवा व सुननेसे शीघ्र नाश को प्राप्त होतेहैं। अर्थात् तिथि वार नक्षत्र आदि श्रवण करनेसे दुस्स्वप्न आदिका फल नहीं होता ३८ ॥

नतथेच्छतिभूपतेःपिताजननीवास्वजनोऽथवासुहृत् ॥
स्वयशोभिविवृद्धयेतथाहितमाप्तःसबलस्यदैववित् ३९ ॥

इतिवराहमिहिरकृतौबृहत्संहितायांसांवत्सरसूत्रंनाम
द्वितीयोऽध्यायः २ ॥

अपने यशकी वृद्धिके लिये सेनासहित राजा का कल्याण जैसे शास्त्रका तत्त्व जाननेवाला ज्योतिषी चाहता है इसप्रकार नतो पिताचाहै न माता न अपने बंधुजन औ न मित्रचाहतेहैं। इसलिये अपने कल्याणके अर्थ राजा सदा उत्तम ज्योतिषीको सत्कारपूर्वक अपनेसमीप रक्खे औ उसके कथन पर चले। ज्योतिषी से बढ़कर कोई शुभचिन्तक राजाका नहीं है ३९ ॥

वराहमिहिराचार्य्यकबिनाई बृहत्संहितामेंसांवत्सरसूत्र नामक
दूसराअध्यायसमाप्तहुआ ॥ २ ॥

आश्लेषार्द्धाद्दक्षिणमुत्तरमयनंरवेर्धनिष्ठाद्यम् ॥
नूनंकदाचिदासीद्येनोक्तंपूर्वशास्त्रेषु १ ॥

आश्लेषानक्षत्रके अर्द्धसे सूर्यका दक्षिणअयन औ धनिष्ठा प्रारंभसे उत्तर अयन सूर्यका कदाचित् उत्पातवशसे होगयाथा जिसकारण पराशर तंत्र आदि प्राचीन शास्त्रोंमें कहाहै १ ॥

साम्प्रतमयनंसवितुःकर्कटकाद्यंमृगादितश्चान्यत् ॥
उक्ताभावेविकृतिःप्रत्यक्षपरीक्षणैर्व्यक्तिः २ ॥

वर्तमानकाल में ठीक २ कर्कटके प्रारम्भसे सूर्यका दक्षिणायन औ मकर के प्रारम्भसे उत्तरायण लगताहै। इस कहेहुयेका जो कभी अभाव देखपड़े अर्थात् कर्कटमें सायन सूर्यका प्रवेश होतेही दक्षिणायन औ मकरमें प्रवेशहोतेही उत्तरायण न होय इससे आगेपीछे होवतो उसकोविकृति अर्थात् विकार जानो। उस विकृतिकी व्यक्ति अर्थात् स्पष्टता प्रत्यक्ष परीक्षासे होतीहै ॥ अब परीक्षा कहतेहैं जिससे विकृतिका ज्ञान होय २ ॥

दूरस्थचिह्नवेधादुदयेस्तमयेथवासहस्रांशोः ॥
छायाप्रवेशनिर्गमचिह्नैर्वामण्डलेमहति ३ ॥

सूर्यके उदयकालमें अथवा अस्तकालमें दूर स्थित जो चिह्न उसके वेध करने से अयन निवृत्तिका ज्ञान होताहै। इसका तात्पर्य यहहै कि मकर में

मण्डलमें देखाहुआ त्वष्टा नक्षत्र कूर्ममें जो सौराजा कहेहैं उनमें से सात राजाओंका नाश करताहै औ शस्त्र अग्नि औ दुर्भिक्षकरके लोकोंकाभी संहार करता है ६ ॥

तामसकीलकसंज्ञाराहुसुताःकेतवस्त्रयस्त्रिंशत् ॥
वर्णस्थानाकारैस्तान्दृष्ट्वार्केफलंब्रूयात् ७ ॥

राहुकेपुत्र तामस कीलकनाम तेंतीस केतुहैं उनको वर्णस्थान औ आकार करके सूर्य विम्वमें देखकर फल कहै ७ ॥

तेचार्कमण्डलगताःपापफलाश्चन्द्रमण्डलेसौम्याः ॥
ध्वांक्षकबन्धप्रहरणरूपाःपापाःशशाङ्केऽपि ८ ॥

वेतामस कीलक सूर्यमण्डल में देखपड़ै तो दुष्टफल करतेहैं औ चन्द्रमंडलमें देखपड़ैं तो शुभफल देतेहैं। परंतु काक कवन्ध अर्थात् शिरकटा पुरुष औ खड्गादि शस्त्रके तुल्य आकार तामस कीलक चन्द्रमण्डलमें देखपड़ैं तो अनिष्टही फल करतेहैं ८ ॥

तेषामुदयेरूपाण्यम्भःकलुषंरजोवृत्तंव्योम ॥ नगतरुशिखरामर्दीसशर्करोमारुतश्चंडः ९ ऋतुविपरीतास्तरवोदीप्तामृगपक्षिणो दिशांदाहाः ॥ निर्घातमहीकम्पादयोभवन्त्यत्रचोत्पाताः १० ॥

उन तामस कीलकोंके उदयमें ये लक्षण होते हैं कि नदी तड़ागादिका जल विनाकारणही कलुष अर्थात् गधला होजाताहै आकाशमें धूलिछाजाती है। औ पर्वत औ वृक्षोंके शिखरोंको तोड़ताहुआ मृत्तिका कणोंके सहित प्रचंड पवन चलताहै। ऋतु विपरीत वृक्षहोते हैं अर्थात् ऋतुमें वृक्षोंपर फूल फल नहीं लगते औ बिनाऋतु फूलते फलते हैं। मृग औ पक्षी दीप्त होतेहैं अर्थात् सूर्य्यकी ओर मुखकरके रूखेशब्द बोलते हैं। बारम्बार दिग्दाह होतेहैं। औ निर्घात भूकम्प उल्कापात आदि उत्पात इनके उदयमें होतेहैं ९। १० ॥

नपृथक्फलानितेषांशिखिकीलकराहुदर्शनानियदि ॥
तदुदयकारणमेषांकेत्वादीनांफलंब्रूयात् ११ ॥

पूर्वोक्त उत्पातोंके होनेके सातदिन भीतर जो धूमकेतु तामस कीलक अथवा राहु देखपड़ै अर्थात् सूर्य्य चन्द्रका ग्रहण होय तो उन उत्पातोंका पृथक् फलनहीं होता क्योंकि वे उत्पात केतु आदिके उदयका कारण हैं इसलिये उनका फल न देखै केवल केतु आदिके फलका विचार करै ११ ॥

यस्मिन्यस्मिन्देशेदर्शनमायान्तिसूर्यविम्बस्थाः ॥
तस्मिन्तस्मिन्व्यसनंमहीपतीनांपरिज्ञेयम् १२ ॥

जिस २ देशमें सूर्य्य मण्डलके बीच तामसकीलक देखपड़े उस २ देशमें राजाओंको दुःख जानना चाहिये १२ ॥

क्षुत्प्रम्लानशरीरामुनयोप्युत्सृष्टधर्मसच्चरिताः ॥
निर्मांसबालहस्ताःकृच्छ्रेणयान्तिपरदेशान् १३ ॥

क्षुधाकरके अतिमलिन शरीर मुनिभी धर्म औ सदाचारको छोड़ अन्न न मिलनेसे अतिदुर्बलहुए बालकोंको हाथमेंले बड़ेक्लेशसे परदेशको जातेहैं १३॥

तस्करविलुप्तवित्ताःप्रदीर्घनिश्वासमुकुलिताक्षिपुटाः ॥
सन्तःसन्नशरीराःशोकोद्भवबाष्परुद्धदृशः १४ ॥

औ साधु पुरुषोंका चोर धन हरलेवें औ वे साधुपुरुष लंबेश्वासलेने करके संकुचित हुयेहैं नेत्रपुट जिनके औ अवसादको प्राप्तहुये शरीर जिनके औशोकसे उत्पन्नहुये जो अश्रु उन करके रुद्धहैं नेत्र जिनके ऐसे होंय । अर्थात् साधु पुरुषोंकी यह दुर्दशा होय १४ ॥

क्षामाजुगुप्समानाःस्वनृपतिपरचक्रपीडितामनुजाः ॥
स्वनृपतिचरितंकर्मचपुराकृतंप्रब्रुवन्त्यन्ये १५ ॥

औ मनुष्य कृशहुये अपने राजा औ शत्रुसेना करके पीड़ित अपने राजा के चरितकी निन्दा करतेहैं औ कोई २ पूर्वकर्महीं कहते हैं कि हमने पूर्वजन्म में ऐसाही दुष्कर्म कियाथा जिससे यह विपत्ति भोगते हैं १५ ॥

गर्भेष्वपिनिष्पन्नावारिमुचोनप्रभूतवारिमुचः ॥
सरितोयान्तितनुत्वंक्वचित्क्वचिज्जायतेशस्यम् १६ ॥

गर्भ लक्षणों करके युक्तभी मेघवृष्टिके समय बहुत जलनहीं बरसते। नदी सूखकर छोटी २ होजाती हैं औ कहीं २ खेती होती है सर्वत्र नहीं । यह तामस कीलकोंका फलहै १६ ॥

दण्डेनरेन्द्रमृत्युर्व्याधिभयंस्यात्कबन्धसंस्थाने ॥
ध्वांक्षेचतस्करभयंदुर्भिक्षंकीलकेऽर्कस्थे १७ ॥

सूर्य बिम्बमें दंडके समान चिह्नहोयतो राजाका मृत्युहोय कबन्ध अर्थात् शिरकटे पुरुषकेतुल्य चिह्नहोयतो रोगकाभय । काकके सदृश होयतो चोरभय औ कीलकेतुल्य चिह्न सूर्यमण्डल में देखपड़े तो दुर्भिक्षहोय १७ ॥

राजोपकरणरूपैश्छत्रध्वजचामरादिभिर्विद्धः ॥
राजान्यत्वकृदर्कःस्फुलिङ्गधूमादिभिर्जनहा १८ ॥

राजा के उपकरण हाथी घोड़ेआदि औ छत्रध्वज चामरआदि करके विद्ध सूर्य (अर्थात् ऐसे चिह्न सूर्यमण्डल में देखपड़ें) दूसरा राजा करताहै अर्थात्

से कटाहुआ प्रजाका नाशकरताहै किरणोंसे हीन सूर्यहोय तो भयको देताहै। तोरण के तुल्य सूर्यका आकारहोय तो नगरका नाशकरै औ छत्रके समानहोय तो देशका नाशहोय ३१॥

ध्वजचापनिभेयुद्धानिभास्करेवेपनेचरूक्षेच॥
कृष्णारेखासवितरियदिहन्तिनृपंततोसचिवः ३२॥

ध्वजा अथवा धनुषके समान सूर्यका आकारहोय सूर्यविंब कांपताहोय औ रूखाहोय तो युद्ध होतेहैं। सूर्यबिंबके बीच जो कृष्णवर्णकी रेखा देखपड़े तो राजाको उसका मंत्री मारदेवै ३२॥

दिनकरमुदयास्तसंस्थितमुल्काशनिविद्युतोयदाहन्युः॥
नरपतिमरणंविद्यात्तदान्यराजप्रतिष्ठांच ३३॥

उदय अथवा अस्तके समय सूर्यको उल्का अशनि अथवा विद्युत् ताड़नकरें तो राजाका मृत्युहोय और दूसरा राजा स्थितहोय॥ उल्का आदिका लक्षण आगे कहेंगे ३ ॥

प्रतिदिवसमहिमकिरणःपरिवेषीसन्ध्ययोर्द्वयोरथवा॥
रक्तोस्तमेतिरक्तोदितश्चभूपंकरोत्यन्यम् ३४॥

नित्यही सूर्यका परिवेपरहै अथवा उदय अस्तके समय प्रतिदिन परिवेप होय। अथवा प्रतिदिन अति रक्तवर्ण सूर्य उदयहोय औ दिनभर रक्तवर्ण रह कर रक्तवर्णही अस्तहोय तो दूसरेराजाकोकरै अर्थात् पहिलाराजा नरहै ३४॥

प्रहरणसदृशैर्जलदैःस्थगितःसन्ध्याद्वयेपिरणकारी॥
मृगमहिषविहगखरकरभसदृशरूपैश्चभयदायी ३५॥

दोनों सन्ध्याके समय शस्त्रके तुल्य आकार मेघोंकरके ढकाहुआ सूर्य युद्ध करताहै। औ मृग महिष पक्षी गर्दभ औ ऊंटकेआकारवाले मेघोंकरके आच्छादित होय तो भयदेनेवाला होताहै ३५॥

दिनकरकराभितापादृक्षमवाप्नोतिसमहतींपीडाम्॥
भवतितुपश्चाच्छुद्धन्कनकमिवहुताशपरितापात् ३६॥

सूर्य जिसनक्षत्रपरहोय वह नक्षत्र सूर्य किरणोंके संतापसे बड़ी पीड़ाको प्राप्तहोताहै परंतु पीछे वह नक्षत्र शुद्ध अर्थात् सबकार्योंमें निर्दोष होजाताहै जिसभांति अग्निमें तपकर सुवर्ण शुद्ध होजाय ३६॥

दिवसकृतःप्रतिसूर्योजलकृदुदग्दक्षिणेस्थितोनिलकृत्॥
उभयस्थःसलिलभयंनृपमुपरिनिहन्त्यधोजनहा ३७॥

सूर्योदयसे पहरदिन चढ़ेतक छोटासामेघ सूर्यके समीप होय उसमें सूर्य

किरण लगनेसे दूसरा सूर्य प्रतीत होताहै उसकानाम प्रतिसूर्यहै। इसीप्रकार सायंकालके समय भी होसक्ताहै वह प्रतिसूर्य सूर्यबिंब के उत्तर भागमें होय तो वृष्टिकरै। दक्षिणमें होय तो पवन चलावै। दोनोंओर होय तो जल भय करै। सूर्यबिंबसे ऊपरकी ओर होय तो राजाका नाशकरै औ वह प्रतिसूर्य बिंबसे नीचेकी ओर होय तो प्रजा नाशकरै ३७॥

रुधिरनिभोवियत्यवनिपान्तकरोनचिरात् परुषरजोरुणीकृततनुर्यदिवादिनकृत्॥ असितविचित्रनीलपरुषोजनघातकरःखगमृगभैरवस्वरयुतश्चनिशाद्युमुखे ३८॥

आकाशमें अकस्मात् सूर्यका रुधिरकेतुल्य अति रक्तवर्णहोजाय तो शीघ्रही राजाका नाशहोय। अथवा रूक्ष धूलि करके सूर्यबिंब रक्तवर्ण होजाय तो भी राजाका मृत्युहोय। कृष्णवर्ण विचित्रवर्ण नीलवर्ण औ रूखा सूर्यबिंब देखपड़ै तो प्रजाका नाशहोय। पक्षी औ मृगोंके भयंकर शब्दोंकरके युक्त दोनों संध्या में होय अर्थात् सूर्योदय ओर सूर्यास्त कालमें पक्षी औ मृग भयंकर शब्दकरैं तो भी प्रजानाशहोय ३८॥

अमलवपुरवक्रमण्डलःस्फुटविपुलामलदीर्घदीधितिः॥
अविकृततनुवर्णचिह्नभृज्जगतिकरोतिशिवंदिवाकरः ३९॥

इतिवराहमिहिरकृतौबृहत्संहितायामादित्यचारस्तृतीयोऽध्यायः ३॥

निर्मल शरीर स्पष्टबिंब औ स्फुट विस्तीर्ण निर्मल तथा दीर्घ किरणों करके युक्त निर्विकार शरीर निर्विकार वर्ण औ निर्विकार चिह्नोंके धारण करनेवाला सूर्य जगत्में सब प्रकारसे कल्याण करताहै ३९॥

वराहमिहिराचार्यकीबनाईहुई बृहत्संहितामें आदित्यचार नामकतीसराअध्यायसमाप्तहुआ ३॥

चौथा अध्याय॥

चन्द्रचार॥

नित्यमधस्थस्येन्दोर्भाभिर्भानोःसितंभवत्यर्द्धम्॥
स्वच्छाययान्यदसितंकुम्भस्येवातपस्थस्य १॥

सूर्यके नीचे स्थित चन्द्रमाका आधा भाग सूर्यकी प्रभाकरके सदा शुक्लवर्ण रहताहै औ चन्द्रमाकी अपनीही छायाकरके दूसरा आधाभाग कृष्णवर्ण रहता है। जिसभांति धूपमें रक्खेहुये घटका। अर्थात् सूर्यकी ओर घड़ेका जो भाग होगा वह शुक्लवर्ण अर्थात् प्रकाशितरहेगा औ दूसराभाग घड़ेकी अपनी छाया करकेही कृष्णवर्ण होजायगा। इसीभांति चन्द्रमाका भी जानो १॥

सलिलमयेशशिनिरवेर्दीधितयोमूर्च्छितास्तमोनैशम्॥
क्षपयन्तिदर्पणोदरनिहिताइवमन्दिरस्यान्तः २॥

जलमय चन्द्रबिम्ब बीच सूर्यके किरण मूर्च्छित होकर अर्थात् चन्द्रमें लग कर प्रतिफलित होकर रात्रिके अन्धकार को दूर करते हैं जिस भांति दर्पणमें मूर्च्छितहो घरका अँधेरा हरतेहैं। जैसा दर्पण रक्खाहो उसमें सूर्य किरण पड़ कर प्रतिफलित होतेहैं और सम्पूर्ण गृहका अन्धकार दूरकरदेते हैं २॥

त्यजतोर्कतलंशशिनःपश्चादवलम्बतेयथाशौक्ल्यम्॥
दिनकरवशात्तथेन्दोःप्रकाशतेधःप्रभृत्युदयः ३॥

सूर्यके अधोभाग को छोड़तेहुये चन्द्रमा के जिसप्रकार पश्चिम दिशा में शुक्लत्वहोने लगताहै उसीप्रकार सूर्यके वशसे अधोभागसे लेकर उदय प्रकाशित होताहै। इसका यह तात्पर्यहै कि अमावास्या के अन्त में चन्द्रमा ठीक सूर्यकेनीचे होताहै। इसीकारण चन्द्रबिम्बका ऊपरका अर्ध प्रकाशित रहताहै औ नीचेकाअर्ध अपनीहीछायासे कृष्णवर्णहोजाताहै।फिर प्रतिपदाआदितिथियोंमेंचन्द्रमा सूर्यसेआगेनिकलकर पूर्वकोचलताहैतब उसकापश्चिमभागशुक्ल होनेलगताहै इसीसे भूमिकीओरकाचन्द्रबिम्बार्ध क्रममेंप्रकाशित होजाताहै३॥

प्रतिदिवसमेवमर्कात्स्थानविशेषेणशौक्ल्यपरिवृद्धिः॥
भवतिशशिनोपराह्णेपश्चाद्भागेघटस्येव ४॥

इसप्रकार सूर्यसे स्थान विशेष करके अर्थात् आगे २ चलानेसे चन्द्रमाकी प्रतिदिन शुक्लताकी वृद्धि होतीजातीहै। जिसभांति मध्याह्नके अनन्तर धूपमें रक्खेहुये घटके पिछलेभागमें होतीहै। यह तात्पर्यहै कि जैसे २ चन्द्रमा अपनी शीघ्रगति करके पूर्वओर जाताहै वैसे २ शुक्लताकी वृद्धि होतीजातीहै। शुक्लाष्टमी के अर्धमें सूर्यसे चन्द्रमा तीनराशि के अन्तरपर होताहै इस लिये आधा शुक्लवर्ण होजाताहै औ पूर्णमासी को छराशिका अन्तर होनेसे सम्पूर्ण शुक्लहोजाताहै। फिर सूर्यके समीप जाने लगताहै तब शुक्लता घटती जातीहै कृष्णाष्टमी के अर्धमें आधी शुक्लता रहजातीहै औ अमावास्याके अन्तमें सम्पूर्ण चन्द्रमा कृष्ण होजाताहै। जितनाभाग चन्द्रका दीखता है उसी को यहां सम्पूर्ण मानाहै ४॥

ऐन्द्रस्यशीतकिरणोमूलाषाढाद्वयस्यवायातः॥
याम्येनबीजजलचरकाननहावह्निभयदश्च ५॥

ज्येष्ठा मूला पूर्वाषाढा औ उत्तराषाढाके दक्षिण की ओर होकर चन्द्रमा गमनकरै तो बीज (जो बोयेजातेहैं) जलके जीव औ बनकानाश करता है औ अग्नि भयभी करता है ५॥

दक्षिणपार्श्वेनगतःशशीविशाखानुराधयोःपापः ॥
मध्येनतुप्रशस्तःपित्र्यर्क्षविशाखयोश्चापि ६ ॥

विशाखा औ अनुराधा के दक्षिण की ओर होकर चन्द्रमा जाय तो बुरा फल करता है। औ मघा तथा विशाखांके बीच होकर चन्द्रमा गमन करै तो शुभ होताहै ६ ॥

षडनागतानिपौष्णाद् द्वादशरौद्राच्चमध्ययोगीनि ॥
ज्येष्ठाद्यानिनवर्क्षाण्युडुपतिनातीत्यपूज्यन्ते ७ ॥

रेवती से लेकर छ नक्षत्र अनागत अर्थात् विना प्राप्तहुये ही चन्द्रमा के साथ युक्त होतेहैं। तात्पर्य यहहै कि उत्तराभाद्रपदा में स्थित चन्द्रमा रेवती में देख पड़ताहै। रेवती में स्थित होय तो अश्विनी में देखपड़ताहै इत्यादि। आर्द्रासे लेकर बारह नक्षत्र मध्ययोगी हैं अर्थात् आर्द्राआदि जिस नक्षत्रपर चन्द्रमाहोय उसीपर आकाश में भी देख पड़ताहै ज्येष्ठा आदि नव नक्षत्र चन्द्रमा के अतिक्रमण के अनन्तर चन्द्रमा से युक्त देखपड़ते हैं। अर्थात् मूलमें चन्द्रमा चलाजाय तब ज्येष्ठामें देखपड़ता है पूर्वाषाढ़ामें जाय तब मूलमें दीखता है इत्यादि चन्द्रमा की स्थिति दशप्रकार से होतीहै उनके लक्षण औ फल कहते हैं ७ ॥

उन्नतमीषच्छृङ्गंनौस्थाने विशालताचोक्ता ॥
नाविकपीडातस्मिन् भवतिशिवंसर्वलोकस्य ८ ॥

चन्द्रमा के शृंग कुछ ऊंचेहोंय औ विस्तीर्णताहोय उसका नाम नौकासंस्थान है। नौका संस्थान चन्द्रमा का होय तो नाव से जीविका करनेवाले मल्लाह आदिकों पीड़ाहोय और सम्पूर्ण जगत्में कुशलरहै ८ ॥

अर्द्धोन्नतेचलांगलमिति पीडातदुपजीविनांतस्मिन् ॥
प्रीतिश्चनिर्निमित्तं मनुजपतीनांसुभिक्षंच ९ ॥

जो चन्द्रमाका उत्तर शृंग अर्द्धोन्नत अर्थात् कुछ ऊंचाहोय तो उसकानाम लांगलहै। लांगल संस्थानसे हल करके जीविका करनेवालों को पीड़ा होती है राजाओं की विनाकारण परस्पर प्रीति होतीहै औ सुभिक्ष होताहै ९ ॥

दक्षिणविषाणमर्द्धोन्नतं दयाद्दुष्टलांगलाख्यंतत ॥
पाण्ड्यनरेश्वरनिधनकृदुद्योगकरंबलानांच १० ॥

जो चन्द्रका दक्षिण शृंग अर्द्धोन्नतहोय तो दुष्ट लांगल नामक संस्थान होताहै दुष्ट लांगल होय तो पांड्यदेश के राजाका मृत्युहोय औ सेनाओं की चढ़ाई होय १० ॥

समशशिनिसुभिक्षक्षेम वृष्टयःप्रथमदिवससदृशाःस्युः ॥
दण्डवदुदितेपीडा गवांनृपश्चोग्रदण्डोऽत्र ११ ॥

चन्द्रमाके दोनों शृंग समानहोंय तो सम संस्थान कहाताहै। सम संस्थान होय तो प्रथमदिन अर्थात् प्रतिपदाके तुल्य सुभिक्ष क्षेम औ वृष्टिहोय अर्थात् प्रतिपदाकेदिन जैसे सुभिक्ष कल्याण औ वर्षाहोय वैसेही एकमहीने पर्यंतरहै। औ दण्डाकार चन्द्रमा उदयहोय तो गौओंको पीड़ाहोय औ राजा भी प्रजाके ऊपर कठोर दण्डकरै ११ ॥

कार्मुकरूपेयुद्धानियत्रतुज्यातत्तोजयस्तेषाम् ॥
स्थानंयुगमितियाम्योत्तरायतंभूमिकम्पाय १२ ॥

धनुषके तुल्य चन्द्रमाहोय तो युद्धहोय जिसघोर धनुषकी ज्याहोय उस दिशाके राजाओंका जय औ जिधर धनुषकी पीठहोय उसदिशाके राजाओंका पराजय होताहै। दक्षिण औ उत्तरको आयत अर्थात् फैलाहुआ चन्द्रमा होय तो युगनामक संस्थान होताहै जिसमहीने के प्रारम्भमें युग संस्थानहो उस महीनेमें भूमिकम्प होताहै १२ ॥

युगमेवयाम्यकोट्यां किंचित्तुङ्गंसपार्श्वशायीति ॥
विनिहन्तिसार्थवाहान्वृष्टेश्चविनिग्रहंकुर्यात् १३ ॥

युगसंस्थानमेंही जो दक्षिण शृंग कुछ ऊंचाहोय तो उसका नाश पार्श्वशायीहै। पार्श्वशायी संस्थानहोय तो सार्थवाह अर्थात् जो बहुतसे मनुष्य एकत्रहोकर व्यापारआदिकेलियेजातेहैं उनकानाशहोय औवर्षाभी न होय१३॥

अभ्युच्छ्रायादेकयदिशशिनोऽवाङ्मुखभवेच्छृङ्गम् ॥
आवर्जितमित्यसुभिक्षकारितद्गोधनस्यापि १४ ॥

उंचाईमे जो चन्द्रमाका एकशृंग अधोमुखहो अर्थात् नीचेको झुकाहोय उस संस्थानका नाम आवर्जितहै। आवर्जितहोय तो प्रजामें दुर्भिक्ष होय औ गौ भी दुर्लभ होजांय १४ ॥

अव्युच्छिन्नारेखासमंततोमण्डलाचकुण्डाख्याम् ॥
अस्मिन्माण्डलिकानांस्थानत्यागोनरपतीनाम् १५ ॥

चन्द्रमण्डल के चारोंओर अखण्डित रेखादेखपड़े उसकानाम कुण्डहै कुण्ड संस्थान होय तो मांडलिक राजाओं के स्थान छूटजांय १५ ॥

प्रोक्तस्थानाभावादुदगुच्चःसस्यवृद्धिवृष्टिकरः ॥
दक्षिणतुङ्गश्चंद्रोदुर्भिक्षभयायनिर्दिष्टः १६ ॥

नौका आदि जो स्थानकहे उनमें से कोई भी न होय औ चन्द्रमा का

उत्तर शृंग ऊंचा होय तो खेती बहुतहोय औ वर्षाभी होय। जो दक्षिण शृंग ऊंचाहोय तो दुर्भिक्षका भयहोय १६ ॥

शृंगेणैकेनेंदुंविलीनमथवाप्यवाङ्मुखंशृंगम् ॥
सम्पूर्णंचाभिनवंदृष्ट्वैकोजीविताद्भ्रश्येत् १७ ॥

द्वितीयाकेदिन नये चन्द्रमा को जो पुरुष एकशृंग करकेयुक्तदेखै एकशृंग विलीन देखपड़ै अथवा द्वितीयाकोही संपूर्ण चन्द्रमण्डल देखै वह देखनेवाला एकपुरुष मृत्युवश होजाय ॥ अर्थात् आसन्नमृत्युवाले पुरुषको नया चन्द्रमा ऐसा देखपड़ताहै १७ ॥

संस्थानविधिः कथितोरूपाण्यस्माद्भवंतिचंद्रमसः ॥
स्वल्पोदुर्भिक्षकरो महान्सुभिक्षावहःप्रोक्तः १८ ॥

चन्द्रमा का संस्थान विधान तो कहा अब रूप कहते हैं छोटासा चन्द्रमा देखपड़ै तो दुर्भिक्ष होय बड़ा देखपड़ैतो सुभिक्षकरै १८ ॥

मध्यतनुर्वज्राख्यःक्षुद्भयदःसम्भ्रमायराज्ञांच ॥
चन्द्रोमृदंगरूपःक्षेमसुभिक्षावहोभवति १९ ॥

मध्यभाग में चन्द्रमा पतलाहोय तो दुर्भिक्ष होय औ राजाओं का युद्धके लिये उद्योग होय। मृदंगकेतुल्य चन्द्रमा होयतो कल्याण औसुभिक्षकरै१९ ॥

ज्ञेयोविशालमूर्तिर्नरपतिलक्ष्मीविवृद्धयेचन्द्रः ॥
स्थूलःसुभिक्षकारी प्रियधान्यकरस्तुतनुमूर्तिः २० ॥

चन्द्रका बिम्ब बड़ाहोय तो राजाकी लक्ष्मीकी वृद्धिहोय। स्थूल चन्द्रमा होय तो सुभिक्ष करताहै औ कृश चन्द्रमाहोय तो दुर्भिक्ष होय २० ॥

अत्यन्तान्कुनृपांश्चहन्त्युडुपतिःशृंगेकुजेनाहतेशस्त्रक्षुद्भयकृद्यमेनशशिजेनावृष्टिदुर्भिक्षकृत् । श्रेष्ठान्हन्तिनृपान्महेन्द्रगुरुणाशुक्रेणचाल्पन्नृपाञ्शुक्लेयात्यसिदंफलंग्रहकृतंकृष्णेयथोक्तागमम् २१ ॥

चन्द्रमाके शृंगको मंगल ताड़न करै तो म्लेच्छदेश औ कुत्सित राजाओंका नाश होताहै। शनैश्चर ताड़न करै तो युद्ध औ दुर्भिक्षहोय। बुध ताड़नकरैतो वर्षानहोय औ दुर्भिक्ष होय। बृहस्पति ताड़न करैतो बड़े २ राजामरैं औ चन्द्रमाके शृंगको शुक्र ताड़न करै तो छोटे २ राजाओंका नाशहोय शुक्लपक्षमें चन्द्रमाके शृंगको भौम आदि ग्रह ताड़न करैं तो यह फल थोड़ा होताहै औ कृष्णपक्षमें ताड़न करैं तो जो फललिखा सो सम्पूर्ण होताहै २१ ॥

भिन्नस्सितेनमगधान्यवनान्पुलिन्दान् नेपालभृङ्गिमरुकच्छ सु

राष्ट्रमद्रान् । पांचालकेकयकुलूतकपौरुषादान् हन्यादुशीनरजना
नपिसप्तमासान् २२ ॥

शुक्र चन्द्रमाको भेदन अर्थात् मध्यसे विदारण करै तो मगध यवन पुलिन्द नेपाल भृंगि मरुकच्छ सुराष्ट्र मद्र पांचाल केकय कुलूत पुरुषभक्षक औ उशीनर इनसबदेशोंके मनुष्योंका पाकाध्यायमें जो कालकहाहै उसके अनन्तर सातमहीनेतक नाशहोताहै २२ ॥

गान्धारसौवीरकसिन्धुकीरान् धान्यानिशैलान्द्रविडाधिपांश्च ।
द्विजांश्चमासान्दशशीतरश्मिः संतापयेद्वाक्पतिना विभिन्नः २३ ॥

बृहस्पतिकरके भेदितचन्द्रमा गांधार सौवीरिक सिन्धुकीर इनदेशोंको अन्नको पर्वतोंको द्रविड़देशके स्वामियोंको औब्राह्मणोंको पाककालके अनन्तर दशमहीने पर्यंत पीड़ा देताहै २३ ॥

उद्युक्तान्सहवाहनैर्नरपतींस्त्रैगर्तकान्मालवान् कौणिन्दान्गण
पुङ्गवानथशिवीनायोध्यकान्पार्थिवान् । हन्यात्कौरवमत्स्यशुक्त्य-
धिपतीन्राजन्यमुख्यानपि प्रालेयांशुरसृग्ग्रहेतनुगतेषण्मासमर्या
दया २४ ॥

मंगलकरके बेधित चन्द्रमा उद्युक्त अर्थात् जीतनेकेलिये उद्योगकरने वाले औवाहनोंकेसहित जेराजाउनको त्रिगर्त्तमालवऔकुणिंद इनदेशोंकेमनुष्योंको गणपुंगव अर्थात् समुदायमें मुख्यमनुष्योंको शिवि औअयोध्यादेशके जनोंको राजाओंको कुरु मत्स्य औशुक्तिदेशके राजाओंको औप्रधान क्षत्रियोंको छःमहीने पर्यंत हननकरताहै अर्थात् इन सब का नाशहोता है २४ ॥

यौधेयान्सचिवान्सकौरवान्प्रागीशानथचार्जुनायनान् ॥
हन्यादर्कजभिन्नमण्डलःशीतांशुर्दशमासपीडया २५ ॥

शनैश्चरकरके भेदितचन्द्रमा दशमहीनेकी पीड़ाकरकेयौधेय मंत्रीकुरु देश वासी पूर्वदिशाके स्वामी औअर्जुन देशवासी इनसबको मारता है २५ ॥

मगधान्मथुरांचपीडयेद्वेणायाश्चतटंशशाङ्कजः ॥
अपरत्रकृतंयुगंवदेद्यदिभित्त्वाशशिनंविनिर्गतः २६ ॥

जो बुधचन्द्रमाको भेदनकरके निकलजाय तोमगध औमथुरा के निवासी जनोंको औबेणानदीके तीरपर बसनेवाले मनुष्योंको पीड़ादेता है । औइनदेशों के विना और सबदेशोंमें सत्ययुग होजाताहै अर्थात् सत्ययुगकी भांति प्रजामें सुभिक्ष औक्षेमहोता है २६ ॥

क्षेमारोग्यसुभिक्षविनाशीशीतांशुःशिखिनायदिभिन्नः ॥

कुर्य्याद्वायुधजीविविनाशंचौराणामधिकेनचपीडाम् २७ ॥

केतुकरके भेदितचन्द्रमा क्षेम आरोग्य औ सुभिक्ष कानाश करताहै शस्त्रजीवी पुरुषोंका नाशकरताहै औ चोरोंकरके प्रजाको वहुतपीड़ाहोती है २७ ॥

उल्कयायदाशशीग्रस्तएवहन्यते ॥
हन्यतेतदानृपोयस्यजन्मनिस्थितः २८ ॥

ग्रहणकेसमयजो चन्द्रमा उल्काकरके ताड़ितहोय अर्थात् ग्रस्तचन्द्रमा के सम्मुख उल्काजाय तो जिसराजाके जन्मनक्षत्रपर चन्द्रमा उस समय होय वहराजा माराजाताहै २८ ॥

भस्मनिभःपरुषोऽरुणमूर्तिःशीतकरःकिरणैःपरिहीनः ॥
श्यामतनुःस्फुटितःस्फुरणोवाक्षुत्समरामयचौरभयाय २९ ॥

चन्द्रमाकावर्ण भस्मके समानहोय चन्द्रविंबरूक्षहोय रक्तवर्णहोय किरणों करकेहीनहोय श्यामवर्णहोय फूटाहुआ देखपड़े अथवा कांपताहुआ देखपड़े तो दुर्भिक्षयुद्धरोग औ चोरोंका भयहोताहै २९ ॥

प्रालेयकुन्दकुमुदस्फटिकावदातो यत्नादिवाद्रिसुतयापरिमृज्य चन्द्रः॥ उच्चैःकृतोनिशिभविष्यतिमेशिवाययोदृश्यतेसभविताजगतः शिवाय ३० ॥

प्रालेय अर्थात् वरफ कुंदपुष्प कुमुदपुष्प अथवा स्फटिक इनके तुल्यशुक्ल वर्ण चन्द्रमाहोय मानोरात्रिके समय हमारे शिवजीकेलिये उपयुक्तहोगा इस अभिप्रायसे पार्वतीजीनेही चन्द्रमाको मानकर ऊपर रक्खाहै ऐसा चन्द्रमा जगत्के कल्याणके लियेहोता है ३० ॥

यदिकुमुदमृणालगौरस्तिथिनियमात्क्षयमेतिवर्द्धतेवा ॥
अविकृतगतिमण्डलांशुयोगीभवतिनृणांविजयायशीतरश्मिः३१॥

जो कुमुदपुष्प मृणाल अर्थात् कमलकीजड़ औ मोतियोंके हारके समान शुक्लवर्ण चन्द्रमाहोय औ तिथि क्रमसेक्षय औ वृद्धिको प्राप्तहोय । औ विकार करके रहितगति बिम्ब औ किरणोंकरके युक्तहोय ऐसा चन्द्रमा मनुष्योंके जय के लिये होताहै ३१ ॥

शुक्लेपक्षेसंप्रवृद्धेप्रवृद्धिंब्रह्मक्षत्रंयातिवृद्धिंप्रजाश्च ॥
हीनेहानिस्तुल्यतातुल्यतायांकृष्णेसर्वंतत्फलंव्यत्ययेन३२॥

इतिश्रीवराहमिहिरकृतौवृहत्संहितायांचन्द्रचारश्चतुर्थोऽध्यायः ४ ॥

शुक्लपक्षकी वृद्धिहोय अर्थात् शुक्लपक्षमें कोई तिथि अधिक होजाय तो ब्राह्मण औ क्षत्रियोंकी वृद्धिहोती है प्रजाकीभी वृद्धिहोती है । शुक्लपक्षकी हानि

होनेसे अर्थात् कोई तिथि घटजानेसे ब्राह्मण क्षत्रिय औ प्रजाकी हानि होती है। औसमता अर्थात् कोई तिथि न घटे नबढ़ै तो इनकी वृद्धि औ हानि नहीं होती समताही रहतीहै कृष्णपक्षमें यहफल विपरीत होताहै अर्थात् कृष्णपक्ष की वृद्धिसे ब्राह्मण आदिकी हानि औ कृष्णपक्षकी हानिसे ब्राह्मण आदिकी वृद्धि होतीहै औ समतामें समता रहती ह ३२ ॥

बराह मिहिराचार्य्यकी बनाईहुई बृहत्संहितामें चन्द्रचार नामकचौथाअध्याय समाप्तहुआ ४ ॥

पांचवां अध्याय ॥

राहुचार ॥

अमृतास्वादविशेषाच्छिन्नमपिशिरः किलासुरस्येदम् ॥
प्राणैरपरित्यक्तं ग्रहतांयातंवदन्त्येके १ ॥

कोई आचार्य ऐसा कहते हैं कि जो राहुनामक ग्रह है वह एक असुरथा उसने छलसे अमृत पानकिया उसकारण विष्णुभगवान् ने उसका शिरकाट दिया। परन्तु अमृतपान के प्रभाव से उसका कटाहुआ शिर प्राणोंकरके हीन नहींहुआ वही शिर राहुनामक ग्रहहुआ १ ॥

इन्द्वर्कमण्डलाकृतिरसितत्वात्किलनदृश्यतेगगने ॥
अन्यत्रपर्वकालाद्वरप्रदानात्कमलयोनेः २ ॥

चन्द्रमण्डल औ सूर्यमण्डल के तुल्य राहुकाभी मण्डल है परन्तु वह कृष्ण वर्ण है इसलिये ब्रह्माजी के बरदान से ग्रहण काल के बिना आकाश में नहीं देखपड़ता। केवल ग्रहण कालमेंही राहुका दर्शन होताहै २ ॥

मुखपुच्छविभक्ताङ्गं भुजङ्गमाकारमुपदिशन्त्यन्ये ॥
कथयन्त्यमूर्त्तमपरे तमोमयंसैंहिकेयाख्यम् ३ ॥

कोई आचार्य कहते हैं कि मुख औ पुच्छ दोही अंग राहुके हैं और कोई अंगनहीं है। कोई राहुको सर्पाकार बताते हैं औ कोई २ आचार्य कहते हैं कि राहु मूर्तिमान् नहीं है केवल अन्धकार स्वरूप है ३ ॥

यदिमूर्तोभविचारी शिरोथवा मण्डलीराहुः ॥
भगणार्द्धेनान्तरितो गृह्णातिकथंनियतचारः ४ ॥

जो राहु मूर्तिमानहोय राशि औ नक्षत्रोंपर गमनकरै केवल शिरमात्रही राहुहो अथवा राहुका मण्डलहोय तो वह नियतगति होकर छराशिके अन्तर पर रहकर क्योंकर ग्रहणकरताहै। गणितस्कन्ध में तीनकला औ ग्यारह बि-कला इसकी नियतगति सिद्धकीहै ४ ॥

अनियतचारःखलुचेदुपलब्धिःसंख्ययाकथंतस्य ॥
पुच्छाननाभिधानोऽन्तरेणकस्मान्नगृह्णाति ५ ॥

जो राहुगति नियत न होय तो गणित करके उसका ज्ञान क्योंकर होसके औ मुखपुच्छ युक्त राहुको माने तो छराशि अन्तर परही क्यों सूर्य चन्द्रका ग्रास करताहै बीचमेंही एकदो तीन आदि राशिका अन्तर होनेपरभी क्योंनहीं ग्रहणहोताहै ५ ॥

अथतुभुजगेन्द्ररूपः पुच्छेनमुखेनवासगृह्णाति ॥
मुखपुच्छान्तरसंस्थंस्थगयतिकस्मान्न भगणार्द्धम् ६ ॥

जो राहु सर्पाकारहै औमुख अथवा पुच्छकरके सूर्यचन्द्रमाको ग्रहणकरता है तो उसका सर्पाकार शरीर बीचकी छराशियोंको भी क्योंनहीं ढकलेताहै ६॥

राहुद्वयंयदिस्याद्ग्रस्तेस्तमितेथवोदितेचन्द्रे ॥
तत्समगतिनाऽन्येनग्रस्तःसूर्योपिदृश्येत ७ ॥

कोई आचार्य ऐसा भी मानते हैं कि दो राहुहैं एक नियत गति दूसराअ-नियतगति है वह अनियत गति राहु छराशिके अन्तरपर रहकर ग्रहण करता है इसका खण्डन करते हैं कि जो कदाचित् दोराहु होंय तो जब चन्द्रमा ग्र-स्तास्त होय अथवा ग्रस्तोदित होय उससमय दूसरे राहु करके ग्रस्त सूर्यभी देखपड़ना चाहिये क्योंकि जिससमय पूर्णिमाको चन्द्रमा ग्रस्तास्तहोयअथवा ग्रस्तोदित होय उससमय सूर्यबिंब क्षितिजके ऊपरही रहताहै इससे देखप-ड़ताहै। परन्तु एककालमें सूर्यऔ चन्द्रका ग्रहण नहीं होता इसलियेदोराहु भी नहीं हैं इसप्रकार इन तुच्छ मतोंका खंडनकर मुख्यमत कहते हैं ७ ॥

भूच्छायांस्वग्रहणेभास्करमर्कग्रहेप्रविशतीन्दुः ॥
प्रग्रहणमतःपश्चान्नेन्दोर्भानोश्चपूर्वार्द्धात् ८ ॥

चन्द्रमा अपने ग्रहणमें भूमिकी छायामें प्रवेश करताहै औ सूर्य ग्रहणमें सूर्य में प्रवेश करताहै अर्थात् पीछेसे सूर्यके नीचे आकर दृष्टिको आवरण क-रताहै। इसलिये चन्द्रग्रहण में स्पर्श पूर्वसे होताहै पश्चिमसेनहीं औसूर्य ग्र-हणमें पश्चिमसे स्पर्शहोताहै पूर्वार्द्धसे नहींहोता ८ ॥

वृक्षस्यच्छायायथैकपार्श्वेचभवतिदीर्घाच ॥
निशिनिशितद्वद्भूमेरावरणवशाद्दिनेशस्य९॥

जैसा कि सूर्यको आवरण करनेसे वृक्षकी छायाएक ओर होतीहै औ लं-बीहोती है इसी भांति प्रत्येक रात्रिमें भूमि सूर्यका आवरण करती है इसका-रण भूमिकी छायाएकओर औ बहुत लम्बी सूच्याग्र होती है ९ ॥

सूर्यात्सप्तमराशौयदिचोदग्दक्षिणेननातिगतः ॥
चन्द्रःपूर्वाभिमुखश्छायामौर्वीतदाविशति १० ॥

सूर्यसे सप्तम राशिपर स्थित चन्द्रमा जो भूछाया के बहुत उत्तरसे अथवा बहुत दक्षिणसे न चलाजाय तब पूर्वाभिमुख जाता हुआ चन्द्रमा भूछायामें प्रवेश करताहै। क्योंकि भूछाया मूलमें बहुत चौड़ी है औ अग्रभाग में बहुत छोटीहै इसलिये जो चन्द्रमा उसके दहिने बायें बहुतअन्तर से चलाजाय तो ग्रहण नहीं होसक्ता जब चन्द्रमाका शरछोटा होय तभी चन्द्रमाछायामें प्रवेश करताहै औ चन्द्रग्रहण होताहै १० ॥

चन्द्रोऽधस्थः स्थगयतिरविमम्बुदवत्समागतःपश्चात् ॥
प्रतिदेशमतश्चित्रंदृष्टिवशाद्भास्करग्रहणम् ११ ॥

नीचेस्थित चंद्रमा पश्चिम दिशासे बादलकी भांति आकर सूर्यको ढकता है इसलिये दृष्टि वशसे प्रतिदेशमें सूर्य ग्रहण भांति २ का देख पड़ताहै किसी देशमें सूर्यग्रहण देखपड़ताहै औ किसी देशमें नहीं जैसा सूर्यको बादल ढके तो एक स्थानमें छाया रहती है औ दूसरे स्थानमें धूप देखपड़ती है उसभांति सूर्य ग्रहण सर्वत्र एकसा नहीं होता ११ ॥

आवरणंमहदिन्दोःकुण्ठविषाणस्ततोऽर्द्धसंछन्नः ॥
स्वल्पंरवेर्यतोऽतस्तीक्ष्णविषाणोरविर्भवति १२ ॥

चन्द्रको ढकनेवाला आवरण अर्थात् भूमि चन्द्रसे बड़ी है इसलिये अर्द्ध ग्रस्तचन्द्रमाके शृंगतीखेनहीं होते कुंठितहोतेहैं औ सूर्यकाआवरण अर्थात् चन्द्रमा सूर्यसे छोटाहै इसलिये अर्द्धग्रस्त सूर्यके शृंगतीखे रहते हैं १२ ॥

एवमुपरागकारणमुक्तमिदंदिव्यदृग्भिराचार्यैः ॥
राहुरकारणमस्मिन्नित्युक्तःशास्त्रसद्भावः १३ ॥

दिव्यदृष्टिवाले आचार्योंने इसप्रकार ग्रहणका ठीक २कारण कहाहै। इस ग्रहणमें राहु कारण नहींहै यह शास्त्रका निश्चय कहाहै १३ ॥

योसावसुरोराहुस्तस्यवरोब्रह्मणायमाज्ञप्तः ॥ आप्यायनमुपरागे दत्तहुतांशेनतेभविता १४ तस्मिन्कालेसान्निध्यमस्यतेनोपचर्यते राहुः ॥ याम्योत्तराशशिगतिर्गणितेप्युपचर्यतेतेन १५ ॥

वहजो राहुनामकअसुरहै उसको ब्रह्माजीने यह वर दिया है कि ग्रहण के समय जो दान औ हवन करेंगे उसके अंशसे तेरी भी तृप्तिहोगी। इस लिये ग्रहणके समय राहुका सान्निध्यहोताहै इसीसे लोकमें कहते हैं कि राहुग्रहण करते हैं। गणितमें जो शरके कारण चन्द्रमाकी दक्षिण उत्तर गति होती है

वहशर पातसे होताहै भौमआदि ग्रहों के भी पातहैं परंतु चन्द्रके पातकोही राहुभी कहतेहैं १४। १५॥

नकथंचिदपिनिमित्तैर्ग्रहणंविज्ञायतेनिमित्तानि॥
अन्यस्मिन्नपिकालेभवन्त्यथोत्पातरूपाणि १६॥

गर्ग पराशर आदि मुनियोंने जो दिग्दाह उल्कापात आदि ग्रहणके कारण कहे परंतु इन कारणों करके ग्रहणका ज्ञानकभी नहीं होसक्ता। क्योंकि वे निमित्तकाल में भी होते हैं इसलिये उल्कापात आदिको उत्पात कहते हैं ग्रहणका कारण उनको नहीं समझसकते हैं १६॥

पंचग्रहसंयोगान्नकिलग्रहणस्यसम्भवोभवति॥
तैलंचजलेऽष्टम्यांनविचिन्त्यमिदंविपश्चिद्भिः १७॥

वृद्धगर्ग कहतेहैं कि बुधसहित पांचग्रहजो एक राशिमें होंय तो ग्रहणहोता है परंतु यह ठीकनहीं पांच ग्रहोंके इकट्ठे होनेसे ग्रहणका संभव नहींहोता औ गर्गमुनि कहते हैं कि अष्टमीके दिन जलमें तेलडालनावह तैल जिस दिशा में न फैले उसी दिशाग्रहणहोताहै यहभी कुछठीक नहीं। इसलिये पण्डित लोग ऐसी २ युक्तिशून्य बातोंका कभी चिन्तन न करें १७॥

अवनत्यार्केग्रासोदिग्ज्ञेयावलनयावनत्याच॥
तिथ्यवसानाद्वेलाकरणेकथितानितानिमया १८॥

अवनति अर्थात् स्फुट विक्षेप करके सूर्य ग्रहणमें ग्रासजाने वलन औ स्फुट विक्षेप के अनुसार परिलेख लिखकर ग्रहण के स्पर्श मोक्षकी दिशा जाने। तिथ्यंत अर्थात् अमावास्याके अन्तसे ग्रहणका कालजाने। इसीप्रकार चन्द्रग्रहण केभी ग्रास आदि जाने। इन सबके जाननेका प्रकार हमने पंचसिद्धांतिका नाम अपने करण ग्रंथमें कहा है १८॥

षण्मासोत्तरवृद्ध्यापर्वेशाःसप्तदेवताःक्रमशः॥
ब्रह्मशशीन्द्रकुबेरावरुणाग्नियमाश्चविज्ञेयाः १९॥

कल्प अर्थात् सृष्टिके प्रारम्भसे छः छः महीनेके अनंतर पर्वहोता है वे पर्वसातहैं उनसातोंके देवता क्रमसे ब्रह्मा चन्द्र इन्द्र कुबेर वरुण अग्नि औ यम हैं। येसात ग्रहण के देवता क्रमसे होतेहैं औ इनकाज्ञान गणितसे होता है उसका प्रकार करणमें लिखाहै॥ अब इनकेक्रमसे फलकहते हैं १९॥

ब्राह्मेद्विजपशुवृद्धिः क्षेमारोग्याणिसस्यसम्पच्च॥ तद्वत्सौम्येतस्मिन्पीडाविदुषामवृष्टिश्च २० ऐन्द्रेभूपविरोधःशारदसस्यक्षयोनचक्षेमम्॥ कौवेरेऽर्थपतीनामर्थविनाशःसुभिक्षंच २१ वारुणमव-

नीशाऽशुभमन्येषांक्षेमसस्यवृद्धिकरम् ॥ आग्नेयंमित्राख्यस्यारो
ग्याऽभयाम्बुकरम् २२ याम्यंकरोत्यवृष्टिंदुर्भिक्षंसंक्षयंचसस्यानाम्॥
यदतःपरंतदशुभंक्षुन्माराबृष्टिदंपर्व २३ ॥

ब्राह्म पर्व होय अर्थात् पर्वका स्वामी ब्रह्माहोयतो ब्राह्मणोंकी औ पशुओं की वृद्धि होय। प्रजामें क्षेम औ आरोग्य होय खेती अच्छीहोय। पर्व स्वामी चन्द्रमा होय तो पंडितोंको पीड़ा होय। पर्वका स्वामी इन्द्रहोयतो राजाओं का परस्पर विरोधहोय शरद् ऋतुकी खेती का नाशहोय औ जगत्में कल्याण भी न रहै। पर्वस्वामी कुवेर होयतो धनवानोंके धनका नाशहोय औ सुभिक्ष होय। पर्व स्वामी वरुण होयतो राजाओंकेलिये अशुभ होय और सब प्रजाको शुभ होय औ खेतीभी वहुतहोय जिसपर्वका स्वामी अग्निहोय उसकोआग्नेय औ मित्रभी कहतेहैं आग्नेय पर्वहोय तो खेतीहोय प्रजामें आरोग्य रहै औ जल से भय न होय अर्थात् नतो अति वृष्टि होय औन अनावृष्टिहोय। समयकेऊपर उत्तम वर्षाहोय पर्व स्वामी यमहोय तो वृष्टिनहोय दुर्भिक्षपड़ै औ खेतीकानाश होजाय। इनके विना जो पर्व है वह अशुभ होताहै औ दुर्भिक्ष मरी औ अवृष्टि करताहै इसका यह तात्पर्यहै कि एक ग्रहणके अनन्तर दूसरा ग्रहण छःमहीने वारह महीने अठारह महीने इत्यादि छः महीने की वृद्धिके अन्तरसे आवे तो ब्रह्मादिक देवता उसके स्वामी होते हैं परन्तु जो एक ग्रहण से दूसरा ग्रहण पांचमहीने ग्यारह महीने इत्यादि अनियत अन्तरसे आजाय तो ब्रह्मादिक देवता उसके स्वामी नहींहोते वह सब प्रकारसे अशुभ होताहै २०।२३ ॥

वेलाहीनेपर्वणिगर्भविपत्तिश्चशस्त्रकोपश्च ॥
अतिवेलेकुसुमफलक्षयोभयंसस्यनाशश्च २४ ॥

गणितसे जो ग्रहणका स्पर्श कालआवे उससे पहिलेही ग्रहणका स्पर्शहो जाय तो वह ग्रहण वेलानहीं कहाताहै औ गणितागत कालके अनन्तर ग्रहण स्पर्शहोय वह अतिवेल होताहै। वेलाहीन ग्रहणहोय तो गर्भोंका नाश औ युद्ध होताहै। औ अतिवेल ग्रहणहोय तो फूल फलोंका क्षय प्रजामें भय औ खेती का नाशहीहोता है २४ ॥

हीनातिरिक्तकालेफलमुक्तंपूर्वशास्त्रदृष्टत्वात् ॥
स्फुटगणितविदःकालःकथंचिदपिनान्यथाभवति २५ ॥

यह वेलाहीन औ अतिवेल ग्रहणका फल गर्ग काश्यप आदि मुनियोंके बनाये शास्त्रोंमें लिखा है इसलिये हमनेभी कहा परन्तु स्पष्टगणितको जानने वाला ग्रहणके स्पर्श आदि जो कालसिद्ध करैगा उसमें कभी अन्तरनहीं पड़ैगा।

अर्थात् ठीक २ गणितागत कालके ऊपरही स्पर्श मोक्ष आदि होंगे आगे पीछे कभी नहींहोसक्ते २५ ॥

यद्येकस्मिन्मासेग्रहणंरविसोमयोस्तदाक्षितिपाः ॥
स्वबलक्षोभैःसंक्षयमायान्त्यतिशस्त्रकोपश्च २६ ॥

जो एकही महीनेमें सूर्य औ चन्द्र दोनोंका ग्रहणहोय तो अपनी सेनाके क्षोभकरके राजाओंका नाशहोय औ बड़ायुद्ध होय २६ ॥

ग्रस्तावुदितास्तमितौशारदधान्यावनीश्वरक्षयदौ ॥
सर्वग्रस्तौदुर्भिक्षमरकदौपापसंदृष्टौ २७ ॥

जो चन्द्रमा ग्रस्तहुआ उदयहोय अथवा ग्रस्तहुआ अस्तहोय तो शरदऋतु की खेतीका क्षयकरताहे। औ सूर्यग्रस्तोदित अथवा ग्रस्तास्तहोय तो राजोंका क्षयकरताहै। औ सूर्य चन्द्रमाका सर्वग्रास होजाय औ ग्रहणके समय पापग्रह अर्थात् मंगल अथवा शनिको सूर्यपर अथवा चन्द्रमापर दृष्टिहोय तो दुर्भिक्ष होय औ मरीपड़े २७ ॥

अर्द्धोदितोपरक्तोनैकृतिकान्हन्तिसर्वयज्ञांश्च ॥ आग्न्युपजीविगुणाधिकविप्राश्रमिणोऽयुगाभ्युदितः २८ कर्षकपाखण्डवणिक्क्षत्रियबलनायकान्द्वितीयेंशे ॥ कारुकशूद्रम्लेच्छान्सतृतीयेंऽशेसमन्त्रिजनान् २९ मध्याह्नेनरपतिमध्यदेशहाशोभनश्चधान्यार्घः ॥ तृणभुगमात्यांतःपुरवैश्यघ्नःपंचमेखांशे ३० स्त्रीशूद्रान्षष्ठेंशेदस्युप्रत्यन्तहास्तमयकाले॥ यस्मिन्खांशेमोक्षस्तत्प्रोक्तानांशिवंभवति ३१॥

चंद्रमा अथवा सूर्य आधाउदयहोतेही जो ग्रहणहोजाय तो निषाद औ संपूर्ण यज्ञोंका नाशहोताहै। दिनमानके सातभागकरलेवे वही खांशका प्रमाण है इसभांति दिनप्रमाणके सातखण्डकर विचारै कि कौनसे खण्डमें स्पर्शहुआ औ कौनसेमें मोक्ष। जो अयुग अर्थात् पहिलेखण्डमें उदितहुए चन्द्र अथवा सूर्यको ग्रहणहोय तो अग्निसे उपजीवनकरनेवाले सुनार आदि गुणीपुरुष ब्राह्मण औ आश्रमनिवासी ब्रह्मचारी आदि इनसबका नाशहोताहै दूसरे अंशमें ग्रहणहोय तो खेतीकरने वाले पाखण्डी अर्थात् वेदवाह्य बनियें क्षत्रिय औ सेनाकेस्वामी नाशको प्राप्तहोते हैं। तीसरेअंशमें होय तो। कारुक अर्थात् शिल्पविद्या जाननेवाले शूद्र म्लेच्छ औ मन्त्री नाशको प्राप्तहोतेहैं। मध्याह्न अर्थात् चौथे खांशमें ग्रहणहोय तो राजाको औ मध्यदेशको नाशकरताहै औ अन्नका भाव अच्छा रहताहै ॥ पांचवें खण्डमें ग्रहणहोय तो घासखानेवाले जीव राजाओंके मन्त्री राजाओंके अन्तःपुर अर्थात् राणी आदि स्त्री औ वैश्य

नाशको प्राप्त होतेहैं। छठेभागमें ग्रहणहोय तो स्त्री औ शूद्रोंका नाशहोय। अस्तके समय अर्थात् सातवें खांशमें ग्रहणका स्पर्शहोय तो चोर औ प्रत्यन्त अर्थात् गह्वरआदि म्लेच्छदेशमें रहनेवालोंका नाशहोताहै। औ जिस २ खांशमें मोक्षहोय उस २ खांशमेंकहे जो अग्न्युपजीवी आदि उनको शुभहोता है। औ जिसखांशमें स्पर्शहोय उसीमें मोक्षभी होजाय तो न अशुभहोय औ न शुभ होय जो चन्द्रग्रहणहोय तो दिनमानकी भांति रात्रिमानके सातभागकर फल का विचारकरै २८। २९। ३०। ३१॥

द्विजनृपतीनुदगयनेविट्शूद्रान्दक्षिणायनेहन्ति॥राहुरुदगादिदृष्टःप्रदक्षिणंहन्तिविप्रादीन् ३२ म्लेच्छान्विदिक्स्थितोयायिनश्चहन्याद्धुताशसक्तांश्च॥ सलिलचरदन्तिघातीयाम्येनोदग्गवामशुभः ३३ पूर्वेणसलिलपूर्णांकरोतिवसुधांसमागतोदैत्यः॥ पश्चात्कर्षकसेवकबीजविनाशायनिर्दिष्टः ३४॥

मकरआदि छराशि उत्तरायण औ कर्क आदि छराशि दक्षिणायन होताहै। उत्तरायणमें ग्रहणहोय तो ब्राह्मण औ क्षत्रियोंका नाशहोय दक्षिणायनमें होय तो वैश्य औ शूद्रोंका नाशहोताहै॥ उत्तरमेंग्रहणहोय तो ब्राह्मण पूर्वमेंहोय तो क्षत्रिय दक्षिणमेंहोय तो वैश्य औ पश्चिममें होय तो शूद्रनाशको प्राप्तहोते हैं। उत्तर औ दक्षिणमें सूर्य चन्द्रके ग्रहणका स्पर्श अथवा मोक्षभी नहीं होता। पूर्व शास्त्रों में ऐसा लिखा है इससे वराहमिहिराचार्यने भी उत्तर दक्षिणका फलकहा। उत्पात वशसे कभी उत्तर दक्षिणमें भी स्पर्शआदि होसके हैं। ईशानआदि कोणों में ग्रहण होय तो म्लेच्छ यायी अर्थात् दूसरे देशपर चढ़ाई करनेवाले राजा औ अग्निमें आसक्त अग्निहोत्री आदि नाशको प्राप्त होते हैं। फिर भी चारों दिशाओंका फल कहते हैं। दक्षिणमें ग्रहण होय तो जल के जीव औ हाथियोंका नाशकरताहै उत्तरमें होय तो गौओंकेलिये अशुभहोताहै। पूर्वमेंग्रहणहोय तो भूमि जलसेपूर्णहोजाय औ पश्चिममें ग्रहणहोय तो खेती करनेवाले सेवाकरनेवाले औबोनेके बीज इनसबकानाशहोताहै३२।३३।३४॥

पांचालकलिंगशूरसेनाःकाम्बोजौड्रकिरातशस्त्रवार्त्ताः॥
जीवन्तिचयेहुताशवृत्त्यातेपीडामुपयान्तिमेषसंस्थे३५॥

मेषराशिमें स्थित सूर्य अथवा चन्द्रमा को ग्रहण होय तो पांचालकलिंग शूरसेन काम्बोज ओड्र किरात इन देशों के लोक औ शस्त्रकरके जो जीविका करते हैं औ अग्निकरके जो जीविका करतेहैं सुनार लुहार आदि ये सबपीड़ा को प्राप्तहोते हैं ३५॥

गोपाःपशवोऽथगोमिनोमनुजायेचमहत्त्वमागताः॥

तेपीडामुपयान्तिभास्करेग्रस्तेशीतकरेथवावृषे ३६ ॥

वृषराशिमें स्थित सूर्य अथवा चन्द्रमाको ग्रहण होय तो गोप जो गौओंकी रक्षा करते हैं पशु औ गौओंके स्वामी औजो मनुष्य प्रतिष्ठाको प्राप्तहोगये होंय ये सबपीड़ाको प्राप्तहोते हैं ३६ ॥

मिथुनेप्रवरांगनानृपानृपमानाबलिनःकलाविदः ॥
यमुनातटजाःसवाह्लिकामत्स्याःसुह्मजनैःसमन्विताः ३७ ॥

मिथुनमें स्थित सूर्य अथवा चन्द्रमाको ग्रहणहोय तो उत्तम स्त्री राजाराजाके तुल्य मनुष्य बलवान् मनुष्यगीत नृत्य आदिकला जाननेवाले यमुनाके तटपर बसनेवाले वाह्लीकमत्स्य औ सुह्म देशके लोक पीड़ाको प्राप्त होतेहैं ३७॥

आभीराञ्छबरान्सपह्लवान्मल्लान्मत्स्यकुरूञ्छकानपि ॥
पाञ्चालान्विकलांश्चपीडयत्यन्नंचापिनिहन्तिकर्कटे ३८ ॥

कर्कटराशिमें स्थित सूर्य अथवा चन्द्रमाको ग्रहणहोय तो आभीर शबर पह्लवमल्ल मत्स्य कुरु शक औ पांचाल इनसब जनोंको औ अंगहीन मनुष्योंको पीड़ाहोती है। औअन्नकाभी नाशहोजाताहै ३८ ॥

सिंहेपुलिन्दगणमेकलसत्वयुक्तान्राजोपमान्नरपतीन्वनगोचरांश्च ॥ षष्ठेतुसस्यकविलेखकगेयसक्तान्हन्त्यश्मकत्रिपुरशालियुतांश्चदेशान् ३९ ॥

सिंहमें स्थित सूर्य अथवा चन्द्रमाको ग्रहणहोय तो पुलिंद अर्थात् भील-गण अर्थात् मनुष्योंके समूह मेकल अर्थात् विंध्याचलमें रहनेवाले सत्वयुक्त राजाके तुल्य मनुष्य राजावनमें रहनेवाले नाशको प्राप्तहोतेहैं। कन्याराशिमें स्थित सूर्य अथवा चन्द्रमाका ग्रहणहोय तो खेती कवि अर्थात्काव्य रचनेवाले पण्डित लेखक गानेवाले नाशको प्राप्तहोतेहैं। अश्मक औ त्रिपुर के निवासी औ जिन देशोंमें बहुतधानहोतेहैं उनदेशोंके रहनेवाले नाशको प्राप्तहोतेहैं ३९॥

तुलाधरेऽवन्त्यपरान्त्यसाधून्वाणिग्दशार्णान्भरुकच्छपांश्च ॥
अलिन्यथोदुम्बरमद्रचोलान्द्रुमान्सयौधेयविषायुधीयान् ४०॥

तुलामें स्थित सूर्य अथवा चन्द्रमाको ग्रहणहोय तो अवन्तीमें औपरान्त्य में रहनेवाले जन साधु पुरुष बनिये दशार्ण औभरोंछमें रहनेवाले मनुष्य पीडित होते हैं। वृश्चिकमें ग्रहणहोय तो उदुम्बरमद्र औचोल देशमें रहनेवाले जन वृक्षयोद्धा औविषायुध अर्थात् दूसरेको विष देकर मारडालनेवाले ये सब नाशको प्राप्तहोते हैं ४० ॥

धन्विन्यमात्यवरवाजिविदेहमल्लान् पांचालवैद्यवणिजोविषमायु

धज्ञान् ॥ हन्यान्मृगेतुभ्रूषमंत्रिकुलानिनीचान्मंत्रौषधीषुकुशलान् स्थविरायुधीयान् ४१ ॥

धनुष राशिमें स्थित सूर्य औ चन्द्रमाका ग्रहण होयतो उत्तम मंत्री घोडे विदेह देशके वासी मल्ल पांचाल देशमें रहनेवाले वैद्य बनियें क्रूर मनुष्य शस्त्र विद्या जानने वाले पीड़ाको प्राप्त होते हैं। मकरमें ग्रहणहोय तोमत्स्य मंत्रियों के कुल नीचपुरुष मंत्र औ ओषधी जाननेवाले वृद्धपुरुष औ शस्त्रसे जीविका करनेवाले मारेजाते हैं ४१ ॥

कुम्भेन्तर्गिरिजान्सपश्चिमजनान्भारोद्वहान्तस्करानाभीरान्दरदार्यसिंहपुरकान्हन्यात्तथाबर्बरान् ॥मीनेसागरकूलसागरजलद्रव्याणि वन्यान्जनान्प्राज्ञान्वार्युपजीविनश्चभफलंकूर्मोपदेशाद्वदेत् ४२ ॥

कुम्भ राशिमें स्थित सूर्य अथवा चन्द्रमाको ग्रहणहोय तो पर्वतके मध्यमें उत्पन्नहुयेजन पश्चिम दिशा के निवासी जन भार उठाने वाले चोर अहीर दरद देश के जन आर्यजन सिंहपुरके निवासी जन औ बर्बर जन नाशको प्राप्तहोतेहैं। मीनमें ग्रहण होयतो समुद्रकातट समुद्रके जलमें उत्पन्नहुये द्रव्य रत्न आदि मान्य पुरुष बुद्धिमान पुरुष औ जल करके जीविका करने वाले मारे जाते हैं। नक्षत्र फल कूर्मोपदेश से कहनाचाहिये। अर्थात् जिस नक्षत्रमें स्थित सूर्य अथवा चन्द्रमाको ग्रहण होय वह नक्षत्र कूर्मविभाग करके जिस देशमें आये उसदेशके मनुष्योंको पीड़ा कहनीचाहिये । कूर्मविभाग आगे कहेंगे ॥ सूर्य औ चन्द्रमा के ग्रहणमें दशप्रकार के ग्रास होते हैं उनके नाम कहते हैं ४२ ॥

सव्यापसव्यलेहग्रसननिरोधावमर्दनारोहाः ॥
आघ्रातंमध्यतमस्तमोन्त्यइतितेदशग्रासाः४३ ॥

सव्य अपसव्य लेह ग्रसन निरोध अवमर्दन आरोह आघ्रात मध्यतम औ तमोन्त्य ये दशप्रकारके ग्रासहोते हैं अब इनकेलक्षण औफलकहते हैं ४३ ॥

सव्यगतेतमसिजगज्जलप्लुतंभवतिमुदितमभयंच ॥
अपसव्येनरपतितस्करावमर्दैःप्रजानाशः ४४ ॥

राहुजो ग्रहणके समय सव्यगत होय तो सब जगत् जलसे पूर्ण होजाय प्रसन्न होय औ निर्भय रहै । जोराहु अपसव्य होय तो राजाओंके औचोरोंके उपद्रव करके प्रजाका नाश होय चन्द्रग्रहणमें अग्निकोणसे राहुका आगमन होय तो सव्य ईशान कोणसे होय तो अपसव्य होता है । सूर्य ग्रहणमें वायव्यकोणमें सव्य औ नैऋत्यकोणमें अपसव्य गिनाजाताहै ४४ ॥

जिह्वोपलेढिपरितस्तिमिरनुदोमण्डलंयदिसलेहः ॥
प्रमुदितसमस्तभूताप्रभूततोयाचतत्रमही ४५ ॥

सूर्य अथवा चन्द्रमा का बिम्बचारों ओर से जिह्वोपलेढि अर्थात् जिह्वासे मानों चाटा होय ऐसा देखपड़ै उस ग्रासको लेह कहते हैं। लेहनामक ग्रास होय तो पृथ्वी के सब जीव हर्षको प्राप्त होयं वृष्टिभी बहुत होय ४५ ॥

ग्रसनमितियदात्र्यंशःपादोवागृह्यतेऽथवाप्यर्द्धम् ॥
स्फीतनृपवित्तहानिःपीडाचस्फीतदेशानाम् ४६ ॥

बिंबके तृतीयांश--चतुर्थांश अथवा अर्द्धका ग्रासहोय उसको ग्रसन कहतेहैं। ग्रसन होनेसे। बहुत ऐश्वर्य युक्त राजाओं के धनकी हानि होती है औ धनवान् देशोंको पीडा होती है ४६ ॥

पर्यन्तेपुगृहीत्वामध्येपिण्डीकृतंतमस्तिष्ठेत् ॥
सनिरोधोविज्ञेयःप्रमोदकृत्सर्वभूतानाम् ४७॥

जो राहु चारोंओरसे ग्रहण करके बिंबके मध्यभागमें पिंडीभूत अर्थात् इकट्ठा होकर स्थित होय उस ग्रासका नाम निरोध है। निरोधहोनेसे सम्पूर्ण जीवोंको हर्ष होताहै ४७ ॥

अवमर्दनमितिनिःशेषमेवसंछाद्ययदिचिरंतिष्ठेत् ॥
हन्यात्प्रधानदेशान्प्रधानभूपांश्चतिमिरमयः ४८ ॥

जो राहु सम्पूर्ण बिंबको ढककर चिरकालतक स्थिररहै तो अव मर्दन नाम ग्रास है। इसके होनेसे मुख्य देश औ मुख्यराजा नाशको प्राप्त होते हैं ४८ ॥

वृत्तेग्रहेयदितमस्तत्क्षणमावृत्यदृश्यतेभूयः।
आरोहणमित्यन्योन्यमर्दनैर्भयकरंराज्ञाम् ४९ ॥

ग्रहण होचुकने के अनन्तर फिर उसी क्षण ग्रहण करके राहु देख पड़ै उस ग्रासको आरोहण कहते हैं। आरोहण होनेसे राजाओं को परस्पर युद्ध करके भय होताहै। यह ग्रास उपपत्ति सिद्धनहीं है उत्पात है वराहमिहिराचार्य ने पूर्व शास्त्रके अनुरोधसे कहाहै गणितसे नहीं आसका ४९ ॥

दर्पणइवैकदेशेसवाष्पनिश्वासमारुतोपहतः ॥
दृश्येताघ्रातंतत्सुवृष्टिवृद्ध्यावहंजगतः ५० ॥

जिस भांति मुखके वाष्पसे दर्पण मलिन होजाता है इसप्रकार बिंब भी एक देशमें मलिन देख पड़ै उस ग्रासका नाम आघ्रातहै आघ्रात होनेसे उत्तम वृष्टि औ जगत्की वृद्धि होतीहै ५० ॥

मध्येतमःप्रविष्टंवितमस्कंमण्डलंचयदिपरतः ॥

तन्मध्यदेशनाशंकरोतिकुक्ष्यामयभयंच ५१ ॥

केवल बिंबके मध्यमें ग्रहण होय औ चारोंओर बिंब निर्मलरहै यह मध्य तम नाम ग्रासहै। इसके होनेसे मध्यदेशका नाश औ कुक्षिके रोगों से प्रजा को भय होताहै। यह ग्रास केवल सूर्यकाही होसक्ताहै क्योंकि सूर्यका आच्छादक चन्द्रमा सूर्यसे छोटाहै। चन्द्रका आच्छादक (भूभा) चन्द्रसे बड़ाहै इस लिये चन्द्र बिंबमें यह ग्रास नहीं होसक्ता ५१ ॥

पर्यन्तेष्वतिबहुलंस्वल्पंमध्येतमस्तमोन्त्याख्ये ॥
सस्यानामीतिभयंभयमस्मिंस्तस्कराणांच ५२ ॥

बिंबमें चारोंओर ता गाढ़ा अन्धकार होय और मध्यमें थोड़ासाहोय उसका नाम तमोंत्यहै। तमोंत्य होनेसे खेतियोंका भयहोय औ प्रजाको चोरोंसे भय हो। अतिवृष्टि अनावृष्टि मूषक शलभ (टीड़ी) शुक (तोते) औ राजाओंकी सेनाका समीपहोना ये ईति कहातीहैं। अब राहुके रंगका फलकहते हैं ५२ ॥

श्वेतेक्षेमसुभिक्षंब्राह्मणपीडांचनिर्दिशेद्राहौ ॥ अग्निभयमनलवर्णेपीडाचहुताशवृत्तीनाम् ५३ ॥ हरितेरोगोल्वणतासस्यानामीतिभिश्चविध्वंसः ॥ कपिलेशीघ्रगसत्वम्लेच्छध्वंसोथदुर्भिक्षम् ५४ ॥ अरुणकिरणानुरूपेदुर्भिक्षावृष्टयोविहगपीडा ॥ आधूम्रेक्षेमसुभिक्षामादिशेन्मन्दवृष्टिंच ५५ ॥ कापोतारुणकपिलश्यावाभेक्षुद्भयंविनिर्देश्यम् ॥ कापोतःशूद्राणांव्याधिकरःकृष्णवर्णश्च ५६ ॥ विमलकमणिपीताभोवैश्यध्वंसीभवेत्सुभिक्षाय ॥ सार्चिष्मत्यग्निभयंगैरिकरूपेतुयुद्धानि ५७ दूर्वाकाण्डश्यामेहारिद्रेवापिनिर्दिशेन्मरकम् ॥ अशनिभयसंप्रदायीपाटलकुसुमोपमोराहुः५८॥ पांशुविलोहितरूपःक्षत्रध्वंसायभवतिवृष्टेश्च॥बालरविकमलसुरचापरूपभृच्छस्त्रकोपाय५९॥

राहु शुक्लवर्ण देखपड़ै तो जगत्में क्षेम औ सुभिक्षहोय। ब्राह्मणोंको पीड़ा होय अग्निके तुल्यराहु का वर्णहोय तो अग्निभयहोय औ अग्निसे वृत्ति करने वाले लोहारआदि पीडाको प्राप्तहोयं। हरेरंगका राहुदेखपड़ै तो रोग बहुतहोय। औ ईतियों करके खेतियोंकानाशहोय। कपिलवर्णहोय तो जल्दी चलनेवाले ऊँटआदिजीव औ म्लेच्छ नाशको प्राप्तहोते हैं। औ दुर्भिक्ष होताहै। सूर्य किरणोंके समान वर्णहोय तो दुर्भिक्ष अवृष्टि औ पक्षियोंको पीड़ाहोती है। धूम्रवर्ण होय तो क्षेम औ सुभिक्षहोय। वृष्टिन्यूनहोय कबूतरके रंग लाल औ कपिल मिलेहुये रंग औ कपिशवर्ण होनेसे दुर्भिक्ष होताहै कपोतवर्ण औ कृष्णवर्णराहु होय तो शूद्रोंको पीड़ाहोती है। विमलक मणिके समानवर्ण अर्थात् श्वेतपीत

वर्णराहु होय तो वैश्योंका नाश औ सुभिक्षहोय। अर्चिष्मान् अर्थात् अग्निज्वाला करके युक्तराहुहोय तो अग्निभयहोय गेरूके समान रक्तवर्णहोय तो युद्ध होय। दूर्वाके समान श्यामवर्णहोय अथवा हल्दीके तुल्य पीतवर्णहोय तोमरीपड़ै पाटलपुष्पके तुल्यवर्ण अर्थात् श्वेत रक्तहोय तो बिजलीका भयहोय। धूलिके समानवर्ण औ रक्तवर्ण राहुहोय तो क्षत्रियोंका नाशहोय औ वर्षा भी न होय। प्रभातके सूर्य कमल अथवा इन्द्रधनुषके समान वर्णराहु देखपड़ैतो युद्धहोते हैं ५३।५४।५५।५६।५७।५८।५९॥

अथग्रहदृष्टिफल कहते हैं॥

पश्यन्ग्रस्तंसौम्योघृतमधुतैलक्षयायराज्ञांच ॥ भौमःसमरविमर्दंशिखिकोपंतस्करभयंच ६० ॥ शुक्रःसस्यविमर्दंनानाक्लेशांश्चजनयतिधरित्र्याम् ॥ रविजःकरोत्यवृष्टिंदुर्भिक्षंतस्करभयंच ६१ ॥

ग्रहणके समय चन्द्र अथवा सूर्यको बुधदेखता होय तो घृत मधु (शहद) तेलका क्षयहोताहै औराजाओंका भी नाशहोताहै मंगल देखताहोय तो युद्ध अग्नि औ चोरोंका भयहोताहै। शुक्रदेखताहोय तो खेतीका नाशहोय औ जगत्में अनेकप्रकारके क्लेशहोंय। शनिदेखताहोय तो वर्षा न होय दुर्भिक्षपड़ैऔ चोरोंका भयहोय ६०। ६१॥

यदशुभमवलोकनाभिरुक्तंग्रहजनितंग्रहणेप्रमोक्षणेवा ॥
सुरपतिगुरुणावलोकितेतच्छमसुपयातिजलैरिवाग्निरिद्धः६२॥

पहले जो ग्रहोंकी दृष्टिका अशुभफल ग्रहणकाल अथवा मोक्षकालमेंकहा वह सब बृहस्पतिकी दृष्टिहोने से शांतिको प्राप्तहोताहै जिसभांति प्रचण्ड अग्नि जलकरके शांतिको प्राप्तहोय॥ ग्रहणकाल अथवा मोक्षकाल इसविकल्प का यहतात्पर्य है कि ग्रहणके समय जो ग्रहदेखताहै वह मोक्षके समय दूसरे राशिपर चलाजाय अथवा ग्रहणलगनेके समय दृष्टि न होय पीछे मोक्षके समयही दृष्टि आवै तो पूर्वोक्त अशुभफल नहीं होता ग्रहणके प्रारम्भसे मोक्षपर्यंत दृष्टिरहै तभी वह फलहोताहै ६२॥

ग्रस्तेक्रमान्निमित्तैःपुनर्ग्रहोमासषट्कपरिवृद्ध्या ॥
पवनोल्कापातरजःक्षितिकम्पतमोऽशनिनिपातैः६३॥

सूर्य औ चन्द्रमाके ग्रहणके समय पवनचले तो छमहीनेके अनन्तर फिर ग्रहणहोताहै। ग्रहणके समय उल्कागिरे तो बारह महीनेमें ग्रहणहोताहै। पांशुवृष्टि होय तो अठारह महीने में भूकम्पहोय तो चौबीस महीने में तम अर्थात् ग्रहणके समय अन्धकार छाजाय तो तीस महीने में औ ग्रहणके समय

बिजली गिरे तो छत्तीस महीने में फिर ग्रहणहोताहै । यह भी उपपत्ति शून्य बात है ६३ ॥

अब भौमआदिग्रहोंके ग्रहणकाफलकहते हैं॥

आवन्तिकाजनपदाःकावेरीनर्मदातटाश्रयिणः ॥
दृप्ताश्चमनुजपतयःपीड्यन्तेक्षितिसुतेग्रस्ते६४॥

सूर्य अथवा चन्द्रके साथ जो ग्रह ग्रहणके समयहोय औ अपने शरकेअनुसार बहुतदूर न रहै उसको भी सूर्य अथवा चन्द्रमाके साथही ग्रहणहोजाता है जो मंगल ग्रस्तहोय तो अवन्ति अर्थात् उज्जयिनी देशमें रहनेवाले कावेरी औ नर्मदानदी के तटपर बास करनेवाले औ अहंकार युक्त राजा पीड़ा को प्राप्तहोते हैं ६४ ॥

अन्तर्वेदींसरयूंनेपालंपूर्वसागरंशोणम् ॥
स्त्रीनृपयोधकुमारान्सहविद्वद्भिर्बुधोहन्ति ६५॥

बुधको ग्रहणहोय तो अन्तर्वेद अर्थात् गंगायमुनाके मध्यकादेश सरयूनदी नेपालदेश पूर्व समुद्र शोणभद्र नामकनद स्त्री राजा युद्ध करने में कुशल पुरुष कुमार औ पंडितक्षयको प्राप्तहोतेहैं ६५ ॥

ग्रहणोपगतेजीवेविद्वन्नृपमंत्रिगजहयध्वंसः ॥
सिन्धुतटवासिनामप्युदग्दिशंसंश्रितानांच ६६ ॥

बृहस्पति को ग्रहणहोय तो विद्वान् राजा राजाओं के मंत्री हाथी औघोड़ों का नाशहोता है औ सिन्धु नदीके तटपर रहनेवाले औ उत्तर दिशाके निवासी पीड़ाको प्राप्तहोते हैं ६६ ॥

भृगुतनयेराहुगतेदसेरकाःकेकयाःसयौधेयाः ॥
आर्यावर्ताःशिवयःस्त्रीसचिवगणाश्चपीड्यन्ते ६७॥

शुक्रको ग्रहणहोने से दसेरक केकय यौधेय औ आर्यावर्त अर्थात् प्रधान देशके जन औ शिवदेशके निवासी स्त्रीमंत्री और गण अर्थात् मनुष्योंकेसमूह पीड़ाको प्राप्तहोते हैं ६७ ॥

सौरेमरुभवपुष्करसौराष्ट्राधातवोऽर्बुदान्त्यजनाः ॥
गोमन्तपारियात्राश्रिताश्चनाशंव्रजन्त्याशु ६८ ॥

शनिको ग्रहणहोय तो मारवाड़के रहनेवाले पुष्कर निवासी सौराष्ट्र देशके निवासी सुवर्णआदि धातु आबूके पहाड़में रहनेवाले नीच मनुष्य गोमंत औ पारियात्र पर्वत के निवासी शीघ्रही नाशको प्राप्तहोते हैं ६८ ॥

कार्तिक्यामनलोपजीविमगधान्प्राच्याधिपान्कोसलान् कल्मा

पानथशूरसेनसहितान्काशींश्चसन्तापयेत् ॥ हन्याच्चाशुकलिंगदेशान्नृपतिंसामात्यभृत्यंतमो ॥ दृष्टंक्षत्रियतापदंजनयतिक्षेमंसुभिक्षान्वितम् ६९ ॥

कार्तिक की अमावास्या अथवा पूर्णिमाको ग्रहणहोय तो अग्नि से जीविका करनेवाले सुनार आदि मगधदेशके निवासी पूर्वदिशा के स्वामी कोसल कल्माप शूरसेन औ काशीदेशमें निवास करनेवाले मनुष्य पीड़ाको प्राप्तहोते हैं औ अपने मंत्री औ सेवकों सहित कलिंगदेशका राजा शीघ्रही माराजाय क्षत्रियों को पीड़ाहोय। और सब जगत्में कल्याणरहै औ सुभिक्ष होय ६९ ॥

काश्मीरकान्कोसलकान्सपुंड्रान्मृगांश्चहन्यादपरान्तकांश्च ॥
येसोमपास्तांश्चनिहन्तिसौम्यसुदृष्टिकृत्क्षेमसुभिक्षकृच्च ७० ॥

मार्गशीर्षमें ग्रहण होय तो कश्मीर कोसल औ पुंड्रदेशके निवासी वन के मृग अपरान्त देशमें रहनेवाले सोमप अर्थात् जिनने यज्ञ कियेहोयँ ये सब नाशको प्राप्तहोते हैं वर्षा अच्छी होती है क्षेम औ सुभिक्ष होताहै ७० ॥

पौषेद्विजक्षत्रजनोपरोधःससैन्धवाख्याःकुकुराविदेहाः ॥
ध्वंसंव्रजन्त्यत्रचमन्दवृष्टिं भयंचविन्द्यादसुभिक्षयुक्तम् ७१ ॥

पौषमें ग्रहण होय तो ब्राह्मण औ क्षत्रियोंको उपद्रव होय सिंधुकुरर औ विदेहके रहनेवाले नाशको प्राप्त होयँ वर्षा बहुत न्यूनहोय औ दुर्भिक्षके सहित भयभी होय ७१ ॥

माघेतुमातृपितृभक्तवसिष्ठगोत्रान्स्वाध्यायधर्मनिरतान्करिणस्तुरंगान् ॥ वंगाङ्गकाशिमनुजांश्चदुनोतिराहुर्वृष्टिंचकर्षकजनानुमतांकरोति ७२ ॥

माघमें ग्रहणहोय तो माता पिताके भक्त मनुष्य वसिष्ठ गोत्रवाले ब्राह्मण आदि वेद पाठकरनेवाले धर्मात्मा मनुष्य हाथी घोड़े वंग अंग औ काशी देश के निवासी मनुष्य सन्ताप को प्राप्त होतेहैं । औ खेतीकरनेवालों की इच्छा के अनुसार वर्षा होती है ७२ ॥

पीडाकरंफाल्गुनमासिपर्ववंगाश्मकावन्तकमेकलानाम् ॥
नृत्यज्ञसस्यप्रवरांगनानांधनुष्करक्षत्रतपस्विनांच ७३ ॥

फाल्गुन में ग्रहण होय तो वंग अश्मन्तक औ मेकलके निवासी नृत्य को जाननेवाले खेती उत्तम स्त्री धनुष बनानेवाले क्षत्रिय औ तपस्वी पीड़ा को प्राप्त होते हैं ७३ ॥

चैत्र्यांतुचित्रकरलेखकगेयसक्तान् रूपोपजीविनिगमज्ञहिरण्य

पण्यान् ॥ पौंड्रोड्रकेकयजनानथचाश्मकांश्चतापः स्पृशत्यमरपोऽत्र विचित्रवर्षी ७४ ॥

चैत्रकी अमावास्या अथवा पूर्णिमा को ग्रहण होय तो चित्रबनाने वाले लिखनेवाले गानेवाले वेश्या वेदपाठी सुवर्ण बेचनेवाले पौंड्र ओड्र केकय औ अश्मक देशके निवासी मनुष्य सन्तापको प्राप्त होते हैं। औ चित्रवृष्टिहोती है अर्थात् किसीदेशमें वर्षाहोय किसीदेशमें न होय ७४ ॥

वैशाखमासिग्रहणेविनाशमायान्तिकर्पासतिलाःसमुद्गाः ॥ इक्ष्वाकुयौधेयशकाःकलिङ्गाःसोपद्रवाःकिन्तुसुभिक्षमस्मिन्७५॥

वैशाखमें ग्रहण होय तो कपास तिल औ मूंग नाशको प्राप्त होय इक्ष्वाकु यौधेयशक औ कलिंग ये सब मनुष्य उपद्रव युक्त होतेहैं औ प्रजामें सुभिक्ष होता है ७५ ॥

ज्येष्ठेनरेन्द्रद्विजराजपत्न्यःसस्यानिवृष्टिश्चमहागणाश्च ॥ प्रध्वं समायान्तिनराश्चसौम्याःशाल्वैःसमेताश्चनिषादसङ्घाः ७६ ॥

ज्येष्ठमें ग्रहणहोय तो राजा ब्राह्मण राजाओंकी स्त्री खेतीवर्षा औ बड़ेसमूह ये सब नाशको प्राप्तहोते हैं। औ सौम्य मनुष्य शाल्वदेशके मनुष्य औ चण्डालों के समूह नाशको प्राप्तहोते हैं ७६ ॥

आषाढपर्वण्युदपानवप्रनदीप्रवाहान्फलमूलवार्तान् ॥ गान्धारकाश्मीरपुलिन्दचीनान्हतान्वदेन्मण्डलवर्षमस्मिन् ७७ ॥

आषाढमें ग्रहण होय तो वापी कूप तालाब आदि जलाशयके तट नदियों को प्रवाह फल मूलसे जीवन करनेवाले कन्धार कश्मीर पुलिंद औ चीनके लोक नाशको प्राप्त होतेहैं औ सर्वत्र वर्षानहींहोती किसी२ देशमें होतीहै७७॥

काश्मीरान्सपुलिन्दचीनयवनान्हन्यात्कुरुक्षेत्रकान्गान्धारानपिमध्यदेशसहितान्दृष्टोग्रहश्श्रावणे॥काम्बोजैकशफांश्चशारदमपित्यक्त्वायथोक्तानिमानन्यत्रप्रचुरान्नहृष्टमनुजैर्धात्रींकरोत्यावृताम्७८॥

श्रावणमें ग्रहण होय तो कश्मीर पुलिन्द चीनयवन कुरुक्षेत्र कंधार मध्य देश औ कांबोजदेशके लोक नाशको प्राप्त होतेहैं। औ एकशफ अर्थात् जिन के खुरचिरेनहीं होते घोड़े गधे आदि औ शरत्ऋतुकी खेती नाशको प्राप्त होती है। इनको छोड़ और देशोंमें बहुत अन्न औ प्रसन्न मनुष्यों करके पृथिवी व्याप्त होती है ७८ ॥

कलिङ्गवङ्गान्मगधान्सुराष्ट्रान्म्लेच्छान्सुवीरांदरदाश्मकांश्च ॥ स्त्रीणांचगर्भानसुरोनिहंतिसुभिक्षकृद्भाद्रपदेऽभ्युपेतः ७९ ॥

भाद्रपदमें ग्रहणहोयतो कलिंगवंग मगध सुराष्ट्रम्लेच्छ सुवीरदरद अश्मक इनसबदेशों के लोकनाशको प्राप्तहोतेहैं औ स्त्रियों के गर्भनष्टहोते हैं। औ सुभिक्ष होता है ७९ ॥

काम्बोजचीनयवनान्सहशल्यहद्भिर्वाह्लीकसिन्धुतटवासिजनांश्च हन्यात् ॥ आनर्तपौण्ड्रभिपजश्चतथाकिरातान् दृष्टोऽसुरोऽश्वयुजिभूरिसुभिक्षकृच्च ८० ॥

आश्विनमें ग्रहणहोयतो कांबोजचीन यवन औ शल्यहृत् अर्थात् शस्त्रके घावकी चिकित्सा करनेवाले नाशको प्राप्तहोतेहैं वलखमें औ सिंधुनदीके तट पर रहनेवाले लोकआनर्त औ पौंड्रदेशके जन वैद्य औ भील येसबनाशको प्राप्त होतेहैं औ बहुत सुभिक्षहोता है ८० ॥

हनुकुक्षिपायुभेदाद्द्विर्द्विःसंछर्दनंचजरणंच ॥
मध्यांतयोश्चविदरणमितिदशशशिसूर्ययोर्मोक्षाः ८१ ॥

दोप्रकारका हनुभेद दोप्रकारका कुक्षिभेददोप्रकारका पायुभेदसंछर्दनजरण मध्यविदरण औ अन्तविदरण ये दशप्रकारके सूर्य औ चन्द्रमा के ग्रहण के मोक्षहोते हैं ८१ ॥

अबइनके लक्षण औ फल कहतेहैं ॥

आग्नेय्यामपगमनंदक्षिणहनुभेदसंज्ञितंशशिनः ॥
सस्यविमर्दोमुखरुङ्नृपपीडास्यात्सुवृष्टिश्च ८२ ॥

चन्द्रग्रहणमें जो अग्निकोण से मोक्ष होय उसको दक्षिण हनुभेद कहतेहैं इसके होने से खेती का नाश मुखके रोग राजाओं को पीड़ा औ सुवृष्टि होती है ८२ ॥

पूर्वोत्तरेणवामोहनुभेदोनृपकुमारभयदायी ॥
मुखरोगंशस्त्रभयंतस्मिन्विन्द्यात्सुभिक्षंच ८३ ॥

चन्द्रग्रहणमें ईशानकोण से मोक्षहोय वहवामहनु भेदकहाताहै। इसके होनेसे राजकुमारोंको भयहोताहै मुखरोग शस्त्रभय औ सुभिक्षभीहोताहै ८३ ॥

दक्षिणकुक्षिविभेदोदक्षिणपार्श्वेनयदिभवेन्मोक्षः ॥
पीडानृपपुत्राणामभियोज्यादक्षिणारिपवः ८४ ॥

चन्द्रग्रहण में दक्षिण दिशा से मोक्ष होय तो दक्षिण कुक्षिभेद नामक मोक्षहोताहै। इसकेहोनेसे राजपुत्रोंको पीड़ाहोतीहै। औ दक्षिणदिशामें जो अपने शत्रु होयँ उनपर चढ़ाई करने से जय होता है दक्षिण दिशा से कभी

मोक्षनहींहोता परंतु काश्यपआदि मुनियों के वचनों के अनुरोधसे वराह मिहिराचार्यने भी कहा है ८४ ॥

वामस्तुकुक्षिभेदोयद्युत्तरमार्गसंस्थितोराहुः ॥
स्त्रीणांगर्भविपत्तिःसस्यानिचतत्रमध्यानि ८५ ॥

चन्द्रग्रहणमें उत्तर दिशासे मोक्षहोयतो वामकुक्षि भेदकहाताहै इसकेहोनेसे स्त्रियोंके गर्भपात होते हैं औ खेतीभी मध्यमहोती है ८५ ॥

नैर्ऋतवायव्यस्थौदक्षिणवामौतुपायुभेदौद्वौ ॥
गुह्यरुगल्पावृष्टिद्वयोस्तुराज्ञीक्षयोवामे ८६ ॥

चन्द्रग्रहणमें नैर्ऋत्यकोणसे मोक्षहोय तो दक्षिणपायुभेद औ वायव्यकोणसे होय तो वामपायुभेद कहाता है। इनदोनोंकेहोनेसे गुह्यकेरोग औ अल्पवृष्टिहोती है। वामपायुभेदके होनेसे राणीकामृत्युभी होताहै ८६ ॥

पूर्वेणप्रग्रहणंकृत्वाप्रागेवचापसर्पेत ॥
संछर्दनमितितत्क्षेमसस्यहार्दिप्रदंजगतः ८७ ॥

चन्द्रग्रहणमें पूर्वसे ग्रासहोकर पूर्वसेही मोक्षहोय उसको संछर्दन कहते हैं। इसके होने से जगत् में कल्याण होताहै। खेती अच्छी होतीहै औ सब संतुष्टहोते हैं ८७ ॥

प्राक्प्रग्रहणंयस्मिन्पश्चादपसर्पणंतुतज्जरणम् ॥
क्षुच्छस्त्रभयोद्विग्नानशरणमुपयांतितत्रजनाः ८८ ॥

जिस चन्द्रग्रहण में पूर्व से स्पर्श औ पश्चिमसे मोक्षहोय उस मोक्ष को जरण कहते हैं इसके होने से मनुष्य क्षुधा औ युद्ध के भय से व्याकुल कहीं शरण नहींपाते ८८ ॥

मध्येयदिप्रकाशःप्रथमंतन्मध्यविदरणंनाम ॥
अंतःकोपकरंस्यात्सुभिक्षदंनातिवृष्टिकरम् ८९ ॥

चन्द्रग्रहणमें पहिले बिम्बके मध्यमें प्रकाश होय उसकानाम मध्य विदरणहै। इसकेहोने से राजाओंको भीतर २ क्षोभहोताहै। सुभिक्षहोताहै। औ बहुत वर्षानहींहोती। इसप्रकारका मोक्ष उत्पात कहाता है क्योंकि यह गणित औ गोल के विरुद्ध है ८९ ॥

पर्यंतेषुविमलतामध्येबहुलंतमोंतदरणाख्ये ॥
मध्याख्यदेशनाशःशारदसस्यक्षयश्चास्मिन् ९० ॥

चन्द्रग्रहणमें बिंबके चारोंओर तो निर्मलता होजाय औ बीच में गाढ़ा

अंधकार रहे यह अन्तदरण नाम मोक्षहै । इसके होनेसे मध्यदेशकानाश होताहै । औ शरत्ऋतुकी खेतीका भी क्षय होता है ९० ॥

एतेसर्वेमोक्षावक्तव्याभास्करेऽपिकिन्त्वत्र ॥
पूर्वादिक्शशिनियथातथारवौपश्चिमाकल्प्या ९१ ॥

ये सब मोक्ष चन्द्रग्रहण के कहे हैं इनको सूर्यग्रहणमें भी कल्पना करना चाहिये । इतनाही भेदहै कि चन्द्र ग्रहणमें जहां पूर्व दिशाकही वहां पश्चिम जानना । इसी भांति सब दिशा औ कोण उलटे समझने ९१ ॥

मुक्तेसप्ताहांतःपांसुनिपातोन्नसंक्षयंकुरुते ॥ नीहारोरोगभयंभूकम्पःप्रवरनृपमृत्युम् ९२ उल्कामंत्रिविनाशंनानावर्णाघनाश्चभयमतुलम् ॥ स्तनितंगर्भविनाशंविद्युन्नृपदंष्ट्रिपरिपीडाम् ९३ परिवेषोरुक्पीडांदिग्दाहोनृपभयंतथाग्निभयम् ॥ रूक्षोवायुःप्रबलश्चौरसमुत्थंभयंधत्ते ९४ निर्घातःसुरचापंदण्डश्चक्षुद्भयंसपरचक्रम् ॥ ग्रहयुद्धेनृपयुद्धंकेतुश्चदेवसंदृष्टः ९५ अविकृतसलिलनिपातेसप्ताहांतःसुभिक्षमादेश्यम् ॥ यच्चाशुभंग्रहणजंतत्सर्वंनाशमायाति ९६ ॥

ग्रहण के अनन्तर सात दिनके भीतर जो पांसुवृष्टि होय तो अन्नका क्षय होय नीहार अर्थात् कुहर छाजाय तो रोगभय होय । भूकम्प होनेसे उत्तमराजाका मृत्युहोय । उल्का गिरनेसे मंत्रीका नाशहोय अनेकरंगके बादल संध्याकाल विना देखपड़ें तो बड़ाभय होय बादल गर्जै तो बालकोंके गर्भोका नाश होय । गर्भ लक्षण आगे कहेंगे । बिजली पड़ै तो राजा औ दंष्ट्र अर्थात् दाढ़वाले सर्प सूकर आदि इनसे लोकोंको पीड़ाहोय । परिवेष होनेसे रोगकी पीड़ा होय । दिग्दाहहोनेसे राजभय औ अग्निभय होताहै । अति प्रचण्ड रूखापवन चले तो चोर भयहोय निर्घात शब्दहोय इन्द्रधनुष देखपड़े अथवा दंड अर्थात् पवनका संघात होय तो दुर्भिक्ष औ परचक्र अर्थात् दूसरे राजाकी सेनासे भय होय । ग्रह युद्ध होय तो राजाओंका परस्पर युद्धहोय। केतु देखपड़ै तो भी युद्धहोय । ग्रहण के अनन्तर सातदिन भीतर जो विना विकारके भली भांति वर्षाहोजाय तो सुभिक्ष होताहै । और भी जो ग्रहणका अशुभ फलहोय सो सब नाशको प्राप्त होताहै ९२।९३।९४।९५।९६ ॥

सोमग्रहेनिवृत्तेपक्षांतेयदिभवेद्ग्रहोऽर्कस्य ॥
तत्राऽनयःप्रजानांदम्पत्योर्वैरमन्योन्यम् ९७ ॥

चन्द्र ग्रहणके अनन्तर जो पन्द्रहवें दिन सूर्य ग्रहणहोय तो प्रजामें दुर्नय होय औ दंपती अर्थात् स्त्री पुरुषोंका परस्पर वैरहोय ९७ ॥

अर्कग्रहात्तुशशिनोग्रहणंयदिदृश्यतेततोविप्राः ॥
नैकक्रतुफलभाजोभवन्तिमुदिताःप्रजाश्चैव ९८ ॥

इतिवराहमिहिराचार्यकृतौबृहत्संहितायांराहुचारःपंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

जो सूर्यग्रहण के एक पक्ष अनन्तर चन्द्रग्रहण होय तो ब्राह्मण अनेकयज्ञों का फल पावें अर्थात् बहुत यज्ञकरें । औ सब प्रजा हर्षित होंय ९८ ॥

श्रीवराहमिहिराचार्य्यकीबनाईहुईबृहत्संहितामेंराहु-
चारनामकपांचवांअध्यायसमाप्तहुआ ५ ॥

छठां अध्याय ॥

मंगलका वक्रपांचप्रकार का होताहै उष्ण अश्रुमुख व्याल
रुधिरानन औ मसि मुसल येउनकेनामहैं अब क्रम
से इनके लक्षण औ फल कहते हैं ॥

यद्युदयर्क्षाद्वक्रंकरोतिनवमाऽष्टसप्तमर्क्षेषु ॥
तद्वक्रमुष्णमुदयेपीडाकरमग्निवार्त्तानाम् १ ॥

अस्त होनेके अनन्तर जिस नक्षत्रमें स्थितमंगल उदयको प्राप्तहोय उस नक्षत्रसे नवम अष्टम अथवा सप्तम नक्षत्र में जाकर मंगल वक्री होजाय इस वक्रकानाम उष्णहै । इसके होनेसे अग्नि करके जीविका करनेवाले लुहार सुनार आदिको पीड़ाहोती है । वक्रहोनेके अनन्तर मंगल अस्त होताहै फिर जब उदय होय तब यह फल होता है । इसीभांति उदय होने पर और भी वक्र के भेदोंका फल जानो । यद्यपि यह बात असंभव है परन्तु आचार्यने पूर्वशास्त्र के अनुसार इन नक्षत्रोंमें वक्रहोना कहाहै १ ॥

द्वादशदशमैकादशनक्षत्राद्वक्रितेकुजेऽश्रुमुखम् ॥
दूषयतिरसानुदयेकरोतिरोगानवृष्टिंच २ ॥

उदय नक्षत्रसे बारहवें दशवें अथवा ग्यारहवें नक्षत्रमें आकर मंगल वक्री होय उस वक्रकानाम अश्रुमुखहै । इसके होनेसे मंगलके फिर उदय होनेपर मधुर लवण आदि रस दूषित होजाते हैं अर्थात् उनके खानेसे मनुष्योंको अनेकप्रकारकी पीड़ा होती है । रोगउत्पन्न होतेहैं औ वर्षाभी नहीं होती २ ॥

व्यालंत्रयोदशर्क्षाच्चतुर्दशाद्वापिपच्यतेऽस्तमये ॥
दंष्ट्रिव्यालमृगेभ्यःकरोतिपीडांसुभिक्षंच ३ ॥

उदयके नक्षत्रसे तेरहवें अथवा चौदहवें नक्षत्र पर पहुँचकर मंगलवक्रीहोय उसवक्रका नाम व्यालहै । इसके होनेसे दंष्ट्री अर्थात् दाढ़वाले जीव सूकर

कुत्ते आदि सर्प औ मृग इनसे लोकोंकी पीड़ा होतीहै औ सुभिक्ष होताहै। यह फल मंगलके वक्रके अनन्तर अस्त होने पर होताहै ३॥

रुधिराननमितिवक्रंपंचदशात्षोडशाच्चविनिवृत्ते॥
तत्कालंमुखरोगंसभयञ्चसुभिक्षमावहति ४॥

उदय के नक्षत्रसे पंद्रहवें अथवा सोलहवें नक्षत्रपर प्राप्त होकर जो मंगल वक्रीहोय उस वक्रकानाम रुधिराननहै। इसकेहोनेसे जबतक मंगलवक्री रहै उतने कालमुखके रोगहोते हैं औ भय सहित सुभिक्ष होता है ४॥

असिमुशलंसप्तदशादष्टादशतोपिवातदनुवक्रे॥
दस्युगणेभ्यःपीडांकरोत्यवृष्टिंसशस्त्रभयाम् ५॥

उदय नक्षत्रसेसत्रहवें अथवा अठारहवेंनक्षत्रपर जाकर जो मंगल वक्रीहोय इस वक्रका नाम असि मुशलहै। इसके होनेसे मंगलके अनुवक्र अर्थात्मार्गी होनेपर चोरोंकरके प्रजाको पीड़ाहोतीहै वर्षानहींहोती औयुद्धका भयहोताहै५॥

भाग्यार्यमोदितोयदिनिवर्त्ततेवैश्वदेवतेभौमः॥
प्राजापत्येऽस्तमितस्त्रीनपिलोकान्निपीडयति ६॥

पूर्वा फाल्गुनी अथवा उत्तरा फाल्गुनी पर स्थित मंगल उदय होय औ उत्तराषाढ़ापर पहुँच वक्री होय रोहिणी नक्षत्र पर जाय अस्तहोय तो तीनों लोक पीड़ाको प्राप्तहोंय ६॥

श्रवणोदितस्यवक्रंपुष्येमूर्धाभिषिक्तपीडाकृत्॥
यस्मिन्नृक्षेऽभ्युदितस्तद्दिग्व्यूहान्जनान्हन्ति ७॥

श्रवणमें स्थित मंगल उदयको प्राप्तहोकर पुष्यमें जाय वक्रीहोय तोराजाओंको पीडा होतीहै। जिस नक्षत्रमें स्थित मंगल उदयहोय उस नक्षत्रकीजो दिशा नक्षत्र कूर्ममें कही है उसके औ जो उसनक्षत्रका व्यूहनक्षत्र व्यूहमेंकहा है उसकेजनोंका नाशकरताहै। कूर्म औ व्यूह आगे कहेंगे ७॥

मध्येनयदिमघानांगतागतंलोहितःकरोतिततः॥
पाण्ड्योनृपोविनश्यतिशस्त्रोद्योगाद्भयमवृष्टिः ८॥

मघानक्षत्र के जोताराउनके बीचहोकर मंगलजाय फिर वक्रीहोकरउनके बीचसेआवे तो पाण्ड्यदेशका राजामरै। युद्धसेभयहोय औवर्षानहोय ८॥

भित्त्वामघांविशाखांभिन्दन्भौमःकरोतिदुर्भिक्षम्॥
मरकंकरोतिघोरंयदिभित्त्वारोहिणींयाति ९॥

मघानक्षत्रकी योगतारा को भेदनकर जोमंगल विशाखाको भेदनकरै तो

दुर्भिक्षहोय। औ जो मंगल रोहिणीनक्षत्रकीयोगतारा को भेदनकरै तो वड़ीमरीपड़ै ९ ॥

दक्षिणतोरोहिण्याश्चरन्महीजोऽर्घवृष्टिनिग्रहकृत् ॥
धूमायन्सशिखोवाविनिहन्यात्पारियात्रस्थान् १० ॥

रोहिणी नक्षत्रकी योगतारा से दहिनेओर होकर मंगलजाय तो सबवस्तु महँगीहोंय औवर्षाभी न होय। औ जोमंगलके तारामें धूमनिकलता देखपड़ै अथवा शिखा देख पड़ै तो पारियात्र पर्वतके निवासी नाशको प्राप्तहोतेहैं १०॥

प्राजापत्येश्रवणेमूलेतिसृषूत्तरासुशाक्रेच ॥
विचरन्घननिवहानामुपघातकरःक्ष्मातनयः ११ ॥

रोहिणी श्रवण मूल उत्तराफाल्गुनी उत्तराषाढ़ा उत्तराभाद्रपदा औ ज्येष्ठा इन नक्षत्रोंमें विचरताहुआ मंगल मेघोंकानाश करता है अर्थात् जबतकइन नक्षत्रोंपर रहै तबतकवर्षानहीं होती ११ ॥

चारोदयाःप्रशस्ताःश्रवणमघाऽऽदित्यहस्तमूलेषु ॥
एकपदाश्विविशाखाप्राजापत्येषुचकुजस्य १२ ॥

पहिलेकहआये हैं कि जिसनक्षत्रमें मंगलउदय होय उसनक्षत्रकी दिशा औ व्यूहकानाश करताहै। औ यहभी कहा कि रोहिणी श्रवण आदि नक्षत्रोंमें विचरताहुआ मंगल मेघोंका नाशकरता है। अबइन दोनों का अपवादकहते हैं। श्रवण मघा पुनर्बसु हस्त मूल पूर्वाभाद्रपदा अश्विनी बिशाखा औरोहिणी इननक्षत्रोंमें मंगलकाचार अर्थात् स्थिति औउदय श्रेष्ठ होते हैं। पूर्वोक्त अशुभफल इननक्षत्रोंमें नहींहोता १२ ॥

विपुलविमलमूर्तिःकिंशुकाशोकवर्णः स्फुटरुचिरमयूखस्तप्तताम्रप्रभाभः ॥ विचरतियदिमार्गंचोत्तरंमेदिनीजः शुभकृदवनिपानांहार्दिदश्चप्रजानाम् १३ ॥

इतिश्रीवराहमिहिरकृतौबृहत्संहितायांभौमचारोनामषष्ठोध्यायः ६ ॥

जो मंगलका बिंब बड़ाहोय निर्मलहोयकेटेसू अथवा अशोक पुष्पके समानअतिरक्त वर्णहोय जिसके किरण स्फुटहोंय औ चमकतेहोंय। औ बिंबकी प्रभातपायेहुये तांबेके समान अतिरक्तऔ देदीप्यमान होंय। जिस नक्षत्रमें स्थितहोय उसके उत्तरकी ओर होकर गमनकरै ऐसा मंगल राजाओंको शुभदेनेवाला होताहै औ प्रजाकोभी प्रसन्नता देता है १३ ॥

श्रीवराहमिहिराचार्य्यकी बनाईबृहत्संहितामें भौमचार
नामक छठाअध्यायसमाप्तहुआ ६ ॥

सातवां अध्याय ॥

बुधचार ॥

नोत्पातपरित्यक्तःकदाचिदपिचन्द्रजोव्रजत्युदयम् ॥
जलदहनपवनभयकृद्धान्यार्घक्षयविवृद्धयेवा १ ॥

बुध उत्पातके विना कभी उदय नहीं होता अर्थात् जब उदयहोय तब उत्पात सहितही उदय होता है । कौन २ उत्पात करता है जल अग्नि औ पवन इन से भय करता है। औ अन्नका भाव महंगा अथवा सस्ता करताहै। इसका विचार इस भांति है कि बुध के अस्त होने के समय जो उत्पात होय उससे विपरीत उत्पात उदय के समय होताहै जैसा अस्त के समय वृष्टि न होय तो उदयकेसमय वृष्टि होती है। अस्त के समय भावमहँगा होय तो उदयकेसमय सस्ता होता है इत्यादि और भी जानो १ ॥

विचरन्श्रवणधनिष्ठाप्राजापत्येन्दुवैश्वदेवानि ॥
मृद्नन्हिमकरतनयःकरोत्यवृष्टिंसरोगभयाम् २ ॥

श्रवण धनिष्ठा रोहिणी मृगशिरा और उत्तराषाढ़ा इननक्षत्रों में विचरता हुआ बुध जो इनमेंसे किसी नक्षत्रका भेदन भी करै तो वर्षा न होय औ रोग का भयहो। श्रवणआदि नक्षत्रोंमें किसीका भेदन बुधकरसक्ताहै औ किसीका नहींकरसक्ता वराहमिहिराचार्यनें केवल पूर्वशास्त्र के अनुरोध से कहा है २ ॥

रौद्रादीनिमघान्तान्युपाश्रितेचन्द्रजेप्रजापीडा ॥
शस्त्रनिपातक्षुद्भयरोगानावृष्टिसन्तापैः ३ ॥

आर्द्रा पुनर्वसु पुष्य श्लेषा औ मघा इनपांचनक्षत्रोंमेंबुधहोय औ इनकोभेदनकरै तो युद्ध दुर्भिक्ष रोग अनावृष्टि औ उपतापकरके प्रजापीडा होतीहै ३ ॥

हस्तादीनिचरन्षडृक्षाण्युपपीडयन्गवामशुभः ॥
स्नेहरसार्घविवृद्धिंकरोतिचोर्वीप्रभूतान्नाम् ४ ॥

हस्त चित्रा स्वाति विशाखा अनुराधा औ ज्येष्ठा इननक्षत्रों में स्थितबुध जो इनको योगताराको भेदनकरै तो गौओंको अशुभ होताहै। तेल घी आदि स्नेह औ मधुर लवणआदि रस सस्तेहोतेहैं औ पृथिवीपर अन्नबहुतहोताहै ४॥

आर्यम्णंहौतभुजंभाद्रपदामुत्तरांयमेशंच ॥
चन्द्रस्यसुतोनिघ्नन्प्राणभृतांधातुसंक्षयकृत् ५ ॥

उत्तराफाल्गुनी कृत्तिका उत्तराभाद्रपदा भरणी इननक्षत्रों में स्थित बुध जो इनका भेदनकरै तो जीवों के शरीरमें जो रसरुधिर मांसआदि सातधातु हैं उनका क्षयकरता है ५ ॥

आश्विनवारुणमूलान्युपमृद्नन्रेवतींचचन्द्रसुतः ॥
पण्यभिषङ्नौजीविकसलिलजतुरगोपघातकरः ६ ॥

अश्विनी शतभिषक् मूल औ रेवती इननक्षत्रों में स्थित बुध जो इनका भेदनकरै तो बनियें वैद्य नाविक अर्थात् नावचलानेवाले मल्लाह जलसे उत्पन्न द्रव्य मोतीआदि औ घोड़े नाशको प्राप्तहोतेहैं ६ ॥

पूर्वाधृक्षत्रितयादेकमपीन्दोःसुतोऽभिमृद्नीयात् ॥
क्षुच्छस्त्रतस्करामयभयप्रदायीचरन्जगतः ७ ॥

पूर्वाफाल्गुनी पूर्वाषाढ़ा औ पूर्वाभाद्रपदा इननक्षत्रोंमें स्थित बुध जो इनमें से एककोभी भेदनकरै तो जगत्को दुर्भिक्ष युद्ध चोर औ रोगकाभयदेताहै ७॥

प्रकृतविमिश्रसंक्षिप्ततीक्ष्णयोगान्तघोरपापाख्याः ॥
सप्तपराशरतन्त्रेनक्षत्रैःकीर्तितागतयः ८ ॥

प्राकृता बिमिश्रा संक्षिप्ता तीक्ष्णा योगान्ता घोरा औ पापा ये सातप्रकार की बुधकीगति नक्षत्रोंकरके पराशरतन्त्रमें कहीहैं ८ ॥

प्राकृतसंज्ञावाय्व्ययाम्यपैतामहानिबहुलाश्च ॥ मिश्रागतिःप्रदिष्टाशशिशिवपितृभुजगदैवानि ९ संक्षिप्तायांपुष्यःपुनर्वसूफाल्गुनीद्वयंचेति ॥ तीक्ष्णायांभाद्रपदाद्वयंसशक्राश्वयुक्पौष्णम् १० योगांतिकेतिमूलंद्वेचाषाढेगतिःसुतस्येन्दोः ॥ घोराश्रवणंत्वाष्ट्रं वसुदैवंवारुणंचैव ११ पापाख्यासावित्रमैत्रंचेन्द्राग्निदैवतंचेति । उदयप्रवासदिवसैःसएवगतिलक्षणंप्राह १२ चत्वारिंशत्त्रिंशद्द्विसमेताविंशतिर्द्विनवकंच ॥ नवमासार्धदशचैकसंयुतः प्राकृताद्यानाम् १३ ॥

स्वाति भरणी रोहिणी कृत्तिका ये नक्षत्र प्राकृतगतिके हैं अर्थात् इननक्षत्रों में स्थित बुध प्राकृतगति स्थित कहाताहै। इसीप्रकार मृगशिरा आर्द्रा मघा आश्लेषा ये नक्षत्र मिश्रागतिकेहैं। पुष्य पुनर्वसू पूर्वाफाल्गुनी उत्तराफाल्गुनी ये नक्षत्र संक्षिप्त गतिकेहैं। पूर्वाभाद्रपदा उत्तराभाद्रपदा ज्येष्ठा अश्विनी रेवती ये नक्षत्र तीक्ष्णागतिकेहैं। मूल पूर्वाषाढ़ा उत्तराषाढ़ा येनक्षत्र योगान्तागतिके हैं। श्रवण चित्रा धनिष्ठा शतभिषक् ये नक्षत्र घोरागति के हैं। हस्त अनुराधा विशाखा ये नक्षत्र पापागतिके हैं जिसगतिके नक्षत्रों में बुधहोय उसगति में स्थित गिनाजाता है ९ । १० । ११ उदय औ अस्त के दिनोंकरके वही पराशरमुनिगति लक्षणकहते हैं प्राकृतगति में स्थित बुध जो उदयहोय तो चालीसदिन उदित रहता है औ अस्तहोय तो चालीसदिनतक अस्तहीरहता है। इसीभांति मिश्रा में तीसदिन संक्षिप्ता में बाईसदिन तीक्ष्णा में अठारह

दिन योगान्ता में नौदिन घोरामें पन्द्रहदिन औ पापागति में स्थित बुध उदय होय तो ग्यारहदिन उदितरहै औ अस्तहोय तो ग्यारहदिन अस्तरहै । यह उदयास्त गणितवासना से सिद्धनहीं होसक्ता पूर्वशास्त्र के अनुरोध से वराह मिहिराचार्य ने कहा है १२ । १३ ॥

प्राकृतगत्यामारोग्यवृष्टिसस्यप्रवृद्धयःक्षेमम् ॥
संक्षिप्तमिश्रयोर्मिश्रमेतदन्यासुविपरीतम् १४ ॥

बुध प्राकृतगति में स्थितहोय तो प्रजा में आरोग्यरहै वर्षाहोय खेती की बहुत वृद्धिहोय औ लोकमें कल्याणरहै । संक्षिप्ता औ मिश्रागति में बुधहोय तो यहफल मिश्रहोता है अर्थात् कुछ शुभ औ कुछ अशुभ । औ तीक्ष्णा घोरा योगान्ता औ पापा में बुधके रहनेसे पूर्वोक्तफल सब उलटा होता है अर्थात् आरोग्यआदि नहींहोते १४ ॥

ऋज्व्यतिवक्रावक्राविकलाचमतेनदेवलस्यैताः ॥
पञ्चचतुर्द्व्येकाहाऋज्व्यादीनांपडभ्यस्ताः १५ ॥

स्वभावसे जो अपनेमार्गमें चलाजाय उसगतिका नामऋज्वीहै । वक्रीग्रह की गतिका जिसदिन अभावहोय उसको अतिवक्रागति कहतेहैं सूधेमार्गको छोड़ जबग्रह उलटा चलनेलगे उसको वक्रागति कहते हैं । विकारसे जोगति न्यूनहोय उसकानाम विकलागति है । येचार गति देवलमुनि के मतसे कही हैं । अब इनका प्रमाण कहते हैं । तीसदिन ऋज्वीका प्रमाणहै चौबीस दिन अतिवक्राका बारह दिन वक्राका औछदिन विकलागतिका प्रमाण है । यहतात्पर्य है कि जो बुधउदय होकर तीसदिनरहै अथवा अस्ततीस दिनतक रहै तो ऋज्वी गतिमेंहोताहै । चौबीस दिन उदय अथवा अस्तरहै । तो अतिवक्रा में होताहै । ऐसेही और भी जानो । अब इन गतियोंका फल कहते हैं १५ ॥

ऋज्वीहिताप्रजानामतिवक्रार्थंगतिर्विनाशयति ॥
शस्त्रभयदाचवक्राविकलाभयरोगसंजननी १६ ॥

ऋज्वीगति प्रजाका शुभकरती है । अतिवक्रा दुर्भिक्ष करती है । वक्रागति युद्धसे भयकरती है । विकलागति प्रजामेंभय औ रोग करनेवाली है १६ ॥

पौषापाढश्रावणवैशाखेष्विन्दुजःसमाघेषु ॥
दृष्टोभयायजगतःशुभफलकृत्प्रोषितस्तेषु १७ ॥

पौष आषाढ श्रावण वैशाख औमाघ इनमहिनोंमें बुध उदितरहै तो जगत् को भयदेताहै । औ इनमहिनोंमें अस्तरहै तो शुभफल करता है १७ ॥

कार्त्तिकेऽश्वयुजिवायदिमासेदृश्यतेतनुभवःशिशिरांशोः ॥

शस्त्रचौरहुतभुग्गदतोयक्षुद्भयानिचतदाविदधाति १८ ॥

कार्तिक औ आश्विन महीनेमें बुधका उदयहै तो युद्ध भय चौरभय अग्नि-भय रोगभय जलभय औ दुर्भिक्षभय होता है १८ ॥

रुद्धानिसौम्येऽस्तमितेपुराणियान्युद्गतेतान्युपयांतिमोक्षम् ॥
अन्येतुपश्चादुदितेवदंतिलाभःपुराणांभवतीतितज्ज्ञाः १९ ॥

बुधके अस्तकालमें जो शत्रुकानगर राजाघेरलेवे तो बुधका उदयहोनेपर वह नगरकाघेरा छुटजाताहै अर्थात् नगरघेरनेवालेके हाथ नहीं लगता । नन्दी आदि आचार्य यहकहते हैं कि पश्चिम दिशाको बुधका उदयहोय तो घेरने वालेके हाथ वह नगर आताहै । पूर्वमें उदयहोनेसे नगरलाभ नहीं होता नगर घेरेसे छुट जाता है १९ ॥

अबबुधकेबिम्बकावर्ण कहते हैं ॥

हेमकान्तिरथवाशुकवर्णःसस्यकेनमणिनासदृशोवा ॥
स्निग्धमूर्तिरलघुश्चहितायव्यत्ययेनशुभकृच्छशिपुत्रः २० ॥

इतिश्रीवराहमिहिरकृतौ बृहत्संहितायांबुधचारः सप्तमोऽध्यायः ७ ॥

बुधके बिंबकारंग सुवर्णके तुल्यहो तोतेके समानहरारंगहो अथवा सस्य-कमणिके समनीलवर्णहो स्निग्धमूर्ति अर्थात् निर्मलदेहहो औ बिंबबड़ा होय तो जगत्का कल्याण करता है औइससे विपरीत स्वरूपहोय तो अशुभफल करता है २० ॥

इतिश्रीबराहमिहिराचार्य्यकीबनाईबृहत्संहितामेंबुधचार
नामकसातवांअध्यायसमाप्तहुआ ७ ॥

आठवां अध्याय ॥

गुरुचार ॥

नक्षत्रेणसहोदयमुपगच्छतियेनदेवपतिमन्त्री ॥
तत्संज्ञंवक्तव्यंवर्षमासक्रमेणैव १ ॥

बृहस्पति जिसनक्षत्रमें स्थितहोकर उदयको प्राप्तहोय वह बर्षमास क्रमकर-के उसी नक्षत्रके नामसे कहना चाहिये । अर्थात् पूर्णमासीको जिस महीनेमें चित्रानक्षत्रहोय वहमहीना चैत्रहोताहै इसीभांति जिसबर्षमें चित्रानक्षत्र स्थितबृहस्पति उदयहोय वहबर्ष चैत्रकहावेगा १ ॥

वर्षाणिकार्तिकादीन्याग्नेयाद्भद्वयानुयोगीनि ॥
क्रमशस्त्रिभंतुपञ्चममुपांत्यमंत्यंचयद्वर्षम् २ ॥

कृत्तिकाआदि दोदो नक्षत्रों करके क्रमसे कार्तिक आदि वर्ष होतेहैं । पांचवां

ग्यारहवां औरबारहवां वर्षतीन २ नक्षत्रोंकरके होते हैं। इसका यहतात्पर्य है कि जबकृत्तिका अथवा रोहिणीपर स्थितवृहस्पति उदयहोय उसवर्षको कार्तिक कहते हैं। मृगशिरा आर्द्रामें मार्गशीर्षवर्ष पुनर्वसुपुष्यमें पौष आश्लेषा मघामेंमाघ पूर्वाफाल्गुनी उत्तराफाल्गुनी औहस्तमें फाल्गुन चित्रास्वातिमें चैत्र विशाखा अनुराधामें वैशाख ज्येष्ठामूलमें ज्येष्ठ पूर्वाषाढ़ा उत्तराषाढ़ा में आषाढ़ श्रवण धनिष्ठा में श्रावण शतभिषक् पूर्वाभाद्रपदा उत्तराभाद्रपदा में भाद्रपद और रेवती अश्विनी भरणी में स्थित वृहस्पति उदयहोय वहवर्षआश्विन कहाता है २॥

अबइनवर्षोंका फलकहते हैं॥

शकटानलोपजीवकगोपीडाव्याधिशस्त्रकोपश्च॥
वृद्धिस्तुरक्तपीतककुसुमानांकार्तिकेवर्षे ३॥

कार्तिकनाम वर्षहोनेसे गाड़ी जोतके जो जीविका करते हैं अग्निसे जो जीवन करते हैं सुनार लुहार आदि औ गौ इनसबको पीड़ाहोती है। रोग औ युद्ध होतेहैं। जिन वृक्षआदिकोंकेलाल औ पीलेफूलहों उनकी वृद्धिहोतीहै ३॥

सौम्येब्देऽनावृष्टिर्मृगाखुशलभाण्डजैश्चसस्यवधः॥
व्याधिभयंमित्रैरपिभूपानांजायतेवैरम् ४॥

मार्गशीर्ष नामक वर्षमें वर्षा नहीं होती मृग मूषक टीड़ी औ तोते आदि पक्षी खेतीका नाश करतेहैं। रोगका भय होताहै। राजाओंका अपने मित्रोंके साथभी वैर होजाताहै ४॥

शुभकृज्जगतःपौषोनिवृत्तवैराःपरस्परंक्षितिपाः॥
द्वित्रिगुणोधान्यार्घःपौष्टिककर्मप्रसिद्धिश्च ५॥

पौष नामक वर्ष जगत् का कल्याण करताहै। राजा परस्पर वैरको त्याग देते हैं। अन्नका भाव दूना तिगुना सस्ता होजाता है पुष्टिके देनेवाले कर्म सिद्ध होते हैं ५॥

पितृपूजापरिवृद्धिर्माघेहार्दिश्चसर्वभूतानाम्॥
आरोग्यवृष्टिधान्यार्घसम्पदोमित्रलाभश्च ६॥

माघ नाम वर्षमें पितरों की पूजा बहुत होतीहै। सब जीव संतुष्ट होते हैं आरोग्य रहते हैं। वृष्टि होती है। अन्न सस्ता रहताहै। और मित्रों का लाभ होता है ६॥

फाल्गुनवर्षेविन्द्यात्क्वचित्क्वचित्क्षेमवृष्टिसस्यानि॥
दौर्भाग्यंप्रमदानां प्रबलाश्चौरानृपाश्चोग्राः ७॥

फाल्गुननाम वर्षमें किसी २ देशमें क्षेम वर्षा औ खेती होतीहै सब देशों में क्षेम आदि नहीं होते। स्त्री दुर्भगा होतीहै अर्थात् अपने पतियों की प्रिया नहीं होतीं। चोर प्रबल होते हैं औ राजा क्रूरहोते हैं ७॥

चैत्रेमन्दावृष्टिःप्रियमन्नंक्षेममवनिपामृदवः॥
वृद्धिश्चकोशधान्यस्यभवतिहिपीडाचरूपवताम् ८॥

चैत्रनाम वर्षमें वर्षा अल्पहोतीहै। अन्नमहँगा होताहै। प्रजामें कल्याण रहताहै राजा क्रूरनहीं होते। कोश धान्य अर्थात् जो अन्नफली मेंसे निकलतेहैं उड़द मूंगआदि उनकी वृद्धिहोतीहै। औ उत्तम रूपवालोंको पीड़ाहोतीहै ८॥

वैशाखेधर्मपराविगतभयाःप्रमुदिताःप्रजाःसनृपाः॥
यज्ञक्रियाप्रवृत्तिर्निष्पत्तिःसर्वसस्यानाम् ९॥

वैशाख नाम वर्षमें राजा औ प्रजा अपने२ धर्ममें तत्पर निर्भय औ प्रसन्न रहते हैं। यज्ञकर्मकी प्रवृत्तिहोती है। औ सबखेती भी भलीभांति फलतीहै ९॥

ज्येष्ठेज्ञातिकुलधनश्रेणीश्रेष्ठानृपाःसधर्मज्ञाः॥
पीड्यन्तेधान्यानिचहित्वाकंगुंशमीजातिम् १०॥

ज्येष्ठनाम वर्षमें ज्ञाति कुल धन औ श्रेणी अर्थात् सजातीय शिल्पी आदि मनुष्योंके समूह उनमें जो श्रेष्ठ मनुष्य राजा औ धर्मको जानने वाले पीड़ा को प्राप्त होते हैं। औ कांगनी तथा तिल आदि शमीधान्यको छोड़ और अन्नों का भी नाशहोता है १०॥

आषाढेजायन्तेसस्यानिक्वचिदवृष्टिरन्यत्र॥
योगक्षेमंमध्यंव्यग्राश्चभवन्तिभूपालाः ११॥

आषाढ नाम वर्षमें कहीं २ खेती होती है सर्वत्र नहीं। औ किसी २ देश में वर्षाभी नहीं होती। योग अर्थात् अलब्ध वस्तुका लाभ औ क्षेम अर्थात् लब्धवस्तुकी रक्षा मध्यमहोती है अर्थात् न तो उत्कृष्ट औ न निकृष्ट हो औ राजा युद्ध आदिमें व्यग्रहोते हैं ११॥

श्रावणवर्षेक्षेमंसम्यक्सस्यानिपाकमुपयान्ति॥
क्षुद्रायेपाखण्डाःपीड्यन्तेयेचतद्भक्ताः १२॥

श्रावण नाम वर्षमें कल्याण होताहै सब खेती भली भांति पकती है और जो क्षुद्र पाखण्डी अर्थात् वेदके विरोधी औ उन पाखण्डियों के जो भक्त सब पीड़ाको प्राप्त होतेहैं १२॥

भाद्रपदेवल्लीजंनिष्पत्तिंयातिपूर्वसस्यञ्च॥
नभवत्यपरंसस्यंक्वचित्सुभिक्षंक्वचिच्चभयम् १३॥

भाद्रपदनाम वर्षमें वेलसे उत्पन्न होनेवाले मूंग आदि भलीभांति पकतेहैं औ पहले बोईहुई खेती होती है पीछेबोई नहीं फलती। किसी देशमें सुभिक्ष होताहै औ किसीदेशमें भय होताहै १३ ॥

आश्वयुजेऽब्देऽजस्रंपतति जलंप्रमुदिताःप्रजाःक्षेमम् ॥
प्राणचयःप्राणभृतांसर्वेषामन्नबाहुल्यम् १४ ॥

आश्विन नाम वर्षमें निरंतर वर्षा होती है। सब प्रजा प्रसन्न रहतीहैं क्षेम होताहै सब जीवोंके बलकी वृद्धिहोती है। अन्न बहुत होताहै १४ ॥

उदगारोग्यसुभिक्षक्षेमकरोवाक्पतिश्चरन्भानाम् ॥
याम्येतद्विपरीतोमध्येनमध्यफलदायी १५ ॥

बृहस्पति नक्षत्रोंके उत्तर ओर होकर गमन करै तो आरोग्य सुभिक्ष औ क्षेमकरताहै। नक्षत्रोंके दक्षिणओर होकर जाय तो इससे उलटा फल करता है और नक्षत्रोंके मध्यमेंहोकर निकले तो मध्यम फल अर्थात् न शुभ औ न अशुभ फल देताहै १५ ॥

विचरन्भद्वयमिष्टफलस्तत्सार्द्धंवत्सरेणमध्यफलः ॥
सस्यानांविध्वंसीविचरेदधिकंयदिकदाचित् १६ ॥

बृहस्पति एक वर्ष में दो नक्षत्रभोगे तो उत्तमफल करताहै। अढाई नक्षत्र एक वर्षमें भोगे तो मध्यफल करता है औ अढाईसेभी अधिक नक्षत्र एकवर्ष में बृहस्पति भोगजाय तो खेतीका नाश करता है १६ ॥

अनलभयमनलवर्णेव्याधिः पीतेरणागमःश्यामे ॥ हरितेचतस्करेभ्यः पीडारक्तेतुशस्त्रभयम् १७ धूम्राभेनावृष्टिस्त्रिदशगुरौनृपवधो दिवादृष्टे ॥ विपुलेऽमलेसुतारे रात्रौदृष्टेप्रजाःस्वस्थाः १८ ॥

बृहस्पति का वर्ण अग्निके समानहोय तो प्रजा में अग्नि भय होय पीला रंग होय तो रोग श्याम रंगहोय तो युद्ध हरारंग होय तो चोरोंसे प्रजाको पीड़ा लाल रंग होय तो युद्ध औ धूम्रवर्ण बृहस्पति का होय तो अनावृष्टि होती है। दिनमें बृहस्पति देखपड़ै तो राजा की मृत्यु होय बृहस्पति का बिम्बबड़ा देखपड़े निर्मल होय तारा अच्छी होय औ रात्रि के समय देखपड़े तो प्रजा स्वस्थ रहती हैं १७। १८ ॥

रोहिण्योऽनलभंचवत्सरतनुर्नाभिस्त्वषाढद्वयं सार्पंहृत्पितृदैवतं चकुसुमंशुद्धैःशुभंतैःफलम् ॥ देहेक्रूरनिपीडितेऽग्न्यऽनिलजंनाभ्यां भयंक्षुत्कृतं पुष्येमूलफलक्षयोऽथहृदयेसस्यस्यनाशोध्रुवम् १९ ॥

संवत्सर पुरुषका रोहिणी औ कृत्तिका शरीर हैं। पूर्वाषाढ़ा औ उत्तराषा-

ढ़ा नाभिहैं। आश्लेषा हृदय है। औ मघा नक्षत्र पुष्प है। ये नक्षत्र पापग्रहों करके रहित होयँ तो लोक में शुभफल होता है। शरीर के नक्षत्र रोहिणी औ कृत्तिका क्रूरग्रह अर्थात् सूर्य मंगल औ शनि इन करके निपीड़ित होय अर्थात् ये ग्रह उन नक्षत्रों में बैठेहोयँ तो अग्नि का औ पवन का भय होता है नाभि नक्षत्र क्रूरग्रह पीड़ित होय तो दुर्भिक्ष भय होताहै। पुष्यनक्षत्र पीड़ित होय तो फल औ मूलोंका नाश होताहै औ क्रूरग्रहों करके हृदय नक्षत्र पीड़ित होय तो अवश्यही खेतीका नाशहोय १९॥

अबप्रभवआदिसाठवर्षलानेकाप्रकारलिखतेहैं॥

गतानिवर्षाणिशकेन्द्रकालाद्धतानिरुद्रैर्गुणयेच्चतुर्भिः॥ नवाष्टपंचाष्टयुतानिकृत्वाविभाजयेच्छून्यशरागरामैः २० लब्धेनयुक्तंशकभूपकालंसंशोध्यषष्ट्याविषयैर्विभज्य॥ युगानिनारायणपूर्वकाणिलब्धानिशेषाःक्रमशःसमाःस्युः २१॥

शाके को ग्यारहसे औ चारसे गुणैअर्थात् ४४ से गुणै फिर उसमें ८५८९ इतने अंक जोड़कर ३७५० का भाग देवै लब्ध अंक वर्षहोंगे वेही बृहस्पति की राशिहैं। शेप अंक को तीससे गुण पूर्वोक्त भाजका भाग देवै लब्ध अंश राशियों के नीचे लिखे। फिर भाग शेपको साठसे गुण भाजक का भागदे लब्धकला अंशोंके नीचे लिखै फिर शेषको साठ गुणाकर भाजक अंक ३७५० का भागदे लब्ध विकलाओं को कलाओंके नीचे स्थापनकरै। इसराश्यादि लब्धिको गत शकमें जोड़देवै अर्थात् लब्धिका ऊपरला अंकगत शकमें जोड़ शेप तीन अंक उसके नीचे लिखदेवै। फिर ऊपरले अंकमें साठका भागदेवै लब्धिगत षष्ठि संवत्सरों की संख्याहोगी अर्थात् शकारम्भसे प्रभवआदि साठ वर्षों की जितनी आवृत्ति होचुकी हैं उनकी संख्या होगी क्योंकि बृहस्पतिका एक राशिभोग एक वर्ष है। शेष प्रभव से लेकर वर्तमान काल तक गतवर्षों की संख्याहोगी। फिर शेप संख्याके ऊपर ले अंक में पांचका भागदेव लब्धि वर्तमान षष्ट्यब्द के गत नारायण आदि युगों की संख्या होगी औ शेप वर्तमान युग के व्यतीत वर्षों की संख्या होगी। इसका उदाहरण अगले श्लोक की व्याख्यामें लिखेंगे २०।२१॥

एकैकमब्देषुनवाहतेषुदत्त्वापृथग्द्वादशकक्रमेण॥
हत्वाचतुर्भिर्वसुदेवताद्यान्युडूनिशेषांशकपूर्वमब्दम् २२॥

अबबृहस्पतिकेनक्षत्रकाज्ञानऔउससेवर्षकाज्ञानकहतेहैं॥

वर्तमान षष्ट्यब्द के जो विकला पर्यंत व्यतीत राशि अर्थात् वर्षआयेहैं उ-

नको दोस्थान में लिख एक स्थानमें ९ से गुणै। दूसरे स्थान में १२ का भाग देवै प्रथम लब्धिराशि आवेगी आगेभी पूर्वोक्त रीतिसे अंश कला विकला लब्धिलेवै। इस राश्यादि लब्धिको नवगुणित राश्यादिक में यथा स्थान जोड़ देवै। फिर ऊपरले अंक में चारका भागदेवै। लब्ध अंक धनिष्ठाआदि गतनक्षत्रों की संख्या होगी जो लब्धअंक २७ से अधिकहोय तो २७ का भागदेकर शेष को गतधनिष्ठादि नक्षत्र संख्याजानै। चारका भागदेनेसे जो शेषरहै तदंश पूर्ववर्ष होताहै अर्थात् लब्ध नक्षत्रसे अगले नक्षत्र के उतने सावयवपाद गुरु ने भोगलिये तब वर्तमानसे पूर्व कार्तिकआदि वर्षकी प्रवृत्तिहुईहै। यहमध्यम गतिसे कहा है। स्फुटगति से नहीं। जिस दिन बृहस्पतिका उदय होय उस दिनसे इनवर्षोंका आरम्भ होताहै अब इनतीन श्लोकोंका एक उदाहरण लिखते हैं शक १८०४ में प्रभव आदि वर्ष जानना चाहते हैं तो शक १८०४ को ४४से गुणादिया तो हुये ७९३७६ इनमें८५८९जोड़े तो हुये८७९६५ इनमें ३७५० का पूर्वोक्त रीतिसे भाग दिया तो राश्यादि फल प्राप्तहुआ २३। १३ ४३। १२ इसके ऊपरके अंक २३ को शक १८०४ में जोड़दिया तो हुये१८२७ इसमें ६० का भागदिया तो लब्ध ३० हुये यह शकारम्भसे प्रभव आदि षष्टि वर्षों की जितनी आवृत्ति होचुकी हैं उनकी संख्याहुई शेष २७। १३। ४३। १२ रहे इस से ज्ञात हुआ कि वर्तमान इकत्तरवीं प्रभवादिकों की आवृत्ति में २७ वर्ष व्यतीत होगये अब अट्ठाईसवां वर्ष जयनामक व्यतीत होरहा है शेष २७ वर्षों में ५ का भाग दिया तो लब्ध ५ हुये शेष २ रहे इससे यह ज्ञात हुआ कि नारायण आदि बारह युगों में ५ युग व्यतीत होगये छठां युग अहिर्बुध्न्य नामक वर्तमान है उस युगके भी दो वर्ष व्यतीत होगये तीसरा जय नामक वर्ष है यह युगका तीसरा वर्ष है इसलिये इसकी इडा वत्सर संज्ञाहै। पहिले साठका भागदेने से जो शेष २७। १३। ४३। १२ बचे इनको दोस्थानमें लिख प्रथम स्थानमें ९ से गुणदिया तो हुये २४७। ३। २८। ४८ दूसरे स्थानमें १२ का भागदिया तो लब्ध हुये २। ८। ३८। ३६ इनको पूर्वगुणित अंकोंमें यथा स्थान जोड़ दिया तो हुये२४९। १२। ७। २४ ऊपरके अंक २४९ में ४ का भागदिया तो लब्ध ६२ हुये ये २७ से अधिकहैं इसलिये २७ का भाग देकर शेष ८ रहे इससे ज्ञातहुआ कि धनिष्ठा से ८ नक्षत्र व्यतीतहुये नवमनक्षत्र रोहिणी वर्तमान है इसलिये इसवर्षका नाम कार्तिकनाम वर्षहै क्योंकि कृत्तिका औ रोहिणी दोनक्षत्रों करके कार्तिक वर्ष होताहै यह पहिले लिखआये हैं। चारका भागदेनेसे शेषरहे १। १२। ७। २४ इससे ज्ञातहुआ कि वर्तमान रोहिणी नक्षत्रका एक पाद औ दूसरे पादका १२। ७। २४ यह अवयव जिससमय मध्यमगति से बृहस्पति ने भोगलिया

उससमयसे इसकार्तिक नाम वर्षका आरम्भहुआ है औ उसीसमय गुरुका उदयभी हुआ औ जयनामक वर्ष भी तभी से लगा २२ ॥

विष्णुःसुरेज्योबलभिद्धुताशस्त्वष्टोत्तरप्रोष्ठपदाधिपश्च ॥
क्रमाद्युगेशाःपितृविश्वसोमशक्रानलाख्याऽश्विभगाःप्रदिष्टाः २३ ॥

प्रभवआदि साठवर्षों में पांच २ वर्ष करके जो बारह युग होते हैं उन के नाम कहते हैं। नारायण बृहस्पति इन्द्र अग्नि त्वष्टा अहिर्बुध्न्य पिता बिश्व सोम इन्द्राग्नि अश्वि औ भग ये बारह देवता क्रमसे बारह युगोंके स्वामी हैं औ येही नाम उन युगों के हैं २३ ॥

संवत्सरोऽग्निःपरिवत्सरोऽर्कइडादिकःशीतमयूखमाली ॥
प्रजापतिश्चाप्यनुवत्सरःस्यादुद्वत्सरःशैलसुतापतिश्च २४ ॥

एक युग में पांचवर्ष होतेहैं संवत्सर परिवत्सर इडावत्सर अनुवत्सर औ उद्वत्सर ये उन पांचोंवर्षों के क्रमसे नाम हैं औ अग्नि सूर्य चन्द्र ब्रह्मा औ रुद्र ये पांचों क्रमसे उन वर्षोंके देवता हैं॥ अब इनका फलकहते हैं २४ ॥

वृष्टिःसमाद्येप्रमुखेद्वितीयेप्रभूततोयाकथितातृतीये ॥
पश्चाज्जलंमुंचतियच्चतुर्थेस्वल्पोदकंपंचमवर्षमुक्तम् २५ ॥

संवत्सरनाम पहिले वर्षमें समवृष्टि होतीहै अर्थात् न बहुत औ न थोड़ी। परिवत्सर नाम दूसरे वर्ष में प्रथम भागमें अर्थात् श्रावण भाद्रपद में वर्षा होती है उत्तरभाग आश्विन कार्तिक में नहीं होती। इडावत्सर नाम तीसरे वर्ष में बहुत वर्षाहोय अनुवत्सरनाम चौथे वर्षमें पिछलेभाग अर्थात् आश्विन कार्तिक में वर्षाहोती है पूर्वभाग श्रावण भाद्रमें नहींहोती। उद्वत्सरनाम पांचवें वर्षमें अल्पवर्षा होती है। अब बारहयुगोंका फल कहते हैं २५ ॥

चत्वारिमुख्यानियुगान्यथैषांविष्णिवन्द्रजीवानलदैवतानि ॥
चत्वारिमध्यानिचमध्यमानिचत्वारिचान्त्यान्यधमानिविन्द्यात् २६॥

बारह युगों में नारायण इन्द्र बृहस्पति औ अग्नि ये पहिले चारयुग उत्तम में फल देते हैं। मध्य के चारयुग त्वष्टा अहिर्बुध्न्य पिता औ बिश्व ये मध्यम फल देते हैं। पिछले चारयुग सोम इन्द्राग्नि अश्वि औ भग ये अनिष्ट फल देनेहारे हैं २६ ॥

आद्यंधनिष्ठांशमभिप्रपन्नोमाघेयदायात्युदयंसुरेज्यः ॥
षष्ट्यब्दपूर्वःप्रभवःसनाम्नाप्रवर्ततेभूतहितस्तदाब्दः २७ ॥

धनिष्ठा नक्षत्र के प्रथमचरणमें स्थित बृहस्पति जब माघमहीनेमें उदयको प्राप्तहोय तब साठ वर्षोंमें पहिले वर्ष प्रभव का आरम्भ होता है प्रभववर्ष सब

जीवोंका कल्याण करताहै। यहां चान्द्रमानसे माघमहीना जानना २७॥

क्वचित्ववृष्टिःपवनाग्निकोपःसन्तीतयःश्लेष्मकृताश्चरोगाः॥
संवत्सरेऽस्मिन्प्रभवेप्रवृत्तेनदुःखमाप्नोतिजनस्तथापि २८॥

प्रभववर्ष में किसी२ देशमें वर्षा नहीं होती पवनका औ अग्निका कोप होता है। कहीं२ अतिवृष्टि अनावृष्टि आदि ईति अर्थात् उपद्रव होते हैं कफ के रोग होते हैं। तौभी लोकदुःख नहींपाते सुखीही रहते हैं २८॥

तस्माद्द्वितीयोविभवःप्रदिष्टःशुक्लस्तृतीयःपरतःप्रमोदः॥ प्रजापतिश्चेतियथोत्तराणिशस्तानिवर्षाणिफलानिचैषाम् २९ निष्पन्नशालीक्षुयवादिसस्यांभयैर्विमुक्तामुपशान्तवैराम्॥ संहृष्टलोकाकलिदोषमुक्तांक्षत्रंतदाशास्तिचभूतधात्रीम् ३०॥

प्रभव से आगे दूसरा वर्ष विभव है तीसरा शुक्ल है चौथा प्रमोद है औ पांचवां प्रजापति है। ये वर्ष एकसे एक उत्तम हैं औ इनका यहफल है कि धान ईख यव आदिपकी खेती करके युक्तभय औ वैरसे रहित प्रसन्नलोकों करके युक्त कलिदोष अर्थात् अधर्म रोग दारिद्र्य आदि इनसे रहित पृथिवीको राजा शासन करते हैं २९। ३०॥

आद्योऽङ्गिराःश्रीमुखभावसंज्ञौयुवासुधातेतियुगेद्वितीये॥
वर्षाणिपंचैवयथाक्रमेणत्रीण्यत्रशस्तानिसमेपरेद्वे ३१॥

बार्हस्पत्य नाम दूसरे युग में प्रथम वर्ष अंगिरा दूसरा श्री मुख तीसरा भाव चौथा युवा औ पांचवां सुधाता नामवर्ष है। इनमें पहिले तीनवर्ष शुभ हैं औ पिछले दोवर्ष मध्यम हैं ३१॥

त्रिष्वंगिराद्येषुनिकामवर्षीदेवोनिरातंकभयाश्चलोकाः॥
अब्दद्वयेऽन्त्येऽपिसमासुवृष्टिःकिन्त्वत्ररोगाःसमरागमश्च ३२॥

अंगिराआदि पहिले तीनवर्षों में वर्षा अच्छी होती है लोक में उपद्रव औ भयनहींहोता। पिछलेदोवर्षोंमें भी मध्यमवृष्टिहोती है परंतु रोग औ युद्ध का भयहोता है ३२॥

शाक्रेयुगेपूर्वमथेश्वराख्यंवर्षद्वितीयंबहुधान्यमाहुः॥ प्रमाथिनंविक्रममप्यतोन्यद्वृषंचविन्द्याद्गुरुचारयोगात् ३३ आद्यंद्वितीयंचशुभेतुवर्षेकृतानुकारंकुरुतःप्रजानाम्॥ पापःप्रमाथीवृषविक्रमौतुसुभिक्षदौरोगभयप्रदौच ३४॥

ऐन्द्रनाम तीसरेयुगमें पहिलावर्ष ईश्वर दूसरा बहुधान्य तीसरा प्रमाथी चौथाविक्रम औपांचवां वृषनाम वर्षहै। येपांचवर्ष बृहस्पति के चारसेजानै।

इनमें पहिले दोवर्ष शुभहैं प्रजामें सत्ययुग कासा समयकरतेहैं प्रमाथीनाम तीसरावर्ष अशुभहै पिछले दोवर्ष सुभिक्ष करतेहैं औ रोग तथा भयभी करते हैं ३३ । ३४ ॥

श्रेष्ठंचतुर्थस्ययुगस्यपूर्वंयंचित्रभानुंकथयंतिवर्षम्॥ मध्यंद्वितीयं तुसुभानुसंज्ञंरोगप्रदंमृत्युकरंनतंच ३५ तारणंतदनुभूरिवारिदंसस्य वृद्धिमुदितातिपार्थिवम् ॥ पंचमंव्ययमुशन्तिशोभनंमन्मथंप्रबल मुत्सवाकुलम् ३६ ॥

हुताशननाम चौथे युगका पहलावर्ष चित्रभानुशुभहै । दूसरावर्षसुभानु मध्यमहै । तीसरावर्ष नतरोग औ मृत्युकरता है । चौथावर्षतारणहै जिसमें बहुत वर्षा होतीहै औ खेती की वृद्धिसे राजा प्रसन्न रहतेहैं । पांचवांवर्ष व्यय है यहवर्ष शुभहै इसमें कामदेव अधिक होताहै । औ विवाह आदिउत्सव भी बहुत होते हैं ३५ । ३६ ॥

त्वाष्ट्रेयुगेसर्वजिदाद्यउक्तः संवत्सरोन्यःखलुसर्वधारी ॥
तस्माद्विरोधीविकृतःखरश्चशस्तोद्वितीयोऽत्रभयायशेषाः ३७॥

त्वाष्ट्रनाम पांचवें युगमें पहिलावर्ष सर्वजित् दूसरा सर्वधारी तीसरा विरोधी चौथा बिकृत औ पांचवां वर्ष खरहै इनमें दूसरावर्ष सर्वधारी शुभहै शेष चारोंवर्ष भयकरते हैं अर्थात् अशुभ हैं ३७ ॥

नन्दनोथविजयोजयस्तथामन्मथोस्यपरतश्चदुर्मुखः ॥
कान्तमत्रयुगआदितस्त्रयंमन्मथःसमफलोधमःपरः ३८ ॥

अहिर्बुध्न्यनाम छठेयुग में पहिलावर्ष नन्दन दूसरा विजय तीसरा जय चौथा मन्मथ औ पांचवां वर्ष दुर्मुख है इनमें पाहिले तीनवर्ष शुभ हैं चौथा मध्यम है औ पांचवांवर्ष अशुभ है ३८ ॥

हेमलम्बइतिसप्तमेयुगेस्याद्विलम्बिपरतोविकारिच ॥ शर्वरीति तदनुप्लवःस्मृतोवत्सरोगुरुवशेनपंचमः ३९ ईतिप्रायाप्रचुरपवनावृ ष्टिरब्देतुपूर्वेमन्दंसस्यंनबहुसलिलंवत्सरेऽतोद्वितीये ॥ अत्युद्वेगः प्रचुरसलिलःस्यात्तृतीयश्चतुर्थो दुर्भिक्षायप्लवइतिततःशोभनोभूरि तोयः ४० ॥

मैत्रनाम सातवें युगमें पहिलावर्ष हेमलंब दूसरा विलंबि तीसरा विकारि चौथा शर्वरी औ पांचवां वर्ष बृहस्पतिके चार संप्लव नामहैं पहिले वर्ष में ईतियों करके औ प्रचण्डपवन करके युक्त वर्षा होताहै । दूसरे वर्षमें खेती न्यून होतीहै औ वर्षा भी स्वल्प होतीहै । तीसरे वर्षमें प्रजा को बहुत उद्वेग होताहै

औ वर्षा बहुतहोतीहै। चौथेवर्ष में दुर्भिक्षहोताहै औ पांचवांवर्ष शुभहै उसमें वर्षा बहुत होतीहै ३९। ४० ॥

वैश्वेयुगेशोकहृदित्यथाद्यःसंवत्सरोऽतःशुभकृद्‌द्वितीयः ॥ क्रोधीतृतीयःपरतःक्रमेण विश्वावसुश्चेतिपरावसुश्च ४१ पूर्वापरौप्रीतिकरौप्रजानामेषांतृतीयोबहुदोषदोऽब्दः ॥ अन्त्यौसमौकिन्तुपराभवोऽग्नेःशस्त्रामयार्त्तिर्द्विजगोभयंच ४२ ॥

वैश्वनाम आठवेंयुगमें पहिला वर्ष शोकहृत् दूसरा शुभकृत् तीसरा क्रोधी चौथा विश्वावसु औ पांचवांवर्ष परावसुहै। इनमें पहिले दोवर्ष प्रजाकी प्रीति करतेहैं। तीसरा वर्ष बहुत अशुभहै औ पिछले दो वर्ष मध्यम हैं परन्तु उन दोनोंमें अग्निका भय होताहै। शस्त्रोंसे औ रोगोंसे प्रजा में पीड़ा होतीहैं औ गौ तथा ब्राह्मणों को भयहोताहै ४१। ४२ ॥

आद्यःप्लवंगोनवमेयुगेऽब्दःस्यात्कीलकोन्यःपरतश्चसौम्यः ॥ साधारणोरोधकृदित्यथैवंशुभप्रदौकीलकसौम्यसंज्ञौ ४३ कष्टःप्लवंगोबहुशःप्रजानांसाधारणेऽल्पंजलमीतयश्च॥ यःपञ्चमोरोधकृदित्यथाऽब्दश्चित्रंजलंतत्रचसस्यसम्पत् ४४ ॥

सौम्यनाम नवमयुगमें पहिलावर्ष प्लवंग दूसरा कीलक तीसरा सौम्य चौथा साधारण औ पांचवांवर्ष रोधकृत्है इनमें कीलक औ सौम्य शुभ हैं प्लवंग नाम वर्ष प्रजाको अनेक प्रकार से अशुभ करताहै साधारणनाम वर्ष में वर्षा थोड़ी होतीहै औ मूषक टीडी आदिका उपद्रव होताहै। औ रोधकृत्नाम पांचवें वर्ष में कहीं वर्षाहोय कहीं न होय औ खेती अच्छी होय ४३। ४४ ॥

इन्द्राग्निदैवंदशमंयुगंयत्तत्राद्यमब्दंपरिधाविसंज्ञम् ॥ प्रमाथ्यथोविक्रमसप्यतोन्यत्स्याद्राक्षसंचानलसंज्ञितंच ४५ परिधाविनिमध्यदेशनाशोनृपहानिर्जलमल्पमग्निकोपः ॥ अलसस्तुजनःप्रमाथिसंज्ञेडमरंरक्तकपुष्पबीजनाशः ४६ तत्परःसकललोकनन्दनोराक्षसःक्षयकरोऽनलस्तथा ॥ ग्रीष्मधान्यजननोत्रराक्षसोवह्निकोपमरकप्रदोऽनलः ४७ ॥

दशवां युग इन्द्राग्नि देव नामक है। उसमें पहिला वर्ष परिधावि दूसरा प्रमाथी तीसरा विक्रम चौथा राक्षस औ पांचवां वर्ष अनल है। परिधाविनाम वर्षमें मध्यदेशका नाश होता है। राजा की मृत्यु वर्षा थोड़ी औ अग्नि का भय होता है। प्रमाथी नाम वर्षमें लोक आलस्ययुक्त होजातेहैं। शस्त्र सहित कलह होताहै। लालपुष्प औ लालबीज जिनके होयँ उनका नाश होता है।

विक्रम नाम वर्ष सबलोकोंको आनन्द देताहै। राक्षस औ अनल संपूर्ण लोकोंका क्षयकरते हैं। परन्तु राक्षस में ग्रीष्मऋतुके अन्न यव गेहूं आदि होते हैं औ अनलनाम वर्षमें अग्निका भय होताहै औ मरीपड़तीहै। विक्रमवर्षके स्थानमें कहीं २ नन्दनवर्ष लिखाहै ४५। ४६। ४७॥

एकादशेपिंगलकालयुक्तसिद्धार्थरौद्राःखलुदुर्मतिश्च ॥ आद्येतु वृष्टिर्महतीसचौराश्वासोहनूकम्पयुतश्चकासः ४८ यत्कालयुक्तंतद नेकदोषंसिद्धार्थसंज्ञेबहवोगुणाश्च ॥ रौद्रोऽतिरौद्रःक्षयकृत्प्रदिष्टो योदुर्मतिर्मध्यमवृष्टिकृत्सः ४९॥

आश्विननाम ग्यारहवें युगमें पहिला वर्ष पिंगल दूसरा कालयुक्त तीसरा सिद्धार्थ चौथा रौद्र औ पांचवां दुर्मतिनाम वर्ष है। इनमें पहिले वर्ष में बहुत वर्षा होती है। चोर भय होता है। श्वासरोग होता है औ हनु अर्थात् ठोढ़ी के अधोभाग में कंपकरके युक्त खांसीका रोग भी प्रजा में बहुत होताहै। कालयुक्तनाम वर्ष में अनेक प्रकारके दोष होतेहैं औ सिद्धार्थ नाम वर्षमें बहुत गुण हैं। रौद्रवर्ष अत्यन्त अशुभ फल करताहै। औ प्रजाका क्षय करताहै। औ दुर्मतिनाम वर्ष मध्यम वर्षा करता है ४८। ४९॥

भाग्येयुगेदुन्दुभिसंज्ञमाद्यंसस्यस्यवृद्धिंमहतींकरोति ॥ उद्गारिसंज्ञंतदनुक्षयायनरेश्वराणांविषमाचवृष्टिः ५० रक्ताक्षमब्दंकथितंतृतीयंयस्मिन्भयंदंष्ट्रिकृतंगदाश्च ॥ क्रोधस्वबहुक्रोधकरंचतुर्थंराष्ट्राणि शून्यीकुरुतेविरोधैः ५१ क्षयमितियुगस्यान्त्यस्यान्त्यंबहुक्षयकारकं जनयतिभयंतद्विप्राणांकृषीबलवृद्धिदम् ॥ उपचयकरंविट्शूद्राणांपरस्वहृतांतथा कथितमखिलंषष्ट्यब्देयत्तदत्रसमासतः ५२॥

भाग्यनाम बारहवेंयुगमें पहिलावर्ष दुन्दुभिहै। इसवर्षमें खेतीकी बहुत वृद्धिहोती है। दूसरावर्ष उद्गारिनामहै इसवर्षमें राजाओंका क्षयहोताहै। औ विषमवर्षा होती है अर्थात् कहींथोड़ी बर्षाहोती है कहीं बहुत। तीसरावर्ष रक्ताक्षहै। इसवर्षमें दंष्ट्री अर्थात् दाढ़वाले सर्प शूकर आदि जीवोंका भयहोता है। औ रोगभी होते हैं। चौथावर्ष क्रोधनामकहै जिसमें लोकोंको बहुत क्रोध होताहै। औ विरोधकरके देशशून्य होजाते हैं। इसपिछले युगके पिछलेवर्षका नामक्षयहै। वहलोकोंका अनेकप्रकारसे क्षयकरताहै। ब्राह्मणोंको भयदेता है। खेतीकरनेवालोंकी वृद्धि करताहै। वैश्य शूद्र औ परायाधन हरनेवालोंकीभी वृद्धिकरताहै। षष्ट्यब्दनामक ग्रंथमें जोप्रभव आदि साठ वर्षों का फलकहा है वह सब हमने इस वृहस्पति चारमें संक्षेप से कहाहै ५०। ५१। ५२॥

अकलुषांशुजटिलःपृथुमूर्तिःकुमुदकुन्दकुसुमस्फटिकाभः ॥
ग्रहहतोनयदिसत्पथवर्तीहितकरोऽमरगुरुर्मनुजानाम् ५३ ॥
इतिवराहमिहिरकृतौबृहत्संहितायांबृहस्पतिचारोनामाष्टमोध्यायः ८ ॥

निर्मल किरणों करके चारोंओरसे व्याप्त स्थूलबिंब कुमुद पुष्प कुन्दपुष्प औ स्फटिक अर्थात् बिल्लोरके समान अति स्निग्ध श्वेतवर्ण और किसी ग्रह करके नहींजीता हुआ औ सत्पथवर्ती अर्थात् ग्रह नक्षत्र आदिके उत्तरहोकर जानेवाला औ मार्गमें रहनेवाला अर्थात् वक्री न होय ऐसा बृहस्पति मनुष्यों का हितकरता है ५३ ॥

श्रीवराहमिहिराचार्यकीबनाईबृहत्संहितामेंबृहस्पति
चारनामकआठवांअध्यायसमाप्तहुआ ८ ॥

नवांअध्याय ॥

शुक्रचार ॥

नागगजैरावतवृषभगोजरद्गवमृगाजदहनाख्याः ॥
अश्विन्याद्याःकेचित्त्रिभाःक्रमाद्वीथयःकथिताः १ ॥

अश्विनी आदि तीन २ नक्षत्रों करके नाग गज ऐरावत वृषभ गो जरद्गव मृग अज औ दहन ये नौवीथी देवल आदिक आचार्योंने कही हैं १ ॥

नागातुपवनयाम्यानलानिपैतामहात्त्रिभास्तिस्रः ॥ गोवीथ्यामश्विन्यःपौष्णद्वेचापिभद्रपदे २ जारद्गव्यांश्रवणात्त्रिभंमृगाख्यात्रिभंचमैत्राद्यम् ॥ हस्तविशाखात्वाष्ट्राण्यजेत्याषाढाद्वयंदहना ३ ॥

अब अपने मतसे वीथी विभाग कहते हैं। स्वाती भरणी कृत्तिका ये तीन नक्षत्रनागवीथी हैं। रोहिणी मृगशिरा आर्द्रा ये तीन गजवीथी हैं। पुनर्वसु पुष्य आश्लेषा ये तीननक्षत्र ऐरावतवीथी हैं। मघा पूर्वाफाल्गुनी उत्तराफाल्गुनी ये तीन नक्षत्र वृषभवीथी हैं। रेवती अश्विनी पूर्वाभाद्रपदा उत्तराभाद्रपदा ये चारनक्षत्र गोवीथी हैं। श्रवण धनिष्ठा शतभिषक् ये तीन नक्षत्रजारद्गववीथी हैं। अनुराधा ज्येष्ठा मूल ये तीननक्षत्र मृगवीथी हैं। हस्त विशाखा चित्रा ये तीननक्षत्र अजवीथी हैं औ पूर्वाषाढा उत्तराषाढा इन दो नक्षत्रों को दहनवीथी कहते हैं २।३ ॥

तिस्रस्तिस्रस्तासांक्रमादुदङ्मध्ययाम्यमार्गस्थाः ॥
तासामप्युत्तरमध्यदक्षिणेनास्थितैकैका ४ ॥

इन वीथियोंमें क्रमसे तीन २ वीथी उत्तर मध्य औ दक्षिण मार्गमें स्थित हैं। अर्थात् नाग गज ऐरावत ये तीन उत्तर मार्ग में हैं। वृषभ गो जरद्गव ये

तीन मध्यम मार्ग में हैं। औ मृग अज दहन ये तीन वीथी दक्षिण मार्गकी हैं। इनमें भी एक २ वीथी उत्तर मध्य दक्षिण में स्थित हैं अर्थात् पहिली तीन वीथियों में नागवीथी उत्तरोत्तरा गजवीथी उत्तरमध्या औ ऐरावतवीथी उत्तर-दक्षिणा है। इसी भांति और भी जानो ४॥

वीथीमार्गानपरेकथयन्तियथास्थितान्भमार्गस्य॥
नक्षत्राणांतारायाम्योत्तरमध्यमास्तद्वत् ५॥

कोई आचार्य कहतेहैं कि नक्षत्रमार्ग के समानही वीथीमार्ग है। औ उसी भांति नक्षत्रों की तारा दक्षिण उत्तर औ मध्य में स्थितहै। अर्थात् नक्षत्रके दक्षिणकी तारा दक्षिणमार्ग उत्तरकी उत्तर मार्ग औ मध्यकी तारा मध्यमार्ग है। अथवा नक्षत्रके दक्षिण भागमें स्थितग्रह दक्षिणमार्गस्थहै। उत्तरमें स्थित उत्तर मार्गस्थ औ नक्षत्रके मध्यमें स्थितग्रह मध्यमार्गस्थ होताहै ५॥

उत्तरमार्गोयाम्यादिनिगदितोमध्यमस्तुभाग्याद्यः॥
दक्षिणमार्गोषाढादिकैश्चिदेवंकृतामार्गाः ६॥

कई आचार्यों ने इसभांति मार्ग विभाग कियाहै कि भरणी से लेकर नव नक्षत्र उत्तर मार्ग हैं। पूर्वाफाल्गुनी से नव नक्षत्र मध्यममार्ग हैं। औपूर्वाषाढा से नव नक्षत्र दक्षिण मार्ग हैं ६॥

ज्योतिषमागमशास्त्रं विप्रतिपत्तौनयोग्यमस्माकम्॥
स्वयमेवविकल्पयितुं किन्तुबहूनांमतंवक्ष्ये ७॥

ज्योतिष शास्त्र आगमहै इसमें विप्रति पत्ति अर्थात् मतभेदमेंहमकोआपही विकल्प करना उचित नहीं कि अमुक मतठीक है औ अमुकमत अच्छा नहीं क्योंकि सबमुनि त्रिकालज्ञथे सबने आगम कहा है। इसलिये हमको विकल्प करनायोग्य नहीं। केवल बहुतोंका मत कहते हैं ७॥

उत्तरवीथिषुशुक्रः सुभिक्षशिवकृद्गतोऽस्तमुदयंवा॥
मध्यासुमध्यफलदः कष्टफलोदक्षिणस्थासु ८॥

नागआदि तीन वीथियों में स्थित शुक्रउदयहोय अथवा अस्तहोय तो सु-भिक्ष औकल्याण करताहै। वृषभआदि तीन वीथियों में स्थित उदय अथवा अस्तहोय तो मध्यम फलदेताहै। औमृगआदि तीनवीथियोंमें स्थितशुक्र उदय अथवा अस्तको प्राप्तहोय तो अशुभफल करताहै ८॥

अत्युत्तमोत्तमोनंसममध्यन्यूनमधमकष्टफलम्॥
कष्टतमंसौम्याद्यासुवीथिषुयथाक्रमंब्रूयात् ९॥

उत्तरसे आदि लेकर अर्थात् नागवीथी से लेकर क्रम से यह फल कहै।

अत्युत्तम उत्तम किंचित् उत्तम सम मध्यम किंचित् मध्यम अधम कष्ट औ कष्ट-तम। ये नव प्रकारके फल शुक्रके उदय औ अस्त होनेके अनुसार क्रम से नौ वीथियों में जाने ९॥

भरणीपूर्वंमण्डलमृक्षचतुष्कंसुभिक्षकरमाद्यम्॥
वङ्गांऽगमहिषवाह्लिककलिङ्गदेशेषुभयजननम् १०॥

शुक्रके छः मण्डल होतेहैं उनका फल कहते हैं। भरणी से चार नक्षत्र प्रथम मण्डल है। यह सुभिक्ष करता है औ बंगाला अंग देश महिष देश बल-खबुखारा औ कलिंगदेश। इन सब देशों में भय करताहै १०॥

अत्रोदितमारोहेद्ग्रहोऽपरोयदिसितंततोहन्यात्
भद्राश्वशूरसेनकयौधेयककोटिवर्षनृपान् ११॥

इस मण्डल में स्थित शुक्र उदयको प्राप्त होय। औ दूसरा ग्रह उसके ऊपर गिरे अर्थात् उसके अगलीओर स्थित होय। तो भद्राश्व शूरसेन यौधेयक औ कोटिवर्ष इन सब राजाओं का संहार करे ११॥

भचतुष्टयमार्द्राद्यंद्वितीयममिताम्बुसस्यसम्पत्त्यै॥ विप्राणामशुभकरंविशेषतःक्रूरचेष्टानाम् १२ अन्येनात्राक्रांतेम्लेच्छाटविकाश्वजीविगोमन्तान्॥ गोनर्दनीचशूद्रान्वैदेहांश्चानयःस्पृशति १३॥

आर्द्रासे चार नक्षत्र दूसरा मण्डलहै। यह बहुत वर्षा औ खेतीकी वृद्धि करताहै। ब्राह्मणोंको अशुभफलदेताहै। औ क्रूर स्वभाव वालोंको विशेष करके अशुभफलदेताहै। इस मण्डलमें स्थित शुक्रको जो कोई दूसराग्रहरोधकरै तो म्लेच्छ वनमें रहनेवाले भीलआदि श्वजीवी अर्थात् कुत्तोंसे जो अपनीजी-विका करते हैं। जो बहुत गौरखते हैं। गोनर्द देशके निवासी नीच मनुष्य शूद्र औ मिथिलादेशमें रहनेवाले इन सबको अनयस्पर्श करता है। अर्थात् ये सब सोपद्रव होतेहैं १२। १३॥

विचरन्मघादिपंचकमुदितःसस्यप्रणाशकृच्छुक्रः॥ क्षुत्तस्करभयजननोनीचोन्नतिसङ्करकरश्च १४ पित्र्याद्येऽवष्टब्धाहन्त्यन्यनाविकाञ्छबरशूद्रान्॥ पुण्ड्रापरान्त्यशूलिकवनवासिद्रविडसामुद्रान् १५॥

मघाआदि पांच नक्षत्र तीसरामण्डलहै। उदयकोप्राप्तहुआ शुक्रइसमंडलमें विचरे तो खेतीका नाशकरताहै दुर्भिक्षऔ चोरोंका भयकरताहै। नीच पुरुषों की उन्नतिकरताहै औब्राह्मणआदि वर्णोंका परस्पर संकरकरताहै इसमंडलमें स्थित शुक्र जो दूसरे ग्रहकरके रुद्धहोय तो आविक अर्थात् भेड़ोंके समूह शबर

शूद्र पुंड्र अपरांत्य शूलिक वनवासी द्रविड़ औ समुद्रके तटपर रहने वाले नाश को प्राप्त होते हैं १४। १५॥

स्वात्याद्यंभत्रितयंमण्डलमेतच्चतुर्थमभयकरम् ॥ ब्रह्मक्षत्रसुभिक्षाभिवृद्धये मित्रभेदाय १६ अत्राक्रान्तेमृत्युः किरातभर्तुःपिनष्टिचेक्ष्वाकून् ॥ प्रत्यन्तावन्तिपुलिन्दतङ्गणाञ्छूरसेनांश्च १७॥

स्वाती आदि तीन नक्षत्र चौथा मण्डल है। यह अभय करताहै। ब्राह्मण क्षत्रिय औ सुभिक्षकी वृद्धि करता है। मित्रोंका परस्पर भेद करता है इस मण्डलमें स्थित शुक्रको जो दूसरा ग्रह आक्रमणकरै तो किरातोंके स्वामीकी मृत्युहोय। औ इक्ष्वाकु जनोंको चूर्णकरडाले। औ प्रत्यंत अवन्ति पुलिन्द तगण औ शूरसेन जनोंको भी चूर्ण करदेवै १६। १७॥

ज्येष्ठाद्यंपंचर्क्षंक्षुत्तस्कररोगदंप्रबाधयते ॥ काश्मीराश्मकमत्स्यान्सचारुदेवीनवन्तींश्च १८ आरोहेऽत्राभीरान्द्रविडाऽम्बष्ठत्रिगर्तसौराष्ट्रान् ॥ नाशयतिसिन्धुसौवीरकांश्च काशीश्वरस्यवधः१९॥

ज्येष्ठा आदि पांच नक्षत्र पांचवां मण्डल है। यह दुर्भिक्ष चोर भय औ रोग करताहै काश्मीर अश्मक औ मत्स्यदेशके निवासी चारुदेवी नदी के तटपर रहनेवाले औ अवन्ति देशके निवासी पीड़ाको प्राप्त होते हैं। इस मण्डलमें स्थित शुक्रको जो दूसरा ग्रह आक्रमण करै तो आभीर द्रविड़ अम्बष्ठ त्रिगर्त्त सौराष्ट्र औ सिन्धु सौवीरजन नाश को प्राप्त होते हैं औ काशी के राजाकी मृत्यु होतीहै १८। १९॥

षष्ठंषण्नक्षत्रंशुभमेतन्मण्डलंधनिष्ठाद्यम् ॥ भूरिधनगोकुलाकुलमनल्पधान्यंक्वचित्सभयम् २० अत्रारोहेशूलिकगान्धाराऽवन्तयःप्रपीड्यन्ते ॥ वैदेहवधःप्रत्यन्तयवनशकदासपरिवृद्धिः २१॥

धनिष्ठा आदि छः नक्षत्र छठां मण्डल है। यहशुभहै। यह बहुतधन औ गौओंके समूहकरके व्याप्त रहता है अर्थात् इस मण्डलमें धन औ गौओं की वृद्धि होतीहै। अन्न बहुत होता है। कहीं २ भयभी होता है। इस मण्डलमें स्थित शुक्रको जो दूसराग्रह आक्रमणकरै तो शूलिक गांधार औ अवन्तिदेशके जन पीड़ाको प्राप्तहोते हैं। विदेहदेशके जन मृत्युको प्राप्त होते हैं। औ प्रत्यंत यवन शक औ दासोंकी वृद्धि होती है २०। २१॥

अपरस्यांस्वात्याद्यंज्येष्ठाद्यंचापिमण्डलंशुभदम् ॥
पित्र्याद्यंपूर्वस्यांशेषाणियथोक्तफलदानि २२॥

स्वातीआदि औ ज्येष्ठाआदिइनदोमण्डलमें शुक्रउदयहोय तो पश्चिम

दिशामें शुभफल करता है। औ मघा आदि मण्डलमें शुक्र उदयहोय तो पूर्व दिशामें शुभप्रदहै। शेष मण्डलों का जो पहिले फल कहा वही होताहै २२ ॥

दृष्टोऽनस्तमितेऽर्केभयकृत्क्षुद्रोगकृत्समस्तमहः ॥
अर्धदिवसेचसेन्दुर्नृपबलपुरभेदकृच्छुक्रः २३ ॥

सूर्यके अस्तहुये विना शुक्र देखपड़ै तोभय करताहै। सम्पूर्ण दिनदेख पड़ै तो दुर्भिक्ष औ रोग करता है। मध्याह्नके समय चन्द्रमा सहित शुक्र देख पड़ै तो राजा राजाकी सेना औ राजाका नगर इनमें परस्पर भेदकरताहै २३ ॥

भिन्दन्गतोऽनलर्क्षंकूलातिक्रांतवारिवहाभिः ॥
अव्यक्ततुंगनिम्नासमासरिद्भिर्भवतिधात्री २४ ॥

कृत्तिका नक्षत्रको भेदन करताहुआ शुक्र गमन करै तो तटों से भी बाहर जिनका जल बहनिकले ऐसी नदियों करके भूमिसमान होजाय कुछ उँचाई निचाई न जानपड़ै । अर्थात् इतनी वर्षा होय कि सब भूमि जलप्लुत होजाय २४ ॥

प्राजापत्येशकटेभिन्नेकृत्वेवपातकंवसुधा ॥
केशास्थिशकलशबलाकापालिकमिवव्रतंधत्ते २५ ॥

जो शुक्ररोहिणी शकट को भेदन करता हुआ गमन करै तो भूमि मानों ब्रह्महत्या करके उसका प्रायश्चित्त करनेकेलिये केश औ हाड़ों के टुकड़ोंकर के व्याप्तहुई कापालिकव्रत को धारण करती है अर्थात् इतनेजीव मरें कि सम्पूर्ण भूमि केश औ अस्थियों करके चित्र होजाय। वृषराशिके सत्रह अंश पर ग्रहस्थित होय औ उससमय उसकादक्षिणशर दोअंशसे अधिकहोय वह ग्रहरोहिणी शकटका भेदन करसक्ता है २५ ॥

सौम्योपगतोरससस्यसंक्षयायोशनासमुद्दिष्टः ॥
आर्द्रागतस्तुकोशलकलिंगहासलिलनिकरकरः २६ ॥

मृगशिरा नक्षत्रमें प्राप्तहुआशुक्रमधुर आदि रसोंका औ खेतीका क्षयकरता है। आर्द्रा नक्षत्र में प्राप्तहोकर कोशल देश औ कलिंगदेश का नाश करता है औ अति वर्षा करता है २६ ॥

अश्मकवैदर्भाणांपुनर्वसुस्थेसितेमहाननयः ॥
पुष्येपुष्टावृष्टिर्विद्याधरगणविमर्दश्च २७ ॥

पुनर्वसु नक्षत्रमें स्थित शुक्रहोय तो अश्मक औ वैदर्भदेशमें बड़ाउपद्रव होताहै। पुष्यनक्षत्र में होय तो बहुत वर्षा होय औ विद्याधर नामक जो एक प्रकार के देवता उनका युद्धमें विमर्द होय २७ ॥

आश्लेषासुभुजंगमदारुणपीडावहश्चरञ्छुक्रः॥
भिन्दन्मघांमहामात्रदोषकृद्भूरिवृष्टिकरः २८॥

आश्लेषा नक्षत्र में स्थित शुक्र लोकों को सर्पोंकरके दारुणपीड़ाकरताहै। मघा नक्षत्र को शुक्रभेदनकरै तो महामात्र अर्थात् हाथियोंके समूहके अध्यक्ष अथवा प्रधान पुरुषोंको दोष करता है। औ बहुत वर्षा करता है २८॥

भाग्येशबरपुलिन्दप्रध्वंसकरोऽम्बुनिवहमोक्षाय॥
आर्यम्णेकुरुजांगलपांचालघ्नःसलिलदायी २९॥

पूर्वाफाल्गुनी में स्थित शुक्र शबर औ पुलिन्द ये दो भेद जो भीलोंके हैं इनका नाश करताहै। वर्षा बहुत करताहै। उत्तराफाल्गुनीमें स्थित शुक्रकुरु-जांगल औ पांचाल देशमें रहनेवालोंका नाश करताहै औ वर्षा करताहै २९॥

कौरवचित्रकराणांहस्तेपीडाजलस्यचनिरोधः॥
कूपकृदण्डजपीडाचित्रास्थेशोभनावृष्टिः ३०॥

हस्त नक्षत्रमें स्थित शुक्रहोय तो कुरुवंशके जनोंको औ चित्रवनानेवालों को पीड़ा होतीहै वर्षाका निरोधहोताहै। चित्रामें शुक्रहोय तो कूपवनानेवालों को औ पक्षिओं को पीड़ा होती है औ वर्षा उत्तम होतीहै ३०॥

स्वातौप्रभूतवृष्टिर्दूतवणिङ्नाविकान्स्पृशत्यनयः॥
ऐन्द्राग्नेऽपिसुवृष्टिर्वणिजांचभयंविजानीयात् ३१॥

स्वाति स्थित शुक्रहोय तो बहुत वर्षा होतीहै। दूत बनिये औ नावचलाने वालोंको उपद्रव होताहै। विशाखा नक्षत्र में शुक्रहोय तो उत्तम वर्षाहोय औ वनियों को भयहोय ३१॥

मैत्रेक्षत्रविरोधोज्येष्ठायांक्षत्रमुख्यसन्तापः॥
मौलिकभिषजांमूलेत्रिष्वपिचैतेष्वनावृष्टिः ३२॥

अनुराधामें शुक्र होय तो क्षत्रियों का विरोधहोय ज्येष्ठा नक्षत्रमें होय तो क्षत्रियों में जो प्रधानहोयँ उनको सन्ताप होताहै। मूल नक्षत्रमें शुक्र होय तो मौलिक अर्थात् मूल वेचनेवाले औ वैद्यों को पीड़ा होती है। इन तीन नक्षत्रोंमें शुक्र होय तो वर्षा नहीं होती ३२॥

आप्येसलिलजपीडाविश्वेशव्याधयःप्रकुप्यंति॥
श्रवणेश्रवणव्याधिःपाखण्डिभयंधनिष्ठासु ३३॥

पूर्वाषाढा नक्षत्रमें शुक्र होय तो जलके जीव औ जलसे उत्पन्नहुये द्रव्यों करके लोकों को पीड़ा होय अथवा जलजीवों को पीड़ा होय। उत्तराषाढामें शुक्र होय तो रोग वहुत होयँ। श्रवण नक्षत्रमें होय तो कर्णरोगहोयँ धनिष्ठामें

शुक्रहोय तो लोकोंको पाखण्डी अर्थात् जो वेदकेप्रतिकूलहैं उनसेभयहोय ३३॥

शतभिषजिशौण्डिकानामजेकपेद्यूतजीविनांपीडा ॥
कुरुपांचालानामपिकरोतिचास्मिन्सितःसलिलम् ३४

शतभिषक् नक्षत्र में शुक्रहोय तो मद्य बनानेवालों को पीड़ाहोय। पूर्वाभाद्रपदा में होय तो जुआ खेलकर जो जीविका करतेहैं उनको पीड़ा होय औ कुरुदेश तथा पांचाल देशमें रहने वालोंकोभी पीड़ाहोय औ वर्षाभीहोय३४ ॥

आहिर्बुध्न्येफलमूलतापकृद्यायिनांचरेवत्याम् ॥
अश्विन्यांहयपानांयाम्येतुकिरातयवनानाम् ३५ ॥

उत्तराभाद्रपदामें स्थित शुक्रफल औ मूलोंका नाश करता है। रेवती में होय तो यायी अर्थात् यात्रा करनेवाले पीड़ाको प्राप्त होते हैं। अश्विनी में होय तो घोड़ोंके स्वामी पीड़ित होते हैं औ भरणी नक्षत्रमें स्थित शुक्र किरात औ यवनों को पीड़ा देता है ३५ ॥

चतुर्दशींपंचदशींतथाष्टमींतमिस्रपक्षस्यतिथिंभृगोःसुतः ॥
यदाव्रजेद्दर्शनमस्तमेववातदामहीवारिमयीवलक्ष्यते ३६ ॥

कृष्णपक्षकी चतुर्दशी अमावास्या अथवा अष्टमी तिथिको शुक्रका उदय अथवा अस्तहोय तो भूमिजलमयी देखपड़े अर्थात् बहुत वर्षाहोय ३६ ॥

गुरुर्भृगुश्चापरपूर्वकाष्ठयोःपरस्परंसप्तमराशिगौयदा ॥
तदाप्रजारुग्भयशोकपीडितानवारिपश्यंतिपुरंदरोज्झितम्३७॥

बृहस्पति औ शुक्र दोनोंमेंसे एकतो पश्चिम दिशामें औ दूसरा पूर्वमें हो औ परस्पर सप्तमराशिमें स्थितहोवैं। तो प्रजा रोग भय औ शोक करकेपीड़ाको प्राप्तहोवैं औ इन्द्रका वर्षाहुआ जलभी कहीं न देखें अर्थात् वर्षा नहोय ३७॥

यदास्थिताजीवबुधारसूर्यजाःसितस्यसर्वेग्रपथानुवर्तिनः ॥ नृनागविद्याधरसङ्गरास्तदा भवन्तिवाताश्च्वसमुच्छ्रितान्तकाः ३८ नमित्रभावेसुहृदोव्यवस्थिताःक्रियासुसम्यङ्नरताद्विजातयः॥ नचाल्पमप्यम्बुददन्तिवासवो भिनत्तिवज्रेणशिरांसिभूभृताम् ३९ ॥

जो बृहस्पति बुध मंगल औ शनैश्चर येचारोंग्रहशुक्रके आगेचलैं तोमनुष्य नाग औ विद्याधरों के परस्पर युद्धहोवैं। औ पर्वत वृक्षआदि जो ऊंचे हैं उनको गिरानेवाले प्रचंड पवन चलैं। औ मित्रभी मित्रपने में स्थिर न रहैं ब्राह्मण अग्निहोत्र क्रियाओं में भलीभांति तत्पर न होवैं थोड़ी सी भी वर्षा न होय। औ बिजलीके गिरनेसे पर्वतोंके शिखर टूटपड़ैं ३८। ३९ ॥

शनैश्चरेम्लेच्छविडालकुंजराःखरामहिष्योऽसितधान्यसूकराः॥

पुलिन्दशूद्राश्चसदक्षिणापथाःक्षयंव्रजन्त्यऽक्षिमरुद्गदोद्भवैः४०॥

केवल शनैश्चर शुक्रसे आगेहोय तो विडाल हाथी गधे भैंस कालेरंगके अन्न सूकर पुलिन्द जातिके मनुष्य शूद्र औ दक्षिणदिशाके निवासी जन नेत्र रोग औ वायुरोगोंकी उत्पत्ति होनेसे क्षय को प्राप्त होते हैं ४० ॥

निहन्तिशुक्रःक्षितिजेऽग्रतःप्रजां हुताशशस्त्रक्षुदवृष्टितस्करैः॥
चराचरंव्यक्तमथोत्तरापथंदिशोऽग्निविद्युद्रजसाचपीडयेत् ४१ ॥

मंगल शुक्रसे आगे होय तो अग्नि युद्ध दुर्भिक्ष अनावृष्टि औ चोरों करके प्रजाकानाश होताहै। चराचर जगत् पीड़ित होताहै औ उत्तर दिशा नाशको प्राप्तहोतीहै औ चारोंदिशाभी बिजली औ पांसु वृष्टिकरके पीड़ितहोतीहै ४१ ॥

बृहस्पतौहन्तिपुरःस्थितेसितः सितंसमस्तंद्विजगोसुरालयान् ॥
दिशंचपूर्वांकरकास्रुजोऽम्बुदा गलेगदाभूरिभवेच्चशारदम् ४२ ॥

बृहस्पति शुक्रसे आगेहोय तो संपूर्णश्वेतवस्तु ब्राह्मणगौ देवताओंके स्थान औ पूर्वदिशामें रहनेवाले नाशको प्राप्त होतेहैं मेघोंसे करका अर्थात् ओले गिरते हैं। कंठके रोगहोते हैं औ शरदऋतुकी खेती बहुत होती है ४२॥

सौम्योऽस्तोदययोःपुरोभृगुसुतस्यावस्थितस्तोयकृद् । रोगान्पित्तजकामलांचकुरुतेपुष्णातिचग्रैष्मिकम् ॥ हन्यात्प्रव्रजिताग्निहोत्रिकभिषग्रंगोपजीव्यान्हयान् वैश्यान्गाःसहवाहनैर्नरपतीन्पीतानिपश्चाद्दिशम् ४३ ॥

शुक्रके उदय अथवा अस्तके समय जो आगे बुधहोय तो वर्षा करताहै रोग होते हैं औ पित्तका कामलारोगभी होताहै। ग्रीष्मऋतु की खेती अच्छीहोती है। संन्यासी अग्निहोत्री वैद्य रंगोपजीवी अर्थात् नटआदि जो नृत्यसे जीविका करते हैं। घोड़े वैश्यगौ वाहनोंके सहित राजा पीलेरंगके द्रव्य औ पश्चिमदिशामें रहनेवाले ये सब नाश को प्राप्त होते हैं ४३ ॥

अबशुक्रकेरंगोंकाफलकहतेहैं ॥

शिखिभयमनलाभेशस्त्रकोपश्चरक्ते कनकनिकषगौरेव्याधयोदैत्यपूज्ये॥हरितकपिलरूपेश्वासकासप्रकोपःपततिनसलिलंखाद्भस्मरूक्षाऽसिताभे ४४ ॥

अग्निके समान शुक्रके बिम्बका रंगहोय तो प्रजामें अग्निका भयहोय लालरंग शुक्रकाहोय तो शस्त्रकोप अर्थात् प्रजामें युद्धहोय। जो शुक्रकावर्ण कनकनिषक अर्थात् कसौटीपर घिसेहुये सुवर्ण की रेखा का जो वर्ण होता है उसके समान गौर अर्थात् पीला रंग होय तो लोक में रोग रोग होतेहैं। शुक्र

का रंग हरा अथवा कपिलहोय तो श्वासरोग औ खांसी का रोग बहुत होता है। जो शुक्रका रंग भस्मके समान रूखाहोय अथवा काला रंगहोय तो आकाशसेजलनहीं गिरता अर्थात् वर्षा नहींहोती ४४ ॥

दधिकुमुदशशाङ्ककान्तिभृत् स्फुटविकसत्किरणोबृहत्तनुः ॥
सुगतिरविकृतोजयान्वितःकृतयुगरूपकरःसिताह्वया ४५ ॥

इतिश्रीवराहमिहिरकृतौबृहत्संहितायांशुक्रचारोनामनवमोऽध्यायः ९ ॥

जो शुक्र दही कुमुद पुष्प अथवा चन्द्रमाके समान कांतिको धारणकरै अर्थात् अत्यंत शुक्लवर्णहोय। औ उसके किरण स्पष्ट औ फैलतेहुये होवैं बिम्ब बड़ाहोय। गति सुन्दरहोय अर्थात् वक्र न होय औ ग्रहनक्षत्रोंके उत्तर होकर जाय किसी विकारको न प्राप्तहुआहोय दूसरे ग्रहकेसाथ युद्धहोने में जयको प्राप्तहुआ होय ऐसा शुक्र सत्ययुगका रूप करनेवाला होताहै। अर्थात् ऐसा शुक्रहोनेसे सब प्रजा धर्ममें तत्परहोय सुभिक्षहोय रोग आदि उपद्रवों का भय न होय औ सबलोक प्रसन्नरहें ४५ ॥

श्रीवराहमिहिराचार्य की बनाईबृहत्संहितामेंशुक्रचार
नामकनवमअध्यायसमाप्तहुआ ९ ॥

दशवांअध्याय ॥

शनिचार ॥

श्रवणानिलहस्तार्द्राभरणीभाग्योपगःसुतोर्कस्य ॥
प्रचुरसलिलोपगूढांकरोतिधात्रींयदिस्निग्धः १ ॥

श्रवण स्वाती हस्त आर्द्रा भरणी औ पूर्वाफाल्गुनी में शनैश्चर स्थितहोय तो सम्पूर्ण भूमिको जलसे व्याप्त करता है परन्तु उसकारंग स्निग्ध अर्थात् चिकनाहोय रूखा न होय १ ॥

अहिवरुणपुरन्दरदैवतेषुसुक्षेमकृन्नचातिजलम् ॥
क्षुच्छस्त्रावृष्टिकरोमूलेप्रत्येकमपिवक्ष्ये २ ॥

आश्लेषा शतभिषक् औ ज्येष्ठामें शनिहोय तो प्रजामें कल्याण करता है परन्तु वर्षा बहुत नहीं होती। मूल में शनि होय तो दुर्भिक्ष युद्ध औ अवृष्टि करता है। अब प्रत्येक नक्षत्रमें स्थित शनिका भी फलकहते हैं २ ॥

तुरगतुरगोपचारककविवैद्यामात्यहार्कजोऽश्विगतः ॥
याम्येनर्तकवादकगेयज्ञक्षुद्रनैकृतिकान् ३ ॥

अश्विनी नक्षत्र पर शनैश्चर होय तो घोड़े घोड़ोंका उपचार करनेवाले मनुष्य कविवैद्य राजाओंकेमंत्री नाशको प्राप्त होतेहैं। भरणीपर शनैश्चरहोय

तो नाचनेवाले बाजा बजानेवाले गाना जाननेवाले क्षुद्र अर्थात् ओछेस्वभाव के मनुष्य औ नैकृतिक अर्थात् शठमनुष्य अथवा निषाद नाशको प्राप्तहोतेहैं ३॥

बहुलास्थेपीड्यन्तेसौरेऽग्न्युपजीविनश्चभूपाश्च ॥
रोहिण्यांकोशलमद्रकाशिपांचालशाकटिकाः ४ ॥

कृत्तिकानक्षत्रपर शनिहोय तो अग्नि से जीवन करनेवाले लुहार सुनार आदि औ सेनापति पीड़ाको प्राप्त होते हैं । रोहिणी पर होय तो कोशल देश मद्रदेश औ पंचालदेशमें रहनेवाले पीड़ित होते हैं औ शाकटिक अर्थात् गाड़ी जोतनेवाले भी पीड़ाको प्राप्तहोते हैं ४ ॥

मृगशिरसिवत्सयाजकयजमानार्यजनमध्यदेशाश्च ॥
रौद्रस्थेपारतरामठतैलिकरजकचौराश्च ५ ॥

मृगशिरा नक्षत्रपर शनिहोय तो वत्स अर्थात् वत्सदेशके निवासी यज्ञक-रानेवाले यज्ञ करनेवाले आर्यजन मध्यदेश पीड़ा को प्राप्तहोते हैं । आर्द्रापर शनैश्चर स्थितहोय तो पारत औ रामठदेशके निवासीजन तेली धोबी अथवा बस्त्र रँगनेवाले औ चौर पीड़ाको प्राप्तहोते हैं ५ ॥

आदित्येपञ्चनदप्रत्यन्तसुराष्ट्रसिन्धुसौवीराः ॥
पुष्येघाण्टिकघौषकयवनवणिक्कितवकुसुमानि ६ ॥

पुनर्वसु नक्षत्रपर शनैश्चरहोय तो पंजाब म्लेच्छदेश सुराष्ट्रदेश औ सिंधु सौवीरदेशके निवासी पीड़ाको प्राप्तहोते हैं । पुष्यनक्षत्रमें होय तो घंटाबजाने वाले औ घोषिक अर्थात् शब्दकरना जिनका कामहो ऐसे मनुष्य-अथवा घोष में रहनेवाले यवन बनिया जुवा खेलनेवाले औ लता आदिके पुष्प ये सब पीड़ाको प्राप्तहोते हैं ६ ॥

सार्प्येजलरुहसर्पाःपित्र्येवाह्लीकचीनगान्धाराः ॥
शूलिकपारतवैश्याःकोष्ठागाराणिवणिजश्च ७ ॥

श्लेषा नक्षत्रपर शनि होय तो जल के जीव अथवा जल से उत्पन्न हुये द्रव्य औ सर्पपीड़ाको प्राप्तहोतेहैं । मघापर शनैश्चर होय तो शूलिक औपार-तजन वैश्यवर्ण कोष्ठागार [कोठयार] औ वणिक् अर्थात् किराटपीड़ाको प्राप्तहोते हैं ७ ॥

भाग्येरसविक्रयिणःपण्यस्त्रीकन्यकामहाराष्ट्राः ॥
आर्यम्णेनृपगुडलवणभिक्षुकाम्बुतक्षशिलाः ८ ॥

पूर्वाफाल्गुनी पर शनिहोय तो रस बेचनेवाले वेश्याकन्या औ महाराष्ट्र देशमें रहनेवाले मनुष्य पीड़ाको प्राप्तहोते हैं । उत्तराफाल्गुनी पर शनिहोय

तो राजागुड़ लवण भिक्षामांगनेवाले जल औ तक्षशिलानाम नगरीके निवासी पीड़ाको प्राप्तहोते हैं ८ ॥

हस्तेनापितचाक्रिकचौरभिषक्सूचिकद्विपग्राहाः ॥
बन्धक्यःकौशलकामालाकाराश्चपीड्यन्ते ९ ॥

हस्त नक्षत्रपर शनिहोय तो नाई चाक्रिक अर्थात् कुम्हार तेली आदि चोर वैद्य दर्जी हाथी पकड़नेवाले व्यभिचारिणी स्त्री कोशल देशके निवासी औ माली पीड़ाको प्राप्तहोते हैं ९ ॥

चित्रास्थेप्रमदाजनलेखकचित्रज्ञचित्रभाण्डानि ॥
स्वातौमागधचरदूतसूतपोतप्लवनटाद्याः १० ॥

चित्रा पर शनिहोय तो स्त्री लिखनेवाले चित्र बतानेवाले औ अनेकप्रकार के भांड अर्थात् द्रव्य ये पीड़ाको प्राप्त होते हैं। स्वातीपर शनिहोय तो मगध देशके निवासी चर अर्थात् गुप्तपुरुष दूत सूत अर्थात् रथहांकनेवाले अथवा कथा सुनानेवाले पोतप्लव अर्थात् जहाजपर चढ़कर जानेवाले औ नट आदि पीड़ाको प्राप्तहोते हैं १०

ऐन्द्राग्न्याख्येत्रैगर्तचीनकौलूतकुंकुमंलाक्षा ॥
सस्यान्यथमांजिष्ठंकौसुम्भंचक्षयंयाति ११ ॥

विशाखापर शनिहोय तो त्रिगर्त चीन औ कुलूतदेशके निवासी केसर लाख खेती मंजीठ औ कुसुम्भसे रँगेहुये वस्त्र नाशको प्राप्तहोते हैं ११ ॥

मैत्रेकुलूततङ्गणखसकाश्मीराःसमन्त्रिचक्रचराः ॥
उपतापंयान्तिचघाण्टिकाविभेदश्चमित्राणाम् १२ ॥

अनुराधा नक्षत्रपर शनिहोय तो कुलूत तंगण खस औ काश्मीरके निवासी राजाओंके मंत्री चक्रचर अर्थात् तेली कुम्हार आदि औ घंटाबजानेवाले पीड़ाको प्राप्तहोते हैं औ मित्रोंका परस्पर द्वेषहोता है १२ ॥

ज्येष्ठासुनृपपुरोहितनृपसत्कृतशूरगणकुलश्रेण्यः ॥
मूलेतुकाशिकोशलपाञ्चालफलौषधीयोधाः १३ ॥

ज्येष्ठानक्षत्रमें शनि होय तो राजा राजाओं के पुरोहित राजपूजित पुरुष शूरगण अर्थात् समूह कुल औ श्रेणी अर्थात् समानजाति पुरुषों के समुदाय पीड़ाकोप्राप्तहोते हैं। मूलनक्षत्रपर शनिहोय तो काशी कोशल औ पांचालदेश के निवासी फल ओषधी औ युद्धमें कुशल पुरुषपीड़ित होते हैं १३ ॥

आप्येऽङ्गवङ्गकोशलगिरिव्रजमगधपुण्ड्रमिथिलाश्च ॥
उपतापंयान्तिजनावसन्तियेताम्रलिप्त्यांच १४ ॥

पूर्वाषाढा नक्षत्रपर शनिहोय तो अंगवंग कोशल गिरिव्रज मगध पुंड्र औ मिथिलादेशमें रहनेवाले औ जो मनुष्य ताम्रलिप्ती नाम नगरी में बसते हैं वे सब उपतापको प्राप्तहोते हैं १४ ॥

विश्वेश्वरेऽर्कपुत्रश्चरन्दशार्णान्निहन्तियवनांश्च ॥
उज्जयिनींशबरान्पारियात्रकान्कुन्तिभोजांश्च १५ ॥

उत्तराषाढा पर शनिहोय तो दशार्ण देशके निवासी यवन उज्जयनीनगरीके निवासी शबर पारियात्र पर्वत औ कुन्तिभोजदेशमें रहनेवाले नाशको प्राप्त होते हैं १५ ॥

श्रवणेराजाधिकृतान्विप्राग्र्यभिषक्पुरोहितकलिङ्गान् ॥
वसुभेमगधेशजयोवृद्धिश्चधनेष्वधिकृतानाम् १६ ॥

श्रवणपर शनिहोय तो राजाके अधिकारी उत्तम ब्राह्मण वैद्य पुरोहित औ कलिंगदेशमें रहनेवाले पीड़ित होते हैं। धनिष्ठा पर शनिहोय तो मगधदेशके राजाका जयहोय औ धनके अधिकारियों की वृद्धिहोय १६ ॥

साजेशतभिषजिभिषक्कविशौण्डिकपण्यनीतिवृत्तीनाम् ॥
आहिर्बुध्न्येनद्योयानकराःस्त्रीहिरण्यंच १७ ॥

शतभिषक् औ पूर्वाभाद्रपदापर शनि होय तो कवि मद्य बनानेवाले पण्य वृत्ति अर्थात् खरीदना बेचना करके जीवन करनेवाले औ नीतिशास्त्र पढ़कर वृत्तिकरने वाले पीड़ाको प्राप्त होते हैं। उत्तराभाद्रपदापर शनिहोय तो नदियों के तीरपर बसने वाले रथ गाड़ी आदि बनाने वाले स्त्री औ सुवर्ण इनका क्षय होता है १७ ॥

रेवत्यांराजभृतःक्रौञ्चद्वीपाश्रिताःशरत्सस्यम् ॥
शबराश्चनिपीड्यन्तेयवनाश्चशनैश्चरेचरति १८ ॥

रेवती पर शनिहोय तो राजाके आश्रित पुरुष क्रौंचद्वीपमें रहनेवाले शरद् ऋतुकी खेती शबर औ यवनपीड़ा को प्राप्त होतेहैं १८ ॥

यदाविशाखासुमहेन्द्रमन्त्रीसुतश्चभानोर्दहनर्क्षयातः ॥
तदाप्रजानामनयोऽतिघोरःपुरप्रभेदोगतयोर्भमेकम् १९ ॥

विशाखा नक्षत्र वृहस्पति औ कृत्तिका नक्षत्रपर शनिहोय तो प्रजामें अति भयंकर अनय अर्थात् दुर्नीति होती है। औ जो वृहस्पति औ शनि दोनों एकही नक्षत्रपर होयँ तो नगर निवासियोंका परस्पर द्वेष होताहै ॥ देवलमुनि ने यहभी कहाहै कि किसी द्विस्वभाव एकही राशिपर वृहस्पति औ शनिहोयँ तौभी प्रजामें वहुत उपद्रव होताहै १९ ॥

अण्डजहारविजोयदिचित्रःक्षुद्भयकृद्यदिपीतमयूखः ॥
शस्त्रभयायचरक्तसवर्णोभस्मनिभोवहुवैरकरश्च २० ॥

शनिका रंग जो चित्र अर्थात् अनेक भांतिका होय तो पक्षियोंका नाशहोताहै। पीले रंगका शनिबिंब होय तो दुर्भिक्ष पड़ता है। लाल रंग शनिकेबिंबका होय तो युद्धसे भय होताहै। औ भस्म अर्थात् राखके समान धुंधलाशनिबिंबका रंगहोय तो प्रजामें बहुत वैरहोय २० ॥

वैदूर्यकान्तिरमलःशुभदःप्रजानांबाणातसीकुसुमवर्णनिभश्चशस्तः॥ यंचापिवर्णमुपगच्छतितत्सवर्णान्सूर्यात्मजःक्षपयतीतिमुनिप्रवादः २१ ॥

इतिश्रीवराहमिहिरकृतौबृहत्संहितायांशनिचारोनामदशमोऽध्यायः १० ॥

शनि के बिंबकी कांति वैदूर्य मणिकी कांति के समान श्याम होय औ बिम्ब निर्मल होय तो प्रजाओंको शुभदेताहै बाणपुष्पके समान अति कृष्ण वर्ण अथवा अलसीके पुष्प समान नीलवर्ण शनि बिंबहोय तौ भी श्रेष्ठहै जिसरंग का शनि बिम्बहोय उसके समान रंगवालों का नाश करता है यहगर्ग आदि मुनियों का कथन है। श्वेतवर्ण शनि बिम्ब होय तो ब्राह्मणों का रक्त वर्ण क्षत्रियों का पीतवर्ण वैश्यों का औ कृष्णवर्ण शनि बिम्ब होय तो शूद्रोंका नाश करता है २१ ॥

इतिश्रीवराहमिहिराचार्यकीबनाईबृहत्संहितामेंशनिचारनामक
दशवांअध्यायसमाप्तहुआ ॥ १० ॥

ग्यारहवांअध्याय ॥

केतुचार ॥

गार्गीयंशिखिचारंपाराशरमसितदेवलकृतंच ॥
अन्यांश्चबहून्दृष्ट्वाक्रियतेयमनाकुलश्चारः १ ॥

गर्ग पराशर असित देवलकेकिये केतुचार देखकर औरभी कश्यपऋषिपुत्र नारद वज्रआदिरचे बहुतसे केतुचारदेखकर यह निस्संदेहकेतुचार हमरचतेहैं १॥

दर्शनमस्तमयोवानगणितविधिनास्यशक्यतेज्ञातुम् ॥
दिव्यान्तरिक्षभौमास्त्रिविधाःस्युःकेतवोयस्मात् २ ॥

केतुका उदय अस्त गणित से नहीं जानसके। क्योंकि केतु तीनप्रकारके हैं दिव्य अर्थात् ग्रह नक्षत्र जिस स्थानमें हैं वहां वेभी हैं। दूसरे आंतरिक्ष अर्थात् ग्रह नक्षत्रोंके स्थानछोड़ और कहीं आकाशमें होयँ। औ तीसरे केतुभौम अर्थात् भूमिपर हैं इसकारण उनके उदय अस्तका ज्ञान नहीं होसक्ता २ ॥

अहुताशेनलरूपंयस्मिंस्तत्केतुरूपमेवोक्तम् ॥
खद्योतपिशाचालयमणिरत्नादीन्परित्यज्य ३ ॥

अग्नि रहित स्थानमें अग्नि देखपड़े वही केतुहै परन्तु खद्योत अर्थात् जुगुनू पिशाच स्थान चन्द्रकान्त आदि मणि पद्मराग आदि रत्न और भी कई प्रकार के काष्ठ आदि को छोड़कर अग्नि देखपड़े तब केतु जानना चाहिये क्योंकि इन पदार्थों में तो रात्रि के समय स्वाभाविकही अग्नि कीसी ज्योति देख पड़ती है ३ ॥

ध्वजशस्त्रभवनतरुतुरगकुञ्जराद्येष्वथान्तरिक्षास्ते ॥
दिव्यानक्षत्रस्थाभौमास्युरतोन्यथाशिखिनः ४ ॥

ध्वज शस्त्रगृह वृक्ष घोडे हाथी आदिमें जो अग्नि देखपडै वे अन्तरिक्ष केतु हैं नक्षत्र मंडलमें जोकेतुहों वे दिव्य कहाते हैं। औ इनके विना जो केतु हैं अर्थात् भूमिपर देखपड़ते हैं वे भौमकेतु हैं ४ ॥

शतमेकाधिकमेकंसहस्रमपरेवदन्तिकेतूनाम् ॥
बहुरूपमेकमेवप्राहमुनिर्नारदःकेतुम् ५ ॥

पराशर आदिकई मुनि एकसौ एक केतु बताते हैं गर्गआदिकोई २ एक सहस्र केतुकहतेहैं। औ नारद मुनिकहतेहैं कि एकही केतु दिव्य अंतरिक्षआदि अनेकरूप धारकर उदय अस्त होता है ५ ॥

यद्येकोयदिबहवःकिमनेनफलंतुसर्वथावाच्यम् ॥
उदयास्तमयैःस्थानैःस्पर्शैराधूमनैर्वर्णैः ६ ॥

एककेतुहै अथवा बहुत केतु हैं इसका निर्णय करनेसे क्या प्रयोजनहै हम को तो केतु के उदय अस्त आकाशभागमें स्थितग्रह नक्षत्रोंकोस्पर्श करनाआधूमन अर्थात् केतुकी शिखाकरके कौन ग्रह नक्षत्र आदि अभिधूमित हुआ औ वर्ण अर्थात् केतुकारंग इनकरके सर्वप्रकारसे फल कहनाहै ६ ॥

यावन्त्यहानिदृश्योमासास्तावन्तएवफलपाकः ॥
मासैरब्दांश्चवदेत्प्रथमात्पक्षत्रयात्परतः ७ ॥

जितने दिन केतु देखपड़े उतने महीने तक फल देता है इसी भांति महीनों से वर्ष कहै अर्थात् जितने महीने देखपड़े उतने वर्ष तक फल होता रहताहै। केतु के उदय के दिनसे तीनपक्ष अर्थात् ४५ दिनके अनन्तर केतु के फल होनेका आरंभ होता है अर्थात् प्रथम तीनपक्षमें केतुका कुछ फल नहीं होता ७ ॥

ह्रस्वस्तनुःप्रसन्नःस्निग्धस्त्वृजुरचिरसंस्थितःशुक्लः ॥

उदितोवाप्यभिवृष्टःसुभिक्षसौख्यावहःकेतुः ८ ॥

ह्रस्व अर्थात् लंबा न होय तनु अर्थात् स्थूल न होय निर्मल स्निग्ध अर्थात् चिकना सीधा थोड़ेसे काल देखपड़े शुक्लवर्णहोय औ जिसके उदय होतेही वर्षाहोजाय ऐसा केतु प्रजामें सुभिक्ष औ सुख करताहै ८ ॥

उक्तविपरीतरूपानशुभकरोधूमकेतुरुत्पन्नः ॥
इन्द्रायुधानुकारीविशेषतोद्वित्रिचूलोवा ९ ॥

पहिले जो केतुका ह्रस्व आदि शुभरूप कहा उससे जिस केतुका रूप विपरीतहोय वह केतु शुभफल नहीं करता। अर्थात् अशुभही फलकरता है। इन्द्रधनुषके समान जिसकेतुका रूपहोय वहभी अशुभ होता है। औ जिस केतुकी दोतीन शिखाहोयँ वहतो विशेषकरके अशुभफल देता है ९ ॥

हारमणिहेमरूपाःकिरणाख्यापंचविंशतिःसशिखाः ॥
प्रागपरदिशोर्दृश्यान्नृपतिविरोधावहारविजाः १० ॥

मोतियोंके हार चंद्रकांत आदि मणि अथवा सुवर्ण के रंगके समान जिनका रंग शिखा करके युक्त किरण नामक पचीस केतु सूर्यके पुत्रहैं वे पूर्व दिशामें अथवा पश्चिम दिशामें देख पड़ते हैं औ राजाओंका परस्पर विरोध कराते हैं। इन पचीस केतुओंमें से एक देखपड़ताहै सब एकवारही नहीं उदय होजाते हैं इसीभांति आगेभी जानना १० ॥

शुकदहनबन्धुजीवकलाक्षाक्षतजोपमाहुताशसुताः ॥
आग्नेयांदृश्यन्तेतावन्तस्तेपिशिखिभयदाः ११ ॥

शुक अर्थात् तोता अग्नि बंधुजीव अर्थात् गुलदुपहरका फूल लाख औ रुधिर इनके समान वर्ण पचीसकेतु अग्निके पुत्रहैं। वे अग्निकोणमें देखपड़ते हैं औ लोकमें अग्निकाभय करते हैं ११ ॥

वक्रशिखामृत्युसुतारूक्षाःकृष्णाश्चतेपितावन्तः ॥
दृश्यन्तेयाम्यायांजनमरकावेदिनस्तेच १२ ॥

टेढ़ीशिखावाले रूखे औ कृष्णवर्ण पचीस केतु मृत्युके पुत्रहैं। वे दक्षिण दिशामें देखपड़ते हैं औ सूचन करते हैं कि प्रजामें मरीपड़ैगी १२ ॥

दर्पणवृत्ताकाराविशिखाःकिरणान्विताधरातनयाः ॥
क्षुद्भयदाद्वाविंशतिरैशान्यामम्बुतैलनिभाः १३

दर्पणकी भांति वृत्ताकार शिखासे रहित किरणोंकरके युक्त बाईस केतु भूमिके पुत्रहैं। वे ईशानकोणमें उदय होते हैं उनकावर्ण जल अथवा तैलके वर्णके समान होताहै। इनके उदय होनेसे दुर्भिक्ष पड़ताहै १३ ॥

शशिकिरणरजतहिमकुमुदकुन्दकुसुमोपमाःसुताःशशिनः॥
उत्तरतोदृश्यन्तेत्रयःसुभिक्षावहाःशिखिनः १४॥

चंद्र किरण चांदी हिम अर्थात् बरफ कुमुदपुष्प औ कुन्दपुष्प के समान वर्ण तीन केतु चंद्रमाके पुत्र हैं। वे उत्तर दिशामें उदय होते हैं औ सुभिक्ष करते हैं १४॥

ब्रह्मसुतएकएवत्रिशिखोवर्णैस्त्रिभिर्युगान्तकरः॥
अनियतदिक्संभवोविज्ञेयोब्रह्मदण्डाख्यः १५॥

तीन रंगकी तीनशिखाओं करके युक्त ब्रह्माका पुत्र एकही केतुहै। उसके उदयकी कोई नियत दिशा नहीं चाहे जिस दिशामें उदय होताहै उसकानाम ब्रह्मदंडहै। उसके उदयहोनेसे प्रजाका क्षय होता है १५॥

शतमभिहितमेकसमेतमेतदेकेनविरहितान्यस्मात्॥
कथयिष्येकेतूनांशतानिनवलक्षणैःस्पष्टैः १६॥

एकसौ एक केतुके लक्षण औ फलतो कहदिये अब एकोननौसो अर्थात् ८९९ केतु स्पष्ट लक्षणों करके कहते हैं १६॥

सौम्यैशान्योरुदयंशुक्रसुतायान्तिचतुरशीत्याख्याः॥
विपुलसिततारकास्तेस्निग्धाशुभवन्तितीव्रफलाः १७॥

उत्तर औ ईशानकोणमें उदय होते हैं औ उनकी तारा बडी औ शुक्लवर्ण होती है औ स्निग्ध होती है वे चौरासी शुक्रके पुत्रहैं औ नामभी उनका चतुरशीतिहै। वे उदयहोयँ तो अशुभफल करते हैं। गर्गमुनिने इन चौरासी शुक्र पुत्र केतुओंका नाम विसर्पक कहा है १७॥

स्निग्धाःप्रभासमेताद्विशिखाःषष्टिःशनैश्चरांगरुहाः॥
अतिकष्टफलादृश्याःसर्वत्रैतेकनकसंज्ञाः १८॥

स्निग्ध दीप्ति करकेयुक्त औ दोशिखावाले साठकेतु कनकनाम सब दिशाओंमें उदय होतेहैं ये शनैश्चरके पुत्रहैं ये उदय होयँ तो अत्यन्त अशुभ फल करते हैं १८॥

विकचानामगुरुसुताःसितैकताराःशिखापरित्यक्ताः॥
षष्टिःपंचभिरधिकाःस्निग्धायाम्याश्रिताःपापाः १९

विकचनाम पैंसठकेतु बृहस्पतिके पुत्रहैं उनकी शुक्लवर्ण केवल एकतारा होती है शिखा नहीं होती स्निग्ध होते हैं। औ दक्षिण दिशामें उदय होतेहैं। इनके उदय होनेसे अशुभफल होता है १९॥

नातिव्यक्ताःसूक्ष्मादीर्घाःशुक्लायथेष्टदिक्प्रभवाः॥

बुधजास्तस्करसंज्ञापापफलास्त्वेकपञ्चाशत् २० ॥

तस्करनाम इक्यावन केतु बुधके पुत्रहैं। वे वहुत स्फुट नहीं हैं सूक्ष्महैं लंबेहैं शुक्लवर्ण हैं औ चाहे जिसदिशामें उदय होतेहैं। उनके उदय होने से अशुभफल होता है २० ॥

क्षतजानलानुरूपास्त्रिचूलताराःकुजात्मजाःषष्टिः ॥
नाम्नाचकौंकुमास्तेसौम्याशासंस्थिताःपापाः २१ ॥

कौंकुमनाम साठकेतु मंगलके पुत्रहैं जिनकारंग रुधिर औ अग्निकेसमान अतिरक्तहै। तीन शिखाकरके युक्त उनकी ताराहैं उत्तर दिशामें उदय होते हैं इनके उदय होनेसे अनिष्टफल होता है २१ ॥

त्रिंशत्त्र्यधिकाराहोस्तेतामसकीलकाइतिख्याताः ॥
रविशशिगादृश्यन्तेतेषांफलमर्कचारोक्तम् २२ ॥

तामसकीलकनाम तेंतीस केतु राहुकेपुत्रहैं। सूर्यविंब औ चंद्रविंबमें देख पड़तेहैं। इनकाफल सूर्यचार नामक तीसरे अध्यायमें कहआयेहैं २२ ॥

विंशत्याधिकमन्यच्छतमग्नेर्विश्वरूपसंज्ञानाम् ॥
तीव्रानलभयदानांज्वालामालाकुलतनूनाम् २३ ॥

विश्वरूप नामक एकसौबीस केतु अग्निके पुत्रहैं जिनकी तारा चारोंओर ज्वालाओं करके व्याप्तहै। उनके उदय होनेसे लोकमें अग्निका अतिभय होताहै २३ ॥

श्यामारुणाविताराश्चामररूपाविकीर्णदीधितयः ॥
अरुणाख्यावायोःसप्तसप्ततिःपापदाःपरुषाः २४ ॥

अरुणनामक सतहत्तर केतु वायुके पुत्रहैं। उनकी तारा नहीं होती केवल चामरके तुल्य शिखाही होती हैं। जिनके किरण चारोंओर फैले रहते हैं। उनका रंग श्याम औ रक्तहोता है औ रूक्ष होते हैं। औ उदय होयँ तोअशुभ-फल करते हैं। जिन केतुओंकी दिशा नहीं कही वे सब दिशाओंमें उदयहोते हैं ऐसा जानना चाहिये २४ ॥

तारापुंजनिकाशागणकानामप्रजापतेरष्टौ ॥
द्वेचशतेचतुरधिकेचतुरस्राब्रह्मसन्तानाः २५ ॥

ताराओंके समूहके तुल्य जिनका आकार है ऐसे गणकनामक आठ केतु प्रजापतिके पुत्र हैं। ये अशुभफलदायक हैं। औ चतुरस्राकार औ चतुरस्र नामक दोसौचार केतु ब्रह्माके पुत्र हैं। इनका फलभी गर्गमुनिने अशुभही कहा है २५ ॥

कङ्कानामवरुणजाद्वाविंशद्वंशगुल्मसंस्थानाः॥
शशिवत्प्रभासमेतास्तीव्रफलाःकेतवःप्रोक्ताः २६ ॥

कंकनाम बतीस केतु वरुण के पुत्र हैं जिनका आकार बांस के बिडे के समान है औ चंद्रकीसी कान्ति है। इनके उदय होने से अत्यन्त अशुभ फल होता है २६॥

षण्णवतिःकालसुताःकबन्धसंज्ञाःकबन्धसंस्थानाः॥
पुण्ड्राभयप्रदाःस्युर्विरूपताराश्चतेशिखिनाः २७॥

कबंध नामक छियानवे केतु कालके पुत्रहैं जिनका आकार कबंध अर्थात् शिरकट पुरुषके समानहै औ उनकी तारा स्फुट नहीं है। उनका उदयहोय तो पुंड्रनाम देशमें अभय होताहै और सब देशोंमें भय होता है २७॥

शुक्लविपुलैकतारानवविदिशांकेतवःसमुत्पन्नाः॥
एवंकेतुसहस्रंविशेषमेषामतोवक्ष्ये २८॥

शुक्लबर्ण बडी एकतारा करकेयुक्त नवकेतु विदिशाओं से उत्पन्न हुये हैं इनके उदय होनेसे भी अशुभही फल होता है औ ये केतु विदिशा अर्थात् आग्नेय आदि कोणोंमें उदय होते हैं। इसभांति सहस्र केतु कहे अब इन केतुओं का विशेष लक्षण कहते हैं। इन हजार केतुओं में कोई कोई देख पड़ते हैं सब नहीं देखपड़ते। जो २ देख पड़तेहैं उनका लक्षण कहतेहैं २८॥

उदगायतोमहांस्निग्धमूर्तिरपरोदयीवसाकेतुः॥
सद्यःकरोतिमरकंसुभिक्षमप्युत्तमंकुरुते २९॥

पश्चिम दिशामें उदयहोय औ उत्तरकी ओर दीर्घहोय। बड़ाहोय औ निर्मल मूर्त्तिहोय वह वसाकेतु नामकहै। वह उदय होतेही लोकमें मरी करता है औ उत्तम सुभिक्षभी करताहै २९॥

तल्लक्षणोऽस्थिकेतुःसतुरूक्षःक्षुद्भयावहःप्रोक्तः॥
स्निग्धस्तादृक्प्राच्यांशस्त्राख्योडमरमरकाय ३०॥

वसाकेतु के समानही जिसके सब लक्षण होयँ औ रूक्षहोय वह अस्थिकेतु है। वह उदयहोय तो दुर्भिक्ष करताहै। वसाकेतु के तुल्यही जो केतु होय स्निग्धहोय औ पूर्व दिशामें उदयहोय वह शस्त्रकेतुहै। उसका उदयहोय तो लोकमें शस्त्र कलह होय औ मरीपड़ै ३०॥

दृश्योऽमावास्यायांकपालकेतुःसधूम्ररश्मिशिखः॥
प्राङ्नभसोऽर्द्धविचारीक्षुन्मरकावृष्टिरोगकरः ३१॥

अमावास्याको पूर्व दिशामें उदयहोय जिसके किरणोंकी कांति धूम्र वर्ण

होय। आधे आकाशतक विचरै वह कपालकेतुहै। उसका उदयहोनेसे लोक में दुर्भिक्ष मरी अवृष्टि औ रोग होते हैं ३१॥

प्राग्वैश्वानरमार्गेशूलाग्रःश्यावरूक्षताम्रार्चिः॥
नभसस्त्रिभागगामीरौद्रइतिकपालतुल्यफलः ३२॥

जो केतु पूर्व दिशामें उदय होय। औ वैश्वानर मार्ग अर्थात् शुक्रचारमें जो दहन वीथी पूर्वाषाढ़ा औ उत्तराषाढ़ा नक्षत्रकी कहीहै उसपर देखपड़ै जिस की शिखाका अग्रशूल के तुल्य होय। औ कपिशवर्ण रूक्ष औ ताम्र वर्ण जिसके किरण होवैं। औ आकाश के तृतीयांश में गमन करै उसका नाम रौद्र केतुहै। उस के उदय होने से कपाल केतु के तुल्य फल होताहै अर्थात् दुर्भिक्ष मरी अवृष्टि औ रोग होते हैं ३२॥

अपरस्यांचलकेतुःशिखयायाम्याग्रयांगुलोच्छ्रितया॥ गच्छेद्य थायथोदक्तथातथादैर्घ्यमायाति ३३ सप्तमुनीन्संस्पृश्यध्रुवमभि जितमेवचप्रतिनिवृत्तः॥ नभसोऽर्द्धमात्रमित्वायाम्येनास्तंसमुपया ति ३४ हन्यात्प्रयागकूलाद्यावदवन्तींचपुष्करारण्यम्॥ उदगपिच देविकामपिभूयिष्ठंमध्यदेशाख्यम् ३५ अन्यानपिचसदेशान्क्वचि त्क्वचिद्धन्तिरोगदुर्भिक्षैः॥ दशमासान्फलपाकोऽस्यकैश्चिदष्टादश प्रोक्तः ३६॥

पश्चिम दिशा में चलकेतु उदय होताहै। उसकी शिखा का अग्र दक्षिण की ओर होता है औ वह शिखा एक अंगुल ऊंची होती है। ज्यों ज्यों वह उत्तर दिशाको जाता है त्यों त्यों उसकी शिखा लंबी होती जातीहै। सप्तऋषि ध्रुव औ अभिजित नक्षत्रको स्पर्शकर लौटताहै। आधे आकाशमें जाकर दक्षिण दिशा में अस्त होताहै। वह चलकेतु उदयहोय तो प्रयाग के किनारेसे अवन्ती पर्य्यन्त के देश औ पुष्करारण्यका नाश करता है। औ उत्तर दिशा में देविकानदी पर्य्यन्त के देशका औ विशेष करके मध्य देशका नाश करता है। और भी देशों को रोग औ दुर्भिक्षों करके कहीं २ नाश करताहै। इसका फल उदय होने से तीन पक्ष के अनन्तर दश महीने पर्य्यन्त होता रहता है औ गर्ग आदि कईमुनीश्वरों ने अठारह महीने तक इस का फल कहा है ३३। ३४। ३५।३६॥

प्रागर्द्धरात्रदृश्योयाम्याग्रःश्वेतकेतुरन्यश्च॥ कइतियुगाकृतिरप रेयुगपत्तौसप्तदिनदृश्यौ ३७ स्निग्धौसुभिक्षशिवदौ तथाधि तेकनामायः॥ दशवर्षाण्युपतापंजनयतिशस्त्रप्रकोपकृतम् ३८॥

पूर्व दिशा में अर्द्धरात्र के समय श्वेत केतु उदय होता है जिसकी शिखा का अग्र दक्षिण की ओर होता है। और दूसरा पश्चिम दिशा में युग अर्थात् बैल जोतने के जुएंके तुल्य जिसका आकार ऐसा कनामक केतु उदय होता है ये दोनों एक समय उदय होतेहैं औ सात दिन पर्य्यन्त देखपड़ते हैं। ये दोनों स्निग्ध होयँ तो प्रजामें सुभिक्ष औ कल्याण करतेहैं। औ कनामक केतु जो सात दिन से अधिक भी देखपड़े तो दशवर्ष पर्य्यन्त शस्त्रका उपद्रव अर्थात् युद्ध आदि प्रजामें करता है ३७। ३८॥

श्वेतइतिजटाकारोरूक्षःश्यावोवियत्त्रिभागगतः॥
विनिवर्त्ततेऽपसव्यंत्रिभागशेषाःप्रजाःकुरुते ३९॥

जटाके तुल्य जिसका आकार रूक्ष औ कपिशवर्ण श्वेत नामक केतु उदय होताहै वह आकाशमें तृतीयांश तक गमन करताहै फिर अपसव्य अर्थात् दाईं ओर होकर लौटताहै। वह केतु उदय होय तो तृतीयांश प्रजा शेष रहजाय दो भाग प्रजाका क्षय होय ३९॥

आधूम्रयातुशिखयादर्शनमायातिकृत्तिकासंस्थः॥
ज्ञेयःसरश्मिकेतुःश्वेतसमानंफलंधत्ते ४०॥

थोड़ी सी धुंधुली जिसकी शिखा होय औ कृत्तिका नक्षत्रके समीप देखपड़े उसका नाम रश्मिकेतु है वह श्वेतनामक केतु के तुल्यफल करताहै अर्थात् प्रजाके दो भाग क्षय करता है ४०॥

ध्रुवकेतुरनियतगतिप्रमाणवर्णाकृतिर्भवतिविष्वक्॥ दिव्यान्तरिक्षभौमोभवत्यथंस्निग्धइष्टफलः ४१ सेनांगेषुनृपाणांगृहतरुशैलेषुचापिदेशानाम्॥ गृहिणामुपस्करेषुचविनाशिनांदर्शनंयाति ४२॥

ध्रुव केतुके गति प्रमाण वर्ण औ आकार का कुछ नियम नहीं। औ सब दिशाओंमें उदय होताहै। यह केतु दिव्य आन्तरिक्ष औ भौम भी होताहै परन्तु चाहै जहां होय स्निग्ध होय तो शुभ फल करता है। जिन राजाओं का नाश होना होय उनकी सेनाके अंगोंमें देखपड़ताहै। जिन देशोंका नाशहोना होय उनके घर वृक्ष औ पर्वतोंपर देख पड़ताहै। औ जिन गृहस्थोंका क्षय होना होय उनके उपस्कर अर्थात् छाज चलनी वर्तन चक्की आदि गृहस्थ की सामग्रीपर देख पड़ता है ४१। ४२॥

कुमुदइतिकुमुदकान्तिर्वारुण्यांप्राक्शिखोनिशामेकाम्॥
दृष्टःसुभिक्षमतुलंदशकिलवर्षाणिसकरोति ४३॥

कुमुद पुष्प के तुल्य श्वेतवर्ण कुमुद केतु है वह पश्चिम दिशा में उदय

होता है उस की शिखा का अग्र पूर्व की ओर होता है । वह केतु एक रात्रि में ही देख पड़ता है । यह केतु उदय होय तो दश वर्ष पर्यन्त उत्तम सुभिक्ष करता है ४३ ॥

सकृदेकयामदृश्यःसुसूक्ष्मतारोऽपरेणमणिकेतुः ॥ ऋज्वीशिखास्यशुक्लास्तनोद्गताक्षीरधारेव ४४ उदयन्नेवसुभिक्षंचतुरोमासान्करोत्यर्धमासार्धान् ॥ प्रादुर्भावंप्रायःकरोतिचक्षुद्रजन्तूनाम् ४५ ॥

पश्चिम दिशा में सूक्ष्म तारा युक्त मणि केतु उदय होता है औ एकवार एक प्रहर भर देख पड़ताहै । इस की शुक्लवर्ण सीधी शिखा ऐसी शोभादेती है जिस भांति स्तनसे निकलती हुई दूध की धारा । यह केतु उदय होतेहीं साढ़ेचार महीने तक सुभिक्ष करता है । औ प्रायः नकुल आदि छोटेजीवों की उत्पत्ति करता है ४४ । ४५ ॥

जलकेतुरपिचपश्चात्स्निग्धःशिखयापरेणचोन्नतया ॥
नवमासान्ससुभिक्षंकरोतिशान्तिंचलोकस्य ४६ ॥

पश्चिम में जलकेतु उदय होता है वह स्निग्ध होताहै औ उसकी शिखा भी पश्चिम की ओर होती है । वह केतु उदय होय तो नवमहीने पर्यन्त सुभिक्ष करताहै औ प्रजामें कल्याण करता है ४६ ॥

भवकेतुरेकरात्रंदृश्यःप्राक्सूक्ष्मतारकःस्निग्धः ॥ हरिलांगूलोपमयाप्रदक्षिणावर्तयाशिखया ४७ यावतएवमुहूर्तान्दर्शनमायाति निर्दिशेन्मासान् ॥ तावदतुलंसुभिक्षंरूक्षेप्राणान्तिकान्रोगान् ४८ ॥

पूर्व दिशामें सूक्ष्मतारा युक्त औ स्निग्ध भवकेतु उदय होकर एकरात्रिदेख पड़ताहै औ उसकी शिखा सिंहके पुच्छके आकार औ दक्षिणावर्त होती है । वह केतु जितने मुहूर्त देखपड़े उतने महीने पर्यन्त उत्तम सुभिक्ष कहना चाहिये । जो यहकेतु रूक्षहोय तो प्राण हरनेवाले रोग उत्पन्न होयँ ४७ । ४८ ॥

अपरेणपद्मकेतुर्मृणालगौरोभवेन्निशामेकाम् ॥
सप्तकरोतिसुभिक्षंवर्षाण्यतिहर्षयुक्तानि ४९ ॥

पश्चिम दिशामें मृणाल अर्थात् कमलकी जड़के तुल्य शुक्लवर्ण पद्मकेतु एकरात्रि देखपड़ताहै वह अतिहर्षयुक्त सातवर्षपर्यंत सुभिक्षकरता है ४९ ॥

आवर्तइतिनिशार्धेसव्यशिखोऽरुणनिभोऽपरेस्निग्धः ॥
यावत्क्षणान्सदृश्यस्तावन्मासान्सुभिक्षकरः ५० ॥

आधी रात्रिके समय पश्चिम दिशामें रक्तवर्ण औ स्निग्ध आवर्तनामक केतु

उदय होता है उसकी शिखा दक्षिण ओर होती है वह जितने मुहूर्त देखपड़ै उतने महीने तक सुभिक्ष करताहै ५० ॥

पश्चात्सन्ध्याकालेसंवर्तोनामधूम्रताम्रशिखः ॥ आक्रम्यवियत्त्र्यंशंशूलाग्रावस्थितोरौद्रः ५१ यावतएवमुहूर्त्तान्दृश्योवर्षाणिहन्तितावन्ति ॥ भूपाञ्छस्त्रनिपातैरुदयर्क्षंचापिपीडयति ५२ ॥

सन्ध्याके समय पश्चिम दिशामें संवर्त नामक केतु उदय होताहै। उसकी शिखा धूम्रवर्ण औ ताम्रवर्ण होती है। आकाशके तृतीयांश को आक्रमण करके स्थित होताहै। औ शूल उसके अग्र अर्थात् शिरपर स्थित होताहै अर्थात् उसकी तीन शिखा होती हैं। वह भय देनेवाला है। जितने मुहूर्त वह केतु देखपड़ै उतने वर्ष पर्यन्त प्रजाका नाश करता है। औ युद्धोंकरके राजाओं का भी क्षय करता है। औ जिस नक्षत्रपर उदय होय उस नक्षत्र को भी पीड़ादेताहै ५१। ५२ ॥

येशस्तान्हित्वाकेतुभिराधूमितेऽथवास्पृष्टे ॥
नक्षत्रेभवतिवधोयेषांराज्ञांप्रवक्ष्येतान् ५३ ॥

जो केतु अच्छेकहेहैं उनको छोड़कर और केतु जिस नक्षत्रका स्पर्श करैं अथवा अधूमन करैं उससे जिन राजाओंका मृत्यु होताहै उनको हम कहते हैं। केतुकी शिखामें जो ग्रहनक्षत्र आजाय वह आधूमित होताहै ५३ ॥

अश्विन्यामश्मकपं भरणीषुकिरातपार्थिवंहन्यात् ॥
बहुलासुकलिङ्गेशं रोहिण्यांसूरसेनपतिम् ५४ ॥

अश्विनी नक्षत्रको केतु स्पर्शकरै अथवा अभिधूमित करै तो अश्मक देश का राजा माराजाय। भरणी नक्षत्रके स्पर्श करनेसे किरात अर्थात् भीलोंका राजा कृत्तिका में कलिंग देशका स्वामी औ रोहिणी के स्पर्श आदि करने से सूरसेन देशके राजाका मृत्युहोय ५४ ॥

औशीनरमपिसौम्येजलजाजीवाधिपंतथार्द्रासु ॥
आदित्येऽश्मकनाथंपुष्येमगधाधिपंहन्ति ५५ ॥

मृगशिरा में केतु का उपघात होने से उशीनर देश का स्वामी आर्द्रा में जल से उत्पन्न जो मत्स्य आदि उनसे जीवन करनेवाले अर्थात् पूर्व देश के निवासी उनकास्वामी पुनर्वसुमें अश्मकदेशका राजा औ पुष्यमें मगधदेशका प्रभु माराजाय ५५ ॥

असिकेशंभौजङ्गेपित्र्येऽङ्गंपाण्ड्यनाथमपिभाग्ये ॥
औज्जयनिकमार्यम्णेसावित्रेदण्डकाधिपतिम् ५६ ॥

श्लेषामें असिक जनोंका पति मघामें अंगदेशका स्वामी पूर्वाफाल्गुनी में पांड्यदेशका राजा उत्तराफाल्गुनी में उज्जयिनीका अधिपति औ हस्तनक्षत्रमें दंडकारण्यका स्वामी माराजाताहै ५६ ॥

चित्रासुकुरुक्षेत्राधिपस्य मरणंसमादिशेत्तज्ज्ञः ॥
काश्मीरिककाम्बोजौ नृपतीप्राभंजनेनस्तः५७ ॥

चित्रा नक्षत्रको केतु स्पर्श आदिकरै तो कुरुक्षेत्रके राजाका मृत्युकहै स्वातिनक्षत्रमें कश्मीर औ कंबोजदेशके राजा नष्टहोयँ ५७ ॥

इक्ष्वाकुरलकनाथोहन्येतेयदिभवेद्विशाखासु ॥
मैत्रेपुण्ड्राधिपतिर्ज्येष्ठास्वथसार्वभौमवधः ५८ ॥

विशाखा नक्षत्रमें जो केतुका उपघात होय तो इक्ष्वाकुजनों के नाथ औ अलकापुरी के नाथ मारे जाते हैं। अनुराधामें पुंड्रदेशका अधिपति नष्टहोय औ ज्येष्ठा नक्षत्रमें केतुके उपघात होने से सार्वभौम अर्थात् कान्यकुब्जाधिपतिका मरणहोय ५८ ॥

मूलेन्ध्रमद्रकपतीजलदेवेकाशिपोमरणमेति ॥
यौधेयकार्जुनायनशिविचैद्यान्वैश्वदेवेच ५९ ॥

मूलनक्षत्रको केतु उपघात करै तो अंध्रदेश औ मद्रदेशके राजाओं का मृत्युहोय। पूर्वाषाढ़ामें काशीका राजा मृतहोय। औ उत्तराषाढ़ा केतु करके स्पृष्ट अथवा अभिधूमित होय तो यौधेयक अर्जुनायन शिवि औ चैद्य येराजा मारे जायँ ५९ ॥

हन्यात्केकयनाथंपाञ्चनदंसिंहलाधिपंवाङ्गम् ॥
नैमिषनृपंकिरातंश्रवणादिषुषट्स्विमान्क्रमशः ६० ॥

श्रवण आदि छः नक्षत्रों को केतु उपघात करै तो केकय आदि छः राजा क्रम से मारेजाते हैं अर्थात् श्रवण में केकय देशका राजा धनिष्ठा में पंचनद देशका राजा शतभिषमें सिंहलदेशका अधिपति पूर्वाभाद्रपदामें वंगदेशका प्रभु उत्तराभाद्रपदामें नैमिषारण्यका स्वामी औ रेवती नक्षत्रमें केतुका उपघात होनेसे किरातराजा मृत्युको प्राप्तहोता है ६० ॥

उल्काभिताडितशिखः शिखीशिवःशिवतरोऽभिवृष्टोयः ॥
अशुभःसएवचोलावगाणसितहूणचीनानाम् ६१ ॥

जिस केतुकी शिखाको उल्का ताड़न करै वह केतु शुभ होता है। औ जिस केतुके उदय होतेही वर्षा होजाय वह अति शुभहोताहै। अति दृष्टोयः। ऐसा पाठ होय तो जोकेतु उदय होतेही देखपड़ै यह अर्थ जानना। ऐसाकेतु

सब जगत् के लिये शुभफल करताहै परंतु चोल अवगाण सितहूण औ चीन देश निवासी जनोंके लिये वहकेतु अशुभ होता है ६१ ॥

नम्रायतःशिखिशिखाभिश्रृतायतोवाऋक्षंचयत्स्पृशतितत्कथितांश्चदेशान् ॥ दिव्यप्रभावनिहतात्सयथागरुत्मान् भुङ्क्तेगतोनरपतिःपरभोगिभोगान् ६२ ॥

इतिश्रीवराहमिहिरकृतौबृहत्संहितायांकेतुचारोनामैकादशोऽध्यायः ११ ॥

जिस दिशामें केतुकी शिखानम्र अर्थात् वक्रहोय अथवा जिस दिशाको बढ़ती जाती होय । उसदिशाके देशोंको औ जिसनक्षत्रको केतुस्पर्शकरै उस नक्षत्रके जो देश आगेकहेंगे उनदेशोंपर जो राजाचढ़कर जाय वह अपनेदिव्य प्रभावकरके उनदेशोंको जीत उनका भोग करताहै जिस भांति उत्तम सर्पोंके शरीरोंका गरुड़ भोजन करै ६२ ॥

श्रीवराहमिहिराचार्यकीबनाईबृहत्संहितामेंकेतुचारनामक
ग्यारहवांअध्यायसमाप्तहुआ ॥ ११ ॥

बारहवांअध्याय ॥

अगस्त्यचार ॥

भानोर्वर्त्मविघातवृद्धशिखरोविन्ध्याचलस्तम्भितो वातापिर्मुनिकुक्षिभित्सुररिपुर्जीर्णश्चयेनाऽसुरः॥ पीतश्चाम्बुनिधिस्तपोम्बुनिधिनायाम्याचदिग्भूषिता तस्यागस्त्यमुनेःपयोद्युतिकृतश्चारःसमासादयम् १ ॥

सूर्यका मार्गरोकनेकेलिये जिसके शिखर बढ़े उस विन्ध्याचलको स्तम्भन किया । मुनियों के उदर बिदारण करनेवाला देवशत्रु वातापि नाम असुर अपने उदरमें जीर्णकिया जिस तपके समुद्र मुनिने समुद्रको पानकिया औ दक्षिणदिशा शोभित की । जलोंका निर्मल करनेवाले उस अगस्त्यमुनि का यहचार संक्षेप से कहते हैं । यहश्लोक क्षेपकहै १ ॥

समुद्रोन्तःशैलैर्मकरनखरोत्खातशिखरैः कृतस्तोयोच्छित्त्यासपदिसुतरांयेनरुचिरः ॥ पतन्मुक्तामिश्रैःप्रवरमणिरत्नाम्बुनिवहैः सुरान्प्रत्यादेष्टुंमितमुकुटरत्नानिवपुरा १ ॥

जिस अगस्त्यमुनि ने पूर्वकाल में जल को पानकरके तत्क्षण समुद्र को अत्यन्त सुंदर करदिया । मध्यमें स्थित जो मैनाकआदि पर्वत कि मकरों के नखों करके जिनके शिखर उखड़ रहे हैं उनकरके समुद्रको रमणीय किया मित अर्थात् थोड़ेसे रत्नजिनके मुकुटों में लगेहैं ऐसे देवताओंको निराकरण

करनेकेलिये मानो गिरतेहुये मोतियों करके मिश्रित औ उत्तममणि औ रत्नों करकेयुक्त जो अंबुनिवह अर्थात् झरने उनकरके देवताओंका मानो तिरस्कार करने के लिये समुद्रको रिक्त किया १ ॥

येनचाम्बुहरणेपिविद्रुमैर्भूधरैःसमणिरत्नविद्रुमैः ॥
निर्गतैस्तदुरगैश्चराजितः सागरोधिकतरंविराजितः २ ॥

वृक्षों करके रहित औ मणि रत्न औ विद्रुम अर्थात् मूंगों करके युक्त जो पर्वत उनकरके औ पर्वतों से पंक्ति बांध कर जो सर्प निकले उन करके जिस अगस्त्य मुनिने जलहरने परभी समुद्रको अधिक शोभितकिया २ ॥

प्रस्फुरत्तिमिजलेभजिह्मगःक्षिप्तरत्ननिकरोमहोदधिः ॥
आपदांपदगतोपियापितोयेनपीतसलिलोमरश्रियम् ३ ॥

जिस अगस्त्य मुनिने विपत्तिके स्थानमें प्राप्तहुआ औ पीतसलिल अर्थात् जिसका जलपान करलिया ऐसा समुद्र भी देवताओंके तुल्यशोभाको प्राप्त किया कैसासमुद्रहै कि जिसमें मत्स्य जल हस्ती औ सर्प चलरहेहैं औ रत्नोंका समूह जिसमें बिखररहा है देवलोक में देवता भी कोई मत्स्यपर चढ़कर गमन करते हैं कोई ऐरावत आदि हस्तीपर चढ़ते हैं कोई २ भौम आदि ग्रह वक्रगति चलते हैं। और रत्नों के समूह वहांभी पड़ेहैं इससे समुद्र औ देवलोक तुल्यहोगये ३ ॥

प्रचलत्तिमिशुक्तिजशंखचितःसलिलेपहृतेपिपतिःसरिताम् ॥
सतरंगसितोत्पलहंसभृतःसरसःशरदीवबिभर्तिरुचम् ४ ॥

अगस्त्य मुनिके जलपान करलेने से समुद्र ऐसा शोभित होताहै जिस भांति शरद ऋतुमें सरोवर। समुद्र तो चलतेहुये मत्स्य मोती औ शंखोंकर के व्याप्तहै औ सरोवर जलके तरंग श्वेत कमल औ हंसों करके युक्तहोता है इसीलिये दोनोंकी तुल्यता है ४ ॥

तिमिसिताम्बुधरंमणितारकंस्फटिकचन्द्रमनम्बुशरद्द्युति ॥
फणिफणोपलरश्मिशिखिग्रहंकुटिलगेशवियच्चचकारयः ५ ॥

जिस अगस्त्य मुनिने कुटिलगा अर्थात् नदी उनके ईश अर्थात् समुद्रको आकाशके समान करदिया। मत्स्य जिसमें श्वेतमेघोंके समान हैं। मणितारा ओंके तुल्य स्फटिकमणि जिसमें चन्द्रमाजलका न होना जिसमें शरद ऋतु की शोभाहै सर्पोंके मणियोंकेकिरण जिससमुद्रमें धूमकेतुसे देखपड़ते हैं। इस भांतिजोपदार्थ आकाशमें होतेहैं सोसबजलहीन समुद्रमें भी देखपड़े ५ ॥

दिनकररथमार्गविच्छित्तयेऽभ्युद्यतंयश्चलच्छृङ्गमुद्भ्रान्तविद्याध

रांसावसक्तप्रियाव्यग्रदत्ताङ्कदेहा वलम्बाम्बराभ्युच्छ्रितोद्धूयमानध्वजैः शोभितम् । करिकटमदमिश्ररक्तावलेहानुवासानुरिद्विरेफावलीनोत्तमांगैः कृतान्वाणपुष्पैरिवोत्तंसकान्धारयद्भिर्मृगेन्द्रैःसनाथीकृतान्तर्दरीनिर्झरम् ॥ गगनतलमिवोल्लिखन्तंप्रवृद्धर्गजाकृष्टफुल्लद्रुमत्रासविभ्रान्तमत्तद्विरेफावलीगीतमंदस्वनैः शैलकूटैस्तरक्षर्क्षशार्दूलशाखामृगाध्यासितैः । रहसिमदनसक्तयारेवयाकान्तयेवोपगूढंसुराध्यासितोद्यानमम्भोशनानन्नमूलानिलाहारविप्रान्वितंविन्ध्यमस्तम्भयद्यश्चतस्योदयः श्रूयताम् ६ ॥

सूर्यके रथका मार्ग रोकने केलिये उठाहुआ इसीकारण जिसके शिखरकांपते हैं। उनशिखरोंमें स्थितइसीसे उद्भ्रांत अर्थात् भयभीत जो विद्याधर उनके कंधों में अवसक्त जो उनकी प्रिया उनने व्यग्रहोकर स्थापन किये जो अपने प्रियों के अंकमें देह उनमें अवलंबित जो वस्त्र वेही बहुतऊंचे औ कांपतेहुये ध्वज उनकरके शोभित औ हाथियोंके गंडस्थलमें जो दानजल उसकरके मिश्रित जो रुधिर उसका जो आस्वादन उसकी सुगंधिको अनुसरण करनेवाले जो भ्रमर वे जिनकेमस्तकों में लीनहोरहे हैं इसीलिये मानो बाण पुष्पोंके अवतंस अर्थात् शिरोमाला धारण कररहे हैं ऐसे जो सिंह उनकर के अधिष्ठित हैं गुफाओंकेभीतर झरने जिसमें औ हाथियों करके खैंचे जो फूलेहुये वृक्षउनमें त्रासकरके भ्रांत जो मत्त भ्रमरोंकी पंक्ति उसके गायन काहै गंभीर शब्द जिनमें जरख रीछ व्याघ्र औ वानरों करके सेवित ऐसे अतिऊंचे अपने शिखरों करके मानोआकाशको लिखरहाहै औ जो एकांतमें नर्मदानदी ने कामातुर कामिनी के समान आलिंगनकिया है औ जिसके उद्यानों को देवता सेवन करते हैं। औ केवल जलको पानकरनेवाले निराहार रहनेवाले कंदमूल भक्षण करनेवाले औ पवन आहार करकेही रहनेवाले जो ब्राह्मण उन करके युक्त विंध्याचलको जिस अगस्त्यमुनिने स्तंभन किया अर्थात् बढ़नेसे रोका उसका उदयश्रवणकरो ६ ॥

उदयेचमुनेरगस्त्यनाम्नःकुसमायोगमलप्रदूषितानि ॥
हृदयानिसतामिवस्वभावात्पुनरम्बूनिभवन्तिनिर्मलानि ७ ॥

भूमिकेस्पर्शहोने से जो कर्दम आदिमल उसकर के दूषित जो जल वे अगस्त्यमुनिका उदयहोनेसे फिर स्वभावसेही निर्मल होजाते हैं। जिसभांति दुष्टपुरुषोंके संसर्गसे जो पाप उसकरके दूषित जो हृदय वे सत्पुरुषोंका दर्शन करतेही निर्मल होजाते हैं ७ ॥

पार्श्वद्वयाधिष्ठितचक्रवाकामापुष्णतीसस्वनहंसपंक्तिम् ॥
ताम्बूलरक्तोत्कषिताग्रदन्तीविभातियोषेवसरित्सहासा ८ ॥

दोनों ओर जिसके चक्रवाक नामक पक्षीस्थित हैं ऐसी औ शब्दको करनेवाली जो हंसपंक्ति उसको पोषण करती हुई जो शरद ऋतु वह तांबूल करके रक्त औ उत्कषितहैं दंताग्र जिसके ऐसी हास्ययुक्त जो स्त्री उसकीभांति शोभित होती है ८ ॥

इन्दीवरासन्नसितोत्पलान्विताशरद्भ्रमत्षट्पदपंक्तिभूषिता ॥
सभ्रूलताक्षेपकटाक्षवीक्षणाविदग्धयोषेवविभातिसस्मरा ९ ॥

नील कमल पुष्पके समीप जो श्वेत कमल उन करके युक्त औ उड़तेहुये भ्रमरों की पंक्ति करके शोभित जो शरद ऋतु वह भ्रूलता के चलन करके जो कटाक्ष उसकरके युक्तहैं वीक्षणं अर्थात् देखना जिसका ऐसी कामातुर चतुर नारी की भांति शोभित होती है ९ ॥

इन्दोःपयोदविगमोयहितांविभूतिंद्रष्टुंतरंगवलयाकुसुदंनिशासु ॥
उन्मीलयत्यलिनिलीनदलं सुपक्ष्मवापीविलोचनमिवासिततारकान्तम् १० ॥

मेघों के निवृत्त होने से जो शोभा चन्द्रमा को प्राप्त हुई उसके देखने के लिये रात्रि के समय मानों वापी अपने कुमुद रूप नेत्रको खोलतीहै ॥ कैसा कुमुद है कि जिसके दलपर भ्रमर बैठा है इससे वह कृष्ण वर्ण की कनीनिका युक्त नेत्रके समानहै। सुन्दर हैं पक्ष्म अर्थात् नेत्र रोम जिसमें। तरंगहीहैं कंकण जिसवापीके १० ॥

नानाविचित्राम्बुजहंसकोककारण्डवापूर्णतडागहस्ता ॥
रत्नैःप्रभूतैःकुसुमैःफलैश्चसूर्यच्छतीवार्घमगस्त्यनाम्ने ११ ॥

अनेक प्रकारके विचित्र कमल हंस चक्रवाक औ कारण्डवनाम पक्षियों करके भरेहैं तड़ाग रूप हस्त जिसके ऐसी भूमिमानों बहुतसे रत्न पुष्प औ फलों करके अगस्त्यमुनि को अर्घही देती है ११ ॥

सलिलममरपाज्ञयोज्झितंयद्घनपरिवेष्टितमूर्त्तिभिर्भुजंगैः ॥
फणिजनितविषाग्निसंप्रदुष्टंभवतिशिवंतदगस्त्यदर्शनेन १२ ॥

इन्द्रकी आज्ञासे मेघों करके आच्छादित शरीर नागोंने जो जलबरसा वह सर्पोंकी विषाग्निकरके दूखितजल अगस्त्यके दर्शनसे निर्मल होजाताहै १२ ॥

स्मरणादपिपापमपाकुरुतेकिमुतस्तुतिभिर्वरुणांगरुहः ॥
मुनिभिःकथितोऽस्ययथार्थविधिःकथयामितथैवनरेन्द्रहितम् १३ ॥

वरुणका पुत्र अगस्त्यमुनि स्मरण करनेसेही पाप दूरकरताहै स्तुति करने से तो क्या कहनाहै। गर्गआदि मुनीश्वरोंने जिसभांति उसके अर्घकी विधिकहीहै वह राजाका हित विधान हम वैसेही कहते हैं १३ ॥

संख्याविधानात्प्रतिदेशमस्यविज्ञायसंदर्शनमादिशेज्ज्ञः ॥
तत्रोज्जयिन्यामगतस्यकन्यांभागैःस्वराख्यैःस्फुटभास्करस्य १४॥

प्रत्येक देश में गणित विधि से जानकर अगस्त्यमुनि के उदय का समय पंडित कहै कन्या के पहुँचने में सात अंश जब स्पष्ट सूर्य के शेष रहैं अर्थात् सिंह के तेईस अंशपर जब स्पष्ट सूर्य होयँ तब उज्जयिनीमें अगस्त्यमुनिका उदय होता है १४ ॥

ईषत्प्रभिन्नेऽरुणरश्मिजालैर्नैशेन्धकारेदिशिदक्षिणस्याम् ॥
सांवत्सरावेदितदिग्विभागोभूपोऽर्घमुर्व्यांप्रयतःप्रयच्छेत् १५ ॥

सूर्य के किरणों करके रात्रिका थोडासा अन्धकार जिस समय निवृत्त होय उस समय दक्षिण दिशा में ज्योतिषी ने जिसको दिशा बतलाईहै ऐसाराजा पवित्रहोकर भूमिपर अर्घदेवै १५ ॥

कालोद्भवैःसुरभिभिःकुसुमैःफलैश्चरत्नैश्चसागरभवैःकनकाम्बरैश्च।
धेन्वावृषेणपरमान्नयुतैश्चभक्ष्यैःदध्यक्षतैःसुरभिधूपविलेपनैश्च १६

अब अर्घ की सामग्री कहते हैं। उस काल के उत्पन्न सुगन्ध युक्त पुष्प फल समुद्र से उत्पन्न रत्न सुबर्ण बस्त्र गौ वृष खीर करके युक्त अनेक प्रकार के भक्ष्य दही अक्षत सुगन्ध युक्त धूप औ चन्दन आदि लेपन इन सब करके अगस्त्यमुनि को अर्घदेवै १६ ॥

नरपतिरिममर्घंश्रद्दधानोददानःप्रविगतगददोषोनिर्जितारातिपक्षः। भवतियदिचदद्यात्सप्तवर्षाणिसम्यक् जलनिधिरशनायाःस्वामितांयातिभूमेः १७॥

श्रद्धापूर्बक जो राजा इस अर्घकोदेवै उसके सब रोग निवृत्त होतेहैं औ शत्रुओं को जीतताहै। सातबर्ष पर्यंत जो भलीभांति अर्घदेवै वह राजा समुद्र मेखला भूमिका स्वामी अर्थात् चक्रवर्ती होजाय १७॥

द्विजोयथालाभमुपाहृतार्घःप्राप्नोतिवेदान्प्रमदाश्चपुत्रान् ॥
वैश्यश्चगांभूरिधनंचशूद्रो रोगक्षयंधर्मफलंचसर्वे १८ ॥

ब्राह्मण यथालाभ अर्थात् जितनीबस्तु मिलैं उनकरके अर्घदेवै तो वेदस्त्री औ पुत्रपाताहै वैश्य अर्घदेवै तो गौपावै औ शूद्र बहुत धनपावै और जो कोई अर्घदेवैं सो सबरोगक्षय औ धर्मफल पाते हैं १८ ॥

रोगान्करोतिपरुषःकपिलस्त्ववृष्टिंधूम्रोगवामशुभकृत्स्फुरणोभयाय॥ मांजिष्ठरागसदृशःक्षुधमाहवांश्चकुर्यादणुश्चपुररोधमगस्त्यनामा १९॥

अगस्त्यमुनिका तारारूक्ष होय तो रोगकरताहै कपिलवर्णहोय तो वर्षानहीं होतीहैं धूम्रवर्ण होय तो गौओंको अशुभ करताहै। स्फुरण अर्थात् चंचलहोय तो प्रजामें भयहोता है। मंजीठके समान लालरंगका होय तो दुर्भिक्ष पड़ता हैं औ युद्धहोते हैं औ अगस्त्यका ताराअणु अर्थात् छोटासाहोय तो पुररोध होय अर्थात् राजाओंके नगरोंको शत्रुवेरलेवें १९॥

शातकुम्भसदृशःस्फटिकाभस्तर्पयन्निवमहींकिरणौघैः॥
दृश्यतेयदिततःप्रचुरान्नाभूर्भवत्यभयरोगजनाढ्या २०॥

चांदीके अथवा स्फटिकके समान श्वेतवर्ण औ निर्मल अगस्त्यकाताराहोय औ अपने किरणसमूहकरके मानोंभूमिको तृप्तकररहाहै ऐसा देखपड़ै तो भूमि परबहुतअन्नहोय औ सबमनुष्य निर्भय औ नीरोगरहैं २०॥

उल्कयाविनिहतःशिखिनावाक्षुद्भयंमरकमेवचधत्ते॥
दृश्यतेसकिलहस्तगतेर्केरोहिणीमुपगतेस्तमुपैति २१॥

इतिवराहमिहिरकृतौबृहत्संहितायामगस्त्यचारोनामद्वादशोऽध्यायः १२॥

जो अगस्त्यकातारा उल्का अथवा धूमकेतु करके ताड़ितहोय तो प्रजामें दुर्भिक्ष औ मरीपड़ती है। हस्तनक्षत्रपर सूर्यस्थितहोय तबअगस्त्यका उदय होताहै औ रोहिणी नक्षत्रपर सूर्य स्थितहो तबअगस्त्यका अस्त होताहै। यह उदयअस्त गणितसे नहीं मिलता वराहमिहिराचार्यने पराशर मुनिके वचन के अनुरोधसे कहदिया है। इसीसे श्लोकमें आगमसूचन के लिये (किल) शब्दका प्रयोग कियाहै २१॥

श्रीवराहमिहिराचार्यकीबनाईबृहत्संहितामेंअगस्त्यचार
नामकबारहवांअध्यायसमाप्तहुआ १२॥

तेरहवां अध्याय॥

सप्तर्षिचार॥

सैकावलीवराजतिससितोत्पलमालिनीसहासेव॥ नाथवतीवचदिग्यैःकौवेरीसप्तभिर्मुनिभिः १ ध्रुवनायकोपदेशान्नरिनर्तीवोत्तराभ्रमद्भिश्च॥ यैश्चारमहंतेषांकथयिष्येवृद्धगर्गमतात् २॥

जिनसप्तऋषियोंकरके उत्तरदिशा मानों एकलड़ी मोतियोंकी मालापहिने श्वेत कमलोंकी माला पहिने हँसतीहुई औ नाथवती अर्थात् स्वामियुक्त देख

पड़ती है औ भ्रमणकरतेहुये जिन सप्तऋषियोंकरके ध्रुवताराही एकनायक अर्थात् सिखानेवाला आचार्य उसके उपदेशसे उत्तरदिशा मानों नाचती है उनकाचार हमवृद्धगर्ग मुनिके मतसे कहते हैं १। २॥

आसन्मघासुमुनयःशासतिपृथ्वींयुधिष्ठिरेनृपतौ ॥
षड्द्विकपंचद्वियुतःशककालस्तस्यराज्ञश्च ३॥

युधिष्ठिरमहाराज जबराज्यकरतेथे उससमय सप्तऋषि मघानक्षत्रपर स्थित थे। शालिबाहनकेशकमें २५२६ पच्चीस सौछब्बीस जोड़देनेसे वर्तमान शकपर्यंत युधिष्ठिरसे गतवर्ष होजाते हैं॥ गतवर्षोंमें सौकाभागदेनेसे जोलब्ध आवे वहमघासेलेकर भुक्तनक्षत्रोंकी संख्याआती है शेष जिसनक्षत्रपर सप्तऋषिहोयँ उसके भुक्तवर्षोंकी संख्याहोती है ३॥

एकैकस्मिन्नृक्षेशतंशतंतेचरन्तिवर्षाणाम् ॥
प्रागुत्तरतश्चैतेसदोदयन्तेससाध्वीकाः ४॥

एक २ नक्षत्रपर सौ २ वर्षपर्यंत गमनकरते हैं अर्थात् सौवर्षमें एकनक्षत्रका भोगकरते हैं। औअरुंधती सहित सप्तऋषि ईशानकोणमें सदाउदयहोतेहैं ४॥

पूर्वेभागेभगवान्मरीचिरपरेस्थितोवसिष्ठोस्मात् ॥ तस्याऽङ्गिरास्ततोऽत्रिस्तस्यासन्नःपुलस्त्यश्च ५ पुलहःक्रतुरितिभगवानासन्नानुक्रमेणपूर्वाद्याः ॥ तत्रवसिष्ठंमुनिवरमुपाश्रितारुन्धतीसाध्वी ६॥

उनसप्तऋषियोंमें पूर्व दिशामें मरीचि स्थितरहते हैं मरीचिसे पश्चिममें वसिष्ठ वसिष्ठसे पश्चिम अंगिरा अंगिरासे पश्चिम अत्रि अत्रिके समीप पुलस्त्य पुलस्त्यके समीप पूर्व आदिपुलह औक्रतु स्थितहैं। इनमें वसिष्ठमुनिके समीप छोटासातारा अरुन्धतीकाहै ५। ६॥

उल्काशनिधूमाद्यैर्हताविवर्णाविरश्मयोह्रस्वाः ॥
हन्युःस्वंस्ववर्गेविपुलाःस्निग्धाश्चतद्वृद्ध्यै ७॥

ये सप्तऋषि उल्काअशनि धूमआदिक करकेहतहोय विवर्ण अर्थात् मलिन किरणहीन औ छोटे विंबकरके युक्तहोयँ तो अपने २ वर्गका नाशकरते हैं औ बड़े विंबकरके युक्त औ स्निग्धहोयँ तो अपने २ वर्गकी वृद्धि करते हैं॥ अब इन सातोंके वर्ग कहते हैं ७॥

गन्धर्वदेवदानवमन्त्रौषधिसिद्धयक्षनागानाम् ॥
पीडाकरोमरीचिर्ज्ञेयोविद्याधराणांच ८॥

गंधर्व देवता दानव मंत्र ओषधी सिद्ध यक्ष नाग औ विद्याधरोंको मरीचि पीड़ा करनेवाला जानना चाहिये अर्थात् मरीचिकी तारा उपतप्तहोय तो

इनकोपीड़ाहोय औ वहतारा स्निग्ध औ विपुलहोय तो इनकीवृद्धिहोती है ८॥

शकयवनदरदहारतकाम्बोजांस्तापसान्वनोपेतान् ॥
हन्तिवसिष्ठोऽभिहतोविवृद्धिदोरश्मिसंपन्नः ९ ॥

शक यवन दरद हारत औ कांबोजदेशके निवासी तपकरनेवाले वनमेंरहने वाले इन सबको वसिष्ठ अभिहत होय तो नाशकरताहै औ उत्तम किरणों करके युक्तहोय तो वृद्धि करताहै ९ ॥

अङ्गिरसोज्ञानयुताधीमन्तोब्राह्मणाश्चनिर्दिष्टाः ॥
अत्रेःकान्तारभवाजलजान्यम्भोनिधिःसरितः १० ॥

ज्ञानी पुरुष बुद्धिमान् औ ब्राह्मण ये अंगिराके वर्ग हैं अर्थात् अंगिरा का तारा उपतप्त होय तो इनको पीड़ा होती है। वनमें उत्पन्न होनेवाले जलमें उत्पन्न होनेवाले समुद्र औ नदी यह अत्रिका वर्ग है १० ॥

रक्षःपिशाचदानवदैत्यभुजङ्गाःस्मृताःपुलस्त्यस्य ॥
पुलहस्यतुफलमूलंक्रतोस्तुयज्ञाःसयज्ञभृतः ११ ॥

इतिश्रीवराहमिहिरकृतौबृहत्संहितायांसप्तर्षि
चारोनामत्रयोदशोऽध्यायः १३ ॥

राक्षस पिशाच दानव दैत्य औ सर्प यह पुलस्त्यका वर्ग है। फल औमूल यह पुलह का वर्ग है औ यज्ञ करनेवालोंके सहित यज्ञक्रतुकावर्ग है जिसकी तारा उपहत होय उस वर्गका नाश होताहै औ जिसकी तारा बड़ी औ निर्मल किरणों करके युक्त होय उसवर्गकी वृद्धि होती है ११ ॥

श्रीवराहमिहिराचार्यकीबनाईबृहत्संहितामेंसप्तर्षिचार
नामकतेरहवांअध्यायसमाप्तहुआ १३ ॥

चौदहवां अध्याय ॥

नक्षत्रकूर्म ॥

नक्षत्रत्रयवर्गैराग्नेयाद्यैर्व्यवस्थितैर्नवधा ॥
भारतवर्षेमध्यात्प्रागादिविभाजितादेशाः १ ॥

कृत्तिका आदि तीन २ नक्षत्रों के नव वर्गहैं उनमें पहिला वर्गभारतवर्षके मध्यमें है शेष आठ वर्ग भारतवर्षकी पूर्व आदि आठोंदिशाओंमें हैं औ उनमें भारतवर्षके देशों के भी नव भाग कियेहैं। मेरुसे दक्षिणभाग में भारतवर्ष है। जौनसे वर्गके नक्षत्र पापग्रहों करके पीड़ितहोयँ उसीके देशों का नाश होता है। अब भारतवर्ष के नव भागमें जो देशहैं उनके नाम कहते हैं १ ॥

भद्रारिमेदमाण्डव्यसाल्वनीपोज्जिहानसंख्यानाः॥ मरुवत्सघोषयामुनसारस्वतमत्स्यमाध्यमिकाः २ माथुरकोपज्योतिषधर्मारण्यानिशूरसेनाश्च॥ गौरग्रीवोद्देहिकपाण्डुगुडाश्वत्थपांचालाः ३ साकेतकङ्ककुरुकालकोटिकुकुराश्चपारियात्रनगः॥ औदुम्बरकापिष्ठलगजाह्वयाश्चेतिमध्यमिदम् ४॥

भारतवर्ष के मध्य के प्रधान देश येहैं औ कृत्तिका आदि तीन नक्षत्रमध्य में स्थित हैं। भारतवर्ष के मध्यदेशों के नाम कहते हैं। भद्र अरिमेद मांडव्य साल्व नीप उज्जिहान संख्यान मरु वत्सघोष यामुन सारस्वत मत्स्य माध्यमिक माथुरक उपज्योतिष धर्मारण्य शूरसेन गौरग्रीव उद्देहिक पांडुगुड अश्वत्थ पांचाल अयोध्या कंक कुरु कालकोटि कुरर पारियात्र पर्वत औदुंबर कापिष्ठल औ हस्तिनापुर यह भारतवर्षके मध्यभाग के देश हैं। अब भारतवर्ष के पूर्वदिशा के देश कहते हैं २। ३। ४॥

अथपूर्वस्यामंजनवृषभध्वजपद्ममाल्यवद्गिरयः॥ व्याघ्रमुखसुह्मकर्वटचान्द्रपुराःशूर्पकर्णाश्च ५ खसमगधशिविरगिरिमिथिलसमतटोड्राऽश्ववदनदन्तुरकाः॥ प्राग्ज्योतिषलौहित्यक्षीरोदसमुद्रपुरुषादाः ६ उदयगिरिभद्रगौडकपौंड्रोत्कलकाशिमेकलाम्बष्ठाः॥ एकपदतामलिप्तिककोशलकावर्द्धमानश्च ७॥

अब पूर्व दिशा के देशों का विभाग कहते हैं जिनमें आर्द्रा आदि तीन नक्षत्र स्थितहैं। अंजन वृषभध्वज पद्म औ माल्यवान् ये पर्वत व्याघ्रमुख सुह्म कर्वट चांद्रपुर शूर्पकर्ण खस मगध शिविरपर्वत मिथिला समतट उड्रअश्वमुख दंतुरक प्राग्ज्योतिष लौहित्यनदक्षीरसमुद्र पुरुषभक्षक उदयाचल भद्र गौडक पौंड्र उत्कल काशी मेकल अंबष्ठ एकपद तामलिप्तिक कोशलक औ बर्द्धमान ये भारतवर्षके पूर्वदिशा के देशहैं। अब आग्नेयकोण के देश कहते हैं ५। ६। ७॥

आग्नेय्यांदिशिकोशलकलिंगवंगोपवंगजठरांगाः॥ शौलिकविदर्भवत्साऽन्ध्रचेदिकाश्चोर्ध्वकण्ठाश्च ८ वृषनालिकेरचर्मद्वीपाविन्ध्यान्तवासिनस्त्रिपुरी॥ श्मश्रुधरहेमकुड्यव्यालग्रीवामहाग्रीवाः ९ किष्किन्धकण्टकस्थलनिषादराष्ट्राणिपुरिकदाशार्णाः॥ सहनग्नपर्णशबरैराश्लेषाद्येत्रिकेदेशाः १०॥

अग्निकोण के देश ये हैं। कोशल कलिंग वंग उपवंग जठरांग शौलिक विदर्भ वत्स अंध्र चेदि ऊर्ध्वकंठ वृष नालिकेर चर्मद्वीप विंध्याचलनिवासी त्रि-

पुरीनगरी श्मश्रुधर हेमकुड्य व्यालग्रीव महाग्रीव किष्किंधा कंटकस्थल निषाद राष्ट्रपुरिक दाशार्ण नग्न पर्ण शवर ये देश आश्लेषा आदि तीन नक्षत्र में हैं ८। ९। १०॥ अवदक्षिणके देशकहते हैं॥

अथदक्षिणेनलंकाकालाजिनसौरिकीर्णतालिकटाः॥ गिरिनगर मलयदर्दुरमहेंद्रमालिन्द्यभरुकच्छाः ११ कंकटटंकणवनवासिशिविकफणिकारकोंकणाभीराः॥ आकरवेणावर्त्तकदशपुरगोनर्दकेरलकाः १२ कर्णाटमहाटविचित्रकूटनासिक्यकोलगिरिचोलाः॥ क्रौंचद्वीप जटाधरकावेर्योऽऋष्यमूकश्च १३ वैदूर्यशंखमुक्तात्रिवारिचरधर्मपट्टनद्वीपाः॥ गणराज्यकृष्णवेल्लूरपिशिकशूर्पाद्रिकुसुमनगाः १४ तुम्बवनकार्मणेयकयाम्योदधितापसाश्रमाऋषिकाः॥ कांचीमरुचीपट्टनचेर्यार्यकसिंहलाऋषभाः १५ बलदेवपट्टनंदण्डकावनतिमिङ्गलाशनाभद्राः॥ कच्छोऽथकुंजरदरीसताम्रपर्णीतिविज्ञेयाः १६॥

अव दक्षिण दिशाके देश कहते हैं जो उत्तरा फाल्गुनी आदि तीन नक्षत्रमें स्थित हैं। लंका कालाजिन सौरिकीर्ण तालिकट गिरिनगर मलय दर्दुर महेन्द्र औ मालिन्द्य ये चार पर्वत भरुकच्छ कंकट टंकण वनवासी शिविक फणिकार कोंकण आभीर अकार वेणानदी आवर्तक दशपुर गोनर्द केरल कर्णाट महाटवी चित्रकूट पर्वत नासिक्य कोल्लागिरि चोलदेश क्रौंचद्वीप जटाधर कावेरी नदी ऋष्यमूक पर्वत वैदूर्यशंख औ मोती जहां उत्पन्न होतेहैं अत्रिमुनिका आश्रम वारिचर धर्मपट्टन द्वीप गणराज्य कृष्णवेल्लूर पिशिक शूर्पाद्रि कुसुमपर्वत तुंबवन कार्मणेयक दक्षिण समुद्र तापसों के आश्रम ऋषिक कांची मरुची पट्टन चेर्यार्यक सिंहल ऋषभ बलदेवपट्टन दण्डकारण्य तिमिंगलाशन भद्रकच्छ कुंजरदरी औ ताम्रपर्णी नदी ये सब दक्षिण के देश हैं॥ अव नैर्ऋत्यकोणकेदेश कहतेहैं ११। १२। १३। १४। १५। १६॥

नैर्ऋत्यांदिशिदेशाःपह्लवकाम्बोजसिन्धुसौवीराः॥ वडवामुखारवाम्वष्ठकपिलनारीमुखावर्त्ताः १७ फेनगिरियवनमार्गरकर्णप्रावेयपारशवशूद्राः॥ बर्बरकिरातखण्डक्रव्याश्याभीरचंचूकाः १८ हेमगिरिसिन्धुकालकरैवतकसुराष्ट्रवादरद्रविडाः॥ स्वात्याद्येभत्रितयेज्ञेयश्चमहार्णवोत्रैव १९॥

नैर्ऋत्यकोण में ये देशहैं जो स्वाति आदि तीननक्षत्रों में स्थित हैं॥ पह्लव कांबोज सिंधुसौवीर वडवामुख आरव अंवष्ठ कपिल नारीमुख आनर्त फेनगिरियवन मार्गरकर्ण प्रावेय पारशव शूद्रवर्बर किरात खण्ड क्रव्याशी आ-

भीर चंचूक हेमगिरि सिन्धुनद कालक रैवत सुराष्ट्र बादर द्रविड औ महासमुद्रभी इसी दिशामें जानना ये स्वातिआदि तीननक्षत्रके देशहैं। अब पश्चिम के देश कहते हैं १७। १८। १९॥

अपरस्यांमणिमान्मेघवान्वनौघःक्षुरार्पणोऽस्तगिरिः॥ अपरांतकशान्तिकहैहयप्रशस्ताद्रिवोक्काणाः २० पंचनदरमठपारततारक्षितिजुंगवैश्यकनकशकाः॥ निर्मर्यादाम्लेच्छायेपश्चिमदिक्स्थितास्तेच २१॥

ये पश्चिम दिशा के देशहैं जो ज्येष्ठाआदि तीन नक्षत्रोंमें स्थितहैं। मणिमान्पर्वत मेघवान् वनौघ क्षुरार्पण अस्तगिरि अपरांतक शान्तिक हैहय प्रशस्तादि वोक्काण पंच नद रमठ पारततार क्षितिजुंग वैश्य कनकशक और भी मर्यादा हीन म्लेच्छ पश्चिम दिशा में रहते हैं इनही तीननक्षत्रों में हैं। अब वायव्यकोण के देश कहते हैं २०। २१॥

दिशिपश्चिमोत्तरस्यांमाण्डव्यतुषारतालहलमद्राः॥ अश्मककुलूतलहडस्त्रीराज्यनृसिंहवनखस्थाः २२ वेणुमतीफल्गुलुकागुरुहागुरुकुत्सचर्मरङ्गाख्याः॥ एकविलोचनशूलिकदीर्घग्रीवास्यकेशाश्च २३॥

ये देश वायव्य कोणमेंहैं जो उत्तराषाढा आदि तीन नक्षत्रों पर स्थित हैं। मांडव्य तुषार ताल हलमद्र अश्मक कुलूतल हडस्त्री राज्य नृसिंह वनखस्थ वेणुमतीनदी फल्गुलुकगुरुह गुरुकुत्स चर्मरंग एकविलोचन शूलिक दीर्घग्रीव दीर्घास्य औ दीर्घकेश ये सबवायव्यकोण के देश हैं। अब उत्तरके देश कहतेहैं२२।२३॥

उत्तरतःकैलासोहिमवान्वसुमान्गिरिर्धनुष्मांश्च॥ क्रौञ्चोमेरुःकुरवस्तथोत्तराःक्षुद्रमीनाश्च २४ कैकयवसातियामुनभोगप्रस्थार्जुनायनाग्नीध्राः॥ आदर्शान्तर्द्वीपित्रिगर्ततुरगाननाश्वमुखाः २५ केशधरचिपिटनासिकदासेरकवाटधानशरधानाः॥ तक्षशिलपुष्कलावतकैलावतकण्ठधानाश्च २६ अम्बरमद्रकमालनपौरवकच्छारदण्डपिङ्गलकाः॥ माणहलहूणकोहलशीतकमाण्डव्यभूतपुराः २७ गान्धारयशोवतिहेमतालराजन्यखचरगव्याश्च॥ यौधेयदासमेयाःश्यामाकाःक्षेमधूर्ताश्च २८॥

उत्तर दिशा में कैलास हिमवान् वसुमान् धनुष्मान् क्रौंच मेरु ये सब पर्वत औ उत्तर कुरु क्षुद्रमीन केकय वसाति यामुन भोगप्रस्थ अर्जुनायन आग्नीध

यादर्श अंतर्द्वीपि त्रिगर्त तुरगानन अश्वमुख केशधर चिपिट नासिक दासेरक वाटधान शरधान तक्ष शिलानगरी पुष्कलावत कैलावत कंठधान अंबर मद्रक मालव पौरव कच्छार दंड पिंगल माणहल हूण कोहल शीतक मांडव्य भूतपुर गांधार यशोवती नगरी हेमताल राजन्य खचर गव्य यौधेय दासमेय श्यामाक क्षेमधूर्त ये देश शतभिषक् आदि तीन नक्षत्रमें हैं। अब ईशान कोण के देश कहते हैं २४। २५। २६। २७। २८॥

ऐशान्यांमेरुकनष्टराज्यपशुपालकीरकाश्मीराः॥ अभिसारदरदतंगणकुलूतसैरिंध्रवनराष्ट्राः २९ ब्रह्मपुरदार्वडामरवनराज्यकिरातचीनकौणिन्दाः॥ भल्लपलोलजटासुरकुनठखखघोषकुचिकाख्याः ३० एकचरणानुविश्वासुवर्णभूर्वसुवनंदिविष्ठाश्च॥ पौरवचीवरनिवसनत्रिनेत्रमुंजाद्रिगन्धर्वाः ३१॥

ईशान कोणमें मेरुक नष्टराज्य पशुपाल कीर काश्मीर अभिसार दरद तंगण कुलूत सैरिंध्र वनराष्ट्र ब्रह्मपुर दार्वडामर वनराज्य किरात चीन कौणिन्द भल्ल पलोल जटासुर कुनठ खख घोख कुचिक एकचरण अनुविश्व सुवर्णभू वसुवन दिविष्टपौरव चीवर निवसन त्रिनेत्र मुंजाद्रि गंधर्व ये सब देश रेवती आदि तीन नक्षत्रमें हैं २९। ३०। ३१॥

वर्गैराग्नेयाद्यैःक्रूरग्रहपीडितैःक्रमेणनृपाः॥पाञ्चालोमागधिकःकालिङ्गश्चक्षयंयान्ति ३२ आवन्तोथानर्त्तोमृत्युंचायातिसिन्धुसौवीरः॥ राजाचहारहौरोमद्रेशोन्यश्चकौणिन्दः ३३॥

इतिश्रीवराहमिहिरकृतौबृहत्संहितायांनक्षत्रकूर्मविभागो नामचतुर्दशोध्यायः १४॥

कृत्तिका आदि तीन२ नक्षत्रके जो नववर्ग उनको सूर्य शनि अथवा मंगल पीडितकरें तो क्रमसे पंचाल मगध कलिंग ३२ अवन्ति आनर्त सिन्धु सौवीर हारहूर मद्र औ कुणिन्दके राजाका मृत्युहोय ३३॥

श्रीवराहमिहिराचार्यकीबनाई बृहत्संहितामेंनक्षत्रकूर्म विभागनामकचौदहवां अध्यायसमाप्तहुआ १४॥

पन्द्रहवां अध्याय॥

नक्षत्रव्यूह॥

आग्नेयेसितकुसुमाहिताग्निमन्त्रज्ञसूत्रभाष्यज्ञाः॥
आकरिकनापितद्विजघटकारपुरोहिताब्दज्ञाः १॥

श्वेतपुष्प अग्निहोत्री मन्त्रजाननेवाले सूत्र अर्थात् यज्ञशास्त्र जाननेवाले

भाष्यज्ञ अर्थात् वैयाकरण आकर अर्थात् धातुआदि की खानि के अधिकारी नाई ब्राह्मण कुम्हार पुरोहित ज्योतिषी ये सब कृत्तिकानक्षत्रमें समाश्रित हैं १ ॥

रोहिण्यांसुव्रतपण्यभूपधनियोगयुक्तशाकटिकाः ॥
गोवृषजलचरकर्षकशिलोच्चयैश्वर्यसंपन्नाः २ ॥

सुन्दर व्रतकरके युक्त पण्यवृत्ति अर्थात् बेचने खरीदनेवाले राजा धनवान् योगाभ्यासी गाड़ीजोतनेवाले गौ बैल जलकेजीव खेतीकरनेवाले पर्वत औ ऐश्वर्ययुक्त पुरुष ये सब रोहिणीमें हैं २ ॥

मृगशिरसिसुरभिवस्त्राब्जकुसुमफलरत्नवनचरविहङ्गाः ॥
मृगसोमपीथिगान्धर्वकामुकालेखहाराश्च ३ ॥

सुगन्धद्रव्य वस्त्र जलसे उत्पन्नवस्तु पुष्प फल रत्न वनके निवासी पक्षी मृग यज्ञमें सोमपानकरनेवाले गानेवाले कामीपुरुष लेखहार अर्थात् चिट्ठी पत्री लेजानेवाले ये सब मृगशिरामें हैं ३ ॥

रौद्रेवधबन्धानृतपरदारस्तेयशाठ्यभेदरताः ॥
तुषधान्यतीक्ष्णमन्त्राभिचारवेतालकर्मज्ञाः ४ ॥

जीवोंकावध औ बन्धन करनेवाले असत्य बोलनेवाले परस्त्रीगामी चोर शाठ्य औ भेदमें तत्पर तुषधान्य अर्थात् शालिआदि क्रूरमन्त्रजाननेवाले अभि-चारकर्मके जाननेवाले औ वेताल साधन कर्मकेवेत्ता ये सब आर्द्रा में हैं ४ ॥

आदित्येसत्यौदार्यशौचकुलरूपधीयशोर्थयुताः ॥
उत्तमधान्यंवणिजःसेवाभिरताःसशिल्पिजनाः ५ ॥

सत्य उदारता शौच उत्तमकुल रूप बुद्धि यश औ धनकरके युक्त पुरुष उत्तमधान बनियें सेवक औ शिल्पजाननेवाले ये सब पुनर्वसुमें हैं ५ ॥

पुष्येयवगोधूमाःशालीक्षुवनानिमन्त्रिणोभूपाः ॥
सलिलोपजीविनःसाधवश्चयज्ञेष्टिसक्ताश्च ६ ॥

यव गेहूं धान ईख बन राजाओं के मन्त्री राजा जलसे जीवनकरनेवाले कहारआदि साधुपुरुष यज्ञ औ इष्टियोंमें आसक्त पुरुष ये सबपुष्यनक्षत्रमेंहैं ६॥

अहिदेवेकृत्रिमकन्दमूलफलकीटपन्नगविषाणि ॥
परधनहरणाभिरतास्तुषधान्यंसर्वभिषजश्च ७ ॥

कृत्रिमवस्तु कन्द मूल फल कीड़े सर्प विष परधनहरणे में आसक्त पुरुष तुषधान्य शालिआदि औ सबप्रकारके वैद्य ये सब आश्लेषामें हैं ७ ॥

पित्र्येधनधान्याढ्याःकोष्ठागाराणिपर्वताश्रयिणः ॥
पितृभक्तवणिक्शूराःक्रव्यादाःस्त्रीद्विषोमनुजाः ८ ॥

धन औ अन्न करके युक्त पुरुष कोष्ठागार पर्वत के निवासी पितरों की पूजा में तत्पर बनियें शूर पुरुष मांसखानेवाले जीव स्त्रियोंसे द्वेषकरनेवाले मनुष्य ये सब मघामें हैं ८ ॥

प्राक्फाल्गुनीपुनटयुवतिसुभगगान्धर्वशिल्पिपण्यानि ॥
कर्पासलवणमाक्षिकतैलानिकुमारकाश्चापि ९ ॥

नट स्त्री सुभगा अर्थात् जो मनुष्य सबको प्रियहों गानेवाले शिल्पजानने वाले चित्रकारआदि बेचनेके योग्यवस्तु कपास लवण शहत तेल औ बालक ये सब पूर्वाफाल्गुनीमें हैं ९ ॥

आर्यम्णेमार्दवशौचविनयपाखण्डिदानशास्त्ररताः ॥
शोभनधान्यमहाधनकर्मानुरताःसमनुजेन्द्राः १० ॥

मृदु स्वभाववाले पुरुष शौचमें तत्पर विनययुक्त पाखण्डियोंके भक्तदानमें रत शास्त्रमें आसक्त मनुष्य उत्तम अन्न बहुत धनवाले पुरुष कर्म करनेमें आसक्त मनुष्य औ राजा ये सब उत्तराफाल्गुनीमें हैं १० ॥

हस्तेतस्करकुंजररथिकमहामात्रशिल्पिपण्यानि ॥
तुषधान्यंश्रुतयुक्तावणिजस्तेजोयुताश्चात्र ११ ॥

चोर हाथी रथपर चढ़नेवाले हाथियों के अधिकारी शिल्प जाननेवाले बेचनेके योग्य वस्तु तुषधान्य यव आदि शास्त्र जाननेवाले बनियें औ तेजस्वी पुरुष ये सब हस्तमें हैं ११ ॥

त्वाष्ट्रेभूषणमणिरागलेख्यगान्धर्वगन्धयुक्तिज्ञाः ॥
गणितपटुतन्तुवायाःशालाक्याराजधान्यानि १२ ॥

भूषण बनाना जाननेवाले मणियों के लक्षण जाननेवाले वस्त्ररँगनेवाले लिखने वाले गानेवाले सुगंध द्रव्य बनानेवाले गणित विद्यामें चतुर कपड़ा बुननेवाले शालाक्यअर्थात् शलाकाकरके नेत्रआदि के रोगोंकी चिकित्साकरनेवाले राजधान्य अर्थात् राजाओंके उपयुक्तअन्न येसबचित्रामें हैं १२ ॥

स्वातौखगमृगतुरगावणिजोधान्यानिवातबहुलानि ॥
अस्थिरसौहृदलघुसत्वतापसाःपण्यकुशलाश्च १३ ॥

पक्षी मृग घोड़े बनिये बहुत वायुकरनेवाले चणे आदि अन्न अस्थिर सौहृद अर्थात् जिनकी मैत्री स्थिर नरहे अल्पसत्व तपकरनेवाले औ क्रय विक्रय करनेमें चतुर पुरुष ये सब स्वातीमें हैं १३ ॥

इन्द्राग्निदैवतेरक्तपुष्पफलशाखिनःसतिलमुद्गाः ॥
कर्पासमापचणकाःपुरन्दरहुताशभक्ताश्च १४ ॥

लालरंग के पुष्प औ फलोंवाले वृक्ष तिल मूंग कपास उड़द चणे इन्द्र औ अग्नि के भक्त पुरुष ये सब विशाखा में हैं १४ ॥

मैत्रशौर्यसमेतागणनायकसाधुगोष्ठियानरताः ॥
येसाधवश्चलोकेसर्वंचशरत्समुत्पन्नम् १५ ॥

शौर्य करके युक्त पुरुष समूहके अधिपति साधुओंके भक्त गोष्ठीमें रत वाहन में आसक्त लोकमें जो सज्जन पुरुष औ शरद ऋतुमें जो कुछ उत्पन्नहो ये सब अनुराधामें हैं १५ ॥

पौरन्दरेऽतिशूराःकुलवित्तयशोन्विताःपरस्वहृतः ॥
विजिगीषवोनरेन्द्राःसेनानांचापिनेतारः १६ ॥

बड़े शूरवीर पुरुष उत्तम कुल धन औ यश करके युक्त पुरुष पराया धन हरनेवाले पुरुष शत्रुओं के जीतनेकी इच्छावाले राजा औ सेनाओं के अधिपति ये सब ज्येष्ठा में हैं १६ ॥

मूलेभेषजभिषजोगणमुख्याःकुसुममूलफलवार्ताः ॥
बीजान्यतिधनयुक्ताःफलमूलैर्येचवर्तन्ते १७ ॥

औषध वैद्य समूहमें मुख्य पुष्पमूल औ फलों करके आजीविका करने वाले बीज जो बोयेजाते हैं बहुतधनवाले पुरुष औ फलमूलों करके जोअपना जीवन करतेहैं ये सबमूलमें हैं १७ ॥

आप्येमृदवोजलमार्गगामिनःसत्यशौचधनयुक्ताः ॥
सेतुकरवारिजीवकफलकुसुमान्यम्बुजातानि १८ ॥

कोमल स्वभाव वाले जलमार्ग में गमन करने वाले सत्य शौच औधन करके युक्त पुरुष पुल बांधनेवाले जलकरके जो जीविकाकरतेहैं जलसे उत्पन्न फल औ पुष्प ये सब पूर्वाषाढ़ामें हैं १८ ॥

विश्वेश्वरेमहामात्रमल्लकरितुरगदेवतासक्ताः ॥
स्थावरयोधाभोगान्विताश्चयेचौजसायुक्ताः १९ ॥

हाथियोंके अधिकारी मल्ल हाथीघोड़े देवताओंके भक्त स्थावर वृक्ष पर्वतआदि युद्ध करने में चतुर भोगी पुरुष औ तेजस्वी पुरुष ये सबउत्तराषाढ़ा मेंहैं १९ ॥

श्रवणेमायापटवोनित्योद्युक्ताश्चकर्मसुसमर्थाः ॥
उत्साहिनःसधर्माभागवताःसत्यवचनाश्च २० ॥

माया करने में चतुर पुरुष सदा उद्यम करके युक्त काम करने में समर्थ उत्साह युक्त पुरुष धर्मात्मा पुरुष भगवान् के भक्त औ सत्य बोलनेवाले ये सबश्रवणमें हैं २० ॥

वसुभेमानोन्मुक्ताःक्लीवाश्चलसौहृदास्त्रियांद्वेष्याः ॥
दानाभिरतावहुवित्तसंयुताःशमपराश्चनराः २१ ॥

अहंकार हीन पुरुष नपुंसक चलसौहृद अर्थात् जिनका स्नेह स्थिर न होय स्त्रियों के द्वेषी दान करने में तत्पर वहुत धनकरके युक्त पुरुष औ जितेंद्रिय पुरुष ये सव धनिष्ठा में हैं २१ ॥

वरुणेशेपाशिकमत्स्यवन्धजलजानिजलचराजीवाः ॥
सौकरिकरजकशौण्डिकशाकुनिकाश्चापिवर्गेस्मिन् २२ ॥

पाशिक अर्थात् फांसी लगाकर जीवों को पकड़नेवाले मच्छी पकड़नेवाले जल से उत्पन्न हुये पदार्थ जल में रहनेवाले मत्स्य आदि जीवों करके जीविका करनेवाले पुरुष सूकर रखने वाले धोवी कलाल पक्षियों को मारनेवाले ये सव शतभिषा में हैं २२ ॥

आजेतस्करपशुपालहिंस्रकीनाशनीचशठचेष्टाः ॥
धर्मव्रतैर्विरहितानियुद्धकुशलाश्चयेमनुजाः २३ ॥

चोर पशुरखनेवाले क्रूर कृपण नीच औ शठ चेष्टावाले मनुष्य धर्म औ व्रतों करकेरहित औ वाहु युद्धमें कुशल मल्ल आदि ये सव पूर्वाभाद्रपदामें हैं २३ ॥

आहिर्वुध्न्येविप्राःक्रतुदानतपोयुतामहाविभवाः ॥
आश्रमिणःपाखण्डानरेश्वराःसारधान्यंच २४ ॥

ब्राह्मण यज्ञ दान तप करके युक्त पुरुष वड़े ऐश्वर्यवाले चौथे आश्रमवाले पाखण्ड राजा औ उत्तमधान्य ये सव उत्तराभाद्रपदामें हैं २४ ॥

पौष्णेसलिलजफलकुसुमलवणमणिशंखमौक्तिकाब्जानि ॥
सुरभिकुसुमानिगन्धावणिजोनौकर्णधाराश्च २५ ॥

जलसे उत्पन्नद्रव्य फल पुष्प लवण मणि शंख मोती कमल आदि पुष्प सुगन्धियुक्त पुष्प सुगन्धद्रव्य वनिये औ नावचलानेवाले ये सवरेवतीमेंहैं २५॥

अश्विन्यामश्वहराःसेनापतिवैद्यसेवकास्तुरगाः ॥
तुरगारोहाश्चवणिग्रूपोपेतास्तुरगरक्षाः २६ ॥

घोड़ोंके ग्राहक सेनापति वैद्य सेवक घोड़े घोड़ोंपर चढ़नेवाले वनिये उत्तम रूपवाले घोड़ोंकी रक्षाकरनेवाले अर्थात् अश्वपति ये सव अश्विनीमें हैं २६ ॥

याम्येसृक्पिशितभुजःक्रूरावधवन्धताडनासक्ताः ॥
तुषधान्यंनीचकुलोद्भवाविहीनाश्चसत्वेन २७ ॥

रुधिर औ मांस खानेवाले क्रूर जीवों के मारने औ वांधने में आसक्त तुष

धान्य यव आदि नीचकुल में उत्पन्न पुरुष औ सत्वकरके हीनपुरुष ये सब भरणी में हैं २७॥

पूर्वात्रयंसानलमग्रजानांराज्ञांतुपुष्येणसहोत्तराणि ॥ सपौष्णमैत्रंपितृदैवतंचप्रजापतेर्भंचकृषीवलानाम् २८ आदित्यहस्ताभिजिदाश्विनानिवणिग्जनानांप्रवदन्तिभानि ॥ मूलत्रिनेत्रानलवारुणानिभान्युग्रजातेःप्रभविष्णुतायाः २९ सौम्येन्द्रचित्रावसुदैवतानिसेवाजनस्वाम्यमुपागतानि ॥ सार्पविशाखाश्रवणोभरण्यश्चचण्डालजातेरितिनिर्दिशन्ति ३०॥

तीनों पूर्वा औ कृत्तिका ये चार नक्षत्र ब्राह्मणोंके हैं। तीनों उत्तरा औ पुष्य ये चार नक्षत्र क्षत्रियोंके हैं २८ रेवती अनुराधा मघा औ रोहिणी ये चारनक्षत्र खेतीकरनेवालोंके हैं। पुनर्वसु हस्त अभिजित् औ अश्विनी ये चारनक्षत्र वणिग्जनोंके हैं। मूल आर्द्रा स्वाती औ शतभिषक् ये चारनक्षत्र क्रूरजाति के स्वामित्वके हैं २९ मृगशिरा ज्येष्ठा चित्रा धनिष्ठा ये चारनक्षत्र सेवाकरनेवाले मनुष्योंके स्वामित्वको प्राप्तहुयेहैं। श्लेषा विशाखा श्रवण भरणी ये चारनक्षत्र चांडालजाति के मुनियोंने कहेहैं॥ अब इनव्यूहोंका प्रयोजन कहते हैं ३०॥

रविरविसुतभोगमागतंक्षितिसुतभेदनवक्रदूषितम् ॥ ग्रहणगतमथोल्कयाहतंनियतमुषाकरपीडितंचयत् ३१ तदुपहतमितिप्रचक्षतेप्रकृतिविपर्यययातमेववा ॥ निगदितपरिवर्गदूषणंकथितविपर्ययगंसमृद्धये ३२॥

इतिश्रीवराहमिहिरकृतौबृहत्संहितायांनक्षत्रव्यूहोनामपंचदशोऽध्यायः १५॥

जो नक्षत्र सूर्य औ शनिके भोगमें आया होय मंगलने जिसको भेदनकिया हो अथवा मंगल के वक्रहोने करके दूषितहो जिस नक्षत्रपर स्थित चन्द्र अथवा सूर्यका ग्रहणहुआहो उल्काकरके जो नक्षत्र ताडितहो नियत अर्थात् सर्वकाल जो चन्द्रमा करके निपीड़ितहो अर्थात् जिस नक्षत्रकी योगताराको चन्द्रमा भेदनकरै आच्छादनकरै अथवा सदा चन्द्रमा उसके दक्षिणओर होकर जाया करै ३१ औ जो नक्षत्र अपने स्वभाव से विपरीतता को प्राप्त होगयाहो उस नक्षत्रको मुनि उपहत कहते हैं। ऐसा नक्षत्र पहले कहेहुये अपने वर्गका दूषणकरता है अर्थात् अपने वर्गका नाशकरता है औ प्रथमकहेहुये दोषों से रहितहोय तो अपने वर्गकी वृद्धिकरता है ३२॥

श्रीवराहमिहिराचार्यकीबनाईबृहत्संहितामेंनक्षत्रव्यूहनामक
पन्द्रहवांअध्यायसमाप्तहुआ १५॥

सोलहवां अध्याय ॥

ग्रहभक्ति ॥

प्राङ्नर्मदार्धशोणोड्रवङ्गसुह्माकलिङ्गवाह्लीकाः ॥ शकयवनमगधशवरप्राग्ज्योतिषचीनकाम्बोजाः १ मेकलकिरातविटकावहिरन्तःशैलजाःपुलिन्दाश्च॥द्रविडानांप्रागर्धंदक्षिणकूलंचयमुनायाः२ चम्पोदुम्बरकौशाम्बिचेदिविन्ध्याटवीकलिंगाश्च ॥ पुण्ड्रागोलांगूलश्रीपर्वतवर्द्धमानाश्च ३ इक्षुमतीत्यथतस्करपारतकान्तारगोपबीजानाम् ॥ तुपधान्यकटुकतरुकनकदहनविषसमरशूराणाम् ४ भेषजभिषक्चतुष्पदकृषिकरनृपहिंस्रयायिचौराणाम् ॥ व्यालाऽरण्ययशोयुततीक्ष्णानांभास्करःस्वामी ५ ॥

नर्मदानदीका पूर्वभाग शोणनद उड्र वंग सुह्म कलिंग वाह्लीक शक यवन मगध शवर प्राग्ज्योतिष चीनकांबोज १ मेकल किरात विटक इनसबदेशों के निवासीजन पर्वतकेवाहर औ भीतर रहनेवाले पुलिन्द द्रविड़देशका पूर्वअर्ध यमुनानदीका दक्षिणतट २ चम्पापुरी उदुम्बर कौशांबीनगरी चेदि विन्ध्याटवी कलिंग पुंड्र गोलांगूल श्रीपर्वत वर्धमान ३ इक्षुमतीनदी तस्करदेश पारतदेश कान्तार अर्थात् वन गोपाल बोनेके बीज तुप धान्य यवआदि कटुपदार्थ मरिचआदि वृक्ष सुवर्ण अग्नि विष युद्धमें धीरपुरुष ४ औषध वैद्य पशु खेतीकरनेवाले राजा हिंस्र अर्थात् क्रूर शत्रुपर चढ़कर जानेवाले चोर सर्प निर्जनदेश यशोयुक्त पुरुष औ तीक्ष्णद्रव्य निम्बआदि अथवा तीक्ष्णस्वभाव पुरुष इनसब का सूर्यस्वामी है ५ ॥

गिरिसलिलदुर्गकोशलभरुकच्छसमुद्ररोमकतुखाराः ॥ वनवासितंगणहलस्त्रीराज्यमहार्णवद्वीपाः ६ मधुरसकुसुमफलसलिललवणमणिशङ्खमौक्तिकाब्जानाम्॥ शालियवौषधिगोधूमसोमपाक्रन्दविप्राणाम् ७ सितसुभगतुरगरतिकरयुवतिचमूनाथभोज्यवस्त्राणाम्॥ शृंगिनिशाचरकर्षकयज्ञविदांचाधिपश्चन्द्रः ८ ॥

गिरिदुर्ग जलदुर्ग कोशल भरुकच्छ समुद्र रोमक तुखारदेश वनवासी तंगण हल स्त्री राज्य महार्णव अर्थात् वड़वामुख द्वीप ६ मधुरस पुष्प फल जल लवण मणि शंख मोती जलसे उत्पन्न कमलआदि धान यव ओपधी गेहूं यज्ञ में सोमपान करनेवाले आक्रन्द अर्थात् अपने पार्ष्णिग्राही राजा से आगेका राजा ब्राह्मण ७ श्वेतरंग के द्रव्य सुभगपुरुष घोड़े कामीपुरुष स्त्री सेनापति

भोजनकी वस्तु वस्त्र सींगोंवाले पशु रात्रिमें विचरनेवाले खेती करनेवाले औ यज्ञविद्याजाननेवाले इनसबका अधिपति चन्द्रमाहै ८॥

शोणस्यनर्मदायाभीमरथायाश्चपश्चिमार्धस्थाः॥ निर्विन्ध्यावेत्रवतीसिप्रागोदावरीवेणा ९ मन्दाकिनीपयोष्णीमहानदीसिन्धुमालतीपाराः॥ उत्तरपाण्ड्यमहेन्द्राद्रिविन्ध्यमलयोपगाश्चोलाः १० द्रविडविदेहान्ध्राश्मकभासापरकोङ्कणाःसमन्त्रिषिकाः॥ कुन्तलकेरलदण्डककान्तिपुरम्लेच्छसङ्करिणः ११ (नासिक्यभोगवर्द्धनविराटविन्ध्याद्रिपार्श्वगादेशाः॥ येचपिबन्तिसुतोयांतापींयेचापिगोमतीसलिलम् १२) नागरकृषिकरपारतहुताशनाजीविशस्त्रवार्त्तानाम्॥ आटविकदुर्गकर्वटवधकनृशंसावलिप्तानाम् १३ नरपतिकुमारकुंजरदाम्भिकडिम्भाभिघातपशुपानाम्॥ रक्तफलकुसुमविद्रुमचमूपगुणमद्यतीक्ष्णानाम् १४ कोशभवनाग्निहोत्रिकधात्वाकरशाक्यभिक्षुचौराणाम्॥शठदीर्घवैरबह्वाशिनाञ्चवसुधासुतोऽधिपतिः १५

शोणनद नर्मदानदी औ भीमरथानदी के जो पश्चिमभागमें रहते हैं निर्विंध्या वेत्रवती सिप्रा गोदावरी वेणा ९ मंदाकिनी पयोष्णी सिन्धु मालती पारा येसब नदी उत्तर पाण्ड्य देश महेन्द्र पर्वत विन्ध्य औ मलय पर्वत इन में रहनेवालेजन चोलदेश १० द्रविड़ विदेह आंध्र अश्मक भासापर कोंकण मंत्रिषिक कुन्तल केरल दण्डकारण्य कान्तिपुर म्लेच्छ वर्णसंकर ११ [नासिक भोगवर्द्धन विराट विन्ध्याचलके समीपकेदेश औ जोसुतोया तापी औ गोमती नदी का जलपीते हैं १२] नगरकेनिवासी जन खेती करनेवाले पारत जन अग्निसे जीविका करनेवाले शस्त्रसे वृत्ति करनेवाले वनमें रहनेवाले दुर्ग अर्थात् किले कर्वट वध करनेवाले क्रूर अहंकारी १३ राजा कुमारहाथी दम्भ करनेवाले पुरुष डिंभ अर्थात् विनाशस्त्रका कलह उसमें जो अभिघात अथवा डिम्भ जो बालक उनका जो अभिघात करै पशुओं की रक्षा करने वाले लालरंगके फल औ पुष्प मूंगेसेनापति गुड़ मद्य तीक्ष्णपदार्थ निम्ब आदि १४ कोशभवन अर्थात् भण्डार अग्निहोत्र करनेवाले गेरू आदि धातुओं की खानि शाक्य अर्थात् रक्ताम्बर संन्यासी चोर शठ अर्थात् दूसरेके कार्य में विमुख दृढ द्वेष रखनेवाले औ बहुत भोजनकरनेवाले इन सबका स्वामी मंगल है। इनमें नासिक्यइत्यादि एक आर्याक्षेपक है १५॥

लौहित्यःसिन्धुनदःसरयूर्गम्भीरिकारथाह्वाच॥ गंगाकौशिक्याद्याःसरितोवैदेहिकाम्बोजाः १६ मथुरायाःपूर्वार्द्धहिमवद्गोमन्तचित्र

कूटस्थाः ॥ सौराष्ट्रसेतुजलमार्गपण्यविलपर्वताश्रयिणः १७ उदपानयन्त्रगान्धर्वलेख्यमणिरागगन्धयुक्तिविदः ॥ आलेख्यशब्दगणितप्रसाधकायुष्यशिल्पज्ञाः १८ चरपुरुषकुहकजीविकाशिशुकविशठशूचकाभिचारताः ॥ दूतनपुंसकहास्यज्ञभूततन्त्रेन्द्रजालज्ञाः १९ आरक्षकनटनर्तकघृततैलस्नेहवीजतिक्तानि ॥ व्रतचारिरसायनकुशलवेशराश्चन्द्रपुत्रस्य २० ॥

लौहित्यनद सिंधुनद सरयूनदी गंभीरिकानदी रथाह्वा गंगा कौशिकी आदि नदी वैदेह कांबोज १६ मथुराका पूर्वार्द्ध हिमालय गोमन्त औ चित्रकूट इनपर्वतों में रहनेवाले सौराष्ट्रदेश सेतुगामी औ जलमार्गगामी पण्यवृत्ति अर्थात् क्रयविक्रयकरनेवाले विल औ पर्वतोंमें रहनेवाले १७ उदपान अर्थात् वापीकूप तड़ाग आदि जलाशय यंत्र जाननेवाले गानेवाले लिखने वाले मणिलक्षण जाननेवाले रँगना जाननेवाले सुगंधि द्रव्यवनाना जाननेवाले चित्रवनानेवाले व्याकरण जाननेवाले गणितजाननेवाले प्रसाधनकरना जाननेवाले रसायन औषध औ शिल्पकेज्ञाता १८ गूढ़पुरुष इन्द्रजाल आदिसे जीविका करनेवाले बालक काव्य बनानेवाले शठ सूचक अर्थात् पिशुन वशीकरण उच्चाटन आदि अभिचार कर्ममेंरत दूत नपुंसक उपहास करनेमें कुशल भूततंत्र औ इंद्रजाल जाननेवाले १९ रक्षाके अधिकारी नट नृत्यकरनेवाले घृत तेल स्नेह बीज तिक्त द्रव्य निंबआदि व्रतकरनेवाले ब्रह्मचारी आदि रसायन सिद्धकरने में कुशल वेसर अर्थात् खच्चर इनसबका स्वामी बुध है २० ॥

सिन्धुनदपूर्वभागोमथुरापश्चार्द्धभरतसौवीराः ॥ स्रुघ्नोदीच्यविपाशासरिच्छतद्रूरमठसाल्वाः २१ त्रैगर्तपौरवाम्बष्ठपारतावाटधानयौधेयाः ॥ सारस्वतार्जुनायनमत्स्यार्धग्रामराष्ट्राणि २२ हस्त्यश्चपुरोहितभूपमन्त्रिमाङ्गल्यपौष्टिकासक्ताः ॥ कारुण्यसत्यशौचव्रतविद्यादानधर्मयुताः २३ पौरमहाधनशब्दार्थवेदविदुषोऽभिचारनीतिज्ञाः ॥ मनुजेश्वरोपकरणंछत्रध्वजचामराद्यंच २४ शैलेयकमांसीतगरकुष्ठरससैन्धवानिवल्लीजम् ॥ मधुररसमधूच्छिष्टानिचोरकश्चेतिजीवस्य २५ ॥

सिंधुनदका पूर्वभाग मथुरा का पश्चिम भाग भरत सौवीर स्रुघ्न उत्तर दिशा के निवासी जन विपाशा [व्यासा] शतद्रू [सतलज] ये दोनोंनदी रमठ साल्व २१ त्रैगर्त पौरव अंबष्ट पारत वाटधान यौधेय सारस्वत आर्जुनायन

मत्स्य देश के आधे ग्राम औराष्ट्र २२ हाथी घोड़े पुरोहित राजा राजमंत्री मंगलकार्य औ पौष्टिक कार्यों में आसक्त पुरुष दया सत्य शौच व्रत विद्या दान औ धर्म करके युक्त पुरुष २३ नगर में रहनेवाले बहुत धनवाले वैयाकरण पंडित वेदवेत्ता अभिचार कर्म जाननेवाले नीतिज्ञ राजा के उपकरण खड्ग कवच आदि औ छत्रध्वज चामर आदि २४ शैलेयकनाम गन्धद्रव्य जटामांसी तगर कूट रस अर्थात् वोल नामक सुगन्ध द्रव्य अथवा पारा सैंधवलवण वेल से उत्पन्न होनेवाली वस्तु मधुर रस मोम चोर नामक सुगन्ध द्रव्य इन सब का बृहस्पति स्वामी है २५ ॥

तक्षशिलमार्तिकावतबहुगिरिगान्धारपुष्कलावतकाः ॥ प्रस्थलमालवकैकयदाशार्णोशीनराशिवयः २६ येचपिवन्तिवितस्तामिरावतींचन्द्रभागसरितंच ॥ रथरजताकरकुञ्जरतुरगमहामात्रधनयुक्ताः २७ सुरभिकुसुमानिलेपनमणिवज्रविभूषणाम्बुरुहशय्याः ॥ वरतरुणयुवतिकामोपकरणमिष्टान्नमधुरभुजः २८ उद्यानसलिलकामुकयशःसुखौदार्यरूपसम्पन्नाः ॥ विद्वदमात्यवणिग्जनघटकृच्चित्राण्डजास्त्रिफलाः २९ कौशेयपट्टकम्बलपत्रौर्णिकरोध्रपत्रचोचानि ॥ जातीफलागुरुवचापिप्पल्यश्चन्दनञ्चभृगोः ३० ॥

तक्षशिला औ मृत्तिकावती नगरियों के निवासी बहुगिरि गान्धार पुष्कलावत प्रस्थल मालव कैकय दाशार्ण उशीनर शिवि ये सब देश २६ औ जो वितस्तानदी का जल पीनेवाले कश्मीर देशके निवासी आदि इरावती[रावी] नदी का जल पीनेवाले चन्द्रभागा [चनाव] नदी का जलपान करने वाले रथ चांदी खानि जिनसे धातु निकलती हैं। हाथी घोड़े हाथियों के अध्यक्ष धनवान् २७ सुगन्ध द्रव्य पुष्प अनुलेपन चन्दन आदि मणि हीरे भूषण जलसे उत्पन्न कमलआदि शय्या उत्तम तरुणपुरुष तरुणीस्त्री कामदेवके उपकरण अर्थात् पुष्पमाला अनुलेपन आदि भोग सामग्री मिठाई मधुर भोजन करनेवाले पुरुष २८ उपवन जल कामी पुरुष यश सुख उदारता औ रूपकरके युक्त पुरुष विद्वान् राजाओं के मंत्री वनियें कुम्हार अनेक प्रकारके पक्षी त्रिफला २९ कौशेय अर्थात् रेशमी कपड़े पट्ट अर्थात् रेशम कम्बल पत्रोर्ण अर्थात् धोयाहुआ रेशमी वस्त्र लोध तजपत्र चोच अर्थात् दालचीनी जायफल अगर वच पीपल चन्दन इन सबका शुक्र स्वामी है ३० ॥

आनर्तार्वुदपुष्करसौराष्ट्राभीरशूद्ररैवतकाः ॥ नष्टायस्मिन्देशेसरस्वतीपश्चिमोदेशः ३१ कुरुभूमिजाःप्रभासंविदिशावेदस्मृतीनदी

तटजाः ॥ खलमलिननीचतैलिकविहीनसत्वोपहतपुंस्त्वाः ३२ वन्ध नशाकुनिकाशुचिकैवर्तविरूपवृद्धसौकरिकाः ॥ गणपूज्यस्खलितव्रत शबरपुलिन्दार्थपरिहीनाः ३३ कटुतिक्तरसायनविधवयोषितोभुजग तस्करमहिष्यः ॥ खरकरभचणकवातलनिष्पावाश्चार्कपुत्रस्य ३४॥

आनर्त अर्बुद [आबू] पुष्कर सौराष्ट्र आभीर शूद्र रैवतक [गिरिनार] जिस देशमें सरस्वती नदी सूखगई है। पश्चिम का देश ३१ कुरुक्षेत्र भूमिमें उत्पन्नजन प्रभासक्षेत्र विदिशा नगरी वेदस्मृती नदीके तटपर उत्पन्न दुर्जन मलिन अधमकर्म करनेवाले तेलीसत्वहीन उपहतपुंस्त्व अर्थात् नपुंसक के समान पुरुष ३२ वन्धन चिड़ीमार अपवित्र मल्लाह कुरूप बूढ़े सूकर पालने वाले गण पूज्य अर्थात् समूह में प्रधान स्खलितव्रत अर्थात् जिनका नियम स्थिर न रहै। शबर पुलिन्द धनहीन ३३ कटुद्रव्य मरिच आदि तिक्तद्रव्य निं-ब आदि रसायन विधवास्त्री सर्प चोर भैंस गधे ऊंट चणे वातल अर्थात् वाय करनेवाले द्रव्य राजमाष आदि मटर इनसवका स्वामी शनैश्चर है ३४॥

गिरिशिखरकन्दरदरीविनिविष्टाम्लेच्छजातयःशूद्राः ॥ गोमायु भक्षशूलिकवोक्काणाश्वमुखविकलांगाः ३५ कुलपांसनहिंस्रकृतघ्न चौरनिःसत्यशौचदानाश्च ॥ खरचरनियुद्धवित्तीव्ररोषगर्भाशयानी चाः ३६ उपहतदाम्भिकराक्षसनिद्रावहुलाश्चजन्तवःसर्वे ॥ धर्मे णाचसंत्यक्तामापतिलाश्चार्कशशिशत्रोः ३७॥

पर्वतों के शिखर पर्वतों की गुफा औ खोह में रहनेवाले म्लेच्छ जाति के मनुष्य ३५ शूद्र जंबुकका मांस खानेवाले शूलिक वोक्काण अश्वमुख अंगहीन मनुष्य कुलको कलंक लगानेवाले क्रूर कृतघ्न चोर सत्यशौच औदानसे रहि-तमनुष्य गधे गूढ़पुरुष वाहुयुद्ध जाननेवाले मल्लआदि अतिक्रोधी गर्भाशय नीच ३६ निंदित दम्भकरनेवाले राक्षस बहुत निद्रावाले सब जीव धर्मसेहीन उड़द तिल इनसवका राहुस्वामी है ३७॥

गिरिदुर्गपह्लवश्वेतहूणचोलावगाणमरुचीनाः ॥ प्रत्यन्तधनिम हेच्छव्यवसायपराक्रमोपेताः ३८ परदारविवादरताःपरन्ध्रकुतूहला मदोत्सिक्ताः ॥ मूर्खाधार्म्मिकविजिगीषवश्चकेतोःसमाख्याताः३९॥

पर्वतकेदुर्ग अर्थात् किले पह्लव श्वेत हूणचोल अवगाण मरुस्थल चीन औ प्रत्यंत देशमें रहनेवाले धनवान् महाशय व्यवसाय औ पराक्रमकरके युक्त ३८ परस्त्री में आसक्त विवादमें आसक्त परायाछिद्र ढूंढनेका जिनको कौतुकहोय मत्त मूर्ख अधर्मी जीतनेकी इच्छावाले इनसवका स्वामीकेतु है ३९॥

उदयसमयेयःस्निग्धांशुर्महान्प्रकृतिस्थितोयदिचनहतोनिर्घातोल्कारजोग्रहमर्दनैः ॥ स्वभवनगतःस्वोच्चप्राप्तःशुभग्रहवीक्षितः सभवतिशिवस्तेषांयेषांप्रभुःपरिकीर्तितः ४० ॥

जौनसाग्रह प्रतिदिन उदयके समय निर्मल किरणों करके युक्त बड़ा औ अपने स्वभावमें स्थितहोय निर्घात उल्का धूलि औ ग्रहयुद्धकरके हत न होय अपनी राशि अथवा अपनी उच्चराशिमें प्राप्तहोय शुभग्रहों करके देखाहोय वहग्रह जिनका स्वामी कहा है उनको कल्याण करनेवाला होताहै ४० ॥

अभिहितविपरीतलक्षणैःक्षयमुपगच्छतितत्परिग्रहः ॥ डमरभयगदातुराजनानरपतयश्चभवन्तिदुःखिताः ४१ यदिनरिपुकृतंभयंनृपाणांस्वसुतकृतंनियमादमात्यजंवा ॥ भवतिजनपदस्यचाप्यवृष्ट्यागमनमपूर्वपुराद्रिनिम्नगासु ४२ ॥

इतिश्रीवराहमिहिरकृतौबृहत्संहितायांग्रहभक्तिर्नामषोडशोऽध्यायः १६ ॥

पहिले जो उत्तम लक्षणकहे उनसे जिसग्रहके लक्षण उलटेहोयँ उसग्रह का जोवर्गकहा वह क्षयको प्राप्तहोताहै । औ लोकभी डमर अर्थात् शस्त्रकलह भय औ रोगकरके पीड़ित होते हैं औ राजाभी दुःखीहोते हैं ४१ ऐसे उत्पात होनेपर जो राजाको शत्रुका भयनहोय तो अपने पुत्रसे अथवा मंत्री से तो निश्चयही भयहोता है । औ देशोंका जोशत्रुभय नहोय तो अवृष्टिकरके अपूर्व पुर पर्वत औ नदियों में गमनहोय अर्थात् वर्षा न होय औ जलके अभावसे प्रजा पीड़ित होकर ऐसे नगर पर्वत औ नदियों को जाय जो पहिले कभी न देखे हैं न सुने हैं ४२ ॥

श्रीवराहमिहिराचार्य्यकीबनाईबृहत्संहितामेंग्रहभक्ति
नामकसोलहवांअध्यायसमाप्तहुआ १६ ॥

सत्रहवां अध्याय ॥

ग्रहयुद्ध ॥

युद्धंयथायदावाभविष्यदादिश्यतेत्रिकालज्ञैः ॥
तद्विज्ञानंकरणेमयाकृतंसूर्यसिद्धान्तात् १ ॥

भौमआदि पांचग्रहोंका युद्ध जिसभांति औ जिससमय होय उसको त्रिकालज्ञ पुरुष भविष्यत् अर्थात् पहिलेही कहदेतेहैं उसग्रह युद्धके जाननेका उपाय हमने सूर्य सिद्धांतसे लेकर पंचसिद्धांतिका नाम अपने करण ग्रन्थमेंकहाहै १ ॥

वियतिचरतांग्रहाणामुपर्युपर्यात्ममार्गसंस्थानाम् ॥ अतिदूराद्

ग्विपथेसमतामिवसंप्रयातानाम् २ आसन्नक्रमयोगाद्भेदोल्लेखांशुमर्दनासव्यः ॥ युद्धंचतुष्प्रकारंपराशराद्यैर्मुनिभिरुक्तम् ३ ॥

आकाशमें गमन करतेहुये औ ऊपर २ अपनी २ कक्षामें स्थित भौमआदि पांचग्रह अतिदूर होनेसे मानों समताको प्राप्त होगये ऐसेदेख पड़ते हैं उनका निकटके क्रमसे जो संयोग उसको युद्ध कहते हैं। इस का तात्पर्ययह है कि भौमआदि ग्रहोंका तो परस्पर बहुत अंतर है परंतु जब वे अपनी २ कक्षामें गमन करतेहुये समसूत्रमें आजाते हैं तो अतिदूर होनेके कारण मनुष्योंको ऐसा देखपड़ता है कि दोनोंग्रह मिलगये उसी का नाम युद्धहै २ वहयुद्धभेद उल्लेख अंशुमर्दन औ असव्य इनचारप्रकारोंका पराशर आदिमुनियोंने कहा है। जब दोनों ग्रह एक देखपड़ें अर्थात् ऊपर वाले ग्रहको नीचे का ग्रह ढक लेवे उस युद्ध का नाम भेदहै। जब एक ग्रह दूसरे ग्रह बिम्बकी परिधि मात्र को स्पर्श करै ढके नहीं वह उल्लेख नामक युद्ध है। दोनों ग्रहोंका स्पर्श तो न होय परन्तु इतने समीप दोनों होजायँ कि उनके किरण परस्पर मिलेहुये देखपड़ें इसकानाम अंशुमर्दन है। ग्रहों के किरण भी न मिलें एकग्रह दूसरे ग्रहके दक्षिणमें बरोबर रहैं औ दूसराउत्तरमें रहै इस युद्धकानाम असव्यहै ३॥

भेदेवृष्टिविनाशोभेदःसुहृदांमहाकुलानांच ॥ उल्लेखेशस्त्रभयंमन्त्रिविरोधःप्रियान्नत्वम् ४ अंशुविरोधेयुद्धानिभूभृतांशस्त्ररुक्क्षुदवमर्दाः ॥ युद्धेचाप्यपसव्येभवन्तियुद्धानिभूपानाम् ५ ॥

भेदनामक युद्ध होय तो वर्षा न होय मित्रोंका औ उत्तम कुलोंका परस्पर भेदहोजाय। उल्लेखनामकयुद्धहोय तो शस्त्रभयहोय राजाओंके मंत्रियोंकापरस्पर भेदहोय औ दुर्भिक्ष पड़े ४ अंशुमर्दननाम युद्धहोय तो राजाओंकेपरस्पर युद्धहोयँ औ शस्त्र रोग औ क्षुधाकर के प्रजाको पीड़ा होय। अपसव्य नामक युद्धमेंभी राजाओंके परस्पर युद्धहोते हैं ५॥

रविराक्रन्दोमध्येपौरःपूर्वेऽपरेस्थितोयायी ॥ पौराबुधगुरुरविजानित्यंशीतांशुराक्रन्दः ६ केतुकुजराहुशुक्रायायिनएतेग्रहाहताहन्युः॥ आक्रन्दयायिपौरान्जयिनोजयदाःस्ववर्गस्य ७ ॥

जोराजा शत्रुको जीतनेके लिये चढ़करजाय उसके सहायकेलियेजो पीछे दूसरा राजारहे उसको पार्ष्णिग्राह कहते हैं औ पार्ष्णिग्राह के भी जो पीछे राजाहोय उसको आक्रन्द कहते हैं। मध्याह्नके समय सूर्य आक्रन्द है पूर्व अर्थात् मध्याह्न से पहिले दिनके तृतीयांश में सूर्यपौर है औ अपर अर्थात् मध्याह्न के अनन्तर दिनके तृतीयांशमें सूर्य यायी है। बुध बृहस्पति औ शनै·

श्चर यायी हैं। चन्द्रमा नित्यही आक्रन्दहै ६ केतु मंगल राहु औ शुक्र येचारों ग्रह यायी हैं। ये ग्रह हत अर्थात् पराजित होयँ तो आक्रन्द यायी औ पौरों का नाश करते हैं औ युद्धमें जयको प्राप्तहोय तो अपनेवर्ग अर्थात् आक्रन्द यायी अथवा पौर इनको जयदेते हैं अर्थात् जिस ग्रहका पराजय होय उसके वर्गकी हानि औ जिसका जय उसके वर्गकी वृद्धिहोती है ७॥

पौरेपौरेणहतेपौराः पौरान्नृपान्विनिघ्नन्ति॥
एवंयाय्याक्रन्दौनागरयायिग्रहाश्चैवम् ८॥

पौर ग्रहको पौरग्रह युद्धमें जीते तो पौर राजा पौर राजाओं को जीततेहैं इसी प्रकार यायी औ आक्रन्दका जय पराजय औ पौर औ यायीका जय पराजय ग्रहयुद्धके अनुसार जाननाचाहिये अर्थात् जो ग्रहजीते उसके वर्गका जय औ जो ग्रह हारे उसके वर्ग का पराजय होता है। अब युद्धमें पराजित ग्रहका लक्षण कहते हैं ८॥

दक्षिणदिक्स्थःपरुषोवेपथुरप्राप्यसंन्नतोऽणुः॥
अधिरूढोविकृतोनिष्प्रभोविवर्णश्चयःसजितः ९॥

जोग्रह युद्धके समय दक्षिण दिशामें स्थितहोय रूक्षहोय कांपताहोय औ दूसरे ग्रहके समीप पहुंचने से प्रथमहीं लौटआवे अर्थात् वक्रीहोजाय अणु अर्थात् सूक्ष्महोय अधिरूढ अर्थात् दूसरे ग्रह करके आक्रान्त होय किसी प्रकार के विकारको प्राप्तहुआ होय निष्प्रभ औ विवर्णहोय वहग्रह जित अर्थात् दूसरे ग्रहकरके जीताहुआ होता है। जीतनेवाले ग्रहका लक्षण कहते हैं ९॥

उक्तविपरीतलक्षणसम्पन्नोजयगतोविनिर्दिष्टः॥
विपुलःस्निग्धोद्युतिमान्दक्षिणदिक्स्थोपिजययुक्तः १०॥

पहिले जो लक्षण पराजित ग्रहकरके कहे उनसे विपरीत लक्षणों करके युक्त जो ग्रहहोय वह जय युक्त होता है। यह नियमनहीं कि दक्षिण दिशामें स्थितग्रह सदा पराजित होताहै। औ उत्तर दिशामें स्थितग्रह जीतताहै जो दक्षिण दिशामें स्थितग्रह बड़ा देखपड़े स्निग्धहोय औ कान्तिकरके युक्तहोय तो उसीको जययुक्त जानना चाहिये। यह बात केवल शुक्रमें होतीहै और ग्रह तो उत्तरमेंहोवें तभी जययुक्त होतेहैं औ शुक्र दक्षिण मेंभी जयी होता है १०॥

द्वावपिमयूखयुक्तौविपुलौस्निग्धौसमागमेभवतः॥
तत्रान्योन्यप्रीतिर्विपरीतावात्मपक्षघ्नौ ११॥

जो दोनोंग्रह किरणों करके युक्त बड़े औ स्निग्ध समागममें होयँ तो वे ग्रह जिनके पहिलेकहेहैं उनकी परस्पर प्रीतिहोती है। औ इससे विपरीत अर्थात् किरणों से हीन सूक्ष्म औ रूक्षहोयँ तो अपने पक्षका नाश करते हैं ११॥

युद्धंसमागमोवायद्यव्यक्तौतुलक्षणैर्भवतः ॥
भुविभूभृतामपितथाफलमव्यक्तंविनिर्देश्यम् १२ ॥

भौम आदि पांचग्रहोंका परस्पर युद्ध होताहै औ ये ग्रह चन्द्रमाकेसाथ युक्त होयँ तो समागम कहाता है। जो युद्ध अथवा समागम लक्षणों करके स्फुटन होयँ अर्थात् युद्धमें तो ग्रहके जयपराजयका निश्चय न होय दोनों ग्रह तुल्य नजरहें। औ समागममें चन्द्रमा ग्रहसे उत्तर अथवा दक्षिणहोकर न जाय ग्रह के ऊपर होकर गमनकरै॥ तो भूमिपर राजाओं को वैसाही स्फुट फलकहना चाहिये। अर्थात् राजाओंको भी युद्धमें जय पराजयका निश्चय न होय औ चन्द्रमा के समागमका फलभी शुभ अशुभ न होय मध्यमहोय १२ ॥

गुरुणाजितेऽवनिसुतेवाह्लीकायायिनोऽग्निवार्त्ताश्च ॥ शशिजेनशूरसेनाःकलिङ्गसाल्वाश्चपीड्यन्ते १३ सौरेणारेविजितेजयन्तिपौराःप्रजाश्चसीदन्ति ॥ कोष्ठागारम्लेच्छक्षत्रियतापश्चशुक्रजिते १४॥

जो युद्धके समय मंगलको वृहस्पति जीते तो वाह्लीक देशके निवासीयायी अर्थात् शत्रुपर चढ़ाई करनेवाले राजा औ अग्निसे जीविका करनेवाले सुनार आदि पीड़ाको प्राप्तहोते हैं। मंगलको बुधजीते तो सूरसेन कलिंग औ साल्व देशके निवासी पीड़ित होते हैं १३ शनैश्चर मंगलको जीते तो नगरके निवासी जीततेहैं औ प्रजापीड़ाको प्राप्त होती है॥ औ शुक्र मंगलको जीते तो कोष्ठागार म्लेच्छ औ क्षत्रियों को सन्ताप होताहै १४ ॥

भौमेनहतेशशिजेवृक्षसरित्तापसाश्मकनरेन्द्राः ॥ उत्तरदिक्स्थाःक्रतुदीक्षिताश्चसन्तापमायान्ति १५ गुरुणाबुधेजितेम्लेच्छशूद्रचौरार्थयुक्तपौरजनाः ॥ त्रैगर्तपार्वतीयाःपीड्यन्तेकम्पतेचमही १६ रविजेनबुधेध्वस्तेनाविकयोधाब्जसधनगर्भिण्यः ॥ भृगुणाजितेग्निकोपःसस्याम्बुदयायिविध्वंसः १७ ॥

बुधको मंगल जीते तो वृक्ष नदी तपस्वी अश्मक देशके निवासी राजा उत्तर दिशा के निवासी यज्ञ की दीक्षा जिनने ग्रहणकरी होय ये सब सन्ताप को प्राप्त होतेहैं १५ वृहस्पति बुधको जीते तो म्लेच्छ शूद्र चोर धनवान नगर के निवासी त्रिगर्त देश औ पर्वत के निवासी पीड़ित होते हैं। औ भूमि कांपती है १६ शनैश्चर बुधको जीते तो नावचलानेवाले योधा जल से उत्पन्न द्रव्य धनवान् औ गर्भिणी स्त्री ये सब पीड़ा को प्राप्त होते हैं। शुक्र बुधको जीते तो अग्निकोप होय अर्थात् लोकमें अग्नि वहुत लगे खेती बादल औ चढ़ के जानेवाले राजा नाशको प्राप्त होयँ १७ ॥

जीवेशुक्राभिहतेकुलूतगान्धारकैकयामद्राः ॥ साल्वावत्सावङ्गा गावःसस्यानिनश्यन्ति १८ भौमेनहतेजीवेमध्योदेशोनरेश्वरागावः॥ सौरेणचार्जुनायनवसातियौधेयशिविविप्राः १९ शशितनयेनापिजि तेवृहस्पतौम्लेच्छसत्यशस्त्रभृतः ॥ उपयान्तिमध्यदेशश्चसंक्षयंय च्चभक्तिफलम् २० ॥

शुक्र वृहस्पतिकोजीते तो कुलूत गांधार कैकय मद्र साल्व वत्सवंग ये सब देश गौ औ खेतीनाशको प्राप्तहोतेहैं १८ मंगल वृहस्पतिकोजीते तो मध्यदेश राजा औ गौपीड़ाको प्राप्तहोतेहैं। शनैश्चर मंगलकोजीते तो आर्जुनाय नव- साति यौधेय औ शिविदेशकेजन औ ब्राह्मण नाशको प्राप्तहोते हैं १९ बुध वृह- स्पतिकोजीते तो म्लेच्छ सत्यवादी पुरुष औ शस्त्रधारण करनेवाले पीड़ित होते हैं। औ मध्यदेशका क्षयहोताहै औ वृहस्पतिकी भक्तिमें जो पहिले कह आये उनसबका भी क्षयहोताहै २० ॥

शुक्रेवृहस्पतिहतेयायीश्रेष्ठोविनाशमुपयाति ॥ ब्रह्मक्षत्रविरोधः सलिलंचनवासवस्त्यजति २१ कोशलकलिंगवंगावत्सामत्स्याश्च मध्यदेशयुताः ॥ महतींव्रजन्तिपीडांनपुंसकाःसूरसेनाश्च २२ कुज विजितेभृगुतनयेबलमुख्यवधोनरेन्द्रसंग्रामाः ॥ सौम्येनपार्वतीयाः क्षीरविनाशोऽल्पवृष्टिश्च २३ रविजेनसितेविजितेगणमुख्याःशस्त्र जीविनःक्षत्रम्॥जलजाश्चनिपीड्यन्तेसामान्यंभक्तिफलमन्यत् २४॥

वृहस्पति शुक्रकोजीते तो चढ़ाई करनेवाला श्रेष्ठराजा नाशको प्राप्तहोता है। ब्राह्मण क्षत्रियोंका बिरोधहोताहै औ वर्षाभी नहींहोती २१ कोशल कलिंग वंग वत्स मत्स्य मध्यदेश नपुंसक अर्थात् क्लीव औ सूरसेन बड़ीपीड़ाको प्राप्त होतेहैं २२ मंगल शुक्र को जीते तो राजाका सेनापति माराजाय राजाओं के परस्पर युद्धहोंयँ। बुध शुक्रकोजीते तो पर्वतनिवासियों का क्षयहोय दुग्धका नाशहोय औ वर्षा थोड़ीहोय २३ शनैश्चर शुक्रकोजीते तो समूहमें प्रधान म- नुष्य शस्त्रसे जीविका करनेवाले क्षत्रिय औ जलसे उत्पन्न द्रव्यपीड़ाको प्राप्त होते हैं। यह तो विशेष फलकहा औ जो पहिले ग्रहभक्ति कही है उनमेंसे भी पराजित ग्रह अपनी२ भक्तिका नाशकरताहै यह सामान्य फलहै २४ ॥

असितेसितेननिहतेऽर्घवृद्धिरहिविहगमानिनांपीडा ॥ क्षितिजेनतं गणान्ध्रोड्रकाशिवाह्लीकदेशानाम् २५ सौम्येनपराभूतेमन्देऽङ्गवणिग् विहंगपशुनाथाः॥सन्ताप्यन्तेगुरुणास्त्रीबहुलामाहिषकशकाश्च २६॥

शुक्र शनैश्चरकोजीते तो अर्घवृद्धिहो अर्थात् सबवस्तुका भावसस्ता होय

सर्प पक्षी औ मानीपुरुषोंको पीड़ाहोय मंगल शनैश्चरकोजीते तो तंगण आंध्र उड़्काशी औ बाह्लीक इनदेशोंके निवासियोंको पीड़ाहोय २५ बुध शनैश्चरको जीते तो अंगदेश वनियें पक्षी पशु औ सर्पपीड़ाको प्राप्तहोतेहैं बृहस्पति शनैश्चर कोजीते तो जिनदेशोंमें स्त्रीवहुतहोयँ वेदेश महिषक औ शकपीड़ितहोतेहैं २६॥

अयंविशेषोऽभिहितोहतानांकुजज्ञवागीशसितासितानाम् ॥
फलंतुवाच्यंग्रहभक्तितोऽन्यद्यथातथाघ्नन्तिहताःस्वभक्तीः २७ ॥
इतिश्रीवराहमिहिरकृतौबृहत्संहितायांग्रहयुद्धंनामसप्तदशोऽध्यायः १७ ॥

मंगल बुध बृहस्पति शुक्र औ शनैश्चर इनमें से जो पराजितहोय उनका यह विशेषफलकहा और सामान्यफल ग्रहभक्तिसे कहना चाहिये । वेग्रह जिस प्रकार पराजितहोयँ उसीप्रकार अपनी भक्तिका नाश करते हैं । अर्थात् ग्रहका पराजय स्फुटहोय तो भक्तिका नाश स्फुटहोताहै औ पराजय स्फुटनहोय तो भक्तिकानाशभी स्फुटरूपसे नहींहोता २७ ॥

श्रीवराहमिहिराचार्यकीवनाईबृहत्संहितामेंग्रहयुद्धनामक
सत्रहवांअध्यायसमाप्तहुआ १७ ॥

अठारहवां अध्याय ॥

शशिग्रहसमागम ॥

भानांयथासम्भवमुत्तरेणयातोग्रहाणांयदिवाशशाङ्कः ॥
प्रदक्षिणंतच्छुभकृन्नृपाणांयाम्येनयातोनशिवःशशाङ्कः १ ॥

नक्षत्र औ ग्रहोंको यथासम्भव उत्तरकी ओर होकर चन्द्रमा गमनकरै वह प्रदक्षिण गमन राजाओंको शुभकरता है । औ नक्षत्रं औ ग्रहोंके दक्षिण होकर चन्द्रमाजाय तो शुभनहींहोता । यथा सम्भवका यहतात्पर्यहै कि सवनक्षत्रोंके उत्तरसे अथवा सबके दक्षिण से चन्द्रमा गमननहीं करसक्ता । जिननक्षत्रोंका शरचन्द्रकेशरसे न्यूनहो अथवा चन्द्रशरकेतुल्यहो उनके उत्तर दक्षिणगमनका सम्भव है । जिनका उत्तरशर चन्द्रकेशर से अधिक है उनके सदा दक्षिणओर होकर चन्द्रमा गमनकरता है । औ जिनका दक्षिणशर चन्द्रशर से अधिक है उननक्षत्रोंके सदा उत्तरहोकर चन्द्रमाजाता है । इसीभांति भौमआदि ग्रहोंका भी जानो । जिन के उत्तर दक्षिण दोनोंओर चन्द्रमा के गमनका सम्भव है उनसेही फल विचारहै १ ॥

चन्द्रमायदिकुजस्ययात्युदक्पार्वतीयबलशालिनांजयः ॥
क्षत्रियाप्रमुदिताःसयायिनोभूरिधान्यमुदितावसुन्धरा २ ॥

जो चन्द्रमा मंगल के उत्तरहोकर जाय तो पर्वत के निवासी औ बलवान

जयपाते हैं। यायी अर्थात् चढ़कर जानेवाले सहित क्षत्रिय प्रसन्नहोते हैं औ भूमिभी बहुत अन्नसे मुदितहोती है २ ॥

उत्तरतःस्वसुतस्यशशाङ्कःपौरजयायसुभिक्षकरश्च ॥
सस्यचयंकुरुतेजनहार्दिकोशचयंचनराधिपतीनाम् ३ ॥

जो चन्द्रमा बुधके उत्तर होकर गमनकरै तो पुरमें रहनेवाले राजाओं का जय होता है। सुभिक्ष होताहै खेती की वृद्धिहोती है प्रजामें तुष्टिहोतीहै और राजाओं के भंडार की वृद्धि होती है ३ ॥

वृहस्पतेरुत्तरगेशशाङ्के पौरद्विजक्षत्रियपण्डितानाम् ॥
धर्मस्यदेशस्यचमध्यमस्यवृद्धिःसुभिक्षंमुदिताःप्रजाश्च ४ ॥

वृहस्पतिके उत्तरहोकर चन्द्रमा गमनकरै तो पौर ब्राह्मण क्षत्रिय पंडितधर्म औ मध्यदेश इनसवकी वृद्धि होतीहै। सुभिक्ष होताहै औ प्रजा प्रसन्नरहतीहै४॥

भार्गवस्ययदियात्युदक्शशीकोशयुक्तगजवाजिवृद्धिदः ॥
यायिनांचविजयोधनुष्मतांसस्यसम्पदपिचोत्तमातदा ५ ॥

शुक्र के उत्तर होकर चन्द्रमा गमन करै तो राजाओं के भंडार हाथी घोड़े इन की वृद्धि करताहै। धनुष धारण करनेवाले यायी राजाओं का जय होता है औ खेती भी अच्छी होती है ५ ॥

रविजस्यशशीप्रदक्षिणंकुर्याच्चेत्पुरभूभृतांजयः ॥
शकबाह्लिकसिन्धुपह्लवामुद्राजोयवनैःसमन्विताः ६ ॥

शनैश्चरके उत्तर होकर चन्द्रमा गमन करै तो पुरके निवासी राजाओं का जय होताहै। शक बाह्लिक सिन्धु पह्लव औ यवन हर्षको प्राप्तहोते हैं ६ ॥

येषामुदग्गच्छतिभग्रहाणां प्रालेयरश्मिर्निरुपद्रवश्च ॥
तद्द्रव्यपौरेतरभक्तिदेशान् पुष्णातियाम्येननिहन्तितानि ७ ॥

चन्द्रमा जिन नक्षत्र औ ग्रहों के उत्तरकी ओर होकरजाय औ उत्पात रहित होय तो उन नक्षत्रों के जो नक्षत्र व्यूहमें द्रव्य कहे औ ग्रहभक्तिमें जो ग्रहों के द्रव्यकहे उन सबको औ ग्रहों के मध्यमें जो पौर अथवा यायी पीछे कहे उन सबको औ ग्रहभक्ति में जो देश कहे उन सबको पुष्टकरताहै। औ दक्षिणहोकर जाय तो इन सबका नाश करता है ७ ॥

शशिनिफलमुदक्स्थेयद्ग्रहस्योपदिष्टं भवतितदपसव्येसर्वमेवप्रतीपम् ॥ इतिशशिसमवायःकीर्तिताभग्रहाणां नखलुभवतियुद्धंसाकमिंदोर्ग्रहर्क्षैः ८ ॥

श्रीवराहमिहिरकृतौवृहत्संहितायांशशिग्रहसमागमोनामाष्टादशोऽध्यायः १८ ॥

पवनान्यलिनादितानि ॥ गावःप्रभूतपयसोनयनाभिरामा रामारतैरविरतंरमयन्तिरामान् ५ गोधूमशालियवधान्यवरेक्षुवाटाभूःपाल्यतेनृपतिभिर्नगराकराढ्या ॥ चित्यङ्किताक्रतुवरेष्टिविघुष्टनादासम्वत्सरेशिशिरगोरभिसम्प्रवृत्ते ६ ॥

चन्द्रमाके वर्ष प्रवृत्त होनेपर येफल होतेहैं कि चलतेहुये पहाड़ोंके समान औ सर्प अंजन भ्रमर अथवा महिष शृंगकी कांति के तुल्य अति नील जिनकी कांति औ निर्मल जलों से सब भूमिको पूरण करतेहुये औ विरही जनोंको उत्कंठित करनेवाले अपनेगंभीर गर्जनेसे दिशाओंको पूरणकरतेहुये मेघोंकरके आकाश व्याप्तरहता है ४ जलभी कमल कुमुद औ नील कमलों करके युक्त रहते हैं। उपवनों में वृक्षवहुत फूलते हैं औ उनमें भ्रमर शब्द करते हैं। गो वहुत दूध देती हैं ५ औ अति सुन्दरीनारी अपने प्रियोंको रति करके निरंतर रिझाती हैं। गेहूं धान यव उत्तम धान्य औ ईखके खेतों करके युक्त नगर औ आकर अर्थात् सुवर्ण रत्न आदिकी खानिकरके युक्त हवनके लिये अग्नि कुंडों करके युक्त औ उत्तम यज्ञ औ इष्टियोंमें वेदध्वनि करके शब्दायमान भूमिको राजा पालन करते हैं ६ ॥

वातोद्धतश्चरतिवह्निरतिप्रचण्डो ग्रामान्वनानिनगराणिचसन्दिधक्षुः ॥ हाहेतिदस्युगणपातहतारटंतिनिःस्वीकृताविपशवोभुविमर्त्यसङ्घाः ७ अभ्युन्नतावियतिसंहतमूर्त्तयोऽपिमुञ्चन्तिनक्वचिदपःप्रचुरंपयोदाः ॥ सीम्निप्रजातमपिशोषमुपैतिसस्यंनिष्पन्नमप्यविनयादपरेहरन्ति ८ भूपानसम्यगभिपालनसक्तचित्ताःपित्तोत्थरुक्प्रचुरताभुजगप्रकोपः ॥ एवंविधैरुपहताभवतिप्रजेयंसंवत्सरेऽवनिसुतस्यविपन्नसस्या ९ ॥

मंगल के वर्षमें येफल होतेहैं। पवन करके दीप्त औ ग्राम वन औ नगरों को दग्ध करनेकी इच्छावाला अतिप्रचंड अग्नि विचरता है। भूमिपर मनुष्यों के समूह चोरोंके समुदायके पात अर्थात् डाका मारने करके पीड़ित औ धन तथा पशुओं करके रहित होकर हाहाकार करते हैं ७ आकाशमें वहुत ऊंचे औ गहरेभी वादल जलनहीं वरसते। खेतोंमें खेती उत्पन्नहोकरभी सूखजाती है पकीहुई खेतीको अन्यायसे शत्रु हरलेजाते हैं ८ राजाओं का चित्त धर्मसे प्रजापालन करने में नहींलगता। पित्तके रोग वहुत होते हैं सर्पोंका वड़ा उपद्रव होताहै ऐसे २ उत्पातों करके प्रजा पीड़ित होती है औ खेती नष्ट होजाती है ९ ॥

मायेन्द्रजालकुहकाकरनागराणांगान्धर्वलेख्यगणितास्त्रविदांचवृद्धिः ॥ पिप्रीषयानृपतयोऽद्भुतदर्शनानिदित्सन्तितुष्टिजननानिपरस्परेभ्यः १० वार्ताजगत्यवितथाऽविकलात्रयीचसम्यक्चरत्यपिमनोरिवदण्डनीतिः ॥ अध्यक्षरंस्वभिनिविष्टधियोऽत्रकेचिदान्वीक्षिकीषुचपरंपदमीहमानाः ११ हास्यज्ञदूतकविबालनपुंसकानांयुक्तिज्ञसेतुजलपर्वतवासिनांच ॥ हार्दिंकरोतिमृगलाञ्छनजःस्वकेऽब्दे मासेऽथवा प्रचुरतांभुविचौषधीनाम् १२ ॥

बुधके वर्ष औ मासमें येफल होते हैं। माया अर्थात् प्रपंचको जाननेवाले इन्द्रजाल जाननेवाले कुहक अर्थात् आश्चर्य दिखानेवाले आकर अर्थात् सुवर्णआदि निकलनेकी खानि जाननेमें कुशल गानाजाननेवाले चित्रलिखना जाननेवाले गणितज्ञ औ शस्त्रविद्या जाननेवाले इन सबकी वृद्धिहोती है। प्रसन्न करनेकी इच्छासे राजा लोग परस्पर हर्षको देनेवाले दर्शन देना चाहते हैं। अर्थात् स्नेह बढ़ानेके लिये राजा परस्पर मिलना चाहते हैं १० वार्ता अर्थात् खेती पशुपालन औ व्यापार येतीनों जगत् में सत्यरूप से होते हैं अर्थात् इनके करनेवाले पुरुषोंको लाभहोताहै। वेदत्रयी का जगत् में संपूर्ण रूपसे प्रचार रहताहै। शास्त्रके अनुसार दंडनीति मनु महाराजकीसी चलती है। अर्थात् जिसप्रकार मनुने दंडनीति करके प्रजाका रक्षणकिया उसी भांति उसवर्ष में राजाप्रजाकारक्षण करते हैं। अध्यक्षर अर्थात् वेदांत शास्त्रमें कई पुरुष निविष्ट बुद्धि होतेहैं औ कईतर्क विद्यामें उत्तमपद चाहते हैं ११ हास्यको जाननेवाले दूत कविबालक नपुंसक युक्ति जाननेवाले सेतु अर्थात् पुलअथवा बंधपर जो रहते हैं। जल औ पर्वत पर जो रहतेहैं इनसबको अपने वर्ष अथवा मासमें बुध तुष्टिकरताहै औ भूमिपर ओषधियोंका बाहुल्य करताहै १२ ॥

ध्वनिरुच्चरितोऽध्वरेषुगामीविपुलोयज्ञमुषांमनांसिभिन्दन् ॥ विचरत्यनिशंद्विजोत्तमानांहृदयानन्दकरोऽध्वरांशभाजाम् १३ क्षितिरुत्तमसस्यवत्यनेकद्विपपत्यश्वधनोरुगोकुलाढ्या ॥ क्षितिपैरभिपालनप्रवृद्धाप्युच्चरस्पर्द्धिजनातदाविभाति १४ विविधैर्वियदुन्नतैःपयोदैर्वृतमुर्वी पयसाभितर्पयद्भिः ॥ सुरराजगुरोःशुभेत्रवर्षेबहुसस्याक्षितिरुत्तमर्द्धियुक्ता १५ ॥

बृहस्पतिके शुभवर्ष आदि होयँ तो ये फल होते हैं शुभशब्दका यहां यह तात्पर्य है कि प्रभव आदि साठवर्षों में जो पिंगल कालयुक रौद्र दुर्मति आदि अशुभ वर्ष बृहस्पति के होयँ तो ये फल संपूर्ण नहीं होते औ प्रभव विभव

आदि शुभवर्ष बृहस्पतिके आवें तबयेफल संपूर्णरूपसे होते हैं। कौन २ फल होते हैं उनको कहते हैं। यज्ञमें बिघ्नकरनेवाले राक्षसोंके मनको भेदनकरताहुआ औ यज्ञमें भागपानेवाले इन्द्रआदिदेवताओंको आनन्ददेनेवाला यज्ञ में ब्राह्मणों करके पढ़े वेदका बड़ाशब्द निरंतर स्वर्गतक पहुंचताहै १३ उत्तम खेती अनेक हाथी घोड़े पयादे धनऔ उत्तम गौओं के कुलोंकरके युक्त औ राजाओं करके भली भांति पालन करने से वृद्धिको प्राप्त औ देवताओं के समान हृष्ट पुष्ट जिसमें मनुष्य ऐसी भूमि शोभित होती है १४ भूमिको जलसे तृप्तकरनेवाले अनेक प्रकार के ऊंचे मेघोंसे आकाश व्याप्तरहता है औ भूमि बहुतखेती औ उत्तम संम्पत्ति करकेयुक्तरहती है १५ ॥

शालीक्षुमत्यपिधराधरणीधराभधराधारोज्झितपयःपरिपूर्णवप्रा॥ श्रीमत्सरोरुहततताम्बुतडागकीर्णायोषेवभात्यभिनवाभरणोज्ज्वलांगी १६ क्षत्रंक्षितौक्षपितभूरिबलारिपक्षमुद्घुष्टनैकजयशब्दविराविताशम्॥ संहृष्टशिष्टजनदुष्टविनष्टवर्गांगांपालयन्त्यवनिपानगराकराढ्याम् १७ पेपीयतेमधुमधौसहकामिनीभिर्जेगीयतेश्रवणहारिसवेणुवीणम्॥ बोभुज्यतेऽतिथिसुहृत्स्वजनैःसहान्नमब्देसितस्यमदनस्यजयावघोषः १८ ॥

शुक्रके वर्ष मास औ दिनमें ये फल होते हैं। धान औ ईखके खेतोंसे भरी हुई औ पर्वतके तुल्यमेघों करके बरसे हुये जलसे जिसमें खेत परिपूर्ण हो रहे हैं। औ शोभायुक्त कमल औ बहुत जल करके युक्त तालावोंसे व्याप्तऐसी भूमि उत्तम भूषणों करके भूषित हैं अंग जिसके ऐसी स्त्री के समान शोभित होती है १६ बड़े बलवान् शत्रुपक्षका नाश करनेवाले औ ऊंचेस्वरसे उच्चारण किये अनेक प्रकारके जयशब्द करके शब्दायमान करी है दिशा जिसने ऐसा क्षत्र अर्थात् राजाओंका समूह प्रसन्नहें उत्तम पुरुष जिसमें औ दूषित किये हैं नीचोंके वर्ग जिसमें ऐसी नगर औ आकर अर्थात् खानों करके युक्त भूमिको पालन करते हैं १७ वसंत ऋतुमें पुरुष कामिनियों के साथ बहुत मधुपान करते हैं। वंशी औ वीणाके साथ कानोंको बहुत प्यारा लगनेवाला गीत बारम्बार गाते हैं अभ्यागत मित्र औ बंधुओंके साथ भोजनकरते हैं औ कामदेव के जयकाशब्द होताहै अर्थात् प्रजाबहुत कामासक्त होती है १८ ॥

उद्वृत्तदस्युगणभूरिरणाकुलानिराष्ट्राण्यनेकपशुवित्तविनाकृतानि॥ रोरूयमाणहतबन्धुजनैर्जनैश्चरोगोत्तमाकुलकुलानिबुभुक्षयाच १९ वातोद्धताम्बुधरवर्जितमन्तरिक्षमारुग्णनैकविटपंचधरातलंद्यौः ॥

नष्टार्कचन्द्रकिरणातिरजोवनद्धा तोयाशयाश्चविजलाःसरितोऽपित न्व्यः २० जातानिकुत्रचिदतोयतयाविनाशमृच्छन्तिपुष्टिमपराणि जलोक्षितानि॥ सस्यानिमन्दमभिवर्षतिवृत्रशत्रुर्वर्षेदिवाकरसुतस्य सदाप्रवृत्ते २१॥

शनैश्चर के वर्ष मास अथवा दिनके प्रवृत्त होनेसे सदा ये फल होते हैं बहुत उपद्रव करनेवाले चोर और युद्धकरके व्याकुल औ अनेक प्रकारके धन औ पशुओंसे हीनमारेगये हैं बंधुजन जिनके इसीलिये बहुत रोदनकरते हुये जोजन उनकरके व्याप्त बड़े २ रोगकरके व्याकुलहैं जन समूह जिनमें औ भूखकरके व्याकुल ऐसेराष्ट्र अर्थात् राजाओंके राज्यहोते हैं १९ पवन करके उड़ायेहुवे मेघोंकरके आकाशहीन रहताहै। भूमिपर बहुतसे वृक्ष गिरते हैं। आकाशमें इतनीधूलि छाजाती है कि सूर्यचन्द्रके किरण नहीं देखपड़ते तालाब आदि जलाशय सूखजाते हैं। नदीभी सूखकर छोटी २ होजाती हैं २० कहीं तो खेती उत्पन्न होकर वर्षा न होनेसे सूखजाती है औ कहीं वर्षा होजाने से अच्छीखेती होती है। वर्षा थोड़ी होती है २१॥

अणुरपटुमयूखोनीचगोन्यैर्जितोवानसकलफलदातापुष्टिदोऽतोऽन्यथायः॥ यदशुभमशुभेऽब्देमासजंतस्यवृद्धिःशुभफलमपिचैवं याप्यमन्योन्यतायाम् २२॥

इतिश्रीवराहमिहिरकृतौबृहत्संहितायांग्रहवर्षफलंनामैकोनविंशतितमोऽध्यायः १९॥

जिस ग्रहका बिंब आकाशमें छोटादेखपड़े किरण स्पष्ट न होयँ नीच राशि पर स्थितहोय औ युद्धमें दूसरे ग्रहकरके पराजित हो वहग्रह संपूर्ण शुभफल नहीं देसकताहै। औ अशुभफल संपूर्ण करताहै इससे विपरीत होय अर्थात् जिसका बिंब बड़ा देखपड़े किरण स्पष्टहोयँ उच्च आदि राशिपर स्थितहोय औ युद्धमें जयीहोय वह शुभफल संपूर्ण देता है औ अशुभ फल थोड़ा करता है। अशुभ वर्षमें मासकाभी अशुभही फलहोय तो उसकी वृद्धि होती है इसी भांति शुभ वर्षमें शुभ मासहोय उसके भी फल की वृद्धिहोती है। परंतु अन्योन्यता में अर्थात् शुभवर्षमें अशुभमास औ अशुभवर्षमें शुभमासहोय तो फल याप्य अर्थात् न्यून होजाता है २२॥

श्रीवराहमिहिराचार्यकीबनाईबृहत्संहितामेंग्रहवर्षफल नामउन्नीसवांअध्यायसमाप्तहुआ १९॥

बीसवांअध्याय ॥

ग्रहशृंगाटक ॥

यस्यांदिशिदृश्यन्तेविशन्तितारग्रहारविंसर्वे ॥
भवतिभयंदिशितस्यामायुधकोपक्षुधातङ्कैः १ ॥

भौमआदि पांचोंग्रह जिस दिशामें देखपड़ें। औ जिस दिशामें सूर्यमेंप्रवेश करें अर्थात् अस्तहोयँ उस दिशामें युद्ध दुर्भिक्ष औ रोगका भयहोताहै १ ॥

चक्रधनुःशृंगाटकदण्डपुरप्रासवज्रसंस्थानाः ॥
क्षुदवृष्टिकरालोकेसमरायचमानवेन्द्राणाम् २ ॥

चक्र धनुष शृंगाटक अर्थात् सिंगाड़ेकी भांति त्रिकोण दण्ड नगर प्रास अर्थात् भाला वज्र अर्थात् वीचमें पतला औ दोनों अग्रस्थल इन आकारों से भौम आदि पांच ग्रह स्थित होयँ तो दुर्भिक्ष औ अवृष्टि करते हैं औ राजाओं के परस्पर युद्ध होते हैं। इनसे भिन्न और रूपमें स्थित होयँ तो अशुभफल नहीं करते २ ॥

यस्मिन्खांशेदृश्याग्रहमालादिनकरेदिनान्तगते ॥
तत्रान्योभवतिनृपःपरचक्रोपद्रवश्चमहान् ३ ॥

सूर्यास्त होनेके अनन्तर आकाशके जिस भागमें भौम आदि पांचग्रहों की पंक्ति देखपड़ै उस भूमिभागमें दूसरा राजाहोय औ परचक्र अर्थात् शत्रु की सेनाका बड़ा उपद्रवहोय ३ ॥

यस्मिन्नृक्षेकुर्युःसमागमंतज्जनान्ग्रहाहन्युः ॥
अविभेदनाःपरस्परममलमयूखाःशिवास्तेषाम् ४ ॥

जिस नक्षत्रमें ग्रहोंका समागम होय उस नक्षत्रके जोजन नक्षत्र कूर्म औ नक्षत्रव्यूहमें कहे हैं उनका नाशकरते हैं। परन्तु वे ग्रह जो परस्पर भेदन न करें औ निर्मल किरणहोयँ तो उनजनोंको शुभफल देतेहैं ४ ॥

ग्रहसंवर्तसमागमसम्मोहसमाजसन्निपाताख्याः ॥
कोशश्चेत्येतेषामभिधास्येलक्षणंसफलम् ५ ॥

ग्रह संवर्त ग्रहसमागम ग्रहसम्मोह ग्रहसमाज ग्रहसन्निपात औ ग्रहकोश इन छःप्रकारोंका ग्रहयोग होताहै। अब इनके लक्षण औ फलकहतेहैं ५॥

एकर्क्षेचत्वारःसहपौरैर्यायिनोऽथवापंच ॥ संवर्तोनामभवेच्छिखिशयुतःससम्मोहः ६ पौरःपौरसमेतोयायीसहयायिनासमाजाख्यः ॥ यमजीवसंगमेऽन्योयद्यागच्छेत्तदाकोशः ७ उदितःपश्चादेकःप्राक्

चान्योयदिचसन्निपाताख्यः ॥ अविकृततनवःस्निग्धाविपुलाश्चस मागमेधन्याः ८ ॥

एक नक्षत्रपर चार अथवा पांच ग्रह स्थितहोयँ उनमें कोई ग्रह पौरहोय औ कोई यायीहोयँ उस योगका नाम ग्रहसंवर्तहै (पौर औ यायीका लक्षण सत्रहवें अध्यायमें कहआये हैं) उनमें राहु अथवा केतु भी होय तो उस योग को ग्रहसम्मोह कहतेहैं ६ पौरग्रह पौरग्रहके साथ एक नक्षत्र पर योग करै अथवा यायी ग्रह यायीके साथ योगकरै तो उस योगको ग्रहसमाज कहतेहैं। बृहस्पति औ शनैश्चरके समागममें और कोई तीसराग्रह आकर योगकरै उस योगको ग्रहकोश कहतेहैं ७ एक ग्रह पश्चिम में उदयहुआहोय औ दूसरापूर्व में उदयहोय औ दोनों ग्रह एक नक्षत्र पर योग करैं वह योग ग्रह सन्निपात कहाता है। ये पांचों ग्रह योग न होयँ अर्थात् जिस ग्रह योगमें इन पांचोंका लक्षण न मिले उसको ग्रहसमागम कहतेहैं। उस ग्रह समागममें भौमआदि पांच ग्रह अविकृत तनुहोयँ अर्थात् उनके बिम्बोंमें कुछ विकार न होय निर्मल होवें औ बड़े देखपड़ें तो शुभहोते हैं। जो ऐसे न होयँ तो अशुभ होतेहैं ८ ॥

समौतुसंवर्तसमागमाख्यौ सम्मोहकोशौभयदौप्रजानाम् ॥
समाजसंज्ञःसुसमःप्रदिष्टो वैरप्रकोपःखलुसन्निपाते ९ ॥

इतिश्रीवराहमिहिरकृतौबृहत्संहितायांग्रहशृङ्गाटकंनाम विंशतितमोऽध्यायः २० ॥

ग्रह संवर्त औ ग्रहसमागम ये दोनों योग सम हैं अर्थात् शुभ अशुभ कुछ भी फल नहीं करते हैं। ग्रहसम्मोह औ ग्रहकोश ये दो योग प्रजाको भयदेने वाले हैं। ग्रहसमाज योग समहै अर्थात् शुभ अशुभ कुछभी फल नहीं करता औ ग्रहसन्निपात नाम योग होनेसे लोकोंका परस्पर वैर होताहै ९ ॥

श्रीवराहमिहिराचार्यकीबनाईबृहत्संहितामेंग्रहशृङ्गाटकनाम बीसवांअध्यायसमाप्तहुआ २० ॥

इक्कीसवांअध्याय ॥

गर्भलक्षण ॥

अन्नंजगतःप्राणाःप्रावृट्कालस्यचान्नमायत्तम् ॥
यस्मादतःपरीक्ष्यःप्राविट्कालःप्रयत्नेन १ ॥

जगत्के प्राण अन्नहैं अर्थात् अन्न के विना किसी के प्राण नहीं रहसकते औ अन्न वर्षाऋतु के आधीन है इस लिये यत्न पूर्वक वर्षाऋतु की परीक्षा करनी चाहिये १ ॥

तल्लक्षणानिमुनिभिर्यानिनिबद्धानितानिदृष्ट्वेदम् ॥

क्रियतेगर्गपराशरकाश्यपवत्सादिरचितानि २ ॥

उस वर्षाऋतु के लक्षण जो वसिष्ठ आदि मुनीश्वरों ने रचेहैं उनको देख कर औ गर्ग पराशर काश्यप वत्स आदि के रचे लक्षणोंको देखकर यह वर्षा ऋतुका लक्षण हम करते हैं २ ॥

दैवविदवहितचित्तोद्युनिशंयोगर्भलक्षणेभवति ॥
तस्यमुनेरिववाणीनभवतिमिथ्याम्बुनिर्देशे ३ ॥

जो ज्योतिषी दिनरात गर्भलक्षण देखनेमें सावधान रहताहै उसकी वाणी ऋषिकी वाणी की भांति वर्षा बताने में कभी असत्य नहींहोती अर्थात् जिस देशमें औ जिसकालमें वह वर्षाहोना बतावै उसीदेश औ कालमें वर्षाहोय ३ ॥

किंवातःपरमन्यच्छास्त्रंज्यायोस्तियद्विदित्वैव ॥
प्रध्वंसिन्यपिकालेत्रिकालदर्शीनरोभवति ४ ॥

इस गर्भ लक्षण शास्त्र से अथवा ज्योतिश्शास्त्र से बढ़कर दूसरा कौन शास्त्रहोगा कि जिसके जाननेहीसे सब शास्त्रोंके नाश करनेवाले इसकलियुग में भी मनुष्य त्रिकाल दर्शी होजाता है । अर्थात् भूतवर्त्तमान औ भविष्यइन तीनों कालों की बात जानताहै ४ ॥

केचिद्वदन्तिकार्तिकशुक्लान्तमतीत्यगर्भदिवसाःस्युः ॥
नतुतन्मतंबहूनांगर्गादीनांमतंवक्ष्ये ५ ॥

सिद्धसेन आदि कोई आचार्यकहतेहैं कि कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा के अनन्तर गर्भ के दिनहैं परन्तु यहबहुत आचार्यों का अथवा मुनीश्वरोंका मतनहीं है इसलिये हम गर्ग आदि मुनीश्वरोंका मत कहते हैं ५ ॥

मार्गशिरःसितपक्षेप्रतिपत्प्रभृतिक्षपाकरेषाढाम् ॥
पूर्वांवासमुपगतेगर्भाणांलक्षणंज्ञेयम् ६ ॥

मार्गशीर्ष शुक्लप्रतिपदा के अनन्तर जबचन्द्रमा पूर्वाषाढा नक्षत्रपर स्थित होय उस दिनसे लेकर गर्भों के लक्षण जानने चाहिये ६ ॥

यन्नक्षत्रमुपगतेगर्भश्चन्द्रेभवेत्सचन्द्रवशात् ॥
पञ्चनवतेदिनशतेतत्रैवप्रसवमायाति ७ ॥

जिस नक्षत्रपर चन्द्र के स्थित होनेसे गर्भ होय फिर एकसौ पंचानवेदिन के अर्थात् सावन मानसे साढ़े छः महीने व्यतीत होनेपर जब उसी नक्षत्र पर चन्द्रमा आवे तब वह प्रसव होताहै ७ ॥

सितपक्षभवाःकृष्णेशुक्लेकृष्णाद्युसंभवारात्रौ ॥
नक्तंप्रभवाश्चाहनिसन्ध्याजाताश्चसन्ध्यायाम् ८ ॥

शुक्लपक्ष के हुये गर्भ साढ़े छः महीने के अनन्तर कृष्णपक्ष में प्रसव को प्राप्त होते हैं । कृष्णपक्षके गर्भ इसीप्रकार शुक्लपक्षमें प्रसवहोतेहैं । दिनके गर्भ रात्रिमें औ रात्रिके हुये गर्भ दिनमें प्रसवहोतेहैं । औ संध्याकालके संध्याकाल में प्रसवहोते हैं परन्तु प्रातःसंध्या के हुये सायंसंध्यामें औ सायंसंध्या के हुये प्रभातसंध्यामें प्रसवको प्राप्तहोते हैं ८ ॥

मृगशीर्षाद्यागर्भामन्दफलाःपौषशुक्लजाताश्च ॥ पौषस्यकृष्णपक्षेणनिर्दिशेच्छ्रावणस्यसितम् ९ माघसितोत्थागर्भाःश्रावणकृष्णेप्रसूतिमायान्ति ॥ माघस्यकृष्णपक्षेणविनिर्दिशेद्भाद्रपदशुक्लम् १० फाल्गुनशुक्लसमुत्थाभाद्रपदस्यासितेविनिर्देश्याः ॥ तस्यैवकृष्णपक्षोद्भवास्तुयतेऽश्वयुक्शुक्ले ११ चैत्रसितपक्षजाताकृष्णेऽश्वयुजस्यवारिदा गर्भाः ॥ चैत्रासितसंभूताःकार्तिकशुक्लेऽभिवर्षन्ति १२ ॥

मार्गशीर्ष के आदि अर्थात् शुल्क पक्ष के हुये गर्भ औ पौष शुल्क के गर्भ मन्द फलहोते हैं अर्थात् थोड़ा बरसते हैं । इसगर्भ लक्षण में चैत्र शुक्ल आदि महीने गिनना चाहिये । जैसे चैत्र शुक्लपक्ष औ वैशाख कृष्णपक्ष मिलकर चैत्र महीना हुआ इसभांति वैशाख आदि मास भी जानो । पौष कृष्णपक्षके गर्भ श्रावण शुक्लमें बरसतेहैं ९ माघ शुक्लके गर्भ श्रावण कृष्णमें प्रसव होतेहैं । माघ कृष्णके गर्भ भाद्रशुक्लमें बरसते हैं १० फाल्गुन शुक्लके गर्भ भाद्रपद कृष्णमें बरसते हैं फाल्गुन कृष्णके गर्भ आश्विन शुक्ल में प्रसव होते हैं ११ चैत्र शुक्ल के गर्भ आश्विन कृष्णमें वर्षा करते हैं । औ चैत्रकृष्ण मेंहुये गर्भ कार्तिक शुक्लमें बरसते हैं १२ ॥

पूर्वोद्भूताःपश्चादपरोत्थाःप्राग्भवन्तिजीमूताः ॥
शेषास्वपिदिक्ष्वेवंविपर्ययोभवतिवायोश्च १३ ॥

गर्भ के समय जो मेघ पूर्व दिशामें होयँ वे प्रसव के समय पश्चिम दिशा में होते हैं औ जो गर्भके समय पश्चिम होयँ वे प्रसवकेसमय पूर्व में होकर बरसते हैं और दिशाओंमें भी इसीभांति व्यत्यय समझना चाहिये। औ पवनका भी व्यत्यय होताहै अर्थात् गर्भके समय पूर्वका वायुचलता होय तो प्रसव के समय पश्चिमका चलैगा ऐसेही और भी जानो १३ ॥

मृदुरुदक्शिवशक्रादिग्भवोमारुतोवियद्विमलम् ॥ स्निग्धसितबहुलपरिवेषपरिवृतौहिममयूखाऽर्कौ १४ पृथुबहुलस्निग्धघनंघनसूचीक्षुरकलोहिताभ्रयुतम् ॥ काकाण्डमेचकाभंवियद्विशुद्धेन्दुनक्षत्रम् १५ सुरचापमन्द्रगर्जितविद्युत्प्रतिसूर्यकाशुभासंध्या ॥ शा

शिशिवशक्राशास्थाःशान्तरवाःपक्षिमृगसंघाः १६ विपुलाःप्रदक्षिण चराःस्निग्धमयूखाग्रहानिरुपसर्गाः॥ तरवश्चनिरुपसृष्टांऽकुरानर चतुष्पदाहृष्टाः १७ गर्भाणांपुष्टिकराःसर्वेषामेवयोत्रतुविशेषः॥ स्वर्तु स्वभावजनितोगर्भविवृद्धौतमभिधास्ये १८॥

गर्भके समय ऐसे लक्षण होयँ तो शुभ होते हैं। आह्लादको करनेवालामन्दमन्द पवन उत्तर ईशान अथवा पूर्व दिशाका चलै। आकाश निर्मलहोय चन्द्रमा औ सूर्य स्निग्ध शुक्लवर्ण औ बड़े परिवेष अर्थात् कुण्डलसे घिरेहोयँ १४ औ बड़े औ बहुत स्निग्धमेघोंकरके युक्त आकाश होय। मेघकी सूचीसीबन जाय अथवा क्षुरक अर्थात् उसतरेके समान औ लालरंग के मेघों से आकाश युक्त होय। काक के अंडे के समान आकाश का अति नीलवर्ण होय। अथवा मयूर के चंद्रवे समान आकाश का वर्ण होय औ आकाश में चन्द्रमा औ नक्षत्र निर्मल होयँ १५ इन्द्रधनुष मेघ का गंभीर गर्जना विजली चमकनाप्रति सूर्य अर्थात् दूसरे सूर्यका देखपड़ना ये सब लक्षण संध्यामें होयँ तो वहसंध्या शुभ होती है। पक्षी औ मृगोंके समूह उत्तर ईशान औ पूर्व दिशामें स्थित होयँ औ शांतरव अर्थात् मधुरस्वर बोलें औ सूर्यकी ओर मुख न कियेहोयँ १६ ग्रह विंब बड़े देख पड़े नक्षत्रों के उत्तर ओर होकर गमन करैं निर्मल किरण होयँ। औ उत्पातसे रहित होयँ वृक्षभी निरुपद्रव अंकुरोंकरके युक्तहोयँ मनुष्य औ पशु प्रसन्नहोयँ १७ येसब गुण गर्भोंकी पुष्टिकरनेवाले हैं ये सबलक्षण मार्गशीर्ष शुक्लप्रतिपदासे लेकर वैशाख समाप्तितक देखना चाहिये। इस गर्भ लक्षण में अपने ऋतुके स्वभावसे उत्पन्न जोगर्भ वृद्धिकेलिये विशेषहै उसको भी हम कहते हैं १८॥

पौषेसमार्गशीर्षेसन्ध्यारागोऽम्बुदाःसपरिवेषाः॥ नात्यर्थंमृगशीर्षेशीतंपौषेतिहिमपातः १९ माघेप्रबलोवायुस्तुषारकलुषद्युतीरविशशाङ्कौ॥ अतिशीतंसघनस्यचभानोरस्तोदयौधन्यौ २० फाल्गुनमासेरूक्षश्चण्डःपवनोऽभ्रसंप्लवाःस्निग्धाः॥ परिवेषाश्चासकलाः कपिलस्ताम्रोरविश्चशुभः २१ पवनघनवृष्टियुक्ताश्चैत्रेगर्भाःशुभाः सपरिवेषाः॥ घनपवनसलिलविद्युत्स्तनितैश्चहितायवैशाखे २२॥

मार्गशीर्ष औ पौषमें सन्ध्याका लालरंग परिवेष करके सहित मेघ मार्गशीर्ष में बहुत शीत न पड़ै औ पौषमें बहुत हिम अर्थात् वर्फ न गिरै तो शुभ होताहै १९माघमें प्रचण्डपवनचलै सूर्य औ चन्द्रमा तुषार अर्थात् कुहरेकरके मलिन कान्तिरहैं शीत बहुतहोय बादल से ढकेहुये सूर्यका उदय औ अस्त

होय तो शुभहोताहै २० फाल्गुन में प्रचण्ड औ रूखा पवन चले स्निग्ध मेघ आकाशमें उठें सूर्य चन्द्रके परिवेष खण्डित होयँ सूर्य कपिलवर्ण होयँ अथवा ताम्रवर्ण होयँ तो शुभ होताहै २१ चैत्रमहीनेके गर्भ पवन मेघवर्षा औ परिवेष करके युक्तहोयँ तो शुभ होतेहैं। वैशाख में मेघ पवनवर्षा बिजली औ बादल का गर्जना इनकरके युक्तगर्भ शुभ होते हैं २२ ॥

मुक्तारजतनिकाशास्तमालनीलोत्पलांऽजनाभासः॥ जलचरसत्वाकारागर्भेषुघनाःप्रभूतजलाः २३ तीव्रदिवाकरकिरणाऽभितापितामन्दमारुताजलदाः॥रुषिताइवधाराभिर्विसृजन्त्यम्भःप्रसवकाले २४

जो मेघ गर्भकेसमय मोती औ चांदीके समान अति शुक्लवर्ण होयँ अथवा तमालवृक्ष नीलकमल औ अंजनके समान अति कृष्णवर्णहोयँ मत्स्य मकर कूर्म शिशुमार आदि जलजन्तुओंके समान जिनके आकारहोयँ ऐसे मेघ प्रसव के समय बहुतजल बरसते हैं २३ जो मेघ गर्भकेसमय सूर्यके प्रचण्ड किरणों करके तापितहोयँ औ उस समय पवन थोड़ाचले वेमेघ प्रसवके समय क्रोधसे मानों धाराओंकरके जल बरसते हैं अर्थात् अतिवृष्टि करते हैं २४ ॥

गर्भोपघातलिङ्गान्युल्काऽशनिपांशुपातदिग्दाहाः॥ क्षितिकम्पखपुरकीलककेतुग्रहयुद्धनिर्घाताः २५ रुधिरादिवृष्टिवैकृतपरिघेन्द्रधनूंपिदर्शनंराहोः॥ इत्युत्पातैरेभिस्त्रिविधैश्चान्यैर्हतोगर्भः २६ ॥

अब गर्भके नाश होजानेके चिह्न कहते हैं। गर्भके समय उल्कागिरै बिजली गिरे पांशुवर्षाहोय दिग्दाह होय भूकंप होय गन्धर्व नगर देख पड़े सूर्य मण्डल में तामस कीलक देख पड़ें धूमकेतु का उदय होय ग्रह युद्ध होय निर्घात शब्दहोय २५ रुधिर आदिकी विकृत वर्षा होय परिघ अर्थात् उदय के समय तिरछी मेघरेखा सूर्य के ऊपर हो औ इन्द्रधनुष देख पड़े ग्रहण होय इन सब उत्पातों करके और भी जो तीन प्रकारके उत्पात दिव्य आन्तरिक्ष औ भौम हैं उनके होनेसे गर्भ नष्ट होजाता है अर्थात् प्रसव के समय वे मेघ नहीं बरसते २६ ॥

स्वर्तुस्वभावजनितैःसामान्यैर्यैश्चलक्षणैर्वृद्धिः॥
गर्भाणांविपरीतैस्तैरेवविपर्ययोभवति २७॥

अपने ऋतु स्वभाव से उत्पन्न जो गर्भ लक्षण [पौषेसमार्गशीर्ष] इत्यादि है औ सामान्य लक्षण जो [ह्लादिमृदुदक्] इत्यादि इनकरके गर्भों कीवृद्धि कही है परन्तु ये लक्षण विपरीत होजायँ तो गर्भ में विपर्यय अर्थात् हानि होती है २७॥

भद्रपदाद्वयविश्वाम्बुदेवपैतामहेष्वथर्क्षेषु ॥
सर्वेष्वृतुषुविवृद्धोगर्भोबहुतोयदोभवति २८ ॥

पूर्वाभाद्रपदा उत्तराभाद्रपदा उत्तराषाढा पूर्वाषाढा औ रोहिणी इन पांच नक्षत्रों में (पौषेसमार्गशीर्षे) इत्यादि लक्षणों करके सब ऋतुओं में अर्थात् चाहे जिसऋतु में जो गर्भ वृद्धिको प्राप्तहुआहो वह बहुत बरसताहै २८ ॥

शतभिषगाश्लेषार्द्रास्वातिमघासंयुतःशुभोगर्भः ॥
पुष्णातिबहून्दिवसान्हन्त्युत्पातैर्हतस्त्रिविधैः २९ ॥

शतभिषक् आश्लेषा आर्द्रा स्वाती औ मघा इन नक्षत्रों में गर्भ होय तो शुभ होताहै और बहुत दिनतक पूर्वोक्त निमित्तोंसे पुष्टिको प्राप्त होताहै औ दिव्य भौम आन्तरिक्ष इन तीनप्रकार के उत्पातों करके हतहुआ गर्भ अपना नाश करता है। अर्थात् जितने दिन उत्पातों करके गर्भ हत होय उतने दिन तक नहीं बरसता २९ ॥

मृगमासादिष्वष्टौषट्षोडशविंशतिश्चतुर्युक्ता ॥
विंशतिरथदिवसत्रयमेकतमर्क्षेणपञ्चभ्यः ३० ॥

पूर्वोक्त पूर्वाभाद्रपदा आदि नक्षत्रों में मार्गशीर्ष मासआदि महीनों में जो गर्भ वृद्धिको प्राप्त होय उसके बरसने के दिनोंकी संख्या क्रमसे कहते हैं। मार्गशीर्ष में जो गर्भ वृद्धिको प्राप्तहोय वह साढे छः महीने के अनन्तर आठ दिन तक बरसता है। पौष महीने का गर्भ छः दिन माघका सोलह दिन फाल्गुनका चौबीस दिन चैत्र का बीस दिन औ वैशाख मास में पूर्वोक्त नक्षत्रों के बीच जो गर्भ पुष्टहुआ होय वह प्रसव के समय तीन दिन बरसताहै इसी प्रकार शतभिषक् आदि जो पांचनक्षत्रकहे उनमें किसी एकनक्षत्रमें गर्भकी वृद्धि होय तो बरसनेके दिनों की संख्याजानो ३० ॥

क्रूरग्रहसंयुक्तेकरकाऽशनिमत्स्यवर्षदागर्भाः ॥
शशिनिरवौवाशुभसंयुतेक्षितेभूरिवृष्टिकराः ३१ ॥

जिस नक्षत्रमें गर्भ होय वह नक्षत्र क्रूरग्रहयुक्त होय तो बरसनेके समय ओलेपड़ें बिजलीगिरै औ जलकेसाथ मत्स्य बरसें उसनक्षत्रपर चन्द्रमा अथवा सूर्य बैठेहोयँ औ शुभग्रहों करके युक्त अथवा दृष्ट होयँ तो बहुतवर्षाकरते हैं ३१ ॥

गर्भसमयेऽतिवृष्टिर्गर्भाभावायनिर्निमित्तकृता ॥
द्रोणाष्टांशाभ्यधिकेवृष्टेगर्भःस्रुतोभवति ३२ ॥

गर्भ के समय जो बिनाकारण अतिवृष्टि होजाय तो गर्भका नाशहोजाता है। ग्रहों के उदय अस्त राशि बदलना इत्यादि अति वृष्टि के कारण आगे

भ्युपेतः ॥ विसृजतियदितोयंगर्भकालेतिभूरिप्रसवसमयमित्वाशीक शम्भःकरोति ३७ ॥

इतिश्रीवराहमिहिरकृतौवृहत्संहितायांगर्भलक्षणं
नामैकविंशोऽध्यायः २१ ॥

पवन जलविजली गर्जना औ मेघ इन पांच रूपों करके जो गर्भ युक्त होय वह बहुतजल वरसताहै ऐसा गर्भ जो गर्भके समयही बहुत वरसजाय तो प्रसवके समय जलकी बूंद वरसताहै अर्थात् अति स्वल्प वर्षा करताहै ३७॥

श्रीवराहमिहिराचार्यकीबनाईवृहत्संहितामेंगर्भलक्षणनाम
इक्कीसवांअध्यायसमाप्तहुआ २१ ॥

बाईसवांअध्याय ॥

गर्भधारणा ॥

ज्येष्ठसितेऽष्टम्याद्याश्चत्वारोवायुधारणादिवसाः ॥
मृदुशुभपवनाःशस्ताःस्निग्धघनस्थगितगगनाश्च १ ॥

ज्येष्ठ शुक्लपक्षमें अष्टमीसे लेकर चारदिन वायुधारण हैं अर्थात् वायु करके धारण कियेजाते हैं उनमें प्रसवनहीं होता। उनचारदिनों में मंद औ उत्तम पवनहोय औ स्निग्धमेघोंसे आकाशढकारहे तो शुभहोताहै १ ॥

तत्रैवस्वात्याद्येष्वष्टेभचतुष्टयेक्रमान्मासाः ॥
श्रावणपूर्वाज्ञेयाःपरिस्रुताधारणास्ताःस्युः २ ॥

ज्येष्ठ शुक्लपक्षमेंही स्वाती आदि चारनक्षत्रों में वृष्टिहोनेसे श्रावण आदि चार महीने क्रमसे जानने कि धारणा परिस्रुत होगई अर्थात् वर्षा न होगी। यहतात्पर्य है कि ज्येष्ठ शुक्ल में स्वाति नक्षत्रमें वर्षा होय तो श्रावणमें वर्षा नहीं होती विशाखामें वर्षाहोय तो भाद्रमें बर्षा नहीं होती इसीभांति अनुराधा औ ज्येष्ठामें वर्षा होनेसे आश्विन औ कार्तिक में क्रम से वर्षा नहीं होती २ ॥

यदिताःस्युरेकरूपाःशुभास्ततःसान्तरास्तुनशिवाय ॥
तस्करभयदाःप्रोक्ताःश्लोकाश्चाप्यत्रवासिष्ठाः ३ ॥

वेचारों धारणा अर्थात् अष्टमी आदि चारों दिन जो एकजैसे वीतजाय तो शुभहोतेहैं औ उनचार दिनोंमें कुछन्यून अधिकहोय तो शुभ नहीं होते औ चोर भयहोताहै। इसअर्थ वसिष्ठमुनिने जो श्लोक कहेहैं उनको लिखते हैं ३ ॥

सविद्युतःसपृषतःसपांशूत्करमारुताः ॥ सार्कचन्द्रपरिच्छन्नाधा रणाःशुभधारणाः ४ यदातुविद्युतःश्रेष्ठाःशुभाशाप्रत्युपस्थिताः ॥ त दापिसर्वसस्यानांवृद्धिंब्रूयाद्विचक्षणः ५ सपांशुवर्षाःसापश्चशुभावा

लक्षिथाअपि ॥ पक्षिणांसुस्वरावाचःक्रीड़ापांशुजलादिषु ६ रविच न्द्रपरीवेषाःस्निग्धानात्यन्तदूषिताः ॥ वृष्टिस्तदाऽपिविज्ञेयासर्वस स्याऽभिवृद्धये ७ मेघाःस्निग्धाःसंगताश्चप्रदक्षिणगतिक्रियाः ॥ त दास्यान्महतीवृष्टिःसर्वसस्यार्थसाधिका ८ ॥

इतिश्रीवराहमिहिरकृतौबृहत्संहितायांगर्भधारणानामद्वाविंशोऽध्यायः २२ ॥

विजली जल के विंदु धूलिको उड़ाता हुआ पवन औ सूर्य चंद्रका वादलों में ढकेरहना ये सव वातेंहोयँ तो धारणा शुभहोती है ४ जो उत्तम विजलीशुभ दिशा अर्थात् उत्तर ईशान औ पूर्वमें चमकें तोभी वुद्धिमान् पुरुषसव खेतियों की वृद्धिकहै ५ उन चार दिनोंमें धूलिकी वर्षाहोय जलवृष्टि होय वालकशुभ खेल खेलें पक्षी मधुरवोली वोलें धूलि जलआदि में पक्षीक्रीड़ा करें ६ सूर्य चंद्रको स्निग्ध औअच्छे परिवेष होयँ तोभी सवखेतियोंकी वृद्धिकरनेवाली वर्षाहोगी ऐसाजानना चाहिये ७ उनचार दिनोंमें स्निग्धगहरे औ प्रदक्षिणग-मनकरनेवाले वादलहोयँ अर्थात् पूर्वमेंहोयँ औ दक्षिणको जायँ दक्षिणसे प-श्चिमको पश्चिमसे उत्तरको औ उत्तरसे पूर्वको गमनकरें तो सव खेतियोंको साधनकरनेवाली वड़ी वर्षा होती है ८ ॥

श्रीवराहमिहिराचार्यकीवनाईवृहत्संहितामेंगर्भधारणानाम
वाईसवांअध्यायसमाप्तहुआ २२ ॥

तेईसवां अध्याय ॥

प्रवर्षण ॥

ज्येष्ठ्यांसमतीतायांपूर्वाषाढादिसंप्रवृष्टेन ॥
शुभमशुभंवावाच्यंपरिमाणंचाम्भसस्तज्ज्ञैः १ ॥

ज्येष्ठकी पूर्णमासी के अनन्तर पूर्वाषाढ़ा आदि किसी नक्षत्र में पहिली वर्षा होय उससे शुभ अशुभ फल औ जलका तोल वुद्धिमान् पुरुषोंकोकहना चाहिये १ ॥

हस्तविशालंकुण्डकमधिकृत्याम्वुप्रमाणनिर्देशः ॥
पञ्चाशत्पलमाढकमनेनमिनुयाज्जलंपतितम् २ ॥

एक हाथलंवा औ एकहाथ चौड़ा कुंडवनाकर वर्षाका आरम्भ होतेही वर्षामें रख देवै वर्षा होजानेके अनन्तर उसकुण्डके जल को तोलकर वर्षाके जलका परिमाणकहे। पचासपल का एकआढ़क होता है इससे वर्षा के जल को नापे २ ॥

येनधरित्रीमुद्राजनितावाविन्दवस्तृणाग्रेषु ॥

वृष्टेनतेनवाच्यंपरिमाणंवारिणःप्रथमम् ३ ॥

जिस वर्षासे भूमिपर मुद्राहोजाय अर्थात् धूलिदबजाय अथवा तृणों को अग्रोंपर जल के विंदु ठहरजाय। उसपूर्वाषाढा आदि नक्षत्रमें हुई पहिली वर्षासे जलका परिमाण कहना चाहिये। पूर्वाषाढा आदि जिस नक्षत्रमें पहिले वर्षण होय उसी नक्षत्रसे जल का प्रमाण कहना दूसरे नक्षत्रसे नहीं गर्भभी हुयेहोयँ धारणा भी हुईहोय परन्तु जो इस पूर्वाषाढा आदि प्रवर्षणकाल में वर्षा न होय तो प्रसव के समय वर्षा नहीं होती ॥ इस में और मत कहते हैं ३ ॥

केचिद्यथाभिवृष्टंदशयोजनमण्डलंवदन्त्यन्ये ॥
गर्गवसिष्ठपराशरमतमेतद्द्वादशाद्यपरम् ४ ॥

कोई कश्यप आदि मुनिकहते हैं कि इसप्रवर्षण कालमें चाहे जैसी वर्षा होजाय तो आगे वर्षाकालमें उत्तमवृष्टि होती है। कोई देवलआदि मुनिकहते हैं कि इस प्रवर्षण काल में चाहे जहां दशयोजनके मंडल में वर्षा होजाय तो वर्षाकाल में अच्छी वर्षा होती है। औ गर्ग पराशर औ वसिष्ठमुनिका यहमत है कि प्रवर्षण कालमें बारहयोजनके मंडल में वर्षाहोय तो आगे वर्षाकाल में उत्तम वर्षा होती है इससे न्यूनबरसनेसे उत्तम वर्षा नहीं होती ४ ॥

येषुचभेष्वभिवृष्टंभूयस्तेष्वेववर्षतिप्रायः ॥
यदिनाप्याद्विषुवृष्टंसर्वेषुतदात्वनावृष्टिः ५ ॥

इसप्रवर्षण कालमें पूर्वाषाढाआदि जिस २ नक्षत्रमें वर्षाहोय आगे प्रसव कालमें उसी २ नक्षत्रमें प्रायः फिर वर्षाहोतीहै। जो ज्येष्ठ पूर्णिमाके अनंतर पूर्वाषाढा आदि सत्ताईसो नक्षत्रों में वर्षा न होय तो आगे प्रसवकालमें वर्षा होतीही नहीं है ५ ॥

हस्ताप्यसौम्यचित्रापौष्णधनिष्ठासुषोडशद्रोणाः॥शतभिषगैन्द्रस्वातिषुचत्वारःकृत्तिकासुदश ६ श्रवणमघानुराधाभरणीमूलेषुदशचतुर्युक्ताः॥ फाल्गुन्यांपञ्चकृतिःपुनर्वसौविंशतिर्द्रोणाः ७ ऐन्द्राग्न्याख्येवैश्वेचविंशतिःसार्पेदशत्र्यधिकाः॥ आहिर्बुध्न्याऽर्यम्णप्राजापत्येषुपञ्चकृतिः८पञ्चदशाऽजेपुष्येचकीर्तितावाजिभेदशद्वौच॥ रौद्रेऽष्टादशकथिताद्रोणानिरुपद्रवेष्वेषु ९ ॥

हस्त पूर्वाषाढा मृगशिरा चित्रा रेवती औ धनिष्ठा इननक्षत्रों में से प्रवर्षण कालमें किसी नक्षत्रमें वर्षा होय तो प्रसवकालमें सोलहद्रोण जलबरसता है अर्थात् एक हाथ लंबे चौडे कुंड में सोलह द्रोण जल इकट्ठा होताहै।

सुवर्णकी शिलाओं के समूहमें जो छिद्र उनमें उत्पन्नहुये वृक्षों के पुष्पों में बैठे भ्रमर जिसमें गुंजार कररहे हैं वहुतसे पक्षियोंकेकलह औ देवांगणाओं के गीतोंके गंभीर शब्दोंकरके युक्त जो सुमेरु पर्वतके शिखर पर उपवन उसमें बैठकर बृहस्पतिने नारदमुनिको रोहिणीके साथ चन्द्रकायोगहोनेसे जो शुभाशुभ फलहोते हैं उनकोकहा औ गर्ग पराशर काश्यप औ मयासुरनेभी अपने२ शिष्योंके समूहको वेहीफलकहे १ । २ उनसबकोदेखकर स्वल्प ग्रंथकरके अर्थात् बहुत संक्षेपसे हम भी रोहिणी औ चन्द्रके योगके शुभाशुभफल कहने केलिये उद्यत हुयेहैं ३ ॥

प्राजेशमाषाढतमिस्रपक्षे क्षपाकरेणोपगतंसमीक्ष्य॥ वक्तव्यमिष्टंजगतोऽशुभंवाशास्त्रोपदेशाद्ग्रहचिन्तकेन ४ योगोयथानागत एववाच्यःसधिष्ण्ययोगःकरणेमयोक्तः ॥ चन्द्रप्रमाणद्युतिवर्णमार्गै रुत्पातवातैश्चफलंनिगद्यम् ५ ॥

आषाढ कृष्ण पक्ष में रोहिणी नक्षत्रको चन्द्रमा के साथ युक्तहुआ देख जगत् का शुभ अथवा अशुभ शास्त्रके उपदेशसे ज्योतिषीको कहनाचाहिये ४ चन्द्रका औ रोहिणी नक्षत्र का योग पहिलेही से जिस प्रकार कहसकते हैं। वह प्रकार हमने पंचसिद्धांतिका नाम अपने करण ग्रंथके भग्रह युत्यधिकार में कहाहै यहां केवलफलही कहतेहैं। चन्द्रबिंबकाप्रमाण कांतिशुक्ल आदिवर्ण मार्ग अर्थात् पूर्व आदि कौनसी दिशामें चन्द्रमा स्थित है उससमयके उत्पात औ पवन इनसबबातोंको देखज्योतिषीको शुभाशुभ फल कहना चाहिये ५ ॥

पुरादुदग्यत्पुरतोपिवास्थलंत्र्यहोषितस्तत्रहुताशतत्परः ॥ ग्रहान्सनक्षत्रगणान्समालिखेत्सधूपपुष्पैर्बलिभिश्चपूजयत् ६ सरत्नतोयौषधिभिश्चतुर्दिशंतरुप्रवालाऽपिहितैःसुपूजितैः॥ अकालमूलैःकलशैरलंकृतंकुशास्तृतंस्थण्डिलमावसेद्द्विजः ७ ॥

नगरसे उत्तर अथवा पूर्वदिशामें जो उत्तमस्थल हो वहां ब्राह्मण अर्थात् ज्योतिषी जाकर तीनदिन रहै औ हवन करतारहै। अश्विनी आदि नक्षत्रों सहित सूर्य आदि नवग्रह लिखकर धूपदीप औ बलि करके उनका पूजन करै ६ फिरपद्मराग आदिरत्न जल औ अनेक प्रकारकी ओषधियों करके युक्त आम्र आदि वृक्षों के कोमलपत्रों से ढकेहुये चन्दन अक्षत आदिसे पूजित औ अकाल मूल अर्थात् जिनकी पेंदी कालीन होयँ ऐसे कलशों करके चारों दिशाओं में शोभित औ कुशाजिसमें बिछरही होयँ ऐसे स्थंडिलपर ब्राह्मण अधिवासन करै अर्थात् रात्रिके समय शयनकरै ७ ॥

आलभ्यमन्त्रेणमहाव्रतेनबीजानिसर्वाणिनिधायकुम्भे ॥

ढ्याानिचामीकरदर्भतोयैर्होमोमरुद्वारुणसौम्यमन्त्रैः ८॥

सवप्रकारके वीजों को महाव्रतनामक मन्त्रसे अभिमन्त्रणकर कलशमें डालै औ सुवर्ण औ कुशायुक्त जलसे उनको प्लावितकरै औ वायु वरुण औ चन्द्रमा के मन्त्रसे होमकरै ८॥

श्लक्ष्णांपताकामसितांविदध्याद्दण्डप्रमाणांत्रिगुणोच्छ्रितां च॥
प्रागुक्तेदिग्ग्रहणेनभस्वान्ग्राह्यस्तयायोगगतेशशाङ्के ९॥

पहिले आठों दिशादिकसाधनकी रीतिसे साधनकर वारह हाथऊंचे वांस पर चारहाथ लंबी सूक्ष्म वस्त्रकी काले रंगकी ध्वजा लगाय वीच में खड़ीकरै फिरजवरोहिणी परचन्द्रमा आवे उससमय उस ध्वजा से पवनको देखे कि किसदिशा से पवन आता है औ किधर जाता है ९॥

तत्रार्द्धमासाःप्रहरैर्विकल्प्यावर्षानिमित्तंदिवसास्तदंशैः॥
सव्येनगच्छञ्छुभदःसदैवयस्मिन्प्रतिष्ठाबलवान्सवायुः १०॥

उसरोहिणी योगमें वर्षाकाज्ञान होनेकेलिये प्रहरों करके अर्द्धमास अर्थात् पक्षोंका विचारकरै। यहतात्पर्य है कि जिस अहोरात्रमें रोहिणी से चन्द्रमा का योगहोय उसदिन सूर्योदयसे लेकर पहर २ में देखै। जो पहिले पहरमें शुभपवनहोय तो श्रावणके प्रथम पक्षमें अच्छी वर्षाहोय जो अशुभ पवनहोय तो उसपक्षमें वर्षा न होय। दूसरे पहरके पवनसे श्रावण के दूसरेपक्षकी वर्षा जानै। इसीप्रकार दिनरातके आठपहरों के पवनसे श्रावणसे कार्तिक पर्यंत चारमहीनोंके आठपक्षोंकी वर्षाजानै। औ पहरके अंश करके पक्षके पंद्रहदिनोंकी वर्षाजानै। अर्थात् आधे पहर के पवनसे पक्षके आधे साढ़ेसातदिनोंकी वर्षाको विचारै इसीप्रकार और भी भागकरके प्रत्येक दिनकी वर्षा जानलेवै। (तत्राऽत्रमासाः प्रहरैर्विकल्प्याः) ऐसाभीपाठ है इसका यह अर्थ है कि उस दिनके चार पहरोंके पवन से श्रावण आदि चार महीनोंकी वर्षाजानना औ एकप्रहरके तीसभाग कर महीने तीसों दिनों की वर्षा जानै। पवनजोप्रदक्षिण गमनकरै तो सदा शुभहोता है पूर्वसे दक्षिणको दक्षिणसे पश्चिमको इत्यादि क्रमसे चले तो प्रदक्षिण गमन कहाताहै। वायु जिस दिशामें वहुतकाल ठहरे उसीको वलवान् समझै अर्थात् उसी वायु से शुभाशुभ विचारकरै जो एकवार किसी ओर चलगयाहो उसका कुछ विचार नहीं १०॥

वृत्तेतुयोगेऽङ्कुरितानियानिसन्तीहवीजानिधृतानिकुम्भे॥
येषांतुयोंऽशोऽङ्कुरितस्तदंशस्तेषांविवृद्धिं समुपैतिनान्यः ११॥

रोहिणी योगहोजाने के अनंतर देखै कि कुम्भमें पहिले जो वीजरक्खेथे उनमें जो २ वीज अंकुरितहुयेहों वेही उस वर्षमें होतेहैं जिनमें अंकुर न नि-

फलाहो उनकी उत्पत्ति उसवर्षमें नहींहोती। उनबीजों काभी जो भाग अंकु-रितहुआहो वही उनका भाग वृद्धिको प्राप्तहोता है और भागनहीं ११॥

शान्तपक्षिमृगराविताद्दिशोनिर्मलंवियदनिन्दितोऽनिलः॥
शस्यतेशशिनिरोहिणीयुतेमेघमारुतफलानिवच्म्यतः १२॥

रोहिणी का चन्द्रमा से योगहोय उस समय शांत अर्थात् सूर्यके ओर मुख न करके पक्षी औ मृग मधुर शब्दकरें उनके शब्दोंसे दिशा शब्दायमान हो रहीहों। आकाश निर्मलहोय पवन उत्तम चलताहोय तो शुभ होता है अब मेघ औ पवन के फल कहते हैं १२॥

क्वचिदसितसितैःसितैःक्वचिच्चक्वचिदसितैर्भुजगैरिवाम्बुवाहैः॥ वलितजठरपृष्ठमात्रदृश्यैःस्फुरिततडिद्रसनैर्वृतंविशालैः १३ विकसितकमलोदरावदातैररुणकरद्युतिरञ्जितोपकण्ठैः। छुरितमिववियद्घनैर्विचित्रैर्मधुकरकुंकुमकिंशुकावदातैः १४॥

ऐसे बडे २ मेघोंसे उससमय आकाश व्याप्तहोय कि जो मेघ कहीं तो श्वेत कृष्ण कहीं केवल श्वेत कहीं केवल कृष्णवर्णहोयँ जैसे कुंडली मारकर सर्पवैठे हों कि जिनकीपीठ औ पेटदेख पड़ताहो। चमकतीहुई विजली जिनकी जिह्वा है १३ प्रफुल्लकमल पुष्पके मध्यकी भांति जिन मेघोंका शुद्धवर्णहोय। सूर्य के किरणोंसे जिनके समीपभाग रक्तवर्ण होरहेहों औ भ्रमर केसर औ टेसूके फूल के समान वर्ण जो अनेक प्रकारके मेघउनकरके आकाश रंजित होरहाहो १४॥

असितघननिरुद्धमेववाचालितताडित्सुरचापचित्रितम्॥
द्विपमहिषकुलाकुलीकृतंवनमिवदावपरीतमम्वरम् १५॥

अथवा कृष्णवर्णके मेघोंसे व्याप्त औ चमकतीहुई विजली औ इन्द्रधनुष करके विचित्रहुआ आकाश देखपड़ै मानों हाथी औ जंगली भैंसोंसे भराहुआ वन दावानलकरके व्याप्त होरहाहै १५॥

अथवाऽञ्जनशैलशिलानिचयप्रतिरूपधरैःस्थगितंगगनम्॥
हिममौक्तिकशङ्खशशाङ्ककरद्युतिहारिभिरम्बुधरैरथवा १६॥

अंजन पर्वतकी शिलाओं के समूह का रूपधारनेवाले मेघों करके आकाश व्याप्तहो अथवा वरफ मोती शंख औ चन्द्र किरणोंके समान कांतिधारनेवाले अति शुक्लवर्ण मेघोंसे आकाश भराहोय १६॥

तडिद्धेमकक्षैर्बलाकाग्रदन्तैःस्रवद्वारिदानैश्चलत्प्रान्तहस्तैः॥
विचित्रेंद्रचापध्वजोच्छ्रायशोभैस्तमालालिनीलैर्वृतंचाब्दनागैः १७॥

मेघरूप जो हाथी उनकरके आकाश व्याप्तहोय। बिजलीही जिन मेघरूप

स्थैर्वातवृष्टिःक्वचिद्यपुष्टावृष्टिःसौम्यकाष्ठासमुत्थैः ॥ श्रेष्ठंसस्यंस्थाणुदिक्संप्रवृद्धैर्वायुश्चैवंदिक्षुधत्तेफलानि २४ ॥

पूर्व दिशाके मेघहोयँ तो खेती अच्छीहोती है। अग्निकोण के मेघहोयँ तो अग्निकोप होताहै अर्थात् बहुत आगलगतीहै। दक्षिणके मेघोंसे खेतीकानाश होताहै। नैर्ऋत्यकोण के मेघहोयँ तो आधीखेती का क्षयहोता है। पश्चिमके मेघहोयँ तो उत्तमवृष्टि होतीहै २३ वायव्य कोणके मेघहोयँ तो पवनयुक्तवर्षा कहीं २ होय उत्तर दिशाके मेघहोयँ तो बहुत वर्षा होय। ईशान कोणके मेघ होयँ तो खेती बहुत अच्छी होय। उस समय जिसदिशाका पवनचलै उसका फलभी इसीके तुल्य जानना चाहिये २४ ॥

उल्कानिपातास्तडितोऽशनिश्चदिग्दाहनिर्घातमहीप्रकम्पाः ॥
नादामृगाणांसपतत्रिणांचग्राह्यायथैवाऽम्बुधरास्तथैव २५ ॥

उल्काका गिरना बिजली अशनि दिग्दाह निर्घात भूकम्प (इनसबकेलक्षणआगेकहेंगे) पक्षी औ मृगोंके शब्द इनसबका फलभी मेघोंके फलके समान जानना। अर्थात् इनमेंसे कोईबात उससमय जिसदिशा में होय उस दिशाके मेघोंका जो फलकहा वहीफल उसका भी जानो २५ ॥

नामाङ्कितैस्तैरुदगादिकुम्भैःप्रदक्षिणंश्रावणमासपूर्वैः ॥
पूर्णैःसमासःसलिलस्यदातासुस्रुतैरवृष्टिःपरिकल्प्यमूनैः २६॥

उत्तर दिशाआदिमें स्थापित जो चारकलश उनके प्रदक्षिण क्रमसे श्रावण मासआदि नामरक्खे हैं अर्थात् उत्तर दिशाका कलश श्रावण पूर्वका भाद्रपद दक्षिणका आश्विन औ पश्चिमका कार्तिकमासहै। जिस महीने का कलश जलसे भरारहे उस महीनेमें उत्तमवर्षा होती है चारोंभरे रहें तो चारों महीने बरसतेहैं जिस कलशका जलटपकजाय उस महीनेमें वर्षानहींहोती। जितना जल न्यूनहोजाय उतनीही वर्षा की न्यूनता अनुपातसे जाननी चाहिये २६ ॥

अन्यैश्चकुम्भैर्नृपनामचिह्नैर्देशाऽङ्कितैश्चाप्यपरैस्तथैव ॥
भग्नैःस्रुतैर्न्यूनजलैःसुपूर्णैर्भाग्यानिवाच्यानियथानुरूपम् २७ ॥

और भी बहुतसे कलशराजाओं के औ देशोंके नामके स्थापनकर और दूसरे दिन देखने चाहिये कलशफूटजाय उसकाजलटपकजाय न्यूनजलहोजाय अथवाजलसे पूर्णकलशरहे उसके अनुसार उनराजाओं के औ देशों के भाग्य जानने चाहिये। जिसके नामकाकलशपूर्णरहै उसको शुभफल होता है। फूट जाय तो नाशहोताहै। सबजल निकलजाय तो उपद्रवहोता है थोड़ा जल निकल जाय तो मध्यमफलहोता है २७ ॥

दूरगोनिकटगोथवाशशी दक्षिणेपथियथातथास्थितः ॥
रोहिणींयदियुनक्तिसर्वथाकष्टमेवजगतोविनिर्दिशेत् २८ ॥

दक्षिणकी ओरदूर स्थितहोकर अथवासमीप स्थितहोकरचाहे जिस प्रकार करके रोहिणी नक्षत्रसे चन्द्रमायोगकरे तो जगत्को सबप्रकारका कष्टकहना चाहिये। अर्थात् रोहिणीकी दक्षिणादिशामें चन्द्र है तो दुर्भिक्षमरी आदिसे जगत् में कष्टहोय २८ ॥

स्पृशन्नुदग्यातियदाशशाङ्कस्तदासुवृष्टिर्बहुलोपसर्गा ॥
असंस्पृशन्योगमुदक्समेतःकरोतिवृष्टिंविपुलांशिवंच २९ ॥

रोहिणीको स्पर्शकरताहुआ चन्द्रमा जो उत्तरकी ओर होकरजाय तो अनेक उपद्रवों के सहित अच्छी वर्षा होती है। जो चन्द्रमा रोहिणी को स्पर्शकिये विना उसके उत्तरकी ओर से गमनकरै तो बहुत वर्षाहोय औ जगत् में सबप्रकारसे कल्याणरहे २९ ॥

रोहिणीशकटमध्यसंस्थिते चन्द्रमस्यशरणीकृताजनाः ॥
क्वापियान्तिशिशुयाचिताशनाःसूर्यतप्तपिठराऽम्बुपायिनः ३० ॥

रोहिणि नक्षत्रके जो आकाशमें शकटके आकार पांचताराहैं उनको रोहिणी शकट कहते हैं। जो चन्द्रमा रोहिणी शकटके मध्यभागमें स्थित होय तो सब मनुष्य शरणहीन होकर अपने देश छोड़कहीं चलेजातेहैं उनके भूखे बालक उनसे भोजन मांगतेहैं अर्थात् अन्न दुर्लभ होजाताहै औ वेसब सूर्यकरके तपा-वाहांडीमें जो थोड़ासा जलउसको पीतेहैं अर्थात् जलभी दुर्लभहोता है ३० ॥

उदितंयदिशीतदीधितिंप्रथमंपृष्ठतएतिरोहिणी ॥
शुभमेवतदास्मरातुराःप्रमदाःकामिवशेचसंस्थिताः ३१ ॥

पहिले चन्द्रमा का उदय होय औ पीछे रोहिणी उदयहोकर चन्द्रमा केपीछे २ गमन करे तो शुभ फल होता है औ सब स्त्री कामातुर होकर पुरुषों के वशमें रहती हैं ३१ ॥

अनुगच्छतिपृष्ठतःशशीयदिकामीवनितामिवप्रियाम् ॥
मकरध्वजबाणखेदिताःप्रमदानांवशगास्तदानराः ३२ ॥

पहिले रोहिणी उदयहोय औ पीछे उसके चन्द्रमा उदयहोकर गमनकरै जिस भांति कामी पुरुष अपनी प्रिया नारी के पीछे चलता है। तोकामदेव के वाणों से विद्धपुरुष नारियोंके वशमें रहते हैं ३२ ॥

आग्नेयांदिशिचन्द्रमायदिभवेत्तत्रोपसर्गोमहान्नैर्ऋत्यांसमुपद्रुता निनिधनसस्यानियान्तीतिभिः॥प्राजेश्याऽनिलदिक्स्थितेहिमकरेस

स्यस्यमध्यइचयोयातिस्थाणुदिशंगुणाःसुबहवःसस्यार्थवृद्धयादयः ३३

रोहिणी नक्षत्र से अग्निकोण में चन्द्रमा रहै तो बड़ा उपद्रव होता है। नैर्ऋत्यकोणमें चन्द्रमा होय तो अति वृष्टि अनावृष्टि आदि जोई तिउन करके उपद्रवको प्राप्त हुई खेती नाशको प्राप्तहोती है। वायव्य कोणमें चन्द्रमाहोय तो खेती का चय अर्थात् संग्रह मध्यम होताहै। औ रोहिणी नक्षत्रसे चन्द्रमा ईशान कोणमें होय तो खेती धन वर्षाआदि बहुत गुणहोते हैं। [सस्यार्घ वृद्धयादयः] ऐसा भी पाठहै इसका अर्थ है कि खेती अच्छीहोय औ अर्घ अर्थात् सब वस्तुके भावकी वृद्धिहोय ३३॥

ताडयेद्यदिचयोगतारकामावृणोतिवपुषायदापिवा ॥
ताडनेभयमुशन्तिदारुणंछादनेनृपवधोङ्गनाकृतः ३४ ॥

नक्षत्रके सबताराओंमें जो तारा बहुत तेजकरके युक्तहो उसको योगतारा कहते हैं। जो रोहिणी को योग तारा को चन्द्रमा ताड़न करै अर्थात् अपने शृंगसे योग तारा को स्पर्श करै। अथवा अपने शरीरकरके चन्द्रमा उस योग ताराको ढकलेवै। तो ताड़नकरनेसे प्रजामें दारुण भयहोता है औ ढकलेने से स्त्री के हाथसे राजाका मृत्यु होता है ३४॥

गोप्रवेशसमयेग्रतोवृषोयातिकृष्णपशुरेववापुरः ॥
भूरिवारिशवलेतुमध्यमंनोसितेम्बुपरिकल्पनापरैः ३५ ॥

सायंकाल के समय गौ बनसे चरकर आवें औ ग्राममें प्रवेशकरें उससमय उनके आगे बैलहोय अथवाकाले रंगका पशु बकरा आदि उनके आगे२चले तो बहुत बर्षाहोय शवल अर्थात् श्वेत औ कृष्ण इनदोनों रंगोंका पशु आगेहोय तो मध्यम वर्षा होय। शुक्लवर्णका पशु आगेहोय तो वर्षा न होय। इसी भांति और रंगके पशुओंमेंभी कल्पना करनी चाहिये अर्थात् शुक्लरंग उसपशुमें अधिक होगा तो वर्षा न्यूनहोगी कृष्णवर्णअधिक होगा तो वर्षाबहुतहोगी ३५॥

दृश्यतेनयदिरोहिणीयुतश्चन्द्रमानभसितोयदावृते ॥
रुग्भयंमहदुपस्थितंतदाभूश्चभूरिजलसस्यसंयुता ३६ ॥

इतिश्रीवराहमिहिरकृतौबृहत्संहितायांरोहिणीयोगो
नामचतुर्विंशोऽध्यायः २४ ॥

जो मेघों से घिरेहुये आकाशमें रोहिणीयुक्त चन्द्रमा न देखपड़े तो बड़ा भारी रोगका भय आताहै औ भूमि बहुत जल औ खेती करकेयुक्त होतीहै ३६॥

श्रीवराहमिहिराचार्यकीबनाईबृहत्संहितामेंरोहिणीयोगनामक
चौबीसवांअध्यायसमाप्तहुआ २४ ॥

पचीसवांअध्याय ॥

स्वातियोग ॥

यद्रोहिणीयोगफलंतदेवस्वातावषाढासहितेचचन्द्रे ॥
आषाढशुक्लेनिखिलंविचिन्त्यंयोऽस्मिन्विशेषस्तमहंप्रवक्ष्ये १॥

रोहिणी चन्द्रमाके योगका जोफल कहा वहसब आषाढ शुक्लपक्षमेंस्वाती औ उत्तराषाढासे जब चन्द्रमायोग करै उससमयभी विचारना चाहिये अब स्वातियोगमें जो विशेषहै उसको हमकहते हैं १ ॥

स्वातौनिशांशेप्रथमेऽभिवृष्टेसस्यानिसर्वाण्युपयांतिवृद्धिम्॥ भागेद्वितीयेतिलमुद्गमाषाग्रीष्मंतृतीयेऽस्तिनशारदानि २ वृष्टेह्निभागेप्रथमेसुवृष्टिस्तद्वद्द्वितीयेतुसकीटसर्पा ॥ वृष्टिस्तुमध्यापरभागवृष्टेनिश्छिद्रवृष्टिर्द्युनिशंप्रवृष्टे ३ ॥

जिस रात्रिको चन्द्रका स्वातिसे योगहोय उस रात्रिके तीन भागकरके फल देखै जो पहिले भागमें वर्षाहोय तो सबखेती वृद्धिको प्राप्तहोय । दूसरे भागमें वर्षाहोय तो तिलमूंग औ उड़दबहुतहोयँ तीसरे भागमें वर्षाहोय तो ग्रीष्मऋतुका अन्न यव गेहूं आदिहोय औ शरदऋतुका अन्नज्वार बाजराउड़द मूंगआदि नहीं होय २ इसीभांति दिनके पहिले भागमें वर्षाहोय तो आगेउत्तम वर्षाहोय । दूसरे भागमें वर्षाहोय तो भी आगे उत्तम वर्षाहोय परन्तु कीड़े औ सर्पों सहितवर्षा आगेहोय तीसरे भागमें वर्षा होय तो आगे मध्यम वर्षा होय औ दिन रात निरंतर वर्षा होती रहे तो आगे सब उपद्रवोंसे रहित बहुत अच्छी वर्षाहोय ३ ॥

समुत्तरेणताराचित्रायाःकीर्त्यतेह्यपांवत्सः ॥
तस्यासन्नेचन्द्रेस्वातेर्योगःशिवोभवति ४ ॥

चित्राके नक्षत्रके समसूत्रठीक उत्तरमें अपांवत्सनामक एकतारा है जो चंद्रमाउसताराके समीपस्थितहोयतो स्वातीसे चंद्रकायोग शुभहोताहै ४ ॥

सप्तम्यांस्वातियोगेयदिपततिहिमंमाघमासान्धकारेवायुर्वाचण्डयोगःसजलजलधरोवापिगर्जत्यजस्रम् ॥ विद्युन्मालाकुलंवायदिभवतिनभोनष्टचन्द्रार्कतारं विज्ञेयाप्रावृडेषामुदितजनपदासर्वसस्यैरुपेता ५ ॥

माघ महीनेके कृष्णपक्षमें सप्तमीतिथिको स्वातियोगमें बरफगिरै अथवा प्रचंड पवनचले जलयुक्त मेघ वारंवारगरजै आकाश बिजलियोंकी पंक्तिसेआकलहोय अर्थात् सब आकाशमें बहुत बिजली चमकें औ चंद्र सूर्यऔ तारा

न देखपड़ें अर्थात् बादलमें ढकेरहें तोवर्षाऋतु अच्छाहोताहै सब देश आनन्द में रहते हैं औसबखेती अच्छी होती हैं ५ ॥

तथैवफाल्गुनेचैत्रेवैशाखस्यासितेपिवा ॥
स्वातियोगंविजानीयादाषाढ़ेचविशेषतः ६ ॥

इतिश्रीवराहमिहिरकृतौबृहत्संहितायांस्वातियोगोनामपंचविंशोऽध्यायः २५ ॥

इसभांति फाल्गुन चैत्र औ वैशाखके कृष्णपक्ष में भी स्वातियोगकाविचार करै परन्तु आषाढ़में विशेषकरके स्वातियोग देखै। यहश्लोकक्षेपकहै ६ ॥

श्रीवराहमिहिराचार्यकीबनाईबृहत्संहितामेंस्वातियोग नामकपच्चीसवांअध्यायसमाप्तहुआ २५ ॥

छब्बीसवांअध्याय ॥

आषाढ़ीयोग ॥

आषाढ्यांसमतुलिताऽधिवासितानामन्येद्युर्यदधिकतामुपैतिबीजम्
तद्वृद्धिर्भवतिनजायतेयदूनंमंत्रोऽस्मिन्भवतितुलाभिमंत्रणाय १ ॥

उत्तराषाढ़ा नक्षत्रयुक्त आषाढ़की पूर्णिमाको भी रोहिणी योग की भांति सब विचारकरै। इसमें विशेषकृत्ययहहै कि सबबीजोंको बराबर तोलकरलेवै औ उनका अधिवासनकरै अर्थात् मंत्रसे अभिमंत्रणकर एकरात्रिभररक्खै दूसरे दिन फिर उनको तोलै जो बीज तोलमें बढ़जाय उसकी उसवर्षमें वृद्धि होती है औ जोबीज तोलमें घटजाय वहउस वर्षमें नहीं उत्पन्नहोता बीजतोलनेकी तखड़ीको अभिमंत्रणकरनेके लिये जोमंत्रहैं उनको कहते हैं १ ॥

स्तोतव्यामंत्रयोगेनसत्यादेवीसरस्वती॥दर्शयिष्यसियत्सत्यंसत्ये सत्यव्रताह्यसि२येनसत्येनचंद्रार्कौग्रहाज्योतिर्गणास्तथा॥उत्तिष्ठन्ती हपूर्वेणपश्चादस्तंव्रजन्तिच ३ यत्सत्यंसर्वदेवेषुयत्सत्यंब्रह्मवादिषु॥ यत्सत्यंत्रिषुलोकेषुतत्सत्यमिहदृश्यताम् ४ ब्रह्मणोदुहितासित्वमा दित्येतिप्रकीर्तिता ॥ काश्यपीगोत्रतश्चैवनामतोविश्रुतातुला ५ ॥

इनपांचों मन्त्रोंसे तखड़ीको अभिमंत्रणकर सबबीज तोलने चाहिये ५॥

क्षौमंचतुःसूत्रकसन्निबद्धंषडंगुलांशिक्यकवस्त्रमस्याः ॥
सूत्रप्रमाणंचदशांगुलानिषडेवकक्षोभयशिक्यमध्ये ६ ॥

उसतखड़ीके दोनों शिक्यक वस्त्र अर्थात् पलड़े छः अंगुल विस्तारके असली के कपड़ेके औ चार सूत्रोंमें बँधेबनावे। उनचार सूत्रोंका प्रमाण दश २ अंगुल चाहिये औ दोनों पलड़ोंके बीचकी कक्षा अर्थात् जिसडोरीको पकड़कर तखड़ी उठाते हैं वह छः अंगुललम्बी बनावै ६ ॥

याम्येशिक्येकाञ्चनंसन्निवेश्यंशेषद्रव्याण्युत्तरेऽम्बूनिचैवम् ॥
तोयैःकौप्यैःस्पन्दिभिःसारसैश्चवृष्टिर्हीनामध्यमाचोत्तमा च ७ दन्तै
र्नागागोहयाद्याश्चलोम्नाहेम्नाभूपाःसिक्थकेनद्विजाद्याः ॥ तद्वद्देशा
वर्षमासादिशश्चशेषद्रव्याण्यात्मरूपस्थितानि ८ ॥

सोना तोलना होय तो दक्षिण के पलड़े में रखकर तोलना औ शेष सब वस्तु औ जल उत्तरके पलड़ेमें तोलने चाहिये । कुएंकाजल तोलमें बधै तो थोड़ी वर्षाहोय भरनेका जल बधै तो मध्यम वर्षाहोय सरोवर का जलबधै तो उत्तम वर्षा होय सबजल बधैं तो बहुत वर्षा होय औ कोई भी न बधै तो वर्षा न होय ७ हाथीदांतके तोलसे हाथी रोमोंके तोलसे गौ घोड़े आदि पशु सुवर्ण के तोलसे राजा मोमसे ब्राह्मणआदि वर्ण वर्ष महीने औ आठों दिशा औ शेष वस्तुओं को अपने २ तोलसे घटती बढ़ती जानै । इसी प्रकार सब वस्तुओं की हानि वृद्धि तोलसे जाने ८ ॥

हैमीप्रधानारजतेनमध्या तयोरलाभेखदिरेणकार्या ॥
विद्धःपुमान्येनशरेणसावा तुलाप्रमाणेनभवेद्वितस्तिः ९ ॥

सोनेकी तखड़ी उत्तम औ चांदीकी मध्यम होतीहै जो ये दोनों न बनसकैं तो खदिर के काष्ठकी तुलाबनावे । अथवा जिस बाणसे कोई मनुष्य बिंधाहो उस बाणकी तखड़ी बनावै । तखड़ीकी डंडीकी लम्बाई एक वितस्ति अर्थात् बारह अंगुल रखनी चाहिये ९ ॥

हीनस्यनाशोऽभ्यधिकस्यवृद्धिस्तुल्येनतुल्यंतुलितंतुलायाम् ॥
एतत्तुलाकोशरहस्यमुक्तंप्राजेशयोगेपिनरोविदध्यात् १० ॥

जो वस्तु तोलमें घटे उसका नाश औ जो बढ़ै उसकी वृद्धि होती औ न घटै न बढ़ै उसकी हानिवृद्धि नहींहोती । यह तुला कोशका रहस्य हमने कहा है इसको रोहिणीयोगमें भी मनुष्य करके देखै १० ॥

स्वातावषाढास्वथरोहिणीषु पापग्रहायोगगतानशस्ताः ॥
ग्राह्यंतुयोगद्वयमप्युपोष्ययदाधिमासोद्विगुणीकरोति ११ ॥

स्वाती उत्तराषाढ़ा औ रोहिणी इनतीन नक्षत्रों से चन्द्रके योगहोने के समय जो भौम शनिराहु औ केतु ये पापग्रह भी इननक्षत्रों पर बैठेहोंय तो शुभनहीं होते । अर्थात् बुध शुक्र औ बृहस्पति ये शुभग्रह होयँ तो अच्छे होते हैं । जो अधिक मास होने से दो आषाढ़ होजायँ तो उपवास रखकर दोनों महीनों में इनयोगोंका विचारकरै अर्थात् अधिकमासमें भी इनयोगोंको पूर्व रीति से देखै ११ ॥

अयोऽपियोगाःसदृशाःफलेनयदातदावाच्यमसंशयेन ॥
विपर्ययेयत्त्विहरोहिणीजंफलंतदेवाऽभ्यधिकंनिगद्यम् १२ ॥

जो रोहिणी योग स्वातियोग औ आषाढ़ीयोग ये तीनोंफल में तुल्य आवें अर्थात् तीनोंका फल शुभ आजाय अथवा तीनोंका अशुभ आवै तो निस्सन्देह होकर शुभ अथवा अशुभफलकहदेना । जो इन तीनोंके फलों में भेदरहे तो रोहिणीका जो फलहोय वही विशेषकरके कहना चाहिये १२ ॥

निष्पत्तिरग्निकोपोवृष्टिर्मन्दाथमध्यमाश्रेष्ठा ॥
बहुजलपवनापुष्टाशुभाचपूर्वादिभिःपवनैः १३ ॥

आषाढ़ी पूर्णिमाको पूर्वका पवन चलै तो खेती अच्छी पकै अग्निकोण का पवन चलै तो अग्नि लगै दक्षिणका चलै तो स्वल्प वर्षा होय नैर्ऋत्य कोण का पवन होय तो मध्यमवर्षा होय पश्चिमका पवन चलै तो उत्तम वर्षा होय वायव्य कोणका पवन होय तो बहुत जल औ पवनयुक्त वर्षा होय । उत्तरका पवन चलै तो पुष्ट अर्थात् बहुत वर्षा होय औ ईशान कोणका पवन चलने से शुभ वर्षा होती है १३ ॥

वृत्तायामाषाढ्यांकृष्णचतुर्थ्यामजैकपादर्क्षे ॥
यदिवर्षतिपर्जन्यःप्रावृट्शस्तानचेन्नततः १४ ॥

आषाढ़ी पूर्णिमा के अनन्तर कृष्णचतुर्थी को उत्तराभाद्रपदा नक्षत्र में वर्षा होजाय तो आगे वर्षाऋतु उत्तम होता है जो उसदिन न बरसै तो अच्छा नहीं १४ ॥ यह आर्या क्षेपक है ॥

आषाढ्यांपौर्णमास्यांतुयद्यैशानोऽनिलोभवेत् ॥
अस्तंगच्छतितीक्ष्णांशौसस्यसम्पत्तिरुत्तमा १५ ॥

इतिश्रीवराहमिहिरकृतौबृहत्संहितायामाषाढ़ी
योगोनामषड्विंशोऽध्यायः २६ ॥

आषाढ़ी पूर्णिमा के दिन सूर्यास्तके समय जो ईशान कोणका पवनचलै तो खेती बहुत अच्छी होती है यह श्लोक भी क्षेपक है १५ ॥

श्रीवराहमिहिराचार्यकी बनाईबृहत्संहितामेंआषाढ़ी
योगनामकछब्बीसवांअध्यायसमाप्तहुआ २६ ॥

सत्ताईसवांअध्याय ॥

वातचक्र ॥

पूर्वःपूर्वसमुद्रवीचिशिखरप्रस्फालनाघूर्णितश्चन्द्रार्कांशुसटाक
लापकलितोवायुर्यदाकाशतः ॥ नैकान्तस्थितनीलमेघपटलाशार

चसंवर्द्धिता वासन्तोत्कटसस्यमण्डिततलासर्वामहीशोभते १ ॥

आषाढ़ी पूर्णिमा को सूर्यास्त के समय जो आकाश से पूर्वसमुद्रके तरंगों के अग्रोंका ताड़न करने से घूमताहुआ औ सूर्य चन्द्र के किरण समूह से मिश्रित ऐसा आकाशसे पूर्वदिशाका पवनचले तो बहुतसे नीलवर्ण के मेघ समूहोंसे युक्त शरदृऋतु की खेती करके समृद्ध औ वसन्तऋतु की उत्तम खेतीसे भूषित सबभूमि शोभित होतीहै १ ॥

यदावह्नौवायुर्वहतिगगनेऽखण्डिततनुःछनत्यस्मिन्योगेभगवति पतंगेप्रवसति ॥ तदानित्योद्दीप्ताज्वलनशिखरालिङ्गिततलास्व गात्रोष्मोच्छ्वासैर्वमतिवसुधाभस्मनिकरम् २ ॥

इस आषाढ़ी पूर्णिमा के योगपर सूर्य के अस्तहोनेके समय जो आकाश में अखण्डित पवन अग्निकोणकाचले तो अग्नि की ज्वालाओं करके व्याप्त औ निरन्तर जलतीहुई भूमि अपने शरीरकी ऊष्मारूप जो श्वास उनकरके भस्म के समूहको वमन करतीहै। अर्थात् अग्निका बहुत उपद्रव होताहै २ ॥

तालीरत्नलतावितानतरुभिः शाखामृगाञ्नर्तयन्योगेऽस्मिन्प्लव निध्वनिःसुपुरुषोवायुर्यदादक्षिणः ॥ तद्वद्योगसमुत्थितस्तुगजवत्ता त्तांऽकुशैर्वद्धिताःकीनाशाइवमन्दवारिकणिकामुञ्चन्तिमेघास्तदा३॥

इस आषाढ़ी योग में सूर्यास्त के समय ताल वृक्षलताओं के समूह और भी वृक्षों के कम्पित करने से वानरों को नचाता हुआ दक्षिणदिशाका पवन चले औ उसी योग में बहुत रूखा पवन का शब्दहोय तो एकप्रकार के अं-कुश से ताड़ित हाथीकी भांति अथवा कृपण मनुष्यकी भांति मेघ भी थोड़ी २ जलकी बूंद बरसते हैं ३ ॥

सूक्ष्मैलालवलीलवङ्गनिचयान्व्याघूर्णयन्सागरे भानोरस्तम येछलत्यविरतोवायुर्यदानैर्ऋतः ॥ क्षुत्तृष्णाहतमानुषास्थिशकलप्र स्तारभारच्छदा मत्ताप्रेतवधूरिवोग्रचपलाभूमिस्तदालक्ष्यते ४ ॥

आषाढ़ी पूर्णिमाको सूर्यास्त के समय जो समुद्रकेकिनारे छोटी इलाची लवली औ लवंगलताओं के समूहों को हिलाताहुआ नैर्ऋत्यकोणका पवन चले तो क्षुधा तृषा से मरे मनुष्यों की हड्डियों के टुकड़ों का समूहरूप वस्त्र ओढ़े भूमि भयंकर औ चंचल मत्त प्रेत वधूसी देखपड़ती है ४ ॥

यदावारुणःपातेःप्रविचलसटाटोपचपलः प्रवातःपश्चा[illegible]कर करापातसमये ॥ तदासस्योपेताप्रवरनिकरावद्धसमरा[illegible]स्था नेस्थानेसुविरतवसामांसरुधिरा ५ ॥

सूर्यास्तके समय धूलिके उड़ने करके अत्यन्त चलायमान जो सटा अर्थात् केसर उनका जो आक्षेप उसकरके चंचल पश्चिम दिशाका पवनचले तो भूमि खेती करके युक्तरहै। औ प्रधान मनुष्यों के समूहोंका स्थान २ में युद्ध होय औ निरन्तर वसा मांस औ रुधिर करके भूमि व्याप्त रहै ५॥

आषाढ़ीपर्वकालेयदिकिरणपतेरस्तकालोपपत्तौवायव्योवृद्धवेगःप्लवतिघनरिपुःपन्नगादानुकारी ॥ जानीयाद्वारिधाराप्रमुदितमुदितामुक्तमण्डूककण्ठांसस्योद्भासैकचिह्नासुखबहुलतया भाग्यसेनामिवोर्वीम् ६॥

आषाढ़ी पूर्णिमा के सूर्यास्त के समय गरुड़के तुल्य वेगवान् प्रचण्डपवन वायव्यकोणका चलै तो जलकीधारा से हर्षको प्राप्त मुदित आमुक्त अर्थात् खुले हैं दादुरों के कंठ जिससे औ खेतीकी वृद्धिही है एक चिह्न जिसमें ऐसी भूमि बहुत सुखहोनेसे भाग्यकी सेनासी देखपड़े यहजानै ६॥

मेरुग्रस्तमरीचिमण्डलतलेग्रीष्मावसानेरवावत्यामोदिकदम्बगन्धसुरभिर्वायुर्यदाचोत्तरः ॥ विद्युद्भ्रान्तिसमस्तकान्तिकलनामत्तास्तदातोयदाउन्मत्ताइवनष्टचन्द्रकिरणांगांपूरयन्त्यम्बुभिः ७॥

आषाढ़ी पूर्णिमाको सूर्यास्तके समय अति सुगन्धयुक्त कदम्ब पुष्पोंकरके सुगन्धित उत्तरका पवनचले तो बिजलीका भ्रमण औ सम्पूर्ण कांतिका जो आकार ज्ञान उसमें उद्यमयुक्त ऐसे मेघ उन्मत्त से होकर बादलों में छिपे हैं चन्द्रकिरण जिसमें ऐसी भूमिको जलसे पूर्ण करते हैं ७॥

ऐशानीयदिशीतलोमरगणैःसंसेव्यमानोभवेत् पुन्नागाऽगरुपारिजातरुरुभिर्वायुःप्रचण्डध्वनिः ॥ आपूर्णोदकयौवनावसुमतीसंपन्नसस्याकुला धर्मिष्ठाःप्रणतारयोनृपतयोरक्षन्तिवर्णांस्तदा ८॥

इतिश्रीवराहमिहिरकृतौबृहत्संहितायांवातचक्रंनामसप्तविंशोऽध्यायः २७॥

आषाढ़ी पूर्णिमाको सूर्यास्त समय जो देवताओंकरके सेवित नागकेसर अगरु औ पारिजात के पुष्पों के गन्ध से सुगन्धित औ प्रचण्ड शब्द करता हुआ ईशानकोणका पवनचले तो पूर्णजलका है यौवन जिसमें ऐसी भूमि पकीहुई खेतीसे भरजाती है औ धर्मात्मा औ शत्रुओं करके प्रणत राजा ब्राह्मणआदि चारोंवर्णोंकी रक्षा करते हैं ८॥

पहिले अध्याय में (निष्पत्तिरग्निकोपः) इत्यादि श्लोक में आषाढ़ी पूर्णिमा को आठोंदिशा के पवनका फल वराहमिहिराचार्य ने कहदिया

फिर नहीफल कहनेकीस्या अपेक्षाथी इसलिये यहवात चक्राध्याय वराहमिहिरका बनाया नहीं किसीने पीछेसे बनाकर मिलायाहै ९ ॥

श्रीवराहमिहिराचार्यकीवनाईवृहत्संहितामें वातचक्र नामसत्ताईसवांअध्यायसमाप्तहुआ २७ ॥

अट्ठाईसवांअध्याय ॥

सद्योवृष्टिलक्षण ॥

वर्षाप्रश्नेसलिलनिलयेराशिमाश्रित्यचन्द्रो लग्नंयातोभवतिय दिवाकेन्द्रगःशुक्लपक्षे ॥ सौम्यैर्दृष्टःप्रचुरमुदकंपापदृष्टोऽल्पमम्भःप्रा वृट्कालेसृजतिनचिराच्चन्द्रवद्भार्गवोऽपि १ ॥

कृष्णपक्षमें कोई वर्षाका प्रश्नकरे उससमय जलचरराशि अर्थात् कर्क मकर अथवा मीनमें बैठकर चन्द्रमा लग्नमेंपड़े औ शुक्लपक्षमें जलचरराशि में बैठकर चन्द्रमा किसी केंद्रमें पड़े औ वर्षाऋतु होय तो शीघ्रही वर्षा होती है। चन्द्रमाको शुभग्रह देखतेहोयँ तो बहुतवर्षा औ पापग्रह देखते होयँ तो थोड़ीवर्षा होती है। चन्द्रकी भांति शुक्रसे भी वर्षाका विचारकरै १ ॥

आर्द्रद्रव्यंस्पृशतियदिवावारितत्संज्ञकंवातोयासन्नोभवतियदि वातोयकार्योन्मुखोवा ॥ प्रष्टावाच्यःसलिलमचिरादस्तिनिस्संशयेन पृच्छाकालेसलिलमितिवाश्रूयतेयत्रशब्दः २ ॥

वर्षाका प्रश्न पूछनेवाला पुरुष गीलेद्रव्यको स्पर्शकरे जलको स्पर्श करै जलके तुल्य जिनके नाम ऐसी वस्तुको स्पर्शकरे जलके समीप स्थित होय अथवा जलसम्बन्धी कार्य करने के लिये उन्मुख होय तो यह कहना चाहिये कि बहुत शीघ्र निस्संदेह वर्षाहोगी । अथवा प्रश्नके समय जल ऐसा शब्द किसी ओर सुनपड़े तोभी बहुत शीघ्र वर्षाहोगी यह कहै २ ॥

उदयशिखरिसंस्थोदुर्निरीक्ष्योऽतिदीप्त्याद्रुतकनकनिकाशःस्नि ग्धवैदूर्यकान्तिः ॥ तदहनिकुरुतेऽम्भस्तोयकालेविवस्वान्प्रतपति यदिवाच्चैःखंगतोऽतीवतीक्ष्णम् ३ ॥

उदयाचल पर्वत के ऊपर स्थित अर्थात् उदयके समय सूर्य अति दीप्ति करके दुर्निरीक्ष्यहोय अर्थात् जिसके सम्मुख न देख सकैं। गलायेहुये सुवर्णके समान अथवा निर्मल वैदूर्य मणिके तुल्य उसकी कान्तिहोय वर्षाऋतुमें ऐसा सूर्य जिसदिन देखपड़ै उसीदिन वर्षा करताहै । अथवा आकाशके मध्यमें प्राप्त होकर सूर्य अति तीक्ष्णतपै तो भी उसीदिन वर्षाहोय ३ ॥

विरसमुदकंगोनेत्राभंवियद्विमलादिशोलवणविकृतिःकाकाण्डा

भंयदाचभवेन्नभः ॥ पवनविगमःपोप्लूयन्तेझषाःस्थलगामिनोरस नमसकृन्मण्डूकानांजलागमहेतवः ४ ॥

जलका स्वादजातारहे गौके नेत्रके समान आकाशका रंगहोय दिशा निर्मलहोयँ लवणमें विकार होय अर्थात् पात्रमें रक्खा हुआ लवण पसीजने लगे आकाशका रंग काकके अण्डके रङ्ग के तुल्य होय। पवन चलनेसे रुकजाय पानी से मच्छी उछलकर किनारेपर गिरैं। बारम्बार दादुरबोलें ये सब लक्षण वर्षाके हैं। अर्थात् इनमें से कोई बात होय तो वर्षा शीघ्रही आती है ४ ॥

मार्जाराभृशमवनिंनखैर्लिखन्तोलोहानांमलनिचयःसविस्रगन्धः ॥ रथ्यायांशिशुनिचिताश्चसेतुबन्धाःसंप्राप्तंजलमचिरान्निवेदयन्ति५।

बिल्लियें अपने नखों करके बारंबार भूमिको लिखैं लोहके शस्त्रपात्र आदि पर मैल जमजाय जिससें कच्चा दुर्गन्ध आवै। गलियों के बीच बालक बंध बांधै इन सब बातोंके होने से वर्षा शीघ्र आती है ५ ॥

गिरयोऽञ्जनपुञ्जसन्निभायदिवावाष्पनिरुद्धकन्दराः ॥
कृकवाकुविलोचनोपमाःपरिवेषाःशशिनश्चवृष्टिदाः६ ॥

पर्वतोंकावर्ण अंजनके समूहके तुल्य अति नीलवर्णहो औ पर्वतों की कंदरा धुंवसे भरजायँ कुक्कुट नेत्र के समान अति रक्तवर्ण परिवेष चन्द्रमाको होय तो शीघ्र वर्षा होती है ६ ॥

विनोपघातेनपिपीलकानामण्डोपसंक्रान्तिरहिव्यवायः ॥
द्रुमाधिरोहश्चभुजंगमानांवृष्टेर्निमित्तानिगवांप्लुतंच ७॥

विना किसी उपद्रवके चींटी अपने अंडोंको एक स्थानसे उठाकर दूसरे स्थानपर लेजायँ सर्प मैथुनकरैं सर्प वृक्षोंपर चढ़ैं गौकूदैं येसव शीघ्र वृष्टिहोने केकारण हैं ७ ॥

तरुशिखरोपगताःकृकलासागगनतलस्थितदृष्टिनिपाताः ॥
यदिचगवांरविवीक्षणमूर्ध्वंनिपततिवारितदानचिरेण ८ ॥

कृकलास अर्थात् गिरगिट वृक्षके अग्रपर स्थितहोयँ औ आकाशकी ओर देखें गौ ऊपर सूर्यकी ओर देखें तौ बहुतशीघ्र वर्षा होय ८ ॥

नेच्छन्तिविनिर्गमंगृहाद्धुन्वन्तिश्रवणान्खुरानपि ॥
पशवःपशुवच्चकुक्कुरायद्यम्भःपततीतिनिर्दिशेत् ९ ॥

गौ भैंस आदि पशु घरके बाहर निकलना न चाहैं कान औ खुरोंको धूनन करैं अर्थात् कँपावैं। इसीभांति कुत्ते भी घरसे बाहर न जायँ कान औ पैरोंको हिलावैं तो वर्षाहोय यह कहै ९ ॥

यदिस्थितागृहपटलेषुकुक्कुरारुवन्तिवायदिविततंवियन्मुखाः ॥
दिवातडिद्यदिचपिनाकिदिग्भवातदाक्ष्माभवतिसमातिवारिणा १०॥

घरकी छत्तोंपर बैठकर आकाशकी ओर मुख करके कुत्ते बहुत रोवैं दिनमें ईशानकोणकी बिजली चमकें तो पृथिवी जलसे पूर्णहोजाय अर्थात् अतिवृष्टि होय १० ॥

शुककपोतविलोचनसन्निभोमधुनिभश्चयदाहिमदीधितिः ॥
प्रतिशशीचयदादिविराजतेपततिवारितदानचिराद्दिवः ११ ॥

तोते औ कबूतर के नेत्र के समान लाल रंग चन्द्रमा का होय अथवा शहद के समान रंगहोय आकाशमें दूसरा चंद्रमा देखपड़े तोभी आकाश से शीघ्रही जलबरसै ११ ॥

स्तनितंनिशिविद्युतोदिवारुधिरनिभायदिदण्डवत्स्थिताः ॥
पवनःपुरतश्चशीतलोयदिसलिलस्यतदागमोभवेत् १२ ॥

रात्रिको बादल गरजे दिनमें अति रक्तवर्ण बिजली दण्डके तुल्यसीधीदेख पड़ैं। पूर्व दिशा का शीतलपवनचलै तोवर्षा शीघ्रही होय १२ ॥

वल्लीनांगगनतलोन्मुखाःप्रवालाःस्नायन्तेयदिजलपांशुभिर्विहङ्गाः॥
सेवन्तेयदिचसरीसृपास्तृणाग्राण्यासन्नोभवतितदाजलस्यपातः १३

बेलोंके पत्ते आकाशकी ओर उंचे होजायँ जल अथवा धूलिकरके पखेरू स्नानकरैं सरीसृप अर्थात् सर्प आदि कीड़े तृणोंके अग्रभागपर चढ़कर बैठें तो शीघ्र वर्षाहोय १३ ॥

मयूरशुकचापचातकसमानवर्णायदा जपाकुसुमपङ्कजद्युतिमुखश्चसन्ध्याघनाः ॥ जलोर्मिनगनक्रकच्छपवराहमीनोपमाः प्रभूतपुटसंचयानतुचिरेणयच्छन्त्यपः १४ ॥

मोर तोता चाप अर्थात् नीलकंठ पक्षी औ चातक पक्षी इनके समानरंग होयँ जपा पुष्प अथवा कमल पुष्पकी कान्तिको हरैं अर्थात् अति रक्तवर्णहोयँ जलके तरंग पर्वत मगर कछुआ सूकर औ मत्स्योंके समान जिनकी आकृति होयँ औ बहुतसे पुट जिनमें ऊपर नीचे होयँ ऐसेसन्ध्या काल के मेघ बहुत शीघ्रवर्षा करते हैं १४ ॥

पर्जन्येपुसुधाशशांकधवलामध्येऽञ्जनालित्विषःस्निग्धानेकपुटाःक्षरज्जलकणाःसोपानविच्छेदिनः॥माहेंद्रीप्रभवाःप्रयान्त्यपरतःप्राग्वाम्बुपाशाभवा एतेवारिमुचस्त्यजन्तिनचिरादम्भः प्रभूतंभुवि १५ ॥

जो मेघ चारों ओर सुधा अर्थात् कली औ चन्द्रमा के तुल्य शुक्लवर्णहोयँ

औ मध्यमें अंजन अथवा भ्रमर के तुल्य अति श्याम होयँ स्निग्धअनेकपुटों करके युक्तजलके विन्दुओंको टपकतेहुये औ सोपान अर्थात् पैड़ियोंकी भांति बनरहे होयँ पूर्व दिशामें उत्पन्नहोकर पश्चिमको जायँ अथवा पश्चिममें उ-त्पन्नहुये पूर्वको जायँ ऐसे मेघशीघ्रही भूमिपर बहुत वर्षाकरते हैं १५ ॥

शक्रचापपरिघप्रतिसूर्याश्रेहितोऽथतडितःपरिवेषः ॥
उद्गमास्तसमयेयदिभानोरादिशेत्प्रचुरमम्बुतदाशु १६ ॥

सूर्यके उदय होनेके अथवा अस्त होनेके समय इन्द्रधनुष परिघ दूसरा सूर्य रोहित बिजली औ सूर्य चन्द्र को परिवेष ये बातें होयँ तो शीघ्रही बहुत वर्षा होय यह कहै १६ ॥ परिघरोहितआदि का लक्षणआगे कहेंगे ॥

यदितित्तिरिपत्रनिभंगगनंमुदिताःप्रवदन्तिचपक्षिगणाः ॥
उदयास्तमयेसवितुर्द्युनिशं विसृजन्तिघनानचिरेणजलम् १७॥

जो आकाश तीतरके पंखके समान होय अर्थात् मेघके पतले २ औ छोटे२ टुकड़ोंसेभराहो औ पक्षीप्रसन्न होकरशब्दकरैं। यहबात सूर्योदयके समय दिनमें औ सूर्यास्तके समय रात्रिको होयतो शीघ्र वर्षाहोय १७॥ यहक्षेपकश्लोक है ॥

यद्यमोघकिरणाःसहस्रगोरस्तभूधरकराइवोच्छ्रिताः ॥
भूसमेचरमतेयदाऽम्बुदस्तन्महद्भवतिवृष्टिलक्षणम् १८ ॥

सूर्यके अमोघ नामक किरण ऐसे देखपड़ैं मानो अस्त पर्वतके हाथही ऊपरको उठ रहेहैं औ बादल भूमि तक झूमि आवै तो यह बड़ी वर्षा होनेका लक्षण है १८ ॥ अमोघ किरणोंका लक्षण आगे कहेंगे ॥

प्रावृषिशीतकरोभृगुपुत्रात् सप्तमराशिगतःशुभदृष्टः ॥
सूर्यसुतानवपंचमगोवासप्तमगश्चजलागमनाय १९ ॥

वर्षा ऋतुमें शुक्रके सप्तम राशिपर चन्द्रमा होय औ शुभग्रह चन्द्रको देखते होयँ अथवा शनैश्चर से नवम पंचम अथवा सप्तम चन्द्रमाहोय औ उसको शुभग्रह देखते होयँ तो वर्षा होती है १९ ॥

प्रायोग्रहाणामुदयास्तकालेसमागमेमण्डलसंक्रमेच ॥
पक्षक्षयेतीक्ष्णकरायनान्तेवृष्टिर्गतेऽर्केनियमेनचार्द्राम् २० ॥

ग्रहोंके उदय अस्त कालमें समागम अर्थात् चंद्रके साथ भौमआदि ग्रहों का योग होनेके समय औ भरणी आदि नक्षत्रोंके जो छमंडल शुक्रचारमें कहे उनके प्रवेशमें अर्थात् एक मंडलसे ग्रह निकलकर दूसरे मंडलमें प्रवेशकरे इनसब समयों में अमावास्या औ पौर्णमासीके अंतमें दक्षिणायन औ उत्तरा-

षणकी समाप्तिमें प्रायः वर्षाहोती है औ सूर्य आर्द्रा नक्षत्रपर आवे तवतो निश्चयही वर्षा होती है २० ॥

समागमेपततिजलंज्ञशुक्रयोर्ज्ञजीवयोर्गुरुसितयोश्चसङ्गमे ॥
यमारयोःपवनहुताशजंभयंनदृष्टयोरसहितयोश्चसद्ग्रहैः २१ ॥

बुधशुक्रका समागम होय बुध बृहस्पतिका समागमहोय अथवा बृहस्पति शुक्रका समागम होय तो वर्षा होय मंगल औ शनैश्चरका समागम होय औ उनके साथ कोई शुभग्रह न होय औ शुभग्रहकी दृष्टिभी उन पर न होय तो पवन औ अग्नि का भय होताहै २१ ॥

अग्रतः पृष्ठतोवापि ग्रहाःसूर्यावलम्बिनः ॥
यदातदाप्रकुर्वन्ति महीमेकार्णवामिव २२ ॥

इतिश्रीवराहमिहिरकृतौबृहत्संहितायां सद्योवृष्टि लक्षणं नामाऽष्टाविंशोऽध्यायः २८ ॥

सूर्यावलम्बी अर्थात् अस्त होनेकी इच्छावाले ग्रह सूर्यसे आगे अथवा पीछे होवें अर्थात् सूर्यसे पहिले अथवा पीछे अस्तकरें तो भूमिको जलमयी करदेते हैं। मन्दग्रह सूर्यसे आगे औ शीघ्र ग्रह सूर्यसे पीछे अस्तहोतेहैं ॥ यहां [ग्रहाः] पद बहुवचन है इसलिये तीनसे न्यून ग्रह न चाहिये २२ ॥

श्रीवराहमिहिराचार्यकीवनाईबृहत्संहितामेंसद्योवृष्टिलक्षण नामकअट्ठाईसवांअध्यायसमाप्तहुआ ॥ २८ ॥

उन्तीसवांअध्याय ॥

कुसुमलताध्यायः ॥

फलकुसुमसंप्रवृद्धिंवनस्पतीनांविलोक्यविज्ञेयम् ॥
सुलभत्वंद्रव्याणांनिष्पत्तिश्चापिसस्यानाम् १ ॥

वृक्षों के फल औ पुष्पों की वृद्धि को देख सब वस्तुओं की सुलभता औ खेती का निष्पन्न होना जानना चाहिये १ ॥

शालेनकलमशालीरक्ताशोकेनरक्तशालिश्च ॥
पांडूकःक्षीरिकयानीलाशोकेनसूकरकः २ ॥

शालवृक्ष के फल औ पुष्पों की वृद्धिसे कलमशालि की वृद्धिहोती है रक्त अशोक करके रक्तशालि दूधीकरके पाण्डूक औ नील अशोक करके सूकरकीवृद्धिहोतीहै। कलमशालि रक्तशालि पांडूक औ सूकरक ये सब धानके भेद हैं २ ॥

न्यग्रोधेनतुयवकस्तिन्दुकवृद्ध्याचषष्टिकोभवति ॥
अश्वत्थेनज्ञेयानिष्पत्तिःसर्वसस्यानाम् ३ ॥

बड़की वृद्धिसे यवक औ तेंदूकी वृद्धिसे षष्टिक होतेहैं ये भी दोनों धान की जातिहैं। औ पीपलकी वृद्धिसे सब खेतियोंकी वृद्धि जानै ३ ॥

जम्बूभिस्तिलमाषाःशिरीषवृद्ध्याचकंगुनिष्पत्तिः ॥
गोधूमाश्चमधूकैर्यववृद्धिःसप्तपर्णेन ४ ॥

जामुनकी वृद्धिसे तिल औ उड़दोंकी वृद्धि होतीहै सिरसकी वृद्धिसे कांगनी की वृद्धिहोतीहै महुवेसे गेहूं औ सप्तपर्ण वृक्षसे यवकी वृद्धिहोती है ४ ॥

अतिमुक्तककुन्दाभ्यांकर्पासंसर्षपान्वदेदसनैः ॥
बदरीभिश्चकुलत्थांश्चिरबिल्वेनादिशेन्मुद्गान् ५ ॥

अतिमुक्तक औ कुन्द ये दोनों पुष्प वृक्षहैं इनकी वृद्धिसे कपास की वृद्धि होतीहै। असन वृक्षकी वृद्धिसे सरसों की वृद्धि बेरियों की वृद्धिसे कुलथ की वृद्धि औ चिरविल्वनामक वृक्षकी वृद्धिसे मूंगकी वृद्धि होती है ५ ॥

अतसीवेतसपुष्पैःपलाशकुसुमैश्चकोद्रवाज्ञेयाः ॥
तिलकेनशंखमौक्तिकरजतान्यथचेंगुदेनशणः ६ ॥

वेतस वृक्ष के पुष्पोंकी वृद्धि से अलसी की वृद्धि पलाश के पुष्पों करके कोदों तिलक वृक्षकरके शंख मोती औ चांदी की वृद्धि औ इंगुदी वृक्षकी वृद्धि से शणकी वृद्धि होती है ६ ॥

करिणश्चहस्तिकर्णैरादेश्यावाजिनोऽश्वकर्णेन ॥
गावश्चपाटलाभिःकदलीभिरजाविकंभवति ७ ॥

हस्तिकर्ण वृक्षकी वृद्धि से हाथियों की वृद्धि अश्वकर्ण वृक्षकी वृद्धिसेघोड़ों की वृद्धि पाटला वृक्षकी वृद्धिसे गौओं की वृद्धि औ केलोंकी वृद्धि से बकरी औ भेड़ों की वृद्धि होती है ७ ॥

चम्पककुसुमैःकनकंविद्रुमसंपच्चबन्धुजीवेन ॥
कुरवकवृद्ध्यावज्रंवैदूर्यंनन्दिकावर्तैः ८ ॥

चम्पाके फूलों की वृद्धिसे सुवर्णकी वृद्धि बन्धुजीव (गुलदुपहर) पुष्पकी वृद्धि से मूंगेकी वृद्धि कुरवक वृक्षकी वृद्धिसे हीरेकी वृद्धि औ नन्दिका वर्त पुष्पकी वृद्धि से वैदूर्यरत्नकी वृद्धि होती है ८ ॥

विन्द्याच्चसिन्दुवारेणमौक्तिकंकारुकान्कुसुम्भेन ॥
रक्तोत्पलेनराजामन्त्रीनीलोत्पलेनोक्तः ९ ॥

सिन्दवार वृक्षकी वृद्धिसे मोती की वृद्धि कुसुंभकी वृद्धिसे कारुक अर्थात् शिल्प जाननेवालोंकी वृद्धि रक्तकमल की वृद्धिसे राजाओंकी वृद्धि औ नील कमल से राजा के मंत्रियों की वृद्धि जानै ९ ॥

श्रेष्ठीसुवर्णपुष्पैःपद्मैर्विप्राःपुरोहिताःकुमुदैः ॥
सौगन्धिकेनबलपतिरर्केणहिरण्यपरिवृद्धिः १० ॥

सुवर्ण पुष्पों की वृद्धि से श्रेष्ठों की वृद्धि कमलोंकी वृद्धिसे ब्राह्मणों की वृद्धि कुमुदोंकी वृद्धिसे राजपुरोहितों की वृद्धि सौगंधिक पुष्प की वृद्धि से सेनापतिकी वृद्धि औ आकको वृद्धिसे सोनेकी वृद्धिहोती है १० ॥

आम्रैःक्षेमंभल्लातकैर्भयंपीलुभिस्तथारोग्यम् ॥
खदिरशमीभ्यांदुर्भिक्षमर्जुनैःशोभनावृष्टिः ११ ॥

आम्रकी वृद्धि से कल्याण भिलावे की वृद्धिसे भय पीलु की वृद्धिसे आरोग्य खैर औ शमी वृक्षकी वृद्धि से दुर्भिक्ष औ अर्जुन वृक्ष की वृद्धिसे उत्तम वर्षा होती है ११ ॥

पिचुमन्दनागकुसुमैःसुभिक्षमथमारुतःकपित्थेन ॥
निचुलेनावृष्टिभयंव्याधिभयंभवतिकुटजेन १२ ॥

निम्ब औ नागकेसर के पुष्पों की वृद्धि से सुभिक्ष होताहै कैथकी वृद्धिसे पवन चलता है निचुल वृक्षकी वृद्धिकरके वर्षा न होनेसे भय होता है औ कुटज वृक्षकी वृद्धिसे रोगका भय होताहै १२ ॥

दूर्वाकुशकुसुमाभ्यामिक्षुर्वह्निश्चकोविदारेण ॥
श्यामालताभिवृद्ध्याबन्धक्योवृद्धिमायान्ति १३ ॥

दूर्वा औ कुशाके पुष्पोंकी वृद्धिसे ईखकी वृद्धि होती है कोविदार वृक्षकी वृद्धिसे अग्नि बहुत लगताहै औ श्यामलता की वृद्धिसे व्यभिचारिणी स्त्रियों की वृद्धि होती है १३ ॥

यस्मिन्कालेस्निग्धानिश्छिद्रपत्राःसंदृश्यन्तेवृक्षगुल्मालताश्च ॥
तस्मिन्वृष्टिःशोभनासंप्रदिष्टारूक्षैश्छिद्रैरल्पमम्भःप्रदिष्टम् १४ ॥

इतिश्रीवराहमिहिरकृतौबृहत्संहितायांकुसुमलताध्यायो
नामैकोनत्रिंशोऽध्यायः २९ ॥

जिसकालमें वृक्ष गुल्म औ लता चिकने औ छिद्ररहित पत्रों करके युक्त होवैं उसकालमें उत्तम वृष्टि होती है जो उनके पत्र रूखे औ छिद्रों करके युक्त होवैं तो थोडी वर्षा होती है १४ ॥

श्रीवराहमिहिराचार्यकीबनाईबृहत्संहितामेंकुसुमलताध्याय
नामकउनतीसवांअध्यायसमाप्तहुआ २९ ॥

तीसवांअध्याय॥
सन्ध्यालक्षण॥

अर्द्धास्तमितानुदितात्सूर्यादस्पष्टभंनभोयावत्॥
तावत्संध्याकालश्चिह्नैरेतैःफलंचास्मिन् १॥

आधा सूर्य अस्तहोजाय उस समयके अनन्तर जवतक आकाश में तारा स्पष्ट न देखपड़ें उतना काल सायं सन्ध्याहै। इसीप्रकार सूर्योदयके पहिले भी तारा मन्द होजायँ उससमयसे लेकर सूर्योदय पर्यंत प्रातः सन्ध्याहै। उस सन्ध्याकालमें आगे जो चिह्न कहतेहैं उनसे फलका विचारकरें १॥

मृगशकुनपवनपरिवेषपरिधिपरिघाऽभ्रवृक्षसुरचापैः॥
गन्धर्वनगररविकरदण्डरजःस्नेहवर्णैश्च २॥

मृग पक्षी पवन सूर्य चन्द्रका परिवेष परिधि अर्थात् प्रतिसूर्य परिघ अभ्र-वृक्ष अर्थात् मेघही वृक्षाकार इन्द्रधनुष गन्धर्व नगर सूर्य किरण दण्ड अर्थात् सूर्य किरण मेघ औ पवनका संघात रज इन सवकी स्निग्धता औ रंग करके सन्ध्याका फल कहना चाहिये २॥

भैरवमुच्चैर्विरुवन्मृगोऽसकृद्ग्रामघातमाचष्टे॥
रविदीप्तोदक्षिणतोमहास्वनःसैन्यघातकरः ३॥

सन्ध्याके समय जो मृग वारम्वार भयंकर शब्दबोले तो ग्रामका नाश कहताहै सेनाके दक्षिणभागमें स्थित मृगसूर्य की ओर मुखकरके वड़ाशब्द करे तो सेना का नाश करनेवाला होताहै ३॥

अपसव्येसंग्रामःसव्येसेनासमागमःशान्ते॥
मृगचक्रेपवनेवासंध्यायांमिश्रगेवृष्टिः ४॥

सन्ध्या के समय मृगोंका समूह अथवा पवन सेना के वामभाग में दीप्त अर्थात् सूर्याभिमुख होय तो युद्ध होताहै इसीभांति सेनाके दहिनीओर होय औ शांत अर्थात् सूर्याभिमुख न होय तो दोनों सेनाका मेलहोजाय। औ जो मृग समूह औ पवनमिश्र अर्थात् शान्त औ दीप्तदोनों होयँ तो वर्षाहोतीहै ४॥

दीप्तमृगाण्डजविरुताप्राक्संध्यादेशनाशमाख्याति॥
दक्षिणदिक्स्थैर्विरुताग्रहणायपुरस्यदीप्तास्यैः ५॥

प्रातः सन्ध्यामें मृग औ पक्षी दीप्त अर्थात् सूर्यकी ओर मुखकरके रूक्ष शब्द करें तो देशका नाशहोय। जिस नगरकी दक्षिण दिशामें स्थित मृग औ पक्षी सूर्य की ओर मुखकर रूक्षशब्द करें उसनगरको शत्रुलेलेते हैं ५॥

गृहतरुतोरणमथनेसपांशुलोष्टोत्करेऽनिलेप्रबले॥

भैरवरावेरूक्षेखगपातिनिचाशुभासंध्या ६ ॥

घर वृक्ष औ तोरण अर्थात् बाहरके बड़े द्वार इनको गिरानेवाला धूलि औ मिट्टीके टुकड़ोंको उड़ाताहुआ भयंकर शब्द करनेवाला रूखाआकाशसे पक्षियोंको गिराताहुआ प्रचंडपवन संध्याकेसमय चले तो वहसंध्याअशुभहोतीहै६॥

मन्दपवनाऽवघट्टितचलितपलाशद्रुमाविपवनावा ॥
मधुरस्वरशान्तविहङ्गमृगरुतापूजितासंध्या ७ ॥

मन्दपवन करके ताडित इसीकारण चंचलहैं पत्रजिनके ऐसेवृक्षों करके युक्त अथवा पवन से रहित औ शान्तदिशामें मुख करके मधुर स्वरकरते हैं मृग औ पक्षी जिसमें ऐसी संध्या शुभ होती है ७ ॥

संध्याकालेस्निग्धादण्डतडिन्मत्स्यपरिधिपरिवेषाः ॥
सुरपतिचापैरावतरविकिरणाश्चाशुवृष्टिकराः ८ ॥

संध्याके समय दंड बिजली मत्स्य के आकार मेघ दूसरा सूर्य सूर्य चन्द्र को परिवेष इन्द्रधनुष ऐरावत औ सूर्यके किरण ये सब स्निग्ध होयँ तो वर्षा करते हैं दंड परिवेष औ ऐरावतका लक्षण आगे कहेंगे ८ ॥

विच्छिन्नविषमविध्वस्तविकृतकुटिलाऽपसव्यपरिवृत्ताः ॥
तनुह्रस्वविकलकलुषाश्चविग्रहावृष्टिदाः किरणाः ९ ॥

टूटेहुये विषम अर्थात् न्यून अधिक नष्टवर्ण विकारको प्राप्त टेढ़े दक्षिण भागमें नहीं परिवृत्त अर्थात् बाईं ओर जिनका झुकाव होय सूक्ष्म छोटेउष्णतासे रहित औ कलुष अर्थात् स्वच्छतासे रहित ऐसे सूर्य के किरण संध्याके समय होयँ तो युद्ध होता है औ वर्षा नहीं होती ९ ॥

उद्द्योतिनःप्रसन्नाऋजवोदीर्घाःप्रदक्षिणावर्ताः ॥
किरणाःशिवायजगतोवितमस्केनभसिभानुमतः १० ॥

दीप्तिकरके युक्त निर्मल सीधे लंबे औ दक्षिणावर्त जो सूर्यके किरणअंधकाररहित आकाश में होयँ तो जगत्का कल्याण करते हैं १० ॥

शुक्लाःकरादिनकृतोदिवादिमध्यान्तगामिनःस्निग्धाः ॥
अव्युच्छिन्नाऋजवोवृष्टिकरास्तेह्यमोघाख्याः ११ ॥

जो सूर्यके किरण शुक्लवर्ण आकाशमें आदि मध्य अन्ततक गमन करें अर्थात् संपूर्ण आकाशमें व्याप्त होयँ स्निग्धहोयँ खंडित न होयँ औ सीधेहोयँ वे किरण अमोघ कहाते हैं औ वर्षा करनेवाले होते हैं ११ ॥

कल्माषबभ्रुकपिलाविचित्र मांजिष्ठहरितशबलाभाः ॥
त्रिदिवानुबन्धिनोऽवृष्टयेऽल्पभयदास्तुसप्ताहात् १२ ॥

संध्याके समय जो सूर्यके किरण कल्माप अर्थात् पीला श्वेत औ कृष्ण-वर्ण मिलाहुआ जिनमें होयँ किंचित् कपिल ठीक कपिल विचित्रवर्ण रक्त-वर्ण हरे अथवा शवल अर्थात् श्वेत कृष्णरंगजिनमें मिलरहा होय ऐसे होयँ औ संपूर्ण आकाशको व्याप्त करलेवें तो वर्षा नहीं होती औ सात दिनके अनंतर थोड़ासा भय होता है १२ ॥

ताम्राबलपतिमृत्युंपीतारुणसन्निभाश्चतद्व्यसनम्॥हरिताःपशुसस्यवधंधूम्रसवर्णागवांनाशम् १३ मांजिष्ठाभाःशस्त्राग्निसंभ्रमंवभ्रवःपवनवृष्टिम्॥ भस्मसदृशास्त्ववृष्टिंनतुभावंशवलकल्माषाः १४ ॥

सूर्यके किरणताम्रके रंगकेहोयँ तो सेनापतिका मृत्युहोताहै पीलेऔलाल होयँ तो सेनापतिको दुःखहोता है हरेहोयँ तो पशु औ खेतीकानाश धूम्रके तुल्यवर्णहोयँ तो गौओंकानाश १३ मंजीठके समान लालरंगहोयँ तो शस्त्रभय औ अग्निभय कपिलवर्णहोयँ तो पवनयुक्त वर्षा भस्मके तुल्य वर्णहोयँ तो अ-वृष्टि औ जो सूर्यके किरण श्वेत कृष्ण पीत नीलआदि मिलेरंगके होयँ तो भी वर्षा का अभावकरते हैं १४ ॥

बन्धूपुष्पांजनचूर्णसन्निभं संध्यारजोऽभ्येतियदादिवाकरम् ॥
लोकस्तदारोगशतैर्निपीड्यतेशुक्लंरजोलोकविवृद्धिशांतये १५॥

बंधूकपुष्पके समान अतिरक्त वर्ण अथवा अंजनके चूर्णकेतुल्य अतिकृष्ण वर्णधूलि उड़कर संध्याके समयसूर्यकी ओरजाय तो सैकड़ोंरोगों करके प्रजा पीड़ितहोय औ श्वेतवर्णकी धूलि उड़कर सूर्यकी ओर जाय तो प्रजाकी वृद्धि होय औ सब प्रजाकी शान्तिरहै १५ ॥

रविकिरणजलदमरुतांसंघातोदण्डवत्स्थितोदण्डः ॥
सविदिक्स्थितोनृपाणामशुभोदिक्षुद्विजातीनाम् १६ ॥

सूर्यके किरण मेघ औ पवन मिलकर दंडके आकार होजाते हैं उसको दंड कहतेहैं वहदंड आग्नेय आदि चारकोणों में स्थितहोय तो राजाओंको अशुभ होताहै औ पूर्वआदि दिशाओं में होय तो ब्राह्मण आदि वर्णों को अशुभफल करता है १६ ॥

शस्त्रभयातङ्ककरोदृष्टःप्राङ्मध्यसन्धिषुदिनस्य ॥
शुक्लाद्योविप्रादीन्यदभिमुखस्तांनिहन्तिदिशम् १७ ॥

वहदण्ड सूर्योदय मध्याह्न औ सायंकालको देखपड़े तो शस्त्रभय औ रोग करता है । औश्वेतरक्त पीत औ कृष्णवर्ण दंडक्रम से ब्राह्मण आदि चारवर्णों कानाशकरताहै।औ जिसदिशाकी ओरउसका मुखहोय उसदिशाका नाशकरता है। सूर्यके समीप जो अग्रहोय वहदंडका मूल औदूसरी ओर मुख होताहै १७ ॥

दधिसदृशाग्रोनीलोभानुच्छादीखमध्यगोऽभ्रतरुः॥
पीतच्छुरिताश्चघनाघनमूलाभूरिवृष्टिकराः १८॥

दहीकेतुल्य अतिश्वेतवर्ण जिसका अग्र नीलवर्ण सूर्यको आच्छादनकरने वाला औ आकाशके मध्यमें स्थित ऐसा अभ्रतरु अर्थात् वृक्षके आकार का मेघहोय अथवापीले रंगकरके रंगेहुये औ घनेमूलों करके युक्त मेघहोयँ तो बहुत वृष्टिकरते हैं १८॥

अनुलोमगेऽभ्रेवृक्षसमंगतेयायिनोनृपस्यवधः॥
बालतरुप्रतिरूपिणियुवराजाऽमात्ययोर्मृत्युः १९॥

जो राजाशत्रु के ऊपर चढ़कर जाय औ अभ्रतरु उसके पीछे २ चले औ अकस्मात् शांतहोजाय तो उस राजाका मृत्यु होता है। औ छोटे से वृक्षके आकार अभ्रतरु होय औ अकस्मात् शांतहो जाय तो युवराज औ राजा के मंत्रीका मृत्युहोता है १९॥

कुवलयवैदूर्याऽम्बुजकिंजल्काभाप्रभंजनोन्मुक्ता॥
संध्याकरोतिवृष्टिंरविकिरणोद्भासितासद्यः २०॥

नील कमल वैदूर्य मणि अथवा कमलके केसरों के समान वर्ण पवनसे रहित औ सूर्य किरणों करके प्रकाशित ऐसी सन्ध्या होय तो शीघ्रही अर्थात् उसी दिन वर्षा करे २०॥

अशुभाकृतिघनगन्धर्वनगरनीहारपांशुधूमयुता॥
प्रावृषिकरोत्यवग्रहमन्यर्तौशस्त्रकोपकरी २१॥

गर्दभ उष्ट्र आदि अशुभरूपके मेघ गन्धर्वनगर नीहार अर्थात् कुहरा धूलि औ धूम करके युक्त संध्या वर्षा ऋतुमें होय तो वर्षाका अभाव करती है औ वर्षा विना दूसरी ऋतुमें होय तो शस्त्रकोपकरती है अर्थात् युद्धहोताहै २१॥

शिशिरादिषुवर्णाःशोणपीतसितचित्रपद्मरुधिरनिभाः॥
प्रकृतिभवाःसंध्यायांस्वर्तौशस्ताविकृतिरन्या २२॥

शिशिर आदि छःऋतुओं में क्रमसे रक्तपीत श्वेत चित्र कमलके तुल्यवर्ण औ रुधिरके समान अति रक्तवर्ण स्वभावसेही संध्याका होताहै। ऋतुके तुल्य संध्याका वर्णहोय तो शुभहोताहै औ दूसरे ऋतुके रंगकी संध्याहोय तो विकृति है अर्थात् वहसंध्या अशुभ है २२॥

आयुधभृन्नररूपंछिन्नाभ्रम्परभयायरविगामि॥
सितखपुरेकांक्रान्तेपुरलाभोभेदनेनाशः २३॥

शस्त्रधारी मनुष्यके आकारमेघका टुकडा जो सूर्य के समीप होय तो शत्रु

भयहोता है। श्वेतवर्णका गंधर्वनगर सूर्यको आच्छादन करै तो जिस राजा ने नगरको घेररक्खाहोय उसको नगरप्राप्त होजाय। औ सूर्य गंधर्वनगर को भेदनकरै तो नगरका नाशहोय अर्थात् शत्रुउस नगरको लूटलेवै २३॥

सितसितान्तघनावरणंरवेर्भवतिवृष्टिकरंयदिसव्यतः॥
यदिचवीरणगुल्मनिभैर्घनैर्दिवसभर्तुरदीप्तदिगुद्भवैः २४॥

शुक्ल वर्ण औ शुक्लहैं अन्तजिनके ऐसे मेघदहिनी ओरसे सूर्यको आच्छादन करैं तो वर्षा होय औ वीरणनाम जो तृण उसके गुल्म अर्थात् झुंड के समान औ शांत दिशामें उत्पन्न मेघ सूर्यको दहिनी ओर से आच्छादन करैं तो भी वर्षा होती है २४॥

नृपविपत्तिकरःपरिघःसितःक्षतजतुल्यवपुर्बलकोपकृत्॥
कनकरूपधरोबलवृद्धिदःसवितुरुद्गमकालसमुत्थितः २५॥

सूर्यके ऊपर जो आड़ी मेघ रेखाहोय उसको परिघकहते हैं वहपरिघसूर्योदयके समय श्वेत वर्णहोय तो राजाका मृत्युकरै रुधिरके समान रक्तवर्ण परिघ होयतो सेनाकाकोपकरे अर्थात् राजासे सेनाबिगड़जाय औ सुवर्णके तुल्यरंग कापरिघहोय तो सेनाकी वृद्धि करनेवाला होताहै २५॥

उभयपार्श्वगतौपरिधीरवेःप्रचुरतोयकरौवपुषान्वितौ॥
अथसमस्तककुप्परिवारिणःपरिधयोस्तिकणोऽपिनवारिणः२६॥

जो सूर्यके दोनों ओर प्रतिसूर्यहोयँ औ सूर्यबिंबसे संयुक्तहोयँ तो बहुत वर्षाकरते हैं। औ जो प्रतिसूर्य सब दिशाओं के व्याप्त करनेवाले होयँ तो एक बूंद जल भी न बरसै २६॥

ध्वजातपत्रपर्वतद्विपाश्वरूपधारिणः॥ जयायसंध्ययोर्घनारणाथ रक्तसन्निभाः २७ पलालधूमसंचयोत्थितोपमावलाहकाः॥ बलान्य रूक्षमूर्तयोविवर्धयन्तिभूभृताम् २८ विलम्बिनोद्रुमोपमाःखराऽरुण प्रकाशिनः॥ घनाःशिवायसंध्ययोःपुरोपमाःशुभावहाः २९॥

संध्याके समय ध्वज छत्र पर्वत हाथी औ घोड़ोंका रूपधारणकिये मेघ होयँ तो राजाओंका जयहोताहै २७ औ रक्तवर्णकेहोयँ तोयुद्धहोताहै। पलाल अर्थात् धानके तृणका जोधूमसमूह उसकेतुल्यहै रंगजिनका औ स्निग्ध ऐसे मेघ राजाओंकी सेनाकी वृद्धिकरते हैं २८ लटकतेहुये वृक्षके आकार अत्यन्तरक्तवर्ण मेघसंध्याके समयहोयँ तो शुभहोते हैं औ नगरके आकार मेघ होयँ तोभी शुभहोते हैं २९॥

दीप्तविहंगशिवामृगघुष्टाद्दण्डरजःपरिघादियुता च॥

फल होताहै। औ इन्द्रधनुप दशयोजनतक देखने में आताहै इसकारण इन्द्रधनुपका शुभअशुभफल दशयोजनके भीतर होताहै ३३॥

श्रीवराहमिहिराचार्यकृतिनाईबृहत्संहितामेंसंध्यालक्षण नामतीसवांअध्यायसमाप्तहुआ ३०॥

इकतीसवांअध्याय॥

दिग्दाहलक्षण॥

दाहोदिशांराजभयायपीतोदेशस्यनाशायहुताशवर्णः॥
यश्चारुणःस्यादपसव्यवायुःसस्यस्यनाशंसकरोतिदृष्टः १॥

पीतवर्णका दिग्दाहहोय तोराजाओंको भय होताहै। अग्नि के समानवर्ण दिग्दाहहोयतो देशकानाश होताहै। लाल रंगका दिग्दाह होय औ उसके अपसव्य अर्थात् दक्षिणपवनचलै तो खेतीकानाश होता है १॥

योऽतीवदीप्त्याकुरुतेप्रकाशंछायाअपिव्यंजयतेऽर्कवद्यः॥
राज्ञोमहद्वेदयतेभयंचशस्त्रप्रकोपंक्षतजानुरूपः २॥

जो दिग्दाह अपनी दीप्ति करके बड़ाप्रकाशकरै औ सूर्यकेतुल्य जिसमें सब वस्तुओंकी छाया देखपड़ै वह दिग्दाह राजाको बड़ाभयकरता है। औ रुधिर केतुल्य दिग्दाहका रंगहोय तो युद्धहोय २॥

प्राक्क्षत्रियाणांसनरेश्वराणांप्राग्दक्षिणेशिल्पिकुमारपीडा॥ याम्येसहोग्रैःपुरुषैस्तुवैश्यादूताःपुनर्भूप्रमदाश्चकोणे ३ पश्चात्तुशूद्राः कृषिजीविनश्चचौरास्तुरंगैःसहवायुदिक्स्थे॥ पीडांव्रजन्त्युत्तरतश्च विप्राः पाषण्डिनोवाणिजकाश्चशाव्याम् ४॥

पूर्व दिशामें दिग्दाह देखपड़ै तो राजाओं करके सहित क्षत्रियों को पीड़ा होती है। अग्नि कोणमें दिग्दाह होय तो शिल्प जाननेवाले सुनार लुहार आदि औ बालक पीड़ाको प्राप्त होतेहैं। दक्षिणमें दिग्दाह होय तो क्रूर पुरुषों करके सहित वैश्य पीड़ाको प्राप्तहोते हैं। नैर्ऋत्यकोणमें दिग्दाह होय तोदूत औ पुनर्भू अर्थात् जिनका दूसरीबार बिवाहहोताहै ऐसी स्त्री पीड़ित होती है३ पश्चिम में दिग्दाहहोय तो शूद्र औ खेती करनेवालोंको पीड़ा होती है। वायु कोणमें दिग्दाहहोय तो चोर औ घोड़े पीड़ा को प्राप्त होते हैं उत्तर में दिग्दाह होनेसे ब्राह्मणोंको पीड़ा होती है। ईशानकोणमें दिग्दाह होय तो पाषंडी अर्थात् वेदके मतको नहीं माननेवाले औ वनियें पीड़ाको प्राप्त होते हैं ४॥

नभःप्रसन्नंविमलानिभानिप्रदक्षिणंवातिसदागतिश्च॥

दिशांचदाहःकनकावदातोहितायलोकस्यसपार्थिवस्य ५ ॥

इतिश्रीवराहमिहिरकृतौबृहत्संहितायांदिग्दाहलक्षणं नामैकत्रिंशोऽध्यायः ३१ ॥

दिग्दाह के समय आकाश निर्मलहोय नक्षत्र निर्मलहोय प्रदक्षिण पवन चले औ दिग्दाह भी सुवर्ण के तुल्य स्वच्छरंगका होय तो प्रजा सहित राजा को शुभ होता है ५ ॥

श्रीवराहमिहिराचार्यकीबनाईबृहत्संहितामेंदिग्दाहलक्षणनाम इकतीसवांअध्यायसमाप्तहुआ ३१ ॥

बत्तीसवांअध्याय ॥

भूकम्पलक्षण ॥

क्षितिकम्पमाहुरेकेबृहदन्तर्जलनिवासिसत्वकृतम् ॥
भूभारखिन्नदिग्गजविश्रामसमुद्भवंचान्ये १ ॥

कोई मुनि कहते हैं कि समुद्रके जलमें जो बड़े २ मकर मत्स्य शिशुमार आदि जीव हैं वेजब चलते हैं तब भूकंप होताहै । कोई गर्गआदि मुनिकहते हैं कि भूमिकेभारसे थककर दिग्गज विश्राम करतेहैं उससेभूकंपहोताहै १ ॥

अनिलोऽनिलेननिहतःक्षितौपतन्सस्वनंकरोत्यन्ये ॥
केचित्त्वदृष्टकारितमिदमन्येप्राहुराचार्याः २ ॥

कोई वशिष्ठ आदि मुनि यह कहते हैं कि आकाशमें स्थित वायु दूसरेवायु करके ताडितहुआ २ भूमिपर गिरता है तब शब्द सहित भूकंप होता है। कोई वृद्ध गर्ग आदि मुनि कहते हैं कि शुभ अशुभ कर्मसे भूकंप होता है अर्थात् धर्म की वृद्धिहोय तो शुभ फल करनेवाला भूकंप होता है औ पाप की वृद्धिसे अशुभ फल देनेवाला भूकंप होता है औ कोई २ पराशर आदि मुनि यह कहते हैं कि २ ॥

गिरिभिःपुरासपक्षैर्वसुधाप्रपतद्भिरुत्पतद्भिश्च ॥ आकम्पितापितामहमाहाऽमरसदसिसव्रीडम् ३ भगवन्नाममनैतत्त्वयाकृतंयदचलेतिनतत्तथा ॥ क्रियतेऽचलैश्चलद्भिःशक्ताहंनास्यखेदस्य ४ तस्याःसगद्गदगिरंकिञ्चित्स्फुरिताधरंविनतमौपत्तु ॥ साश्रुविलोचनमाननमालोक्यपितामहःप्राह ५ मन्युंहरेन्द्रधाऽव्याःक्षिपकुलिशंशैलपक्षभङ्गाय ॥ शक्रःकृतमित्युक्तामाभैरितिवसुमतीमाह ६ किन्त्वनिलदहनसुरपतिवरुणाःसदसत्फलाववोधार्थम् ॥ प्राग्द्वित्रिचतुर्भागेषुदिननिशोःकम्पयिष्यन्ति ७ ॥

पूर्वकालमें पर्वतोंके भी पक्षथे वे जब उड़कर आकाशसे भूमिपर गिरते औ भूमिसे आकाशको उड़ते उससमय भूमि कांपती। उनकरके कंपितहुई भूमि एकसमय देवताओंकी सभामेंजाय लज्जितहो ब्रह्माजीसे प्रार्थना करनेलगी कि महाराज आपने मेरानाम अचलाकरखाहै परंतु उड़तेहुये पर्वत मेरे उस नामको ठीक नहीं रहने देते। यहखेद मैं नहीं सहसकती ४ इसप्रकार गद्गद वाणीसहित नीचेकाओष्ठ जिसमें कुछ फरकता थोड़ासा नीचेको झुकाहुआ औ अश्रुपात करके सहित पृथ्वीका मुखदेख ब्रह्माजी इन्द्रसे कहनेलगे ५ कि हे इन्द्र पृथ्वीका क्लेश निवृत्तकरो औ पर्वतोंके पक्ष काटने के लिये वज्र फेंको। यह ब्रह्माजीका वचनसुन इन्द्रनेकहा कि अभी आपकी आज्ञा संपादनकरता हूँ यह ब्रह्माजीसे कह पृथ्वीसे कहा कि भयमतकर अबतुझे पर्वत न चला सकेंगे ६ परंतु वायु अग्नि इन्द्र औ वरुण शुभअशुभ फलका सूचन करनेके लिये दिन रात्रिके पहिले दूसरे तीसरे औ चौथे भागमें कंपित करेंगे। अर्थात् प्रातःकाल से दोपहर वायुका समय दोपहरसे चारपहरतक अग्निका चारपहरसे छःपहरतकइन्द्रका औ छःपहरसे आठपहरतक वरुणका समय होगा अपने २ समयमें ये देवता भूकंप करेंगे ७॥

चत्वार्यार्यम्णाद्यान्यादित्यंमृगशिरोऽश्वयुक्चेति॥ मण्डलमेतद्वायव्यमस्यरूपाणिसप्ताहात् ८ धूमाकुलीकृताशानभसिनभस्वान् रजःक्षिपन्भौमम्॥ विरुजन्द्रुमांश्चविचरतिरविरपटुकरावभासी च ९ वायव्येभूकम्पेसस्याऽम्बुवनौषधीक्षयोऽभिहितः॥ श्वयथुश्वासोन्मादज्वरकासभवोवणिक्पीडा १०रूपायुधभृद्वैद्यस्त्रीकविगान्धर्वपण्यशिल्पिजनाः॥पीड्यन्तेसौराष्ट्रककुरुमगधदशार्णमत्स्याश्च ११

उत्तराफाल्गुनी हस्त चित्रा स्वाति पुनर्वसु मृगशिरा अश्विनी ये सात नक्षत्र वायुमंडल के हैं। अर्थात् इनमें से किसी नक्षत्र पर भूकंपहोय तोउस भूकंप को वायव्यजाने। वायव्य मंडल में भूकंप होना होय तो सात दिन पहिले हीसे येलक्षण होते हैं ८ कि धूम करके व्याप्त हैं दिशा जिस में ऐसे आकाश के बीच भूमिकी धूलि उड़ाता हुआ औ वृक्षोंको तोड़ताहुआ प्रचंड पवन चलता है। सूर्यके किरण मंद होजाते हैं ९ वायव्य भूकंप होनेसे खेती जल वन औ ओषधियोंका क्षय होताहै। सूजन श्वास उन्माद ज्वर औखांसी के रोग प्रजामें होते हैं। बनियोंको पीड़ा होती है १० वेश्या शस्त्र धारणकरने वाले वैद्य स्त्री काव्य करनेवाले कवि गानेवाले व्यापारी औ शिल्प जानने वाले पीड़ित होते हैं। औ सौराष्ट्र कुरु मगध दशार्ण औ मत्स्यदेशके निवासीभी पीड़ा को प्राप्त होते हैं ११॥

पुष्याग्नेयविशाखाभरणीपित्र्याचभाग्यसंज्ञानि॥ वर्गोहौतभुजो यङ्करोतिरूपाण्यथैतानि १२ तारोल्कापातावृतमादीप्तमिवाऽम्बरंस दिग्दाहम्॥विचरतिमरुत्सहायःसप्तार्चिःसप्तदिवसान्तः १३ आग्नेयेऽम्बुदनाशःसलिलाशयसंक्षयोनृपतिवैरम्॥ दद्रूविचर्चिकाज्वरविसर्पिकाःपाण्डुरोगश्च १४ दीप्तौजसःप्रचण्डाःपीड्यन्तेचाश्मकांगवाह्लीकाः॥ तङ्गणकलिंगवंगद्रविडाःशवराश्चनैकविधाः १५॥

पुष्य कृत्तिका विशाखा भरणी मघा पूर्वाभाद्रपदा पूर्वा फाल्गुनी ये सात नक्षत्र अग्नि मंडल के हैं। इस मंडल में भूकंप होनाहो तो सात दिन पहिले ये लक्षण होते हैं १२ कि तारापात उल्कापात औ दिग्दाहकरके युक्त आकाश चारों ओरसे जलता हुआसा देख पड़ताहै। पवन सहित अग्नि विचरता है अर्थात् पहिले सात दिनमें अग्नि लगताहै औ उससमय पवन चलताहै १३ आग्नेय भूकंप के होनेसे मेघोंका नाश होताहै। बावड़ी कुंयें तड़ाग आदि जलाशय सूख जाते हैं। राजाओंका परस्पर वैर होताहै। दाद विचर्चिका ज्वर विसर्पिका औ पांडुरोग ये सबरोग प्रजामें होते हैं १४ तेजस्वी औक्रोधी पीड़ाको प्राप्त होते हैं। औ अश्मक अंग वाह्लीक तंगण कलिंग वंग द्रविड़ औ अनेक जाति भीलोंकी ये सब भी पीड़ाको प्राप्त होते हैं १५॥

अभिजिच्छ्रवणधनिष्ठाप्राजापत्यैन्द्रवैश्वमैत्राणि॥ सुरपतिमण्डलमेतद्भवंतिचाप्यस्यरूपाणि १६ चलिताचलवर्ष्माणोगम्भीरविराविणस्तडित्वंतः॥ गवलालिकुलाहिनिभानिसृजंतिपयःपयोवाहाः १७ ऐन्द्रंस्तुतकुलजातिख्याताऽवनिपालगणपविध्वंसि॥ अतिसारगलग्रहवदनरोगकृच्छर्दिकोपाय १८काशियुगंधरपौरवकिरातकीराभिसारहलमद्राः॥अर्बुदसुवास्तुमालवपीडाकरमिष्टवृष्टिकरम् १९॥

अभिजित् श्रवण धनिष्ठा रोहिणी ज्येष्ठा उत्तराषाढा अनुराधा ये सातनक्षत्र इन्द्रमंडलके हैं। इस मंडलमें भूकंप होनाहोय तो सातदिन पहिले येरूप होते हैं १६ कि चलतेहुये पर्वतों के तुल्य शरीरवाले गंभीर गर्जतेहुये बिजलियों करके युक्त औ महिषीकेशृंग भ्रमर समूह अथवा सर्प के समान अति नीलवर्ण मेघ जल बरसतेहैं १७ इस ऐन्द्रभूकंपके होनेसे उत्तम कुलके मनुष्य प्रसिद्धपुरुष राजा औ समूहके अधिपति नाशको प्राप्त होते हैं। अतिसार गलग्रह औ मुखरोग प्रजामें होते हैं। वमनका उपद्रव होताहै १८ काशी युगंधर पौरव किरात कीर अभिसार हलमद्र अर्बुद सुवास्तु औ मालवदेशके जन पीड़ित होते हैं। औ वर्षा अच्छी होती है १९॥

पौष्णाप्यार्द्राश्लेषामूलाहिर्बुध्न्यवरुणदेवानि ॥ मण्डलमेतद्वारुणमस्यापि भवन्ति रूपाणि २० नीलोत्पलालिभिन्नाञ्जनत्विषो मधुररावियोबहुलाः ॥ तडिदुद्भासितदेहाधाराऽङ्कुरवर्षिणोजलदाः २१ वारुणमर्णवसरिदाश्रितघ्नमतिवृष्टिदंविगतवैरम् ॥ गोनर्दचेदिकुकुरान्किरातवैदेहकान्हन्ति २२ ॥

रेवती पूर्वाषाढ़ा आर्द्रा आश्लेषा मूल उत्तराभाद्रपदा शतभिषक् येसात नक्षत्र वरुण मंडलके हैं। इनमें भूकंप होनाहोय तो सातदिन पहिलेये लक्षण होते हैं २० कि नीलकमल भ्रमर औ अति नीलवर्ण कज्जलके समान कान्तिवाले मधुर ध्वनिसे गर्जतेहुये बिजलियों से प्रकाशित देह जिनका ऐसे बहुतसे मेघ जलधारारूप अंकुरों करके बरसते हैं २१ वारुण भूकंपके होनेसे समुद्र औ नदियोंके आश्रयमें रहनेवालोंका नाशहोताहै। वर्षा बहुत होतीहै। प्रजामें वैरभाव नहीं रहता। गोनर्द चेदि कुकुर किरात औ विदेह देशके निवासी मारेजाते हैं २२ ॥

षड्भिर्मासैःकम्पोद्वाभ्यांपाकंचयातिनिर्घातः ॥
अन्यानप्युत्पातान्जगुरन्येमण्डलैरेतैः २३ ॥

भूकंपका फल छःमहीनेमें होताहै औ दोमहीनेमें निर्घातका फल होता है गर्गआदि मुनि कहते हैं कि और भी ग्रहण उल्कापातआदि उत्पातों का फल इनमंडलों से कहना चाहिये। अर्थात् इनचार मंडलों जिसमें मंडलके बीच उत्पातहोय उसके अनुसार शुभ अशुभ फल कथनकरै २३ ॥

उल्काहरिश्चन्द्रपुररजश्चनिर्घातभूकम्पककुप्प्रदाहाः ॥ वातोतिचंडोग्रहणंरवीन्द्वोर्नक्षत्रताराग्रहवैकृतानि २४ व्यभ्रेवृष्टिर्वैकृतंचातिवृष्टिर्धूमोऽनग्निर्विस्फुलिङ्गार्चिषोवा ॥ वन्यंसत्वंग्राममध्येविशेद्वारात्रावैन्द्रंकार्मुकंदृश्यतेवा २५ संध्याविकाराःपरिवेषखण्डानद्यःप्रतीपादिवितूर्यनादाः ॥ अन्यच्चयत्स्यात्प्रकृतेःप्रतीपंतन्मण्डलैरेवफलंनिगाद्यम् २६ ॥

उल्कागंधर्वनगर पांशुवृष्टि निर्घात भूकंप दिग्दाह प्रचंड पवन सूर्यचन्द्रका ग्रहण नक्षत्र औ ताराओंके विकार २४ बिना मेघवर्षा वर्षाके और विकार अतिवृष्टि बिना अग्निके धूमहो अग्निके पतंगेउड़ें ज्वालाउठैं बनके मृग ग्राममें आजायँ रात्रिके समय इन्द्रधनुष २५ संध्याके विकार परिवेषखण्डनदियों का उलटागमन आकाशमें तुरही आदि वाद्योंका शब्द इत्यादि सब उत्पात औ

औरभी जो स्वभावसे विपरीत बातेंहों उन सबका इन मंडलों के अनुसार फल कहना ॥ येतीनश्लोक क्षेपक हैं २६ ॥

हन्त्यैन्द्रोवायव्यंवायुश्चाप्यैन्द्रमेवमन्योन्यम् ॥
वारुणहौतभुजावपिवेलानक्षत्रजाःकम्पाः २७ ॥

इन्द्रमंडलमें हुआ भूकंप वायुवेलामें हुये भूकंपके फलका नाश करता है इसी प्रकार वायव्य भूकंप ऐन्द्रका नाश करता है । इसीभांति वारुण औ आग्नेय भूकंपभी परस्पर फलका नाश करते हैं । अर्थात् वेलामें हुये भूकंप औ नक्षत्रोंमें हुये भूकंप परस्पर फलका नाश करतेहैं । अर्थात् भूकंपके समय जिसकी वेलाहो उसीका मंडलहोय तो भूकंपका फल पूर्ण होता है । औ वेला मंडलका भेदहोय तो ठीक फलनहीं होता है २७ ॥

प्रथितनरेश्वरमरणव्यसनान्याग्नेयवायुमण्डलयोः ॥
क्षुद्भयमरकावृष्टिभिरुपताप्यन्तेजनाश्चापि २८ ॥

अग्निमंडल वायव्यवेला अथवा वायव्यमंडल अग्निवेलामें भूकंपहोय तो प्रसिद्ध राजाओंका मृत्युहो अथवा उनको विपत्तिहोय। औ दुर्भिक्ष मरी अवृष्टि करके प्रजाको पीड़ाहोय २८ ॥

वरुणपुरन्दरयोःसुभिक्षशिववृष्टिहार्दयोलोके ॥
गावोऽतिभूरिपयसोनिवृत्तवैराश्चभूपालाः २९ ॥

वारुण औ ऐन्द्रवेला औ मंडलमें भूकंप होय तो लोकमें सुभिक्ष कल्याण वर्षा औ प्रसन्नता होय औ गौ बहुतदूधदेवें औ राजाओंका परस्पर वैरमिटजाय २९॥

पक्षैश्चतुर्भिरनिलस्त्रिभिरग्निर्देवराट्चसप्ताहात् ॥
सद्यःफलतिचवरुणोयेषुनकालोऽद्भुतेषूक्तः ३० ॥

अंगस्फुरण आदि जिन उत्पातोंके फलका समय नहीं कहा वे जो वायव्य मंडल में होवें तो दोमहीनेमें फलहोताहै अग्निमंडल में होयँ तो डेढ़ महीने में ऐन्द्रमण्डलमें होयँ तो सात दिनमें वारुण मण्डलमें होयँ तो तत्काल फल होता है ३० ॥

चलयतिपवनःशतद्वयंशतमनलोदशयोजनान्वितम् ॥
सलिलपतिरशीतिसंयुतंकुलिशधरोऽभ्यधिकञ्चषष्टितः ३१॥

वायव्य मण्डल में भूकंप होय तो दोसौ योजनतक होताहै । अग्निमंडल में एकसौ दशयोजन तक भूकम्प होता है वारुण मण्डल भूकम्प एकसौ अस्सी योजनतक होता है । औ ऐन्द्रमंडलमें भूकंपहोय तो एकसौसाठ योजन तकभूमि कांपती है ३१ ॥

त्रिचतुर्थसप्तमदिनेमासेपक्षेऽथवात्रिपक्षेच ॥
यदिभवतिभूमिकम्पःप्रधाननृपनाशनोभवति ३२ ॥
इतिश्रीवराहमिहिरकृतौबृहत्संहितायांभूकंपलक्षणंनाम
द्वात्रिंशोऽध्यायः ३२ ॥

भूकंपहोनेके अनंतर तीसरे चौथे सातवें तीसवें पंद्रहवें अथवा पैंतालीसवें दिन फिर भूकंपहोय तोमुख्य राजाओंका मृत्युकरताहै ३२ ॥

श्रीवराहमिहिराचार्यकी बनाईबृहत्संहितामेंभूकम्पलक्षण
नामबत्तीसवांअध्यायसमाप्तहुआ ३२ ॥

तेंतीसवांअध्याय ॥

उल्कालक्षण ॥

दिविभुक्तशुभफलानांपततांरूपाणियानितान्युल्काः ॥
धिष्ण्योल्काशनिविद्युत्ताराइतिपञ्चधाभिन्नाः १ ॥

स्वर्गमें शुभकर्मके फल भोगकर जीव भूमिपर जन्मलेनेके लिये गिरतेहैं वेही उल्कारूपसे देखपड़ते हैं। धिष्ण्या उल्का अशनि विद्युत औ तारायेपांच भेद उल्का के हैं १ ॥

उल्कापक्षेणफलंतद्वद्धिष्ण्याशनिस्त्रिभिःपक्षैः ॥
विद्युदहोभिःषड्भिस्तद्वत्ताराविपाचयति २ ॥

उल्काकाफल एकपक्ष अर्थात् पंद्रह दिनमें होताहै। धिष्ण्याका फल भी एकपक्षमें होताहै। अशनिकाफल तीनपक्षमें विद्युत्का फलछःदिनमें औतारा काभी फल छःदिनमें होता है २ ॥

ताराफलपादकरीफलार्धदात्रीप्रकीर्तिताधिष्ण्या ॥
तिस्रःसम्पूर्णफलाविद्युदथोल्काशनिश्चेति ३ ॥

तारा आधाफल करती है। धिष्ण्या आधाफल करती है। औ विद्युत् उल्का औ अशनि ये तीनों संपूर्णफल करती हैं ३ ॥

अशनिःस्वनेनमहतानृगजाश्वमृगाश्मवेश्मतरुपशुषु ॥
निपततिविदारयन्तीधरातलंचक्रसंस्थाना ४ ॥

बड़े शब्दकरके युक्त औ भूमिको विदारण करतीहुई मनुष्य हाथी घोड़े मृग पाषाण घर वृक्ष औ पशुके ऊपर गिरतीहै उसको अशनि कहतेहैं। अशनिका आकार चक्रकासा होता है ४ ॥

विद्युत्सत्वत्रासंजनयन्तीतटतटस्वनासहसा ॥
कुटिलविशालानिपततिजीवेन्धनराशिषुज्वलिता ५ ॥

जीवोंको भयदेतीहुई तड़ २ शब्दकरके युक्त टेढ़ी बड़ी औ जलतीहुई जीवों के समूह औ काष्ठआदि इन्धनके ढेरपर गिरती है उसको विद्युत् कहतेहैं ५ ॥

धिष्ण्याकृशाऽल्पपुच्छाधनूंषिदशदृश्यतेऽन्तरेऽभ्यधिकम् ॥
ज्वलिताङ्गारनिकाशाद्वौहस्तौसाप्रमाणेन ६ ॥

पतली औ छोटीसी पूंछ करके युक्त औ जलतेहुये अंगार के तुल्य देदीप्यमान औ दोहाथ लंबी धिष्ण्या होती है। वहजिस स्थानसेचले वहांसे दशधनुष अर्थात् चालीस हाथतक अधिक देख पड़ती है ६ ॥

ताराहस्तंदीर्घाशुक्लाताम्राब्जतन्तुरूपावा ॥
तिर्यगधश्चोर्ध्वंवायातिवियत्यूह्यमानेव ७ ॥

एकहाथलंबी श्वेतवर्ण अथवा ताम्रवर्ण औ कमलके तुल्य तन्तुके समान बहुत पतली आकाशमें मानों खेंचीहुई टेढ़ी ऊपरको अथवा नीचेको जाय उसको उल्का कहते हैं ७ ॥

उल्काशिरसिविशालानिपतन्तीवर्धतेप्रतनुपुच्छा ॥
दीर्घाभवतिचपुरुषंभेदाबहवोभवन्त्यस्याः ८ ॥

जिसकाशिर बड़ाहोय गिरती २ बढ़तीजाय पूछछोटी होय एक पुरुष प्रमाण अर्थात् साढ़ेतीन हाथलंबीहोय उसको उल्का कहते हैं। इस उल्काके बहुत भेद होते हैं। अब वे भेद कहते हैं ८ ॥

प्रेतप्रहरणखरकरभनक्रकपिदंष्ट्रिलांगलमृगाभाः ॥
गोधाऽहिधूमरूपापापायाचोभयशिरस्का ९ ॥

प्रेत अर्थात् मराहुआ मनुष्य खड्गआदिशस्त्र गर्दभ ऊंट मगर बानर दाढ़वालेजीव सूकर आदि हल मृग गोह सर्प धूम इनके तुल्य जिन उल्काओंका रूपहो वे अशुभहोती हैं। औजिनके दोनों ओर शिरहोय वहभी अशुभहै ९ ॥

ध्वजझषकरिगिरिकमलेन्दुतुरगसन्तप्तरजतहंसाभाः ॥
श्रीवत्सवज्रशंखस्वस्तिकरूपाःशिवसुभिक्षाः १० ॥

ध्वजा मत्स्य हाथी पर्वत कमल चन्द्रमा घोड़ा गलाईहुई चांदी हंस श्रीवत्स नामचिह्न वज्र शंख औ स्वस्तिकके तुल्यरूप उल्काकल्याण औ सुभिक्ष करती हैं १० ॥

अम्बरमध्याद्बह्व्योनिपतन्त्योराजराष्ट्रनाशाय ॥
बिभ्रमतीगगनोपरिविभ्रममाख्यातिलोकस्य ११ ॥

आकाशके बीचसे बहुतसी उल्कागिरें तो राजाका औदेशकानाश होताहै। उल्काआकाशमें ही बहुत भ्रमणकरै तो लोकमें व्याकुलता होय यह जानै ११॥

संस्पृशतीचन्द्रार्कौतद्विसृतावासभूप्रकम्पाच ॥
परचक्रागमनृपभयदुर्भिक्षाऽवृष्टिभयजननी १२ ॥

जो उल्का चंद्रसूर्यकोस्पर्श करतीहुई अथवा चन्द्रसूर्यसे निकलकरगिरे औ जिसके गिरने के समय भूकंपहोय वह उल्काशत्रुकी सेनाका आगमन राजभय दुर्भिक्षभय औ अवृष्टिभयकरती है १२ ॥

पौरेतरघ्नमुल्कापसव्यकरणंदिवाकरहिमांशोः ॥
उल्काशुभदापुरतोदिवाकरविनिःसृतायातु १३ ॥

सूर्यको अपसव्य अर्थात् दहिनी ओर करके उल्का गिरे तोपौर अर्थात् नगरमें रहनेवाले राजाका नाशहोय औ चन्द्रको अपसव्यकरके उल्कागिरे तो चढ़कर जानेवाले राजाका क्षयहोय। सूर्यसेनिकलीहुई उल्काचढ़करजानेवाले राजाके संमुखगिरे तो शुभफल करती है १३ ॥

शुक्लारक्तापीताकृष्णाचोल्काद्विजादिवर्णघ्नी ॥
क्रमशश्चैतान्हन्युर्मूर्द्धोरःपार्श्वपुच्छस्थाः १४ ॥

श्वेत रक्त पीत औ कृष्णवर्णकी उल्का क्रमसे ब्राह्मणआदिचारोंवर्णों का नाशकरती है। औ जिसउल्काका शिरभूमिपरलगे वह ब्राह्मणों का क्षय करती है। जिसउल्काकी छातीभूमिपरटिके वहक्षत्रियोंका। जिसके पार्श्व भूमिपरलगें वह वैश्योंका औ जिस उल्काकी पुच्छभूमिपरलगै वह शूद्रोंकानाश करती है १४ ॥

उत्तरदिगादिपतिताविप्रादीनामनिष्टदारूक्षा ॥
ऋज्वीस्निग्धाऽखण्डानीचोपगताचतद्वृद्ध्यै १५ ॥

उत्तरपूर्व दक्षिण औपश्चिम दिशामें रूखी उल्कागिरै तो क्रमसे ब्राह्मण आदिचारों वर्णोंको अशुभफलदेती है। औ वही उल्कासीधी निर्मल अखंडित औ आकाशके अधोभागमें जानेवालीहोय तो अपनी दिशा अनुसार ब्राह्मण आदि वर्णोंकी वृद्धिकरती है १५ ॥

श्यावाऽरुणनीलाऽसृग्दहनासितभस्मसन्निभारूक्षा ॥
संध्यादिनजावक्रादलिताचपरागमभयाय १६ ॥

जो उल्का कपिशवर्ण रक्तवर्ण नीलवर्ण रुधिरके तुल्यवर्ण अग्निके तुल्य कृष्णवर्ण भस्मके समान औरूक्षहो। संध्यामें अथवा दिनमें गिरीहो टेढ़ी औ खंडितहो वह उल्काशत्रुके आनेसे जोभय उसको करती है १६ ॥

नक्षत्रग्रहघातैस्तद्भक्तीनांक्षयायनिर्दिष्टा ॥
उदयेघ्नतीरवीन्दूपौरेतरमृत्यवेऽस्तेवा १७ ॥

जिस नक्षत्रको अथवा ग्रहको उल्का ताड़नकरै तो उसकी जो भक्ति पीछे कहआये हैं उनका नाश होता है। उदयके समय अथवा अस्तके समय सूर्य को उल्का ताड़नकरे तो पौरकामृत्यु औ चन्द्रमाको ताड़नकरै तो पार्थीराजाका मृत्युहोय १७॥

भाग्यादित्यधनिष्ठामूलेषूल्काहतेषुयुवतीनाम्॥ विप्रक्षत्रियपीडा पुष्यानिलविष्णुदैवेषु १८ ध्रुवसौम्येषुनृपाणामुग्रेषुसदारुणेषुचौराणाम्॥ क्षिप्रेषुकलाविदुषांपीडासाधारणेचहते १९॥

पूर्वाफाल्गुनी पुनर्वसु धनिष्ठा औ मूल नक्षत्रकी योगताराको उल्का ताड़न करे तो स्त्रियोंकोपीड़ा होती है पुष्य स्वाति औ श्रवणको उल्का ताड़नकरै तो ब्राह्मण औ क्षत्रियोंको पीड़ा होती है १८ रोहिणी तीनों उत्तरा मृगशिरा चित्रा अनुराधा औ रेवतीको उल्का ताड़न करै तो राजाओंको पीड़ा होती है। तीनोंपूर्वा भरणी मघा आर्द्रा आश्लेषा ज्येष्ठा औ मूलनक्षत्रको उल्का ताड़न करै तो चोरों को पीड़ा होती है अश्विनी पुष्य हस्त अभिजित् कृत्तिका औ विशाखाको उल्का ताड़नकरे तो गीत नृत्य आदि कलाजानने वालोंको पीड़ा होती है १९॥

कुर्वन्त्येताःपतितादेवप्रतिमासुराजराष्ट्रभयम् ॥ शक्रोपरिनृपतीनांगृहपुतत्स्वामिनांपीडाम् २० आशाग्रहोपघातेतद्देश्यानांखलेकृषिरतानाम्॥ चैत्यतरौसंपतितासत्कृतपीडांकरोत्युल्का २१॥ द्वारिपुरस्यपुरक्षयमथेन्द्रकीलेजनक्षयोऽभिहितः ॥ ब्रह्मायतनेविप्रान्विनिहन्याद्गोमिनोगोष्ठे २२॥

किसी देवताकी मूर्तिपर ये उल्कागिरें तो राजाको औ देशको भयकरती हैं। इन्द्रकी मूर्तिपर गिरें तो राजाको भयकरती हैं। घरपरगिरें तो घरके स्वामीको पीडा करती हैं २० जिस दिशाके स्वामी ग्रहको उल्का ताडन करें उस दिशाके निवासी मनुष्योंको पीडा होती है। खलिहानमें उल्कागिरे तो खेती करनेवाले पीड़ित होते हैं। प्रधानवृक्षपर उल्कागिरे तो प्रतिष्ठितमनुष्यों को पीड़ाकरती है २१ नगरके द्वारपर उल्कागिरे तो नगरका क्षयहोताहै। द्वार की अर्गलापरगिरै तो प्रजाका क्षयहोय। ब्रह्माके मंदिरपर उल्कापात होयतो ब्राह्मणोंका क्षयकरता है औ गौओंके स्थानमें उल्का गिरे तो बहुत गौओं के स्वामी जो मनुष्य उनको पीड़ा होती है २२॥

क्ष्वेडास्फोटितवादितगीतोत्कृष्टस्वनाभवन्तियदा॥
उल्कानिपातसमयेभयायराष्ट्रस्यसन्नृपस्य २३॥

उल्का गिरनेकेसमय क्ष्वेड़ा अर्थात् युद्धके बीच वीरपुरुष जो सिंहनाद करते हैं आस्फोटित अर्थात् मल्लअपनी एक भुजापर दूसरे हाथके आघातसे जो शब्दकरते हैं बाजेका शब्द औ गीत ये सब बड़े शब्दहोयं तो राजाको औ देश को भयहोता है २३ ॥

यस्याश्चिरंतिष्ठतिखेऽनुखङ्गोदण्डाकृतिःसान्नृपतेर्भयाय ॥
याचोह्यतेतन्तुधृतेवखस्थायावामहेन्द्रध्वजतुल्यरूपा २४ ॥

जो उल्का बहुतकाल आकाशमें ठहरे औ दण्डके आकार हो वहराजाका भयकरती है। औ जो उल्काडोरीमेंबंधीहुई मानोंआकाशमेंलटकतीहुई देखपड़े अथवा जिसकाआकार इन्द्रध्वजकेतुल्यहो वहभी राजाको भयकरती है२४ ॥

श्रेष्ठिनःप्रतीपगातिर्यगानृपाङ्गनानाम् ॥ हंत्यधोमुखीनृपान्ब्राह्मणा नथोर्ध्वगा २५ बर्हिपुच्छरूपिणीलोकसंक्षयावहा ॥ सर्पवत्प्रसर्पिणी योषितामनिष्टदा २६ हंतिमण्डलापुरंछत्रवत्पुरोहितम् ॥ वंशगुल्म वत्स्थिताराष्ट्रदोषकारिणी २७ व्यालसूकरोपमाविस्फुलिङ्गमालि नी ॥ खण्डशोऽथवागतासस्वनाचपापदा २८ ॥

जो उल्का जहांसे निकली वहांही उलटी चलीजाय वहसेठोंका क्षय करती है। तिरछी जो उल्काजाय वह राजाकी रानीका नाशकरती है। उल्का का मुख नीचे को होय तो राजा औ ऊपरको मुखहोय तो ब्राह्मण नाशको प्राप्तहोते हैं २५ मयूरकेपिच्छके समान जिसउल्काका आकारहो वहलोक क्षय करती है सर्पके तुल्य जो उल्काचलै वह स्त्रियोंको अनिष्ट करती है २६ जो उल्का गिरकर मंडलाकार होजाय वह नगरका औ छत्रके तुल्य जो उल्का होय वह पुरोहितका नाशकरती है। बांस के बिड़े के समान जिस उल्का का आकारहो वह देशमें दोष उत्पन्न करती है २७ जो उल्का सर्प अथवा सूकरके तुल्यहो औ अग्निकण जिसमें उड़तेहों अथवा जो उल्का खण्ड २ हो जाय औ शब्दभी करै वह अशुभ फल देती है २८ ॥

सुरपतिचापप्रतिमाराज्यं नभसिविलीनाजलदान्हंति ॥
पवनविलोमाकुटिलंयाता नभवतिशस्ताविनिवृत्तावा २९ ॥

इन्द्रधनुषके समान उल्काहोय तो राज्यका क्षयकरै। जो उल्का उत्पन्न होकर आकाशमेंही लीनहोजाय वह मेघोंका नाशकरती है अर्थात् वर्षा नहीं होती। जो उल्का पवनके सन्मुख गमनकरै औ वक्रगमनकरै अथवा थोड़ीदूर चलकर उलटी लौटजाय वह अशुभ होतीहै २९ ॥

अभिभवतियतःपुरंबलंवा भवतिभयंतत एवपार्थिवस्य ॥

निपततिचययादिशाप्रदीप्ता जयतिरिपूनचिरात्तयाप्रयातः३०॥
इतिश्रीवराहमिहिरकृतौबृहत्संहितायामुल्कालक्षणं
नामत्रयस्त्रिंशोऽध्यायः ३३॥

जिसदिशामें नगर अथवा सेनाके ऊपर उल्का गिरे उसीदिशासे राजाको भयहोताहै। औ जिसदिशामें देदीप्यमान उल्कागिरे उसमें चढ़कर राजाजाय तो शीघ्रही शत्रुओं को जीतताहै ३०॥

श्रीवराहमिहिराचार्य की वनाई बृहत्संहितामें उल्कालक्षण
नामक तेंतीसवां अध्याय समाप्त हुआ ३३॥

चौंतीसवां अध्याय॥

परिवेषण लक्षण॥

संमूर्च्छितारवीन्द्वोःकिरणाःपवनेनमण्डलीभूताः॥
नानावर्णाकृतयस्तन्वऽभ्रेव्योम्निपरिवेषा १॥

पवन करके मंडली भूत अर्थात् गोल हुये हुये सूर्य चंद्र के किरण थोड़ेसे मेघों करके युक्त आकाश में प्रति विंबित होकर अनेक रंग औ आकार के देख पड़ते हैं उनको परिवेप कहते हैं १॥

तेरक्तनीलपांडुरकापोताऽभ्राभशवलहरिशुक्लाः॥
इन्द्रयमवरुणनिर्ऋतिश्वसनेशपितामहाऽग्निकृताः २॥

रक्तआदि रंगके परिवेप इंद्र आदि देवता करते हैं। अर्थात् रक्तवर्ण परिवेप होय तो इंद्रका किया नीला यमका थोड़ा सा श्वेत वरुणका कपोत वर्ण निर्ऋतिका मेघकेतुल्य वर्ण वायुका कृष्ण श्वेत वर्ण शिवका हरा ब्रह्माका किया औ शुक्ल वर्ण परिवेप सूर्य अथवा चंद्रमाको होयतो अग्निका कियाजानो २॥

धनदःकरोतिमेचकमन्योन्यगुणाश्रयेणचाप्यन्ये॥
प्रविलीयतेमुहुर्मुहुरल्पफलःसोपिवायुकृतः ३॥

कुवेरका किया परिवेप श्यामवर्ण होता है। इसी भांति इन्द्र आदि और देवताभी रक्त आदि जो गुणकहे उनके परस्पर आश्रयसे परिवेप करते हैं अर्थात् एकके रंगमें दूसरे का रंग मिलता है इसीसे परिवेप में कई रंग होतेहैं। जो परिवेप बारवार होकर मिटजाय वहभी वायुका किया होता है औ थोड़ा फल करता है ३॥

चापशिखिरजततैलक्षीरजलाभःस्वकालसंभूतः॥
अविकलवृत्तःस्निग्धःपरिवेपःशिवसुभिक्षकरः ४॥

शिशिर आदि छःऋतुओंमें क्रमसे चापपक्षी [नीलकंठ] मयूर चांदी तेल

दूध औ जलके तुल्य रंगका परिवेप होय उसका वृत्त अखंडितहो औ निर्मलहो ऐसा परिवेप प्रजामें कल्याण औ सुभिक्ष करता है ४ ॥

सकलगगनानुचारीनैकाभःक्षतजसन्निभोरूक्षः ॥
असकलशकटशरासनशृङ्गाटकवत्स्थितःपापः ५ ॥

जो परिवेप सब आकाश में गमन करे अर्थात् उदयसे लेकर अस्ततक सूर्य अथवा चन्द्रके साथरहै। अनेक वर्णका होय रुधिरके तुल्यवर्णका हो रूखा हो खंडितहो गाड़ी धनुष अथवा शृंगाटकी भांति त्रिकोण आकार हो वह परिवेष अशुभ होता है ५ ॥

शिखिगलसमेऽतिवर्षंबहुवर्णेनृपवधोभयंधूम्रे ॥
हरिचापनिभेयुद्धान्यशोककुसुमप्रभेचापि ६ ॥

मयूर के कण्ठ के तुल्य रंगका परिवेप होय तो बहुत वर्षा होती है। बहुत रंग का परिवेप होय तो राजाका मृत्यु होता है। धूम्रवर्ण होय तो भयहोता है। इन्द्र धनुषके तुल्य वर्ण अथवा अशोक वृक्षके पुष्पके समान रक्तवर्ण परिवेष होय तो युद्ध होतेहैं ६ ॥

वर्णेनैकेनयदाबहुलस्निग्धःक्षुराभ्रकाकीर्णः ॥
स्वर्तौसद्योवर्षंकरोतिपीतश्चदीप्तार्कः ७ ॥

एक रंगका परिवेपहो गहरा औ निर्मलहो औ अपनी ऋतुके रंगकाहो औ क्षुर अर्थात् अस्तुरेके तुल्य मेघों करके व्याप्तहो ऐसा परिवेप शीघ्र वर्षा करता है। औ जो परिवेप पीतवर्णहो औ अति देदीप्यमान सूर्य जिसके बीचमें हो ऐसा परिवेष भी शीघ्रवर्षा करता है ७ ॥

दीप्तविहङ्गमृगरुतःकलुषःसंध्यात्रयोत्थितोऽतिमहान् ॥
भयकृत्तडिदुल्काद्यैर्हतोनृपंहन्तिशस्त्रेण ८ ॥

दीप्त अर्थात् सूर्यकी ओर मुखकरके पक्षी औ मृग परिवेप के समय शब्द-करें औ परिवेष मलिनहो प्रातःकाल मध्याह्न औ सायंकाल समयहो बहुत बड़ाहो ऐसा परिवेप भय करताहै। औ जो परिवेप बिजली उल्का आदिकरके ताड़ितहोय तो शस्त्रसे राजा माराजाय ८ ॥

प्रतिदिनमर्कहिमांशोरहर्निशंरक्तयोर्नरेन्द्रवधः ॥
परिविष्टयोरभीक्ष्णंलग्नास्तमयस्थयोस्तद्वत् ९ ॥

नित्यही दिनरात सूर्य औ चन्द्रमा रक्तवर्णरहें अर्थात् दिनमेंसूर्य औ रात्रिको चन्द्रमा रक्तवर्णहोय तो राजाका मरणहोय। उदय औ अस्तके समयसूर्य औ चन्द्रमाको बारबार परिवेप होतोभी राजा का मरण होय ९ ॥

सेनापतेर्भयकरोद्विमंडलोनातिशस्त्रकोपकरः ॥
त्रिप्रभृतिशस्त्रकोपंयुवराजभयंनगररोधम् १० ॥

जिस परिवेप के दो मण्डलहों वह सेनाके स्वामीको भयकरता है औ बहुत युद्धनहीं कराता। तीन मण्डल का परिवेप होय तो युद्ध चार मंडलका होय तो राजाके युवराजको भय औ पांचमंडलका परिवेप होय तो राजा के नगर को शत्रु घेरलेवें १० ॥

वृष्टिस्त्र्यहेणमासेनविग्रहोवाग्रहेन्दुभनिरोधे ॥
होराजन्माधिपयोर्जन्मर्क्षेचाऽशुभोराज्ञः ११ ॥

चन्द्रमाके परिवेप के भीतर भौमआदि कोई ग्रह औ नक्षत्र होय तो तीन दिनमें वर्षाहोय अथवा एक महीने में युद्धहोय। जिस राजा के जन्मलग्नका स्वामी जन्म राशिका स्वामी औ जन्म नक्षत्र परिवेप के बीच आजायँ उस राजाको अशुभ होताहै ११ ॥

परिवेपमंडलगतोरवितनयःक्षुद्रधान्यनाशकरः। जनयतिचवातवृष्टिंस्थावरकृपिकृन्निहंताच १२ भौमेकुमारबलपतिसैन्यानांविद्रवोऽग्निशस्त्रभयम्॥जीवेपरिवेपगतेपुरोहितामात्यनृपपीडा १३ मंत्रिस्थावरलेखकपरिवृद्धिश्चन्द्रजेसुवृष्टिश्च ॥ शुक्रेयायिक्षत्रियराज्ञीपीडाप्रियंचान्नम् १४ क्षुदनलमृत्युनराधिपशस्त्रेभ्योजायतेभयंकेतौ। परिविष्टेगर्भभयंराहौव्याधिर्नृपभयंच १५ ॥

सूर्य चन्द्रके परिवेपके भीतर शनैश्चर होयतो कांगनी आदि छोटे अन्नोंका नाश करता है। पवनयुक्त वर्षा करताहै औ वृक्ष आदि स्थावर पदार्थ औ खेती करनेवाले नाशको प्राप्त होते हैं १२ मंगल परिवेपके बीच होय तो राजकुमार सेनापति औ सेनाको व्याकुलता होय अग्नि औ शस्त्रका भयहोय बृहस्पति परिवेपमें होय तो पुरोहित राजाकेमन्त्री औ राजाको पीड़ाहोय १३ बुधपरिवेपमें होय तो राजाओं के मन्त्री वृक्ष आदि स्थावर औ लेखक वृद्धि को प्राप्त होते हैं औ वर्षा अच्छी होती है। शुक्र परिवेप में होय तो चढ़कर जानेवाले राजा क्षत्रियजाति औ राजाकी रानी पीड़ाको प्राप्तहोते हैं १४ औ दुर्भिक्ष भी होता है। धूमकेतु परिवेपमें होय तो दुर्भिक्ष अग्नि मरी राजा औ युद्धसे प्रजाको भय होय। औ राहु परिवेप में होय अर्थात् चन्द्रग्रहणके समय परिवेप होयतो गर्भोंको भयहोय रोग होयँ औ राजाकोभी भयहोय १५ ॥

युद्धानिविजानीयात्परिवेषाभ्यन्तरेद्वयोर्ग्रहयोः॥ दिवसकृतःशशिनोवाक्षुदवृष्टिभयंत्रिपुप्रोक्तम् १६ यातिचतुर्षुनरेन्द्रःसामात्यपुरोहि

तोवशंमृत्योः ॥ प्रलयमिवविद्धिजगतःपञ्चादिषुमण्डलस्थेषु १७॥

भौम आदि ग्रहों में से कोई दो ग्रह सूर्य अथवा चन्द्रके परिवेष के भीतर होयँ तो युद्धहोतेहैं। तीनग्रहपरिवेषमें होयँ तो दुर्भिक्षसे औ वर्षा न होनेसे भय होय १४ चार ग्रह परिवेषमें होयँ तो मन्त्री औ पुरोहित सहित राजा मृत्युके वश होता है। पांच छःग्रह परिवेषमें होयँ तो जगत् का प्रलयसाही जानो १७॥

तारग्रहस्यकुर्यात्पृथगेवसमुत्थितोनरेन्द्रवधम्॥
नक्षत्राणामथवायदिकेतोर्नोदयोभवति १८॥

भौम आदि जो ताराग्रह औ अश्विनी आदि नक्षत्रइनमें से किसी एकको परिवेष अलग हो अर्थात् सूर्य चन्द्रके साथ न होतो राजाका मृत्युहोय परन्तु उस परिवेष होनेके अनन्तर जो केतुका उदय न होय। अर्थात् केतुका उदय होजाय तो परिवेषका फलनहीं होता केतु काही फल होताहै १८॥

विप्रक्षत्रियविट्शूद्रहाभवेत्प्रतिपदादिषुक्रमशः॥ श्रेणीपुरकोशानांपञ्चम्यादिष्वशुभकारी १९ युवराजस्याष्टम्यांपरतस्त्रिषुपार्थिवस्य दोषकरः॥ पुररोधोद्वादश्यांसैन्यक्षोभस्त्रयोदश्याम् २० नरपतिपत्नीपीडांपरिवेषोऽभ्युत्थितश्चतुर्दश्याम्॥ कुर्यात्तुपञ्चदश्यांपीडांमनुजाधिपस्यैव २१॥

प्रतिपदा आदि चार तिथियों में परिवेष होय तो ब्राह्मण आदि चारोंवर्णों को क्रमसे पीड़ाहोय पंचमी को परिवेष होय तो श्रेणी को अशुभ होताहै। एक जातिके मनुष्योंके समूह को श्रेणी कहते हैं षष्ठीको परिवेष होय तो नगर को अशुभ होय सप्तमीको परिवेष होय तो राजाके कोशको अशुभ होता है १९ अष्टमी को परिवेष होय तो युवराज को औ नवमी आदि तीन तिथियों में परिवेष होय तो राजाको दोष करता है। द्वादशी को परिवेष होय तो नगरको शत्रुघेरलेवें त्रयोदशी को परिवेष होय तो सेनामें क्षोभ होय २० चतुर्दशी को परिवेष होय तो राजा की रानीको पीड़ा होय। औ अमावास्या अथवा पूर्णमासी को परिवेष होय तो भी राजाकोही पीड़ा करता है २१॥

नागरकाणामभ्यन्तरस्थितायायिनांचबाह्यस्था॥ परिवेषमध्यरेखाविज्ञेयाक्रन्दसाराणाम् २२ रक्तःश्यामोरूक्षश्चभवतियेषांपराजयस्तेषाम्॥ स्निग्धःश्वेतोद्युतिमान्येषांभागोजयस्तेषाम् २३॥

इतिश्रीवराहमिहिरकृतौबृहत्संहितायांपरिवेषलक्षणंनामचतुस्त्रिंशोऽध्यायः ३४॥

परिवेष में तीन रेखा होती हैं उनमें भीतरकी रेखासे नगरमें स्थित राजा का शुभ अशुभ विचार करै बाहरकी रेखासे चढ़करजानेवाले राजा का विचार करै औ मध्यकी रेखासे आक्रंदसार का शुभ अशुभ विचारै। नीतिशास्त्र में वारहप्रकारके राजालिखे हैं उनमें एक आक्रंदसार भी है २१ जिनकी रेखा रक्तवर्ण श्यामवर्ण औ रूक्ष होय उनका पराजय होता है। औ जिनकी रेखा निर्मल श्वेत औ कान्ति करके युक्त हो उनका जय होता है २३॥

श्रीवराहमिहिराचार्यकीबनाईवृहत्संहितामेंपरिवेषलक्षण नामचौंतीसवांअध्यायसमाप्तहुआ ३४॥

पैंतीसवांअध्याय॥

इन्द्रायुधलक्षण॥

सूर्यस्यविविधवर्णाःपवनेनविघट्टिताःकराःसाभ्रे॥
वियतिधनुःसंस्थानायेदृश्यन्तेतदिन्द्रधनुः १॥

मेघसहित आकाशमें पवनकरके रोकेहुयेसूर्यके किरण धनुषके आकार होकर अनेक रंगके देखपड़ते हैं उसीको इन्द्रधनुष कहते हैं १॥

केचिदनन्तकुलोरगनिःश्वासोद्भूतमाहुराचार्याः॥
तद्यायिनांनृपाणामभिमुखमजयावहंवहति २॥

कश्यप आदि कोई आचार्य कहते हैं कि अनंत नागके कुल में उत्पन्न सर्पों के श्वाससे इन्द्रधनुष बनताहै। चढ़कर जानेवाले राजाओं के सम्मुख वह इन्द्रधनुष होय तो उनका पराजय होताहै २॥

अच्छिन्नमवनिगाढंद्युतिमत्स्निग्धंघनंविविधवर्णम्॥
द्विरुदितमनुलोमंचप्रशस्तमम्भःप्रयच्छतिच ३॥

वह इन्द्रधनुष अखंडित भूमिमें लगाहुआ कान्तियुक्त स्निग्ध गहरा अनेक वर्णों करके युक्त औ दो भागमें स्थित अर्थात् वरावर दो धनुष औ चढ़कर जानेवाले राजाके पृष्ठ भागमें स्थित होय तो शुभफल करताहै। औ वर्षा भी करता है ३॥

विदिगुद्भूतंदिक्स्वामिनाशनंव्यभ्रजंमरककारि॥
पाटलपीतकनीलैःशस्त्राग्निक्षुत्कृतादोषाः ४॥

अग्निकोण आदि विदिशा अर्थात् कोणोंमें इन्द्रधनुष उत्पन्न होय तो उस दिशाके स्वामीका मृत्यु होताहै। दिशाओंके स्वामी आगे शाकुनाध्याय में कहेंगे॥ बिना मेघों के आकाश में इन्द्र धनुष होय तो मरी पड़ती है। श्वेत रक्त वर्ण का इन्द्रधनुष होय तो शस्त्रसे भय अर्थात् युद्ध होयँ। पीले रंगका

इन्द्रधनुष होय तो अग्नि लगने का उपद्रव होय औ नीले रंगका इन्द्रधनुष होय तो दुर्भिक्ष पड़ै ४ ॥

जलमध्येऽनावृष्टिर्भुविसस्यवधस्तरौस्थितेव्याधिः ॥
वल्मीकेशस्त्रभयंनिशिसचिववधायधनुरैन्द्रम् ५ ॥

जलके बीच इन्द्रका धनुष देखपड़े अर्थात् इन्द्रधनुषका अग्र जलके ऊपर हो तो वर्षा नहींहोती। भूमिपर इन्द्रधनुष होय तो खेतीका नाश होताहै वृक्ष पर इन्द्रधनुष होय तो प्रजामें रोग होवैं। सर्पकी बांबीके ऊपर इन्द्रधनुषहोय तो शस्त्रभय अर्थात् युद्ध होय। और रात्रिके समय इन्द्रधनुष देखपड़े तो राजा के मंत्री का मृत्यु होय ५ ॥

वृष्टिंकरोत्यवृष्टयांवृष्टिंवृष्टयांनिवारयत्यैन्द्र्याम् ॥
पश्चात्सदैववृष्टिंकुलिशभृतश्चापमाचष्टे ६ ॥

वर्षा बरसते हुये पूर्व दिशामें इन्द्रधनुष देखपड़ै तो वर्षा निवृत्त होजातीहै औ विनावर्षा पूर्वदिशामें इन्द्रधनुष होनेसे वर्षा होती है। पश्चिम दिशा में इन्द्रधनुष होय तो सदाही वर्षाको कहताहै अर्थात् पश्चिम इन्द्रधनुष होनेसे वर्षा होतीही है ६ ॥

चापंमघोनःकुरुतेनिशायामाखंडलायांदिशिभूपपीडाम् ॥
याम्यापरोदक्प्रभवंनिहन्यात्सेनापतिंनायकमन्त्रिणौच ७ ॥

रात्रिके समय पूर्वदिशामें इन्द्रधनुष देखपड़ै तो राजाओंको पीड़ा होतीहै। दक्षिण दिशामें होय तो सेनापतिका मृत्यु होय। पश्चिम दिशामें इन्द्रधनुष होय तो नायक अर्थात् प्रधान पुरुष का मृत्युहोय। और रात्रिके समय उत्तर दिशामें इन्द्रधनुष देखपड़े तो राजाके मंत्री का नाशहोय ७ ॥

निशिसुरचापंसितवर्णाद्यंजनयतिपीडांद्विजपूर्वाणाम् ॥
भवतिचयस्यांदिशितद्देश्यंनरपतिमुख्यंनचिराद्धन्यात् ८ ॥

इतिश्रीवराहमिहिरकृतौबृहत्संहितायामिन्द्रायुधलक्षणं
नामपंचत्रिंशोऽध्यायः ॥ ३५ ॥

रात्रिके समय श्वेत रक्त पीत औ कृष्ण वर्णका इन्द्रधनुष होय तो क्रमसे ब्राह्मण आदि वर्णोंको पीड़ा होती है। जिस दिशामें रात्रिके समय इन्द्रधनुष होय उस देशका मुख्यराजा शीघ्रही मृत्यु वश होय ८ ॥

श्रीवराहमिहिराचार्यकीवनाईबृहत्संहितामेंइन्द्रायुधलक्षणनाम
पैंतीसवांअध्यायसमाप्तहुआ ॥ ३५ ॥

छत्तीसवांअध्याय ॥

गन्धर्वनगर लक्षण ॥

उदगादिपुरोहितनृपबलपतियुवराजदोषदंखपुरम् ॥
सितरक्तपीतकृष्णंविप्रादीनामभावाय १ ॥

उत्तर आदि चारदिशामें गन्धर्व नगर देखपड़े तो क्रमसे राजाका पुरोहित राजा सेनापति औ युवराजको अशुभ करताहै श्वेत रक्त पीत औ कृष्ण वर्ण का गन्धर्व नगर होय तो क्रमसे ब्राह्मण आदि चारवर्णोंका नाश करता है १॥

नागरनृपतिजयावहमुदक्विदिक्स्थंविवर्णनाशाय ॥
शान्ताशायांदृष्टंसतोरणंनृपतिविजयाय २ ॥

उत्तर दिशामें गंधर्वनगर होय तो नगरके राजाका जयहोता है। आग्नेय आदि कोणोंमें होय तो वर्णसंकरोंका नाश होताहै। शांत दिशामें गन्धर्वनगर होय औ तो रणयुक्त होय तो राजाका जयहोता है २ ॥

सर्वदिगुत्थंसततोत्थितंचभयदंनरेन्द्रराष्ट्राणाम् ॥
चौराऽटविकान्हन्याद्धूमानलशक्रचापाभम् ३ ॥

सब दिशाओंमें नित्य गन्धर्वनगर देखपड़े तो राजा औ देशको भयदेताहै। धूम अग्नि अथवा इन्द्रधनुषके तुल्य कांतिका गन्धर्वनगर होय तो चोर औ वनमें रहनेवाले भील आदि मारेजातेहैं ३ ॥

गन्धर्वनगरमुत्थितमापाण्डुरमशनिपातवातकरम् ॥
दीप्तेनरेन्द्रमृत्युर्वामेऽरिभयंजयःसव्ये ४ ॥

पांडुर रंगका गन्धर्वनगर होय तो अशनि गिरे औ प्रचण्ड पवनचले दीप्ति दिशामें गन्धर्वनगर होय तो राजाका मृत्युहोय। सेनाके अथवा नगरके बाईं ओर गन्धर्वनगर होय तो शत्रुभय होताहै औ दहिनीओर होय तो जयदेताहै। शांत औ दीप्ति दिशाका लक्षण आगे शाकुनाध्याय में कहेंगे ४ ॥

अनेकवर्णाकृतिखेप्रकाशतेपुरंपताकाध्वजतोरणान्वितम् ॥
यदातदानागमनुष्यवाजिनांपिबत्यसृग्भूरिरणेवसुन्धरा ५ ॥

श्रीवराहमिहिरकृतौबृहत्संहितायांगन्धर्वनगरलक्षणंनामषट्त्रिंशोऽध्यायः ३६॥

जिसकालमें अनेक वर्ण औ अनेक आकार का गन्धर्वनगर पताका ध्वज औ तोरण करके युक्त आकाश में देखपड़े तब युद्ध के बीच हाथी मनुष्य औ घोड़ों का बहुत रुधिर भूमि पानकरती है ५ ॥

श्रीवराहमिहिराचार्यकीबनाईहुई बृहत्संहितामेंगन्धर्वनगर
लक्षणनामछत्तीसवांअध्यायसमाप्तहुआ ३६ ॥

सैंतीसवांअध्याय ॥

प्रतिसूर्यलक्षण ॥

प्रतिसूर्यकःप्रशस्तोदिवसकृदृतुवर्णसप्रभःस्निग्धः ॥
वैदूर्यनिभःस्वच्छःशुक्लश्चापिक्षेमसुभिक्षः १ ॥

सूर्य के समीप दूसरा सूर्य देखपड़े उसको प्रतिसूर्य कहते हैं। वह प्रति सूर्य जो सूर्य के छःऋतु के रंग कहे हैं उसरंगकाहो अर्थात् उस ऋतु में जो रंग सूर्यका होना चाहिये वही रंग प्रतिसूर्य का हो स्निग्धहो वैदूर्यमणि (पन्ना) के तुल्य रंगहो निर्मल औ श्वेतहो वह क्षेम औ सुभिक्ष करता है १

पीतोव्याधिंजनयत्यशोकरूपश्चशस्त्रकोपाय ॥
प्रतिसूर्याणांमालादस्युभयातङ्कनृपहन्त्री २ ॥

पीले रंगका प्रतिसूर्य होय तो प्रजामें रोग उत्पन्न करता है। अशोक पुष्प के तुल्य रक्तवर्ण प्रतिसूर्यहोय तो शस्त्रकोप अर्थात् युद्ध होताहै। प्रति सूर्योंकी पंक्ति देखपड़े तो चोर भयहोय रोगहोयँ और राजाका मृत्युहोय २ ॥

दिवसकृतःप्रतिसूर्योजलकृदुदग्दक्षिणेस्थितोऽनिलकृत् ॥
उभयस्थःसलिलभयंनृपमुपरिनिहन्त्यधोजनहा ३ ॥

इतिश्रीवराहमिहिरकृतौबृहत्संहितायांप्रतिसूर्यलक्षणंनाम सप्तत्रिंशोऽध्यायः ॥ ३७ ॥

सूर्यबिम्ब के उत्तरकीओर प्रतिसूर्य देखपड़े तो वर्षा करता है। दक्षिण की ओरहोय तो पवन चलता है। सूर्य बिम्ब के दोनोंओर दोप्रति सूर्यहोयँ तो बहुत वर्षाहोनेसे भय होताहै। सूर्य बिम्ब के ऊपर प्रतिसूर्यहोय तो राजा का मृत्युहोय औ नीचे प्रतिसूर्यहोय तो प्रजामें मरीपड़े ३ ॥

श्रीवराहमिहिराचार्यकी बनाई बृहत्संहितामें प्रतिसूर्यलक्षणनाम सैंतीसवां अध्याय समाप्त हुआ ॥ ३७ ॥

अड़तीसवां अध्याय ॥

रजोलक्षण ॥

कथयन्तिपार्थिववधंरजसाघनतिमिरसंचयनिभेन ॥
अभिभाव्यमानगिरिपुरतरवःसर्वादिशश्छन्नाः १ ॥

अन्धकार के तुल्य अति कृष्णवर्ण धूलिकरके सबदिशा ढकीजायँ कि जिन में पर्वत नगर वृक्ष कुछभी न देखपड़ें तो राजा का मृत्यु होताहै १ ॥

यस्यांदिशिधूमचयःप्राक्प्रभवतिनाशमेतिवायस्याम् ॥
आगच्छतिसप्ताहात्तत्रैवभयंनसन्देहः २ ॥

पहिले जिसदिशा में धूम समूह अर्थात् धूलिदेखपड़ै अथवा जिस दिशा में वह धूमसमूह पहिले निवृत्तहोय उसदिशा में सातदिन में अवश्यही भयआता है २ ॥

श्वेतेरजोघनौघेपीडास्यान्मन्त्रिजनपदानांच ॥
नचिरात्प्रकोपमुपयातिशस्त्रमतिसंकुलासिद्धिः ३ ॥

धूलिरूप मेघ समूह श्वेतवर्णका होय तो राजा के मंत्री औ देशोंको पीड़ा होती है। शीघ्रही युद्धहोता है औ कार्यकी सिद्धि अतिसंकुल होती है अर्थात् कष्टसे कार्यकी सिद्धिहोती है ३ ॥

अर्कोदयेविजृम्भतियदिदिनमेकंदिनद्वयंवापि ॥
स्थगयन्निवगगनतलंभयमत्युग्रंनिवेदयति ४ ॥

सूर्योदय के समय आकाशको मानों आच्छादन करताहुआ धूलि एकदिन अथवा दोदिन वृद्धिको प्राप्तहोय तो बड़ाभय होता है ४ ॥

अनवरतसंचयवहंरजनीमेकांप्रधाननृपहन्तृ ॥
क्षेमायचशेषाणांविचक्षणानांनरेन्द्राणाम् ५ ॥

एकरात्रि निरन्तर धूलिकी वृद्धिहोतीजाय तो मुख्य राजा का मृत्युहोता है औ शेष जो बुद्धिमान् राजा हैं उनको शुभफल करता है ५ ॥

रजनीद्वयंविसर्पतियस्मिन्राष्ट्रेरजोघनंबहुलम् ॥
परचक्रस्यागमनंतस्मिन्नपिसन्निबोद्धव्यम् ६ ॥

जिस राज्य में दोरात्रितक बहुत औ गहरी धूलि फैले उसमें परचक्र अर्थात् शत्रुकी सेना आवै यहजानै ६ ॥

निपततिरजनीत्रितयंचतुष्कमप्यन्नरसविनाशाय ॥
राज्ञांसैन्यक्षोभोरजसिभवेत्पञ्चरात्रभवे ७ ॥

तीन अथवा चाररात्रि पांशुकी वर्षाहोय तो अन्नका औ लवण आदि रसोंका नाश होताहै। औ पांच रात्रितक धूलिबरषै तो राजाओं की सेना में क्षोभ होता है ७ ॥

केत्वाद्युदयविमुक्तंयदारजोभवतितीव्रभयदायि ॥
शिशिरादन्यत्रर्तौफलमविकलमाहुराचार्याः ८ ॥

इतिरजोलक्षणंनामाऽष्टत्रिंशोऽध्यायः ३८ ॥

पांशुवर्षा के अनन्तर धूमकेतु का उदय आदि कुछ उत्पात न होय तो बड़ा भयहोताहै। अर्थात् दूसरा उत्पात होजानेसे पांशुवर्षाका फल नहींहोता उसी उत्पातका फलहोता है। शिशिरऋतुके विना और ऋतुमें पांशुवर्षा होय तो

ठीक २ फलहोताहै। अर्थात् शिशिर ऋतुमें पांशुवृष्टिका कुछफल नहीं ८॥
इतिरजोलक्षणनामअड़तीसवांअध्यायसमाप्तहुआ॥ ३८॥
यहअध्यायक्षेपकहैवराहमिहिराचार्यकाबनायानहीं है॥

उनतालीसवांअध्याय॥

निर्घातलक्षण॥

पवनःपवनाऽभिहतोगगनादवनौयदासमापतति॥
भवतितदानिर्घातःसचपापोदीप्तविहगरुतः १॥

एक पवन करके दूसरा पवन ताड़ित होकर आकाशसे जब भूमिपरगिरे उससमय शब्दहोता है उसकोनिर्घात कहते हैं। उस निर्घातके समय दीप्त अर्थात् सूर्यकी ओर मुखकरके पक्षीशब्दकरें तो अशुभ फलहोता है १॥

अर्कोदयेधिकरणिकनृपधनियोधाऽङ्गनावणिग्वेश्याः॥ आप्रहरांशेऽजाविकमुपहन्याच्छूद्रपौरांश्च २ आमध्याह्नाद्राजोपसेविनो ब्राह्मणांश्चपीडयति॥ वैश्यजलदांस्तृतीयेचौरान्प्रहरेचतुर्थेच ३ अस्तंयातेनीचान्प्रथमेयामेनिहन्तिसस्यानि॥ रात्रौद्वितीययामेपिशाचसंघान्निपीडयति ४ तुरगकरिणस्तृतीयेविनिहन्याद्यायिनश्च तुर्थेच॥ भैरवजर्जरशब्दोयातियतस्तांदिशंहन्ति ५॥

इतिश्रीवराहमिहिरकृतौबृहत्संहितायांनिर्घातलक्षणंनामैको-
नचत्वारिंशोऽध्यायः ३९॥

सूर्योदय के समय अर्थात् दो घड़ी दिनचढ़ेतक निर्घात शब्दहोय तो राजकार्यके अधिकारी राजा धनवान् युद्ध करनेवाले स्त्री बनियें औ वेश्याओं का नाशहोता है। एक पहर दिनचढ़े तक निर्घातशब्दहोय तो बकरी भेड़ शूद्र औ नगरके निवासियोंका क्षयहोता है २ दो पहरतक निर्घात शब्दहोय तो राज सेवा करनेवाले पुरुष औ ब्राह्मण पीड़ाको प्राप्तहोतेहैं। तीसरे पहरमें निर्घात होय तो वैश्य औ मेघोंका क्षय होताहै। चौथे पहरमें निर्घात होयतो चोरोंको पीड़ाहोतीहै ३ सूर्यास्तके समय निर्घात शब्दहोयतो नीचपुरुषोंका नाशहोता है। रात्रिके प्रथम प्रहरमें निर्घात शब्दहोयतो खेतीका नाशकरै। रात्रिके दूसरे पहर में निर्घात शब्दहोयतो पिशाचों के समूहको पीड़ादेताहै ४ तीसरेपहर में निर्घात शब्दहोय तो हाथी औ घोड़ोंका नाश करताहै। औ रात्रिके चतुर्थ प्रहर में निर्घात शब्दहोय तो यायी अर्थात् शत्रुपरचढ़ाई करनेवाले राजाका

नाशहोय। भयंकर औ जर्जर अर्थात् फटाहुआ निर्घात शब्द जिस दिशा को जाय उसदिशाका नाश करता है ५॥

श्रीवराहमिहिराचार्यकीवनाईवृहत्संहितामेंनिर्घातलक्षणनाम उनतालीसवांअध्यायसमाप्तहुआ ३९॥

चालीसवांअध्याय॥

सस्यजातक॥

वृश्चिकवृषप्रवेशेभानोर्येवादरायणेनोक्ताः॥
ग्रीष्मशरत्सस्यानांसदसद्योगाःकृतास्तइमे १॥

सूर्यवृश्चिकराशिमें प्रवेशहोय उसदिन वृश्चिकलग्नकल्पनाकर ग्रीष्मऋतुके अन्न यव गेहूं आदिके शुभअशुभ विचारके योग औ वृषमें सूर्यका प्रवेशहो उस दिन वृषलग्नमान सवग्रहराशियोंमें लिख शरत् ऋतुके अन्न धान आदिके शुभ अशुभयोग जो वादरायण मुनिने कहेवेही योग हमने इसअध्यायमें लिखे हैं१॥

भानोरलिप्रवेशेकेन्द्रैस्तस्माच्छुभग्रहाक्रान्तैः॥
वलवद्भिःसौम्यैर्वानिरीक्षितेग्रैष्मिकविवृद्धिः २॥

वृश्चिकराशिपर सूर्यआवे उसदिन सूर्य के केंद्रस्थानोंमें शुभग्रह वैठे होयँ तो ग्रीष्मऋतुके अन्नकी वृद्धिहोती। अथवा सौम्यग्रह केंद्रोंमें न होयँ और स्थानोंमें वैठे होयँ औ वलवान् होकर सूर्यको देखें तो भी ग्रीष्मऋतु के अन्नकी वृद्धिहोती है २॥

अष्टमराशिगतेऽर्केगुरुशशिनोःकुम्भसिंहसंस्थितयोः॥
सिंहघटसंस्थयोर्वानिष्पत्तिर्ग्रीष्मसस्यस्य ३॥

वृश्चिकका सूर्य होय उससमय कुंभका वृहस्पति औ सिंहका चन्द्रमा होय अथवा सिंहका वृहस्पति औ कुंभका चन्द्रमा होय तो ग्रीष्मऋतु के अन्नकी वृद्धिहोती है ३॥

अर्कात्सितेद्वितीयेवुधेऽथवायुगपदेववास्थितयोः॥
व्ययगतयोरपितद्वन्निष्पत्तिरतीवगुरुदृष्ट्या ४॥

वृश्चिक राशिमें स्थित सूर्यसे दूसरेस्थानमें शुक्रहोय वुधहोय अथवा दोनों होयँ। इसीप्रकार सूर्य्यसे वारहवें स्थानमें शुक्रहोय वुधहोय अथवा दोनोंहोयँ और सूर्यपर वृहस्पतिकी दृष्टिहोय तो वहुत खेतीहोय ४॥

शुभमध्येऽलिनिसूर्याद्गुरुशशिनोःसप्तमेपरासंपत्॥
अल्पादिस्थेसवितरिगुरौद्वितीयेऽर्द्धनिष्पत्तिः ५॥

वृश्चिक राशिके वारहवें औ दूसरे स्थानमें वुध शुक्रमेंसे एक २ ग्रह होय

औ वृश्चिकस्थ सूर्य्यके सप्तम स्थानमें वृहस्पति औ चन्द्रमा होयँ तो बहुत उत्तम खेतीहोय वृश्चिकके प्रारम्भमें सूर्यहो औ उसके दूसरेस्थानमें वृहस्पति होय तो आधी खेती होती है ५॥

लाभहिवुकाऽर्थयुक्तैःसूर्यादलिगात्सितेन्दुशशिपुत्रैः॥
सस्यस्यपरासंपत्कर्मणिजीवेगवांचाग्र्या ६॥

वृश्चिकराशिस्थ सूर्य्य से ग्यारहवें शुक्र चतुर्थचन्द्र औ दूसरे स्थानमें बुध होय तो खेती बहुत होतीहै। औ इस योगमें वृहस्पति सूर्यसे दशमस्थान में होय तो खेती होय औ गौओंकी बहुतवृद्धिहोय अर्थात् दूध बहुत होय ६॥

कुम्भेगुरुर्गविशशीसूर्योऽलिमुखेकुजाऽर्कजौमकरे॥
निष्पत्तिरस्तिमहतीपश्चात्परचक्ररोगभयम् ७॥

सूर्य वृश्चिकके प्रारम्भमें होय कुम्भमें वृहस्पति वृषमें चन्द्रमा मङ्गल औ शनैश्चर मकरमेंहोयँ तो बहुतखेतीहोय परन्तु पीछेसे परचक्र (शत्रुकीसेना) का औ रोगका भयहोताहै ७॥

मध्येपापग्रहयोःसूर्यःसस्यंविनाशयत्यलिगः॥
पापःसप्तमराशौजातंजातंविनाशयति ८॥

वृश्चिकस्थ सूर्य मंगल औ शनैश्चरके मध्यमेंहोय तो खेतीका नाशकरता है। औ वृश्चिकस्थ सूर्यसे सातवीं राशिमें शनि अथवा भौमहोय तो उत्पन्न होती होती खेतीका नाश करताहै ८॥

अर्थस्थानेक्रूरःसौम्यैरनिरीक्षितःप्रथमजातम्॥
सस्यंनिहन्तिपश्चादुप्तंनिष्पादयेद्व्यक्तम् ९॥

वृश्चिकस्थ सूर्यके दूसरे स्थान में क्रूरग्रह होय औ शुभग्रह कोई उसको न देखताहो तो पहिली खेती नष्टहोजाती है औ पीछे बोई हुई खेती ठीक उत्पन्न होतीहै ९॥

जामित्रकेन्द्रसंस्थौक्रूरौसूर्यस्यवृश्चिकस्थस्य॥
सस्यविपत्तिंकुरुतः सौम्यैर्दृष्टौनसर्वत्र १०॥

वृश्चिकस्थ सूर्यसे सप्तममें क्रूरग्रह भौम शनिमेंसे कोई एकहो औ दूसरा चाहेजिस केन्द्रमेंहो तो खेतीका नाशकरतेहैं। औ उन दोनोंक्रूरग्रहोंपर शुभ ग्रहोंकी दृष्टिहोय तो सब देशोंमें खेतीका नाश नहीं करते किसी २ देशमें खेती होतीभी है १०॥

वृश्चिकसंस्थादर्कात्सप्तमषष्ठोपगौयदाक्रूरौ॥
भवतितदानिष्पत्तिःसस्यानामर्घपरिहानिः ११॥

वृश्चिकस्थसूर्यसे मंगल औ शनिसातवें छठेस्थानमें होंतो खेतीहोती है परंतु भाव महँगा रहता है ११ ॥

विधिनानेनैवरविर्वृषप्रवेशेशरत्समुत्थानाम् ॥
विज्ञेयःसस्यानांनाशायशिवायवातज्ज्ञैः १२ ॥

सूर्यवृषमें प्रवेशकरे उससमय इसी विधिसे शरदृऋतुके अन्नका होना न होना सस्यजातक जाननेवाला पुरुष उससे जाने १२ ॥

त्रिषुमेषादिषुसूर्यःसौम्ययुतोवीक्षितोऽपिवाविचरन् ॥
ग्रैष्मिकधान्यंकुरुतेसमर्घमुभयोपयोग्यंच १३ ॥

मेषआदि तीनराशियोंमें विचरताहुआ सूर्य सौम्यग्रहोंकरके युक्त रहै अथवा शुभग्रहोंकी उसपर दृष्टि रहै तो ग्रीष्मऋतुका अन्न समर्घ (सस्ता) होता है और इतना अन्नहोताहै कि दोनों लोकमें उपयुक्त हो अर्थात् लोक उसअन्नसे अपना निर्वाहकरें औ परलोककेलिये अन्नदानभीकरें १३ ॥

कार्मुकमृगघटसंस्थःशारदसस्यस्यतद्वदेवरविः ॥
संग्रहकालेज्ञेयोविपर्ययःक्रूरदृग्योगात् १४ ॥

इतिश्रीवराहमिहिरकृतौबृहत्संहितायांसस्यजातकंनामचत्वारिंशोऽध्यायः ४०

धनु मकर औ कुंभराशिमें विचरतेहुये सूर्यसे पहिली रीतिकरके शरदृऋतु की खेतीका विचार करै अन्नके संग्रहकालमें क्रूरग्रह भौम शनैश्चरकी दृष्टि औ योगसे विपरीतफलजाने। अर्थात् पापग्रहोंकरके युक्तदृष्टसूर्यहोय तो अन्न का संग्रहकरै १४ ॥

श्रीवराहमिहिराचार्यकीबनाईबृहत्संहितामेंसस्यजातकनाम
चालीसवांअध्यायसमाप्तहुआ ४० ॥

इकतालीसवांअध्याय ॥

द्रव्यनिश्चय ॥

येयेषांद्रव्याणामधिपतयोराशयःसमुद्दिष्टाः ॥
मुनिभिःशुभाऽशुभार्थंतानागमतःप्रवक्ष्यामि १ ॥

कश्यप आदि मुनियों ने जो राशि जिन द्रव्यों के अधिपति कहेहैं उनको शुभ अशुभ फल के ज्ञानकेलिये हम पूर्वशास्त्र के अनुसार कहते हैं १ ॥

वस्त्राविककुतुपानांमसूरगोधूमरालकयवानाम् ॥
स्थलसंभवौषधीनांकनकस्यचकीर्तितोमेषः २ ॥

वस्त्र भेड़के रोमसे बने वस्त्रआदि कुतुप अर्थात्-बकरेकीऊनसेबने कम्बल

अथवा घी तेल रखनेके कुप्पे मसूर गेहूं राल यव इनसबका औ स्थल में जो ओषधी उत्पन्न होती हैं उनका औ सुवर्णका स्वामी मेषहै २॥

गविवस्त्रकुसुमगोधूमशालियवमहिषसुरभितनयाःस्युः ॥
मिथुनेपिधान्यशारदवल्लीशालूककर्पासाः ३॥

वस्त्र पुष्प गेहूं धान यव भैंसे बैल इनकास्वामी वृषहैं। धान्य शरदृतुका अन्नदाखआदि बेल कमल कुमुद आदिकीजड़ औ कपासकास्वामी मिथुनहै३॥

कर्किणिकोद्रवकदलीदूर्वाफलकन्दपत्रचोचानि ॥
सिंहेतुषधान्यरसाःसिंहादीनांत्वचःसगुडाः ४॥

कोद्रव केले दूव फल कन्द तेजपात औ दालचीनी का स्वामी कर्कटहै। तुष धान्य यवआदि मधुर लवण आदि रससिंह आदि जीवों के चर्म औ गुड़ का स्वामी सिंह है ४॥

षष्ठेऽतसीकलायः कुलत्थगोधूममुद्गनिष्पावाः ॥
सप्तमराशौमाषागोधूमाःसर्षपाःसयवाः ५॥

अलसी मटर कुलथी गेहूं मूंग औ निष्पाव अर्थात् एक प्रकारका मटर इन का स्वामी कन्याराशि है। उड़द गेहूं सरसों औ जौ इनका स्वामी तुलाराशि है ५॥

अष्टमराशाविक्षुःसैक्यंलोहान्यजाविकंचापि ॥
नवमेतुतुरगलवणाम्बरास्त्रतिलधान्यमूलानि ६॥

ईख जलसींचनेसे जो वस्तु उत्पन्न होती हैं लोह भेड़ बकरी के ऊन के वस्त्रआदि इनका स्वामी वृश्चिक है घोड़े लवण वस्त्र अस्त्र धनुष आदि तिल धान औ मूल इनसबका स्वामी धनुपराशि है ६॥

मकरेतरुगुल्माद्यंसैक्येक्षुसुवर्णकृष्णलोहानि ॥
कुम्भेसलिलजफलकुसुमरत्नचित्राणिरूपाणि ७॥

वृक्ष गुल्मआदि सींचनेसे जो वस्तु उत्पन्न होती है ईख सुवर्ण औ काला लोह इनसबका स्वामी मकरहै जलसे उत्पन्नहोनेवाले पदार्थ फल पुष्प रत्न चित्ररूप युक्त पदार्थ इन सबका स्वामी कुम्भ है ७॥

मीनेकपालसंभवरत्नान्यम्बूद्भवानिवज्राणि ॥
स्नेहाश्चनैकरूपाव्याख्याताःमत्स्यजातंच ८॥

कपाल से उत्पन्न होनेवाले रत्न मोती आदि जलसे उत्पन्न होनेवाले पदार्थ हीरे अनेकप्रकार के स्नेह घी तेल आदि औ मत्स्योंसे उत्पन्न होनेवाले मोतीआदि इनका स्वामी मीनराशि है ८॥

राशेश्चतुर्दशार्थायसप्तनवपञ्चमस्थितोजीवः ॥ एकादशदशपञ्चाऽष्टमेषुशशिजश्चवृद्धिकरः ९ षट्सप्तमगोहानिंवृद्धिंशुक्रःकरोति शेषेषु ॥ उपचयसंस्थाःक्रूराःशुभदाःशेषेषुहानिकराः १० ॥

जिस राशिके चौथे दशवें दूसरे ग्यारहवें सातवें नवें अथवा पांचवें वृहस्पति हो उस राशि के द्रव्योंकी वृद्धि होती है। राशिसे दूसरे ग्यारहवें दशवें पांचवें अथवा आठवें बुधहोय उसराशि के द्रव्यों की वृद्धिहोती है ९ राशिसे छठे सातवें शुक्रहोय तो उसराशि के द्रव्योंकी हानिकरता है। छठे सातवेंको छोड़ और स्थानों में शुक्रहोय तो उसराशि के द्रव्योंकी वृद्धिकरता है क्रूरग्रह राशि के उपचयस्थान अर्थात् तीसरे छठे दशवें औ ग्यारहवेंहोयँ उसराशिं के द्रव्यों की वृद्धि होती हैं उपचय बिना और स्थानों में क्रूरग्रहहोय तो उसराशि के द्रव्योंकी हानि करते हैं १० ॥

राशेर्यस्यक्रूराःपीडास्थानेषुसंस्थिताबलिनः ॥
तत्प्रोक्तद्रव्याणांमहार्घतादुर्लभत्वंच ११ ॥

जिसराशि के पीड़ा स्थान अर्थात् उपचय विना और स्थानों में क्रूरग्रह बलवान् होकर बैठे उसराशि के द्रव्यमहँगे औ दुर्लभ होजाते हैं ११ ॥

इष्टस्थानेसौम्याबलिनोयेषांभवन्तिराशीनाम् ॥
तद्द्रव्याणांवृद्धिःसामर्घ्यंवल्लभत्वंच १२ ॥

जिन राशियों से अच्छेस्थानों में शुभग्रह बलवान्होकर बैठें उनराशियों के द्रव्यों की वृद्धि होती है वे द्रव्य सस्ते रहते हैं औ सबको उन द्रव्यों की चाह रहती है १२ ॥

गोचरपीडायामपिराशिर्बलिभिःशुभग्रहैर्दृष्टः ॥
पीडांनकरोतितथाक्रूरैरेवंविपर्यासः १३ ॥

इतिश्रीवराहमिहिरकृतौवृहत्संहितायांद्रव्यनिश्चयोनामैकचत्वारिंशोऽध्यायः ४१ ॥

वृहस्पति आदि ग्रहोंके जो पीछे शुभस्थान कहे उनको छोड़ ग्रह राशि के और स्थानों में बैठेहोयँ तो गोचरपीड़ा होताहै। राशिको गोचरपीड़ाहोय औ उस राशिको बलवान् शुभग्रह देखतेहोयँ तो उस राशिके द्रव्योंकी हानिनहीं होती। और राशिको गोचरपीड़ाहोय औ बलवान् क्रूरग्रह उसराशिकोदेखें तो उसराशि के द्रव्योंकी हानि औ महर्घता होती है १३ ॥

श्रीवराहमिहिराचार्यकीबनाईवृहत्संहितामेंद्रव्यनिश्चयनाम
इकतालीसवांअध्यायसमाप्तहुआ ४१ ॥

बयालीसवांअध्याय ॥

अर्घकाण्ड ॥

अतिवृष्ट्युल्कादण्डान्परिवेषग्रहणपरिधिपूर्वांश्च । ॥ दृष्ट्वा ऽमावास्यायामुत्पातान्पूर्णमास्यां च १ ब्रूयादर्घविशेषान्प्रतिमासं राशिषुक्रमात्सूर्ये ॥ अन्यतिथावुत्पाताएतेडमरार्तयेराज्ञाम् २ ॥

प्रतिमहीने मेषआदि राशियों में सूर्य के गमन करनेपर अमावास्या औ पूर्णमासीको अतिवर्षा उल्कापात दण्ड परिवेष ग्रहण औ प्रतिसूर्य आदि उत्पात देखकर महँगे सस्तेभावका विचारकर कहे औ अमावास्या पूर्णमासी विना और किसी तिथिको ये उत्पातहोयँ तो राजाओं को डमर अर्थात् शस्त्र कलह होनेसे पीड़ा होती है। अमावास्या औ पूर्णमासीकोही उत्पात देखकर अन्नके भावका निश्चयकरै १। २ ॥

मेषोपगतेसूर्येग्रीष्मजधान्यस्यसंग्रहंकृत्वा ॥
वनमूलफलस्यवृषेचतुर्थमासेतयोर्लाभः ३ ॥

मेषका सूर्यहोय औ अमावास्या पूर्णमासी को उत्पातहोयँ तो ग्रीष्मऋतु के अन्न यव गेहूं आदिका संग्रह करके औ वृषका सूर्यहोय तो वनमें उत्पन्न होनेवाले मूल औ फलोंका संग्रह करके पीछे उनको चौथे महीने वेचे तो लाभहोता है ३ ॥

मिथुनस्थेसर्वरसान्धान्यानिचसंग्रहंसमुपनीय ॥
षष्ठेमासेविपुलंविक्रेताप्राप्नुयाल्लाभम् ४ ॥

मिथुन के सूर्य में उत्पातदेख लवण मधुरआदि रस औ धानका संग्रहकरै औ छठेमहीनेवेचे तो वेचनेवालेको बड़ालाभहोय ४ ॥

कर्किण्यर्केमधुगन्धतैलघृतफाणितानिविनिधाय ॥
द्विगुणाद्वितीयमासाल्लब्धिर्हीनाधिकेछेदः ५ ॥

कर्कट के सूर्य में उत्पात देख शहत सुगन्ध द्रव्य तेल घी औ फाणित अर्थात् ईखके रससे बने वतासे मिश्री खांड़आदि का संग्रहकर दूसरे महीने वेचे तो दूनालाभहोय परन्तु न्यून अधिककालमें वेचे तो हानि होय ५ ॥

सिंहेसुवर्णमणिचर्मधर्मशस्त्राणिमौक्तिकंरजतम् ॥
पञ्चममासेलब्धिर्विक्रेतुरतोन्यथाछेदः ६ ॥

सिंह के सूर्य में उत्पातदेख सुवर्ण मणि चर्म कवच जो युद्धमें देहकीरक्षा केलिये पहिनकर लड़ाई करतेहैं शस्त्र मोती औ चांदी इनका संग्रहकर पांचवें महीनेवेचे तो वेचनेवालेको लाभहोताहै आगे पीछे वेचनेसे हानिहोती है ६ ॥

कन्यागतेदिनकरेचामरखरकरभवाजिनांकेता ॥
षष्ठेमासेद्विगुणंलाभमवाप्नोतिविक्रीणन् ७ ॥

कन्या के सूर्य में उत्पात देख चँवर गधे ऊंट औ घोड़े मोललेनेवाला छठे महीने वेचे तो दूना लाभपावे ७ ॥

तौलिनितान्तवभाण्डंमणिकम्बलकाचपीतकुसुमानि ॥
आदद्याद्धान्यानिचवर्षार्धाद्द्विगुणितावृद्धिः ८ ॥

तुलाके सूर्यमें उत्पात देख तान्तव भांड अर्थात् सूत ऊनके बनेहुये कपड़े आदि मणि कंवल कांच पीले रंगके पुष्प केसू आदि औ धानका संग्रहकरै औ छःमहीने में वेचे तो दूना लाभ होय ८ ॥

वृश्चिकसंस्थेसवितरिफलकन्दमूलविविधरत्नानि ॥
वर्षद्वयमुषितानिद्विगुणंलाभंप्रयच्छन्ति ९ ॥

वृश्चिक के सूर्य में उत्पात देख फल कन्द मूल औ अनेक प्रकारके रत्नों का संग्रह कर दो वर्ष रखकर वेचे तो दूना लाभहोय ९ ॥

चापगतेगृह्णीयात्कुंकुमशंखप्रवालकाचानि ॥
मुक्ताफलानिचततोवर्षार्धाद्द्विगुणतांयान्ति १० ॥

धनुके सूर्य में उत्पात देख केसर शंख मूंगे कांच औ मोतियोंका संग्रहकर छःमहीने में बेंचे तो दूने दाम होजायँ १० ॥

मृगघटसंस्थेसवितरिगृह्णीयाल्लोहभाण्डधान्यानि ॥
स्थित्वामासंदद्याल्लाभार्थीद्विगुणमाप्नोति ११ ॥

मकर कुम्भके सूर्यमें उत्पात देख लोहकी वस्तु औ अन्नका संग्रहकरएक महीने पीछे बेंचे तो लाभकी इच्छावाले पुरुष को दूना लाभहोय ११ ॥

सवितरिझषमुपयातेमूलफलंकन्दभाण्डरत्नानि ॥
संस्थाप्यवत्सरार्धंलाभमभिष्टंसमाप्नोति १२ ॥

मीनके सूर्य में उत्पात देख मूल फल कन्द और भी अनेकप्रकारके द्रव्य औ रत्नों का संग्रहकर छःमहीने रखकर वेचे तो मनमाना लाभहोय १२ ॥

राशौराशौयस्मिञ्छिशिरमयूखःसहस्रकिरणोवा ॥
युक्तोऽधिमित्रदृष्टस्तत्रायंलाभकोदृष्टः १३ ॥

मेष आदि राशियों में चन्द्र अथवा सूर्य मित्र ग्रह करके युक्त होयँ औ अधिमित्र ग्रह की उनपर दृष्टि होय तो उसराशिके सूर्यमें यह लाभ ठीक २ होता है १३ ॥

सवितृसहितःसंपूर्णोवाशुभैर्युतवीक्षितःशिशिरकिरणःसद्योऽर्घ

स्यप्रवृद्धिकरःस्मृतः ॥ अशुभसहितःसंदृष्टोवाहिनस्त्यथवारविःप्र तिगृहगतान्भावान्बुद्ध्वावदेत्सदसत्फलम् १४ ॥

इतिश्रीवराहमिहिरकृतौबृहत्संहितायामर्घकांडंनामद्वा चत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४२ ॥

अमावास्या अथवा पूर्णमासी को चन्द्रमा शुभग्रहों करके युक्त औ दृष्ट होय तो शीघ्रही अर्घकी वृद्धि करता है अर्थात् सब वस्तु सस्ती होजाती है। औ जो अशुभ ग्रहों करके युक्त दृष्ट चन्द्रमा होय तो भाव घटाता है अर्थात् सब वस्तु महँगी होजाती हैं। इसीप्रकार सूर्यभी अमावास्या औ पूर्णिमा को शुभग्रहों करके युक्त दृष्ट होय तो अर्घकी वृद्धि औ पाप ग्रहों करके युत दृष्ट होय तो अर्घकी हानि करता है। प्रत्येक राशिके जो द्रव्य पीछे कहे उनको जानकर शुभ अशुभ फलकहै १४ ॥

श्रीवराहमिहिराचार्यकीवनाईबृहत्संहितामेंअर्घकांडनामबया लीसवांअध्यायसमाप्तहुआ ॥ ४२ ॥

तेंतालीसवांअध्याय ॥

इन्द्रध्वजसम्पत् ॥

ब्रह्माणमूचुरमराभगवञ्शक्ताःस्मनोऽसुरान्समरे ॥
प्रतियोधयितुमतस्त्वांशरण्यशरणंसमुपयाताः १ ॥

एक समय देवताओं ने ब्रह्माजीसे कहा कि हे भगवन् हम युद्धमें असुरों के साथ सम्मुख होकर युद्ध नहीं करसके इसलिये हे शरण्य आपकी शरण में आये हैं १ ॥

देवानुवाचभगवान्क्षीरोदेकेशवःसवःकेतुम् ॥
यंदास्यतितंदृष्ट्वानाजौस्थास्यन्तिवोदैत्याः २ ॥

यह देवताओंका वचनसुन ब्रह्माजी ने कहा कि हे देवताओ क्षीरसमुद्र में विष्णु भगवान् हैं वे आपको एक ध्वजा देंगे उस ध्वजाको देख आपके सम्मुख युद्धमें दैत्य नहीं ठहरेंगे २ ॥

लब्धवराःक्षीरोदंगत्वातेतुष्टुवुःसुराःसेन्द्राः॥श्रीवत्साङ्ककौस्तुभम णिकिरणोद्भासितोरस्कम् ३ श्रीपतिमचिन्त्यमसमंसमन्ततःसर्वदेहि नांसूक्ष्मम्॥परमात्मानमनादिंविष्णुमविज्ञातपर्यंतम् ४ तैस्संस्तुत स्सदेवस्तुतोषनारायणोददौचैषाम् ॥ ध्वजमसुरसुरवधूमुखकमलव नतुषारतीक्ष्णांशुम् ५ ॥

ब्रह्माजी से वरपाय इन्द्र आदि देवता क्षीरसमुद्रमें जाय श्रीवत्सचिह्न

धारण करनेवाले कौस्तुभमणिके किरणों से देदीप्यमानहै उरःस्थल जिनका ३ लक्ष्मीके पति अचिन्त्य अनुपम सम इसीलिये सब जीवों के बीच सूक्ष्म रूपसे स्थित परमात्मा अनादि व्यापक अनन्त श्रीविष्णु भगवान् की स्तुति करनेलगे ४ उनकी कीहुई स्तुति सुन भगवान् प्रसन्नहुये औ दैत्यस्त्री मुख कमलसमूहके लिये मानों चन्द्र औ देवस्त्री मुखकमल समूहके लिये मानों सूर्य ऐसा एकध्वज उनदेवताओं को दिया ५ ॥

तंविष्णुतेजोभवमष्टचक्रेरथेस्थितंभास्वतिरत्नचित्रे ॥
देदीप्यमानंशरदीवसूर्यंध्वजंसमासाद्यमुमोदशक्रः ६ ॥

विष्णु भगवान् के तेजसे उत्पन्न औ आठ चक्रों करके युक्त रत्नजटित अति प्रकाशवान् रथमें स्थित औ शरदृऋतुके सूर्यके तुल्य देदीप्यमान उस ध्वजाको पाय इन्द्र बहुत हर्षित हुआ ६ ॥

सकिङ्किणीजालपरिष्कृतेनस्रक्छत्रघण्टापिटकान्वितेन
समुच्छ्रितेनामरराड्ध्वजेननिन्येविनाशंसमरेऽरिसैन्यम् ७ ॥

छोटी २ घंटाओंके समूहसे भूषित माला छत्र घंटा औ पिटक अर्थात् एक प्रकारके ध्वजाके भूषण जो आगे कहेंगे उनकरके युक्त खड़े कियेहुये उसध्वज करके इन्द्रने युद्धमें अपने शत्रु दैत्योंकी सेनाका नाशकिया ७ ॥

उपरिचरस्याऽमरपोवसोर्ददौचेदिपस्यवेणुमयीम् ॥
यष्टिंतांसनरेन्द्रोविधिवत्संपूजयामास ८ ॥

इन्द्रने उस ध्वजकी वेणुमयी यष्टि अर्थात् बांसका बनाहुआ लम्बा दण्ड चेदिदेशके राजा उपरिचर वसुको दी औ उस राजाने भी उस यष्टिको विधि पूर्वक पूजन किया ८ ॥

प्रीतोमहेनमघवान्प्राहैवंयेनृपाःकरिष्यन्ति ॥ वसुवद्वसुमन्तस्ते भुविसिद्धाज्ञाभविष्यन्ति ९ मुदिताःप्रजाश्चतेषांभयरोगविवर्जिताः प्रभूतान्नाः॥ध्वजएवचाभिधास्यतिजगतिनिमित्तैःफलंसदसत् १०॥

उस इन्द्रध्वज के उत्सव से प्रसन्नहो इन्द्रने कहा कि जो राजा इस प्रकार उत्सव करेंगे वे उपरिचर वसु के तुल्य धनवान् होंगे । भूमिपर अप्रतिहत आज्ञा उनकी होगी ९ औ उनकी प्रजा भय रोगसे रहित औ बहुत अन्न करके युक्त प्रसन्न रहेगी। औ जगत्में शुभ अशुभ फलका सूचन अपने निमित्तों करके इन्द्रध्वजही करेगा १० ॥

पूजातस्यनरेन्द्रैर्बलवृद्धिजयार्थिभिर्यथापूर्वम् ॥
शक्राज्ञयाप्रयुक्तातामागमतःप्रवक्ष्यामि ११ ॥

उस इन्द्रध्वजकी पूजा बलकीवृद्धि औ जयकी इच्छावाले राजाओंने इन्द्र की आज्ञानुसार जिसप्रकार पहिलेकीहै उसको हम शास्त्रसे कहते हैं ११ ॥

तस्यविधानंशुभकरणदिवसनक्षत्रमङ्गलमुहूर्तैः ॥
प्रास्थानिकैर्वनमियाद्दैवज्ञःसूत्रधारश्च १२ ॥

उसका विधान यह है कि यात्राके मुहूर्तमें जो करण तिथि वार नक्षत्र शकुन औ मुहूर्त शुभकहे हैं उनको देख उत्तममुहूर्त में सूत्रधार अर्थात् काष्ठका कार्य करनेवाले बढ़ईको साथलेकर राजा वनमें जाय १२ ॥

उद्यानदेवतालयपितृवनवल्मीकमार्गचितजाताः ॥ कुब्जोर्ध्वशुष्ककण्टकिवल्लीवन्दाकयुक्ताश्च १३ बहुविहगालयकोटरपवनाऽनलपीडिताश्चयेतरवः ॥ येचस्युःस्त्रीसंज्ञानतेशुभाःशक्रकेत्वर्थे १४ ॥

बाग देवालय श्मशान सर्पकीबांबी मार्ग चिता इनस्थानोंमें जो वृक्षउत्पन्न हुयेहोयँ। औ टेढ़े खड़े २ ही सूखगये कांटोंवाले जिनपर बेलि चढ़रही होयँ जिनमें बन्दाकहोयँ (एकवृक्षमें दूसरावृक्ष उत्पन्नहोजाता है उसको वन्दाक कहते हैं) १३ बहुत पक्षियोंके घोंसले जिनमें होयँ कोटर (वृक्षके छिद्र) जिनमें होयँ पवनने जो तोड़दिये होयँ अग्निके जलेहोयँ औ जिनकानाम स्त्री संज्ञकहोय जैसा बदरी सल्लकी आदि इसप्रकारके वृक्षैं इन्द्रध्वजके लिये शुभ नहीं होते १४ ॥

श्रेष्ठोऽर्जुनोऽजकर्णप्रियकधवोदुम्बराश्चपञ्चैते ॥
येतेषामेकतमंप्रशस्तमथवापरंवृक्षम् १५ ॥

अर्जुन अजकर्ण प्रियक धव औ गूलर ये पांच वृक्ष उत्तमहैं। इनमेंसे कोई वृक्षहो अथवा और कोई उत्तम वृक्षहो उसको ग्रहणकरै १५ ॥

गौराऽसितक्षितिभवंसंपूज्ययथाविधिद्विजःपूर्वम् ॥
विजनेसमेत्यरात्रौस्पृष्ट्वाब्रूयादिमंमन्त्रम् १६ ॥

गौरवर्ण अथवा कृष्णवर्णकी भूमिमें जो वृक्ष उत्पन्नहुआहो पहिले रात्रिके समय ब्राह्मण उसके समीप जाय एकान्त में विधिपूर्वक पूजनकरके वृक्षको हाथसे स्पर्शकर ये मन्त्र पढ़ै १६ ॥

यानीहवृक्षेभूतानितेभ्यःस्वस्तिनमोऽस्तुवः ॥ उपहारंगृहीत्वेमं क्रियतांवासपर्ययः १७ पार्थिवस्त्वांवरयतेस्वस्तितेस्तुनगोत्तम ॥ ध्वजार्थंदेवराजस्यपूजेयंप्रतिगृह्यताम् १८ ॥

ये दोनों मन्त्र वृक्षको स्पर्श करके पढ़ै १७। १८ ॥

छिन्द्यात्प्रभातसमयेवृक्षमुदक्प्राङ्मुखोऽपिवाभूत्वा ॥

परशोर्जर्जरशब्दोनेष्टः स्निग्धोघनश्चहितः १९ ॥

प्रभातके समय उत्तर अथवा पूर्वकी ओर मुखकरके उसवृक्षकोकाटै। वृक्ष काटनेके समय कुल्हाडेकाशब्द जर्जर (फटाहुआ) होय तो शुभ नहीं। मधुर औ घनशब्दहोय तो शुभहोताहै १९ ॥

नृपजयदमविध्वस्तंपतनमनाकुञ्चितंचपूर्वोदक् ॥
अविलग्नंचान्यतरौविपरीतमतस्त्यजेत्पतितम् २० ॥

वह वृक्षगिरके टूटेनहीं टेढा न होय पूर्व अथवा उत्तर दिशामें गिरे औ दूसरे वृक्षके सहारे न गिरे तो राजा को जय देताहै। औ जो वृक्षगिरके टूटजाय टेढाहोजाय पूर्व उत्तर से भिन्न दिशामें गिरे अथवा किसी वृक्षके ऊपर लगा हुआ गिरे उसको इन्द्रध्वजके लिये न लेवै २० ॥

छित्वाऽग्रेचतुरंगुलमष्टौमूलेजलेक्षिपेद्यष्टिम् ॥
उद्धृत्यपुरद्वारंशकटेननयेन्मनुष्यैर्वा २१ ॥

फिर उस वृक्षकी यष्टिको चार अंगुल अग्रसे औ आठअंगुल मूल से काट जल में डाले पीछे जल से निकाल गाड़ीमें अथवा मनुष्योंपर रखवाय नगरके द्वारपर लेआवे २१ ॥

अरभंगेबलभेदोनेम्यांनाशोबलस्यविज्ञेयः ॥
अर्थक्षयोऽक्षभंगेतथाऽणिभंगेचवर्धकिनः २२ ॥

जो गाड़ीके पहियेका अराटूटजाय तो राजाकी सेनामें भेदहोताहै पहिये की नेमिटूटे तो सेनाकानाश धुरीटूटजाय तो धनकाक्षय औ धुरीके अग्रमें जो कीललगती है उसके टूटनेसे बढ़ईका नाशहोता है २२ ॥

भाद्रपदशुक्लपक्षस्याष्टम्यांनागरैर्वृतोराजा॥ दैवज्ञसचिवकंचुकिविप्रप्रमुखैःसुवेषधरैः२३ अहताऽम्बरसंवीतांयष्टिंपौरन्दरींपुरंपौरैः॥ स्रग्गन्धधूपयुक्तांप्रवेशयेच्छङ्खतूर्यरवैः २४ ॥

भाद्रशुक्ल अष्टमीके दिन उत्तमवस्त्र भूषण पहिनेहुये नगरके लोक ज्योतिषी मंत्री कंचुकी औ ब्राह्मण आदि करके युक्तराजा २३ नयेवस्त्र में लिपटी हुई पुष्पमाला गंधधूपसे पूजित उसयष्टिको नगरके लोकोंसमेत नगर में प्रवेशकरावै। प्रवेशकेसमय शंखतुरहीआदि अनेकप्रकारके बाजेबजायेजावें२४॥

रुचिरपताकातोरणवनमालाऽलंकृतंप्रहृष्टजनम् ॥ संमार्जिताऽर्चितपथंसुवेषगणिकाजनाकीर्णम् २५ अभ्यर्चितापणगृहंप्रभूतपुण्याहवेदनिर्घोषम् ॥ नटनर्तकगेयज्ञैराकीर्णचतुष्पथंनगरम् २६ ॥

नगरभी सुन्दर पताका तोरण औ पत्रपुष्पों की मालाओं से भूषित होयँ

जिसमें सबमनुष्य प्रसन्नहोयं सबमार्गस्वच्छ औ शोभित कियेहोयँ सुन्दर वस्त्र भूषणआदिसे अलंकृतवेश्याओं से व्याप्तहोय २५ सबआपणगृह अर्थात् दुकान सजरहीहोयँ वहुतसे पुण्याहवाचनका औ वेदकाशब्द जिसमेंहोताहोय नट नाचनेवाले औ गानेवालोंकरके जिसनगरके चौरस्ते भरेहोयँ २६ ॥

तत्रपताकाःश्वेताभवन्तिविजयायरोगदाःपीताः ॥
जयदाश्चचित्ररूपारक्ताःशस्त्रप्रकोपाय २७ ॥

उस नगरमें श्वेतरंगकी पताकाहोयं तो जयदेतीहैं पीलेरंगकी रोगउत्पन्न करती हैं चित्ररंगकी पताकाभी जयदेती हैं औ लालरंगकी पताका होने से शस्त्रकोप अर्थात् युद्धहोता है २७ ॥

यष्टिंप्रवेशयन्तींनिपातयन्तोभयायनागाद्याः ॥
बालानांतलशब्देसंग्रामःसत्वयुद्धेवा २८ ॥

नगरमें प्रवेश होनेके समय यष्टिको कोई हाथी महिष आदि जीव गिरा देवे तो भयहोता है उससमय बालक अपने दोनों हाथों से शब्द करें तो युद्ध होता है और यष्टिके नगरमें प्रवेश करने के समय गौ आदि जीव युद्धकरें तो युद्ध होता है २८ ॥

संतक्ष्यपुनस्तक्षाविधिवद्यष्टिंप्ररोपयेद्यन्त्रे ॥ जागरमेकादश्यांनरेश्वरःकारयेच्चास्याः २९ सितवर्णोष्णीषधरःपुरोहितःशाक्रवैष्णवैर्मन्त्रैः ॥ जुहुयादग्निंसांवत्सरोनिमित्तानिगृह्णीयात् ३० ॥

वढ़ई उसयष्टिको छीलकर यंत्रपर चढ़ावे। औ इसयष्टिके निमित्त एकादशीको राजा जागरण करावे२९ श्वेतरंगकी पगड़ी बांधकर पुरोहित इंद्र औ विष्णुके मंत्रोंसे हवनकरै। औ ज्योतिषी अग्निके शुभअशुभलक्षणदेखै ३०॥

इष्टद्रव्याकारःसुरभिःस्निग्धोघनोऽनलोऽर्चिष्मान् ॥
शुभकृदतोऽन्योनेष्टोयात्रायांविस्तरोभिहितः ३१ ॥

इष्ट अर्थात् मनोहर वस्तुके आकार का अग्निहोय सुगंधयुक्त स्निग्ध औ ज्वालाओं करके युक्त अग्निहोय तो शुभ होताहै औ इससे विपरीत रूपहोय तो अशुभ होता है। हमने अपने वनाये योगयात्रा नाम ग्रंथ में अग्नि के शुभ अशुभ लक्षण विस्तरसे कहेहैं इसलिये यहां संक्षेपकिया ३१ ॥

स्वाहावसानसमयेस्वयमुज्ज्वलार्चिः स्निग्धःप्रदक्षिणशिखोहुतभुङ्नृपस्य ॥ गङ्गादिवाकरसुताजलचारुहारांधात्रींसमुद्ररशनांवशगांकरोति ३२ ॥

पूर्णाहुति देनेके समय उज्ज्वलज्वालाओं करके युक्त औ स्निग्ध अग्निहोय

औ उसकी ज्वाला दहिनी ओरको फिरतीहोयँ तो समुद्रहै कांची जिसकी औ गंगा यमुनाका जलहीहै उत्तमहारजिसकाऐसी पृथिवीराजाके वशकरताहै ३२

चामीकराऽशोककुरण्टकाऽब्जवैदूर्यनीलोत्पलसन्निभेऽग्नौ ॥
नध्वान्तमन्तर्भवनेऽवकाशंकरोतिरत्नांऽशुहतंनृपस्य ३३ ॥

सुवर्ण अशोकपुष्प कुरंटकपुष्प कमल वैदूर्य औ नीलोत्पलकेतुल्य अग्नि का वर्णहोय तो राजाके घरमें रत्नोंके किरणों करके नाश कियाहुआ अंधकार अवकाश नहीं पाता । अर्थात् अग्नि का ऐसा रंगहोय तो राजाको बहुत रत्नों का लाभहोता है ३३ ॥

येषांरथौघार्णवमेघदन्तिनांसमस्वनोऽग्निर्यदिवापिदुन्दुभेः ॥
तेषांमदान्धेभघटाविघट्टिताभवन्तियानेतिमिरोपमादिशः ३४ ॥

जिन राजाओंका होमके समय अग्निरथों के समूह समुद्रमेव हाथी अथवा दुन्दुभिके समान शब्दकरै उन राजाओं की यात्राके समय मस्त हाथियों के झुंडसे भरीहुई दिशा अंधकारके समान कृष्णवर्ण देखपड़ती हैं अर्थात् बहुत हाथियों के स्वामी होजाते हैं ३४ ॥

ध्वजकुम्भहयेभभूभृतामनुरूपेवशमेतिभूभृताम् ॥
उदयास्तधराधराधराहिमवद्विन्ध्यपयोधराधरा ३५ ॥

ध्वजा घट घोड़ाहाथी औ पर्वतके तुल्य अग्निका आकारहोय तो उदय पर्वत औ अस्तपर्वत को धारणकरनेवाली औ हिमाचल औ विंध्याचलही है स्तनजिसके ऐसीभूमि राजाओंके वशहोजाती है ३५ ॥

द्विरदमदमहीसरोजलाजैर्घृतमधुनाचहुताशनेसगंधे ॥
प्रणतनृपशिरोमणिप्रभाभिर्भवतिपुरश्चुरितेवभूर्नृपस्य ३६ ॥

हाथीकामद भूमि कमलपुष्प लाजा (धानकीखील) घृत औ शहत इनके गंधके समान अग्निमें गंधआवे तो राजाजहां बैठाहोय उसके आगेकी भूमि प्रणाम करतेहुये और राजाओं के मुकुटमणि किरणों करके मानों रंगी जाती है अर्थात् सबराजा उसराजाका प्रणामकरते हैं ३६ ॥

उक्तंयदुत्तिष्ठतिशक्रकेतौशुभाऽशुभंसप्तमरीचिरूपैः ॥
तज्जन्मयज्ञग्रहशान्तियात्राविवाहकालेष्वपिचिन्तनीयम् ३७ ॥

इन्द्रध्वज के उठानेके समय यह जो अग्निके रूपकरके शुभ अशुभफल कहा इसको जन्मसमय यज्ञ ग्रहशांति यात्रा औ विवाहके समय जो होमका अग्नि उससे भी बिचारकरै औ शुभ अशुभफलजाने ३७ ॥

गुडपूपपायसाद्यैर्विप्रानभ्यर्च्यदक्षिणाभिश्च ॥

श्रवणेनद्वादश्यामुत्थाप्योऽन्यत्रवाश्रवणात् ३८ ॥

गुड़ पूये खीर आदि करके औ दक्षिणा करके ब्राह्मणों की पूजाकर श्रवण नक्षत्रयुक्त भाद्रशुक्ल द्वादशी के दिन इन्द्रध्वजको खड़ाकरै अथवा श्रवणनक्षत्र विनाही खड़ाकरै अर्थात् द्वादशी को श्रवण न होय तो भी इन्द्रध्वज को खड़ा करदेवे ३८ ॥

शक्रकुमार्यःकार्याःप्राहमनुःसप्तपञ्चवातज्ज्ञैः ॥ नन्दोपनन्दसंज्ञे पादेनार्धेनचध्वजोच्छ्रायात् ३९ षोडशभागाभ्यधिकेजयविजयेद्वेव सुन्धरेचान्ये ॥ अधिकाशक्रजनित्रीमध्येऽष्टांशेनचैतासाम् ४० ॥

राजामनु कहते हैं कि इन्द्रध्वजका विधान जाननेवाले पुरुषसात अथवा पांच शक्रकुमारी बनावें अब उनके नाम औ प्रमाण कहते हैं जितना ऊंचा ध्वजहोय उसके चतुर्थांशके तुल्य नन्दा औ अर्धके तुल्य उपनन्दानाम शक्रकुमारी बनावे ३९ नंदाके प्रमाणमें उसका षोड़शांश अधिकजया औ उपनंदा के प्रमाणसे षोड़शांश अधिक विजया बनावे जया के प्रमाण से षोड़शांश अधिक एक वसुन्धरा औ विजया के प्रमाण से षोड़शांश अधिक दूसरी वसुन्धरा बनावै। छः तोये हुईं औ सातवीं इन्द्रमाता दूसरी वसुन्धरा के प्रमाणसे अष्टमांश अधिक बनावै ४० ॥

प्रीतैःकृतानिविबुधैर्यानिपुराभूषणानिसुरकेतोः ॥
तानिक्रमेणदद्यात्पिटकानिविचित्ररूपाणि ४१ ॥

पूर्वकालमें प्रसन्नहोकर देवताओं ने जो भूषण इन्द्रध्वज के लियेबनाये वे सब विचित्ररूप पिटकनाम भूषण इन्द्रध्वजको धारण करावै ४१ ॥

रक्ताशोकनिकाशंचतुरस्रंविश्वकर्मणाप्रथमम् ॥ रशनास्वयंभुवा शंकरेणचानेकवर्णधरा ४२ अष्टाश्रिनीलरक्तंतृतीयमिन्द्रेणभूषणं दत्तम् ॥ असितंयमश्चतुर्थमसूरकंकान्तिमदयच्छत् ४३ मंजिष्ठाभं वरुणःषडश्रितपञ्चमंजलोर्मिनिभम् ॥ मायूरंकेयूरंषष्ठंवायुर्जलद नीलम् ४४ स्कन्दःस्वंकेयूरंसप्तममददद्ध्वजायबहुचित्रम् ॥ अष्ट ममनलज्वालासंकाशंहव्यभुग्वृत्तम् ४५ वैदूर्यसदृशमिन्दुर्नवमंग्रैवे यकंददावन्यत् ॥ रथचक्राभंदशमंसूर्यस्त्वष्टाप्रभायुक्तम् ४६ एका दशमुद्दंविश्वेदेवाःसरोजसंकाशम् ॥ द्वादशमपिचनिवंशंमुनयोनी लोत्पलाभासम् ४७ किंचिदधऊर्ध्वनिर्मितसुपरिविशालंत्रयोदशंके तोः ॥ शिरसिबृहस्पतिशुक्रौलाक्षारससन्निभंददतुः ४८ ॥

रक्त अशोक पुष्पके रंगका चतुष्कोण पहिला भूषण विश्वकर्माने इन्द्रध्वजको दिया। ब्रह्माजीने औ शिवजीने अनेक रंगकी कांची दूसरा भूषण दिया ४२ अष्टकोण औ नीले रंगका तीसरा भूषण इन्द्रने दिया। कृष्णरंगका औ कांतियुक्त मसूरक नाम चौथाभूषण यमराजने दिया ४३ लालरंगका षट्कोण औ जलके तरंगके समान पांचवांभूषण वरुणने दिया। मेघके समान नील वर्ण औ मयूर पक्षोंका वनाकेयूरनाम छठां भूषण वायुने दिया ४४ स्वामिकार्तिकेयने अनेक रंगका अपना केयूर इन्द्रध्वजको सातवां भूषण दिया॥ अग्नि ज्वाला के समानवर्ण औ गोल आठवां भूषण अग्नि ने दिया ४५ वैदूर्य मणि के समान वर्ण ग्रैवेयकनाम नवां भूषण चन्द्रमाने दिया रथचक्रकेआकार औ प्रभायुक्त दशवां भूषण त्वष्टा नाम आदित्यने दिया ४६ कमल पुष्पके तुल्य उद्वंश नामक ग्यारहवां भूषण विश्वेदेवोंने दिया। नलिकमलके समान कांतियुक्त वारहवां निवंश नाम भूषण मुनियोंने दिया ४७औ कुछनीचे ऊपरसे बना हुआ ऊपरसे विशाल औ लाक्षा रसके तुल्य रक्तवर्ण तेरहवां भूषण वृहस्पति औ शुक्रने इन्द्रध्वज के मस्तकपर चढ़ाया ४८ ॥

यद्यद्येनविनिर्मितममरेणविभूषणंध्वजस्यार्थे ॥
तत्तत्तद्दैवत्यंविज्ञातव्यंविपश्चिद्भिः ४९ ॥

इन्द्रध्वज के लिये जो २ भूषण जिस देवताने बनाया उस २ भूषणका अधिपति वही देवताहै यह विद्वान् पुरुषोंको जानना चाहिये ४९ ॥

ध्वजपरिमाणत्र्यंशःपरिधिःप्रथमस्यभवतिपिटकस्य ॥
परतःप्रथमात्प्रथमादष्टांशाष्टांशहीनानि ५० ॥

ध्वज प्रमाण के तृतीयांश के तुल्य परिधि पहिले पिटक अर्थात् भूषणकी बनावे। पहिले पिटककी परिधिके प्रमाण से अष्टमांश न्यूनकर दूसरे पिटक की परिधिका प्रमाण जाने इसीप्रकार पहिले २ पिटककी परिधि के प्रमाण में अष्टमांश घटाता जाय तो अगले २ पिटक की परिधि का प्रमाण होता जाता है ५० ॥

कुर्यादहनिचतुर्थेपूरणमिन्द्रध्वजस्यशास्त्रज्ञः ॥
मनुनाचगमगीतान्मन्त्रानेतान्पठेत्प्रयतः ५१ ॥

शास्त्रको जाननेवाला अष्टमीसे चौथे दिन अर्थात् एकादशी को पिटकों करके इन्द्रध्वजका पूरणकरै अर्थात् सब भूषण इन्द्रध्वजको पहिनावै। औ आगमसे मनुके कहेहुये इनमंत्रों को पवित्र होकर राजा पठनकरै ५१ ॥

हरार्कवैवस्वतशक्रसोमैर्धनेशवैश्वानरपाशभृद्भिः ॥ महर्षिसंघैः सदिगप्सरोभिःशुक्राऽङ्गिरःस्कन्दमरुद्गणैश्च ५२ यथात्वमूर्जस्क

रनेकक्लपैःसमाचितस्त्वाभरणैरुदारैः ॥ तथेहतान्याभरणानिदेवशु भानिसंप्रीतमनागृहाण ५३ अजोऽव्ययःशाश्वतएकरूपोविष्णुर्व राहःपुरुषःपुराणः ॥ त्वमन्तकःसर्वहरःकृशानुःसहस्रशीर्षाशतमन्यु रीड्यः ५४ कविंसप्तजिह्वंत्रातारमिन्द्रमवितारंसुरेशम् ॥ ह्वयामिश क्रंवृत्रहणंसुषेणमस्माकंवीराउत्तरेभवन्तु ५५ ॥

अब इनमंत्रों के पठन करनेका समय कहते हैं ५२।५३।५४।५५॥

प्रपूरणेचोच्छ्रयणेप्रवेशेस्नानेतथामाल्यविधौविसर्गे ॥
पठेदिमान्नृपतिःसोपवासोमन्त्राञ्छुभान्पुरहूतस्यकेतोः ५६ ॥

इन्द्रध्वजको पिटकोंसे भरनेके समय उठाने के समय नगर में प्रवेश कराने के समय स्नानकरानेके समय पुष्पचढ़ानेके समय औ विसर्जनकेसमय उपवासकरके इनशुभमन्त्रोंको पढ़ै ५६ ॥

छत्रध्वजादर्शफलाऽर्धचन्द्रैर्विचित्रमालाकदलीक्षुदण्डैः॥सव्या लसिंहैःपिटकैर्गवाक्षैरलंकृतंदिक्षुचलोकपालैः ५७ अच्छिन्नरज्जुंदृढ काष्ठमातृकं सुश्लिष्टयन्त्रार्गलपादतोरणम् ॥ उत्थापयेल्लक्ष्मसह स्रचक्षुषः साशक्रमाभग्नकुमारिकान्वितम् ५८ ॥

छत्र ध्वजा दर्पण फल अर्धचन्द्र अनेकप्रकारकी माला केलेके औ ईख के दण्ड काष्ठके सर्प औ सिंह पिटक औ गवाक्ष अर्थात् झरोखे ये सब काष्ठ के बनावे। इन्द्रध्वज की आठोंदिशाओं में आठोंदिक्पालों की मूर्तिबनावै ५७ आठोंदिशामें आठ दृढरस्से बांधे जिनके सहारे से इन्द्रध्वज खड़ारहे। दोनों ओर सहारेकेलिये बहुत दृढ दो काष्ठकी मातृका लगावे। औ पादतोरण में यन्त्रके अर्गलको दृढ़ता से लगावे। औ सारवान् काष्ठकी घड़ीहुई अखण्डित शक्रकुमारिका बनावै। इनसब करकेयुक्त इन्द्रध्वजको खड़ाकरै ५८ ॥

अविरतजनरावंमङ्गलाशीःप्रणामैः पटुपटहमृदङ्गैःशंखभेर्यादि भिश्च ॥ श्रुतिविहितवचोभिःपापठद्भिश्चविप्रैरशुभरहितशब्दंकेतु मुत्थापयीत ५९ ॥

मंगलशब्द आशीर्वाद औ प्रणामों करके लोकोंका शब्द निवृत्त न होय सुन्दर पटह मृदंग शंख भेरीआदि बजतेहोयँ ब्राह्मण वेदपाठकरतेहोयँ औ कोईभी अमंगलशब्द न बोले इसप्रकार इन्द्रध्वजको खड़ाकरै ५९ ॥

फलदधिघृतलाजाक्षौद्रपुष्पाग्रहस्तैः प्रणिपतितशिरोभिस्तुष्टु

वद्भिश्चपौरैः ॥ वृतमनिमिषभर्तुःकेतुमीशःप्रजानामरिनगरनताग्रं कारयेद्द्विड्वधाय ६० ॥

फल दही घृत लाजा (धानकीखील) शहत औ पुष्प हाथोंमें लिये शिर झुकाये स्तुतिकरतेहुये नगरके लोकोंकरके चारोंओरसे घिरेहुये इन्द्रध्वजको राजाखड़ाकरके शत्रुके वधकेलिये शत्रुनगरकीओर कुछ झुकतारक्खै । अर्थात् इन्द्रध्वजका अग्र शत्रु नगरकीओर झुकारहै ६० ॥

नातिद्रुतंनचविलम्बितमप्रकम्पमध्वस्तमाल्यपिटकादिविभूषणं च ॥ उत्थानमिष्टमशुभंयदतोऽन्यथास्यात् तच्छान्तिभिर्नरपतेः शमयेत्पुरोधाः ६१ ॥

न बहुत शीघ्र न बहुत धीरे न कांपतेहुये इन्द्रध्वज खड़ाहोय औ खड़ा करनेके समय उसके माला औ पिटकआदि भूषण न गिरें तो शुभहोता है औ इससे विपरीतहोय तो राजाको अशुभहोता है अशुभ फलको राजाका पुरोहित शान्तिकरके निवृत्तकरे ६१ ॥

क्रव्यादकौशिककपोतककाककंकैःकेतुस्थितैर्महदुशान्तिभयंनृपस्य॥ चाषेणचापियुवराजभयंवदंतिश्येनोविलोचनभयंनिपतन्करोति६२

क्रव्याद अर्थात् मांसखानेवाले पक्षी गृध्रआदि उलूक कपोत काक कंक ये पक्षी इन्द्रध्वजपर बैठें तो राजाको बड़ाभयहोताहै। चाषपक्षी (नीलकण्ठ) इन्द्रध्वजपर बैठे तो युवराजको भयहोता है। औ श्येन (बाज) इन्द्रध्वज के ऊपर गिरे तो नेत्रपीड़ा होतीहै ६२ ॥

छत्रभंगपतनेनृपमृत्युस्तस्करान्मधुकरोतिनिलीनम् ॥
हन्तिचाप्यथपुरोहितमुल्कापार्थिवस्यमहिषीमशनिश्च ६३ ॥

इन्द्रध्वज के ऊपरका छत्र टूटजाय अथवा गिरजाय तो राजाका मृत्यु होताहै । इन्द्रध्वज में शहतका छत्ता लगजाय तो प्रजामें चोरोंका उपद्रव होताहै । इन्द्रध्वजपर उल्कागिरे तो राजाके पुरोहितका मृत्युहोय औ अशनि गिरे तो राजाकी मुख्यरानीका मृत्युहोय ६३ ॥

राज्ञीविनाशंपतितापताकाकरोत्यवृष्टिंपिटकस्यपातः ॥
मध्याग्रमूलेषुचकेतुभंगोनिहन्तिमन्त्रिक्षितिपालपौरान् ६४ ॥

इन्द्रध्वजकी पताका गिरजाय तो रानीका नाशहोता है पिटकाके गिरने से वर्षा नहींहोती । इन्द्रध्वज मध्यभागसे टूटजाय तो मन्त्री अग्रभाग में टूटै तो राजा औ मूल में टूटजाय तो नगरके लोक नाशको प्राप्तहोते हैं ६४ ॥

धूमावृतेशिखिभयंतमसाचमोहं व्यालैश्चभग्नपतितैर्नभवन्त्य

मात्याः ॥ ग्लायन्त्युदक्प्रभृतिचक्रमशोद्विजाद्या भंगेतुवन्धकिवधः कथितःकुमार्याः ६५ ॥

जो इन्द्रध्वजको धूम घेरलेवै तो प्रजामें अग्निका भयहोताहै। इन्द्रध्वज के ऊपर जो काष्ठ के ब्याललगाये हैं वे टूटजायँ अथवा गिरजायँ तो मंत्रियों का क्षयहोता है। इन्द्रध्वज के उत्तर आदि चारदिशा में कुछ उत्पातहोयँ तो क्रमसे ब्राह्मणआदि चारवर्णोंको पीड़ाहोती है। औ शक्रकुमारी टूटजाय तो व्यभिचारिणी स्त्रियोंका मृत्युहोता है ६५ ॥

रज्जूत्सङ्गच्छेदनेबालपीडाराज्ञोमातुःपीडनंमातृकायाः ॥
यद्यत्कुर्युर्बालकाश्चारणावालत्तत्ताट्टग्भाविपापंशुभंवा ६६ ॥

इन्द्रध्वजके उठानेके समय उसके रस्से कहीं अटक जावैं अथवा टूटजावैं तो बालकोंको पीड़ा होतीहै। मातृका अर्थात् तोरणपार्श्व स्थित काष्ठकेभंग होनेसे राजाकी माताको पीड़ाहोती है। इन्द्रध्वजके समीप बालक अथवा चारण जैसी चेष्टाकरैं उसके अनुसार शुभ अशुभ फल आगे होताहै ६६ ॥

दिनचतुष्टयसुस्थितमर्चितंसमभिपूज्यनृपोऽहनिपञ्चमे ॥
प्रकृतिभिस्सहलक्ष्मविसर्जयेद्बलाभिदःस्वबलाभिविवृद्धये६७॥

चारदिन इन्द्रध्वज खड़ारहै औ नित्य उसका पूजनहुआकरे। पांचवें दिनभी भलीभांति उसका पूजनकर अपने मंत्री आदि सब परिकर सहित राजा अपने बलकी वृद्धिके लिये इन्द्रध्वजका विसर्जन करै ६७ ॥

उपरिचरवसुप्रवर्तितंनृपतिभिरप्यनुसन्ततंकृतम् ॥
विधिमिममनुमन्यपार्थिवोनरिपुकृतंभयमाप्नुयादिति ६८ ॥

इतिश्रीबराहमिहिरकृतौबृहत्संहितायामिन्द्रध्वजसम्पन्नाम त्रिचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४३ ॥

यह इन्द्रध्वजका विधान उपरिचर वसुने पहिले प्रवृत्त किया औ और भी सब राजाओंने सदा इसको किया। इस विधानसे जो राजा इन्द्रध्वज खड़ा करै उसको कभी शत्रुभय न होय ६८ ॥

श्रीबराहमिहिराचार्यकीबनाईबृहत्संहितामेंइन्द्रध्वजसम्पन्नाम तेतालीसवांअध्यायसमाप्तहुआ ४३ ॥

चवालीसवांअध्याय ॥

नीराजनाविधि ॥

भगवतिजलधरपक्ष्मक्षपाकराऽर्केक्षणेकमलनाभे ॥
उन्मीलयतितुरंगमकरिनरनीराजनंकुर्यात् १ ॥

मेघही हैं पक्ष्म (नेत्ररोम) जिनके ऐसे चन्द्र औ सूर्यरूप अपने दोनोंनेत्रों को जब कमलनाभि श्रीविष्णु भगवान् खोलें उससमय अर्थात् वर्षाऋतु के अनन्तर घोड़े हाथी औ मनुष्योंका नीराजनकरै १ ॥

द्वादश्यामष्टम्यांकार्तिकशुक्लस्यपंचदश्यांवा ॥
आश्वयुजेवाकुर्यान्नीराजनसंज्ञितांशान्तिम् २ ॥

कार्तिकमासके शुक्लपक्ष में द्वादशी अष्टमी अथवा पूर्णमासी को अथवा आश्विनशुक्ल में इन तिथियों को नीराजननाम शान्तिकरै २ ॥

नगरोत्तरपूर्वदिशिप्रशस्तभूमौप्रशस्तदारुमयम् ॥
षोडशहस्तोच्छ्रायंदशविपुलंतोरणंकुर्यात् ३ ॥

नगरसे ईशानकोणमें उत्तमभूमिके वीच अच्छे काष्ठका सोलह हाथ ऊंचा औ दशहाथ चौड़ा एक तोरण बनावे ३ ॥

सर्जोदुम्बरशाखाककुभमयंशान्तिसद्मकुशबहुलम् ॥
वंशविनिर्मितमत्स्यध्वजचक्रालंकृतद्वारम् ४ ॥

सर्जवृक्ष गूलर औ अर्जुनवृक्षके काष्ठका शांतिगृह बनावे जिसमें कुश बहुत से रक्खेहोयँ। औ बांसके बनायेहुये मत्स्य ध्वज औ चक्रोंकरके उसका द्वार शोभित कियाहोय ४ ॥

प्रतिसरयातुरगाणांभल्लातकशालिकुष्ठसिद्धार्थान् ॥
कण्ठेषुनिबध्नीयात्पुष्ट्यर्थंशान्तिगृहगानाम् ५ ॥

भिलावे धान कूठ औ श्वेत सरसोंकी पोटलीकरके सरआदिसे रँगेहुयेपीले डोरेमें बांध शांतिगृहमें स्थित जो घोड़े उनकेगलेमें पुष्टिके लियेबांधे ५ ॥

रविवरुणविश्वदेवप्रजेशपुरुहूतवैष्णवैर्मन्त्रैः ॥
सप्ताहंशान्तिगृहेकुर्याच्छान्तिंतुरंगाणाम् ६ ॥

सूर्य वरुण विश्वेदेव ब्रह्मा इन्द्र औ विष्णुके मंत्रों करके शांतिगृहके वीच सात दिन घोड़ोंकी शांति करै ६ ॥

अभ्यर्चितानपरुषंवक्तव्यानापिताडनीयास्ते ॥
पुण्याहशंखतूर्यध्वनिगीतरवैर्विमुक्तभयाः ७ ॥

पूजित घोड़ोंको कठोर वचननकहै। ताड़न न करै। पुण्याहवाचनके शब्द शंख तुरहीकेशब्द औ गीत शब्दों करके उनको निर्भय करै ७ ॥

प्राप्तेऽष्टमेऽह्निकुर्यादुदङ्मुखंतोरणस्यदक्षिणतः ॥
कुशचीरावृतमाश्रममग्निंपुरतोऽस्यवेद्यांच ८ ॥

आठवें दिन तोरणकी दक्षिण दिशामें उत्तराभिमुख औ कुश औ वृक्षकी

छाया से ढकाहुआ एक आश्रम बनावै औ उसके संमुख वेदी बनाय उसपर अग्नि स्थापन करै ८ ॥

चंदनकुष्ठसमङ्गाहरितालमनःशिलाप्रियंगुवचाः ॥ दन्त्यऽमृतांजनरजनीसुवर्णपुष्पाग्निमन्थाश्च ९ श्वेतासपूर्णकोशाकटम्भरात्रायमाणसहदेवीः ॥ नागकुसुमंस्वगुप्तांशतावरींसोमराजींच १० कलशेष्वेतान्कृत्वासंभारानुपहरद्बलिंसम्यक् ॥ भक्ष्यैर्नानाकारैर्मधुपायसयावकप्रचुरैः ॥ ११ ॥

चंदन कूठ मजीठ हरताल मनशिल कांगनी वचदंती गिलोय सुरमा हलदी सुवर्ण पुष्पी अग्निमंथ ९ श्वेता पूर्णकोशा कुटकी त्रायमाण सहदेवी नागकेसर कौंचशतावरी औ सोमवल्ली १० इनसब वस्तुओंको इकट्ठीकर कलशों में डाले औ शहत खीर यावकआदि अनेकप्रकारके भक्ष्यपदार्थों करके भली भांति बलिदेवै ११ ॥

खदिरपलाशोदुम्बरकाश्मर्यश्वत्थनिर्मिताःसमिधः ॥
स्रुक्कनकाद्रजताद्वाकर्तव्याभूतिकामेन १२ ॥

खदिर पलाश गूलरकाश्मरी औ पीपलके काष्ठकी समिधा बनावै। औ संपत्ति की इच्छावाला सोने चांदीकी स्रुक्बनावे १२ ॥

पूर्वाभिमुखःश्रीमान्वैयाघ्रेचर्मणिस्थितोराजा ॥
तिष्ठेदनलसमीपेतुरगभिषग्दैववित्सहितः १३ ॥

श्रीमान् राजा अग्निके समीप पूर्वकी ओर मुखकर बाघकेचर्म परबैठे औ घोड़े वैद्य औ ज्योतिषी समीपर हैं १३ ॥

यात्रायांयदभिहितंग्रहयज्ञविधौमहेन्द्रकेतौच ॥
वेदीपुरोहितानललक्षणमस्मिंस्तदवधार्यम् १४ ॥

योगयात्रा ग्रंथमें ग्रहयज्ञविधिमें औ इन्द्रध्वजके प्रकरणमें वेदी पुरोहित औअग्निके जोलक्षण कहेहैं वेसब इसनीराजनविधानमें भी जानने चाहिये१४॥

लक्षणयुक्तंतुरगंद्विरदवरंचैवदीक्षितंस्नातम् ॥ अहतसिताम्बरगन्धस्रग्धूपाभ्यर्चितंकृत्वा १५ आश्रमतोरणमूलंसमुपनयेत्सान्त्वयञ्छनैर्वाचा ॥ वादित्रशंखपुण्याहनिःस्वनैःपूरितदिगन्तम् १६ ॥

उत्तमलक्षणोंकरकेयुक्तहाथी औघोड़ेको दीक्षादेकर स्नानकरायनया श्वेत वस्त्र उढ़ाय पुष्पमाला गंध धूपआदि से उनका पूजनकर १५ मीठे वचनोंसे उनको सांत्वनकरता हुआ धीरे २ अनेक प्रकारके बाजे शंख औ पुण्याहवा-

चन के शब्दोंकरके भरेहैं दिगंत जिसमें ऐसे आश्रम तोरणके समीप उनको लेआवे १६ ॥

यद्यानीतस्तिष्ठेद्दक्षिणचरणंहयःसमुत्क्षिप्य ॥ सजयतितदानरेन्द्रःशत्रूनचिराद्विनायत्नात् १७ त्रस्यन्नेष्टोराज्ञःपरिशेषंचेष्टितंद्विपहयानाम् ॥ यात्रायांव्याख्यातंतदिहविचिन्त्यंयथायुक्ति १८ ॥

तोरणके समीप लायाहुआ घोड़ा अथवा हाथी दहिना चरण उठाकर खड़ारहे तो वहराजा बिनायत्न शीघ्रही शत्रुओंको जीतताहै १७ परन्तु घोड़ा अथवा हाथी उससमय डरे तो शुभनहीं होता। और भी जो घोड़े औ हाथियोंकी चेष्टाका शुभ अशुभ फल योगयात्रा ग्रन्थमें हमने कहा है उस सबको भी युक्तिसे यहां बिचारै १८ ॥

पिण्डमभिमन्त्र्यदद्यात्पुरोहितोवाजिनेसयदिजिघ्रेत् ॥
अश्नीयाद्वाजयकृद्विपरीतोऽतोऽन्यथाभिहितः १९ ॥

पुरोहित एकपिंड अभिमंत्रणकर घोड़े को देवै जो घोड़ा उस पिंडको सूंघे अथवा खालेवे तो राजा को जय होताहै। औ सूंघे नहीं औ खाय भी नहीं तो राजाका पराजय होय यह जानै १९ ॥

कलशोदकेपुशाखामाप्लाव्योदुम्बरींस्पृशेत्तुरगान् ॥
शान्तिकपौष्टिकमन्त्रैरेवंसेनांसनृपनागाम् २० ॥

पहिले स्थापन किये कलशों के जलमें गूलर की डाली को भिगोकर शान्तिक औ पौष्टिकमंत्र पढ़ता हुआ घोड़ों को स्पर्शकरै औ इसीभांति राजा औ हाथियों सहित सेना कोभीस्पर्शकरै २० ॥

शान्तिंराष्ट्रविवृद्ध्यैकृत्वाभूयोऽभिचारकैर्मन्त्रैः ॥
मृण्मयमरिंविभिन्द्याच्छूलेनोरःस्थलेविप्रः २१ ॥

अपने राज्यकी वृद्धिकेलिये फिरभी शांतिकर अथर्वण वेदमें कहेहुये अभिचार मंत्रों करके मृत्तिकाकी बनाई हुई शत्रुकी मूर्ति को राजा का पुरोहित बर्छी करके छाती में भेदन करै २१ ॥

खलिनंहयायदद्यादभिमन्त्र्यपुरोहितस्ततोराजा ॥
आरुह्योदक्पूर्वांयायान्नीराजितःसबलः २२ ॥

पुरोहित अभिमंत्रण कर लगामको घोड़ेके मुखमें लगावे फिरनीराजित राजा उसघोड़े परचढ़ अपनी सेना समेत ईशानकोण को जाय २२ ॥

मृदंगशङ्खध्वनिहृष्टकुञ्जरस्रवन्मदामोदसुगन्धिमारुतः ॥ शिरोमणिव्रातचलत्प्रभाचयैर्ज्वलन्विवस्वानिवतोयदात्यये २३ हंसपंक्ति

भिरितस्ततोऽद्रिराट्संपतद्भिरिवशुक्लचामरैः ॥मृष्टगन्धपवनानुवाहि भिर्धूयमानरुचिरस्रगम्बरः २४ नैकवर्णमणिवज्रभूषितैर्भूपितोमुकुटकुण्डलांगदैः ॥ भूरिरत्नकिरणाऽनुरंजितःशक्रकार्मुकरुचंससुद्दहन् २५ उत्पतद्भिरिवखंतुरंगमैर्दारयद्भिरिवदन्तिभिर्धरम् ॥ निर्जितारिभिरिवामरैर्नरैःशक्रवत्परिवृतोव्रजेन्नृपः २६ ॥

मृदंग औ शंखकी ध्वनिकरके हर्षितजो हाथी उनके टपकतेहुये मदकरके सुगन्धि युक्तहै पवन जिसमें औ मुकुटके रत्नसमूहके प्रभापुंजकरके प्रज्वलित मानों शरत् ऋतुमें सूर्य २३ अथवा सुगंध पवन को बहने वाले शुक्ल चामरों करके कंपित है उत्तम माला औ वस्त्र जिसके मानों उड़ते हुये हंसों करके पर्वतराज शोभित होय २४ अथवा अनेक रंगके मणि औ हीरों करके युक्त जो मुकुट कुंडल औ केयूर उनके धारणकरने से बहुतसे रत्नों के किरणों करके रंगा हुआ इसी कारण इन्द्रधनुष की कान्ति को धारता हुआ २५ अथवा आकाश को मानों उड़तेहुये घोड़ों करके भूमिको दारण करते हुये मानों हाथियों करके जीते हैं शत्रु जिनने ऐसे मानों देवता होवें ऐसे मनुष्यों करके घिराहुआ राजा गमन करै २६ ॥

सवज्रमुक्ताफलभूषणोऽथवासितस्रगुष्णीषविलेपनाम्बरः ॥
धृतातपत्रोगजपृष्ठमाश्रितोघनोपरीवेन्दुतलेभृगोःसुतः २७॥

अथवा हीरे औ मोतियों के भूषण पहिने श्वेतरंग की माला पगड़ी लेपन औ वस्त्रधारे छत्रलगाय हाथीपर चढ़ राजा गमनकरै मानों मेघ के ऊपर औ चन्द्रमा के नीचे शुक्रहोय अर्थात् मेघ हाथीके स्थानमें शुक्रराजा के स्थानमें औ चन्द्रमा क्षत्रके स्थानमें हुआ २७ ॥

संप्रहृष्टनरवाजिकुंजरंनिर्मलप्रहरणांशुभासुरम् ॥
निर्विकारमरिपक्षभीषणंयस्यसैन्यमचिरात्सगांजयेत् २८ ॥

इतिश्रीवराहमिहिरकृतौबृहत्संहितायांनीराजनविधिर्नामचतुश्चत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४४ ॥

जिस राजाकी सेना प्रसन्न मनुष्य घोड़े औ हाथियों करके युक्तहोय निर्मल शस्त्रों के किरणों से देदीप्यमान होय उत्पात रहित हो औ शत्रुओंको भय देनेवाली होय वह शीघ्रही भूमिको जीतता है २८ ॥

श्रीवराहमिहिराचार्यकीबनाईबृहत्संहितामेंनीराजनविधिनाम
चवालीसवांअध्यायसमाप्तहुआ ॥ ४४ ॥

पैंतालीसवांअध्याय ॥

खंजनलक्षण ॥

खञ्जनकोनामायंयोविहगस्तस्यदर्शनेप्रथमे ॥
प्रोक्तानियानिमुनिभिःफलानितानिप्रवक्ष्यामि १ ॥

खंजननामक जो पक्षी उसके पहिले दर्शनमें गर्ग आदि मुनियोंने जो फल कहेहैं उनको हमकहते हैं ॥ श्रावण आदि चारमहीनों के अनन्तर जो खंजन देख पड़ता है उसीको पहिला दर्शन कहते हैं १ ॥

स्थूलोऽभ्युन्नतकण्ठःकृष्णोगलोभद्रकारकोभद्रः॥ आकण्ठमुखात्कृष्णःसंपूर्णःपूरयत्याशाम् २ कृष्णोगलेऽस्यबिन्दुःसितकरटान्तःसरिक्तकृद्रिक्तः ॥ पीतोगोपीतइतिक्लेशकरःखंजनोदृष्टः ३ ॥

जो खञ्जन पक्षी स्थूलहोय कण्ठ उसका ऊंचा औ कृष्णवर्ण होय उसको भद्र कहते हैं वह कल्याण करता है। मुखसे कण्ठ पर्यन्त जो खञ्जन कृष्ण वर्णहोय उसका नाम सम्पूर्ण होय वह आशा पूरी करता है २ जिस खञ्जन के गलेमें काला बिंदुहोय औ कपोल उसके श्वेतहोयँ वह रिक्त कहाताहै उसके दर्शनसे सब फल शून्य होजाता है। पीलेरंगके खञ्जन को गोपीत कहते हैं। उसके दर्शन से क्लेश होता है ३ ॥

अथमधुरसुरभिफलकुसुमतरुषुसलिलाशयेषुपुण्येषु ॥ करितुरगभुजगमूर्द्धप्रासादोद्यानहर्म्येषु ४ गोगोष्ठसत्समागमयज्ञोत्सवपार्थिवद्विजसमीपे ॥ हस्तितुरङ्गमशालाछत्रध्वजचामराद्येषु ५ हेमसमीपसिताम्बरकमलोत्पलपूजितोपलिप्तेषु ॥ दधिपात्रधान्यकूटेषुचश्रियंखञ्जनःकुरुते ६ ॥

मीठे औ सुगन्धयुक्त जिनमें फल औ पुष्पलगें ऐसे वृक्षोंपर पवित्र जलाशय वापी तड़ाग आदिपर हाथी घोड़े औ सर्पके मस्तकपर प्रासाद अर्थात् देवता अथवा राजाके घर बाग हर्म्य अर्थात् धनवान् मनुष्यों के घरपर ४ गौ गोष्ठ अर्थात् गौओंके स्थान सत्पुरुषोंके समागम यज्ञ उत्सव राजा औ ब्राह्मण के समीप हस्तिशाला अश्वशाला छत्र ध्वजा औ चामर आदिपर ५ सुवर्णके समीप श्वेतवस्त्र कमल उत्पल अर्थात् नील कमल पूजित औ उपलिप्त अर्थात् गोवर आदि से लिपेहुये स्थानमें दहीके पात्रपरधानके ढेरपर इनमें से किसीकेउपर वैठाहुआ खंजन पक्षी देखपड़े तो लक्ष्मी प्राप्तिहोती है ६ ॥

पङ्केस्वाद्वन्नाप्तिर्गोरससंपच्चगोमयोपगते ॥ शाद्वलगेवस्त्राप्तिःश

कटस्थेदेशविभ्रंशः ७ गृहपटलेऽर्थभ्रंशोवध्रेबन्धोऽशुचौभवतिरोगः॥ पृष्ठेत्वजाविकानांप्रियसंगममावहत्याशु ८ ॥

कर्दम के ऊपर खञ्जन बैठाहुआ देखपड़े तो उत्तम भोजन मिले गोबर पर बैठा होय तो गोरस (छाछ) की सम्पत्ति होय। हरी दूर्वापर बैठादेखें तो वस्त्रकी प्राप्ति होय। गाड़ीपर बैठाहुआ खञ्जन देखपड़े तो देशका नाशहोय ७ घरकी छत्तपर बैठे तो धनका नाश होय। वध्र अर्थात् चमड़े की बद्धी पर खञ्जन बैठा देखपड़े तो बन्धन होय अपवित्रस्थान में खञ्जन बैठा देख पड़े तो रोग होता हैं। औ बकरी भेड़की पीठपर खञ्जन बैठाहुआ देखपड़े तो प्रियाका समागम होय ८ ॥

महिषोष्ट्रगर्दभास्थिश्मशानगृहकोणशर्कराऽद्रिस्थः ॥
प्राकारभस्मकेशेषुचाशुभोमरणरुग्भयदः ९ ॥

महिष उष्ट्रगर्दभ अस्थि श्मशान घरका कोण कंकर पर्वत प्राकार अर्थात् नगर आदिका कोट भस्म केश इनपर बैठा हुआ खञ्जन देखपड़े तो अशुभ होता है। मरण रोग औ भय देता है ९ ॥

पक्षौधुन्वन्नशुभःशुभःपिबन्वारिनिम्नगासंस्थः ॥
सूर्योदयेप्रशस्तोनेष्टफलःखञ्जनोऽस्तमये १० ॥

दोनोंपंख हिलाताहुआ खंजनदेखपड़े तो अशुभहोताहै। नदीके तटपर बैठे जलपीताहोय तो शुभहोता है सूर्योदयके समय खञ्जन देखपड़े तो शुभ औ सूर्यास्तके समय देखपड़े तो अशुभ होताहै १० ॥

नीराजनेनिवृत्तेययादिशाखञ्जनन्नृपोयान्तम् ॥
पश्येत्तयागतस्यक्षिप्रमरातिर्वशमुपैति ११ ॥

नीराजन होजाने के अनंतर राजा खंजन को जिसदिशा करके जातादेखे उसी दिशा करके चढ़ाई करै तो शीघ्रही शत्रुवश होजाय ११ ॥

तस्मिन्निधिर्भवतिमैथुनमेतियस्मिन्यस्मिंस्तुछर्दयतितत्रतलेऽस्तिकाचः॥अङ्गारमप्युपदिशन्तिपुरीषणेऽस्यतत्कौतुकापनयनायखनेद्धरित्रीम् १२ ॥

खंजन जहां मैथुनकरै वहां नीचे निधिहोताहै अर्थात् गड़ाहुआ धन होता है। जहांखंजन वमनकरै वहांनीचे काचहोता है। जहांखंजन विष्ठाकरै वहां नीचे कोयला होता है। यह कश्यपआदि मुनि कहतेहैं इसकौतुक को निवृत्त करनेके लिये भूमिको खोदकर देखलेवे १२ ॥

मृतविकलविभिन्नरोगितःस्वतनुसमानफलप्रदःखगः ॥

धनकृदभिनिलीयमानकोवियतिचबन्धुसमागमप्रदः १३ ॥

मराहुआ विकल घायल औ रोगी जैसा खंजन देखपड़ै वैसाही खंजन के शरीर के तुल्य देखनेवालेको होताहै देखते २ अपनेघोंसलेमें प्रवेशकरै तो धन-प्राप्तिहोतीहै। आकाशमें उडताहुआ देखपड़ै तो बंधु समागम करताहै १३ ॥

नृपतिरपिशुभंशुभप्रदेशेखगमवलोक्यमहीतलेविदध्यात् ॥
सुरभिकुसुमधूपयुक्तमर्घंशुभमभिनन्दितमेवमेतिवृद्धिम् १४॥

राजाशुभखंजनको शुभस्थानमें देख सुगंधपुष्प औ धूपकरके युक्तअर्घभूमि परदेवे। इसप्रकार समानित कियाहुआ शुभफल वृद्धिको प्राप्तहोता है १४ ॥

अशुभमपिविलोक्यखंजनंद्विजगुरुसाधुसुरार्चनेरतः ॥
ननृपतिरशुभंसमाप्नुयान्नयदिदिनानिचसप्तमांसभुक् १५॥

अशुभफल देनेवाले खंजनको भी देखकर राजा जो ब्राह्मण गुरु साधु औ देवताओं के अर्चनमें तत्परहोय तो अशुभफल नहींहोता परंतु जो सातदिन पर्यंत मांस न खाय १५ ॥

आवर्षात्प्रथमेदर्शनेफलंप्रतिदिनंतुदिनशेषात् ॥
दिक्स्थानमूर्तिलग्नर्क्षशांतदीप्तादिभिश्चोह्यम् १६ ॥

इतिश्रीवराहमिहिरकृतौबृहत्संहितायांखञ्जनकलक्षणं
नामपञ्चचत्वारिंशोऽध्यायः ४५ ॥

खंजनके प्रथम दर्शनका फल एकवर्षके भीतर होताहै। औ प्रतिदिन खंज-नके दर्शनकाफल उसदिनकी समाप्तितक होताहै। दिशा स्थान शरीर लग्न नक्षत्र शांतिदिशा दीप्तदिशा इत्यादि सबबातों का विचारकर खंजनका शुभ अशुभफल जाने १६ ॥

श्रीवराहमिहिराचार्यकीबनाईबृहत्संहितामेंखंजनलक्षण
नामपैंतालीसवांअध्यायसमाप्तहुआ ४५ ॥

छियालीसवां अध्याय ॥

उत्पातलक्षण ॥

यानत्रेरुत्पातान्गर्गःप्रोवाचतानहंवक्ष्ये ॥
तेषांसंक्षेपोऽयंप्रकृतेरन्यत्वमुत्पातः १ ॥

गर्गमुनिने अत्रिके प्रति जो उत्पात कहेहैं उनको हमकहते हैं यह उन उत्पातोंका संक्षेपहै। स्वभावसे विपरीत होना यही उत्पातहै १ ॥

अपचारेणनराणामुपसर्गःपापसंचयाद्भवति ॥
संसूचयन्तिदिव्यान्तरिक्षभौमास्तदुत्पाताः २ ॥

मनुष्योंके अविनयसे पापका संचयहोकर उपद्रव होताहै उस उपद्रवको दिव्य आंतरिक्ष औ भौम उत्पात सूचन करतेहैं २ ॥

मनुजानामपचारादपरक्तादेवताःसृज्यन्तेतान् ॥
तत्प्रतिघातायनृपःशान्तिंराष्ट्रेप्रयुंजीत ३ ॥

मनुष्योंके अपचारसे विरक्तहोकर देवता उत्पात करते हैं। उन उत्पातों की निवृत्ति के लिये राजा अपनी राज्यमें शांति करावे ३ ॥

दिव्यंग्रहर्क्षवैकृतमुल्कानिर्घातपवनपरिवेषाः ॥ गन्धर्वपुरपुरन्दरचापादियदान्तरिक्षंतत् ४ भौमंचरस्थिरभवंतच्छान्तिभिराहतशममुपैति ॥ नाभसमुपैतिमृदुतांशाम्यतिनोदिव्यमित्येके ५ ॥

ग्रहनक्षत्रों के विकार दिव्य उत्पात कहाते हैं। उल्का निर्घात पवन परिवेष गंधर्वनगर इन्द्रधनुष आदि आंतरिक्ष उत्पातहैं ४ भूमिपर चरस्थिर वस्तुओं में होनेवाले उत्पात भौमहैं॥ भौमउत्पात शांति करनेसे निवृत्तहोजाता है। आन्तरिक्ष उत्पात शांति करने से मन्द होजाता है। परंतु दिव्य उत्पात शांति करनेसे भी निवृत्त नहीं होता औ मन्द भी नहीं होता यहकोई कश्यप आदि मुनि कहते हैं ५ ॥

दिव्यमपिशममुपैतिप्रभूतकनकान्नगोमहीदानैः ॥
रुद्रायतनेभूमौगोदोहात्कोटिहोमाच्च ६ ॥

बहुत से सुवर्ण अन्न गौ औ भूमिके दानकरनेसे शिवालयमें भूमिके ऊपर गौ दुहनेसे औ कोटि होमकरनेसे दिव्य उत्पातभी शमन होजाता है ६ ॥

आत्मसुतकोशवाहनपुरदारपुरोहितेषुलोकेषु ॥
पाकमुपयातिदैवंपरिकल्पितमष्टधानृपतेः ७ ॥

राजा राजपुत्र कोश वाहन नगर रानी पुरोहित औ प्रजा इन आठों पर दिव्य उत्पातका फलहोताहै ॥ अब उत्पात कहते हैं ७ ॥

अनिमित्तभङ्गचलनस्वेदाऽश्रुनिपातजल्पनाद्यानि ॥
लिंगार्चायतनानांनाशायनरेशदेशानाम् ८ ॥

शिवलिंग देवमूर्ति औ देवमंदिर बिना कारण फूटजायँचलें इनकोपसीना आवै मूर्तिके नेत्रोंसे आंसूगिरें मूर्ति आदि बोलउठें नाचने लगजायँ इत्यादि और भी विकारहोयँ तो राजाका औ देशका नाशहोताहै ८ ॥

दैवतयात्राशकटाक्षचक्रयुगकेतुभंगपतनानि ॥
संपर्यासनसादनसंगाश्चनदेशनृपशुभदाः ९ ॥

देवताकेउत्सवमेंगाड़ी (जिसमेंदेवताकीमूर्तिविराजमानहो) कीधुरी पहिया

जूआ औ ध्वज टूटजाय गिरजाय उलटजाय लगजाय अथवा अटक जाय तो देशको औ राजाको शुभ नहीं होता है ९ ॥

ऋषिधर्मपितृब्रह्मप्रोद्भूतंवैकृतंद्विजातीनाम्॥यद्रुद्रलोकपालोद्भवंपशूनामनिष्टन्तत् १० गुरुसितशनैश्चरोत्थंपुरोधसांविष्णुजंचलोकानाम्॥ स्कन्दविशाखसमुत्थंमाण्डलिकानांनरेन्द्राणाम् ११ वेदव्यासेमन्त्रिणिविनायकवैकृतंचमूनाथे ॥ धातरिसविश्वकर्मणिलोकाभावायनिर्दिष्टम् १२ देवकुमारकुमारीवनिताप्रेष्येषुवैकृतंयत्स्यात् ॥ तन्नरपतेःकुमारककुमारिकास्त्रीपरिजनानाम् १३ रक्षःपिशाचगुह्यकनागानामेतदेवनिर्देश्यम्॥ मासैश्चाप्यष्टाभिःसर्वेषामेवफलपाकः १४॥

ऋषि धर्म पितर औ ब्रह्मा इनमें जो कुछ उत्पात होय उसका फल ब्राह्मणोंको होता है । रुद्र औ इन्द्रआदि दिक्पालोंको जो उत्पात होय वह पशुओंका अशुभ करता है १० बृहस्पति शुक्र औ शनैश्चरको उत्पात होय तो पुरोहितको अशुभ होताहै । विष्णुकी मूर्ति आदि में कुछ उत्पात होय तो लोकोंको उसका फल होताहै स्वामिकार्तिकेय औ विशाखको कुछ उत्पात होय तो मांडलिकराजाओं को फल होताहै ११ वेदव्यासको उत्पात होय तो राजा के मंत्री को उसका फल होताहै । विनायक अर्थात् गणेश की प्रतिमामें कुछ उत्पात होय तो सेनापतिको अनिष्ट होताहै । ब्रह्मा औ विश्वकर्मामें उत्पात होय तो प्रजाकानाश होताहै १२ देवताओं के कुमार कुमारी स्त्री औ सेवकों को कुछ उत्पात होय तो क्रमसे राजा के कुमार कुमारी रानी औ सेवकों को अनिष्ट होताहै १३ इसीप्रकार राक्षस पिशाच गुह्यक औ नागोंके कुमार कुमारी स्त्री औ सेवकों को उत्पात होने से राजा के कुमार कुमारी रानी औ दासों को अनिष्ट होताहै । इन सब उत्पातों का फल आठ महीने के अनन्तर होता हैं १४ ॥

बुद्ध्वादेवविकारंशुचिःपुरोधास्त्र्यहोषितःस्नातः॥ स्नानकुसुमानुलेपनवस्त्रैरभ्यर्चयेत्प्रतिमाम् १५ मधुपर्केणपुरोधाभक्ष्यैर्वलिभिश्च विधिवदुपतिष्ठेत्॥ स्थालीपाकंजुहुयाद्विधिवन्मन्त्रैश्चतल्लिंगैः १६॥

देव विकारकोजान राजाका पुरोहित पवित्रहो स्नानकर तीनदिन उपवास करै औ जिस प्रतिमामें उत्पात हुआहो उसको स्नान पुष्प अनुलेपन औ वस्त्रोंसे अर्चितकर १५ मधुपर्क अनेकप्रकारके मोदक आदि भक्ष्य पदार्थ औ वलि विधि पूर्वक समर्पण करै । औ विधिपूर्वक अग्निमें उसदेवताके मंत्रोंकरके स्थालीपाक अर्थात् एकप्रकारके चरुका हवन करै १६ ॥

इतिविबुधविकारेशांतयःसप्तरात्रंद्विजविबुधगणार्चागीतनृतोत्स वाश्च ॥ विधिवदवनिपालैर्यैःप्रयुक्तानतेषांभवतिदुरितपाकोदक्षिणा भिश्चरुद्धः १७ ॥

इतिलिङ्गवैकृतम् ॥

देवताके प्रतिमा आदि में विकार देख जो राजा सात रात्रि शांति करावें औ ब्राह्मण तथा देवताओं का विधिपूर्वक पूजन कराय गीत नृत्यआदि करके उत्सव करावें उन राजाओं को उत्पात का अनिष्ट फल नहीं होता ब्राह्मणों को दक्षिणा देनेसे वह रुकजाताहै ॥ यह देवताओं के प्रतिमा लिंग आदि की विकृतिका फल कहा। अब अग्नि विकृतिका फल कहते हैं १७॥

राष्ट्रेयस्यानग्निःप्रदीप्यतेदीप्यतेचनेन्धनवान् ॥
मनुजेश्वरस्यपीडातस्यराष्ट्रस्यविज्ञेया १८ ॥

जिसराजाकी राज्यमें अग्निविनाही अग्निकी ज्वाला देखपड़ै औ काष्ठ करके युक्त अग्निभी न जलै उस राजाको औ उसदेशको पीड़ा होती है १८ ॥

जलमांसार्द्रज्वलनेनृपतिवधःप्रहरणेरणोरौद्रः ॥
सैन्यग्रामपुरेषुचनाशोवह्नेर्भयंकुरुते १९ ॥

जल मांस औ गीली वस्तुके अकस्मात् जलने से राजाका वधहोता है खड्ग आदि शस्त्र जलउठें तो घोर युद्ध होताहै। सेना गांव औ नगरमें अग्नि न रहै अर्थात् सबकेघर अग्नि बुझजाय कहीं न मिले तो अग्नि भय होताहै १९॥

प्रासादभवनतोरणकेत्वादिष्वनलेनदग्धेषु ॥
तडितावाषण्मासात्परचक्रस्यागमोनियमात् २० ॥

प्रासाद अर्थात् देवता अथवा राजाका मन्दिर घर तोरण ध्वजआदि विना अग्नि जलजायँ अथवा बिजली गिरने से दग्धहोजायँ तो छः महीने के अनन्तर अवश्यही परचक्र अर्थात् शत्रुसेनाका आगमन होताहै २० ॥

धूमोऽनग्निसमुत्थोरजस्तमश्चाह्निजंमहाभयदम् ॥
व्यभ्रेनिशियुडुनाशोदर्शनमपिचाह्निदोषकरम् २१ ॥

विना अग्नि धुआंदेखपड़े दिनकेसमय धूलि अथवा अंधकार होय तो बड़े भयको देनेवाला होताहै। रात्रिके समय मेघके न होनेपर भी तारे न देख पड़ें। दिनके समय तारे देखपड़ें तोभी महाभय होताहै २१ ॥

नगरचतुष्पादण्डजमनुजानांभयकरंज्वलनमाहुः ॥
धूमाग्निविस्फुलिङ्गैः शय्याम्बरकेशजैर्मृत्युः २२ ॥

नगर गौआदि चतुष्पद पक्षी औ मनुष्य जो जलतेहुये देखपड़ें तो भय

होताहै यह मुनि कहतेहैं। औ जिसके शय्यावस्त्र औ केशोंमें धुआं अग्नि औ अग्निके कण देखपड़ें उसका मृत्युहोता है २२॥

आयुधज्वलनसर्पणस्वनाःकोशनिर्गमनवेपनानिवा॥
वैकृतानियदिवायुधेपराण्याशुरौद्ररणसंकुलंवदेत् २३॥

खड्गआदि शस्त्रोंका जलना चलना शब्दकरना कोश अर्थात् म्यान से बाहिर निकलना कांपना अथवा और किसी विकारका शस्त्र में होना इन सबको देख शीघ्रही बड़ायुद्धहोगा यहकहै २३॥

मन्त्रैर्वाहनैःक्षीरवृक्षात्समिद्भिर्होतव्योग्निःसर्षपैःसर्पिषाच॥
अग्न्यादीनांवैकृतेशान्तिरेवंदेयंचास्मिन्‌काञ्चनंब्राह्मणेभ्यः२४॥
इत्यग्निवैकृतम्॥

इन अग्नि विकारोंकी शांतिकेलिये क्षीर वृक्षकी समिधाओंसे अग्नि प्रज्वलितकर श्वेतसरसों औ घृतकरके अग्निमन्त्रों को पढ़ होमकरै औ ब्राह्मणोंको दक्षिणामें सुवर्ण देवै इसप्रकार होम करने से अग्नि विकारों के दोषोंकी शांतिहोती है। यह अग्नि विकृतिका फल कहा। अब वृक्ष विकृतिका फल कहतेहैं २४॥

शाखाभंगेकस्माद्वृक्षाणांनिर्दिशेद्रणोद्योगम्॥
हसनेदेशभ्रंशंरुदितेचव्याधिबाहुल्यम् २५॥

वृक्षकी शाखा अकस्मात् टूटजाय तो युद्धका उद्योग होताहै। वृक्ष हँसे तो देशका नाशहोता है औ वृक्षके रोनेसे रोग बहुत होता है २५॥

राष्ट्रविभेदस्त्वनृतौबालवधोतीवकुसुमितेबाले॥
वृक्षात्क्षीरस्रावेसर्वद्रव्यक्षयोभवति २६॥

बिना ऋतु वृक्षके पुष्प लगजायँ तो राज्यमें भेद होजाताहै बहुत छोटे वृक्षोंकोही बहुत पुष्प लगजायँ तो बालकोंका मृत्युहोताहै। वृक्षसे दूध टपकै तो सब द्रव्यों का नाशहोता है २६॥

मद्येवाहननाशःसंग्रामःशोणितेमधुनिरोगः॥
स्नेहेदुर्भिक्षभयंमहद्भयंनिःस्रुतेसलिले २७॥

वृक्षसे मद्य टपकने लगजाय तो घोड़ोंका नाशहोता है रुधिर टपकने से युद्ध शहत टपकने से रोग तेलआदि स्नेह निकलने से दुर्भिक्षका भय औ वृक्षसे जलके टपकनेसे बड़ाभय होताहै २७॥

शुष्कविरोहेवीर्यान्नसंक्षयःशोषणेचविरुजानाम्॥
पतितानामुत्थानेस्वयंभयंदैवजनितंच २८॥

सूखे वृक्षों में अंकुर निकलआवें तो बलका औ अन्नका क्षय होता है। औ रोगहीन वृक्ष विनाकारण सूखजाय तोभी बलका औ अन्नका क्षय होता है। गिरेहुयेवृक्ष आपही उठकर खड़ेहोजावँ तो दैवका भयहोता है २८॥

पूजितवृक्षेह्यनृतौकुसुमफलंनृपवधायनिर्दिष्टम्॥
धूमस्तस्मिन्ज्वालाथवाभवेन्नृपवधायैव २९॥

प्रसिद्ध वृक्षमें विनाऋतु पुष्पफल लगें तो राजाका मृत्यु होता है औ उस वृक्षमें धूमनिकले अथवा अग्निकी ज्वाला देखपड़े तोभी राजमरणही होता है २९॥

सर्पत्सुतरुषुजल्पत्सुवापिजनसंक्षयोविनिर्दिष्टः॥
वृक्षाणांवैकृत्येदशभिर्मासैःफलविपाकः ३०॥

वृक्ष चलनेलगें अथवा बोलनेलगें तो मनुष्यों का क्षयहोता है इस वृक्ष विकृतिका फल दशमहीने में होता है ३०॥

स्रग्गन्धधूपाम्बरपूजितस्यछत्रंनिधायोपरिपादपस्य॥ कृत्वाशिवंरुद्रजपोऽत्रकार्योरुद्रेभ्यइत्यत्रषडङ्गहोमः ३१ पायसेनमधुनाच भोजयेद्ब्राह्मणान्घृतयुतेनभूपतिः॥ मेदिनीनिगदितात्रदक्षिणावैकृतेतरुकृतेमहर्षिभिः ३२॥

इतिवृक्षवैकृतम्॥

पुष्पमाला गंध धूप औ वस्त्रकरके पूजित वृक्षकेऊपर छत्ररखकर रुद्रके ग्यारह अनुवाकों का जपकरै औ (रुद्रेभ्यःस्वाहा) इसमंत्र करके षडंगहोम करै तो कल्याण होताहै ३१ खीर शहत औ घृतकरके राजा ब्राह्मणों को भोजनकरावै। इसवृक्ष विकृतिकी शांतिमें बड़े२ मुनियोंने भूमि दक्षिणा देनी कहीहै इसलिये ब्राह्मणको भूमिभी देवे॥ यह वृक्ष विकृतिका फलकहाहै३२॥

नालेऽब्जयवादीनामेकस्मिन्द्वित्रिसंभवोमरणम्॥
कथयतितदधिपतीनांयमलंजातंचकुसुमफलम् ३३॥

कमल यव गेहूं आदिके एकनालमें दोतीन कमल आदिलगें तो उनके स्वामीका मरणहोताहै। औएकस्थानमें दोपुष्प अथवा फललगें तोभीउनके स्वामीका मृत्यु होताहै ३३॥

अतिवृद्धिःसस्यानांनानाफलकुसुमसंभवोवृक्षे॥
भवतिहियद्येकस्मिन्परचक्रस्यागमोनियमात् ३४॥

खेतीकी बहुत वृद्धिहोय औएकवृक्षमें अनेकप्रकारके फल पुष्पलगेंतोनिश्चय ही शत्रुकी सेना आती है ३४॥

अर्द्धेनयदातैलंभवतितिलानामतैलतावांस्यात् ॥
अन्नस्यचवैरस्यंतदाचविन्द्याद्भयंसुमहत् ३५ ॥

जितने तिलहोयं उनसेआधातेल निकले अथवा जितना तेल उनतिलों में निकलना चाहिये उससे आधातेल निकले। अथवा तिलों में तेल निकलेही नहीं औ अन्नमें स्वाद न रहै तो बड़ा भय होय यह जानै ३५ ॥

विकृतकुसुमंफलंवाग्रामादथवापुराद्बहिःकार्यम् ॥ सौम्योत्रचरुः कार्योनिर्वाप्योवापशुःशान्त्यै ३६ सस्येचदृष्ट्वाविकृतिंप्रदेयंतत्क्षेत्रमेवप्रथमंद्विजेभ्यः ॥ तस्यैवमध्येचरुमत्रभौमंकृत्वानदोषान्समुपैतितज्ज्ञान् ३७ ॥

इतिसस्यवैकृतम् ॥

विकारकरकेयुक्त पुष्प अथवा फलको ग्राम अथवा नगरकेबाहर फेंकदेवे औ सोम देवता का चरुकरना चाहिये औ शांतिके लिये पशु अर्थात् बकरादेवै ३६ खेती में विकृति देखकर पहिले तो उस खेतकोही ब्राह्मणोंको देदेवै। औ उसी खेतकेबीच भूमिदेवता का चरुकरै तो उस सस्यविकृतिके दोप उसखेत के स्वामीको नहींहोते अर्थात् अशुभफल निवृत्त होजाता है यह सस्यविकृति का फल कहा ३७ अब वृष्टिविकृतिका कहते हैं ॥

दुर्भिक्षमनावृष्ट्यामतिवृष्ट्यांक्षुद्भयंसपरचक्रम् ॥
रोगोह्यनृतुभवायांनृपतिवधोऽनभ्रजातायाम् ३८ ॥

वर्षा न होय तो दुर्भिक्ष होताहै बहुत वर्षा होय तो क्षुधाका भय अर्थात् दुर्भिक्ष औ शत्रुकी सेना का आगमन होता है। वर्षाऋतु के विना और ऋतु में वृष्टि होय तो रोग होता है विना बादल हुये वर्षा होय तो राजा का मृत्यु होता है ३८ ॥

शीतोष्णविपर्यासोनोसम्यगृतुपुसंप्रवृत्तेषु ॥
षण्मासाद्राष्ट्रभयंरोगभयंदैवजनितंच ३९ ॥

शिशिर आदि ऋतु गणित की रीतिसे अभी भलीभांति नहीं प्रवृत्त हुये होयँ औ पहिलेही शीत उष्णका विपर्यय होजाय अर्थात् शीतकाल में गर्मी पड़नेलगे औ ग्रीष्मकालमें शीतपड़ै तो छःमहीनेमें राज्यमें भयहोता है औ दैव अर्थात् पूर्वकृतकर्म का कियारोग भय होता है ३९ ॥

अन्यर्तौसप्ताहंप्रबन्धवर्षेप्रधाननृपमरणम् ॥ रक्तेशस्त्रोद्योगोमांसास्थिवसादिभिर्मरकः ४० धान्यहिरण्यत्वक्फलकुसुमाद्यैर्वर्षितैर्भयंविन्द्यात् ॥ अङ्गारपांसुवर्षेविनाशमायातितन्नगरम् ४१ ॥

वर्षाऋतु के विना और ऋतु में निरन्तर सातदिन वर्षाहोय तो प्रधान राजा का मरण होता है रुधिर वर्षा होय तो युद्ध होता है। मांस हाड़ वसा आदि के बरसनेसे मरी पड़ती है ४० धान सुवर्ण वृक्षकी छाल फल पुष्प आदि के बरसनेसे भय होता है। अंगार औ पांसु अर्थात् धूलि जिसनगर के ऊपर बरसै उस नगरका नाश होता है ४१ ॥

उपलाविनाजलधरैर्विकृतावाप्राणिनोयदादृष्टाः ॥
छिद्रंवाप्यतिवृष्टौसस्यानामीतिसंजननम् ४२ ॥

विना बादल हुये ओलेपड़ें अथवा गर्दभ उष्ट्र बिडाल जम्बुक आदि प्राणी विकार युक्त देखपड़ें। अतिवृष्टिमें भी छिद्रहोय अर्थात् सर्वत्र अतिवृष्टि होने परभी किसी २ स्थानमें बूंद भी न बरसे तो खेतियोंके लिये टीड़ी आदि उपद्रव उत्पन्न होते हैं ४२ ॥

क्षीरघृतक्षौद्राणांदध्नोरुधिरोष्णवारिणांवर्षे ॥
देशविनाशोज्ञेयोऽसृग्वर्षेचापिनृपयुद्धम् ४३ ॥

दूध घृत शहत दही रुधिर उष्णजल बरसै तो देशका नाश होय औ रुधिर बरसनेसे राजाओं का युद्धभी होताहै ४३ यह आर्या प्रक्षिप्त है ॥

यद्यमलेऽर्केछायानदृश्यतेदृश्यतेप्रतीपावा ॥
देशस्यतदासुमहद्भयमायातंविनिर्देश्यम् ४४ ॥

निर्मलसूर्य होनेपरभी वृक्ष आदिकी छाया न पड़े अथवा उलटी छायाअर्थात् सूर्यकी ओर पड़े तो देशको बड़ाभय आया है यह कहना चाहिये ४४ ॥

व्यभ्रेनभसीन्द्रधनुर्दिवायदादृश्यतेऽथवारात्रौ ॥
प्राच्यामपरस्यांवातदाभवेत्क्षुद्भयंसुमहत् ४५ ॥

विना बादल आकाशमें दिनको अथवा रात्रिको पूर्वमें अथवा पश्चिम में इन्द्रधनुष देखपड़े तो बड़ा दुर्भिक्ष होता है ४५ ॥

सूर्येन्दुपर्जन्यसमीरणानांयागःस्मृतोवृष्टिविकारकाले ॥
धान्यान्नगोकांचनदक्षिणाश्चदेयास्ततःशांतिमुपैतिपापम् ४६ ॥

इतिवृष्टिवैकृतम् ॥

वृष्टिके विकार के समय सूर्य चन्द्र मेघ औ पवन का याग करना कहा है उस यागमें धान्य अन्न अर्थात् भोजन के पदार्थ गौ औ सुवर्ण दक्षिणा देवै तो वृष्टि विकृति का अशुभ फल शांत होजाताहै॥ यह वृष्टि विकृति का फल कहाहै ४६ अब जलविकृति का फल कहते हैं ॥

अपसर्पणंनदीनांनगराद्चिरेणशून्यतांकुरुते॥शोषश्चाशोष्याणामन्येषांवाह्रदादीनाम् ४७ स्नेहाऽसृङ्मांसवहाःसंकुलकलुषप्रतीपगाश्चापि॥ परचक्रस्यागमनंनद्यःकथयंतिषण्मासात् ४८॥

नगर के नीचे नदी वहती होय औ वह नगर को छोड़ दूरजाय वहै तो वह नगर उजाड़ होजाताहै। वड़े २ ह्रद सरोवर झरने आदि जो कभी न सूखते होयँ वे सूख जायँ तो भी नगर शून्य होजाताहै ४७ नदियों में तेल आदि स्नेह रुधिर अथवा मांस वहै नदी छोटी होजावैं निर्मल न रहैं औ उलटी वहनेलगें तो छः महीने में परचक्र अर्थात् शत्रुकी सेना उसदेशपर आतीहै ४८॥

ज्वालाधूमक्काथारुदितोक्रुष्टानिचैवकूपानाम्॥
गीतप्रजल्पितानिचजनमरकायोपदिष्टानि ४९॥

कूपों के वीच अग्नि की ज्वाला उठे धुआं निकले कुओं का जल उवलने लगे कुओंके वीचसे रोनेका चिल्लाने का गानेका औ वातचीत करने का शब्द आवे तो मरी पड़तीहै ४९॥

सलिलोत्पत्तिरखातेरसगंधविपर्ययेचतोयानाम्॥
सलिलाशयविकृतौवामहद्भयंतत्रशांतिरियम् ५०॥

विना गढ़ाखोदेही जल निकल आवे जलों का गन्ध औ स्वाद वदल जाय तलाव कूप आदि जलाशयों में विकारहोजाय तो वड़ा भय होता है। उसकी निवृत्ति के लिये यह शांति है ५०॥

सलिलविकारेकुर्यात्पूजांवरुणस्यवारुणैर्मंत्रैः॥
तैरेवचजपहोमंशममेवंपापमुपयाति ५१॥

इतिजलवैकृतम्॥

जलके विकार होने पर वारुण मंत्रों करके वरुण की पूजा करै औ उनही मंत्रों करके जप औ होम भी करै इस प्रकार शांति करने से जल विकृति का अशुभ फलनिवृत्त होजाता है। यह जल विकृतिका फल कहा अव प्रसव विकृति का फल कहते हैं ५१॥

प्रसवविकारेस्त्रीणांद्वित्रिचतुःप्रभृतिसंप्रसूतौवा॥ हीनातिरिक्तकालेचदेशकुलसंक्षयोभवति ५२ वडवोष्ट्रमहिषगोहस्तिनीषुयमलोद्भवेमरणमेषाम्॥ षण्मासात्सूतिफलंशांतौश्लोकौचगर्गोक्तौ ५३॥

स्त्रियों के प्रसवमें विकार होय अर्थात् कुत्ते विल्ली आदिके रूप के वच्चे उत्पन्न होयँ दो तीन चार पांच आदि वालक एकवार उत्पन्न होयँ प्रसव के समयसे पहिले अथवा पीछे प्रसव होय तो देशका औ कुलका क्षयहोता

है ५२ घोड़ी ऊंटनी महिषी गौ औ हथिनीके दो बच्चे उत्पन्नहोयँ तो इनका मृत्युहोजाता है इसप्रसव विकृति का फल छः महीने के अनंतर होताहै इस की शांतिके लिये दो श्लोकगर्गमुनिनेकहे हैं वेलिखते हैं ५३ ॥

नार्यःपरस्यविषयेत्यक्तव्यास्ताहितार्थिना ॥ तर्पयेच्चद्विजान्कामैः शान्तंचैवात्रकारयेत् ५४ चतुष्पदास्वयूथेभ्यस्त्यक्तव्याःपरभूमिषु ॥ नगरंस्वामिनंयूथमन्यथाहिविनाशयेत् ५५ ॥

इतिप्रसववैकृतम् ॥

जिनस्त्रियों के प्रसवमें विकारहुआहोय उनको अपना हित चाहनेवाला पुरुष दूसरे देशमें छोड़आवे औ ब्राह्मणों के मनोरथ सिद्धकर उनको तृप्तकरै औ शांतिकरावै ५४ घोड़ी आदि पशुओंके प्रसवमें विकारहोय तो उनको उनके झुण्डसे अलगकर दूसरे देशमें छुटवादेवै । जो उनको वहांसे ननिकाले तो नगरको स्वामीको औ अपने यूथको नाशकरतेहैं यहप्रसव विकृतिकाफल कहा अवचतुष्पद विकृतिका फलकहते हैं ५५ ॥

परयोनावभिगमनंभवतितिरश्चामसाधुधेनूनाम् ॥ उक्षाणोवा न्योन्यंपिवतिश्वावासुरभिपुत्रम् ५६ मासत्रयेणविन्द्यात्तस्मिन्निःसंश यंपरागमनम् ॥ तत्प्रतिघातायैतौश्लोकौगर्गेणनिर्दिष्टौ ५७ ॥

एक जातिकापशु अपनी जातिको छोड़ दूसरेजातिके स्त्रीपशुसे मैथुनकरै तो अशुभहोताहै । दोगौपरस्पर स्तनपीवैं दोबैलपरस्पर स्तनपानकरैं अथवा गौके बछड़ेकेस्तनको कुत्ताचूखनेलगे ५६ तो वहां अवश्यही तीन महीने में शत्रुकीसेना आती है यहजानै । इनउत्पातों की शांतिकेलिये ये दोश्लोक गर्गमुनिकेकहे लिखते हैं ५७ ॥

त्यागोविवासनंदानंतत्तस्याशुशुभंभवेत् ॥ तर्पयेद्ब्राह्मणांश्चात्रज पहोमांश्चकारयेत् ५८ स्थालीपाकेनधातारंपशुनाचपुरोहितः ॥ प्रा जापत्येनमन्त्रेणयजेद्बह्वन्नदक्षिणम् ५९ ॥

इतिचतुष्पदवैकृतम् ॥

जिसपशुमें उत्पातहुआहो उसका त्यागकरदेवै विवासन अर्थात् उसको दूसरे स्थानमें भेजदेवे अथवा ब्राह्मणको दानकरके देदेवे वह उसको शीघ्रही शुभहोताहै इसउत्पातमें ब्राह्मणोंको तृप्तकरै औ जपहोमकरावै ५८ औ राजा का पुरोहित प्राजापत्यमंत्र करके स्थालीपाक अर्थात् चरु औ पशुकरके बहुत से अन्न औ दक्षिणाकरके प्रजापतिका पूजनकरै । यहचतुष्पद विकृतिकाफल कहा अव वायुविकृतिका फल कहते हैं ५९ ॥

यानंवाहवियुक्तंयदिगच्छेन्नव्रजेच्चवाहयुतम् ॥
राष्ट्रभयंभवतितदाचक्राणांसादभङ्गेच ६० ॥

रथआदि यानघोड़े आदि वाहनजोतने विनाही चलपड़ेअथवा घोड़ा आदिजो तने परभी न चलें रथआदि का चक्र (पहिया) गड़जाय अथवा टूटजाय तो राज्य को भयहोय ६० ॥

अनभिहततूर्यनादःशब्दोवाताडितेषुयदिनस्यात् ॥
व्युत्पत्तौवातेषांपरागमोनृपतिमरणंवा ६१ ॥

ढोलआदि वाजे विनावजाये वजनेलगें व वजानेसेभी उनमें शब्द न निकले अथवा व्युत्पत्ति अर्थात् एकवाजे में अनेक प्रकारके शब्द निकलें तो शत्रुका आगमन होय अथवा राजाका मृत्युहोय ६१ ॥

गीतरवतूर्यनादानभसियदावाचरस्थिरान्यत्वम् ॥
मृत्युस्तदागदवाविस्वरतूर्येपराभिभवः ६२ ॥

आकाशमेंगीतकाशब्दऔतूर्य अर्थात् ढोलआदिवाजोंका शब्दसुनपड़े चलने वाले रथआदि न चलें औ न चलनेवाले वृक्षआदि चलने लगजायँ तो मृत्यु अथवा रोग होते हैं। औ वजानेपर ढोल आदि वाजोंका औरही प्रकार का शब्द निकलै तो शत्रुसे पराजय होय ६२ ॥

गोलांगलयोःसंगेदर्वीशूर्पाद्युपस्करविकारे ॥
क्रोष्टुकनादेचतथाशस्त्रभयंमुनिवचश्चेदम् ६३ ॥

वैल औ हल आपुसमें जुड़जायँ दर्वी (चमचा) छाज आदि घरके उपस्करोंमें कुछ विकारहोय और उन उपस्करोंमें सृगालकासा शब्द सुनपड़े तो शस्त्रभय अर्थात् युद्धहोताहै इनउत्पातोंकी शांतिकेलिये यह मुनिवचनहै ६३ ॥

वायव्येष्वेपुनृपतिर्वायुंसक्तुभिरर्चयेत् ॥ आवायोरितिपञ्चर्चो जप्तव्याःप्रयतैर्द्विजैः ६४॥ ब्राह्मणान्परमान्नेनदक्षिणाभिश्चतर्पयेत्॥ बह्वन्नदक्षिणाहोमाःकर्तव्याश्चप्रयत्नतः ६५ ॥

इतिवायव्यवैकृतम् ॥

इनवायव्य उत्पातों में राजासत्तुओं करके वायुका पूजनकरै औ पवित्र ब्राह्मण (आवायोः) इत्यादि पांच वैदिक ऋचाजपैं पायस भोजन औ दक्षिणा करके ब्राह्मणों को तृप्त करे औ वहुत भोजन औ वहुत दक्षिणावाले होम प्रयत्न से करै ॥ यह वायुविकृति का फल कहा अव मृग पक्षि आदिकी विकृतिका फल कहते हैं ६४।६५ ॥

पुरपक्षिणोवनचरावन्यावानिर्भयाविशन्तिपुरम्॥नक्तंवादिवसचराः

क्षपाचरावाचरन्त्यहनि ६६ सन्ध्याद्वयेपिमण्डलमावध्नन्तोमृगा विहंगा वा ॥ दीप्तायांदिश्यथवाक्रोशन्तःसंहताभयदाः ६७ ॥

नगर में रहनेवाले पक्षी वनमें चलेजायँ वनके पक्षी निर्भय होकर नगर में प्रवेशकरैं दिनमें विचरनेवाले काक आदि पक्षी रात्रीको औ रात्रिमें विचरने वाले उलूक आदि दिनमें विचरें ६६ मृग अथवा पक्षी दोनोंसंध्या के समय मंडल बांधे अथवा इकट्ठेहोकर दीप्त दिशामें शब्दकरैं तो भय को देनेवाले होते हैं ६७ ॥

श्येनाःप्ररुदन्तइवद्वारेवाशान्तिजम्बुकादीप्ताः ॥ प्रविशेन्नरेन्द्रभवनेकपोतकःकौशिकोयदिवा ६८ कुक्कुटरुतंप्रदोषेहेमन्तादौचकोकिलालापः ॥ प्रतिलोममंडलचराःश्येनाद्याश्चाम्बरेभयदाः ६९ गृहचैत्यतोरणेषुद्वारेषुचपक्षिसङ्घसंपाताः ॥ मधुवल्मीकाम्भोरुहसमुद्भवाश्चापिनाशाय ७० ॥

श्येनपक्षी (बाज) रोतेहुये मानों देखपड़ै शृगाल सूर्यकीओर मुखकरके द्वारके उपर क्रूर शब्दकरैं। राजाके महलमें कपोत अथवा उलूक प्रवेश करै ६८ प्रदोषके समय कुक्कुटशब्द करैं। हेमन्त आदि ऋतुओं में कोयल बोलैं श्येन आदि मांस खानेवाले पक्षी आकाशमें उलटा अर्थात् अप्रदक्षिण मंडल बांधके विचरैं तो भय देतेहैं ६९ घर चैत्य अर्थात् प्रधान वृक्ष तोरण औ द्वार के ऊपर पक्षियों के झुंडबैठें औ घर आदिके बीचशहदकी मक्खियों का छत्ता लगे सर्पकी वांबी बनजाय अथवा कमल के पुष्प उत्पन्नहोयँ तो उनघर आदिका नाश होजाता है ७० ॥

श्वभिरस्थिशवावयवप्रवेशनंमन्दिरेषुमरकाय ॥
पशुशस्त्रव्याहारेनृपमृत्युर्मुनिवचश्चेदम् ७१ ॥

जो कुत्ते घरके भीतर हड्डी अथवा मरे मनुष्यके हाथपैर आदि अंगलेआवें तो मरी पड़तीहै। पशु औ शस्त्र जो मनुष्यकी भांति बोलने लगजायँ तो राजाका मृत्यु होताहै। इसकी शांतिके लिये यह मुनि वचनहै ७१ ॥

मृगपक्षिविकारेषुकुर्याद्धोमान्सदक्षिणान् ॥ देवाःकपोतइतिच जप्तव्याःपञ्चभिर्द्विजैः ७२ सदेवाइतिचैकेनदेयागावश्चदक्षिणाः ॥ जपेच्छाकुनसूक्तंवामनोवेदशिरांसिच ७३ ॥

इतिमृगपक्ष्यादिवैकृतम् ॥

मृग औ पक्षियोंके विकार में दक्षिणा सहित होमकरैं (देवाःकपोत) इत्यादि मंत्र पांच ब्राह्मण जपैं ७२ औ (सदेवाः) इत्यादि मंत्रको एकब्राह्मण

जपै। उन ब्राह्मणोंको गौदक्षिणा देनी चाहिये। शाकुनसूक्तका जपकरै। मन्त्र का जपकरै। औ अथर्वशीर्ष आदिभी जपै यहमृगपक्षी आदि की विकृतिकाफल कहाहै ७३॥ अब इन्द्रध्वज औ इन्द्रकील आदिकी विकृतिकाफल कहते हैं॥

शक्रध्वजेन्द्रकीलस्तम्भद्वारप्रपातभङ्गेषु॥
तद्वत्कपाटतोरणकेतूनांनरपतेर्मरणम् ७४॥

इंद्रध्वज इंद्रकील अर्थात् द्वारकी अर्गला स्तम्भ द्वार औ इसीभांतिकपाट तोरण औध्वजा इनमेंसे कोईसे कोई गिरजाय अथवाटूटजाय तो राजाका मृत्युहोताहै ७४॥

सन्ध्याद्वयस्यदीप्तिर्धूमोत्पत्तिश्चकाननेऽनग्नौ॥
छिद्राभावेभूमेर्दरणंकम्पश्चभयकारी ७५॥

दोनोंसंध्याके समय तेज होय वनके बीचविना अग्नि धुवां देखपड़ैछिद्रके विनाही भूमि फटजायभूमिकंपहोय ये सबउत्पात भयकरने वाले हैं ७५॥

पाखण्डानांनास्तिकानांचभक्तःसाध्वाचारप्रोज्झितःक्रोधशीलः॥
ईर्ष्युःक्रूरोविग्रहासक्तचेतायस्मिन्राजातस्यदेशस्यनाशः ७६॥

जिस देशका राजा पाखंड औ नास्तिकों का भक्त होय औ सदाचार से हीन क्रोधी ईर्षा युक्त क्रूर औ विग्रहासक्तचित्त हो अर्थात् जिसका चित्त सदा लड़ाई मेंही लगारहै उस देशका नाश होता है ७६॥

प्रहरहरछिन्धिभिन्धीत्यायुधकाष्ठाऽश्मपाणयोबालाः॥
निगदन्तःप्रहरन्तेतत्रापिभयंभवत्याशु ७७॥

जहां बालक शस्त्र लकड़ी पत्थर हाथोंमें लेकर मारछीनले दोटूककरदे भेदनकर इत्यादि शब्दबोलतेहुये आपसमेंप्रहारकरैं वहांभी शीघ्रहीभयहोताहै ७७

अङ्गारगैरिकाद्यैर्विकृतप्रेताभिलेखनंयस्मिन्॥
नायकचित्रितमथवाक्षयेक्षयंयाति न चिरेण ७८॥

जिस घरकी भीतोंके ऊपर कोयले गेरू आदि करके भयंकर जीवोंके रूप औ मरे हुये पुरुषों के रूप लिखेजायँ अथवा घरके स्वामीकाही चित्र कोयले आदि करके लिखाजाय वह घर शीघ्रही नाशको प्राप्तहोता है ७८॥

लूतपटाङ्कशबलंनसन्ध्ययोःपूजितंकलहयुक्तम्॥
नित्योच्छिष्टस्त्रीकंचयद्गृहंतत्क्षयंयाति ७९॥

जो घर मकड़ीके जाले औ मकरियों करके व्याप्तहोजाय दोनों संध्या के समय जिसका पूजन न होय जिसमें नित्यकलहहुआकरै औ जिस घरमें स्त्री सदा उच्छिष्टरहैं वह घर नाशको प्राप्तहोता है ७९॥

दृष्टेषुयातुधानेषुनिर्दिशेन्मरकमाशुसंप्राप्तम् ॥
प्रतिघातायैतेषांगर्गःशान्तिञ्चकारेमाम् ८० ॥

जो मनुष्योंको प्रत्यक्षही राक्षस देखपड़ें तो शीघ्रही मरीपड़ैगी यह कहै। इन उत्पातों की निवृत्तिके लिये गर्गमुनिने यहशांतिकी है ८० ॥

महाशान्त्योऽथबलयोभोज्यानिसुमहान्तिच ॥
कारयेतमहेन्द्रंचमाहेन्द्रींचसमर्चयेत् ८१ ॥
इतिशक्रध्वजेन्द्रकीलादिवैकृतम् ॥

बड़ी २ शांतिकरै वलिदेवे औ वहुतसे भोजन करावै इन्द्र औ इन्द्राणीका पूजनकरै। इसप्रकार शांति करनेसे ये उत्पात शांत होजाते हैं ८१ यह इन्द्र ध्वज आदि की विकृतिका फल कहा अब जिस ऋतुमें जो उत्पात निष्फल होते हैं उनको कहते हैं ॥

नरपतिदेशविनाशेकेतोरुदयेथवाग्रहेऽर्केन्द्वोः ॥
उत्पातानांप्रभवःस्वर्तुभवश्चाप्यदोषाय ८२ ॥

राजाके मृत्युके समय देशके नाशहोनेके समय धूम केतुके उदय होनेपर सूर्य चन्द्रके ग्रहण कालमें उत्पातोंकी उत्पत्तिहोती है औ अपने २ ऋतुमें स्वभावही से उत्पातहोते हैं परंतु उनका अशुभ फल नहीं होता वे ऋतुस्वभाव में गिनेजाते हैं ८२ ॥

येचनदोषान्जनयन्त्युत्पातास्तानृतुस्वभावकृतान् ॥
ऋषिपुत्रकृतैःश्लोकैर्विद्यादेतैःसमासोक्तैः ८३ ॥

ऋतु स्वभावसे उत्पन्न जो उत्पात अशुभफल नहीं करते उनको ऋषि पुत्र नाम आचार्यके किये इन संक्षिप्तश्लोकों करके जानै। अब ऋषि पुत्रकृत श्लोक लिखते हैं ८३ ॥

वज्राऽशनिमहीकम्पसन्ध्यानिर्घातनिःस्वनाः ॥ परिवेषरजोधूम रक्तार्कास्तमनोदयाः ८४ द्रुमेभ्योऽन्नरसस्नेहबहुपुष्पफलोद्गमाः ॥ गोपक्षिमदवृद्धिश्चशिवायमधुमाधवे ८५ ॥

विजली औ अशनिका गिरना भूकंपहोना संध्या जिसका लक्षण पीछेकह आये हैं। निर्घात और कईप्रकार के शब्द सूर्य चन्द्रके परिवेप आकाश में धूलि वनमें धूम रक्तवर्ण सूर्यकाउदय औ अस्त ८४ वृक्षोंसे अन्न मधुर आदि रस तेल आदि स्नेह बहुतसे पुष्प औ फलोंका उत्पन्नहोना। गौ औ पक्षियों में कामदेवकी वृद्धिहोना ये सब जीव उत्पात चैत्र औ बैशाखमें होयँ तो शुभ होते हैं ८५ ॥

तारोल्कापातकलुषंकपिलार्केन्दुमण्डलम् ॥ अनग्निज्वलनस्फोटधूमरेणवऽनिलाहतम् ८६ रक्तपद्मारुणासन्ध्यानभःक्षुब्धार्णवोपमम् ॥ सरितांचाम्बुसंशोषंदृष्ट्वाग्रीष्मेशुभंवदेत ८७ ॥

वारंवार तारा औ उल्का गिरने से मलिन कपिल रंग के सूर्य चंद्र मंडल करके युक्त विना अग्निके ज्वाला शब्द धूम धूलि औ पवन इनकरके उपहत अर्थात् ये जिसमें वर्त्तुतहोयँ ऐसा आकाशहोय संध्याकारंग रक्तवर्ण कमल पुष्पके तुल्यहो औ आकाश क्षुब्ध समुद्रकी भांति मानो जलके तरंगोंसे व्याप्त होरहाहै ऐसा देखपड़े। नदियों काजल सूखजाय। इन उत्पातों को ग्रीष्म ऋतुमें देख शुभफल कहै ८६। ८७ ॥

शक्रायुधपरीवेषविद्युच्छुष्कविरोहणम् ॥ कम्पोद्वर्तनवैकृत्यंरसनन्दरणांक्षितेः ८८ सरोनद्युदपानानांवृद्ध्यूर्ध्वतरणप्लवाः ॥ दरणंचाद्रिगेहानांवर्षासुनभयावहम् ८९ ॥

इन्द्रधनुप सूर्यचन्द्रको परिवेप विजली सूखेवृक्षमें अंकुर निकलना भूमि का कांपना उलटना और स्वरूप होजाना शब्दकरना औ फटजाना ८८ सरोवरोंकी वृद्धिहोना नदियों का उलटाचलना वावड़ी कुयें आदिका उभल जाना पर्वत औ घरोंका फटजाना अथवा गिरना ये उत्पात वर्षा ऋतुमें होयँ तो कुछ अशुभ फल नहीं करते ८९ ॥

दिव्यस्त्रीभूतगन्धर्वविमानाद्भुतदर्शनम् ॥ ग्रहनक्षत्रताराणांदर्शनंचदिवाम्बरे ९० गीतवादित्रनिर्घोषावनपर्वतसानुषु ॥ सस्यवृद्धिरपांहानिरपापाःशरदिस्मृताः ९१ ॥

अप्सरा गन्धर्व देवताओंके विमान और भी अद्भुत पदार्थ इनका दर्शन आकाशमें दिनके समय ग्रह नक्षत्र औ ताराओंका देखना ९० वन औ पर्वत के सानुओंमें गीत औ वाजोंके शब्दोंकासुनना खेतोंकी वृद्धि औ जलकीहानि ये सब उत्पात शरदृऋतुमें अशुभ नहीं होते हैं ९१ ॥

शीतानिलतुषारत्वंनर्दनंमृगपक्षिणाम् ॥ रक्षोयक्षादिसत्वानांदर्शनंवागमानुषी ९२ दिशोधूमान्धकाराश्चसनभोवनपर्वताः ॥ उच्चैःसूर्योदयास्तौचहेमन्तेशोभनाःस्मृताः ९३ ॥

शीतल पवनका चलना पाला गिरना मृग औ पक्षियोंका वोलना राक्षस यक्ष आदि प्राणियोंके दर्शन विना मनुष्यके वाणीसुनना ९२ आकाश वन औ पर्वतों सहित दिशाओंका धूम करके अँधेरी होजाना औ बहुत ऊंचे स्थानसे सूर्यका उदय औ अस्तहोना ये उत्पात हेमन्त ऋतुमें शुभ हैं ९३ ॥

हिमपातानिलोत्पाताविरूपाऽद्भुतदर्शनम् ॥ कृष्णांजनाभमाकाशंतारोल्कापातपिंजरम् ९४ चित्रगर्भोद्भवाःस्त्रीषुगोजाश्वमृगपक्षिषु ॥ पत्रांऽकुरलतानांचविकाराःशिशिरेशुभाः ९५ ॥

हिम (बर्फ) गिरे पवन के उत्पातहोयँ भयंकर औ अद्भुत सत्वोंके दर्शन होयँ। काले अंजन के समान रंग आकाश तारा औ उल्का गिरनेसें चित्रित होय ९४ स्त्रियोंमें अनेकरूपके गर्भ उत्पन्नहोयँ गौ बकरी घोड़े मृग औ पक्षी इनमेंभी चित्रगर्भ उत्पन्न होयँ पत्र अंकुर लता इनके विकार ये सब उत्पात शिशिर ऋतुमें शुभ होते हैं ९५ ॥

ऋतुस्वभावजाह्येतेदृष्टाःस्वर्तौशुभप्रदाः ॥
ऋतोरन्यत्रचोत्पातादृष्टास्तेभृशदारुणाः ९६ ॥

येसब उत्पात ऋतुके स्वभावसे होते हैं इसलिये अपने२ ऋतुमेंहोयँ तो शुभ होते हैं। औअपनेऋतुकोछोड़ दूसरेऋतुमें देखपड़ेंतोबहुतबुरा फलकरतेहैं९६

उन्मत्तानांचयागाथाःशिशूनांयच्चभाषितम् ॥
स्त्रियोयच्चप्रभाषन्तेतस्यनास्तिव्यतिक्रमः ९७ ॥

उन्मत्त अर्थात् विक्षिप्त पुरुष जो गाथा अर्थात् प्राकृतछंद बनाकर कुछ बातकहैं बालक जो कुछकहैं औ स्त्री जो कुछ बोलैं उसका व्यतिक्रम नहीं होता अर्थात् वहबात अवश्य होजाती है ९७ ॥

पूर्वंचरतिदेवेषुपश्चाद्गच्छतिमानुषान् ॥
नाचोदितावाग्वदतिसत्याह्येषासरस्वती ९८ ॥

यह भगवती सरस्वती वाणी विना प्रेरणाके नहीं बोलती क्योंकि पहिले देवताओंमें जाती है औ देवताओं की प्रेरणासे मनुष्योंमें जाती है इसकारण सत्यहोती है ९८ ॥

उत्पातान्गणितविवर्जितोपिबुद्ध्वाविख्यातोभवतिनरेन्द्रवल्लभश्च एतत्तन्मुनिवचनंरहस्यमुक्तंयज्ज्ञात्वाभवतिनरस्त्रिकालदर्शी९९ ॥

श्रीवराहमिहिरकृतौबृहत्संहितायामुत्पातलक्षणंनामषट्चत्वारिंशोऽध्यायः ४६

ग्रह गणित न जाननेवाला पुरुषभी इन उत्पातोंको जानलेवे तो प्रसिद्ध औ राजाका प्रिय होजाता है। यहरहस्य मुनि बचन हमने कहा जिसकोजान कर मनुष्य त्रिकालदर्शी अर्थात् भूत वर्तमान औ भविष्य कालके शुभअशुभ को जाननेवाला होजाता है ९९ ॥

श्रीवराहमिहिराचार्यकीबनाईबृहत्संहितामेंउत्पातलक्षणनामक छियालीसवांअध्यायसमाप्तहुआ ४६ ॥

सेंतालीसवां अध्याय ॥

मयूर चित्रकाध्याय ॥

दिव्यान्तरिक्षाश्रयमुक्तमादौमयाफलंशस्तमशोभनंच ॥ प्रायेण चारेषुसमागमेषुयुद्धेषुमार्गादिषुविस्तरेण १ भूयोवराहमिहिरस्यनयुक्तमेतत्कर्तुंसमासकृदसाविनितस्यदोषः ॥ तज्ज्ञैर्नवाच्यमिदमुक्तफलानुगीतिर्यद्बर्हिचित्रकमितिप्रथितंवराङ्गम् २ स्वरूपमेवतस्यतत्प्रकीर्तितानुकीर्तनम् ॥ ब्रवीम्यहंनचेदिदंतथापिमेत्रवाच्यता ३ ॥

हमने पहिले दिव्याश्रय अर्थात् ग्रह नक्षत्रोंका औ अंतरिक्षाश्रय अर्थात् उल्कापात परिवेष गंधर्वनगर इंद्रधनुष आदिका शुभ औ अशुभ फलवर्णनकिया औ प्रायः ग्रहचार चंद्रग्रह समागम ग्रहयुद्ध औ शुक्रचार मेंकहे १ मार्ग आदिकोंमें विस्तारपूर्वकसब फल कहा फिरभी उसी फलकोकहना वराहमिहिरको अर्थात् मुझको योग्य नहीं क्योंकि वराहमिहिरसंक्षेप करने वाला है यह दोष है जो विस्तार करनेवाला होता तो पुनरुक्ति होजाने पर भी कुछ चिन्ता न थी। यह मयूर चित्रक संहिताका मुख्य अंग प्रसिद्धहै इसलिये संहिताके जाननेवाले पण्डितों को यह न कहना चाहिये कि यह मयूरचित्रक प्रथम कहेहुये फलकाही अनुवाद है २ कहेहुये का अनुवाद करना यही मयूर चित्रकका स्वरूप है जो हम उस मयूरचित्रक को नहीं कहें तो भी हमारी निन्दा होती है। वास्तव में यह पहले कहे फलोंकाही पुनःकथन है ३ ॥

उत्तरवीथिगताद्युतिमन्तःक्षेमसुभिक्षशिवायसमस्ताः ॥
दक्षिणमार्गगताद्युतिहीनाःक्षुद्भयतस्करमृत्युकरास्ते ४ ॥

शुक्रचार में जो उत्तरवीथी कहीं हैं नाग गज औ ऐरावत इनमें होकर भौम आदि सब ग्रह गमन करें औ तेजस्वी होयँ तो क्षेम सुभिक्ष औ कल्याण करते हैं। औ वे ग्रह दक्षिण वीथी अर्थात् मृगअज औ दहन इनमें होकर जायँ औ कांतिहीन होयँ तो दुर्भिक्ष चोर औ मृत्यु करते हैं। अर्थात् मध्यमवीथियों में होकर जायँ तो मध्यम फल करते हैं ४ ॥

कोष्ठागारगतेभृगुपुत्रे पुष्यस्थेचागिरांप्रभविष्णौ ॥
निर्वैराःक्षितिपाःसुखभाजःसंहृष्टाश्चजना गतरोगाः ५ ॥

कोष्ठागार अर्थात् मघानक्षत्र पर शुक्रहोय औ पुष्य नक्षत्रपर बृहस्पतिहोय तो राजा परस्पर निर्वैर होते हैं औ सुखयुक्त होते हैं। औ सब मनुष्य नीरोग औ प्रसन्न रहते हैं ५ ॥

पीड़यन्तियदिकृत्तिकांमघांरोहिणींचश्रवणमैन्द्रमेववा ॥

प्रोज्झ्यसूर्यमपरेग्रहास्तदापश्चिमादिगनयेनपीड्यते ६ ॥

सूर्यको छोड और चन्द्र आदि सब ग्रह कृत्तिका मघा रोहिणी श्रवण अथवा ज्येष्ठाको दक्षिण मार्गगमन करके योग ताराका आच्छादन करके अथवा भेदन करके पीड़नकरै तो पश्चिमदिशा अनीतिकरके पीड़ित होती है ६ ॥

प्राच्यांचेद्ध्वजवदवस्थितादिनांतेप्राच्यानांभवतिहिविग्रहोनृपाणाम्॥मध्येचेद्भवतिहिमध्यदेशपीडारूक्षैस्तैर्नचरुचिमन्मयूखवद्भिः ७॥

सायंकाल के समय चन्द्रआदि ग्रह पूर्वदिशामें ध्वजकेआकारसे स्थितहोयँ तो पूर्वदेशके राजाओं का युद्धहोताहै। जो आकाशके बीच ध्वजके आकार वे ग्रह स्थितहोयँ तो मध्य देशको पीड़ा होती है। परन्तु वे ग्रह रूखे अर्थात् कांति हीन होयँ तो यह फल होताहै जो चमकते हुये किरणों करके युक्तहोयँ तो यह अशुभ फलनहीं होता ७ ॥

दक्षिणांककुभमाश्रितैस्तैस्तुदक्षिणापथपयोमुचांक्षयः ॥
हीनरूक्षतनुभिश्चविग्रहःस्थूलदेहकिरणान्वितैःशुभम् ८ ॥

वे ग्रह दक्षिण दिशा में होयँ तो दक्षिण दिशाके बादलोंका क्षय होता है। औ जो छोटे औ रूखे उनके बिंब होयँ तो युद्ध होता है। जो बड़े बिंब औ किरणों करके युक्त वे ग्रह होयँ तो शुभ होता है ८ ॥

उत्तरमार्गेस्पष्टमयूखाःशान्तिकरास्तेतन्नृपतीनाम् ॥
ह्रस्वशरीराभस्मसवर्णादोषकरास्तद्देशनृपाणाम् ९ ॥

उत्तर दिशामें उत्तर वीथियोंमें वे ग्रह होयँ औ चमकते हुए किरणों करके युक्त होयँ तो उस दिशाके राजाओंको शुभकरते हैं। औ छोटे बिंबों करकेयुक्त हों औ भस्म के तुल्य जिनका रंगहो अर्थात् कांतिहीन होयँ तो उस देशके राजाओं को अशुभ करते हैं ९ ॥

नक्षत्राणांतारकाःसग्रहाणांधूमज्वालाविस्फुलिङ्गान्विताश्चेत् ॥
आलोकंवानिर्निमित्तंनयान्तियातिध्वंसंसर्वलोकःसभूपः १० ॥

जिननक्षत्रों के औ भौम आदि जिन ग्रहोंके तारा धूम अग्नि ज्वाला औ अग्नि कणों करके युक्त देखपड़ैं अथवा बादल आदि किसी कारण बिना उनके तारा दृष्टिगोचर न होयँ तो उन नक्षत्रों के औ उनग्रहों के जो देश कहे हैं वे अपने राजा सहित नाशको प्राप्त होते हैं १० ॥

दिविभातियदातुहिमांशुयुगंद्विजवृद्धिरतीवतदाशुशुभा ॥
तदनन्तरवर्णरणोऽर्कयुगंजगतःप्रलयाश्चिचतुःप्रभृति ११ ॥

जब आकाश में दो चन्द्रमा देखपड़ैं उससमय शीघ्रही ब्राह्मणों की बहुत

उत्तम वृद्धि होतीहै। दोसूर्य आकाश में देखपड़ें तो क्षत्रियों का युद्ध होता है तीन चार आदि सूर्य आकाशमें देखपड़ें तो जगत् का संहार होजाय ११॥

मुनीनभिजितंध्रुवंमघवतश्चभंसंस्पृशन् शिखीघनविनाशकृत्कुशलकर्महाशोकदः॥ भुजङ्गभमथस्पृशेद्भवतिवृष्टिनाशोध्रुवंक्षयंव्रजतिविद्रुतोजनपदश्चबालाकुलः १२॥

सप्तऋषि अभिजित् ध्रुव औ ज्येष्ठा नक्षत्र को जो केतुस्पर्श करै तो मेघोंका नाश करताहै। कुशल औ कर्मोंका भी नाशकरताहै। औ शोकदेताहै जोआश्लेषा नक्षत्रको केतुस्पर्शकरे तो निश्चयहीवर्षा न होय औ बालकोंकरके व्याकुल कियेहुये औ देश छोड़कर भगे हुये लोक नाशको प्राप्त होतेहैं १२॥

प्राग्द्वारेषुचरन्रविपुत्रोनक्षत्रेषुकरोतिचवक्रम्॥
दुर्भिक्षंकुरुतेभयमुग्रंमित्राणांचविरोधमवृष्टिम् १३॥

कृत्तिकाआदि सात नक्षत्रों परचलताहुआ शनिवक्री होजाय तो दुर्भिक्ष बड़ा भय मित्रोंका परस्पर विरोध औ अवृष्टिकरताहै १३॥

रोहिणीशकटमर्कनन्दनोयदिभिनत्तिरुधिरोऽथवाशिखी॥
किंवदामियदनिष्टसागरेजगदशेषमुपयातिसंक्षयम् १४॥

जो रोहिणी शकटको शनैश्चर मंगल अथवा केतुभेदनकरे तोसंपूर्ण जगत् अशुभके समुद्रमें क्षयको प्राप्त होताहै इससे अधिक और क्याकहैं १४॥

उदयतिसततंयदाशिखीचरतिभचक्रमशेषमेववा॥
अनुभवतिपुराकृतंतदाफलमशुभंसचराचरंजगत् १५॥

जो केतुसदा उदयहोय अथवा संपूर्ण भचक्र को भोगै तो स्थावर जंगमरूप सब जगत् पूर्वजन्मके कियेहुये अशुभफलका अनुभव करता है १५॥

धनुःस्थायीरूक्षोरुधिरसदृशःक्षुद्भयकरोबलोद्योगंचेन्दुःकथयतिजयंज्यास्यचयतः॥ अवाक्शृङ्गोगोघ्नोनिधनमपिसस्यस्यकुरुतेज्वलन्धूमायन्वान्नृपतिमरणायैवभवति १६॥

जो चन्द्रमा धनुषके आकार हो रूखाहो औ रुधिर के तुल्य अतिरक्त वर्ण होय तो दुर्भिक्ष करता है औ सेनाओंका उद्योग अर्थात् युद्धभी कराताहै। औ जिधर इस चन्द्रमाकी ज्या (चिल्ला) होय उस दिशामें स्थित राजाओं का जयहोता है॥ चन्द्रमाके शृंग नीचेको होयँ तो गौओंकानाश औ खेतीका भी नाश करता है चन्द्रमा जलताहुआ देखपड़े अथवा चन्द्रसे धुआं निकलता दीखेतो राजाका मृत्यु होता है १६॥

स्निग्धःस्थूलःसमशृङ्गोविशालस्तुङ्गश्चोदग्विचरन्नागवीथ्याम्॥

दृष्टःसौम्यैरशुभैर्विप्रयुक्तोलोकानन्दंकुरुतेतीवचन्द्रः १७॥

स्निग्ध वड़ा समान जिसके शृंगविस्तीर्ण उत्तरशृंग जिसका ऊंचाहो नागवीथी जो पहिले कहीहै उसके नक्षत्रों में विचरता हुआ शुभग्रहों करकेदृष्टहो और अशुभग्रहों करकेयुक्तनहो ऐसाचन्द्रमा लोकोंको बहुत आनंद करताहै १७

पित्र्यमैत्रपुरुहूतविशाखात्वाष्ट्रमेत्यचयुनक्तिशशांकः॥

दक्षिणेननशुभःशुभकृत्स्यादुयद्युदक्चरतिमध्यगतोवा १८॥

मघा अनुराधा ज्येष्ठा विशाखा औ चित्रा इननक्षत्रों पर आकर चन्द्रमा जो इननक्षत्रों के दक्षिणभागमें योगकरै तो शुभनहीं होता औ इननक्षत्रों के उत्तर होकर अथवा मध्यमें होकर जो चन्द्रमाजाय तो शुभ होताहै १८॥

परिघइतिमेघरेखायातिर्यग्भास्करोदयेस्तेवा॥ परिधिस्तुप्रतिसूर्योदण्डस्त्वृजुरिन्द्रचापनिभः १९ उदयेऽस्तेवाभानोर्येदीर्घारश्मयस्त्वमोघास्ते॥ सुरचापखण्डमृजुयद्रोहितमैरावतंदीर्घम् २०॥

सूर्य के उदय काल में अथवा अस्तकालमें एक मेघकी तिरछी रेखाहोय उसको परिघ कहते हैं। परिधिको प्रतिसूर्य कहते हैं। इन्द्रचापके समान विचित्रवर्ण औ सीधाहोय उसको दंडकहते हैं १९ सूर्य के उदय अथवा अस्तके समय जो लंबे किरण होयँ उनकी अमोघ संज्ञाहै। इन्द्रधनुषका खंड सीधाहो उसको रोहित कहतेहैं औ वहीरोहित जो लंबाहोय तो ऐरावत कहाताहै २०॥

अर्धास्तमयात्सन्ध्याव्यक्तीभूतानतारकायावत्॥ तेजःपरिहानिमुखाद्भानोरर्धोदयंयावत् २१ तस्मिन्सन्ध्याकालेचिह्नैरेतैःशुभाशुभंवाच्यम्॥ सर्वैरेतैःस्निग्धैःसद्योवर्षंभयंरूक्षैः २२॥

सूर्य बिंबके आधे अस्त होनेसे लेकर जबतक तारा न देख पड़ैं तब तक अपर संध्या होती है औ ताराओं का तेज मन्दहोने के समय से लेकर सूर्य बिंबके आधे उदय होनेतक पूर्वसंध्या है २१ उस संध्याकालमें आगे कहेहुये चिह्नों करके शुभ अशुभ फल कहनाचाहिये जो वे सब चिह्न स्निग्धहोयँ तो उसी दिन वर्षा होय औ रूक्षहोयँ तो भय होता है २२ ॥

अच्छिन्नःपरिघोवियच्चविमलंश्यामामयूखारवेःस्निग्धादीधितयःसितंसुरधनुर्विद्युच्चपूर्वोत्तरा॥ स्निग्धोमेघतरुर्दिवाकरकरैरालिङ्गितोवायदावृष्टिःस्याद्यदिवाऽर्कमस्तसमयेमेघोमहांश्छादयेत् २३॥

संध्याके समय अखंडित परिघहोय आकाश निर्मल होय सूर्यके अमोघ नाम किरण श्यामवर्ण के होयँ औ अमोघ किरणों के बिना और भी सूर्य के किरण स्निग्ध होयँ शुक्लवर्ण का इन्द्रधनुष होय ईशान कोणमें बिजली चम-

के। मेघतरु अर्थात् वृक्षके आकारका मेघ स्निग्ध होय अथवा सूर्य के किरणों करके व्याप्त होयँ। तो वर्षाहोती है औ जो अस्त के समय बड़ा गहरा बादल सूर्यको ढकलेवै तो भी वर्षा होती है २३ ॥

खण्डोवक्रःकृष्णोह्रस्वःकाकाद्यैर्वाचिह्नैर्विद्धः ॥
यस्मिन्देशेरूक्षश्चार्कस्तत्राऽभावःप्रायोराज्ञः २४ ॥

जिसदेशमें खण्डित टेढ़ा कृष्णवर्ण छोटा काक आदिबुरे चिह्नों करके विद्ध औ रूक्ष सूर्य देखपड़े उसदेशके राजा का प्रायःनाश होता है २४ ॥

वाहिनींसमुपयातिपृष्ठतोमांसभुक्खगगणोयुयुत्सतः ॥
यस्यतस्यबलविद्रवोमहानग्रगैस्तुविजयोविहंगमैः २५

युद्धकी इच्छा वाले जिस राजाकी सेनाके पीछे २ मांसखानेवाले पक्षी काक आदि जायँ उस राजाकी सेनाका पराजय होताहै औ ये पक्षी जिससेना के आगे २ जायँ उसका जय होता है २५ ॥

भानोरुदयेयदिवास्तमयेगन्धर्वपुरप्रतिमाध्वजिनी ॥
बिम्बंनिरुणद्धितदानृपतेःप्राप्तंसमरंसभयंप्रवदेत् २६ ॥

सूर्यके उदय अथवा अस्तके समय गंधर्वनगरके समान सेना सूर्य बिंब को आच्छादन करे तो राजाको भयसहित युद्धप्राप्त हुआ यह कहै २६ ॥

शस्ताशान्तद्विजमृगघुष्टासन्ध्यास्निग्धामृदुपवनाच ॥
पांशुध्वस्ताजनपदनाशंधत्तेरूक्षारुधिरनिभावा २७ ॥

जिस सन्ध्यामें शांत अर्थात् सूर्यकी ओर मुख न करके औ मधुर स्वरसे पक्षी औ मृगशब्दकरें औ वहसंध्या स्निग्धहो औ मंदपवनचलताहो ऐसी संध्या शुभहोती है। जिस संध्यामें धूलि उड़ती होय रूक्षहो औ जिसका वर्ण रुधिरके समान अतिरक्तहो वहसंध्या देशका नाशकरती है २७ ॥

यद्विस्तरेणकथितंमुनिभिस्तदस्मिन् सर्वंमयानिगदितंपुनरुक्तवर्जम् ॥ श्रुत्वापिकोकिलरुतंबलिभुग्विरौतियत्तत्स्वभावकृतमस्यपिकंनजेतुम् २८ ॥

इतिश्रीवराहमिहिरकृतौबृहत्संहितायांमयूरचित्रकंनामसप्तचत्वारिंशोऽध्यायः ॥

गर्ग आदि मुनीश्वरोंने जो मयूरचित्रकमें विस्तारसेकहा वहसब हमने पुनरुक्ति छोड़ इसअध्यायमें कहा कोकिलका मधुर शब्द सुनकेभी काक बोलताहै वह उसका स्वभावहै कुछ कोकिल को जीतने के लिये नहीं बोलताहै २८ ॥

श्रीवराहमिहिराचार्यकीबनाईबृहत्संहितामेंमयूरचित्रकनाम
सैंतालीसवांअध्यायसमाप्तहुआ ४७ ॥

अठतालीसवांअध्याय ॥

पुष्यस्नानाध्यायः ॥

मूलंमनुजाधिपतिःप्रजातरोस्तदुपघातसंस्कारात् ॥
अशुभंशुभंचलोकेभवतियतोऽतोनृपतिचिन्ता १ ॥

प्रजारूप वृक्षकी जड़ राजा है राजाके उपघात अर्थात् नाशसे प्रजामें अशुभ औ राजाके संस्कार अर्थात् वृद्धिसे प्रजामें शुभ होताहै इसलियेराजाके शुभकी वृद्धिके लिये यत्न करना चाहिये १ ॥

याव्याख्यालाशान्तिःस्वयम्भुवासुरगुरोर्महेन्द्रार्थे ॥
तांप्राप्यवृद्धगर्गःप्राहयथाभागुरेःशृणुत २ ॥

ब्रह्माजीने इन्द्रके लिये बृहस्पतिको जो शान्ति कही वही शांति वृद्ध गर्ग मुनिने बृहस्पतिसे पाय अपने शिष्य भागुरिको जिसप्रकार कही उस शांतिको सुनो २ ॥

पुष्यस्नानंनृपतेःकर्त्तव्यंदैववित्पुरोधोभ्याम् ॥
नातःपरंपवित्रंसर्वोत्पातान्तकरमस्ति ३ ॥

पुष्यनक्षत्रमें दैवज्ञ औ पुरोहित राजाको स्नानकरावें। इसपुष्यस्नान से बढ़कर पवित्र औ सब उत्पातोंका नाशकरनेवाला कोई नहीं है ३ ॥

श्लेष्मातकाक्षकण्टकिकटुतिक्तविगन्धिपादपविहीने ॥ कौशिकगृध्रप्रभृतिभिरनिष्टविहगैःपरित्यक्ते ४ तरुणतरुगुल्मवल्लीलताप्रतानावृतेवनोद्देशे॥निरुपहतपत्रपल्लवमनोज्ञमधुरद्रुमप्राये ५ ॥

लेसवा बहेड़े कांटेवाले वृक्ष कटु तिक्त औ दुर्गंध युक्त वृक्षोंकरके रहित उलूक गीध आदि अशुभ पक्षियों करकेहीन ४ नये वृक्ष गुल्म बेल औ लताओं के विस्तारसे वेष्टित उपद्रव रहित जिनके पत्र औ कोमलपत्ते ऐसे सुन्दर औ मधुर अर्थात् जिनके फल आदि मीठेहों ऐसे वृक्षों करके युक्त वनमें पुष्य स्नान करै ५ ॥

कृकवाकुजीवजीवकशुकशिखिशतपत्रचाषहारीतैः ॥ क्रकरचकोरकपिंजलवंजुलपारावतश्रीकैः ६ कुसुमरसपानमत्तद्विरेफपुंस्कोकिलादिभिश्चान्यैः ॥ विरुतेवनोपकण्ठेक्षेत्रागारेशुचावथवा ७ ॥

अथवा जिस वनमें कुक्कुट जीव जीवक शुक मयूर शतपत्रचाप हारीतक्रकर चकोर कपिंजल वंजुल पारावत औ श्रीक ये पक्षी मधुरशब्दकर रहे होयँ ६ जो पुष्पों का रस पानकरमत्त हुये जो भ्रमर उन करके औ कोकिल आदि

पक्षियों करके शब्दायमान ऐसे वनके समीप अथवा क्षेत्र अर्थात् पुण्यस्थान में जो घर उसकेबीच पुष्यस्नान करै ७ ॥

ह्रदिनीविलासिनीनांजलखगनखविक्षतेषुरम्येषु ॥
पुलिनजघनेषुकुर्याद्दृङ्मनसोःप्रीतिजननेषु ८ ॥

अथवा नदीरूप नारियोंके जो अति मनोहर जलपक्षियोंके जिन में नख क्षत होरहे हैं नेत्र औ मनको प्रीति देनेवाले ऐसे तीररूप जघन उनमें पुष्य स्नान करै ८ ॥

प्रोत्प्लुतहंसच्छत्रेकारण्डवकुररसारसोद्गीते ॥
फुल्लेन्दीवरनयनेसरसिसहस्राक्षकान्तिधरे ९ ॥

उड़तेहुये हंस हैं छत्र जिसके कारंडव कुरर औ सारस ये पक्षी जिसके आगे गाते हैं फूलेहुये नीलकमलही हैं नेत्र जिसके इसीलिये इन्द्रकी शोभा को धारताहुआ जो सरोवर उसके तटपर पुष्यस्नानकरै ९ ॥

प्रोत्फुल्लकमलवदनाःकलहंसकलस्वनप्रभाषिण्यः ॥
प्रोत्तुङ्गकुड्मलकुचायस्मिन्नलिनीविलासिन्यः १० ॥

अथवा जिसस्थान में फूलेहुये कमलही हैं मुख जिनके हंसोंके मधुरशब्द से मानों जो बातचीत कररहीहैं ऊंचीकमल कलिकाही जिन के कुचहैं ऐसी पुष्करिणीरूप वेश्याहोयँ वहां पुष्य स्नान करै १० ॥

कुर्याद्गोरोमन्थजफेनलवशकृत्खुरक्षतोपचिते ॥
अचिरप्रसूतहुंकृतवल्गितवत्सोत्सवेगोष्ठे ११ ॥

अथवा गौओंका रोमंथ अर्थात् चर्वितचर्वण उससे जो फेनके बिन्दुगिरें उनकरके गौओंके गोबरकरके गौओंके खुरोंके चिह्नोंकरके औ थोड़े से दिन के उत्पन्नहुये बछड़ों के हुंकारशब्दका औ कूदनेकाही जिसमें उत्सव है ऐसे गोष्ठ अर्थात् गौओंके स्थानमें पुष्यस्नानकरै ११ ॥

अथवासमुद्रतीरेकुशलागतरत्नपोतसंबाधे ॥
घननिचुललीनजलचरसितखगशबलीकृतोपान्ते १२ ॥

अथवा कुशलपूर्वक प्राप्तहुए हैं रत्नजिनको ऐसे जो पोत (जहाज)उनकी जहां भीड़होरही है औ बहुतघने वेतसवृक्षों के मूल में बैठे जो जलजन्तु औ श्वेतपक्षी उनकरके चित्रित हैं समीपभाग जिस के ऐसे समुद्रतीरपर पुष्यस्नानकरै १२ ॥

क्षमयाक्रोधइवजितःसिंहोमृग्याऽभिभूयतेयत्र ॥
दत्ताऽभयखगमृगशावकेपुण्यआश्रमेप्यथवा १३ ॥

अथवा जहां क्षमामानों क्रोधकोजीते इसभांति हरिणी सिंहका तिरस्कार करै औ जहां पक्षी औ मृगों के बच्चों को अभय देरक्खाहोय ऐसे मुनियों के आश्रमोंमें पुष्यस्नानकरै १३ ॥

काञ्चीकलापनूपुरगुरुजघनोद्वहनविघ्नितपदाभिः ॥
श्रीमतिमृगेक्षणाभिर्गृहेऽन्यभृतवल्गुवचनाभिः १४ ॥

मेखला कलाप नूपुर औ भारीजघन के धारण करने करके मन्दगामी हैं चरण जिन के मृग के नेत्रोंके समान हैं नेत्र जिन के औ कोकिलशब्द के समान हैं मधुर वचन जिनके ऐसीस्त्रियोंसे शोभित औ लक्ष्मी करकेयुत घर मेंही पुष्यस्नानकरै १४ ॥

पुण्येष्वायतनेषु चतीर्थेषूद्यानरम्यदेशेषु ॥
पूर्वोदक्प्लवभूमौप्रदक्षिणाऽम्भोवहायांच १५ ॥

अथवा पवित्र देवस्थान तीर्थ उद्यान औ मनोहर स्थान इनमें अथवा पूर्व उत्तरकी ओर प्लव अर्थात् निम्न औ जिसमें जल प्रदक्षिण बहताहो ऐसी भूमिमें पुष्यस्नानकरै १५ ॥

भस्माङ्गारास्थ्यूषरतुषकेशश्वभ्रकर्कटावासैः ॥ श्वाविन्मूषकविवरैर्वल्मीकैर्याचसंत्यक्ता १६ धात्रीघनासुगन्धास्निग्धामधुरासमा चविजयाय ॥ सेनावासेप्येवंयोजयितव्यायथायोगम् १७ ॥

राख कोयले हाड़ ऊषर तुष केश गढ़े कर्कट नाम छोटे मृगोंके विल स्याही औ चूहोंकेविल औ सर्पकी बांबी ये जिसभूमिमें न होयँ १६ औ जो भूमि घन अर्थात् अन्तःसारहो सुगन्ध स्निग्ध मधुर औ समहो ऐसी भूमि पुष्यस्नान के लिये उत्तमहोती है। सेना के निवास के लिये भी युक्तिपूर्वक ऐसीही भूमि ग्रहणकरै १७ ॥

निष्क्रम्यपुरान्नक्तंदैवज्ञामात्ययाजकाःप्राच्याम् ॥ कौवेर्यांवाकृत्वा बलिंदिशीशाधिपायांवा १८ लाजाक्षतदधिकुसुमैःप्रयतःप्रणतःपुरोहितःकुर्यात् ॥ आवाहनमथमन्त्रस्तस्मिन्मुनिभिःसमुद्दिष्टः १९ ॥

रात्रि के समय ज्योतिषी राजाका मन्त्री औ पुरोहित नगरसे वाहिरजाय पूर्व में उत्तरमें अथवा ईशानकोण में बलिदेकर १८ लाजा (धानकी खील) अक्षत दही औ पुष्पों करके पवित्र औ नम्रहोकर पुरोहित आमंत्रणकरै। उस आमंत्रणकेलिये मुनियोंने यहमंत्रकहा है १९ ॥

आगच्छन्तुसुराःसर्वेयेऽत्रपूजाभिलाषिणः ॥
दिशोनागाद्विजाश्चैवयेचान्येप्यंशभागिनः २० ॥

यह आवाहन का मन्त्र है २० ॥

आवाह्यैवंततःसर्वानेवंब्रूयात्पुरोहितः ॥
श्वःपूजांप्राप्ययास्यन्तिदत्त्वाशान्तिंमहीपतेः २१ ॥

इसभांति आवाहनकर सबको पुरोहित यहकहै कि जो देवता यहां आवाहन कियेहैं वे प्रातःकाल पूजाग्रहणकर औ राजाको कल्याणदेकरजायँगे २१ ॥

आवाहितेषुकृत्वापूजांतांशर्वरींवसेयुस्ते ॥
सदसत्स्वप्ननिमित्तंयात्रायांस्वप्नविधिरुक्तः २२ ॥

आवाहन कियेहुये देवताओं का पूजनकरके उसरात्रिको वे तीनों भला बुरा स्वप्न देखनेकेलिये वहांहीरहैं। स्वप्नका विधान औ शुभ अशुभ फल हमने योगयात्रा नामक अपने ग्रन्थमें कहा है २२ ॥

अपरेऽहनिप्रभातेसंभारानुपहरेद्यथोक्तगुणान् ॥
गत्वाबलिप्रदेशेश्लोकाश्चाप्यत्रमुनिगीताः २३ ॥

दूसरे दिन प्रभातहीं बलि के स्थान में जाय जैसी चाहिये वैसी सामग्री इकट्ठीकरैं इसअर्थ में वृद्ध गर्गमुनिने ये श्लोककहे हैं २३ ॥

तस्मिन्मण्डलमालिख्यकल्पयेत्तत्रमेदिनीम् ॥ नानारत्नाकरवतींस्थानानिविविधानिच २४ पुरोहितोयथास्थानं नागान्यक्षान्सुरान्पितॄन् ॥ गन्धर्वाप्सरसश्चैवमुनीन्सिद्धांश्चविन्यसेत् २५ ग्रहांश्चसहनक्षत्रैरुद्रांश्चसहमातृभिः ॥ स्कन्दंविष्णुंविशाखंचलोकपालान्सुरस्त्रियः २६ वर्णकैर्विविधैःकृत्वाहृद्यैर्गन्धगुणान्वितैः ॥ यथास्वंपूजयेद्विद्वान्गन्धमाल्यानुलेपनैः २७ भक्ष्यैरन्यैश्चविविधैःफलमूलामिषैस्तथा ॥ पानकैर्विविधैर्हृद्यैःसुराक्षीरासवादिभिः २८ ॥

पूर्वोक्त स्थानमें मण्डलरचकर अनेकरत्नाकरों करके सहित भूमि औ उसमें अनेकभांति के स्थान कल्पनाकरै २४ फिर पुरोहित अपने२ स्थान में नाग यक्ष देवता पितर गन्धर्व अप्सरा मुनि औ सिद्ध उनको स्थापनकरै २५ औ नक्षत्रोंसहित ग्रहमातृकाओं सहित रुद्र स्कन्द विष्णु विशाख लोकपाल औ इन्द्राणीआदि देवांगनाओं का स्थापन भी करै २६ इन सबके स्वरूप मनोहर औ सुगन्धयुक्त अनेकप्रकार के रंगोंकरके बनाय पीछे गन्धमाल्य औ अनुलेपनकरके पुरोहित यथाक्रम इनका पूजनकरै २७ औरभी मोदकआदि अनेकप्रकारके भक्ष्य फल मूल मांस अनेकप्रकारके उत्तम पानकसुरा दूध औ आसवआदि करके भी पूजनकरै २८ ॥

कथयाम्यतःपरमहंपूजामस्मिन्यथाभिलिखितानाम् ॥ ग्रहयज्ञे

यःप्रोक्तोविधिर्ग्रहाणांसकर्तव्यः २९ मांसौदनमद्याद्यैःपिशाचदिति तनयदानवाःपूज्याः ॥ अभ्यंजनाऽञ्जनतिलैःपितरोमांसौदनैश्चा पि ३० सामयजुर्भिर्मुनयस्त्वृग्भिर्गन्धैश्चधूपमाल्ययुतैः ॥ अश्लेप कवर्णैस्त्रिमधुरेणचाभ्यर्चयेन्नागान् ३१ धूपाज्याहुतिमाल्यैर्विबुधान् रत्नैःस्तुतिप्रणामैश्च ॥ गन्धर्वानप्सरसोगंधैर्माल्यैश्चसुसुगंधैः ३२ शेषांस्तुसार्ववर्णिकवालिभिःपूजांन्यसेच्चसर्वेपाम् ॥ प्रतिसरवस्त्रपता काभूषणयज्ञोपवीतानि ३३ ॥

इसके अनन्तर हम इसमण्डलमें लिखेहुये देवताओंकी पूजाकहतेहैं योग यात्राग्रन्थमें हमने ग्रहयज्ञका जो विधानकहा वही यहां भी ग्रहपूजामें करना चाहिये २९ पिशाच दैत्य औ दानवों को मांस भात औ मद्यकरके पूजनकरै पितरोंको अभ्यञ्जन अर्थात् शरीरमें लगानेयोग्य तिलोंका तेलआदि अंजन तिल मांस औ भातकरके पूजै ३० सामयजुः ऋक्करके औ गन्ध धूप पुष्प मालाओं करके मुनियोंका पूजनकरै । औ श्लेपकवर्ण अर्थात् जहां बहुत से रंगोंका योगनहोय उसकरके औ त्रिमधुर अर्थात् घृत शहद औ खांडकरके नागोंका पूजनकरै ३१ धूप घृतकी आहुति माला रत्नस्तुति औ प्रणामों करके देवताओंका पूजनकरै । सुन्दर सुगन्धकरके युक्त गन्ध औ मालाओं करके गन्धर्व औ अप्सराओं का पूजनकरै ३२ शेष देवताओंको सववर्ण की वलियों करके पूजनकरै । औ प्रतिसर अर्थात् मौली वस्त्रध्वज भूषण औ यज्ञोपवीत मण्डलमें लिखेहुये सब देवताओंको चढ़ावै ३३ ॥

मण्डलपश्चिमभागेकृत्वाग्निंदक्षिणेऽथवावेद्याम् ॥
आदद्यात्संभारान्दर्भान्दीर्घानगर्भांश्च ३४ ॥

मण्डल के पश्चिम अथवा दक्षिणभाग में वेदीवनाय उसपर अग्निस्था- पनकरै औ सब सामग्री एकत्रकरै औ लम्बे तथा गर्भरहित कुश भी वहां लाकररक्खै ३४ ॥

लाजाज्याक्षतदधिमधुसिद्धार्थकगंधसुमनसोधूपान् ॥ गोरोचनांज नतिलान्स्वर्तुजमधुराणिचफलानि ३५ सघृतस्यपायसस्यचतत्रश रावाणितैश्चसंभारैः ॥ पश्चिमवेद्यांपूजांकुर्यात्स्नानस्यसावेदी ३६॥

लाजाघृत अक्षत दही शहद श्वेतसरसों गन्ध पुष्प धूप गोरोचन अंजन तिल उसऋतुमें उत्पन्नहुये मीठेफल ३५ औ घृतसहित खीरसे भरेहुये सकोरे इन सबकरके पश्चिम वेदीमें पूजनकरै वही पुष्यस्नानकी वेदी है ३६ ॥

तस्याःकोणेषुदृढान्कलशान्सितसूत्रवेष्टितग्रीवान् ॥ सक्षीरवृक्ष

पल्लवफलापिधानान्व्यवस्थाप्य ३७पुष्यस्नानविमिश्रेणापूर्णानम्भसासरत्नांश्च ॥ पुष्यस्नानद्रव्याण्यादद्याद्गर्गगीतानि ३८ ॥

उसवेदी के चारोंकोणों में दृढ़ श्वेत सूत्र जिनके कंठ में लिपटाहो क्षीर वृक्ष अर्थात् जिसवृक्ष में दूधनिकलताहो उसके कोमलपत्ते औ फलों करके ढकेहुये पुष्यस्नान की औषधियों सहित जल से भरेहुये औ रत्नोंसहित कलश स्थापन करके गर्गमुनि के कहेहुये पुष्यस्नान के द्रव्य इकट्ठे करै उन को कहते हैं ३७। ३८ ॥

ज्योतिष्मतींत्रायमाणामभयामपराजितम् ॥ जीवांविश्वेश्वरींपाठांसमङ्गांविजयांतथा ३९ सहांचसहदेवींचपूर्णकोशांशतावरीम् ॥ अरिष्टिकांशिवांभद्रांतेषुकुम्भेषुविन्यसेत् ४० ब्राह्मींक्षेमामजांचैवसर्वबीजानिकाञ्चनीम् ॥ मङ्गलानियथालाभंसर्वौषधिरसांस्तथा ४१ रत्नानिसर्वगन्धांश्चबिल्वंचसविकंकतम् ॥ प्रशस्तनाम्न्यश्चौषध्योहिरण्यंमंगलानिच ४२ ॥

मालकांगनी त्रायमाण हरड़ अपराजिता (शमी) जीवन्ती पद्मचारिणी पाठा मंजीठ विजया ३९ मुद्गपर्णी सहदेवी पूर्णकोशा शतावरी अरिष्टिका शिवा औ भद्रा इनसब औषधियोंको उनकलशों में डाले ४० ब्राह्मी क्षेमा अजा सब प्रकारके बीज कांचनी ओषधी अक्षत पुष्प आदि मांगल्यवस्तु जितनी मिलजायँ सब औषधी सब मधुर लवण आदिरस ४१ रत्न सब सुगन्ध द्रव्य बिल्व विकंकत वृक्षका फल उत्तम नाम जिनके होयँ ऐसी जयापुत्र जीवा पुनर्नवा आदि औषधी सुवर्ण गोरोचन श्वेत सर्षप दूर्वा आदि मंगल वस्तु ये सबभी उनकलशों में डाले ४२ ॥

आदावनडुहश्चर्मजरयासंहतायुषः ॥ प्रशस्तलक्षणभृतःप्राचीनग्रीवमास्तरेत् ४३ ततोवृषस्ययोधस्यचर्मरोहितमक्षतम्॥ सिंहस्याथतृतीयंस्याद्व्याघ्रस्यचततःपरम् ४४ चत्वार्येतानिचर्माणितस्यांवेद्यामुपास्तरेत् ॥ शुभेमुहूर्तेसंप्राप्ते पुष्ययुक्तेनिशाकरे ४५ ॥

उत्तम लक्षणों करके युक्त जो बैल वृद्ध होकर मराहो उसका चर्म लेकर पहिले वेदीमें बिछावै औ उसचर्मकी ग्रीवापूर्वकी ओर करै ४३ उसके ऊपर योधवृषका लाल रंगका अखंडित चर्म बिछावै। उसके ऊपर सिंहका चर्म औ उसकेभी ऊपर व्याघ्रका चर्म बिछावै ४४ इसप्रकार पुष्यनक्षत्रपरचंद्रमा होय औ शुभ मुहूर्त्तहो उससमय ये चारों चर्म उस वेदीमें बिछावै ४५ ॥

भद्रासनमेकतमेनकारितंकनकरजतताम्रक्षीरणाम् ॥ क्षीरतरुनिर्मि

तंवाविन्यस्यंचर्मणासुपरि ४६ त्रिविधस्तस्योच्छ्रायोहस्तःपादाधिको ऽर्धयुक्तश्च ॥ मण्डलिकानांतरजित्समस्तराज्यार्थिनांशुभदः ४७॥

सोना चांदी तांबा इनतीनों में से किसी एकका भद्रासन बनावे अथवा गूलर आदि क्षीर वृक्षके काष्ठकाही बनावे औ उन बिछायेहुये चर्मों के ऊपर उसको स्थापन करै ४६ उस भद्रासन की ऊँचाई तीन प्रकार की होती है माण्डलिक राजाको एकहाथ ऊँचा सदा जीतनेकी इच्छावाले को सवाहाथ ऊँचा औ संपूर्ण राज्य की इच्छा वाले राजा को डेढ़हाथ ऊंचा भद्रासन शुभ फल कर्ता है ४७ ॥

अंतरधाथहिरण्यंतत्रोपविशेन्नरेश्वरःसुमनाः ॥
सचिवाप्तपुरोहितदैवपौरकल्याणनामवृतः ४८ ॥

उस सिंहासन के बीच सुवर्ण रख प्रसन्न चित्त होकर मंत्री आप्त अर्थात् विश्वास पात्र मनुष्य पुरोहित ज्योतिषी औ मंगलदायक नामवाले नगर के लोग जैसा जय राज सिंहराज आदि इन सब करके आवृत राजाउस सिंहासनके ऊपर बैठे ४८ ॥

बंदिजनपौरविप्रप्रघुष्ट पुण्याहवेदनिर्घोषैः ॥
समृदंगशङ्खतूर्यैर्मंगलशब्दैर्हताऽनिष्टः ४९ ॥

बंदीजन नगरके लोक औ ब्राह्मण इनने ऊंचे स्वरसे पढ़े पुण्याहवाचन औ वेदके शब्दोंकरके औ मृदंग शंख तूर्य आदिबाजोंके मंगल शब्दोंकरके निवृत्त हुआहै अशुभ जिसका ऐसाराजा सिंहासन पर बैठे ४९ ॥

अहतक्षौमनिवसनंपुरोहितःकम्बलेनसंछाद्य ॥
कृतबलिपूजंकलशैरभिषिञ्चेत्सर्पिषापूर्णैः ५० ॥

नयेवस्त्र जिसने पहिना है बलि औ पूजा जिसने की है ऐसे राजाकोऊन के वस्त्र दुशाले आदि करके आच्छादनकर घृत से भरे कलशों करके पुरोहित अभिषेक करै ५० ॥

अष्टावष्टाविंशतिरष्टशतंवापिकलशपरिमाणम् ॥
अधिकेऽधिकेगुणोत्तरमयंचमंत्रोत्रमुनिगीतः ५१ ॥

आठ अठाईस अथवा एकसौ आठ कलश स्थापन करै जितने कलश अधिक हों उतनाहीं अधिक शुभ फल होता है इस अभिषेक के लिये वृद्ध गर्ग मुनि ने यह मंत्र कहा है ५१ ॥

आज्यंतेजःसमुद्दिष्टमाज्यंपापहरंपरम् ॥ आज्यंसुराणामाहारआ

ज्येलोकाःप्रतिष्ठिताः५२ भौमान्तरिक्षंदिव्यंवायत्तेकिल्बिषमागतम्॥ सर्वंतदाज्यसंस्पर्शात्प्रणाशमुपगच्छतु ५३ ॥

ये मंत्र घृत से अभिषेक करनेके समय पढ़ै ५२ । ५३ ॥

कम्बलमपनीयततःपुष्यस्नानाम्बुभिःसफलपुष्पैः ॥
अभिषिञ्चेन्मनुजेन्द्रंपुरोहितोऽनेनमन्त्रेण ५४ ॥

फिर राजाके ऊपरसे ऊर्ण वस्त्र उतार फल पुष्प सहित औ पुष्यस्नानके द्रव्यों करके युक्तजलोंकरके पुरोहितइसमंत्रसे राजाका अभिषेक करै ५४ ॥

सुरास्त्वामभिषिञ्चन्तुयेचसिद्धाःपुरातनाः ॥ ब्रह्माविष्णुश्चरुद्रश्चसाध्याश्चसमरुद्गणाः ५५ आदित्यावसवोरुद्राअश्विनौचभिषग्वरौ ॥ अदितिर्देवमाताचस्वाहासिद्धिःसरस्वती ५६ कीर्तिर्लक्ष्मीर्धृतिश्रीश्चसिनीवालीकुहूस्तथा ॥ दनुश्चसुरसाचैवविनताकद्रुरेवच ५७ देवपत्न्यश्चयानोक्तादेवमातरएवच ॥ सर्वास्त्वामभिषिञ्चन्तुदिव्याश्चाप्सरसांगणाः ५८ नक्षत्राणिमुहूर्ताश्चपक्षाहोरात्रिसंधयः ॥ संवत्सरादिनेशाश्चकलाःकाष्ठाःक्षणालवाः ५९ सर्वेत्वामभिषिञ्चन्तुकालस्यावयवाःशुभाः॥वैमानिकाःसुरगणामनवःसागरैःसह६० सरितश्चमहाभागानागाःकिंपुरुषास्तथा ॥ वैखानसामहाभागाद्विजावैहायसाश्चये ६१ सप्तर्षयःसदाचाराध्रुवस्थानानियानिच ॥ मरीचिरत्रिःपुलहःपुलस्त्यःक्रतुरंगिराः ६२ भृगुःसनत्कुमारश्चसनकोथसनन्दनः ॥ सनातनश्चदक्षश्चजैगीषव्योभलंदनः ६३ एकतश्चद्वितश्चैवत्रितोजाबालिकश्यपौ ॥ दुर्वासादुर्विनीतश्चकण्वःकात्यायनस्तथा ६४ मार्कंडेयोदीर्घतपाःशुनःशेफोविदूरथः ॥ और्वःसंवर्तकश्चैवच्यवनोऽत्रिःपराशरः६५ द्वैपायनोयवक्रीतोदेवराजःसहानुजः॥ एतेचान्येचमुनयोवेदव्रतपरायणाः ६६ सशिष्यास्तेऽभिषिञ्चन्तुसदाराश्चतपोधनाः॥ पर्वतास्तरवोवल्यःपुण्यान्यायतनानिच ६७ प्रजापतिर्दितिश्चैवगावोविश्वस्यमातरः॥ वाहनानिचदिव्यानिसर्वेलोकाश्चराचराः ६८ अग्नयःपितरस्ताराजीमूताःखंदिशोजलम् ॥ एतेचान्येचबहवःपुण्यसंकीर्तनाःशुभाः ६९ तोयैस्त्वामभिषिञ्चन्तुसर्वोत्पातनिवर्हणैः ॥ यथाभिषिक्तोमघवानेतैर्मुदितमानसैः ७० ॥

ये मंत्र पढ़ पुरोहित राजाको कलशोंके जल से अभिषेक करै ७० ॥

इत्येतैश्चान्यैश्चाप्यथर्वकल्पाहितैःसरुद्रगणैः ॥
कौष्माण्डमहारोहिणकुबेरहृदयैःसमृद्ध्याच ७१ ॥

इन मंत्रों करके औ अथर्वण कल्पमें कहेहुये और मंत्रों करके एकादश अनुवाकके रुद्रकरके छःअनुवाकके कौष्मांडिककरके महारोहिण औ कुबेर हृदय मंत्र करके औ समृद्धि अर्थात् ऋचाकरके राजाका अभिषेक करै ७१ ॥

आपोहिष्ठातिसृभिर्हिरण्यवर्णेतिचतसृभिर्जप्तम् ॥
कार्पासिकवस्त्रयुगंबिभृयात्स्नातोनराधिपतिः ७२ ॥

फिर आपोहिष्ठा आदि तीनऋचा औ हिरण्यवर्णा आदि चारऋचाओं करके अभिमंत्रित कियेहुए दो सूत के वस्त्रस्नान करके राजाधारणकरै ७२॥

पुण्याहशंखशब्दैराचान्तोऽभ्यर्च्यदेवगुरुविप्रान् ॥
छत्रध्वजायुधानिचततःस्वपूजांप्रयुंजीत ७३ ॥

पुण्याहवाचन औ शंख के शब्दों करके युक्त राजा आचमनकर देवता गुरु औ ब्राह्मणोंका औ छत्रध्वज औ खड्ग आदि शस्त्रोंका पूजनकर फिर अपने इष्टदेवकापूजन करै ७३ ॥

आयुष्यंवर्चस्यंरायस्पोषाभिर्ऋग्भिरेताभिः ॥
परिजप्तंवैजयिकंनवंविन्द्ध्यादलङ्कारम् ७४ ॥

आयुष औ तेजको देनेवाला विजय करनेवाला नया औ रायस्पोष आदि छः ऋचाओं करके अभिमंत्रित भूषण राजा धारणकरै ७४ ॥

गत्वाद्वितीयवेदींसमुपविशेच्चर्मणामुपरिराजा ॥ देयानिचैवचर्माण्युपर्युपर्येवमेतानि ७५ वृषस्यवृषदंशस्यरुरोश्चपृषतस्यच ॥ तेषामुपरिसिंहस्यव्याघ्रस्यचततःपरम् ७६ ॥

दूसरी वेदीमें जाकर राजाचर्मोंके ऊपरबैठे ७५ औ ये चर्म इसभांति ऊपर ऊपर बिछावै कि पहिले बैलका चर्म उसके ऊपर बिड़ालका उसके ऊपर रुरुनाम मृगका उसके ऊपर पृषतनाम मृगका उसके ऊपर सिंहका औउसके भी ऊपर व्याघ्रका चर्म बिछावै ७६ ॥

मुख्यस्थानेजुहुयात्पुरोहितोऽग्निंसमित्तिलघृताद्यैः ॥
त्रिनयनशक्रबृहस्पतिनारायणनित्यगतिऋग्भिः ७७ ॥

मुख्यस्थान अर्थात् दक्षिण वेदीमें समिधा तिल घृत आदि करके रुद्र इंद्र बृहस्पति विष्णु औ वायुकी ऋचाओंकरके अग्निकेबीचपुरोहितहवनकरै ७७॥

इन्द्रध्वजानिर्दिष्टान्यग्निमित्तानिदैवविद्ब्रूयात् ॥

कृत्वाशेषसमाप्तिम्पुरोहितःप्रांजलिर्ब्रूयात् ७८ ॥

इंद्र ध्वजाध्यायमें जो अग्निके शुभअशुभ लक्षणकहे हैं उनको ज्योतिषी राजासे कहे। औ सबकृत्यको समाप्तकर हाथजोड़ पुरोहितयहमंत्रपढ़ै ७८ ॥

यांतुदेवगणाःसर्वेपूजामादायपार्थिवात् ॥
सिद्धिंदत्त्वातुविपुलांपुनरागमनायच ७९ ॥

यह मंत्र पढ़ सब देवताओंका विसर्जन करै ७९ ॥

नृपतिरतोदैवज्ञंपुरोहितंचार्चयेद्धनैर्बहुभिः ॥
अन्यांश्चदक्षिणीयान्यथार्हतःश्रोत्रियप्रभृतीन् ८०॥

इसके अनन्तर राजा ज्योतिषी औ पुरोहितको बहुत से धन करके पूजै और भी जो दक्षिणाके योग्य श्रोत्रिय आदि होयँ उनका भी यथा योग्य पूजन करै ८० ॥

दत्त्वाभयंप्रजानामाघातस्थानगान्विसृज्यपशून् ॥
बंधनमोक्षंकुर्यादभ्यंतरदोषकृद्वरजम् ८१ ॥

प्रजाको अभयदेकर औषधस्थानमें प्राप्तहुये बकरे आदि पशुओंको छोड़कर कारागारसे बँधुये भी छोड़देवै परन्तु ऐसे बंधुओंको राजा न छोड़े जो राजाके शरीर अथवा अंतःपुरमें दोषकरके बंधनमें आयेहोयँ ८१ ॥

एतत्प्रयुज्यमानंप्रतिपुष्यंसुखयशोऽर्थवृद्धिकरम् ॥
पुष्याद्विनार्धफलदंपौषीशांतिःपराप्रोक्ता ८२ ॥

इस विधिसे प्रत्येक पुष्यनक्षत्रमें स्नान कियाहुआ सुख यश औ धनकी वृद्धि करनेवाला होता है। औ पुष्यनक्षत्र विना इस विधिसे स्नान करै तो आधाफलहोताहै। औ पौषकी पूर्णिमाको यहशान्तिकरनी उत्तमकहीहै८२ ॥

राष्ट्रोत्पातोपसर्गेषुराहोःकेतोश्चदर्शने ॥
ग्रहावमर्देनेचैवपुष्यस्नानंसमाचरेत् ८३ ॥

राज्य में किसी प्रकार का उत्पात होनेपर महामारी आदि उपद्रवों के होनेपर ग्रहण होनेपर धूमकेतु का उदय होनेपर औ ग्रहयुद्ध होनेपर राजापुष्य स्नान करै ८३ ॥

नास्तिलोकेसउत्पातोयोह्यनेननशाम्यति ॥
मंगलंचापरंनास्तियदस्मादतिरिच्यते ८४ ॥

लोकमें ऐसा कोई उत्पात नहीं जो इस पुष्यस्नान के करने से न शान्त होय। औ ऐसा कोई दूसरा मंगलकृत्यनहीं जो इससे बढ़कर होय ८४ ॥

अधिराज्यार्थिनोराज्ञःपुत्रजन्मचकांक्षतः ॥
तत्पूर्वमभिषेकेचविधिरेषप्रशस्यते ८५ ॥

राज्यकी इच्छावाले औ पुत्रजन्मकी इच्छावाले राजाको औ उससे प्रथम अभिषेकमें भी यही विधि करना श्रेष्ठ कहाहै ८५ ॥

महेंद्रार्थमुवाचेदंबृहत्कीर्तिर्बृहस्पतिः ॥
स्नानमायुःप्रजावृद्धिसौभाग्यकरणंपरम् ८६ ॥

आयुष सन्तानकी वृद्धि करनेवाला औ सौभाग्य करनेवाला यह उत्कृष्ट पुष्यस्नान इन्द्रके लिये बड़ी कीर्तिवाले बृहस्पति ने कहाहै ८६ ॥

अनेनैवविधानेनहस्त्यश्वंस्नापयीतयः ॥
तस्याऽऽमयविनिर्मुक्तस्परांसिद्धिमवाप्नुयात् ८७ ॥

इतिश्रीवराहमिहिरकृतौबृहत्संहितायांपुष्यस्नानं
नामाष्टचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४८ ॥

जो राजा इसीविधानसे अपने हाथी घोड़ोंको स्नानकरावै उस राजा के हाथी घोड़े रोगों से रहित होकर परम सिद्धिपाते हैं ८७ ॥

श्रीवराहमिहिराचार्यकीबनाईबृहत्संहितामेंपुष्यस्नान
नामकअठतालीसवांअध्यायसमाप्तहुआ ॥ ४८ ॥

उनचासवां अध्याय ॥

पट्टलक्षण ॥

विस्तरशोनिर्दिष्टंपट्टानांलक्षणंयदाचार्यैः ॥
तत्संक्षेपःक्रियतेमयात्रसकलार्थसम्पन्नः १ ॥

कश्यप आदि आचार्योंने पट्ट अर्थात् राजाके मुकुटोंका लक्षण जो विस्तार से कहाहै उसका हम सम्पूर्ण अर्थ करके युक्तसंक्षेप करते हैं १ ॥

पट्टःशुभदोराज्ञांमध्येऽष्टावंगुलानिविस्तीर्णः ॥ सप्तनरेंद्रमहिष्याः षड्युवराजस्यनिर्दिष्टः २ चतुरंगुलविस्तारःपट्टःसेनापतेर्भवति ॥ द्वे चप्रसादपट्टःपंचैतेकीर्तिताःपट्टाः ३ ॥

राजाका मुकुट मध्यभागमें आठ अंगुल चौड़ा होय तो शुभ होताहै राजा की मुख्य रानीका सात अंगुल चौड़ा औ युवराजका मुकुट मध्य भागमें छः अंगुल चौड़ा कहाहै। सेनापतिका मुकुट चार अंगुल चौड़ा होताहै औ प्रसादपट्ट अर्थात् राजाप्रसन्न होकर किसी अपने सेवक आदिको मुकुट देवै वह मध्यभाग में दो अंगुल चौड़ा बनाना चाहिये इस भांति पट्ट अर्थात् मुकुट कहे हैं २।३ ॥

सर्वेद्विगुणायामामध्यादर्धेनपार्श्वविस्तीर्णाः ॥

सर्वेचशुद्धकांचनविनिर्मिताःश्रेयसोवृद्ध्यौ ४ ॥

सब पट्ट अपनी चौड़ाई से दूने लम्बे करने चाहिये जैसे राजा का मुकुट मध्यमें आठ अंगुल चौड़ा कहा वह सोलह अंगुल लम्बा करना चाहिये। औ मध्यभागके प्रमाणसे आधा दोनों ओर चौड़ा रखना चाहिये। जैसे राजा का मुकुट मध्यभागमें आठ अंगुल चौड़ाहै तो वह मध्यके दोनों ओर चार २ अंगुल चौड़ा करना चाहिये ऐसेही और भी जानो। ये सब पट्ट शुद्ध सुवर्ण के बनाये जावें तो कल्याणकी वृद्धि करते हैं ४ ॥

पंचशिखोभूमियतेस्त्रिशिखोयुवराजपार्थिवमहिष्याः ॥
एकशिखःसैन्यपतेःप्रसादपट्टोविनाशिखया ५ ॥

राजाका मुकुट पांच शिखाकरके युक्त रानी औ युवराजका पट्ट तीनशिखा करके युक्त सेनापतिका एक शिखा करके युक्त औ प्रसाद पट्ट शिखा करके रहित बनावें अर्थात् उसमें एकभी शिखा न रक्खे ५ ॥

क्रियमाणंयदिपत्रंसुखेनविस्तारमेतिपट्टस्य ॥
वृद्धिजयौभूमिपतेस्तथाप्रजानांचसुखसम्पत् ६ ॥

मुकुटके लिये सोनेका पत्र बनानेलगें औ वह सुखसे बढ़जाय तो राजाके वृद्धि औ जय होते हैं औ प्रजाको सुख औ संपत्ति होती है ६ ॥

जीवितराज्यविनाशंकरोतिमध्येव्रणःसमुत्पन्नः ॥
मध्येस्फुटितस्त्याज्योविघ्नकरःपार्श्वयोःस्फुटितः ७ ॥

मुकुट के गढ़ने के समय जो उसके मध्यमें छिद्र होजाय तो राजाके जीव औ राज्यका नाश करता है। मध्यमें फूटेहुये मुकुट को त्याग देवै औ मध्यके पार्श्वभागों में फूटा होय वह राज्यमें विघ्न करता है इसलिये उसे भी त्यागनाहीं चाहिये ७ ॥

अशुभनिमित्तोत्पत्तौशास्त्रज्ञःशान्तिमादिशेद्राज्ञः ॥
शस्तनिमित्तःपट्टोनृपराष्ट्रविवृद्धयेभवति ८ ॥

इतिश्रीवराहमिहिरकृतौवृहत्संहितायांपट्टलक्षणंनामैकोन
पंचाशोऽध्यायः ४९ ॥

मुकुटमें अशुभ लक्षण उत्पन्नहोय तो शास्त्रको जाननेवाला राजपुरोहित राजाको शांति करने के लिये कहै शुभ लक्षण युक्त मुकुट राजाकी और राज्य की वृद्धि के लिये होता है ८ ॥

इतिश्रीवराहमिहिराचार्यकीबनाईवृहत्संहितामेंपट्टलक्षणनाम
उनचासवांअध्यायसमाप्तहुआ ४९ ॥

पचासवां अध्याय॥

खड्गलक्षण॥

अंगुलशतार्द्धमुत्तमऊनःस्यात्पंचविंशतिंखड्गः॥
अंगुलमानाज्ज्ञेयोव्रणोऽशुभोविषमपर्वस्थः १॥

पचास अंगुल लम्बा खड्ग उत्तम होताहै औ पचीस अंगुल लम्बा खड्ग छोटा होता है अर्थात् पचास अंगुलसे नीचे औ पचीस अंगुल से ऊपर जो लम्बा होय वह खड्ग मध्यम होता है। उस खड्गकी लम्बाई में विषम अंगुल अर्थात् पहिला तीसरा पांचवां आदि इनमें जो व्रण होय तो अशुभ होता है। अर्थात् दूसरा चौथा छठा आदि जो सम अंगुल उनमें व्रण होय तो शुभ होता है १॥

श्रीवृक्षवर्धमानातपत्रशिवलिंगकुण्डलाब्जानाम्॥
सदृशाव्रणाःप्रशस्ताध्वजायुधस्वस्तिकानांच २॥

खड्ग के बीच विल्ववृक्ष शराव (मट्टीका सिकोरा) छत्र शिवलिंग कुण्डल औ कमल के सदृश व्रणहोयँ तो शुभ होते हैं। ध्वज खड्ग आदि शस्त्र और स्वस्तिक (साथिया) के समान व्रण भी खड्ग में होयँ तो शुभही होते हैं २॥

कृकलासकाककंकक्रव्यादकबन्धवृश्चिकाकृतयः॥
खड्गेव्रणानशुभदावंशानुगताःप्रभूताश्च ३॥

कृकलास (गिरगिट) काक कंकपक्षी मांसखानेवाले गीधआदि पक्षी कबंध (शिरकटापुरुष) औ बीछू इनके समान जिनके आकारहोयँ वे व्रण खड्गमें शुभ नहीं होते वंश अर्थात् खड्गके मध्यका ऊँचा भाग उसमें जो व्रण होयँ वे शुभ नहीं औ बहुत से व्रण होयँ चाहे वे अच्छी आकृतिके होयँ तो भी शुभ नहीं होते ३॥

स्फुटितोह्रस्वःकुण्ठोवंशच्छिन्नोनदृङ्मनोनुगतः॥
अस्वनइतिचानिष्टःप्रोक्तविपर्यस्तइष्टफलः ४॥

फूटाहुआ छोटा कुण्ठ अर्थात् जिसकी धारतीखी न होय वंश प्रदेशमें टूटा हुआ देखपड़े दृष्टि औ मनको प्रिय न लगै औ अस्वन अर्थात् जिसमें अंगुलि करके ताड़न करने से भी शब्द न होय ऐसा खड्ग अशुभ होता है। औ इस से विपरीत अर्थात् फूटानहोय दीर्घहोय जिसकी धारतीखीहोय वंशप्रदेश में निर्दोष नेत्रऔमनका प्याराल्गनेवाला औ शब्दयुक्त खड्गशुभ होता है ४॥

क्वणितंमरणायोक्तंपराजयायाऽप्रवर्तनंकोशात्॥

स्वयमुद्गीर्णेयुद्धंज्वलितेपिजयोभवतिखड्गे ५ ॥

आपही खड्गमें शब्दहोय तो खड्गके स्वामीका मृत्यु होताहै। युद्धके बीच खड्गनिकालने से भी कोश (म्यान) से न निकले तो पराजय होताहै। आपही खड्गअपने कोश (म्यान) से बाहिर निकल आवे तो युद्धहोता है। युद्ध के समय खड्गसे ज्वाला निकले तो विजय होता है ५ ॥

नाकारणंविघट्टयेन्नविघट्टयेन्नपश्येन्नतत्रवदनंनवदेच्चमूल्यम् ॥
देशंनचास्यकथयेत्प्रतिमानयेन्ननैवस्पृशेन्नृपतिःप्रयतोऽसियष्टिम् ६

विनाकारण खड्गको कोशसे न निकाले विघट्टन (अर्थात् किसी वस्तुसे ठोकना) नकरै खड्गमें मुखनदेखै खड्गका मूल्यनकहै खड्गका देशभी नकहै कि अमुक देशका बना है। अंगुली आदिसे खड्गको नापै नहीं औ अपवित्र होकर राजाकभी खड्गको स्पर्श न करै ६ ॥

गोजिह्वासंस्थानोनीलोत्पलवंशपत्रसदृशश्च ॥
करवीरपत्रशूलाग्रमण्डलाग्राःप्रशस्ताःस्युः ७ ॥

गौकी जीभके आकार नील कमलके दलके आकार बांसके पत्रके समान कनेर के पत्रके तुल्य औ जिसका अग्रशूल के समान तीखाहो अथवागोलहो ऐसे खड्ग उत्तम होते हैं ७ ॥

निष्पन्नोनच्छेद्योनिकषैःकार्यःप्रमाणयुक्तःसः ॥
मूलेम्रियतेस्वामीजननीतस्याग्रतश्छिन्ने ८ ॥

गढ़ने के समय जो खड्ग कुछ काल लंबा होजाय तो उसको काटना न चाहिये रेती से रगड़कर प्रमाणका रखलेवै। जो खड्गको मूलसे काटे तो स्वामीका मृत्यु होताहै। औ अग्रभागसेकाटे तो स्वामीकी माता मरतीहै ८॥

यस्मिन्त्सरुप्रदेशेव्रणोभवेत्तद्वदेवखड्गस्य ॥
वनितानामिवतिलकोगुह्येवाच्योमुखेदृष्ट्वा ९ ॥

त्सरु अर्थात् खड्गकी चोटी जो मूठके भीतर रहती है उसके मूल मध्य औ अग्रमें व्रणदेखकर खड्ग के भी मूलआदि में व्रणकहै ॥ जैसे स्त्रियों के मुख के ऊपर तिलदेखकर उनके गुह्यस्थानमें भी तिलकहना चाहिये ९ ॥

अथवास्पृशतियदङ्गंप्रष्टानिस्त्रिंशभृत्तदवधार्यम् ॥
कोशस्थस्यादेश्योव्रणोऽसिशास्त्रंविदित्वेदम् १० ॥

अथवा खड्गधारणकिये पुरुष खड्गमें व्रणपूछे तो वह जौनसा अंग स्पर्श करै उसको जान उसके अनुसार म्यानके बीचमें स्थित खड्गकाही व्रण कहै

खड्गशास्त्रको जानकर कहदेवै। पूछने के समय जो लग्नहो उसके केन्द्र में जो पापग्रहहोय तो निश्चय उसखड्गमें व्रण होता है १० ॥

शिरसिस्पृष्टेप्रथमेंगुलेद्वितीयेललाटसंस्पर्शे ॥ भ्रूमध्येचतृतीये नेत्रेस्पृष्टेचतुर्थेच ११ नासौष्ठकपोलहनुश्रवणग्रीवांसकेषुपञ्चाद्याः॥ उरसिद्वादशसंस्थश्चयोदशेकक्षयोर्ज्ञेयः १२ स्तनहृदयोदरकुक्षौनाभौचचतुर्दशाद्योज्ञेयाः॥ नाभीमूलेकट्यांगुह्येचैकोनविंशतितः १३ ऊर्वोर्द्वाविंशेस्यादूर्वोर्मध्येव्रणस्त्रयोविंशे॥ जानुनिचचतुर्विंशेजङ्घायां पञ्चविंशेच १४ जङ्घामध्येगुल्फेपार्ष्ण्यांपादेतदंगुलीष्वपिच ॥ षड्विंशादितियावत्त्रिंशदितिमतेनगर्गस्य १५ ॥

प्रश्न पूछनेवाला अपने शिरको स्पर्शकरै तो खड्ग के मूल से पहिले अंगुल में व्रणकहना चाहिये इसीभांति ललाट भ्रूमध्यनेत्र ११ नासिका ओष्ठ कपोल हनु कर्ण ग्रीवा कंधे छाती कक्ष १२ स्तन हृदय पेट कुक्षि नाभि नाभी मूल कटि गुह्य १३ ऊरु ऊरुमध्य जानु जंघा १४ जंघामध्य टकना एड़ी पैर औ पैरकीअंगुली इनमेंसे किसीअंगको प्रश्न पूछनेवाला स्पर्शकरै तो क्रमसे दूसरे अंगुलसे लेकर तीसवें अंगुलतक खड्गमें व्रणकहना चाहिये। यह व्रण ज्ञान गर्ग के मतसे कहा है १५ ॥

पुत्रमरणंधनाप्तिर्धनहानिःसम्पदश्चबन्धश्च ॥ एकाद्यंगुलसंस्थैर्व्रणैःफलंनिर्दिशेत्क्रमशः १६ सुतलाभःकलहोहस्तिलब्धयःपुत्रमरणधनलाभौ ॥ क्रमशोविनाशवनिताप्तिचित्तदुःखानिषट्प्रभृति १७ लब्धिर्हानिःस्त्रीलब्धयोवधोवृद्धिमरणपरितोषाः॥ ज्ञेयाश्चतुर्दशादिषुधनहानिश्चैकविंशेस्यात् १८ वित्ताप्तिरनिर्वाणिर्धनागमोमृत्युसम्पदोऽस्वत्वम्॥ऐश्वर्यमृत्युराज्यानिचक्रमात्त्रिंशदितियावत् १९॥

अब खड्ग के व्रणोंका फल कहते हैं। खड्गमें पहिले अंगुल में व्रणहोय तो खड्ग स्वामी के पुत्रका मृत्युहोय। इसीभांति दूसरे अंगुल से लेकर तीसवें अंगुलतक खड्गमें व्रणहोय तो क्रमसे ये फलहोतेहैं। धनप्राप्ति धनहानि सम्पत्ति बन्धन पुत्रलाभ कलह हस्तिलाभ पुत्रमरण धनलाभ मरण स्त्रीप्राप्ति चित्तदुःख १६। १७ लाभहानि स्त्रीलाभ वध वृद्धि मरण चित्त सन्तोष धन हानि १८ धन प्राप्ति मृत्युधनप्राप्ति मृत्यु सम्पत्ति निर्द्धनता ऐश्वर्य मृत्यु औ राज्यप्राप्ति ये फल क्रम से तीसअंगुलतक जानो १९ ॥

परतोनविशेषफलंविषमसमस्थास्तुपापशुभफलदाः॥
कैश्चिदफलाःप्रदिष्टास्त्रिंशत्परतोऽग्रमितियावत् २० ॥

खड्गमें तीसअंगुल से आगे व्रणहोय उसका कुछ विशेष फलनहीं है औ साधारण फल यहहै कि वह व्रण इकतीस तेतीसआदि विषमअंगुलोंमें होय तो अशुभ औ बत्तीस चौतीसआदि सम अंगुलोंमें होय तो शुभहोता है। औ पराशरआदि कई मुनियोंने तीसअंगुल से आगे खड्ग के अग्रपर्यन्त जो व्रणहोयँ वे निष्फल कहे हैं अर्थात् उनका शुभ अशुभ कुछभी फल नहीं है २० ॥

करवीरोत्पलगजमदघृतकुंकुमकुन्दचम्पकसगन्धः ॥ शुभदोऽनिष्टोगोमूत्रपङ्कमेदःसदृशगन्धः २१ कूर्मवसाऽसृक्क्षारोपमश्चभय दुःखदोभवतिगन्धः॥वैदूर्यकनकविद्युत्प्रभोजयारोग्यवृद्धिकरः २२॥

कनेरका पुष्प नीलकमल हाथीका मद घृत केसर कुन्दपुष्प औ चम्पेका पुष्प इनके गन्धके समान जिस खड्ग में गन्धहोय वह शुभ होता है गोमूत्र कर्दम मेदकेगन्धकेसमान जिससें गन्धहोय वहखड्ग अशुभहोताहै २१ कछुआ बसा (चर्बी) रुधिर औ खार इनके गन्धके समान खड्गमें गन्धहोय तो भय औ दुःखदेताहै वैदूर्य (पन्ना) सुवर्ण औ बिजलीके समान जिसखड्गकी प्रभा होय वह जय आरोग्य औ वृद्धि करता है २२ ॥

इदमौशनसंचशस्त्रपानंरुधिरेणश्रियमिच्छतःप्रदीप्ताम् ॥ हविषागुणवत्सुताभिलिप्सोःसलिलेनाक्षयमिच्छतश्चवित्तम् २३ बडवोष्ट्रकरेणुदुग्धपानंयदिपापेनसमीहतेऽर्थसिद्धिम् ॥ झषपित्तमृगाश्वबस्तदुग्धैःकरिहस्तंछिदयेत्सतालगर्भैः २४ ॥

इसप्रकार शस्त्रको पाणदेना शुक्राचार्यने कहा है कि देदीप्यमान लक्ष्मी को चाहनेवाला पुरुष रुधिर की पाणदेवे अर्थात् शस्त्रको अग्नि में तपाकर रुधिर में बुझावे गुणवान् पुत्रकी इच्छावाला घृतकी पाणदेवे अक्षय धनको चाहनेवाला पुरुष जलकी पाणदेवै जो पापकरके अर्थसाधन करना चाहताहोय तो २३ घोड़ी ऊंटनी औ हथिनीके दुग्धकी पाणदेवै जो खड्गसे हाथीकीसूंड़ काटनाचाहै तो उस खड्गको मच्छीका पित्ता हरिणी घोड़ी औ बकरीका दूध इन सबमें हरताल मिला उसकी पाण देवै अथवा हरतालके स्थानमें ताल वृक्षका निर्यास लेवे २४ ।

आर्कंपयोहुडुविषाणमषीसमेतं पारावताखुशकृताचयुतंप्रलेपः॥ शस्त्रस्यतैलमथितस्यततोऽस्यपानं पश्चाच्छितस्यनशिलासुभवेद्विघातः २५ ॥

शस्त्रको तिलोंके तेलसे चुपड़कर आकका दूध मेषके सींगको जलाकर उसकी स्याही कबूतर की बीट औ मूषककी मेंगन इनसबको पीस उसशस्त्र

के लेपकरै फिर उसको पूर्वोक्त पानदेवै औ पीछे साणपर उसकी धारलगावै तो पत्थरपर मारनेसे भी उसकी धार नहीं टूटती है २५॥

क्षारेकदल्यामथितेनयुक्तेदिनोषितेपायितमायसंयत् ॥
सम्यक्छितंचाश्मनिनैतिभङ्गंनचान्यलोहेष्वपितस्यकौण्ठ्यम्॥२६॥

इतिश्रीवराहमिहिरकृतौबृहत्संहितायांखड्गलक्षणंनाम
पंचाशोऽध्यायः ५०॥

केलेके खारमें मथनकिया दही मिलाकर एक दिनरात रखछोड़े पीछे उस में जिस लोहेको पानदे भली भांति धारचढ़ालेवै वह पत्थरपर मारनेसे नहीं टूटता औ दूसरे लोहपर मारनेसे भी उसकीधार कुण्ठित नहीं होती २६॥

श्रीवराहमिहिराचार्यकीबनाईबृहत्संहितामेंखड्गलक्षणनाम
पचासवांअध्यायसमाप्तहुआ ५०॥

इक्यावनवांअध्याय॥

अङ्गविद्या॥

दैवज्ञेनशुभाशुभंदिगुदितस्थानाहृतानीक्षता वाच्यंप्रष्टृनिजापराङ्गघटनांचालोक्यकालंधिया॥ सर्वज्ञोहिचराचरात्मकतयाऽसौसर्वदर्शीविभुश्चेष्टाव्याहृतिभिःशुभाशुभफलंसंदर्शयत्यर्थिनाम्॥१॥

पूर्व आदि दिशा प्रश्नकरनेवाले आदिका वचन स्थान लाईहुई वस्तु इनको देखताहुआ दैवज्ञ शुभ अशुभफल कहै प्रष्टा अर्थात् प्रश्नकरनेवालेके अपने औ दूसरेके अंगोंकी घटना औ कालको भी देख बुद्धिसे विचारकर फल कहै। वह सबको देखनेवाला औ व्यापककालस्थावर जंगम रूपजगत्का आत्मा होनेसे सर्वज्ञहै अर्थात् सब कुछ जानताहै वही अर्थी पुरुषोंको चेष्टा औ संभाषण करके शुभ अशुभफल दिखाता है १॥

स्थानंपुष्पसुहासिभूरिफलभृत्सुस्निग्धकृत्तिच्छदाऽसत्पक्षिच्युतशस्तसंगिततरुच्छायोपगूढंसमम्॥ देवर्षिद्विजसाधुसिद्धनिलयंसत्पुष्पसस्योक्षितंसत्स्वादूदकनिर्मलत्वजनिताह्लादंचसच्छाद्वलम्॥२॥

पुष्पही है हासजिनका बहुतफलोंकरके युक्त स्निग्धहैं त्वचाऔ पत्रजिनके काकउलूक आदि अशुभ पक्षियोंसे रहित औ उत्तमहैं नाम जिनके ऐसेवृक्षोंकी छायाकरके युक्त समअर्थात् ऊंचा नीचा नहीं देवता ऋषि ब्राह्मण साधु सिद्धइनका जहां निवासहो सुगंधवाले पुष्प औ खेतीकरकेयुक्त सुंदर मीठे जलके निर्मलपनेसे आह्लाद देनेवाला औ सुंदरहरी दूर्वा करकेयुक्त ऐसा स्थान् प्रश्नकरनेके समय शुभ होता है २॥

छिन्नभिन्नकृमिखातकण्टकिप्लुष्टरूक्षकुटिलैर्नसत्कुजैः ॥
क्रूरपक्षियुतनिन्द्यनामभिःशुष्कशीर्णबहुपर्णचर्मभिः ३ ॥

कटे टूटे कीड़ोंके खाये कांटोंवाले जलेहुये रूखे टेढ़े क्रूरपक्षी गृध्र आदि करके युक्त बुरेनामवाले सूखे औ गिरे हैं बहुतपत्ते औ त्वचा जिनकी ऐसेवृक्ष जिसस्थानमेंहों वहस्थान अशुभ होता है ३ ॥

श्मशानशून्यायतनञ्चतुष्पथंतथाऽमनोज्ञंविषमंसदोषरम् ॥
अवस्करांगारकपालभस्मभिश्चितंतुपैःशुष्कतृणैर्नशोभनम् ४ ॥

श्मशान शून्य मंदिर चौरस्ता चित्त को आनंदन करनेवाला विषमअर्थात् ऊंचा नीचा सदा ऊपर अर्थात् खारीमट्टी करके युक्त अवस्कर अर्थात् बुहारी देनेसे जोकूड़ा निकलताहै उस करके कोयले कपाल भस्म तुप औ सूखे तृणों करके व्याप्त ऐसास्थान शुभ नहीं होता ४ ॥

प्रव्रजितनग्ननापितरिपुबन्धनसौनिकैस्तथाश्वपचैः ॥
कितवयतिपीडितैर्युतमायुधमार्द्वीकविक्रयैर्नशुभम् ५ ॥

प्रव्रजित अर्थात् गुसाईं वैरागी आदि नंगा नाई शत्रु बंधन सौनिक (कसाई) चंडाल जुआखेलनेवाला यति अर्थात् दंडी रोगी शस्त्रशाला औ मद्य वेचनेकाघर इनकरके युक्तस्थान शुभ नहीं होता ५ ॥

प्रागुत्तरैशाश्चदिशःप्रशस्ताःप्रष्टुर्नवाय्वम्बुयमाग्निरक्षः ॥
पूर्वाह्णकालेऽस्तिशुभंनरात्रौसंध्याद्वयेप्रश्नकृतोऽपराह्णे६॥

पूर्व उत्तर औ ईशानकोणको मुखकरके प्रश्नपूछे तो ये दिशा शुभहैं वायु कोण पश्चिम दक्षिण अग्निकोण औ नैर्ऋत्यकोण शुभ नहीं मध्याह्नके पहिले प्रश्नपूछे तो शुभ होताहै रात्रि दोनोंसंध्या औ मध्याह्नके पीछेकाकाल प्रश्नकरनेवाले को शुभ नहीं है ६ ॥

यात्राविधानेहिशुभाशुभंयत्प्रोक्तंनिमित्तंतदिहापिवाच्यम् ॥
दृष्ट्वापुरोवाजनताहृतंवाप्रष्टुःस्थितंपाणितलेऽथवस्त्रे ७ ॥

यात्राविधानमें जो श्वेत सर्षप दर्पण आदि शुभ वस्तु औ कर्पास आदिअशुभवस्तु कहीं हैं वे इस प्रश्नसमयमें भी देखकर शुभ अशुभ कहना चाहिये। वे वस्तु आगे देखपड़ें मनुष्य लेआवें अथवा प्रश्न करनेवालेके हाथमें स्थित हों अथवा वस्त्रमें बँधीहों उनको देख शुभ अशुभ कहै ७ ॥

अथाङ्गान्यूर्वोष्ठस्तनवृषणपादंचदशना भुजौहस्तौगण्डौकचगलनखाऽङ्गुष्ठमपियत् ॥ सशङ्खंकक्षांसंश्रवणगुदसन्धीतिपुरुपेस्त्रियां भ्रूनासास्फिक्वलिकटिसुलेखाऽङ्गुलिचयम् ८ ग्रीवाजिह्वापिण्डिकेपा

ष्णियुग्मंजंघेनाभिःकर्णपालीकृकाटी॥ वक्त्रंपृष्ठंजत्रुजान्वस्थिपार्श्वेहृत्ताल्वक्षीमेहनोरस्त्रिकंच ९नपुंसकाख्यंचशिरोललाटमाश्वाद्यसंज्ञैरपरैश्चिरेण॥ सिद्धिर्भवेज्जातुनपुंसकैर्नोरूक्षक्षतेभग्नकृशेश्चपूर्वैः १०॥

ऊरु ओठ स्तन अंडकोश पैर दांत भुजा हाथ कपोल केश गल नख अंगूठे शंख (कनपटी) कक्ष कंधे कान गुदा औ सब अंगोंकी संधि ये अंग पुरुष संज्ञकहैं। भ्रू नासिका स्फिक् (कटिस्थमांसपिंड) त्रिवली कटि हाथकी रेखा अंगुलिसमूह ८ जिह्वा ग्रीवा पिंडली दोनों एड़ी जंघानाभि कर्ण पालि औकृकाटिका (घेंटू) ये अंग स्त्री संज्ञकहैं॥ मुख पीठ जत्रु (कन्धेकीसन्धि) जानु अस्थि दोनोंपार्श्व हृदय तालु नेत्र लिंग छाती त्रिक (पृष्ठवंशके नीचे तीन अस्थियोंका तिहड्डा ९) शिरललाट ये सब अंग नपुंसक संज्ञकहैं। प्रश्नकरनेवाला पुरुषसंज्ञक अंगोंको स्पर्शकरै तो शीघ्रही कार्य सिद्धि होय स्त्री संज्ञक अंगोंको स्पर्शकरै तो विलम्ब से कार्य सिद्धि होय नपुंसक अंगोंको स्पर्श करै तो कभी कार्यसिद्धि न होय। औ पुरुष स्त्रीसंज्ञक अंगभी जोरूखे कटेहुये टूटेहुये औकृशहोयं तो भी कार्य सिद्धि नहीं होती १०॥

स्पृष्टेवाचालितेवापिपादांगुष्ठेऽक्षिरुग्भवेत्॥
अंगुल्यांदुहितुःशोकंशिरोघातेनृपाद्भयम् ११॥

प्रश्नके समय जो प्रश्नकरनेवाला पुरुष पैरके अंगूठेको स्पर्शकर अथवा हिलावे तो प्रश्न करनेवाले के नेत्रोंमें रोगहोय। अंगुलीको स्पर्शकरै अथवा हिलावे तो कन्याका शोकहोय जो अपने शिरको कठोरकर प्रश्नकरै तो राजा से भयहोय ११॥

विप्रयोगमुरसिस्वगात्रतःकर्पटाहृतिरनर्थदाभवेत्॥
स्यात्प्रियाप्तिरभिगृह्यकर्पटंपृच्छतश्चरणपादयोर्जितुः १२॥

जो प्रश्न करनेवाला छातीको स्पर्शकरै तो उसको किसी प्रियका वियोग होताहै। अपने शरीरसे वस्त्रउतारै तो उसके लिये अनिष्ट होताहै॥ जो प्रश्न करनेवाला पुरुष बस्त्रको लेकर अपने एकपैरको दूसरे पैरसे मिलावै उसको प्रियवस्तुका लाभ होताहै १२॥

पादांगुष्ठेनविलिखेद्भूमिंक्षेत्रोत्थचिन्तया॥
हस्तेनपादौकण्डूयेत्तस्यदासीमयीचसा १३॥

पैरके अंगूठेसे भूमिको लिखे उसको खेतकी चिंता होती है औ जो प्रश्न करने वाला पुरुष प्रश्नके समय हाथसे दोनों पैर खुजाने उसको दासी की चिन्ता होती है १३॥

तालभूर्जपटदर्शनेऽशुकंचिन्तयेत्कचतुषास्थिभस्मगम् ॥
व्याधिराश्रयतिरज्जुजालकंवल्कलंचसमवेक्ष्यबन्धनम् १४ ॥

ताड़पत्र औ भोजपत्र प्रश्नके समय देखपड़े तो प्रश्न करनेवाले को वस्त्र की चिंता होती है। केश तुष अस्थि औभस्म इनमें से कोई देखपड़े तो प्रष्टा को रोग होताहै। रस्सी जाल औ वृक्षकीछाल देखपड़े तो प्रश्न करनेवाला बन्धनमें पड़ता है १४ ॥

पिप्पलीमरिचशुण्ठिवारिदैरोध्रकुष्ठवसनाऽम्बुजीरकैः ॥ गन्धमांसिशतपुष्पयावदेत्पृष्टच्छतस्तगरकेणचिन्तनम् १५ स्त्रीपुरुषदोषपीडितसर्वाश्वसुतार्थधान्यतनयानाम् ॥ द्विचतुष्पदक्षितीनांविनाशतःकीर्तितैर्दृष्टैः १६ ॥

पीपल मरिच सूंठ मोथा लोध कूट वस्त्र नेत्रवाला जीरा जटामासी सौंफ औ तगर ये वस्तुप्रश्नके समय देखपड़ें अथवा कोई इनका नाम लेवे तो प्रश्न करनेवाले पुरुषको क्रमसे स्त्रीदोष पुरुषदोष रोगी सर्वनाश मार्गनाश पुत्रीनाश धननाश धान्यनाश पुत्रनाश द्विपदनाश चतुष्पदनाश औ भूमिनाशकी चिंताकहनी चाहिये १५। १६ ॥

न्यग्रोधमधुकतिन्दुकजम्बूप्लक्षाम्रवदरजातफलैः ॥
धनकनकपुरुषलोहांऽशुकरूप्योदुम्बराप्तिरपिकरगैः १७ ॥

प्रश्न करनेवाले पुरुषके हाथमें जो बड़ महुआ तेंदू जामुन पाकर आम अथवा बेर इनवृक्षों में किसी के फल होयं तो क्रमसे उसको धन सुवर्ण पुरुष लोह वस्त्र चांदी औ तांबेकी प्राप्ति होती है १७ ॥

धान्यपरिपूर्णपात्रंकुम्भःपूर्णःकुटुम्बवृद्धिकरौ ॥
गजगोशुनांपुरीषंधनयुवतिसुहृद्विनाशकरम् १८ ॥

धान्यसे पूर्णपात्र औ पूर्ण कलश देखपड़ें तो कुटुम्बकी वृद्धि करते हैं॥ हाथी गौ औ श्वानकी विष्ठा देख पड़े तो क्रमसे धन स्त्री औ मित्रों का नाश होताहै १८ ॥

पशुहस्तिमहिषपङ्कजरजतव्याघ्रैर्लभेतसन्दृष्टैः ॥
अविधननिवसनमलयजकौशेयाभरणसङ्घातम् १९ ॥

प्रश्नके समय पशु देखपड़े तो प्रश्न करनेवाले को भेड़के ऊनका बना कंवल मिलताहै इसी भांति हाथी महिष कमल चांदी औ बाघ के दर्शन से क्रमसे धन वस्त्र चंदन रेशमका वस्त्र औ भूषण समूह प्रश्न करने वाले को मिलते हैं १९ ॥

पृच्छावृद्धश्रावकसुपरिव्राड्दर्शनेन्नृभिर्विहिता ॥
मित्रद्यूतार्थभवागणिकान्नृपसूतिकार्थाच २० ॥

वृद्ध श्रावक अर्थात् जैन संन्यासी प्रश्नके समय देखपड़े तो मित्र अथवा द्यूतकी चिंता प्रश्नकरनेवालेके मनमें कहनी चाहिये औ संन्यासी देखपड़े तो वेश्या राजा औ प्रसूता स्त्री की चिंता कहनी चाहिये २० ॥

शाक्योपाध्यायाऽर्हतनिर्ग्रन्थनिमित्तनिगमकैवर्तैः ॥
चौरचमूपतिवणिजांदासीयोधापणस्थवध्यानाम् २१ ॥

प्रश्नके समय शाक्य उपाध्याय अर्हत निर्ग्रंथ निगम औ धीवर देखपड़ें तो क्रमसेप्रष्टाके मनमें चौर सेनापति वणिक् दासी योधा आपणस्थ (दुकानदार) औ वध करनेके योग्य इनकी चिंता होती है २१ ॥

तापसेशौण्डिकेदृष्टेप्रोषितःपशुपालनम् ॥
हृद्गतंपृच्छकस्यस्यादुञ्छवृत्तौविपन्नता २२ ॥

प्रश्नके समय तपस्वी देखपड़े तो विदेशमें गये की चिंता होती है शौण्डिक (कलाल) देखपड़े तो प्रष्टाके हृदयमें पशुपालन की चिंता होती है औ उंछ से जीवन करनेवाला मुनि आदि देखपड़े तो विपत्ति पड़नेकी चिंता होती है भूमिपर गिरे एक२ दानेको इकट्ठाकरना उंछकहाताहै उस इकट्ठे किये अन्नसे जो निर्बाह करै वह उंछवृत्ति कहाता है २२ ॥

इच्छामिप्रष्टुंभणपश्यत्वार्यःसमादिशेत्युक्ते ॥
संयोगकुटुम्बोत्थालाभैश्वर्योद्भवाचिन्ता २३ ॥

जो प्रश्नकरनेवाला ये वाक्य कहै कि। पूछना चाहताहूं। कहो। आपदेखें। आज्ञा कीजिये। तो क्रमसे संयोग अर्थात् किसी से मिलना। कुटुंब लाभ औ ऐश्वर्य की चिंता प्रष्टाके मनमें होती है २३ ॥

निर्दिशेतिगदितेजयाध्वजाप्रत्यवेक्ष्यममचिन्तितंवद ॥
आशुसर्वजनमध्यगंत्वयादृश्यतामितिचबन्धुचौरजा २४ ॥

निर्देश कीजिये यह वाक्य प्रष्टाकहै तो जय औ मार्गकी चिंता होती है विचारकर मेरा मनोरथ कहो। यह वाक्यकहे तो बंधु चिन्ता औ सबमनुष्योंके बीचबैठेहुये दैवज्ञको प्रष्टा यहकहे कि शीघ्र देखो तो चोर की चिंता उसके मनमें कहनी चाहिये २४ ॥

अन्तस्थेऽङ्गेस्वजनउदितोबाह्यजेबाह्य एवंपादांऽगुष्ठांऽगुलिकलनयादासदासीजनःस्यात् ॥ जंघेप्रेष्योभवतिभगिनीनाभितोहृत्स्वभार्यापर्ण्यंऽगुष्ठांऽगुलिचयकृतस्पर्शनेपुत्रकन्ये २५ ॥

प्रश्नकरनेवाला भीतरका अंगस्पर्शकरै तोघरका मनुष्यही चोर होताहै। बाहिरका अंगस्पर्शकरै तो बाहिरका मनुष्य चोर होताहै॥ इसभांति पैरका अंगूठा पैरकी अंगुली जंघा नाभी हृदय हाथका अंगूठा हाथकी अंगुलियोंका समूह जो इनमें किसीको प्रश्नकरनेवाला स्पर्श करै तोक्रमसे दास दासी सेवक बहिन अपनी स्त्री पुत्र औ अपनी कन्या चोर होते हैं॥ इसभांति अंगस्पर्शसे चोरज्ञान होताहै २५॥

मातरंजठरेमूर्ध्निगुरुंदक्षिणवामकौ॥
बाहूभ्राताथतत्पत्नीस्पृष्टेवैवंचौरमादिशेत् २६॥

उदरका स्पर्शकरै तो माता चोर होतीहै मस्तक स्पर्शकरनेसे गुरु दाहिनी बांहके स्पर्शसे भाई औ बाईं बांहके स्पर्श करनेसे भाई की स्त्री चोरी करने वाले होते हैं २६॥

अन्तरमवमुच्यबाह्यग स्पर्शनंयदिकरोतिपृच्छकः॥ श्लेष्ममूत्रशकृतस्त्यजन्नथो पातयेत्करतलस्थवस्तुचेत् २७ भृशमवनामिताऽङ्गपरिमोटनतोप्यथवाजनधृतरिक्तभाण्डमवलोक्यचचौरजनम्॥ हृतपतितक्षताऽस्मृतविनष्टविभग्नगतोन्मुषितमृताद्यनिष्टरवतोलभतेनहृतम् २८॥

प्रश्नकरनेवाला अंतरंग अंगकोछोड़ बाहिर के अंगको स्पर्शकरै कफ मूत्र अथवा विष्ठाकात्यागकरै हाथमें स्थितवस्तुको गिरादेवै २७ शरीरको बहुतझुकावे अथवा आलस्यमें आकर शरीरको तोड़े किसी मनुष्य के हाथ में खाली पात्र देखपड़े चोरदेखपड़े अथवा प्रश्न के समय। हरलिया गिरगया कटगया भूलगया खोगया टूटगया चोरागया मरगया इत्यादि बुराशब्दसुनपड़े तो प्रश्नकर्त्ताको चोरीमेंगई वस्तु प्राप्तनहीं होती २८॥

निगदितमिदंयत्तत्सर्वैतुषास्थिविषादिकैः सहमृतिकरंपीडार्तानांसमंरुदितक्षुतैः॥ अवयवमपिस्पृष्ट्वान्तःस्थंदृढंमहदाहरेदतिबहुतदाभुक्ताङ्गंसंस्थितःसुहितोवदेत् २९॥

पहिले कहेहुये सबलक्षणों के साथ जो तुष अस्थि विषआदि देखपड़े अथवा रोने औ छींकका शब्द सुनपड़े तो रोगियोंका मृत्यु होता है। जो प्रष्टा अन्तस्थअंगको स्पर्शकर श्वासकेद्वारा बहुत पवन छोड़ता हुआ प्रश्नकरै तो यहकहै कि प्रश्नकरनेवाला बहुतभोजनकरके तृप्त होरहा है २९॥

ललाटस्पर्शनाच्छूकदर्शनाच्छालिजौदनम्॥
उरःस्पर्शात्षष्ठिकान्नंग्रीवास्पर्शेचयावकम् ३०॥

प्रष्टा ललाटका स्पर्शकरै औ उससमय शूकधान्य यवआदि देखपडैं तो प्रश्नकरनेवालेने उत्तम चावलों का भातखाया है छातीस्पर्श करै तो साठी के चावलका भात भोजन किया है औ ग्रीवा स्पर्शकरै तो जौकी रोटी आदि भोजन की है यहजानै ३० ॥

कुक्षिकुचजठरजानुस्पर्शेमाषाःपयस्तिलयवाग्वः ॥
आस्वादयतश्चोष्ठौलिहतोमधुरंरसंज्ञेयम् ३१ ॥

प्रश्नकर्ता जो कुक्षि स्तन उदर औ जानुको स्पर्शकरे तो क्रमसे उड़द दूध तिल औ दाल उसने भोजन किया यहकहना चाहिये । औ जो अपने ओठों का स्वादले अथवा ओठोंकोचाटै तो उसने मीठाभोजन किया होताहै ३१ ॥

विसृक्केस्फोटयेज्जिह्वामम्लेवक्त्रंविकूणयेत् ॥
कटुकेसौकषायेचहिक्केत्ष्ठीवेच्चसैन्धवे ३२ ॥

ओष्ठप्रांतको जिह्वासे घट्टनकरे तो प्रष्टानेखट्टा भोजन किया है कटुरस भोजन कियाहोय तो मुखको संकुचित करै कषायरस भोजन किया होय तो हुचकीलेवै औ सेंधालवण खायाहोय तो निष्ठीवन करै (थूकै) ३२ ॥

श्लेष्मत्यागेशुष्कतिक्तंतदल्पंश्रुत्वाक्रव्यादंप्रेक्ष्यवामांसमिश्रम्॥
भ्रूगण्डौष्ठस्पर्शनेशाकुनंतद्भुक्तंतेनेत्युक्तमेतन्निमित्तम् ३३ ॥

जो प्रश्न करने के समय प्रष्टा कफका त्यागकरै (थूके) तो उसने सूखा तिक्त औ थोडासा भोजन किया होता है । उससमय मांस खानेवाले पक्षीका नामसुनपड़ै अथवा वहपक्षी देखपड़ै तो प्रष्टाने मांसयुक्त भोजन किया है भ्रू कपोल औ ओष्ठका स्पर्शकरै तो उसने पक्षी का मांसभोजन किया है । यह भोजनका चिह्नकहा ३३ ॥

मूर्धगलकेशहनुशङ्खकर्णजङ्घंचवस्तिंच (स्पृष्ट्वा) ॥
गजमहिषमेषसूकरगोशशमृगमांसयुग्भुक्तम् ३४ ॥

मस्तक गल केश हनु कनपटी कान जांघ वस्ति (नाभिका अधोभाग) इन अंगोंको प्रष्टा स्पर्शकरै तो क्रमसे हाथी महिष भेड़ सूकर गौ शशा औ हरिण इनका मांस उसने भक्षण किया यह कहै ३४ ॥

दृष्टेश्रुतेऽप्यशकुनेगोधामत्स्यामिषंवदेद्भुक्तम् ॥
गर्भिण्यागर्भस्यचनिपतनमेवंप्रकल्पयेत्प्रश्ने ३५ ॥

जो प्रश्नके समय अशकुन देखपड़ै तो प्रष्टाने गोह अथवा मत्स्यका मांस खायाहै यहकहै । जो गर्भका प्रश्नहोय औ उससमय अपशकुन देखपड़ै तो गर्भिणीका गर्भ गिरजाय यहकहै ३५ ॥

पुंस्त्रीनपुंसकाख्येदृष्टेऽनुमितेपुरःस्थितेस्पृष्टे ॥
तज्जन्मभवतिपानान्नपुष्पफलदर्शनेचशुभम् ३६ ॥

प्रश्नके समय जो पुरुष स्त्री अथवा नपुंसक देखपड़े अनुमान कियाजाय सन्मुख खड़ाहोय अथवा प्रश्नकर्ता इनको स्पर्शकरै तो क्रमसे पुरुष स्त्री औ नपुंसकका जन्म होगा यह कहना चाहिये । जो पीनेके द्रव्य अन्न पुष्प अथवा फलदेखपड़ें तो गर्भिणी स्त्री को सुखपूर्वक प्रसवहोजाय ३६ ॥

अंगुष्ठेनभ्रूदरंवांऽगुलिंवास्पृष्ट्वापृच्छेद्गर्भचिन्तातदास्यात् ॥
मध्वाज्याद्यैर्हेमरत्नप्रवालैरग्रस्थैर्वामातृधात्र्यात्मजैश्च ३७ ॥

जो प्रश्नकरनेवाली स्त्री अपने अंगुष्ठ करके भ्रू उदर अथवा अंगुलिको स्पर्शकर पूछे तो उसको गर्भकी चिन्ता कहनी चाहिये । जो प्रश्नके समय शहत घी आदि सोना रत्न औ मूंगे आगे देखपड़ें अथवा माता धात्री (दाई) औ पुत्र आगे स्थितहोवैं तोभी गर्भका प्रश्न कहना चाहिये ३७ ॥

गर्भयुताजठरेकरगेस्याद्दुष्टनिमित्तवशात्तदुदासः ॥
कर्पतितज्जठरंयदिपीठोत्पीडनतःकरगेचकरेऽपि ३८ ॥

जो प्रश्नके समय स्त्री अपने पेटपर हाथरक्खै वह गर्भयुक्त होतीहै । जो उससमय बुरा निमित्त देखपड़े तो उसका गर्भ गिरजाता है पीठ अर्थात् बैठनेका पट्टा आदि उसको दबाकर अपने पेटको खैंचे अथवा एकहाथ में दूसरे हाथको रखकर पूछे । तो भी उसका गर्भपात होजाताहै ३८ ॥

घ्राणायादक्षिणेद्वारेस्पृष्टेमासोत्तरंवदेत् ॥
वामेव्दोकर्णएवंमाद्विचतुर्भिःश्रुतिस्तने ३९ ॥

गर्भ स्थितहोनेका प्रश्नकरै औ नासिकाके दक्षिण छिद्रको स्पर्शकरै तो एक महीने के अनन्तर गर्भ रहताहै । वामछिद्रको स्पर्शकरै तो दो वर्षके अनन्तर गर्भ रहताहै इसीप्रकार दक्षिण वामकर्णके स्पर्शसे भी जानो जो दहिने कर्ण के छिद्रको स्पर्शकरै तो दो महीने में औ स्तनको स्पर्शकरै तो चारमहीने में गर्भस्थितहोय ३९ ॥

वेणीमूलेत्रीन्सुतान्कन्यकेद्वेकर्णेपुत्रान्पंचहस्तेत्रयंच ॥
अंगुष्ठांतेपंचकंचानुपूर्व्यापादांऽगुष्ठेपार्ष्णियुग्मेऽपिकन्याम् ४० ॥

जो स्त्री प्रश्नके समय चोटीके मूलको स्पर्शकरै उसके तीन पुत्र औ दो कन्या उत्पन्न होती हैं । कानका स्पर्श करै तो पांच पुत्र औ हाथका स्पर्श करे तो तीनपुत्र होते हैं । कनिष्ठासे लेकर अंगुष्ठतकके स्पर्श से क्रमपूर्वक एक आदि पांचतक पुत्रकहै अर्थात् कनिष्ठा स्पर्शकरै तो एक पुत्र इत्यादि ।

पैरका अँगूठा अथवा दोनों एड़ी स्पर्श करै तोभी कन्या होती है ४० ॥

सव्यासव्योरुसंस्पर्शेसूतेकन्यासुतद्वयम् ॥
स्पृष्टेललाटमध्यान्तेत्रिचतुस्तनयाभवेत् ४१ ॥

दहिना ऊरु स्पर्शकरै तो दो कन्या औ वायां ऊरु स्पर्शकरै तो दो पुत्र उत्पन्न होतेहैं। ललाटका मध्यभाग स्पर्शकरै तो तीनपुत्र औ ललाट का अन्तभाग स्पर्शकरै तो चारपुत्र उस स्त्री के उत्पन्न होते हैं ४१ ॥

शिरोललाटभ्रूकर्णगण्डंहनुरदागलम् ॥ सव्यापसव्यस्कन्धश्च हस्तौचिवुकनालकम् ४२ उरःकुचंदक्षिणमप्यसव्यंहृत्पार्श्वमेवंजठरंकटिश्च ॥ स्फिक्पायुसन्ध्यूरुयुगंचजानूजंघेऽथपादावितिकृत्तिकादौ ४३ ॥

प्रश्नके समय जो गर्भिणी स्त्री शिर ललाट भ्रू कर्ण कपोल हनु दन्त कण्ठ दक्षिणस्कन्ध वामस्कन्ध हाथ ठोड़ी कण्ठ नाल २१ छाती दक्षिणस्तन वामस्तन हृदय दक्षिण पार्श्व वामपार्श्व पेट कटि स्फिक् गुद संधि दक्षिण ऊरु वामऊरु जानु जंघा पैर इनअंगोंको स्पर्शकरै तो क्रमसे कृत्तिका आदि नक्षत्रों में उसको प्रसव होता है यह कहना चाहिये ४३ ॥

इतिनिगदितमेतद्गात्रसंस्पर्शलक्ष्म प्रकटमभिमताप्त्यैवीक्ष्य शास्त्राणिसम्यक् ॥ विपुलमतिरुदारोवेत्तियःसर्वमेतन्नरपतिजनताभिःपूज्यतेऽसौसदैव ४४ ॥

इतिश्रीवराहमिहिरकृतौबृहत्संहितायामंगविद्या
नामैकपंचाशत्तमोऽध्यायः ॥ ५१ ॥

गर्ग पराशर आदि मुनियों के रचे शास्त्र भलीभांति देखकर अभीष्ट सिद्धि के लिये अति स्फुट यह अंग स्पर्श का लक्षण हमने कहा जो वड़ी बुद्धिवाला औ निर्लोभ पुरुष इस सब लक्षणको जाने वह दैवज्ञ सदा राजा औ प्रजा करके पूजा जाताहै ४४ ॥

श्रीवराहमिहिराचार्यकीवनाईबृहत्संहितामेंअंगविद्यानामइक्या-
वनवांअध्यायसमाप्तहुआ ५१ ॥

बावनवांअध्याय ॥

पिटकलक्षण ॥

सितरक्तपीतकृष्णाविप्रादीनांक्रमेणपिटकाये ॥
तेक्रमशःप्रोक्तफलावर्णानामग्रजादीनाम् १ ॥

ब्राह्मण आदि चार वर्णों को क्रमसे जो श्वेत रक्त पीत औ कृष्णवर्ण के

पिटक (फुनसी) कहे वही क्रमसे ब्राह्मण आदि वर्णोंको कहाहुआ फलदेते हैं ॥ अब फल कहतेहैं १ ॥

सुस्निग्धव्यक्तशोभाःशिरसिधनचयंमूर्ध्निसौभाग्यमाराद्दौर्भाग्यं भ्रूयुगोत्थाःप्रियजनघटनामाशुदुःशीलतांच ॥ तन्मध्योत्थाश्चशोकंनयनपुटगतनेत्रयोरिष्टदृष्टिंप्रव्रज्यांशङ्खदेशेऽश्रुजलनिपतनस्थानगाश्चातिचिंताम् २ ॥

सुस्निग्ध औ स्फुटहै शोभा जिनकी ऐसे पिटक शिरमें होयँ तो धनका संचय होताहै मस्तकमें होयँ तो शीघ्रही सौभाग्य करते हैं। दोनों भ्रूमें पिटक होयँ तो दौर्भाग्य भ्रूमध्यमें होयँ तो प्रियमनुष्यका समागम औ दुःशीलता शीघ्रही होते हैं। नेत्र पुटोंमें होयँ तो शोक औ नेत्रोंमें पिटक होयँ तो इष्टका दर्शन होताहै॥ शंख [कनपटी] में पिटकहोयँ तो प्रव्रज्या [संन्यास] करते हैं। औ आंसू गिरनेके स्थानमें पिटक उत्पन्न होयँ तो अतिचिन्ता होती है २ ॥

घ्राणेगण्डेवसनसुतदाश्चोष्ठयोरन्नलाभं कुर्युस्तद्वच्चिबुकतलगा भूरिवित्तंललाटे ॥ हन्वोरेवंगलकृतपदाभूषणान्यन्नपानैश्रोत्रेतद्भूषणगणमपिज्ञानमात्मस्वरूपम् ३ ॥

नासिकापर पिटकहोयँ तो वस्त्रलाभ कपोलपर होयँ तो पुत्रलाभ ओष्ठोंपर होयँ तो अन्नलाभ ठोढ़ी के नीचे होयँ तो भी अन्नलाभ ललाटमें होयँ तो बहुत धनका लाभ हनुओं में पिटका होयँ तो भी बहुत धनका लाभकण्ठमें होयँ तो भूषण भोजन औ पान कानों में होयँ तो कानोंके भूषण कुण्डल आदि प्राप्त होतेहैं। औ अध्यात्मज्ञानकी भी प्राप्ति होती है ३ ॥

शिरःसन्धिग्रीवाहृदयकुचपार्श्वोरसिगताश्चयोघातंघातंसुततनयलाभंशुचमपि ॥ प्रियप्राप्तिंस्कन्धेऽप्यटनमथभिक्षार्थमसकृद्विनाशंकक्षोत्थाविदधतिधनानांबहुसुखम् ४ ॥

शिरकी संधि ग्रीवा हृदय कुच पार्श्व औ छाती इन अंगोंमें पिटकहोयँ तो क्रमसे शस्त्रघात घात पुत्रलाभ पुत्रलाभ शोक औ प्रिय वस्तुकी प्राप्तिकरते हैं। स्कन्धके ऊपर पिटकहोय तो वारम्वार भिक्षाके लिये भ्रमण करातेहैं औ विनाश करते हैं। कांखमें पिटक होय तो धनका बहुत सुखदेते हैं ४ ॥

दुःखशत्रुनिचयस्यविघातं पृष्ठबाहुयुगजारचयन्ति ॥
संयमंचमणिबन्धनजाताभूषणाद्यमुपबाहुयुगोत्थाः ५ ॥

पीठमें पिटकहोयँ तो दुःखका नाश औ दोनों भुजाओं में होयँ तो शत्रुसमूहका नाशकरते हैं। मणिवन्धन (हाथकीकलाई) में होयँ तो हाथ बँध

वातेहैं औ दोनों भुजाओंके समीप होयँ तो भूषणआदिकी प्राप्ति होती है ५ ॥

धनाप्तिंसौभाग्यंशुचमपिकरांगुल्युदरगाःसुपानान्नंनाभौतदधइ
हचौरैर्धनहृतिम् ॥ धनंधान्यंवस्तौयुवतिमथमेढ्रेसुतनयान्धनंसौभा
ग्यंवागुदवृषणजाताविदधति ६ ॥

हाथ अंगुली औ पेट इनमें पिटक होयँ तो क्रमसे धनप्राप्ति सौभाग्य औ शोक करते हैं। नाभि में होयँ तो सुन्दर पान औ भोजन मिलताहै। नाभिके नीचेहों तो चोर धन हरलेजाते हैं।वस्तिमें पिटकहोयँ तो धन और अन्नकीप्राप्ति होतीहै। लिंगके ऊपर पिटकहोयँ तो तरुणस्त्री औ सुन्दरपुत्रोंकी प्राप्तिहोती है। गुदा अण्डकोशपर जो पिटकहोयँ तो क्रमसे धन औ सौभाग्य देते हैं ६ ॥

ऊर्वोर्यानाऽङ्गनालाभंजान्वोःशत्रुजनात्क्षतिम् ॥
शस्त्रेणजंघयोर्गुल्फेऽध्वबन्धक्लेशदायिनः ७ ॥

दोनों ऊरुओंके ऊपर पिटकहोयँ तो वाहन औ स्त्रीकालाभकरते हैं। जानुओंमें पिटकहोयँ तो शत्रुओंसे क्षयहोय। जंघाओंमें होय तो शस्त्रकरके विनाश करते हैं। गुल्फ (टकना) पर होयँ तो मार्ग औ बन्धनका क्लेशदेतेहैं ७॥

स्फिक्पार्ष्णिपादजाताधननाशागम्यगमनमध्वानम् ॥
बन्धनमंगुलिनिचयेऽगुष्ठेचज्ञातिलोकतःपूजाम् ८ ॥

स्फिक् (कटिस्थमांसपिण्ड) एड़ी औ पैर इनपर पिटकहोयँ तो क्रमसे धननाश अगम्यागमन औ मार्गमें चलना करातेहैं। अंगुलियोंके समूहमेंहोयँ तो बन्धन औ अँगूठेपर पिटकहोयँ तो अपने बन्धुजनों से सत्कार होताहै ८ ॥

उत्पातगण्डपिटिकादक्षिणतोवामतस्त्वभीघाताः ॥
धन्याभवन्तिपुंसांतद्विपरीतास्तुनारीणाम् ९ ॥

उत्पात अर्थात् अंगफरकना गण्ड औ पिटक ये सब पुरुषोंके दहिने अंगमें होयँ तो शुभ होते हैं। औ शस्त्र आदिके घाव वामअंगमें होयँ तो शुभहोतेहैं। औ स्त्रियोंको इससे उलटेहोयँ तो शुभहोते हैं अर्थात् अंगस्फुरण आदि वाम अंगमें औ अभिघात दक्षिण अंगमें शुभहोते हैं ९ ॥

इतिपिटकविभागःप्रोक्तआमूर्धतोऽयंव्रणतिलकविभागोप्येवमेव
प्रकल्प्यः ॥ भवतिमशकलक्ष्मावर्तजन्मापितद्वन् निगदितफलका
रिप्राणिनांदेहसंस्थम् १० ॥

इतिश्रीवराहमिहिरकृतौबृहत्संहितायांपिटकलक्षणंनाम
द्वापंचाशोऽध्यायः ५२ ॥

मस्तकसे लेकर सब अंगोंमें यह पिटकका विभाग हमने कहा इसीप्रकार

व्रण औ तिलकाभी विभाग कल्पनाकरै अर्थात् पिटकके तुल्यही व्रण औ तिल काभी फलजानै। औ जीर्गेके शरीरमें मसा लहसन औ भौंरी होयँ उनकाभी फल कहेहुये पिटकके फलके समानही होताहै १० ॥

इतिश्रीवराहमिहिराचार्यकीबनाईवृहत्संहितामेंपिटकलक्षण नामबावनवांअध्यायसमाप्तहुआ ५२॥

तरेपनवांअध्याय ॥

वास्तुविद्या ॥

वास्तुज्ञानमथातःकमलभवान्मुनिपरंपरायातम् ॥
क्रियतेऽधुनामयेदंविदग्धसांवत्सरप्रीत्यै १ ॥

ब्रह्माजीसे गर्ग आदि मुनियोंके पारंपर्य करके जो वास्तु ज्ञान प्राप्तहुआ उसको अव हम चतुर दैवज्ञोंकी प्रीतिके लिये कहते हैं १ ॥

किमपिकिलभूतमभवद्रुन्धानंरोदसीशरीरेण ॥ तदमरगणेनसहसाविनिगृह्याऽधोमुखंन्यस्तम् २ यत्रचयेनगृहीतंविबुधेनाधिष्ठितःसतत्रैव ॥ तदमरमयंविधातावास्तुनरंकल्पयामास ३ ॥

पूर्वकाल में भूमि औ आकाशको अपने शरीरकरके रोकताहुआ कोई एक भूत उत्पन्न हुआथा । उसको देवताओंने झटपट निग्रहकरके अधोमुख भूमि पर गिराया २ औ जिस देवताने जिस अंगमें उसको पकड़ाथा वह देवता उसी अंगपर बैठगया। उसदेवमय भूतकोही ब्रह्माजीने वास्तुपुरुष कल्पनाकिया ३॥

उत्तममष्टाऽभ्यधिकंहस्तशतंनृपगृहपृथुत्वेन ॥
अष्टाऽष्टोनान्येवंपंचसपादानिदैर्घ्येण ४ ॥

एकसौ आठहाथ चौड़ा राजाका उत्तमघर होताहै इसी चौड़ाई में आठ २ हाथ घटाकर चारघर और बनते हैं इसभांति ये पांचघर राजाके होते हैं औ इन सब घरोंकी लम्बाई अपनी २ चौड़ाई से सवाई होती है जैसे उत्तमघरकी चौ-ड़ाई १०८ हाथ है तो उसकी लम्बाई १३५ हाथहोगी ४ ॥

षड्भिःषड्भिर्हीनासेनापतिसद्मनांचतुःषष्टिः ॥
पंचैवंविस्तारात्षड्भागसमन्वितादैर्घ्यम् ५ ॥

राजा के सेनापतिका उत्तमघर चौसठहाथ चौड़ा होताहै औ फिर छःछः हाथ घटाकर औ चार घरोंकी चौड़ाई होती है इसभांति सेनापतिके पांचघर होते हैं। इनघरोंकी चौड़ाई में जो उनका अपना २ छठाभाग जोड़ दियाजाय तो उन घरोंकी लम्बाई का प्रमाण होजाताहै ५ ॥

षष्टिश्चतुर्विहीनावेश्मानिभवन्तिपंचसचिवस्य ॥

स्वाऽष्टांशयुतादैर्घ्यंतदर्धतोराजमहिषीणाम् ६ ॥

राजाके मन्त्रीका उत्तम गृह साठ हाथ चौड़ा होताहै। फिर साठमें चार२ घटाकर औ चारघरों के विस्तारका प्रमाण होताहै। इसभांति मन्त्री के पांच घर होते हैं। इन घरों की चौड़ाई में अपना २ अष्टमांश जोड़ देवें तो इनकी लम्बाई का प्रमाणहोता है। इन पांच घरोंकी चौड़ाई लम्बाई के आधे २ प्रमाणकेतुल्य चौड़े लम्बे पांचघर राजाकी मुख्य रानियों के बनते हैं ६ ॥

षड्भिःषड्भिश्चैवंयुवराजस्यापवर्जिताशीतिः ॥
त्र्यंशान्विताचदैर्घ्यंपंचतदर्धैस्तदनुजानाम् ७ ॥

राजाके युवराजका प्रधानघर ८० हाथ चौडा होताहै औ फिर छः २ घटा कर और चार घरोंकी चौड़ाईका प्रमाण होताहै। चौड़ाई के प्रमाणमें अपनी तिहाई जोड़देवें तो घरकी लम्बाईका प्रमाणहोताहै। ये युवराजके पांच घर कहे। इनकी चौड़ाई लम्बाई के आधे २ के तुल्य लम्बे चौड़े पांच घर युव- राज के छोटे भाइयोंके होतेहैं ७ ॥

नृपसचिवान्तरतुल्यंसामन्तप्रवरराजपुरुषाणाम् ॥
नृपयुवराजविशेषःकंचुकिवेश्याकलाज्ञानाम् ८ ॥

राजाके औ मंत्री के पांचघरोंकी लम्बाई चौड़ाईका जो अन्तर होय उतने लम्बे चौड़े पांचघर मांडलिक राजा औ राजा के प्रधान पुरुषोंके होते हैं औ राजा के पांचघर औ युवराजके पांचघरोंकी लम्बाई चौड़ाईके अन्तर के तुल्य लम्बे चौड़े पांचघर कंचुकी वेश्या औ कलाके जाननेवालोंके होतेहैं ८ ॥

अध्यक्षाधिकृतानांसर्वेषांकोशरतितुल्यम् ॥
युवराजमन्त्रिविवरंकर्मान्ताध्यक्षदूतानाम् ९ ॥

अश्वशाला गजशाला आदिके अध्यक्ष औ कार्यों के अधिकारी इनसब के घरका प्रमाण कोशगृह औ रतिगृह के तुल्य होताहै जो आगे कहेंगे। युवराज औ मन्त्रीके घरकी लम्बाई चौड़ाई के अन्तरके तुल्य कर्मशालाध्यक्ष औ दूतों के घरकी लम्बाई चौड़ाई होती है ९ ॥

चत्वारिंशद्धीनाचतुश्चतुर्भिस्तुपंचयावदिति ॥
षड्भागयुतादैर्घ्यंदैवज्ञपुरोधसोर्भिषजः १० ॥

दैवज्ञ पुरोहित औ वैद्य इनका प्रधान घर चालीसहाथ चौड़ा होताहै औ फिर चार २ घटाकर और चार २ घरोंकी चौड़ाई होती है। इसभांति पांचघर इनके बनतेहैं। इनकी चौड़ाई में अपना षष्ठांश जोड़देवेंतो इनकी लम्बाई का प्रमाण होजाताहै १० ॥

वास्तुनियोविस्तारःसएवचोच्छ्रायोनिश्चयेनशुभदः ॥
शालैकेषुगृहेष्वपिविस्ताराद्द्विगुणितंदैर्घ्यम् ११ ॥

घरकी चौड़ाईका जो प्रमाण कहा इतनाही उंचाईका प्रमाणहोय तो शुभ होताहै। यह लम्बाई चौड़ाई चारशालावाले घरकीकही। जो एक शालाकेही घरहोयँ उनकी लम्बाई चौड़ाई से दूनी होतीहै ११ ॥

चातुर्वर्ण्यव्यासोद्वात्रिंशत्स्याच्चतुश्चतुर्हीना।आषोडशादितिपरंन्यूनतरमतीवहीनानाम् १२ सदशांशंविप्राणांक्षत्रस्याष्टांशसंयुतंदैर्घ्यम् ॥ षड्भागयुतंवैश्यस्यभवतिशूद्रस्यपादयुतम् १३ ॥

ब्राह्मण के प्रधानगृहकी चौड़ाई ३२ हाथ औ इसमें चार २ हाथ घटाकर और चारघर होतेहैं। क्षत्रियके प्रधान घरकी चौड़ाई २८ हाथहै इसमें चार २ घटाकर और तीनघर होतेहैं। वैश्यके प्रधान घरकी चौड़ाई २४ हाथहै इसमें चार २ घटाकर और दोघर बनतेहैं औ शूद्रका प्रधानघर २० हाथ चौड़ा इसमें चारहाथ घटाकर एकघर और बनता है। इसभांति सोलह हाथकी चौड़ाई तक घरबनतेहैं इससेभी चौड़ाई में न्यूनघर अत्यन्त नीचोंके होतेहैं १२ ब्राह्मणके घरकी चौड़ाई में उसका दशांश जोड़देवें तो लम्बाईहोतीहै क्षत्रियके घरकी चौड़ाई में अष्टमांश वैश्यकी में षष्ठांश औ शूद्रके घरकी चौड़ाई में उसका चतुर्थांश जोड़ने से उसकी लम्बाई होती है। इसप्रकार ब्राह्मण के ५ घर क्षत्रियके ४ वैश्यके ३ औ शूद्रके २ घर होतेहैं १३ ॥

नृपसेनापतिगृहयोरन्तरमानेनकोशरतिभवने ॥
सेनापतिचातुर्वर्ण्यविवरतोराजपुरुषाणाम् १४ ॥

राजा औ सेनापतिके घरकी लम्बाई चौड़ाई के अन्तर के तुल्य लम्बाई चौड़ाई कोश (भण्डार) औ रतिगृहकी होती है। सेनापतिका प्रथम गृह औ ब्राह्मणका घर इनके अन्तरके तुल्य ब्राह्मण राजपुरुष का घर होताहै। सेनापतिका दूसरा घर औ क्षत्रियका घर इनके अन्तरके तुल्य क्षत्रियराजपुरुषका घर सेनापतिका तीसरा घर औ वैश्यका घर इनके अन्तर के तुल्य वैश्य राजपुरुषका घर औ सेनापतिका चतुर्थगृह औ शूद्रकाघर इनके अन्तर के तुल्य शूद्रराजपुरुषका घर बनताहै १४ ॥

अथपारशवादीनांस्वमानसंयोगदलसमंभवनम् ॥
हीनाधिकंस्वमानादशुभकरंवास्तुसर्वेषाम् १५ ॥

ब्राह्मण से शूद्रास्त्री में जो उत्पन्नहोय वह पारशव कहाता है। इसभांति और भी अम्बष्ठ आदि वर्णसंकरोंके घरकी लम्बाई चौड़ाई उनके माता पिता

के जो वर्ण उनके घरकी लम्बाई चौड़ाई के जोड़की आधी होती है। जैसा ब्राह्मण औ शूद्रके घरकेमान को जोड़ आधाकरै तो पारशवके घरका मान होताहै ऐसेही औरोंकाभी जानो। कहे हुये मानसे जो वास्तुहीन अथवा अधिकहोय वह सबकेलिये अशुभ होताहै १५॥

पश्वाश्रमिणाममितंधान्यायुधवह्निरतिगृहाणांच॥
नेच्छन्तिशास्त्रकाराहस्तशतादुच्छ्रितंपरतः १६॥

पशुओंके औ परिव्राट् आदि आश्रमियों के घरका कुछ मान नहीं चाहे जितना लम्बा चौडा करलेवें। इसीप्रकार धान्य शस्त्र औ रति के घरका भी कुछ नियम नहीं है। औ वास्तु शास्त्रके जाननेवाले सौ हाथ से अधिक घरकी ऊँचाई नहीं चाहते हैं १६॥

सेनापतिनृपतीनांसप्ततिसहितेद्विधाकृतेव्यासे॥
शालाचतुर्दशहृतेपञ्चत्रिंशद्धृतेऽलिन्दः १७॥

सेनापति औ राजाके घरकी चौडाई में ७० जोड़ दोस्थानपर लिखै एक स्थानमें चौदहका भागदेवै जो हाथ औ अंगुल लब्धहोवैं वह शालाका मान होताहै औ दूसरे स्थान में पैंतीस के भाग से लब्धफल अलिन्दका मान है। शाला शब्दकरके घरके भीतरका प्रमाणलेना औ शालाके भीतिके बाहिर जो गमनिका जालीसेघिरीहुई अंगनके सम्मुखबनतीहै उसकोअलिन्दकहतेहैं १७॥

हस्तद्वात्रिंशादिषुचतुश्चतुस्त्रित्रिकत्रिकाःशालाः॥ सप्तदशत्रितयतिथित्रयोदशकृतांऽगुलाऽभ्यधिकाः १८ त्रित्रिद्विद्विद्विसमाःक्षयक्रमादंगुलानिचैतेषाम्॥व्येकाविंशतिरष्टौविंशतिरष्टादशत्रितयम् १९

बत्तीस हाथआदि जो ब्राह्मणआदि वर्णों के घरका प्रमाणकहा उनकी शालाका प्रमाण यहहै कि ब्राह्मण के प्रधान घरमें चारहाथ सत्रह अंगुल शाला की चौडाई होतीहै दूसरे घरमें चारहाथ तीनअंगुल तीसरे में तीनहाथ पन्द्रह अंगुल चौथेमें तीनहाथ तेरहअंगुल औ ब्राह्मण के पांचवें घरमें शालाका प्रमाण तीनहाथ चारअंगुल होताहै। ब्राह्मणका दूसरा घर क्षत्रियका प्रधानहै। क्षत्रियका दूसरा घर वैश्यका प्रधान। औ वैश्यका दूसरा घर शूद्रका प्रधान घरहै इसभांति सबवर्णों के घरमें शालाका प्रमाणजानो। ब्राह्मण के प्रधान घरमें तीनहाथ उन्नीस अंगुल अलिन्दका प्रमाणहै। दूसरे घरमें तीनहाथ आठ अंगुल तीसरे में दोहाथ बीसअंगुल चौथेमें दोहाथ अठारह अंगुल औ ब्राह्मण के पांचवें घरमें अलिन्दका प्रमाण दोहाथ तीनअंगुल है। इनहाथों के साथ गृह क्रमसे ये अंगुल कहेहैं। इसआर्यामें क्षयशब्द गृहकावाचक है १८।१९॥

शालात्रिभागतुल्याकर्तव्यावीथिकाबहिर्भवनात्॥ यद्यग्रतोभव

तिसासोष्णीषंनामतद्वास्तु २० सापाश्रयमितिपश्चात्सावष्टम्भंतुपा
र्श्वसंस्थितया॥सुस्थितमितिचसमन्ताच्छास्त्रज्ञैःपूजिताःसर्वाः२१॥
शालाकी तिहाई के तुल्य घरके बाहिर वीथी बनावै। जो वह वीथी वास्तु
के आगेहो तो उसवास्तुको सोष्णीष कहते हैं २० पिछलीओरहोयँ तो सापा-
श्रय दहिने बायेंहोय तो सावष्टम्भ औ वास्तु के चारोंओर वीथीहोय तो उस
वास्तुको सुस्थित कहतेहैं ये सबवीथी शास्त्रकेजाननेवालोंने शुभकहीहै २१॥

विस्तारषोडशांशःसचतुर्हस्तोभवेद्गृहोच्छ्रायः॥
द्वादशभागेनोनोभूमौभूमौसमस्तानाम् २२॥

घरकी चौड़ाई के मानमें सोलह का भागदेकर जो लब्धआवे उसमें चार
हाथ और जोड़े वहीघरकी पहिली भूमिका (खण्ड) की उँचाईका प्रमाण
होताहै। उसमें उसका द्वादशांश घटादेवें तो दूसरी भूमिकाकी उँचाईहोजाती
है इसीभांति द्वादशांश घटाते२ तीसरी चौथी आदि सब भूमिकाओं की उँचाई
का मानहोता है २२॥

व्यासात्षोडशभागःसर्वेषांसद्मनांभवतिभित्तिः॥
पक्केष्टकाकृतानांदारुकृतानांतु न विकल्पः २३॥

सबघरोंकी भीतिका प्रमाण घरकी चौड़ाई के षोड़शांश के तुल्यहोताहै।
यह नियम पक्कीईटों के घरमें है। काठ के घरमें भीत चौड़ाई लम्बाई उँचाई
आदिका कुछ नियम नहीं २३॥

एकादशभागयुतःससप्ततिर्नृपबलेशयोर्व्यासः॥
उच्छ्रायोऽङ्गुलतुल्योद्वारस्यार्द्धेनविष्कम्भः २४॥

राजा औ सेनापति के घरकी चौड़ाई में उसका एकादशांश जोड़कर स-
त्तर और जोड़ें जो अंकहोवें उतने अंगुल ऊंचा उनके घरकाद्वार बनानाचाहिये
औ द्वारकी उँचाईसे आधी द्वारकी चौड़ाई रखनीचाहिये २४॥

विप्रादीनांव्यासात्पञ्चांशोऽष्टादशांगुलसमेतः॥
साष्टांशोविष्कम्भोद्वारस्यत्रिगुणउच्छ्रायः २५॥

ब्राह्मणआदि वर्णोंके घरकी जो चौड़ाई उसका पंचमांशलेवे लब्धफलको
अंगुलमाने उसमें अठारह अंगुल जोड़देवें औ फिर उसका अष्टमांश उसीमें
जोड़े इसप्रकार जितने अंगुल होयँ वह उनके द्वारकी चौड़ाई से तिगुनी द्वार
की उँचाई होती है २५॥

उच्छ्रायहस्तसंख्यापरिमाणान्यंगुलानिबाहुल्यम्॥शाखाद्वयेऽपि
कार्यंसार्द्धंतस्याडुम्बरयोः २६ उच्छ्रायात्सप्तगुणादशीतिभागःपृ

थुत्वमेतेषाम् ॥ नवगुणितेशीत्यंशःस्तम्भस्यदशांशहीनोऽग्रे २७॥

द्वारकी चौकठकी दोनों भुजाओंको शाखा कहतेहैं औ ऊपर नीचेके काष्ठ शिरधर औ देहली को उदुम्बर कहते हैं । द्वार जितने हाथ ऊंचाहोय उतने अंगुल शाखाओं की मोटाई रखनी चाहिये । औ शाखाओं से ड्योढ़ी मोटाई उदुम्बरों की होती है २६ उँचाई को सातसेगुणकर अस्सीका भागदेने से जो लब्धमिले वह इससबकी चौड़ाई है स्तम्भ की उँचाई को नौसे गुणकर अस्सी का भाग देने से जो लब्ध होय वह स्तम्भके मूलकी मोटाई होती है औ उसका दशांश उसमें घटावै तो स्तम्भ के अग्रभाग की मोटाई का मान होता है २७ ॥

समचतुरस्रोरुचकोवज्रोऽष्टाश्रिर्द्विवज्रकोद्विगुणः ॥
द्वात्रिंशतातुमध्येप्रलीनकोवृत्तइतिवृत्तः २८ ॥

जो स्तम्भ मध्य भागमें चतुरस्र होय वह रुचक कहाता है अष्टास्र होय वह वज्रकहाता है षोडशास्र होय वह द्विवज्रक औ बत्तीस कोणका मध्य में होय वह प्रलीनक औ जो स्तम्भ बीचसे गोलहोय वह वृत्त कहाताहै २८ ॥

स्तम्भंविभज्यनवधावहनंभागोघटोऽस्यभागोऽन्यः ॥
पद्मं तथोत्तरोष्ठं कुर्याद्भागेन भागेन २९ ॥

स्तम्भके समान नौ भागकर सब से नीचेके भागको वहन बनावे भूमिपर जिसके ऊपर स्तम्भ रहताहै उसको वहन कहते हैं । वहन के ऊपर एकभागमें घट बनावै उसके ऊपरले भागमें कमल बनावै उसके ऊपर ले भागमें उत्तरोष्ठ बनाकर शेष पांच भागों को चतुरस्र आदि बनादेवै शोभाके लिये जिसमें अनेक प्रकारके चित्र बनाये जातेहैं उसको उत्तरोष्ठ कहते हैं २९ ॥

स्तम्भसमंबाहुल्यंभारतुलानामुपर्युपर्यासाम् ॥
भवतितुलोपतुलानमूनंपादेनपादेन ३० ॥

स्तम्भके ऊपर जो तिरछा काष्ठ रक्खाजाताहै उसको भारतुला कहते हैं । औ भार तुलाके ऊपर २ जो और काष्ठ लगाये जाते हैं उनकी तुलोपतुल संज्ञा है । भारतुलाकी मोटाई स्तम्भकी मोटाई के तुल्यहोतीहै औ तुलोपतुलोंकी मोटाई चौथाई २ घटानेसे होती है ३० ॥

अप्रतिषिद्धाऽलिन्दंसमन्ततोवास्तुसर्वतोभद्रम् ॥
नृपविबुधसमूहानांकार्यंद्वारैश्चतुर्भिरपि ३१ ॥

जिसवास्तु में चारोंओर अलिंद बनायेजावें वह चारद्वारों करके युक्त सर्वतो भद्रनाम वास्तु राजा औ देवताओंके समूहके लिये बनाना चाहिये ३१॥

नन्द्यावर्तमलिन्दैःशालाकुड्यात्प्रदक्षिणान्तगतैः ॥
द्वारंपश्चिममस्मिन्विहायशेषाणिकार्याणि ३२ ॥

शालाकी भित्तिसे लेकर प्रदक्षिण क्रमसे जो अलिंद उनकरके युक्त वास्तु नंद्यावर्त कहाता है। उसमें पश्चिम दिशाको छोड़ शेष तीन दिशाओं में तीन द्वार रक्खे ३२ ॥

द्वाराऽलिन्दोऽन्तगतःप्रदक्षिणोऽन्यःशुभस्ततश्चान्यः ॥
तद्वच्चवर्धमानेद्वारंतुनदक्षिणेकार्यम् ३३ ॥

प्रधान वास्तुके द्वारका अलिन्द अन्तगत अर्थात् दक्षिणोत्तर शालासंलग्न बनावे दूसरा शुभ अलिन्द प्रदक्षिण बनावे औ उसके अन्तमें एक और अलिन्दबनावै। औ दक्षिण दिशा में द्वार न रक्खै शेष तीन दिशाओं में रक्खे वह वास्तु वर्धमान कहाता है ३३ ॥

अपरोन्तगतोलिन्दःप्रागन्तगतौतदुत्थितौचान्यौ ॥
तदवधिविधृतश्चान्यःप्राग्द्वारंस्वस्तिकेऽशुभदम् ३४

पश्चिम दिशाका अलिंद दक्षिणोत्तर शालासंलग्न बनावे। उस पश्चिम अलिन्दसे उत्पन्न और दो अलिन्द पूर्व दिशाकी शालासे लगेहुये बनावे। उन दोनोंके मध्यमें चौथा अलिन्द बनावे इस वास्तुकानाम स्वस्तिकहै। इस में पूर्व दिशाका द्वार अशुभ होताहै इसलिये पूर्वको छोड़शेष तीन दिशाओं में द्वार रक्खे ३४ ॥

प्राक्पश्चिमावलिन्दावन्तगतौतदवधिस्थितौशेषौ ॥
रुचकेद्वारंनशुभदमुत्तरतोऽन्यानिशस्तानि ३५ ॥

पूर्व पश्चिमके दो अलिन्द दक्षिणोत्तर शालासे लगेहुये बनावे। दक्षिण उत्तरके अलिन्द उनदोनोंसे लगेहुये बनावे। यह रुचकनाम वास्तु कहाताहै। इसमें उत्तर दिशाका द्वारशुभ नहीं होता। इसलिये उत्तरको छोड़ शेपतीन दिशाओंमें द्वार बनावे ३५ ॥

श्रेष्ठंनन्द्यावर्त्तंसर्वेषांवर्धमानसंज्ञंच ॥
स्वस्तिकरुचकेमध्येशेषंशुभदंनृपादीनाम् ३६ ॥

नंद्यावर्त औ वर्धमान ये दो सब वर्णोंके लिये श्रेष्ठ हैं। स्वस्तिक औ रुचक सबके लिये मध्यहैं न शुभ औ न अशुभ। औ सर्वतोभद्र केवलराजा राजमंत्री आदि के लियेही शुभहै ३६ ॥

उत्तरशालाहीनंहिरण्यनाभंत्रिशालकंधन्यम् ॥ प्राक्शालया वियुक्तंसुक्षेत्रंवृद्धिदंवास्तु ३७ याम्याहीनंचुल्लीत्रिशालकंवित्ता

शकरमेतत् ॥ पक्षघ्नमपरयावर्जितंसुतध्वंसवैरकरम् ३८ ॥

जिसवास्तुमें उत्तरकी ओर शाला न बनै शेषतीन दिशाओंमें शालाहोयँ वह त्रिशालक हिरण्यनाभ नामक शुभहोताहै। पूर्वशाला करके हीन त्रिशालकसु-क्षेत्रनामक धन पुत्र आदिकी वृद्धिकरताहै ३७ दक्षिण दिशाकी शाला जिसमें न होय वह त्रिशालक चुल्लीनामक धनका नाश करता है। पश्चिम दिशाकी शालाकरके रहित त्रिशालक पक्षघ्ननामक पुत्रका नाश औ वैर करताहै ३८॥

सिद्धार्थमपरयाम्येयमशूर्पपश्चिमोत्तरेशाले ॥ दण्डाख्यमुदक्पूर्वेवाताख्यंप्राग्युतायाम्या ३९ पूर्वापरेतुशालेगृहचुल्लीदक्षिणोत्तरे काचम् ॥ सिद्धार्थेऽर्थावाप्तिर्यमशूर्पेगृहपतेर्मृत्युः ४० दण्डवधो दण्डाख्येकलहोद्वेगःसदैववाताख्ये ॥ वित्तविनाशश्चुल्ल्यांज्ञातिविरोधःस्मृतःकाचे ४१ ॥

पश्चिम औ दक्षिण में दोहीशाला जिसघरमें होयँ वह सिद्धार्थ कहाताहै। पश्चिम औउत्तरमें शालाहोयँ वह यम शूर्पहै। उत्तरपूर्वमें जिसमें दो शालाहो-यँ उसका नाम दंडहै। पूर्व औ दक्षिणमें दोशाला होयं वह वात कहाताहै ३९ पूर्व पश्चिममें दोशाला होयं उसकी गृहचुल्ली संज्ञाहै। औ दक्षिण औ उत्तरमें जिसघरमें दोशालाहोयँ उसद्विशालकको काचकहतेहैं। सिद्धार्थनाम द्विशालमें धनकी प्राप्ति होती है। यमशूर्प में घरके स्वामीका मृत्युहोता है ४० दंडनाम द्विशालमेंदंड औवधहोताहै। वातमें सदा कलह औउद्वेग होता है गृहचुल्ली में धनकानाश औकाचमें बंधुओंसेविरोध होताहै ४१ ॥

एकाशीतिविभागेदशदशपूर्वोत्तरायतारेखाः ॥
अन्तस्त्रयोदशसुराद्वात्रिंशद्बाह्यकोष्ठस्थाः ४२ ॥

इकासी पदका वास्तु कहतेहैं। क्षेत्रमेंपूर्व पश्चिम दशरेखा औ दक्षिणो त्तर दश रेखा करनेसे इकासी कोठे बनजाते हैं। इसएकाशीति पदक्षेत्रमें तेरह देवता भीतर हैं औबत्तीस बाहरके कोठों में हैं ४२ ॥

शिखिपर्जन्यजयन्तेन्द्रसूर्यसत्याभृशोऽन्तरिक्षश्च ॥ ऐशान्याद्याः क्रमशोदक्षिणपूर्वेऽनिलःकोणे ४३ पूषावितथबृहत्क्षतयमगन्धर्वाख्य भृङ्गराजमृगाः ॥ पितृदौवारिकसुग्रीवकुसुमदन्तांऽबुपत्यसुराः ४४ शोषोऽथपापयक्ष्मारोगःकोणेततोहिमुख्योच ॥ भल्लाटसोमभुजगास्ततोऽदितिर्दितिरितिक्रमशः ४५ ॥

वास्तुके बाहिरके चारोंओर के कोठोंमें ईशान कोणसे लेकर क्रमसेये देव-ताहैं। शिखी पर्जन्य जयन्त इन्द्र सूर्य सत्यभृश औ अंतरिक्ष। फिर अग्निको

गासे वायु पूपा वितथ बृहत्क्षत यम गंधर्व भृंगराज औ मृग ये दक्षिण दिशामें हैं। नैर्ऋत्य कोणसे पिता दौवारिक सुग्रीव कुसुमदंत वरुण असुर शोप औ पाप यक्ष्मा ये पश्चिमके देवताहैं। वायव्य से लेकररोग अहिमुख्य भल्लाट सोमभुजग अदिति औ दितिये उत्तरके देवताहैं। इसभांति क्रमसे बत्तीस देवता स्थितहैं ४३। ४४। ४५॥ अबमध्यके देवता कहतेहैं॥

मध्येब्रह्मानवकोष्ठकाधिपोऽस्यार्यमास्थितःप्राच्याम्॥ एकान्तरात्प्रदक्षिणमस्मात्सविताविवस्वांश्च ४६ विबुधाधिपतिस्तस्मान्मित्रोऽन्योराजयक्ष्मनामाच॥ पृथ्वीधरापवत्सावित्येतेब्रह्मणः परिधौ ४७ आपोनामैशानेकोणेहौताशनेचसावित्रः॥ जयइतिचनैर्ऋतेरुद्रश्चानिलेऽभ्यन्तरपदेषु ४८॥

वास्तु के मध्यमें नौकोठोंका अधिपति ब्रह्मा स्थितहै इससे पूर्वदिशामें अर्यमास्थितहैं। अर्यमासे प्रदक्षिण क्रमकरके एक एक कोष्ठके अंतरसेसविता विवस्वान् ४६ इन्द्र मित्र राजयक्ष्मा पृथ्वीधर औ आपवत्सये आठ देवता एक २ कोष्ठके अंतर से ब्रह्माके परिधिमें अर्थात् चारोंओर स्थितहैं ४७ ईशानकोणमें पर्जन्यके नीचे आप अग्निकोणमें अंतरिक्षकेनीचे सावित्र नैर्ऋत्यमें दौवारिककेनीचे जय औ वायव्य कोणमें पापयक्ष्म के नीचे रुद्र स्थितहैं ४८ येदेवता भीतरके कोष्ठमें स्थित हैं॥

आपस्तथापवत्सःपर्जन्योग्निर्दितिश्चवर्गोयम्॥ एवंकोणेकोणेपदिकाःस्युःपञ्चपञ्चसुराः४९ बाह्याद्विपदाःशेषास्तेविबुधाविंशतिः समाख्याताः॥ शेपाश्चत्वारोऽन्येत्रिपदादिचर्यमाद्यास्ते ५०॥

आप आपवत्स पर्जन्य अग्नि औ दिति यहदेवसमूह एक २ कोष्ठका स्वामी है इसभांतिकोण २ में पांच २ देवता एक २ पदकेस्वामी हैं। जैसेये ईशानकोणमें पांचहैं इसभांति अग्निकोणमें सविता सावित्र अंतरिक्ष वायु औ पूपा। नैर्ऋत्यकोणमें इन्द्र जयदौवारिक पितामृग। राजयक्ष्मारुद्र पाप यक्ष्मारोग औ अहयेपांच देवता वायव्यकोण में एकपदिक हैं ४९ शेषबाहरकें कोष्ठोंमें स्थितदेवता दो २ पदके स्वामी हैं। पूर्वमें जयंत इन्द्रसूर्य सत्य औ भृशये पू[illegible]तथबृहत्क्षत गंधर्व यम औ भृंगराजये पांचदक्षिणमें। सुग्रीव कुसुमदन्त [illegible]ण असुर औ शोपये पश्चिममें मुख्य भल्लाटसोम भुजग औ दितिये पांच देवता उत्तरमें द्विपदिकहैं। शेषअर्यमा विवस्वान् मित्र औ पृथ्वीधर ये चारदेवता ब्रह्मासे पूर्व आदि दिशाओंमें स्थिततीन २ पदके स्वामीहैं अर्थात्

जिसपदमें वैठेहैं उसकेदोनों ओर एक २ पदऔरभी इनकाहै । बीचमें नौपद का स्वामी ब्रह्माहै इसभांति ये सब देवता ४५ हैं ५० ॥

पूर्वोत्तरदिङ्मूर्धापुरुषोऽयमवाङ्मुखोऽस्यशिरसिशिखी ॥ आपोमुखेस्तनेऽस्याऽर्यमाह्युरस्यापवत्सश्च ५१ पर्जन्याद्याबाह्यादृक्श्रवणोरस्थलांसगादेवाः ॥ सत्याद्याःपञ्चभुजेहस्तेसविताचसावित्रः ५२ वितथोबृहत्क्षतयुतःपार्श्वेजठरेस्थितोविवस्वांश्च ॥ ऊरूजानूजंघेस्फिगितियमाद्यैःपरिगृहीताः ५३ एतेदक्षिणपार्श्वेस्थानेष्वेवंच वामपार्श्वस्थाः ॥ मेढ्रशक्रजयन्तौहृदयेब्रह्मापितांघ्रिगतः ५४ ॥

यह वास्तु पुरुष अधोमुख है औ इसका शिर ईशान कोणमें है। इसके शिरपर शिखी स्थित हैं। मुखपर आप स्तनपर अर्यमा छातीपर आपवत्स स्थितहै ५१ पर्जन्य आदि बाहिरके चारदेवता अर्थात् पर्जन्यजयंत इन्द्र औ सूर्य ये चार क्रमसे नेत्र कर्ण उरःस्थल औ स्कन्धपरस्थितहैं। सत्यआदि पांच देवता भुजापर स्थित हैं सविता औ सावित्र हाथपर स्थितहैं ५२ वितथ औ बृहत्क्षत पार्श्वपर स्थित हैं। विवस्वान् उदर परस्थित हैं यमऊरूपर गन्धर्व जानुपर भृंगराज जंघापर औ मृगस्फिक् के ऊपर स्थितहैं ५३ ये देवतावास्तु पुरुषके दहिनी ओर स्थितहैं इसीभांति बाईं ओर भी देवता स्थित हैं अर्थात् वामस्तनपर पृथिवीधर नेत्रपर दिति कर्णपर अदिति बाईंओर की छाती पर भुजंग स्कन्धपर सोम भुजपर भल्लाट मुख्य अहिरोग औ पाप यक्ष्मा ये पांच स्थित हैं वामहस्त पर रुद्र औ राजयक्ष्मा पार्श्वपर शोष औ असुर ऊरूपर वरुण जानुपर कुसुमदन्त जंघापर सुग्रीव औ स्फिक के ऊपर दौवारिक स्थित हैं ये वास्तु पुरुष के वामभाग में स्थित देवताहैं वास्तु पुरुष के लिंगपर इन्द्र औ जयन्त स्थितहैं हृदय पर ब्रह्मा स्थित हैं औ पैरों पर पिता स्थित हैं यह नगर ग्रामघर आदि में इकासीपद के वास्तुका विभाग कहाहै अब चतुःषष्टि पद वास्तु कहते हैं ५४ ॥

अष्टाष्टकपदमथवाकृत्वारेखाश्चकोणगास्तिर्यक् ॥ ब्रह्माचतुष्पदोऽस्मिन्नर्धपदाब्रह्मकोणस्थाः ५५ अष्टौचबहिःकोणेष्वर्धपदास्तदुभयस्थिताःसार्धाः ॥ उक्तेभ्योयेशेषास्तेद्विपदाविंशतिस्तेच ५६ ॥

अथवा चौंसठ कोठोंकाही वास्तु बनावै अर्थात् नौरेखा पूर्व पश्चिम औ नौरेखा दक्षिणोत्तर खैंचकर चौंसठ कोठे वास्तुमें बनावे औ चारों कोणों में कर्णके आकार दो तिरछी रेखा खैंच देवै इसपदमें ब्रह्माचार कोष्ठोंका स्वामी है ब्रह्माके कोणों में स्थित आठ देवता आपवत्स सविता सावित्र इन्द्र जयन्त

राजयक्ष्म औ रुद्र ५५ औ बाहिर के कोणों में स्थित आठ देवता शिखी अंतरिक्ष वायु मृग पिता पापयक्ष्म रोग औ दिति ये सब आर्धपदिक अर्थात् आधे २ कोष्ठके स्वामी हैं औ इनके दोनोंओर स्थित पर्जन्य भृश भृंगराज दौवारिक शोषनाग औ अदिति ये सार्धपादिक अर्थात् डेढ़ २ पदके स्वामी हैं। औ शेष बीसदेवता जयन्त इन्द्र सूर्य सत्य वितथ बृहत्क्षत यम गंधर्व सुग्रीव कुसुम दंत वरुण असुर मुख्य भल्लाट सोम भुजग अर्यमा विवस्वान् मित्र पृथ्वीधर ये सब द्विपद अर्थात् दो २ कोष्ठके स्वामी हैं यह चौसठ पदका वास्तु कहा है ५६ ॥

संपातावंशानांमध्यानिसमानियानिचपदानाम् ॥
मर्माणितानिविन्द्यान्नतानिपरिपीडयेत्प्राज्ञः ५७ ॥

वंशोंके सम्पात जो आगे कहेंगे औ पदोंके सम मध्य ये वास्तुके मर्म जाने। बुद्धिमान् पुरुष कभी इनको पीड़न न करै ५७॥

तान्यशुचिभाण्डकीलस्तम्भाद्यैःपीडितानिशल्यैश्च ॥
गृहभर्तुस्तत्तुल्येपीडामंगेप्रयच्छन्ति ५८ ॥

वे वास्तुके मर्मस्थान अपवित्र भांड कील स्तम्भ आदि करके औ शल्य जो आगे कहेंगे उनकरके पीड़ित होय तो घरके स्वामीके उस२ अंगमें अर्थात् वास्तुका जो अंगहोय उसी अंगमें पीड़ा करते हैं ५८॥

कण्डूयतेयदङ्गंगृहभर्तुर्यत्रवामराहुत्याम् ॥
अशुभंभवेन्निमित्तंविकृतिर्वाग्नेःसशल्यंतत् ५९ ॥

होमके अथवा प्रश्नके समय घरका स्वामी जिस अपने अंगको खुजलावे वास्तु के उस अंगमें शल्य होता है। औ शिखि आदि जिस देवताके आहुति देनेके समय छींक रोदन आदि अशुभ निमित्त होय अथवा अग्नि में कुछ विकार उत्पन्न होय तो भी वह देवता वास्तु पुरुषके जिस अंग में होय उसअंग को शल्ययुक्त जानै ५९॥

धनहानिर्दारुमयेपशुपीड़ारुग्भयानिचास्थिकृते ॥ लोहमयेशस्त्रभयंकपालकेशेषुमृत्युःस्यात् ६० अङ्गारैस्तेनभयंभस्मनिचविनिर्दिशेत्सदाग्निभयम् ॥ शल्यंहिमर्मसंस्थंसुवर्णरजताहतेऽत्यशुभम् ६१ मर्मण्यमर्मगोवारुणद्ध्यर्थागमंतुषसमूहः ॥ अपिनागदन्तकोमर्मसंस्थितोदोषकृद्भवति ६२ ॥

काष्ठका शल्य होय तो धनहानि हड्डियों का शल्य होय तो पशुपीड़ा औ रोग भय होताहै लोहके शल्यसे शस्त्रभय कपाल औ केशोंके शल्यसे मृत्यु ६०

कोयलोंके शल्यसे चोर भय भस्मके शल्यसे सदा अग्निभय होताहै । सुवर्ण औ चांदी विना और कोई शल्य जो वास्तु पुरुषके मर्ममें स्थित होय तो बहुत अशुभ होताहै ६१ जौ धान आदि के तुष वास्तुपुरुषके मर्मस्थान में चाहे और किसी स्थानमें होयँ तो धनके आगमन को रोकते हैं। नागदन्त शुभभी हैं परन्तु मर्मस्थान में होय तो दोष करनेवालाही होताहै ६२ ॥

रोगाद्वायुंपितृतोहुताशनंशोषसूत्रमपिवितथात् ॥ मुख्याद्भृशंजयन्ताच्चभृङ्गमदितेश्चसुग्रीवम् ६३ तत्संपातानवयेतान्यतिमर्माणि संप्रदिष्टानि ॥ यश्चपदस्याष्टांशस्तत्प्रोक्तंमर्मपरिमाणम् ६४ ॥

वास्तु पुरुषमें रोग नाम देवतासे अनिल पर्यंत पितासे शिखि पर्यन्त वितथसे शोषपर्यन्त मुख्यसे भृश पर्यन्त जयन्तसे भृंग पर्य्यन्त औ अदिति से सुग्रीव पर्य्यन्त सूत्रडाले ६३ इनसूत्रों के जो नौ सम्पात वे वास्तु पुरुषके अतिमर्म कहे हैं। एक पदका जो अष्टमांश वह मर्मका परिमाण है ६४ ॥

पदहस्तसंख्ययासंमितानिवंशोऽङ्गुलानिविस्तीर्णः ॥
वंशव्यासोऽध्यर्धःशिराप्रमाणेनिनिर्दिष्टम् ६५ ॥

पहिले जो छः सूत्रकहे उनको वंशभी कहते हैं औ वास्तु विभागके लिये जो पूर्वापर औ दक्षिणोत्तर दश २ रेखाकरी है उनको शिरा कहते हैं। वास्तुमें एक पदका विस्तार जितने हाथ होय उतने अंगुल एक वंशका विस्तार होता है। औ वंशके विस्तारसे ड्योढ़ा शिराका विस्तार कहाहै ६५ ॥

सुखमिच्छन्ब्रह्माणंयत्नाद्रक्षेद्गृहीगृहान्तस्थम् ॥
उच्छिष्टाद्युपघाताद्गृहपतिरुपतप्यतेतस्मिन् ६६ ॥

घरका स्वामी सुखचाहे तो वास्तु के मध्य में स्थित ब्रह्माकी यत्नसे रक्षा करै। ब्रह्माके ऊपर उच्छिष्टआदि डालनेसे घरके स्वामीको क्लेशहोताहै ६६ ॥

दक्षिणभुजेनहीनेवास्तुनरेऽर्थक्षयोऽङ्गनादोषाः ॥ वामेर्थधान्यहानिःशिरसिगुणैर्हीयतेसर्वैः ६७ स्त्रीदोषाःसुतमरणंप्रेष्यत्वंचापिचरणवैकल्पे ॥ अविकलपुरुषेवसतांमानार्थयुतानिसौख्यानि ६८ ॥

वास्तु पुरुषकी दहिनी भुजा हीन होय तो धनका नाश औ स्त्रीदोष होते हैं । वाम भुजा हीन होय तो धन औ अन्नकी हानि होती है । वास्तु पुरुष शिरसे हीनहोय तो धन आरोग्य आदि सब गुणोंका नाश होताहै ६७ वास्तु पुरुष चरणहीनहोय तो स्त्रीदोष पुत्रमरण औ दासत्व होताहै । वास्तु पुरुषके सबअंगपूरेहोयँ उसवास्तुमें रहनेवालोंको मान औधनकरकेयुक्तसुखहोतेहैं६८॥

गृहनगरग्रामेषुचसर्वत्रैवंप्रतिष्ठितादेवाः ॥

तेषुचयथानुरूपंवर्णाविप्रादयोवास्याः ६९ ॥

घर नगर औ ग्रामोंमें भी इसीप्रकार ये वास्तु देवता स्थित होरहे हैं उन नगर ग्राम आदि में ब्राह्मणआदि वर्णोंको यथाक्रम बसावै ६९ ॥

वासगृहाणिचविन्द्याद्विप्रादीनामुदग्दिगाद्यानि ॥
विशतांयथास्वभवनंभवन्तितान्येवदक्षिणतः ७० ॥

उत्तर पूर्व दक्षिण औ पश्चिम इन चारदिशाओं में क्रमसे चतुःशाल घर में ग्राम में अथवा नगर में ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य औ शूद्रबसैं। ये घर ऐसे बनावें कि अपने घर के आंगन में प्रवेश करने के समय अपने निवास के घर दहिनी ओर पड़ें ७० ॥

नवगुणसूत्रविभक्तान्यष्टगुणेनाथवाचतुःषष्टेः ॥
द्वाराणियानितेषामनलादीनांफलोपनयः ७१ ॥

इक्यासी पदके वास्तुमें नौगुणे सूत्र करके औ चौसठपद के वास्तु में आठगुणे सूत्र करके विभक्त कियेहुये जो अनल आदि बत्तीस द्वार उनका क्रम से फल कहते हैं ७१ ॥

अनलभयंस्त्रीजन्मप्रभूतधनतानरेन्द्रवाल्लभ्यम् ॥
क्रोधपरताऽनृतत्वंक्रौर्यंचौर्यंचपूर्वेण ७२ ॥

शिखि से लेकर अन्तरिक्ष पर्यन्त जो आठ देवता वास्तु पुरुष के पूर्वभाग में स्थित हैं उनपर द्वारहोय तो क्रमसे अग्निभय कन्याजन्म बहुतधन राजा की प्रीति क्रोधीपना असत्यबोलना क्रूरपना औ चोरपना ये फलहोतेहैं ७२॥

अल्पसुतत्वंप्रैष्यंनीचत्वंभक्ष्यपानसुतवृद्धिः ॥
रौद्रंकृतघ्नमधनंसुतवीर्यघ्नंचयाम्येन ७३ ॥

अनिल से लेकर मृगपर्यन्त दक्षिण के आठ देवताओं के पद में द्वारका क्रमसे अल्पपुत्रता दासता नीचत्व भोजन पान औ पुत्रोंकी वृद्धि रौद्र कृतघ्न धनहीन पुत्र बलका नाशक ये फल हैं ७३ ॥

सुतपीडारिपुवृद्धिर्नधनसुताप्तिःसुतार्थबलसम्पत् ॥
धनसम्पन्नृपतिभयंधनक्षयोरोगइत्यपरे ७४ ॥

पितासे लेकर पापतक पश्चिम आठ देवताओंपर द्वार रखनेका क्रम से पुत्रपीड़ा शत्रुवृद्धि धन औ पुत्रोंकी नहीं प्राप्ति पुत्र धन औ बलकीप्राप्ति धन सम्पत्ति राजभय धनक्षय औ रोग ये फल हैं ७४ ॥

वधबन्धौरिपुवृद्धिःसुतधनलाभःसमस्तगुणसम्पत् ॥
पुत्रधनाप्तिर्वैरंसुतेनदोषाःस्त्रियानैःस्वम् ७५ ॥

यक्ष्मरोग से लेकर दिति पर्यन्त उत्तर के आठ देवताओंपर द्वार रखने से क्रमकरके मृत्यु औ बन्धन शत्रुवृद्धि पुत्र औ धनकालाभ सबगुणोंकी सम्पत्ति पुत्र औ धनकी प्राप्ति पुत्रकेसाथ वैर स्त्रीदोप औ निर्धनता ये फलहोतेहैं७५॥

मार्गतरुकोणकूपस्तम्भभ्रमविद्धमशुभदंद्वारम् ॥
उच्छ्रायाद्द्विगुणामितांत्यक्त्वाभूमिंनदोषाय ७६ ॥

मार्ग वृक्ष किसी दूसरे घरकी खूंट कुंआं खम्भा भ्रम अर्थात् जलनिकलने की मोरी इनकरके विद्धद्वार अशुभ होताहै अर्थात् घरके द्वारके सम्मुख ये न होने चाहिये। परन्तु घरके द्वारकी जितनी उँचाईहोय उससे दूनी भूमि छोड़ कर जो इनमेंसे किसीका वेधहोय तो कुछ दोप नहीं ७६ ॥

रथ्याविद्धंद्वारंनाशायकुमारदोषदंतरुणा ॥ पङ्कद्वारेशोकोऽव्ययोऽम्बुनिःस्राविणिप्रोक्तः ७७ कूपेनापस्मारोभवतिविनाशश्चदेवताविद्धे ॥ स्तम्भेनस्त्रीदोषाःकुलनाशोब्रह्मणोऽभिमुखे ७८ ॥

घर के द्वारको मार्गका वेधहोय घरके स्वामी का नाश वृक्षका वेधहोय तो बालकोंको दोप पंक (कीच) का वेधहोय अर्थात् घरके सम्मुख सदा पंकबना रहे तो शोक होता है मोरीका वेधहोय तो धनका व्यय ७७ कूपका वेधहोय तो अपस्मार (मृगीरोग) देवताकी मूर्तिका वेधहोय तो घरके स्वामीकानाश स्तम्भ का वेधहोय तो स्त्रियों के दोष औ ब्रह्मा के सम्मुख द्वारहोय तो कुल का नाश होता है ७८ ॥

उन्मादःस्वयमुद्घटितेऽथपिहितेस्वयंकुलविनाशः॥ मानाधिकेनृपभयंदस्युभयंव्यसनदंनीचम् ७९ द्वारंद्वारस्योपरियत्तन्नशिवायसंकटंयच्च ॥ आव्यात्तंक्षुद्भयदंकुब्जंकुलनाशनंभवति ८० पीडाकरमतिपीडितमन्तर्विनतंभवेदभावाय ॥ बाह्यविनतेप्रवासोदिग्भ्रान्ते दस्युभिःपीडा ८१ ॥

जिस घरके द्वारका कपाट बिनाखोलेही खुलजाय उसमें उन्मादरोगहोता है। जिसका कपाट आपही बन्दहोजाय उसमें कुलनाश होजाताहै अपने नियत परिमाणसे द्वार बड़ाहोय तो राजाकाभय औ छोटाहोय तो चोरभय होता है औ दुःखदेताहै ७९ ठीकद्वारपर दूसरेखण्डका द्वारआवे वह शुभनहीं होता। औ सकड़ा द्वारभी शुभनहीं। बहुत चौड़ाद्वार क्षुधाकाभय करताहै औ कुबड़ा द्वार कुलका नाश करनेवाला होताहै ८० ऊपर के काष्ठसे बहुत दबाहुआद्वार घरकेस्वामीको पीड़ाकरताहै। भीतरको झुकाहुआ गृहस्वामीका मरणकरता

है। बाहर को झुकाहोय तो गृहस्वामी विदेश में रहै। और किसी दिशाकी ओर देखताहोय तो चोरोंकरके पीड़ाहोती है ८१॥

मूलद्वारंनान्यैर्द्वारैरभिसन्दधीतरूपद्ध्या॥
घटफलपत्रप्रमथादिभिश्चतन्मङ्गलैश्चिनुयात् ८२॥

घरके मुख्यद्वारका स्वरूप और सामान्य द्वारों के समानही न करै अर्थात् और द्वारोंसे मुख्य द्वारका स्वरूप उत्तमहोना चाहिये। मुख्यद्वारको कलश फल पत्र शिवजीके गण आदि मंगलदायक रूपोंसे शोभित करै अर्थात् इनके चित्र द्वारपर खुदवावे ८२॥

ऐशान्यादिषुकोणेषुसंस्थितावाह्यतोगृहस्यैताः॥
चरकीविदारिनामाथपूतनाराक्षसीचेति ८३॥

घरके बाहर ईशानआदि चारों कोणों में क्रमसे चरकी विदारी पूतना औ राक्षसी ये चार देवता स्थितहैं ८३॥

पुरभवनग्रामाणांयेकोणास्तेषुनिवसतांदोषाः॥
श्वपचाद्योऽन्त्यजातास्तेष्वेवविवृद्धिमायांति ८४॥

घर ग्राम औ नगरके जो चारों कोण उनमें बसनेवालों को अनेक प्रकार के क्लेश होतेहैं। औ उन कोणोंमें जो श्वपच आदि नीच जाति बसें तो उन की वृद्धि होतीहै ८४॥

याम्यादिष्वशुभफलाजातास्तरवःप्रदक्षिणेनैते॥
उदगादिषुप्रशस्ताःप्लक्षवटोदुम्बराश्वत्थाः ८५॥

प्लक्ष (पाकर) वड़ गूलर पीपल येचार वृक्ष क्रमसे घरके दक्षिण पश्चिम उत्तर औ पूर्वमें होयँ तो अशुभ होते हैं औ उत्तर पूर्व दक्षिण औ पश्चिम में क्रमसे ये वृक्ष उत्पन्नहोयँ तो शुभ हैं ८५॥

आसन्नाःकण्टकिनोरिपुभयदाःक्षीरिणोऽर्थनाशाय॥फलिनःप्रजाक्षयकरादारूण्यपिवर्जयेदेषाम् ८६ छिन्द्याद्यदिनतरूस्तान्तदन्तरेपूजितान्वपेदन्यान्॥पुन्नागाऽशोकाऽरिष्टवकुलपनसान्शमीशालौ ८७॥

घरके समीप खदिर आदि कांटोंवाले वृक्षहोयँ तो शत्रुभय करते हैं। आक आदि दूधवाले वृक्ष धनका नाशकरतेहैं। आम्र आदि फलनेवालेवृक्ष सन्तान का क्षय करतेहैं। इन वृक्षोंका काष्ठभी घरमें न लगावै ८६ जो घरके समीप ये वृक्षहोयँ औ इनको काटै नहीं तो इनकेसाथ और शुभवृक्ष लगादेवै। नागकेसर अशोक निम्ब बकुल (मौलसिरी) पनस (कटहर) शमी (जांट) साल ये वृक्ष शुभहैं ८७॥

शस्तौषधिद्रुमलतामधुरासुगन्धा स्निग्धासमानसुषिराचमहीन राणाम् ॥ अप्यध्वनिश्रमविनोदमुपागतानां धत्तेश्रियंकिमुतशाश्वतमन्दिरेषु ८८ ॥

उत्तम ओषधीवृक्ष औ लताओंकरके युक्त मीठी सुगन्धवाली चिकनीसमान औ छिद्रोंसे रहित ऐसी भूमि मार्ग में चलनेवाले पुरुष जो श्रम दूरकरने के लिये क्षणमात्र उसमें बैठजावें उनको भी लक्ष्मी देती हैं फिर जिनके घरही ऐसी भूमिमें बने हैं औ वे पुरुषनित्य उनमें रहते हैं उनको लक्ष्मी प्राप्तहोना कौन बड़ी बात है ८८ ॥

सचिवालयेऽर्थनाशोधूर्तगृहेसुतवधःसमीपस्थे ॥ उद्वेगोदेवकुले चतुष्पथेभवतिचाकीर्त्तिः ८९ चैत्येभयंग्रहकृतंवल्मीकश्वभ्रसंकुले विपदः ॥ गर्त्तायांतुपिपासाकूर्माकारेधनविनाशः ९० ॥

घरके समीप राजाके मंत्रीका घरहोय तो धनकानाश होताहै। धूर्त अर्थात् दूसरों के ठगनेवाले का घर समीपहोय तो पुत्रमरण देवताकामन्दिर समीप होय तो उद्वेग अर्थात् चित्तको खेदरहै। चतुष्पथ (चौरस्ता) समीपहोय तो अकीर्त्तिहोय ८९ चैत्य अर्थात् प्रधानवृक्ष घरके समीपहोय तो घरके स्वामी को ग्रहोंका भयरहै। सर्पकी बांबी औ गढ़ोंकरके युक्त भूमि घरके समीप होय तो विपत्तिहोयँ। घरकेसमीप गढ़ाहोय तो प्यासका रोगहोय औ कछुआ के समान आकारकी भूमि घरके समीपहोय तो घरके स्वामी के धनका नाश होताहै ९० ॥

उदगादिप्लवमिष्टंविप्रादीनांप्रदक्षिणेनैव ॥
विप्रःसर्वत्रवसेदनुवर्णमथेष्टमन्येषाम् ९१ ॥

उदक्प्लव अर्थात् जिस भूमिका झुकाव उत्तरकीओरहो वह भूमि ब्राह्मणों केलिये शुभहै इसीप्रकार पूर्वप्लव दक्षिणप्लव औ पश्चिमप्लव भूमिक्रमसे क्षत्रिय वैश्य औ शूद्रों के लिये शुभ होती है। ब्राह्मण सब प्रकारकी भूमिमें बसे उसका चाहे जिस दिशामें प्लवहो। और वर्णोंके लिये अनुवर्ण भूमि शुभहै अर्थात् पूर्वप्लव दक्षिणप्लव औ पश्चिमप्लव क्षत्रियोंको दक्षिणप्लव औ पश्चिम प्लव वैश्योंको औ केवल पश्चिमप्लव शूद्रोंको शुभहै ९१ ॥

गृहमध्येहस्तमितंखात्वापरिपूरितंपुनःश्वभ्रम् ॥
यद्यूनमनिष्टंतत्समेसमंधन्यमधिकंयत् ९२ ॥

घरके बीच एकहाथ चौड़ा औ एकहाथ गहरा गोल गढ़ाखोदै पीछे उसको उसीकी मिट्टी से भरे जो गढ़ा भरनेमें मिट्टी न्यून होजाय तो वह घर अशुभ

होताहै। ठीकठीक गढ़ाभरजाय तो सम अर्थात् न शुभ औ न अशुभ होताहै औ जो गढ़ाभर जाय औ मिट्टी वचभी रहै वह घर सबभांति शुभहोताहै ९२॥

श्वभ्रमथवाऽम्बुपूर्णंपदशतमित्वागतस्ययदिनोनम्॥
तद्धन्यंयच्चभवेत्पलान्यपांस्याढकंचतुःषष्टिः ९३॥

पूर्वोक्तरीति से गढ़ाखोदकर उसमें जल भरकर सौ पद (कदम) पर्यन्त जाकर लौटआवे इतने काल में जो गढ़ेमें जल कुछ भी न घटे वह भूमि शुभ होती है। औ जहांकी धूलिसे आढकको भरकर फिर तोलैं औ वह धूलि चौंसठ पलहोय तो वह भूमिभी शुभहै। अन्न मापनेका एक काष्ठका पात्र जिसमें अनुमान चारसेरके लगभग अन्न आताहै उसको आढक कहते हैं। चालीस मासेका पल होताहै ९३॥

आमेवामृत्पात्रेश्वभ्रस्थेदीपवर्तिरभ्यधिकम्॥
ज्वलतिदिशियस्यशस्तासाभूमिस्तस्यवर्णस्य ९४॥

मिट्टी के कच्चेपात्रमें चारवत्ती डाल उन वत्तियों में ब्राह्मण आदि चार वर्णोंकी कल्पनाकर दीपकजलाय गढ़े में रक्खै। जिस वर्णकी दिशामें वत्ती बहुत कालतक जलतीरहै वह भूमि उसवर्णको शुभहै ९४॥

श्वभ्रोषितंनकुसुमंयस्मिन्प्रम्लायतेऽनुवर्णसमम्॥
नतस्यभवतिशुभदंयस्यचयस्मिन्मनोरमते ९५॥

ब्राह्मण आदि वर्णके रंगके समान अर्थात् श्वेत रक्त पीत औ कृष्णरंगके चार फूललेकर गढ़ेमें सायंकालको रक्खै औ दूसरे दिन देखे जिसवर्ण का फूल न कुम्हलाया होय वह भूमि उसवर्ण के लिये शुभहै। अथवा जिसभूमिमें अपना मनलगै वह भूमि शुभहै उसमें और कुछ विचार न करै ९५॥

सितरक्तपीतकृष्णाविप्रादीनांप्रशस्यतेभूमिः॥ गन्धश्चभवति यस्याघृतरुधिरान्नाद्यमद्यसमः ९६ कुशयुक्ताशरबहुलादूर्वाकाशा वृताक्रमणमह्नी॥ अनुवर्णंवृद्धिकरीमधुरकषायाम्लकटुकाच ९७॥

ब्राह्मण आदि चारों वर्णों के लिये क्रमसे श्वेत रक्त पीत औ कृष्णवर्णकी भूमिशुभहै। जिस भूमिमें घृत रुधिर अन्न आदि औमद्यके समान गंधहोय वह ब्राह्मण आदि वर्णों के लिये क्रमसे शुभ है ९६ जिसभूमिमें कुशा शर दूव औ कांस बहुत होय वह ब्राह्मण आदि वर्णोंके लिये क्रमसे शुभहै। औ जिस भूमिकी मृत्तिका मीठी कसैली खट्टी औ कड़वी होय वह भूमि क्रम करके ब्राह्मण आदि चार वर्णों के लिये शुभहोती है ९७॥

कृष्टांप्ररूढबीजांगोऽध्युषितांब्राह्मणैःप्रशस्तांच॥ गत्वामहीं..ह

पतिःकालेसांवत्सरोद्दिष्टे ९८ भक्ष्यैर्नानाकारैर्दध्यक्षतसुरभिकुसुमधूपैश्च ॥ दैवतपूजांकृत्वास्थपतीनभ्यर्च्यविप्रांश्च ९९ विप्रःस्पृष्ट्वा शीर्षंवक्षश्चक्षत्रियोविशश्चोरू ॥ शूद्रःपादौस्पृष्ट्वाकुर्याद्रेखांगृहारम्भे १०० ॥

जिस भूमिमें घर बनानाहोय पहिले वहभूमि हलसे जोतीजाय फिर उस में बीजबोये जायँ वेजब पकचुकें उसके अनन्तर एकरात्रि उसभूमिमें गौबैठें औ ब्राह्मण उस भूमिकी प्रशंसाकरें ऐसी भूमिमें घर बनानेकी इच्छावाला पुरुष ज्योतिषीके बताये मुहूर्त पर जाकर अनेक प्रकार के लड्डू अपूप आदि भक्ष्य दही अक्षत सुगन्ध युक्त पुष्प औ धूपकरके क्षेत्रपाल आदि देवताओं का पूजनकर स्थपति (कारीगर) औ ब्राह्मणों का भी पूजनकर गृहारंभकी रेखा करै ९८ । ९९ रेखा करनेके समय ब्राह्मण अपनेशिरको क्षत्रिय छातीको वैश्य ऊरुको औ शूद्र पैरोंको स्पर्शकरके रेखाकरै १०० ॥

अंगुष्ठकेनकुर्यान्मध्यांगुल्याथवाप्रदेशिन्या ॥ कनकमणिरजतमुक्तादधिफलकुसुमाक्षतैश्चशुभम् १०१ शस्त्रेणशस्त्रमृत्युर्बन्धोलोहेनभस्मनाऽग्निभयम् ॥ तस्करभयंतृणेनचकाष्ठोल्लिखिताचराजभयम् १०२ वक्रापादालिखिताशस्त्रभयक्लेशदाविरूपाच ॥ चर्माऽङ्गारास्थिकृतादन्तेनचकर्तुरशिवाय १०३ वैरमपसव्यलिखिताप्रदक्षिणेसम्पदोविनिर्देश्याः॥ वाचःपरुषानिष्ठीवितंक्षुतंचाशुभंकथितम् १०४॥

गृहारंभमें जो गृहपति अंगुष्ठ मध्यमाप्रदेशिनी (अंगुष्ठके समीपकी अंगुली) सुवर्ण मणि चांदी मोतीदही फल पुष्प अक्षत इनमें से किसी करके रेखाकरै तो शुभहोताहै १०१ शस्त्रकरके रेखाकरै तो शस्त्र करकेही गृहस्वामी का मृत्यु होय लोहकरके करै तो बन्धन भस्म करके करै तो अग्नि भय तृण करके करै तो चोरभय औ काष्ठ करके गृहा रंभमें रेखाकरै तो राजभय होताहै १०२ टेढ़ी पैर से खैंचीहुई अथवा बुरेरूपकी रेखाहोय तो शत्रु भय औ क्लेश देती है । चर्म कोयला हाड़ औ दांत करके करीहुई रेखा गृहस्वामी को अशुभकरतीहै १०३ अपसव्य अर्थात् जो रेखा दहिनीओरसे बाईंओरको खैंचीजाय वह वैर करती है । औप्रदक्षिण अर्थात् बाईं ओर से दहिनी ओर रेखा खैंचीजाय तो संपत्ति होती है । गृहारंभके समय कोई कठोर वचन बोले थूकै अथवा छींकै तो अशुभ कहाहै १०४ ॥

अर्धनिचितंकृतंवाप्रविशन्स्थपतिर्गृहनिमित्तानि ॥ अवलोकयेद्गृहपतिःक्वसंस्थितःस्पृशतिकिंचांगम् १०५ रविदीप्तोयदिशकु

ऽस्तस्मिन्कालेविरौतिपरुषरवः ॥ संस्पृष्टांगसमानंतस्मिन्देशे ऽस्थिनिर्देश्यम् १०६ ॥

अथवने अथवा सम्पूर्ण वनेघरमें प्रवेश करताहुआ स्थपति (कारीगर) शुभ अशुभ चिह्नदेखै। यहदेखै कि घरका स्वामी वास्तु पुरुषके किसअंगपर स्थित है औ अपने किस अंगको स्पर्श कररहा है १०५ उससमय सूर्यके वश जो दीप्तदिशा उसमें स्थित पक्षी रूखाशब्द बोलताहोय तो जिस स्थानपर गृहपति स्थित है वहां नीचे हड्डीगडी है औ हड्डी भी उस अंगकी है जो अंगगृहपतिने उससमय स्पर्शकररक्खाहै यहजानै ॥ उदयके समय सूर्य पूर्व दिशामें रहताहै फिर दिनरातके आठ पहरों में क्रमसे एक २ प्रहर आठोंदिशाओं में सूर्य गमन करताहै। जिसदिशाओंको सूर्यछोडकर आयाहो वहदिशा अंगारिणी जिसमें स्थितहोय वह दीप्ता औ जिसमें जानेवालाहो वह धूमिता दिशा होती हैं। इनतीनोंको छोड शेष पांचदिशा शांता होती हैं १०६ ॥

शकुनसमयेऽथवान्येहस्त्यश्वश्वादयोऽनुवाशंते ॥
नरसभवमस्थितस्मिंस्तदंगसंभूतमेवेति १०७ ॥

अथवा शकुन देखने के समय दीप्तदिशाकी ओर मुख करके हाथी घोड़ा कुत्ता आदि जीव शब्द करें तो जहां गृहपति स्थितहै। उस स्थानमें उनजीवों के उसी अंगकी हड्डीजाने जो अंगगृहस्वामी ने स्पर्शकररक्खाहै १०७ ॥

सूत्रेप्रसार्यमाणेगर्दभरावोऽस्थिशल्यमाचष्टे ॥
श्वसृगाललंघितेवासूत्रेशल्यंविनिर्देश्यम् १०८ ॥

सूत्र पसारने के समय गर्दभ बोले तो भी अस्थिशल्य होता है अर्थात् गृहस्वामी जहां बैठाहो उसके नीचे हड्डी गड़ी होती है। जो सूत्रको श्वान अथवा सृगाल (सियार) लंघनकर जाय तोभी उसस्थानमें शल्यजानै १०८॥

दिशिशांतायांशकुनोमधुरविरावीयदातदावाच्यः ॥
अर्थस्तस्मिन्स्थानेगृहेश्वराधिष्ठितेऽगेवा १०९ ॥

जो उससमय शांतदिशाकी ओर मुख करके पक्षी मधुर शब्दबोलै तो जहां वह पक्षी बैठाहै उसस्थानमें अथवा घरका स्वामी वास्तु पुरुषके जिस अंगपर बैठाहै उसमेंधन कहनाचाहिये अर्थात् वहां भूमिमें द्रव्यगड़ा जानै१०९

सूत्रच्छेदेमृत्युःकीलेचावाङ्मुखेमहान्रोगः ॥ गृहनाथस्थपतीनांस्मृतिलोपेमृत्युरादेश्यः ११०स्कंधाच्च्युतेशिरोरुक्कुलोपसर्गोऽपवर्जितेकुम्भे ॥ भग्नेऽपिचकर्मिवधश्च्युतेकराद्गृहपतेर्मृत्युः १११

पसारने के समय सूत्रटूटजाय तो गृहस्वामी का मृत्युहोताहै। [illegible]

समय कीलका मुखनीचे को होजाय तो बड़ारोग होय गृहस्वामी औ स्थपति (कारीगर) की स्मृति अर्थात् स्मरणशक्ति जातीरहै तो उनका मृत्यु कहना चाहिये ११० जलका कलश लानेके समय कंधेसे गिरजाय तो गृहस्वामीको शिरका रोगहोय जो वह कलशगिरकर औंधा होजाय तो गृहस्वामीके कुलको उपद्रव होय। फूटजाय तो कर्म्मकरों (मज़दूर) का मृत्युहोय। औ हाथसे कलश छूटपड़े तो गृहस्वामीका मृत्युहोताहै १११ ॥

दक्षिणपूर्वेकोणेकृत्वापूजांशिलांन्यसेत्प्रथमाम् ॥ शेषाःप्रदक्षिणेनस्तम्भाश्चैवंसमुत्थाप्याः ११२ छत्रस्रगम्बरयुतःकृतधूपविलेपनःसमुत्थाप्यः ॥ स्तम्भस्तथैवकार्योद्वारोच्छ्रायःप्रयत्नेन ११३ ॥

अग्निकोणमें पूजा करके पहिली शिलास्थापनकरै पीछे और शिला भी प्रदक्षिण क्रमसे स्थापनकरै। इसीभांति स्तंभभी खड़े करने चाहिये ११२ स्तंभको छत्र पुष्पमाला औ भस्मकरके भूषितकर गंध धूपआदि से उसका पूजनकर खड़ाकरै। इसीप्रकार द्वार (चौकठ) कोभी यत्नपूर्वकखड़ा करना चाहिये ११३ ॥

विहगादिभिरवलीनैराकम्पितपतितदुस्थितैश्चतथा ॥
शक्रध्वजसदृशफलन्तदेवतस्मिन्विनिर्दिष्टम् ११४ ॥

स्तंभ अथवा द्वारके ऊपर पक्षीआदि बैठे। स्तंभ अथवा द्वारखड़ेकरनेके समय कांपैं गिरजायं अथवा ठीकखड़े न होयं तो उनका फल इन्द्रध्वज के फलके समानजानै अर्थात् इन्द्रध्वजाध्यायमें जो शुभाशुभफल कहा है वही यहां भी जानै ११४ ॥

प्रागुत्तरोन्नतेधनसुतक्षयःसुतवधश्चदुर्गंधे ॥ वक्रेबन्धुविनाशोनसंतिगर्भाश्चदिङ्मूढे ११५ इच्छेद्यदिगृहवृद्धिन्ततःसमन्ताद्विवर्धयेत्तुल्यम् ॥ एकोद्देशेदोषःप्रागथवाप्युत्तरेकुर्यात् ११६ ॥

जो वास्तु अथवा उत्तर दिशामें ऊंचाहोय तो धन औ पुत्रोंका क्षयहोता है। दुर्गन्धयुत वास्तुहोय तो पुत्रमरण टेढ़ा वास्तुहोय तो बन्धुनाश। औदिङ्मूढ अर्थात् जिसमें दिग्विभाग न जानाजाय ऐसा वास्तुहोय तो उसमें रहनेवाली स्त्रियोंको गर्भ न होय ११५ जोघरकी वृद्धिचाहै तो चारोंओर वास्तु को तुल्यबढ़ावै न्यून अधिक नबढ़ावै। जो वास्तुके एकओर दोषहोय अर्थात् बढ़ानाहोय तो उसको पूर्व अथवा उत्तर में बढ़ावै ११६ ॥

प्राग्भवतिमित्रवैरंमृत्युभयंदक्षिणेनयदिवृद्धिः ॥
अर्थविनाशःपश्चादुदग्विवृद्धौमनस्तापः ११७ ॥

जो वास्तु पूर्वकी ओर बढ़ाहोय तो मित्रोंके साथवैरहोय। दक्षिणकी ओर बढ़ाहोय तो मृत्युका भय पश्चिमको बढ़ै तो धनका नाश औ उत्तर की ओर वास्तु बढ़ा होय तो चित्तसंताप होताहै॥ पूर्व औ उत्तरमें वास्तु बढ़नेका दोष थोड़ाहै इसीलिये पहिलीआर्यामें लिखाहै कि बढ़ानाहोय तो पूर्व अथवा उत्तरको बढ़ावै ११७॥

ऐशान्यांदेवगृहंमहानसंचापिकार्यमाग्नेय्याम्॥
नैर्ऋत्यांभाण्डोपस्करोऽर्थधान्यानिमारुत्याम् ११८॥

घरके ईशानकोणमें देवता गृह अग्निकोणमें रसोईका घर नैर्ऋत्य कोण में गृहस्थी की सब सामग्री रखनेका घर औ वायुकोणमें धन औ अन्न स्थापन का घर बनावे ११८॥

प्राच्यादिस्थेसलिलेसुतहानिःशिखिभयंरिपुभयंच॥
स्त्रीकलहःस्त्रीदौष्ट्यंनैःस्व्यंवित्तात्मजविवृद्धिः ११९॥

घरसे पूर्व आदि दिशाओं में जल स्थितहोय तो क्रम से पुत्रमरण अग्नि भय शत्रुभय स्त्रियोंमें कलह स्त्रियोंमें दुःशीलता निर्धनता धनवृद्धि औ पुत्र-वृद्धि ये फल होतेहैं ११९॥

खगनिलयभग्नसंशुष्कदग्धदेवालयश्मशानस्थान्॥
क्षीरतरुधवविभीतकनिम्बारणिवर्जितांश्छिन्द्यात् १२०॥

पक्षियोंके जिनमें घोसले होवैं टूटेहुये सूखे जलेहुये देवता के मन्दिर में अथवा श्मशान स्थित ऐसे वृक्षों को औ जिनमें से दूध निकलताहो उनको औ धव बहेरा नींब औ अरलू इन सबको छोड़ और वृक्षोंको घरकेलिये काटै अर्थात् इन वृक्षोंका काष्ठ घरमें न लगावे १२०॥

रात्रौकृतबलिपूजंप्रदक्षिणंछेदयेद्दिवावृक्षम्॥
धन्यमुदक्प्राक्पतनंनग्राह्योऽतोऽन्यथापतितः १२१॥

रात्रिके समय वृक्षका पूजनकर बलि देकर दिनमें प्रदक्षिण क्रमसे ईशान कोणसे लेकर उस वृक्षको काटै। जो वृक्ष कटकर उत्तर अथवा पूर्वदिशा में गिरे वह शुभ होताहै। जो और दिशा में वृक्ष कटकर गिरे उसको ग्रहण न करै अर्थात् उसका काष्ठ घरमें न लगावै १२१॥

छेदोयद्यविकारीततःशुभंदारुतद्गृहोपयिकम्॥ पीतेतुमण्डलेनिर्दिशेत्तरोमध्यगांगोधाम् १२२ मंजिष्ठाभेभेकोनीलेसर्पस्तथाऽरुणेसरटः॥ मुद्गाभेऽश्माकपिलेतुमूषकोऽम्भश्चखड्गाभे १२३

काटने के समय जिस वृक्षका छेद अर्थात् कटने का स्थान विकार [illegible]

होय तो उस वृक्षका काष्ठ घरके लिये शुभ होता है। वृक्षके छेदमें पीलेरंगका मण्डल देखपड़े तो उस वृक्ष के मध्यमें गोधा (गोह) रहती है। यह कहना चाहिये १२२ मंजीठ के समान लाल रंगका मण्डल देखपड़े तो मेंड़क नील रंगका मण्डल होय तो सर्प रक्तवर्णका मण्डल होय तो सरट (गिरगिट) मूंग के रंगका अर्थात् हरा मण्डल देखपड़े तो पत्थर कपिल वर्णका मण्डल होय तो मूषक औ वृक्षके छेद में खड्ग के रंगका मण्डल देखपड़े तो वृक्षके बीच जल है यह कहदेवै १२३ ॥

धान्यगोगुरुहुताशसुराणांनस्वपेद्धुपरिनाप्यनुवंशम् ॥
नोत्तराऽपरशिरानचनग्नोनैवचार्द्रचरणःश्रियमिच्छन् १२४ ॥

लक्ष्मी की इच्छावाला पुरुष अन्न गौ गुरु अग्नि औ देवता इनके ऊपर न सोवै और (रोगाद्यायुंपितृतोहुताशनं इत्यादि) आर्यामें जो पहिले वंशकह आये हैं उनकी लम्बाई के अनुसार शय्या बिछाकर भी शयन न करै। उत्तर अथवा पश्चिमको शिरकरके न सोवै नग्न अर्थात् धोती खोलकर न सोवै औ जलसे भीगेहुये पैर रखकर न सोवै १२४ ॥

भूरिपुष्पनिकरंसतोरणंतोयपूर्णकलशोपशोभितम् ॥
धूपगन्धबलिपूजिताऽमरंब्राह्मणध्वनियुतंविशेद्गृहम् १२५ ॥

इतिश्रीवराहमिहिरकृतौबृहत्संहितायांवास्तुविद्यानाम त्रिपञ्चाशोऽध्यायः ॥ ५३ ॥

बहुत पुष्पोंके समूह करके भूषित तोरण करके युक्त पूर्ण कलशों करके शोभित औ जिसमें धूप गंध बलिआदि करके देवताओंका पूजन हुआ होय औ ब्राह्मण जिसमें वेद ध्वनिकर रहेहोयँ ऐसा जो घर उसमें प्रवेश करै १२५ ॥

श्रीवराहमिहिराचार्यकीबनाईबृहत्संहितामेंवास्तुविद्यानाम तरेपनवांअध्यायसमाप्तहुआ ॥ ५३ ॥

चौवनवांअध्याय ॥

दकार्गल ॥

धर्म्यंयशस्यंचवदाम्यतोऽहंदकार्गलंयेनजलोपलब्धिः ॥
पुंसांयथाऽङ्गेषुशिरास्तथैवक्षितावपिप्रोन्नतनिम्नसंस्थाः १ ॥

वास्तु विद्या के कथन के अनन्तर धर्म औ यशको देनेवाला दकार्गल कहते हैं जिसके जाननेसे भूमिमें स्थित जलका ज्ञान होता है। मनुष्योंके अंग में जिस भांति शिरा अर्थात् नाड़ी स्थित हैं उसी भांति भूमिमें भी कई ऊंची औ कई नीची शिरा हैं ॥ १ ॥

एकेनवर्णेनरसेनचाम्भश्च्युतंनभस्तोवसुधाविशेषात् ॥
नानारसत्वंबहुवर्णतांचगतंपरीक्ष्यंक्षितितुल्यमेव २ ॥

आकाशसे वर्षामें सवजल एकही रंग औ एकही स्वादका गिरता है वही भूमिके विशेषसे अनेकरंग औ स्वादका होजाताहै उसकी परीक्षा भूमिके तुल्यही करनी चाहिये अर्थात् जैसी भूमिहोगी वैसाही जलहोगा २ ॥

पुरुहूताऽनलयमनिर्ऋतिवरुणपवनेन्दुशङ्करादेवाः ॥
विज्ञातव्याःक्रमशःप्राच्यादीनांदिशांपतयः ३ ॥

इन्द्र अग्नि यम निर्ऋति वरुण वायु सोम औ ईशान ये आठ देवता क्रमसे पूर्वआदि आठ दिशाओंके स्वामी हैं ३ ॥

दिक्पतिसंज्ञाश्चशिरानवमीमध्येमहाशिरानाम्नी ॥
एताभ्योऽन्याःशतशोविनिःसृतानामभिःप्रथिताः ४ ॥

इन आठ दिशाओंके स्वामियोंके नामसे आठ शिरा प्रसिद्धहैं जैसा ऐंद्री आग्नेयी याम्या इत्यादि। औ बीचमें एक बड़ीशिरा महाशिराके नामसे प्रसिद्धहै। इनसेअधिक औरभी सैकड़ोंशिरानिकली हैं वेअपने२ नामसेप्रसिद्धहैं ४॥

पातालादूर्ध्वशिराःशुभाश्चतुर्दिक्षुसंस्थितायाश्च ॥
कोणदिगुत्थानशुभाःशिरानिमित्तान्यतोवक्ष्ये ५ ॥

पातालसे जो शिरा सीधी ऊपरको निकलती होय वह औ पूर्व आदि चारों दिशाओं में जो शिरा होयँ वे शुभ होती हैं। औ अग्निकोण आदि चार कोणों में जो शिरा होयँ वे शुभ नहीं होती हैं॥ अव शिरा ज्ञान होनेके चिह्न कहते हैं ५ ॥

यदिवेतसोऽम्बुरहितेदेशेहस्तैस्त्रिभिस्ततःपश्चात् ॥
सार्धेपुरुषेतोयंवहतिशिरापश्चिमातत्र ६ ॥

जो जलहीन देश (जाङ्गल) में वेतस (वेदमजनूं) का पेड़होय तो उस पेड़से पश्चिम तीनहाथपर डेढ़ पुरुष नीचे जलहोताहै औ वहां पश्चिम की शिरा वहती है मनुष्य अपनी भुजा ऊपर खड़ीकरै उतनी लम्बाईको एकपुरुष कहते हैं वह एकसौवीस अंगुल होती है ६ ॥

चिह्नमपिचार्धपुरुषेमण्डूकःपाण्डुरोऽथमृत्पीता ॥
पुटभेदकश्चतस्मिन्पाषाणोभवतितोयमधः ७ ॥

वहां यह चिह्न होताहै कि आधापुरुष खोदनेपर पाण्डुर (कुछश्वेत) रङ्गका मेंड़क निकलताहै फिर पीलेरंगकी मिट्टी निकलती है पीछे परतदार [illegible] निकलताहै उसके नीचे जलहोताहै ७ ॥

जम्ब्वाश्चोदग्घस्तैस्त्रिभिःशिराधोनरद्वयेपूर्वा ॥
मृल्लोहगन्धिकापाण्डुराऽथपुरुषेत्रमण्डूकः ८ ॥

निर्जलदेश में जो जामुनका पेड़होय तो उससे तीनहाथ उत्तर दो पुरुष नीचे पूर्वशिरा होतीहै वहां खोदनेसे लोहके गन्धवाली मिट्टी निकलती है पीछे पाण्डुररंगकी मिट्टी निकलती है औ एक पुरुषनीचे मेंड़क निकलताहै ८ ॥

जम्बूवृक्षस्यप्राक्वल्मीकोयदिभवेत्समीपस्थः ॥ तस्माद्दक्षिण पार्श्वेसलिलंपुरुषद्वयेस्वादु ९ अर्धपुरुषेचमत्स्यःपारावतसन्निभ श्चपाषाणः ॥ मृद्भवतिचात्रनीलादीर्घकालंचवहुतोयम् १० ॥

जामुनके पेड़से पूर्व दिशामें समीपही सर्पकीवांबीहोय तो उस पेड़से तीन हाथ दक्षिण दो पुरुष नीचे मीठाजल होताहै ९ आधा पुरुष खोदनेसे मत्स्य निकलताहै पारावतपक्षी (कबूतर) के रंगका पत्थर निकलताहै । नीलीमि-ट्टी यहांहोती है औ जलभी बहुतहोताहै औ बहुतकाल रहताहै । जहां हाथोंका प्रमाण आचार्य न कहै वहां पूर्वोक्त प्रमाण जानो जैसा यहां प्रमाण नहींकहा इसलिये पूर्वोक्त तीनहाथ समझने चाहिये १० ॥

पश्चादुदुम्बरस्यत्रिभिरेवकरैर्नरद्वयेसार्धे ॥
पुरुषेसितोहिरश्माऽञ्जनोपमोऽधःशिरासुजला ११ ॥

निर्जल देशमें गूलरका पेड़ देखपड़े तो उससे तीन हाथ पश्चिम अढ़ाई पुरुष नीचे शिरा होती है। एक पुरुषनीचे श्वेतसर्प निकलताहै फिर अञ्जन के समान अति कृष्णवर्ण पत्थर निकलता है उसके नीचे सुन्दर जलयुक्त शिरा होती है ११ ॥

उदगर्जुनस्यदृश्योवल्मीकोयदिततोऽर्जुनाद्धस्तैः ॥ त्रिभिरम्बुभव तिपुरुषैस्त्रिभिरर्धसमन्वितैःपश्चात् १२ श्वेतागोधाऽर्धनरेपुरुषेमृद्धू सराततःकृष्णा॥ पीतासितासिकताततोजलंनिर्दिशेदमितम् १३॥

अर्जुनवृक्षसे उत्तर जो वल्मीक (वांबी) देखपड़े तो उस अर्जुनवृक्षसे तीनहाथ पश्चिम साढ़े तीन पुरुष नीचे जल होताहै १२ आधपुरुष खोदनेपर श्वेत रंगकी गोधा (गोह) निकलती है एकपुरुष नीचे धूसररंगकी मृत्तिका निकलतीहै फिर कालीपीली औ श्वेत मृत्तिका बालूरेत से मिलीहुई निक-लती है उसके नीचे बहुतजल कहना चाहिये १३ ॥

वल्मीकोपचितायांनिर्गुण्ड्यांदक्षिणेनकथितकरैः ॥ पुरुषद्वयेसपा देस्वादुजलंभवतिचाशोष्यम् १४ रोहितमत्स्योऽर्धनरेमृत्कपिलापा ण्डुराततःपरतः ॥ सिकतासशर्कराऽथक्रमेणपरतोभवत्यम्भः १५ ॥

वल्मीकयुक्त निर्गुण्डी वृक्ष अर्थात् सिन्धुवार वृक्षहोय तो उससे तीनहाथ दक्षिण सवा दो पुरुष नीचे मीठा औ कभी न सूखनेवाला जलहोताहै १४ आधापुरुष खोदने पर रोहितमत्स्य (रोहूमच्छी) निकलती है फिर क्रमसे कपिल रंगकी मिट्टी पाण्डुरंगकी मिट्टी औ पत्थरके सूक्ष्मकणों से मिलाहुआ बालूरेत निकलताहै उसके नीचे जलहोताहै १५ ॥

पूर्वेणयदिवदर्यावल्मीकोदृश्यतेजलंपश्चात् ॥
पुरुषैस्त्रिभिरादेश्यंश्वेतागृहगोधिकाऽर्धनरे १६ ॥

बदरीवृक्ष (बेर) के पूर्व जो वल्मीकहोय तो उसवृक्षसे तीनहाथ पश्चिम तीन पुरुषनीचे जलकहना चाहिये । आधपुरुष खोदने से श्वेतरंगकी छिप-कली निकलती है १६ ॥

सपलाशाबदरीचेद्दिश्यपरस्यांततोजलंभवति ॥
पुरुषत्रयेसपादेपुरुषेऽत्रचडुण्डुभश्चिह्नम् १७ ॥

निर्जलदेशमें पलाशवृक्षयुक्त बदरीवृक्षहोय तो उससे पश्चिमतीन हाथ पर सवातीन पुरुषनीचे जलहोताहै । यहां एकपुरुष खोदनेपर डुंडुभ अर्थात् एकप्रकारका निर्विषसर्प निकलताहै यही चिह्नहै १७ ॥

बिल्वोदुम्बरयोगेविहायहस्तत्रयंतुयाम्येन ॥
पुरुषैस्त्रिभिरम्बुभवेत्कृष्णोऽर्धनरेचमंडूकः १८ ॥

बिल्वकापेड़ औ गूलरकापेड़ जहांदोनों इकट्ठेहोयँ उनसेतीन हाथ दक्षिण छोड़कर तीनपुरुषनीचे जलहोता है औ आधापुरुष खोदनेसे काले रंगका मेंडक निकलता है १८ ॥

काकोदुम्बरिकायांवल्मीकोदृश्यतेशिरातस्मिन् ॥ पुरुषत्रयेसपादेपश्चिमदिक्स्थावहतिसाच १९ आपाण्डुपीतिकामृद्गोरसवर्णश्चभवतिपाषाणः ॥ पुरुषार्धेकुमुदनिभोदृष्टिपथंमूषकोयाति २० ॥

काकोदुम्बरिका वृक्ष (कठगूलर) के अति समीप वल्मीक होय तो उस वल्मीक के नीचेही सवातीन पुरुष खोदने से पश्चिम बहनेवाली शिरा नि-कलती है १९ पांडु औ पीले रंगकी मृत्तिका निकलती है गोरस (गौकामट्ठा) के समान श्वेतवर्णका पत्थर निकलताहै औ आधे पुरुष नीचे कुमुद पुष्पके समान श्वेत रंगका मूषक देखपड़ता है २० ॥

जलपरिहीनेदेशेवृक्षःकम्पिल्लकोयदादृश्यः ॥ प्राच्यांहस्तत्रितयेवहतिशिरादक्षिणाप्रथमम् २१ मृन्नीलोत्पलवर्णाकापोताचैवदृश्यतेतस्मिन् ॥ हस्तेऽजगन्धिमत्स्योभवतिपयोऽल्पंचसक्षारम् २२ ॥

निर्जलदेशमें कम्पिल्लकवृक्ष देखपड़े तो उसवृक्षसे तीनहाथपूर्वसवातनि पुरुषके नीचे दक्षिण शिरा वहती है २१ पहिले नीलकमलके रंगकी मिट्टी निकलती है फिर कपोत (कबूतर) के रंगकीमिट्टी देख पड़ती है। एक हाथ नीचे मच्छी निकलती हैं जिसमें बकरेकासा दुर्गन्ध आताहै। वहां थोड़ा औ खाराजल निकलताहै २२ ॥

शोणाकतरोरपरोत्तरेशिराद्वौकरावतिक्रम्य ॥
कुमुदानामशिरासापुरुषत्रयवाहिनीभवति २३ ॥

निर्जल देशमें श्योनाक वृक्ष (अरलू) देखपड़े तो उससे दोहाथवायव्य कोणमें जाकर खोदने से तीन पुरुष नीचे शिरा मिलतीहै। उसका नाम कुमुदाहै २३ ॥

आसन्नोवल्मीकेदक्षिणपार्श्वेविभीतकस्ययदि ॥
अध्यर्धेतस्यशिरापुरुषेज्ञेयादिशिप्राच्याम् २४ ॥

विभीतक वृक्ष (वहेड़ा) के समीप दक्षिण ओर वल्मीक होय तो उस वृक्षसे दोहाथ पूर्व डेढ़ पुरुष नीचे शिरा होती है २४ ॥

तस्यैवपश्चिमायांदिशिवल्मीकोयदाभवेद्धस्ते ॥ तत्रोदग्भवति शिराचतुर्भिरर्धाधिकैःपुरुषैः २५ श्वेतोविश्वंभरकःप्रथमेपुरुषेतुकुंकुमाभोऽश्मा ॥ अपरस्यांदिशिचशिरानश्यतिवर्षत्रयेऽतीते २६ ॥

वहेड़े के वृक्षकेही पश्चिम दिशामें वल्मीक होय तो उसवृक्षसे एकहाथ उत्तर साढ़ेचार पुरुष नीचे शिरा होती है २५ पहिले एक पुरुष खोदनेपर श्वेत वर्णका विश्वंभरक (एकप्रकारका जीव) देख पड़ता है। फिर केसरी रंगका पत्थर निकलताहै उसके नीचे पश्चिम दिशाकी शिरा निकलती है। परन्तु तीनवर्षके अनन्तर वह शिरा नष्ट होजाती है। अर्थात् जल सूख जाताहै २६॥

सकुशःसितऐशान्यांवल्मीकोयत्रकोविदारस्य ॥ मध्येतयोर्नरैरर्धपंचमैस्तोयमक्षोभ्यम् २७ प्रथमेपुरुषेभुजगःकमलोदरसन्निभोमहीरक्ता ॥ कुरुविन्दःपाषाणश्चिह्नान्येतानिवाच्यानि २८ ॥

कोविदार वृक्ष (सप्तपर्ण) के ईशानकोणमें कुश करके युक्त श्वेत रंगकी मिट्टीका वल्मीक होय वहां कोविदार वृक्ष औ वल्मीकके मध्यमें साढ़े चार पुरुष नीचे वहुत जल होताहै २७ पहिले पुरुषमें कमल पुष्पके मध्यभाग के समान रंगका सर्प निकलताहै। लालवर्णकी भूमि आती हैं पीछे कुरुविन्द नामक पत्थर निकलताहै ये चिह्न कहने चाहिये २८ ॥

यदिभवतिसप्तपर्णोवल्मीकवृतस्तदुत्तरेतोयम्॥ वाच्यंपुरुषैःपंच

अत्रापिभवन्तिचिह्नानि २९ पुरुषार्धेमण्डूकोहरितोहरितालस
न्निनाभूश्च ॥ पाषाणोऽञ्जनिकाशःसौम्याचशिराशुभाऽम्बुवहा ३०॥

निर्जल देशमें वल्मीकयुक्त सप्तपर्ण वृक्ष होय तो उससे एकहाथ उत्तर पांच पुरुष नीचे जल कहना चाहिये २९ यहांभी चिह्न होते हैं कि आध पुरुष खोदनेपर हरामेड़क निकलताहै । पीछे हरितालके तुल्य पीलेरंग की भूमि निकलती है फिर मेघके तुल्य कृष्णवर्ण पत्थर मिलताहै इन सबके नीचे मीठे जलको वहनेवाली उत्तर शिरा होती है ३० ॥

सर्वेषांवृक्षाणामधःस्थितोदर्दुरोयदादृश्यः ॥ तस्माद्धस्तेतोयंचतु
र्भिरर्धाधिकैःपुरुषैः ३१ पुरुषेतुभवतिनकुलोनीलामृत्पीतिकाततः
श्वेता ॥ दर्दुरसमानरूपःपाषाणोदृश्यतेचात्र ३२ ॥

चाहे जिस वृक्ष के नीचे बैठा हुआ मेड़क देखपड़े उस वृक्षसे एक हाथ उत्तर साढ़ेचार पुरुष नीचे जल होताहै ३१ । एक पुरुष नीचे नकुल (न्योल) निकलता है फिर क्रमसे नीली पीली औ श्वेत मिट्टी निकलती है पीछे मेड़कके समान रंगका पाषाण देख पड़ता है ३२ ॥

यद्यहिनिलयोदृश्योदक्षिणतःसंस्थितःकरंजस्य ॥ हस्तद्वयेतुयाम्येपुरुषत्रितयेशिरासार्धे ३३ कच्छपकःपुरुषार्धेप्रथमंचोद्भिद्यतेशि
रापूर्वा ॥ उदगन्यास्वादुजलाहरितोऽश्माऽधस्ततस्तोयम् ३४ ॥

जो करंजवृक्ष (कंजा) के दक्षिण वल्मीक देखपड़े तो उस वृक्ष से दो हाथ दक्षिण साढ़ेतीन पुरुष नीचे शिरा होती है ३३ । आध पुरुष नीचे कछुआ निकलता है फिर पहिले पूर्वकी शिरासे जल निकलताहै । दूसरीस्वादु जल करके युक्त उत्तर शिरा वहतीहै पहिले हरे रंगका पत्थर निकलताहै.उस के नीचे जल होता है ३४ ॥

उत्तरतश्चमधूकादहिनिलयःपश्चिमेतरोस्तोयम् ॥ परिहृत्यपंच
हस्तानर्धाष्टमपौरुषेप्रथमम् ३५ अहिराजःपुरुषेऽस्मिन्धूम्राधात्री
कुलत्थवर्णोऽश्मा ॥ माहेन्द्रीभवतिशिरावहतिसफेनंसदातोयम् ३६॥

महुएके वृक्षसे उत्तर वल्मीक होय तो उसवृक्षसे पश्चिम पांचहाथ छोड़ कर साढ़सात पुरुष नीचे जल होताहै ३५ पहिला पुरुष खोदनेसे बड़ा सर्प देख पड़ता है धूम्रवर्ण की भूमि निकलतीहै फिर कुलथीके रंगका पत्थर निकलताहै पीछे पूर्वशिरा निकलतीहै जिसमें सदाफेनयुक्त जलवहताहै ३६ ॥

वल्मीकःस्निग्धोदक्षिणेनतिलकस्यसकुशादूर्वश्चेत् ॥
पुरुषैःपञ्चभिरम्भोदिशिवारुण्यांशिरापूर्वा ३७ ॥

तिलकवृक्षके दक्षिण कुशा औ दूर्वा करकेयुक्त स्निग्ध वल्मीक होय तो उस वृक्ष से पांच हाथ पश्चिम पांच पुरुष नीचे जल होता है औ पूर्व शिरा बहती है ३७ ॥

सर्पावासःपश्चाद्यदाकदम्बस्यदक्षिणेनजलम् ॥ परतोहस्तत्रितयात्षड्भिःपुरुषैस्तुरीयोनैः ३८ कौबेरीचात्रशिराभवतिजलंलोहगन्धिचाक्षोभ्यम् ॥ कनकनिभोमण्डूकोनरमात्रेमृत्तिकापीता ३९ ॥

कदम्ब वृक्षके पश्चिममें वल्मीक होय तो उस वृक्ष से तीनहाथ दाक्षिण पौनेछः पुरुष नीचे जल होताहै ३८ वहां उत्तर शिरा निकलतीहै जल बहुत होता है परन्तु उसमें लोहका गंध आता है एक पुरुष खोदनेसे सुवर्ण के रंग का मेंड़क निकलता है औ पीली मिट्टी निकलतीहै ३९ ॥

वल्मीकसंवृतोयदितालोवाभवतिनालिकेरोवा ॥
पश्चात्षड्भिर्हस्तैर्नरैश्चतुर्भिःशिरायाम्या ४० ॥

वल्मीकसे घिराहुआ तालका पेड़ अथवा नारियलका पेड़ होय तो उस पेड़से छः हाथ पश्चिम चारपुरुष नीचे दक्षिण शिराहोती है ४० ॥

याम्येनकपित्थस्याऽहिसंश्रयश्चेदुदग्जलंवाच्यम् ॥ सप्तपरित्यज्यकरान्खात्वापुरुषान्जलंपञ्च ४१ कर्बुरकोऽहिपुरुषेकृष्णामृत्पुटभिदपिचपाषाणः॥श्वेतामृत्पश्चिमतःशिराततश्चोत्तराभवति ४२

कैथके पेड़से दक्षिण वल्मीकहोय तो उस वृक्षसे सातहाथ उत्तर छोड़कर खोदनेसे पांचपुरुष नीचे जलमिलता है ४१ एक पुरुष नीचे चित्रवर्णका सर्प निकलता है कालीमिट्टी निकलती है परतदार पत्थर निकलता है फिर श्वेत मृत्तिका निकलतीहै पीछे उत्तरशिरा मिलती है ४२

अश्मन्तकस्यवामेवदरीवादृश्यतेऽहिनिलयोवा ॥ षड्भिरुदक्तस्यकरैःसार्धेपुरुषत्रयेतोयम् ४३ कूर्मःप्रथमेपुरुषेपाषाणोधूसरःससिकतामृत् ॥ आदौशिराचयाम्यापूर्वोत्तरतोद्वितीयाच ४४ ॥

अश्मन्तक वृक्ष के वाईओर वेरकापेड़ होय अथवा वल्मीक होय तो उस अश्मन्तक वृक्षके छःहाथ उत्तर साढ़ेतीन पुरुष नीचे जलहोता है ४३ पहिला पुरुष खोदनेसे कछुआ निकलता है फिर धूसर वर्णका पत्थर औ रेतामिली हुई मिट्टी निकलती है फिर पहिले दक्षिणशिरा निकलती है औ पीछे ईशान कोणकी शिरा निकलआती है ४४ ॥

वामेनहरिद्रतरोर्वल्मीकश्चेत्ततोजलंपूर्वे ॥ हस्तत्रितयेपुरुषैःसत्र्यंशैःपञ्चभिर्भवति ४५ नीलोभुजगःपुरुषेमृत्पीतामरकतोपम

श्चाश्मा ॥ कृष्णाभूः प्रथमंवारुणीशिरादक्षिणेनान्या ४६ ॥

हरिद्र वृक्षके बाईंओर वल्मीकहोय तो उस वृक्षसे तीनहाथ पूर्व एकतिहाईसहित पांचपुरुषनीचे जलहोताहै ४५ एकपुरुष नीचे नीलासर्प निकलता है फिर पीली मिट्टी हरेरंगका पत्थर औ कालीभूमि निकलती है फिर पहिले पश्चिमशिरा निकलती है औ दूसरी दक्षिणशिरा निकलती है ४६ ॥

जलपरिहीनेदेशेदृश्यन्तेनूपजानिचिह्नानि ॥
वीरणदूर्वामृदवश्चयत्रतस्मिन्जलंपुरुषे ४७ ॥

निर्जल देशमें जहां बहुत जलवाले देश के चिह्न देखपड़ें औ वीरण (गांडर) औ दूर्वा जहां बहुत कोमलहोवें वहां एकपुरुष नीचे जलहोताहै ४७ ॥

भार्गीत्रिवृतादन्तीसूकरपादीचलक्ष्मणाचैव ॥
नवमालिकाचहस्तद्वयेऽम्बुयाम्येत्रिभिःपुरुषैः ४८ ॥

भार्गी (भारंगी) त्रिवृता (निसोत) दन्ती (दाल्लूणी) सूकरपादी लक्ष्मणा नवमालिका (मालती) ये ओषधी जहांहोवें इनसे दोहाथ दक्षिण तीनपुरुष नीचे जलहोता है ४८ ॥

स्निग्धाःप्रलम्बशाखावामनविटपाद्रुमाःसमीपजलाः ॥
सुषिराजर्जरपत्रारूक्षाश्चजलेनसंत्यक्ताः ४९ ॥

जहां स्निग्ध लम्बी शाखाओंकरके युक्त वामन अर्थात् छोटे२ औ फैलेहुये वृक्षहोवें वहां जल समीपहोता है औ छिद्रयुक्त जर्जर पत्रोंवाले औ रूखे जहां वृक्षहोवें वहां जल नहीं होता ४९ ॥

तिलकाम्रातकवरुणकभल्लातकबिल्वतिन्दुकाऽङ्कोलाः॥पिण्डारशिरीषांऽजनपरूषकावंजुलाऽतिबलाः५० एतेयदिसुस्निग्धैर्वल्मीकैःपरिवृतास्ततस्तोयम्॥हस्तैस्त्रिभिरुत्तरतश्चतुर्भिरर्धेनचनरस्य ५१॥

जहां तिलक अँबाड़ा वरणा भिलावा बेल तेंदू अंकोल पिंडार सिरसअंजन परूषक अशोक औ अतिबला। ५० ये वृक्ष बहुत स्निग्ध वल्मीकोंसे घिरेहोवें वहां इनवृक्षोंसे तीनहाथ उत्तर साढ़ेचारपुरुष नीचे जलहोता है ५१ ॥

अतृणेसतृणायस्मिन्सतृणेतृणवर्जितामहीयत्र ॥
तस्मिन्शिराप्रदिष्टावक्तव्यंवाधनंतस्मिन् ५२ ॥

जिसभूमिमें कहीं तृण न होवें औ बीचमें एकस्थान तृणयुक्त देखपड़े अथवा सबभूमिमें तृणहोवें औ एकस्थान तृणहीनहोय तो उसस्थानमें साढ़ेचार पुरुष नीचे शिरा होतीहै अथवा धन गड़ाहुआहोताहै यहकहना चाहिये ५२ ॥

कण्टक्यकण्टकानांव्यत्यासेऽम्भस्त्रिभिःकरैःपश्चात् ॥

खात्वापुरुषत्रितयंत्रिभागयुक्तंधनंवास्यात् ५३ ॥

जहां कांटेवाले वृक्षोंमें विना कांटेवाला एकवृक्षहोय अथवा विना कांटेवाले वृक्षोंमें एकवृक्ष कांटेवालाहोय तो उसवृक्ष से तीनहाथ पश्चिम एकतिहाई युक्त तीनपुरुष खोदनेसे जल निकलताहै अथवा धन निकलताहै ५३ ॥

नदतिमहीगम्भीरंयस्मिंश्चरणाहताजलंतस्मिन् ॥
सार्धैस्त्रिभिर्मनुष्यैःकौवेरीतत्रचशिरास्यात् ५४ ॥

जहां पैर से ताडन करने करके भूमि में गम्भीर शब्दहोय वहां साढ़ेतीन पुरुषनीचे जलहोताहै औ उत्तरशिरा निकलती है ५४ ॥

वृक्षस्यैकाशाखायदिविनताभवतिपाण्डुरावास्यात् ॥
विज्ञातव्यंशाखातलेजलंत्रिपुरुषंखात्वा ५५ ॥

वृक्षकी एकशाखा भूमिकीओर झुकरहीहोय अथवा पीलीपड़गई होय तो उसशाखाकेनीचे तीनपुरुष खोदनेसे जल निकलताहै ५५ ॥

फलकुसुमविकारोयस्यतस्यपूर्वेशिरात्रिभिर्हस्तैः ॥
भवतिपुरुषैश्चतुर्भिःपाषाणोऽधःक्षितिःपीता ५६ ॥

जिसवृक्ष के फल औ पुष्पों में विकारहोय अर्थात् औरही भांति के होयँ उसवृक्ष से तीनहाथपूर्व चारपुरुषनीचे शिराहोती है। नीचे पत्थर निकलता है औ भूमि पीले रँगकी होतीहै ५६ ॥

यदिकण्टकारिकाकण्टकैर्विनादृश्यतेसितैःकुसुमैः ॥
तस्यास्तलेऽम्बुवाच्यंत्रिभिर्नरैरर्धपुरुषेच ५७ ॥

जहां कटेलीका पेड कांटोंसेहीन औ श्वेत पुष्पों करके युक्त देखपड़े उस के नीचे साढ़ेतीन पुरुष खोदनेसे जल निकलता है ५७ ॥

खर्जूरीद्विशिरस्कायत्रभवेज्जलविवर्जितेदेशे ॥
तस्याःपश्चिमभागेनिर्देश्यंत्रिपुरुषेवारि ५८ ॥

जिस निर्जल देशमें दोशिरवाला खजूरका पेड़होय वहां उसखजूरसे दो हाथ पश्चिम तीनपुरुष नीचे जल कहना चाहिये ५८ ॥

यदिभवतिकर्णिकारःसितकुसुमःस्यात्पलाशवृक्षोवा ॥
सव्येनतत्रहस्तद्वयेऽम्बुपुरुषत्रयेभवति ५९ ॥

श्वेतपुष्प जिसके होयँ ऐसाकर्णिकारवृक्ष अथवा पलाशवृक्षहोय तो उस वृक्षसे दोहाथ दक्षिण तीनपुरुष नीचे जलहोताहै ५९ ॥

ऊष्मायस्यांधात्र्यांधूमोवातत्रवारिनरयुगले ॥
निर्देष्टव्याचशिरामहतातोयप्रवाहेण ६० ॥

जिसभूमिमें वाष्प अथवा धुआंनिकलता देखपड़ै वहां दोपुरुष नीचे बहुत जल बहनेवाली शिरा कहनी चाहिये ६० ॥

यस्मिन्क्षेत्रोद्देशेजातंसस्यंविनाशमुपयाति ॥
स्निग्धमतिपाण्डुरंवामहाशिरानरयुगेतत्र ६१ ॥

जिसखेतमें खेती उत्पन्नहोकर नष्टहोजाय अथवा बहुत स्निग्ध खेतीहोय अथवा खेती उत्पन्नहोकर पीलीपड़जाय वहां दोपुरुष नीचे महाशिरा होती है अर्थात् बहुतही जलहोता है ६१ ॥

मरुदेशेभवतिशिरायथातथातःपरंप्रवक्ष्यामि ॥
ग्रीवाकरभाणामिवभूतलसंस्थाःशिरायान्ति ६२ ॥

मरुदेश (मारवाड़) में जिसभांति शिराहोती है उसको अबहम कहतेहैं। ऊंटकी ग्रीवाकीभांति भूमिमें नीचीऊंची शिराजाती हैं ६२ ॥

पूर्वोत्तरेणपीलोर्यदिवल्मीकोजलंभवतिपश्चात् ॥ उत्तरगमना चशिराविज्ञेयापञ्चभिःपुरुषैः ६३ चिह्नंदर्दुरआदौमृत्कपिलातःपरंभवेद्धरिता ॥ भवतिचपुरुषेऽधोऽश्मातस्यतलेवारिनिर्देश्यम् ६४ ॥

पीलुवृक्ष (जाल) के ईशानकोण में वल्मीक होय तो उस वल्मीक से साढ़ेचारहाथ पश्चिम पांच पुरुष नीचे उत्तर बहनेवाली शिरा होतीहै ६३ वहां खोदने से पहिले पुरुषमें मेंडक निकलता है फिर कपिल औ हरीमिट्टी निकलतीहै औ पत्थर निकलताहै इन सब चिह्नोंके नीचे जलहोताहै ६४ ॥

पीलोरेवप्राच्यांवल्मीकोऽतोऽर्धपञ्चमैर्हस्तैः ॥ दिशियाम्यायांतोयंवक्तव्यंसप्तभिःपुरुषैः ६५ प्रथमेपुरुषेभुजगःसितासितोहस्तमात्रमूर्तिश्च ॥ दक्षिणतोवहतिशिरासक्षारंभूरिपानीयम् ६६ ॥

पीलुवृक्षकेही पूर्व दिशा में वल्मीक होय तो उस वृक्ष से सांढ़ेचारहाथ दक्षिण सात पुरुष नीचे जलकहना चाहिये ६५ पहिले पुरुषमें श्वेत कृष्ण रंगका एक हाथ लम्बा सर्प निकलता है । फिर दक्षिण शिरा बहुतसाखारी जल बहनेवाली निकलती है ६६ ॥

उत्तरतश्चकरीरस्याऽहिगृहंदक्षिणेजलंस्वादु ॥
दशभिःपुरुषैर्ज्ञेयंपुरुषेपीतोत्रमण्डूकः ६७ ॥

करीरवृक्ष (कैर) के उत्तर वल्मीक होय तो उस वृक्षसे साढ़ेचारहाथ दक्षिण दशपुरुष नीचे मीठाजल जानना चाहिये । यहां एक पुरुष खोदने से पीलेरंगका मेंडक निकलता है ६७ ॥

रोहीतकस्यपश्चाद्दहिवासश्चेत्त्रिभिःकरैर्याम्ये ॥

द्वादशपुरुषान्खात्वासक्षारापश्चिमेनशिरा ६८ ॥

रोहीतकवृक्ष (रुहीड़ा) के पश्चिम में वल्मीक होय तो उसवृक्ष से तीन हाथ दक्षिण बारहपुरुष खोदने से खाराजल वहनेवाली पश्चिम शिरा निकलती है ६८

इन्द्रतरोर्वल्मीकःप्राग्दृश्यःपश्चिमेशिराहस्ते ॥
खात्वाचतुर्दशनरान्कपिलागोधानरेप्रथमे ६९ ॥

इन्द्रवृक्ष (अर्जुन) के पूर्व में वल्मीक देखपड़े तो उस वृक्षसे एक हाथ पश्चिम चौदह पुरुष खोदने से शिरानिकलती है। यहां पहिले पुरुषमें कपिलरंगकी गोह देखपड़ती है ६९ ॥

यदिवासुवर्णनाम्नस्तरोर्भवेद्वामतोभुजङ्गगृहम् ॥ हस्तद्वयेतुयाम्येपंचदशनरावसानेऽम्बु ७० क्षारंपयोऽत्रनकुलोर्धमानवेताम्रसन्निभश्चाश्मा ॥ रक्ताचभवतिवसुधावहतिशिरादक्षिणातत्र ७१ ॥

जो सुवर्ण वृक्ष (धतूरा) के वामभाग में वल्मीक होय तो उस वृक्षसे दो हाथ दक्षिण पन्द्रह पुरुष नीचे जल होताहै ७० वह जल खाराहोता है। आधपुरुष नीचे नकुल (न्यौल) निकलता है तांबेके रंगका पत्थर निकलता है। लालरंग की भूमि मिलती है पीछे दक्षिण शिरा वहां वहती है ७१ ॥

वदरीरोहितवृक्षौसम्पृक्तौचेद्विनापिवल्मीकम् ॥ हस्तत्रयेऽम्बुपश्चात्षोडशभिर्मानवैर्भवति ७२ सुरसंजलमादौदक्षिणाशिरावहतिचोत्तरेणान्या ॥ पिष्टनिभःपाषाणोमृच्छ्वेताद्वृश्चिकोऽर्धनरे ७३ ॥

वेर औ रुहीड़ा ये दोनोंवृक्ष जो वल्मीक के विनाभी इकट्ठे देखपड़ें तो उनवृक्षों से तीनहाथ पश्चिम सोलह पुरुष नीचे जलहोताहै ७२ यहां जल बहुत मीठा निकलताहै पहिले दक्षिण शिरा औ पीछे दूसरी उत्तर शिराभी वहतीहै। पिष्ट (आटा) के समान श्वेतरंगका पत्थर निकलताहै। श्वेत मृत्तिका निकलती है औ आधपुरुष नीचे बीछू देखपड़ताहै ७३ ॥

सकरीराचेद्वदरीत्रिभिःकरैःपश्चिमेनतत्राम्भः ॥
अष्टादशभिःपुरुषैरैशानीबहुजलाचशिरा ७४ ॥

जो करीरवृक्ष सहित वेरका पेड़होय तो उनवृक्षों से तीनहाथ पश्चिम अठारह पुरुष खोदने से जल निकलताहै वहां बहुतजल वहनेवाली ईशान शिरा होती है ७४ ॥

पीलुसमेतावदरीहस्तत्रयसंमितेदिशिप्राच्याम् ॥
विंशत्यापुरुषाणामशोष्यमम्भोत्रसक्षारम् ७५ ॥

पीलुवृक्ष करके सहित बेरकावृक्ष होय तो उनसे तीनहाथ पूर्व बीसपुरुष नीचे खाराजल होताहै जो कभी नहीं सूखता ७५॥

ककुभकरीरावेकत्रसंयुतौयत्रककुभविल्वौवा॥
हस्तद्वयेम्बुपश्चान्नरैर्भवेत्पंचविंशत्या ७६॥

जहां अर्जुनवृक्ष औ करीरवृक्ष इकट्ठे होयँ अथवा अर्जुनवृक्ष औ विल्ववृक्ष एकत्रहोयँ तो उनसे दोहाथ पश्चिम पचीसपुरुष नीचे जलहोता है ७६॥

वल्मीकमूर्धनियदादूर्वाचकुशाश्चपाण्डुराःसन्ति॥
कूपोमध्येदेयोजलमत्रनरैरेकविंशत्या ७७॥

जो वल्मीक के ऊपर दूर्वा औ श्वेत रंगके कुशहोयँ तो उस वल्मीक के बीच कुआं खोदने से इक्कीस पुरुष नीचे जल निकलता है ७७॥

भूमिःकदम्बकयुतावल्मीकेयत्रदृश्यतेदूर्वा॥
हस्तद्वयेनयाम्येनरैर्जलम्पंचविंशत्या ७८॥

जहां भूमि कदम्बवृक्षयुक्त होय औ वल्मीक के ऊपर दूर्वा देखपड़े वहां उस कदम्ब वृक्षसे दोहाथ दक्षिण पचीस पुरुष नीचे जल होता है ७८॥

वल्मीकत्रयमध्येरोहीतकपादपोयदाभवति॥ नानावृक्षैःसहितस्त्रिभिर्जलंतत्रवक्तव्यम् ७९ हस्तचतुष्केमध्यात्षोडशभिश्चांगुलैरुदग्वारि॥ चत्वारिंशत्पुरुषान्खात्वाश्माधःशिराभवति ८०॥

तीन वल्मीकों के बीच तीनभांतिके तीनवृक्षों करके युक्त रुहीड़े का वृक्ष होय तो वहांजल कहनाचाहिये ७९ मध्यमें स्थित रुहीड़ेके वृक्षसे चार हाथ औ सोलह अंगुल उत्तर चालीस पुरुष खोदने से पत्थर निकलता है औ उसके नीचे शिरा होतीहै ८०॥

ग्रंथिप्रचुरायस्मिञ्छमीभवेदुत्तरेणवल्मीकः॥
पश्चात्पञ्चकरान्तेशतार्धसंख्यैर्नरैःसलिलम् ८१॥

जहां बहुत गांठोंवाला शमीवृक्ष (जांट) होय औ उसके उत्तर वल्मीक होय तो शमीवृक्षसे पांचहाथ पश्चिम पचास पुरुष नीचेजलहोताहै ८१॥

एकस्थाःपञ्चयदावल्मीकामध्यमोभवेच्छ्वेतः॥
तस्मिञ्छिराप्रदिष्टानरषष्ट्यापञ्चवर्जितया ८२॥

पांच वल्मीक एकस्थानमेंहोय उनमें मध्यका वल्मीक श्वेतहोय तो उस श्वेत वल्मीकमें पचपन पुरुष खोदनेसे जलकी शिरा निकलती है ८२॥

सपलाशायत्रशमीपश्चिमभागेऽम्बुमानवैःषष्ट्या॥
अर्धनरेऽहिःप्रथमंसवालुकापीतमृत्परतः ८३॥

जहां पलाशवृक्षयुक्त शमीवृक्षहोय वहां उन वृक्षोंसे पांचहाथ पश्चिमसाठ पुरुपनीचे जलहोताहै पहिले आधपुरुप खोदने से सर्प निकलताहै पीछे वालू मिलीहुई पीली मिट्टी निकलती है ८३ ॥

वल्मीकेनपरिवृतःश्वेतोरोहीतकोभवेद्यस्मिन् ॥
पूर्वेणहस्तमात्रेसप्तत्यास्तानवैरम्बु ८४ ॥

जहां वल्मीकसे घिराहुआ श्वेतवर्णका रुहीड़ेका वृक्षहोय वहां उसवृक्षसे एक हाथ पूर्व सत्तरपुरुपनीचे जलहोताहै ८४ ॥

श्वेताकण्टकवहुलायत्रशमीदक्षिणेनतत्रपयः ॥
नरपंचकसंयुतयासप्तत्याऽहिर्नरार्धेच ८५ ॥

जहां वहुत कांटों करके युक्त श्वेतशमीवृक्षहोय वहां उस वृक्षसे एक हाथ दक्षिण पचहत्तर पुरुपनीचे जलहोता है औ आधपुरुप खोदने पर सर्प निकलता ८५ ॥

मरुदेशेयच्चिह्नंनजाङ्गलेतैर्जलंविनिर्देश्यम् ॥
जम्बूवेतसपूर्वेयेपुरुषास्तेमरौद्विगुणाः ८६ ॥

येमरुदेशमें जलज्ञान के जो चिह्नकहे इनकरके जांगलदेशमें जलनहीं कहना चाहिये अर्थात् जांगलदेशमें इन चिह्नोंसे जलका ज्ञाननहींहोता जंबू वेतस आदि वृक्षोंके चिह्नसे पहिले जलज्ञान कहा वे चिह्नमरुदेशमें देख पड़ें तो जितने पुरुपनीचे पहिले उन चिह्नों से जलकहा वे पुरुप यहांदूने कहने चाहिये। वहुतहीजल जिसदेशमें हो उसको अनूपकहतेहैं जहां जलका अभावहोय वह मरुस्थल कहाताहै इनदोनोंसे विलक्षण जो देश अर्थात् जहां वहुत जलनहो औ अत्यंत स्वल्पभी जल न होय वह जांगल देशहै इसभांति तीनप्रकार के देशहोते हैं ८६ ॥

जम्बूस्त्रिवृतामूर्वाशिशुमारीशारिवाशिवाश्यामा ॥ वीरुधयोवाराहीज्योतिष्मतीगरुडवेगाच ८७ सूकरिकामाषपर्णीव्याघ्रपदाचेतियद्यहेर्निलये ॥ वल्मीकादुत्तरतस्त्रिभिःकरैस्त्रिपुरुषेतोयम् ८८ ॥

जामन निसोत मूर्वा शिशुमारी शारिवा शिवा श्यामा वाराही ज्योतिष्मती गरुड़वेगा ८७ सूकरिका मापपर्णी औ व्यग्रपदा ये ओपधी जो वल्मीकके ऊपरहोयं तो उसवल्मीकसे तीनहाथ उत्तर तीन पुरुप नीचे जलहोताहै ८८ ॥

एतदनूपेवाच्यंजाङ्गलभूमौतुपञ्चभिःपुरुषैः ॥
एतैरेवनिमित्तैर्मरुदेशेसप्तभिःकथयेत् ८९ ॥

तीनपुरुपनीचे जलहोताहै यह वात अनूपदेशमें कहनी चाहिये। जो ये

चिह्नजांगलदेशमें देखपड़ें तो तीनपुरुषके स्थानमें पांचपुरुषनीचे जलकहे। जो इनही चिह्नोंको मरुस्थलमें देखे तो सातपुरुष नीचे बतावै ८९॥

एकनिभायत्रमहीतृणतरुवल्मीकगुल्मपरिहीना॥
तस्यांयत्रविकारोभवतिधरित्र्यांजलंतत्र ९०॥

जहां एकरंगकी भूमिहोय औ तृण वृक्षवल्मीक औ गुल्म जिसमें न होयँ ऐसी भूमिमें जहां विकार अर्थात् और प्रकारकी भूमिदेखपड़े वहांही पांच पुरुषनीचे जलहोताहै। भूमिमें एकही मूलसे बहुतसी शाखाओं का समूह उत्पन्नहोय उसको गुल्म कहते हैं ९०॥

यत्रस्निग्धानिम्नासवालुकासानुनादिनीवास्यात्॥
तत्राऽर्धपंचमैर्वारिमानवैःपंचभिर्यदिवा ९१॥

जहां स्निग्ध निम्न (नीची) वालूरेतसहित अथवा सानुनादिनी अर्थात् जहां पैर रखनेसे शब्दहोय ऐसी भूमिहोय वहांसाढ़ेचार पुरुषनीचे अथवा पांचपुरुषनीचे जल होताहै ९१॥

स्निग्धतरूणांयाम्येनरैश्चतुर्भिर्जलंप्रभूतंच॥
तरुगहनेपिहिविकृतोयस्तस्मात्तद्वदेववदेत् ९२॥

जहां बहुतसे स्निग्धवृक्षहोयं वहां उन वृक्षों से दक्षिणचार पुरुषनीचे बहुतसा जलकहना चाहिये। औ बहुतसे वृक्षों में एकवृक्ष विकृतहो अर्थात् उसकेफल पुष्प औरही भांतिकेहोयं तो उसवृक्षसे दक्षिणमें भी चारपुरुष नीचेजल होता है ९२॥

नमतेयत्रधरित्रीसार्धेपुरुषेऽम्बुजाङ्गलाऽनूपे॥
कीटावायत्रविनालयेनवहवोम्बुतत्रापि ९३॥

जिसजांगल अथवा अनूपदेश में पैररखने से भूमिदवजावे वहां डेढ़पुरुष नीचे जलहोताहै। औ जहां बहुतसे कीट देखपड़ें औ उनके रहनेका कोई बिल न होय वहांभी डेढ़पुरुष नीचे जलहोताहै ९३॥

उष्णाशीताचमहीशीतोष्णाम्भस्त्रिभिर्नरैःसार्धैः
इन्द्रधनुर्मत्स्योवावल्मीकोवाचतुर्हस्तात् ९४॥

जहां सब भूमि उष्णहोय औ एकदेशमें शीतलहोय वहां अथवा जहां सब भूमि शीतलहोय औ एकदेशमें उष्णहोय वहां साढ़ेतीन पुरुष नीचे जल होना है। इन्द्रधनुष जो सूर्यके किरणोंसे बनताहै मत्स्य अथवा वल्मीक जहां जांगल अथवा अनूपदेशमें देखपड़ै वहां चारहाथ नीचे जलहोताहै ९४॥

वल्मीकानांपङ्क्त्यांयद्येकोऽभ्युच्छ्रितःशिरातदधः॥

शुष्यतिनरोहतेवासस्यंयस्यांचतत्राम्भः ९५ ॥

जहां जांगल अथवा अनूपदेशमें बहुतसे वल्मीकोंकी पंक्तिहोय उसमें एक वल्मीक सबसे ऊंचा होय तो उसऊंचे वल्मीकके नीचे चारहाथ खोदनेसे शिरा निकलती है। औ जहां खेती जमकर सूखजाय अथवा जमैही नहीं वहां भी चारहाथ नीचे जलहोताहै ९५ ॥

न्यग्रोधपलाशोदुम्बरैःसमेतैस्त्रिभिर्जलंतदधः ॥
वटपिप्पलसमवायेतद्वद्वाच्यंशिराचोदक् ९६ ॥

बड़ पीपल औ गूलर ये तीनवृक्ष जहां इकट्ठे होयं वहां इन वृक्षोंकेनीचे तीनहाथ खोदनेसे जल निकलताहै। औ जहां बड़पीपल दोनों इकट्ठे होयं उनकेभी नीचे तीनहाथ खोदनेसे जल निकलता है। इनदोनों स्थानोंमें उत्तर शिरा होतीहै ९६ ॥

आग्नेयेयदिकोणेग्रामस्यपुरस्यवाभवतिकूपः ॥ नित्यंसकरोति भयंदाहंचसमानुषंप्रायः ९७ नैर्ऋतकोणेबालक्षयंचवनिताभयंच वायव्ये ॥ दिक्त्रयमेतत्त्यक्त्वाशेषासुशुभावहाःकूपाः ९८ ॥

ग्रामसे अथवा नगरसे अग्निकोण में कूपहोय तो नित्यभय देताहै औ प्रायःग्राम औ नगरमें अग्नि लगताहै जिसमें मनुष्यभी जलजातेहैं ९७ नैर्ऋत्य कोण में कुआं होय तो बालकोंका क्षय होताहै। वायव्य कोणमें कूपहोय तो स्त्रियोंकोभय होता है। येतीन दिशा छोड़कर शेषपांच दिशाओं में कूप शुभ होते हैं ९८ ॥

सारस्वतेनमुनिनादकार्गलंयत्कृतंतदवलोक्य ॥
आर्याभिःकृतमेतद्वृत्तैरपिमानवंवक्ष्ये ९९ ॥

सारस्वत मुनिने जो दकार्गल कहाहै वह देखकर यह दकार्गल हमने आर्याछंद करकेकहा अब मनुकाकहा दकार्गल भी वृत्तोंकरके कहते हैं ९९ ॥

स्निग्धायतःपादपगुल्मवल्ल्योनिश्छिद्रपत्राश्चततःशिरास्ति ॥ पद्मक्षुरोशीरकुलाःसगुन्द्राःकाशाःकुशावानलिकानलोवा १०० खर्जूरजम्ब्वर्जुनवेतसाःस्युःक्षीराचितावाद्रुमगुल्मवल्ल्यः ॥ छत्रेभनागाः शतपत्रनीपाःस्युर्नक्तमालाश्चससिन्दुवाराः १०१ विभीतकावामद यन्तिकावायत्राऽस्तितस्मिन्पुरुषत्रयेऽम्भः ॥ स्यात्पर्वतस्योपरिपर्वतोऽन्यस्तत्रापिमूलेपुरुषत्रयेऽम्भः १०२ ॥

जिसभूमिमें वृक्ष गुल्म औ वल्ली स्निग्धहोयँ औ छिद्रहीन पत्रों करकेयुक्त होयँ वहां तीन पुरुष नीचे शिराहोती है। अथवा स्थलपद्म गोखरू उशीर

(खस) कुलगुन्द्रु (शर) काश कुश नलिका नल ये तृण १०० औ खजूर जा-मुन अर्जुन वेतस ये वृक्षहोयँ अथवा जहां वृक्ष गुल्म औ वल्ली ऐसेहोयँ जिन में दूध निकले अथवा छत्रा हस्तिकर्णी नागकेसर कमल कदम्ब नक्तमाल सिं-दुवार १०१ बहेड़े औ मदयन्तिका ये जहांहोयँ वहां तीन पुरुषनीचे जलहोता है। औ जहां एकपर्वतके ऊपर दूसरा पर्वतहोय वहां भी ऊपरले पर्वतके मूल में तीनपुरुष नीचे जल होताहै १०२॥

यामौंजकैःकाशकुशैश्चयुक्तानीलाचमृद्यत्रसशर्कराच॥
तस्यांप्रभूतंसुरसंचतोयंकृष्णाथवायत्रचरक्तमृद्वा १०३॥

जो भूमिमूंज काश औ कुशकरके युक्तहो जहां पत्थर की कणिकाओं से मिली नीली मिट्टी होय वहां बहुत औ मीठाजल होताहै जहां काली अथ-वा लाल मिट्टी होय वहांभी बहुत औ मधुर जलहोता है १०३॥

सशर्करातामूमहीकषायंक्षारंधरित्रीकपिलाकरोति॥
आपाण्डुरायांलवणंप्रदिष्टंमृष्टंपयोनीलवसुन्धरायाम्१०४॥

शर्करा अर्थात् पत्थरके कणोंसे मिलीहुई तांबेकेरंगकी भूमिहोय तो उसमें कसैले स्वादका जल निकलताहै। कपिल रंगकी भूमिमें खारापानी होताहै। पांडुररंगकी भूमिमें लवणके स्वादका जल निकलताहै औ नीले रंगकीभूमि में मीठा जल होताहै १०४॥

शाकाश्वकर्णार्जुनविल्वसर्जाःश्रीपर्ण्यरिष्टाधवशिंशपाश्च॥
छिद्रैश्चपर्णैर्द्रुमगुल्मवल्ल्योरूक्षाश्चदूरेऽम्बुनिवेदयन्ति १०५॥

शाक अश्वकर्ण अर्जुन विल्वसर्ज श्रीपर्णी अरिष्ट औ शिंशपा ये वृक्ष जहां छिद्रवाले पत्रोंकरके युक्तहोयं औ जहां वृक्ष गुल्म वल्ली भी छिद्रवाले पत्रों से युक्त औ रूक्षहोय वहां जल बहुत दूर होताहै १०५॥

सूर्याग्निभस्मोष्ट्रखरानुवर्णायानिर्जलासावसुधाप्रदिष्टा॥
रक्तांकुराक्षीरयुताःकरीरारक्ताधराचेज्जलमश्मनोधः १०६॥

जो भूमि सूर्य अग्नि भस्म ऊंट औ गर्दभके रंगकी होय वह भूमि निर्जल होती है। औ जिस लालरंगकी भूमिमें लालरंगके अंकुरोंकरकेयुक्त करीरवृक्ष होयँ औ उन वृक्षोंमें दूध निकलताहोय वहां पत्थरके नीचे जल होताहै १०६॥

वैदूर्यमुद्गाऽम्बुदमेचकाभापाकोन्मुखोदुम्बरसन्निभावा॥
भृङ्गाञ्जनाभाकपिलाथवायाज्ञेयाशिलाभूरिसमीपतोया १०७॥

जो शिला वैदूर्यमणि मुद्ग (मूँग) औ मेघके समान कृष्णवर्ण होय अ-थवा पकेहुये गूलरके फलके समान रंगहोय जो शिला फोड़ने से अञ्जन के

समान अति कृष्णवर्ण निकले अथवा कपिलवर्णहोय उस शिलाके समीपही बहुत जल होताहै १०७ ॥

पारावतक्षौद्रघृतोपमायाक्षौमस्यवस्त्रस्यचतुल्यवर्णा ॥
यासोमवल्ल्याश्चसमानरूपासाप्याशुतोयंकुरुतेक्षयञ्च १०८॥

जो शिला पारावत (कबूतर) शहत घृत अलसी का कपड़ा अथवा सोमवल्ली जो यज्ञमें काम आती है इनके समान रंगकी होय वहभी शीघ्रही अक्षय जल करतीहै १०८ ॥

ताम्रैःसमेतापृषतैर्विचित्रैरापाण्डुभस्मोष्ट्रखरानुरूपा ॥
भृङ्गोपमांगुष्ठिकपुष्पिकावासूर्याग्निवर्णाचशिलावितोया १०९ ॥

जो शिला तांबेके रंगके बिन्दु अथवा विचित्र बिन्दुओं से युक्तहोय पाण्डु रंगकी होय भस्म उष्ट्र गर्दभ भ्रमरके समान रंगकीहोय अंगुष्ठिक वृक्षके पुष्पों के समान नीली औ लालहोय सूर्य अथवा अग्निके समानरंगहोय वह शिला निर्जल जाननी चाहिये १०९ ॥

चन्द्रातपस्फटिकमौक्तिकहेमरूपायाश्चेन्द्रनीलमणिहिंगुलकाऽञ्जनाभाः ॥ सूर्योदयांशुहरितालनिभाश्चयाःस्युस्ताःशोभनामुनिवचोऽत्रचवृत्तमेतत् ११० ॥

चन्द्रकी चांदनी स्फटिक मोती सुवर्ण औ इन्द्रनील मणिके समान वर्ण जो शिलाहोयँ। हिंगुलक (सिंगरफ) के समान बहुत लालरंग की अथवा अञ्जन के समान बहुत काली जो शिलाहोयँ। उदय होते सूर्य के किरणोंके समान बहुतरक्त औ चमकदार होयँ अथवा हरिताल के तुल्य पीले रंग की जो शिलाहोयँ वे शुभ होतीहैं। इस प्रकरणमें आगे जो वृत्त कहतेहैं वह मुनि वचनहै अर्थात् प्रमाणहै ११० ॥

एताह्यभेद्याश्चशिलाःशिवाश्चयक्षैश्चनागैश्चसदाभिजुष्टाः ॥
येषांश्चराष्ट्रेषुभवन्तिराज्ञांतेषामवृष्टिर्नभवेत्कदाचित् १११ ॥

ये जो पहिले शिलाकही ये सब शुभहैं इसलिये अभेद्यहैं अर्थात् इनशिलाओंको तोड़े नहीं। ये शिलासदा यक्ष औ नागों करके सेवित रहती हैं। जिन राजाओंके राज्यमें ऐसी शिलाहोयँ उनकेराज्यमें कभी अवृष्टि नहीं होती १११

भेदंयदानैतिशिलातदानींपलाशकाष्ठैःसहतिन्दुकानाम् ॥
प्रज्वालयित्वाऽनलमग्निवर्णासुधाम्बुसिक्ताप्रविदारमेति ११२ ॥

कूपआदि खोदने के समय शिला निकल आवे औ वह फूट न सके तो उसके ऊपर पलाश औ तेंदू के काष्ठको जलाकर उसशिलाको लालकरलेवे

फिर उसके ऊपर चूने की कली से मिला जल छिड़के तो वह शिला फूट जातीहै ११२ ॥

नीरंशृतंमोक्षकभस्मनावायत्सप्तकृत्वःपरिषेचनंतत् ॥
कार्यंशरक्षारयुतंशिलायाःप्रस्फोटनंवह्निवितापितायाः ११३ ॥

मोक्षक वृक्ष (मरुवा) की भस्म मिलाय जलको औटावै पीछे उसमें शरका खार मिलावै। फिर अग्नि से तपाई हुई शिलाके ऊपर सातवार उस जलको छिडके तो शिला फूटजाती है ११३ ॥

तक्रकांजिकसुराःसकुलत्थायोजितानिवदराणिचतस्मिन् ॥
सप्तरात्रमुषितान्यभितप्तान्दारयन्तिहिशिलांपरिषेकैः ११४ ॥

तक्र (छाछ) कांजी मद्य कुलथी औ वेरके फल इनसबको एक पात्रमें सात रात्रि पर्यंत रक्खै। फिर शिलाको पूर्वोक्त रीतिसे तपाय इनसे वारवार छिडके तो वह शिला फूटजावे ११४ ॥

नैम्बम्पत्रंत्वक्चनालंतिलानांसापामार्गंतिन्दुकंस्याद्गुडूची ॥
गोमूत्रेणस्रावितःक्षारएषांपट्कृत्वोऽतस्तापितोभिद्यतेश्मा ११५ ॥

नींबके पत्ते नींबकी छाल तिलोंका नाल अपामार्ग (आंधीझाड़) तेंदू के फल गिलोय इनकी भस्मको गोमूत्रसे छानलेवे फिर पत्थरको तपाकर छः वार इससे छिड़के तो वह पत्थर फूटजावै ११५ ॥

आर्कंपयोहुडुविषाणमषीसमेतं पारावताऽखुशकृताचयुतंप्रलेपः ॥ टङ्कस्यतैलमथितस्यततोऽस्यपानं पश्चाच्छितस्यनशिलासुभवेद्विघातः ११६ ॥

खड्गलक्षण नाम पचासवें अध्यायमें यह श्लोक आचुकाहै वहां इसका अर्थ देखलो ११६ ॥

क्षारेकदल्यामथितेनयुक्तेदिनोषितेपायितमायसंयत् ॥
सम्यक्छितंचाश्मनिनैतिभंगंनचान्यलोहेष्वपितस्यकौंठ्यम् ११७

इसश्लोककाभी अर्थ खड्गलक्षणाध्यायमेंही देखलेना चाहिये वहां यह आचुका है ११७ ॥

पालीप्रागपरायताऽम्बुसुचिरंधत्तेनयाम्योत्तराकल्लोलैरवदारमेतिमरुतासाप्रायशःप्रेरितैः ॥ तांचेदिच्छतिसारदारुभिरपांसंपातमावारयेत्पाषाणादिभिरेववाप्रतिचयंक्षुण्णंद्विपाश्वादिभिः ११८ ॥

पूर्व पश्चिमको लम्बी पाली (वापी) में जल वहुतकाल रहता है औ दक्षिण उत्तर लम्बी में नहीं ठहरता। क्योंकि पवनसे उठायेहुये वड़ेवड़े तरंगों

करके वह टूटजाती है जो दक्षिण उत्तर लम्बीही पुष्करिणी बनायाचाहे तो जलकी चोटके बचावकेलिये उसके तटोंको दृढकाष्ठसे बांधदेवे अथवा पत्थर ईंट आदिसे चिनवा देवै। औ बनानेके समय उसके प्रत्येक मिट्टी के आसार को घोड़े हाथी आदि से रुंदवाताजाय जिससे वह मिट्टी दबजाय औ जल के धक्केसे टूटैनहीं ११८॥

ककुभवटाम्रप्लक्षकदम्बैःसनिचुलजम्बूवेतसनीपैः॥
कुरवकतालाऽशोकमधूकैर्बकुलविमिश्रैश्चावृततीराम्११९॥

अर्जुन बड़ आंब पाकर कदम्ब निचुल जामुन बेतस नीप अर्थात् एकप्रकारका कदम्ब कुरवक ताल अशोक महुआ औ वकुल इनवृक्षों करके उस पालीके तटोंको आवृतकरै अर्थात् उसके तटपर ये वृक्षलगावै ११९॥

द्वारंचनैर्वाहिकमेकदेशेकार्यंशिलासंचितवारिमार्गम्॥
कोशस्थितंनिर्विवरंकपाटंकृत्वाततःपांशुभिरावपेत्तम् १२०॥

जल निकलनेके लिये एकओर एकमार्ग रक्खे। जिसको पत्थरोंसे बँधवा कर पक्काकरदेवे औ उसमार्गको छिद्ररहित काष्ठ के कपाटों (तखते) से ढक कर ऊपर से मिट्टीकरके दबादेवै १२०॥

अञ्जनमुस्तोशीरैःसराजकोशातकामलकचूर्णैः॥
कतकफलसमायुक्तैर्योगःकूपेप्रदातव्यः १२१॥

अंजन (सुरमा) मोथा खस राजकोशातकी (बड़ीतुरई) आमले औ कतक (निर्मली) इनसबका चूर्णकर कूपमेंडालै १२१॥

कलुषंकटुकंलवणंविरसंसलिलंयदिवाऽशुभगन्धिभवेत्॥
तदनेनभवत्यमलंसुरसंसुसुगन्धिगुणैरपरैश्चयुतम् १२२॥

जो जल गधला कडुआ खारा वेस्वाद अथवा दुर्गन्धयुक्तहोय वह इसयोगके डालनेसे निर्मलमीठा सुगन्धऔरभी कईउत्तमगुणोंकरके युक्तहोजाताहै१२२॥

हस्तेमघाऽनुराधापुष्यधनिष्ठोत्तराणिरोहिण्यः॥
शतभिषगित्यारम्भेकूपानांशस्यतेभगणः १२३॥

हस्त मघा अनुराधा पुष्य धनिष्ठा तीनों उत्तरा रोहिणी औ शतभिषा ये नक्षत्र कूपारम्भ में श्रेष्ठहैं १२३॥

कृत्वावरुणस्यबलिंवटवेतसकीलकंशिरास्थाने॥
कुसुमैर्गन्धैर्धूपैःसंपूज्यनिधापयेत्प्रथमम् १२४॥

वरुणको बलि देकर गन्ध पुष्प धूप आदि से बड़ अथवा बेतसके काष्ठ के कीलका पूजनकर फिर शिराके स्थानमें प्रथम उसकीलको गाड़देवै १२४॥

मेघोद्भवंप्रथममेवमयाप्रदिष्टंज्येष्ठामतीत्यबलदेवमतादिदृष्ट्वा ॥ भौमं दकार्गलमिदंकथितंद्वितीयंसम्यग्वराहमिहिरेणमुनिप्रसादात् १२५

इतिश्रीवराहमिहिरकृतौबृहत्संहितायांदकार्गलं नामचतुःपञ्चाशोऽध्यायः १५४ ॥

ज्येष्ठकी पूर्णिमा होनेके अनन्तर वर्षाऋतु में जो जलकाज्ञान वहमेघ सम्बन्धी दकार्गल है वह तो हमने बलदेवआदि आचार्य्यों के मत देखकर पहिलेही कह दिया अब यह भूमिसम्बन्धी दूसरा दकार्गल मुनियों के प्रसाद से भलीभांति वराह मिहिरने अर्थात् हमने कहा है दकशब्द जलका वाचकहै औ अर्गल रुकावटका नाम है जलकी रुकावट जिस शास्त्रसे जानीजावे वह दकार्गल कहाता है ॥ नारंनीरंभुवनमुदकंजीवनीयंदकंचेतिहलायुधः १२५ ॥

श्रीवराहमिहिराचार्यकीबनाईबृहत्संहितामेंदकार्गल नामचौवनवांअध्यायसमाप्तहुआ ५४ ॥

पचपनवांअध्याय ॥

वृक्षायुर्वेद ॥

प्रान्तच्छायाविनिर्मुक्तानमनोज्ञाजलाशया ॥
यस्मादतोजलप्रान्तेष्वारामान्विनिवेशयेत् १ ॥

वापी कूप तलाव आदि जलाशय जो ओरपास छायासे हीनहोय तो चित्त को आनंदनहींदेते इसलिये जलाशयों के तटोंपर आराम (बगीचे) लगावै १॥

मृद्वीभूःसर्ववृक्षाणांहितातस्यांतिलान्वपेत् ॥
पुष्पितांस्तांश्चमृद्नीयात्कर्मैतत्प्रथमंभुवि २॥

कोमलभूमि सबवृक्षोंकेलिये अच्छी होती हैं। जिस भूमिमें बागलगाना हो पहिले उसमें तिलबोवे जबवे तिलफूलें तब उनका मर्दनकरै यह भूमिमें प्रथम कर्महै २ ॥

अरिष्टाऽशोकपुन्नागशिरीषाःसप्रियङ्गवः ॥
मङ्गल्याःपूर्वमारामेरोपणीयागृहेषुवा ३ ॥

नींब अशोक पुन्नाग शिरीष औ प्रियंगु येवृक्ष शुभहैं इसलिये बागमें अथवा घरमें पहिले ये लगाने चाहिये ३ ॥

पनसाऽशोककदलीजम्बूलकुचदाडिमाः ॥ द्राक्षापालीवताश्चैव बीजपूराऽतिमुक्तकाः ४ एतेद्रुमाःकाण्डरोप्यागोमयेनप्रलेपिताः ॥ मूलच्छेदेऽथवास्कन्धेरोपणीयाःप्रयत्नतः ५ ॥

कटहर अशोक केला जामुन लकुच (बड़हर) दाड़िम दाख पालीवत

विजौरा औ अतिमुक्तक ४ इनवृक्षोंकी शाखा (कलम) लेकर उसको गोवर से लीपकर लगावै अथवा दूसरे वृक्षको मूलसे अथवा डालसे काट उसके ऊपर लगावै ५ ॥

अजातशाखाञ्छिशिरेजातशाखान्हिमागमे ॥
वर्षागमेचसुस्कन्धान्यथादिक्प्रतिरोपयेत् ६ ॥

जिनके शाखा उत्पन्ननहीं हुईहोयँ ऐसेवृक्षोंको एकस्थानसे उठाकर दूसरे स्थानमें अपनीदिशाके बीच शिशिरऋतुमें लगावै। जिनके शाखा होगई होयँ उनको हेमंतमें औ अच्छे २ डालवाले वृक्षोंको वर्षा ऋतुमें रोपणकरै ६ ॥

घृतोशीरतिलक्षौद्रविडङ्गक्षीरगोमयैः ॥
आमूलस्कन्धलिप्तानांसंक्रामणविरोपणम् ७ ॥

घृत खस तिल शहत वायविडंग दूध औ गोवर इनसबको पीस मूलसे लेकर डालतक वृक्षोंको लिप्तकरै पीछे उसको एकस्थानसे उठाकर दूसरे स्थानमें लगावै ७ ॥

शुचिर्भूत्वातरोःपूजांकृत्वास्नानाऽनुलेपनैः ॥
रोपयेद्रोपितश्चैवपत्रैस्तैरेवजायते ८ ॥

पवित्रहो स्नान अनुलेपनकरके वृक्षकीपूजाकर पीछे उसवृक्षको दूसरेस्थान में लगावै तो वहवृक्ष उनही पत्रोंकरकेयुक्त लगजाताहै अर्थात् सूखतानहीं८॥

सायंप्रातश्चघर्मान्तेशीतकालेदिनान्तरे ॥
वर्षासुचभुवःशोषेसेक्तव्यारोपिताद्रुमाः ९ ॥

लगायेहुये वृक्षग्रीष्मऋतुमें सांझसवेरे दोनोंसमय सींचने चाहिये शीत-कालमें एकदिनके अंतरसेसींचे औ वर्षाऋतुमें भूमिसूखनेपर सींचनेचाहियें९॥

जम्बूवेतसवानीरकदम्बोदुम्बराऽर्जुनाः ॥ बीजपूरकमृद्वीकालकुचाश्चसदाडिमाः १० वंजुलोनक्तमालश्चातिलकःपनसस्तथा ॥ तिमिरोम्रातकश्चैवषोडशानूपजाःस्मृताः ११ ॥

जामुन वेतस वानीर कदंब गूलर अर्जुन विजौरा दाख वडहर दाड़िम १० वंजुल नक्तमाल तिलक कटहर तिमिर औ अंबाड़ा ये सोलह वृक्ष बहुत जल वाले देशमें होते हैं ११ ॥

उत्तमंविंशतिर्हस्तामध्यमंषोडशान्तरम् ॥
स्थानात्स्थानान्तरंकार्यंवृक्षाणांद्वादशावरम् १२ ॥

एक वृक्षसे बीसहाथके अंतरपर दूसरा वृक्ष लगायाजाय तो उत्तम सोलह

हाथ अन्तर पर मध्यम औ बारह हाथ के अन्तर पर लगाया जाय तो निकृष्ट होताहै १२ ॥

अभ्यासजातास्तरवःसंस्पृशन्तःपरस्परम् ॥
मिश्रैर्मूलैश्चनफलंसम्यग्यच्छन्तिपीडिताः १३॥

जो वृक्ष बहुत समीप उत्पन्नहोवैं परस्पर स्पर्शकरैं औ जिनकी जड़ मिल जावें वे पीड़ित होतेहैं औ इसीकारण भलीभांति नहीं फलते हैं १३॥

शीतवातातपैरोगोजायतेपाण्डुपत्रता ॥
अवृद्धिश्चप्रवालानांशाखाशोषोरसस्रुतिः १४॥

बहुतशीत पवन औ धूपसे वृक्षों को रोग होजाता है तब उनके पत्ते पीले होजाते हैं अंकुर नहीं बढ़ते डाली सूखती हैं औ रस टपकने लगताहै १४॥

चिकित्सितमथैतेषांशस्त्रेणादौविशोधनम् ॥
विडङ्गघृतपङ्काक्तान्सेचयेत्क्षीरवारिणा १५॥

रोगी वृक्षकी इसभांति चिकित्साकरै कि पहिले उसके जिस अंगको सड़ा सूखा आदि देखै उसको शस्त्रसे काटदेवै फिर वायविडंग घृत औ पंक (कीच) इनको मिलाकर वृक्षोंके लेपकरै पीछे दूधमिले जलसे सींचै १५॥

फलनाशेकुलत्थैश्चमाषैर्मुद्गैस्तिलैर्यवैः ॥
शृतशीतपयःसेकःफलपुष्पाभिवृद्धये १६॥

वृक्षके फल न लगें तो कुलथ उड़द मूँग तिल औ जौ इनको दूधमें डाल कर औटावै पीछे उस दूधको ठण्ढाकर उससे फल औ पुष्पोंकी वृद्धिकेलिये वृक्षको सींचै १६॥

अविकाजशकृच्चूर्णस्याढकेद्वेतिलाढकम् ॥ सक्तुप्रस्थोजलद्रोणो गोमांसतुलयासह १७ सप्तरात्रोषितैरेतैःसेकःकार्योवनस्पतेः॥ वल्ली गुल्मलतानांचफलपुष्पायसर्वदा १८॥

भेड़ औ बकरी की मेंगनका चूर्ण दो आढक तिल एक आढक सत्तू एकप्रस्थ जलएक द्रोण औ गोमांस एकतुला इन सबको एक पात्रमें डाल १७ सात रात्रि रक्खै पीछे फल औ पुष्पोंके लिये इस जलसे वृक्ष बेल गुल्म औ लताओंको सींचै सोलह पलका एक प्रस्थ चार प्रस्थका आढक चार आढकका एक द्रोण औ सौ पलकी एक तुला होती है आठ रत्तीका एक मासा मानै तो चालीस मासेका एक पल होता है १८॥

वासराणिदशदुग्धभावितंबीजमाज्ययुतहस्तयोजितम् ॥ गोम येनबहुशोविरूक्षितंक्रौडमार्गपिशितैश्चधूपितम् १९ मांससूकरव

न्मासमन्वितंरोपितंचपरिकर्मितावनौ ॥ क्षीरसंयुतजलावसेचितंजायतेकुसुमयुक्तमेवतत् २० ॥

चाहे जिस वृक्षके बीजको घृतसे चिकने हाथ करके चुपड़े पीछे उस को दूधमें डालदेवै इसी भांति नित्य दशदिन पर्यंत चिकने हाथ से चुपड़ दूध में डालता जाय पीछे उसको गोवर से बहुत बार रूखाकरै सूकर औ हरिण के मांसका उस बीजको धूपदेवै १९ फिर मांस औ सूकरकी वसा (चर्वी) सहित उस बीजको तिल बोनेसे शुद्धकी हुई भूमिमें बोवै औ दूधयुक्त जलसे सींचै तो उस बीजसे जो वृक्ष उत्पन्न होगा वह फूलों समेत उत्पन्न होगा २० ॥

तिन्तिडीह्यपिकरोतिवल्लरींव्रीहिमाषतिलचूर्णसक्तुभिः ॥
पूतिमांससहितैश्चसेचिताधूपिताचसततंहरिद्रया २१ ॥

इमली के बीज को भी जो अति कठोर होता है धान उड़द तिल इन का चूर्ण सत्तू औ सड़ा हुआ मांस इन सब करके सेचन करै औ हलदी का धूपदेवै तो उस बीजमें भी नये अंकुर निकल आवैं और बीजों के जमनेमें तो संदेह क्या है २१ ॥

कपित्थवल्लीकरणायमूलान्यास्फोतधात्रीधववासिकानाम् ॥ पलाशिनोवेतससूर्यवल्लीश्यामातिमुक्तैःसहिताष्टमूली २२ क्षीरेशृते चाप्यनयासुशीतेतालान्शतंस्थाप्यकपित्थबीजम् ॥ दिनेदिनेशोषितमर्कपादैर्मासंविधिस्त्वेषततोऽधिरोप्यम् २३ हस्तायतंतद्द्विगुणंगभीरंखात्वावटंप्रोक्तजलावपूर्णम् ॥ शुष्कंप्रदग्धंमधुसर्पिषातत्प्रलेपयेद्भस्मसमन्वितेन २४ चूर्णीकृतैर्माषतिलैर्यवैश्चप्रपूरयेन्मृत्तिकयाऽन्तरस्थैः ॥ मत्स्यामिषाऽम्भःसहितंचहन्याद्यावद्घनत्वंसमुपागतंतत् २५ उप्तञ्चबीजंचतुरंगुलाधोमत्स्याऽम्भसामांसजलैश्चसिक्तम् ॥ वल्लीभवत्याशुशुभप्रवाला विस्मापनीमण्डपमावृणोति २६ ॥

कपित्थ (कैथ) के बीजसे बल्ली करना चाहै तो विष्णुक्रांता आंवला धव वांसा पत्रों सहित वेतस औ सूर्य बल्ली (सूर्यमुखी) निसोत औ अतिमुक्तक इन आठोंकी जड़लेवै २२ वेतस के पत्ते भी लेवै इनसवको दूध में डाल औटावै पीछे उस दूधको ठंढाकर उसमें कैथके बीजको डाल दोनों हाथसे सौताल बजायेजावें इतने काल पर्यंत उस दूधमें रक्खै पीछे निकालकर धूपमें सुखालेवै यही विधि नित्य एक महीने पर्यंत करके पीछे उस बीजको बोवै २३ एकहाथ लंबा चोड़ा औ दो हाथ गहरा गढ़ा खोदकर उसको कहेहुये दूधयुक्त

जलसे भरै जल सूखजाय तब उस गढ़ेको अग्निसे जलादेवै औ शहत घृत औ भस्मको मिलाकर उस गढ़ेको लीपै २४ मृत्तिका के अन्तरमें स्थित उड़द तिल औ जौंके चूर्णकरके उस गढ़ेको भरदेवै अर्थात् पहिले चार अंगुल मिट्टी उसमें भर ऊपर उड़द आदि के चूर्ण से भरै फिर मत्स्य मांसयुक्त जलकरके सहित उस गढ़ेको चारोंओर से ठोकै जबतक वह कठिन होजाय २५ पीछे उसमें चार अंगुल नीचे पहिले सिद्ध किया कैथका बीजबोवै औ मत्स्यजल औ मांस जलसे सींचै तो शीघ्रही उत्तम पत्रों करके युक्त वल्ली होजावे औ मंडपको ढकलेवै जिसको देखने से सबको विस्मय होय २६ ॥

शतशोऽङ्कोलसंभूतफलकल्केनभावितम् ॥ एतत्तैलेनवाबीजं श्लेष्मातकफलेनवा २७ वापितंकरकोन्मिश्रमृदितत्क्षणजन्मकम्॥ फलभारानताशाखाभवतीतिकिमद्भुतम् २८ ॥

अंकोल वृक्षके फलके कल्क (गूदे) से अंकोल फलके तेलसे अथवा श्ले-ष्मातक (लसवा) के फलसे अर्थात् उसके कल्क से अथवा तेलसे चाहे जिस वृक्षके बीजको सौभावनादेवै अर्थात् सौवार सिक्तकरै २७ पीछे उसको ओलों से भीगीहुई मिट्टीमें बोवै तो उसीक्षण जमआताहै औ फलोंके भारसे झुकी हुई लता होजाती है इसमें क्या अद्भुतहै अर्थात् अवश्यही होती है २८ ॥

श्लेष्मातकस्यबीजानिनिष्कुलीकृत्यभावयेत्प्राज्ञः ॥ अङ्कोलविज्जलाद्भिश्छायायांसप्तकृत्वैवम् २९ माहिषगोमयघृष्टान्यस्यकरीषेचतानिनिक्षिप्य ॥ करकाजलमृद्योगेन्युप्तान्यह्नाफलकराणि ३० ॥

बुद्धिमानपुरुष लसवेके बीजलेकर उनका छिलका उतारै औ अंकोलफल की विज्जला अर्थात् फलके भीतरका पिच्छिलजल उससे छायामें उनबीजों को सातभावना देवे अर्थात् भावनादेदेकर छायामें सुखाता जावै २९ फिर उन बीजोंको भैंसके गोबरसे घिसकर भैंसके सूखेगोबर के ढेर में रखछोड़ै फिर जब ओलेपड़ैं औ मिट्टी भीजजावै उसओलोंसे भीगीहुई मिट्टीमें उन बीजोंको बोवै तो एकहीदिनमें वृक्षहोकर फलने लगजावै ३० ॥

ध्रुवमृदुमूलविशाखागुरुभंश्रवणस्तथाऽश्विनीहस्तम् ॥
उक्तानिदिव्यदृग्भिःपादपसंरोपणेभानि ३१ ॥

इतिश्रीवराहमिहिरकृतौवृहत्संहितायांवृक्षायुर्वेदो
नामपञ्चपञ्चाशोऽध्यायः ५५ ॥

तीनों उत्तरा रोहिणी मृगशिरा रेवती चित्रा अनुराधा मूल विशाखा पुष्य श्रवण अश्विनी औ हस्त येनक्षत्र दिव्यदृष्टि वाले मुनीश्वरों ने वृक्षलगाने के लिये श्रेष्ठकहे हैं ३१ ॥

श्रीवराहमिहिराचार्यकीवनाईबृहत्संहितामेंवृक्षायुर्वे-
दनामपचपनवांअध्यायसमाप्तहुआ ५५ ॥

छप्पनवांअध्याय ॥

प्रासादलक्षण ॥

कृत्वाप्रभूतंसलिलमारामान्विनिवेश्यच ॥
देवतायतनंकुर्याद्यशोधर्माभिवृद्धये १ ॥

बहुतसा जलकरके अर्थात् जलाशय बनाकरके औउनके तटपर बागलगा कर यश औ धर्मकी वृद्धिकेलिये देवताका मंदिर बनावै १ ॥

इष्टापूर्त्तेनलभ्यन्तेयेलोकास्तान्बुभूषता ॥
देवानामालयःकार्योद्वयमप्यत्रदृश्यते २ ॥

यज्ञादि करना इष्टकहाताहै औ वापीकूप तड़ागआदि बनाना पूर्त कहाता है इष्टापूर्तसे जो उत्तम लोक मिलते हैं उनके पानेकी इच्छावाला पुरुष देव मंदिरबनावै देवमंदिर बनानेकरके इष्ट औ पूर्त दोनोंहीका फल प्राप्तहोताहै २॥

सलिलोद्यानयुक्तेषुकृतेष्वकृतकेषुच ॥
स्थानेष्वेतेषुसान्निध्यमुपगच्छन्तिदेवताः ३ ॥

जल औ उपवन करके युक्त स्थानचाहे किसी के बनाये हुये होयँ चाहेस्वाभाविक बनरहे होयँ उनस्थानों में देवता सान्निध्यको प्राप्तहोते हैं अर्थात् निवास करते हैं ३ ॥

सरःसुनलिनीच्छत्रनिरस्तरविरश्मिषु ॥ हंसांसाक्षिप्तकह्लारवीथीविमलवारिषु ४ हंसकारण्डवक्रौञ्चचक्रवाकविराविषु । पर्यन्तनिचुलच्छायाविश्रान्तजलचारिषु ५ ॥

ऐसे सरोवरों में देवता सदा विहार करते हैं कि जिनमें कमलरूपछत्र करके सूर्यकिरण दूरकिये होयँ हंसपक्षियोंके कंधोंकरके प्रेरित जो श्वेत कमल उनका जोमार्ग उसमें हैं निर्मलजल जिनसरोवरोंमें ४ हंस कारंडव क्रौंच औ चक्रवाक जिनमें शब्दकररहे हैं। औ तटके निचुलवृक्षोंकी छायामें जहांजल केजीव विश्रामकर रहे हैं ५॥

क्रौञ्चकाञ्चीकलापाश्चकलहंसकलस्वनाः ॥ नद्यस्तोयांऽशुका

चक्रशफरीकृतमेखलाः ६ फुल्लतीरद्रुमोत्तंसाःसंगमश्रोणिमण्डलाः॥ पुलिनाभ्युन्नतोरस्याहंसहासाश्चनिम्नगाः ७॥

क्रौंचपक्षीही हैं कांचीकलाप जिनका हंसोंका मधुर स्वरहै शब्दजिनका जलहै वस्त्रजिनका शफरियों (मच्छी) करके बनाईहै मेखला जिनने ६ तटों पर फूलेहुये वृक्षहैं कर्णपूर जिनके दोनदियोंका संगमहै श्रोणिमंडल जिनका तीरके उच्चप्रदेशहैं स्तन जिनके औ हंसही हैं हास्य जिनका ऐसी नदी जहां होयँ वहां देवता रमते हैं ७॥

वनोपान्तनदीशैलनिर्झरोपान्तभूमिषु॥
रमन्तेदेवतानित्यंपुरेषूद्यानवत्सुच ८॥

वनके समीप नदी पर्वत औ झरनोंके समीपकी भूमिमें नित्यदेवता रमते हैं औ उपवनों करके युक्त नगरोंमें भी देवता विहार करते हैं ८॥

भूमयोब्राह्मणादीनांयाःप्रोक्तावास्तुकर्मणि॥
ताएवतेषांशस्यन्तेदेवतायतनेष्वपि ९॥

ब्राह्मणआदि चारवर्णोंको जैसीभूमिपहिले घर बनानेके लिये कहआये हैं वैसीही भूमि उनवर्णोंको देवताके मंदिर बनानेके अर्थ श्रेष्ठ कहीहै ९॥

चतुःषष्टिपदंकार्यंदेवतायतनंसदा॥
द्वारंतुमध्यमंतस्मिन्समदिक्स्थंप्रशस्यते १०॥

देवमंदिरमें सदा चौसठ पदका वास्तु जो पीछे कहआयेहैं करना चाहिये उस देवमंदिरमें मध्यमद्वार समदिशामें स्थितहोय तो श्रेष्ठहै १०॥

योविस्तारोभवेद्यस्याद्विगुणातत्समुन्नतिः॥ उच्छ्रायाद्यस्तृतीयोंऽशस्तेनतुल्याकटिःस्मृता ११ विस्तारार्धंभवेद्गर्भोभित्तयोऽन्याःसमन्ततः॥ गर्भपादेनविस्तीर्णंद्वारंद्विगुणमुच्छ्रितम् १२ उच्छ्रायात्पादविस्तीर्णाशाखातद्वदुदुम्बरः॥ विस्तारपादप्रतिमंबाहुल्यंशाखयोःस्मृतम् १३ त्रिपञ्चसप्तनवभिःशाखाभिस्तत्प्रशस्यते॥ अधःशाखाचतुर्भागेप्रतीहारौनिवेशयेत् १४ शेषंमङ्गल्यविहगश्रीवृक्षस्वस्तिकैर्घटैः॥ मिथुनैःपत्रवल्लीभिःप्रमथैश्चोपशोभयेत् १५ द्वारमानाष्टभागोनाप्रतिमास्यात्सपिण्डिका॥ द्वौभागौप्रतिमातत्रतृतीयांशश्चपिण्डिका १६॥

देवमंदिर का जितना विस्तार होय उससे दूनी उसकी उँचाई होती है। उँचाईकी तिहाई के तुल्य देवमंदिरकी कटिहोती है। सोपान (सीढ़ी) के

ऊपर जहांसे देवगृहका प्रारम्भ होताहै उसको कटि कहते हैं ११ विस्तारका आधागर्भ होताहै शेषआधे विस्तारमें चारोंओरकी भीत बनती हैं गर्भकी चौथाईके तुल्य द्वारका विस्तार औ द्वारके विस्तार से दूनी द्वारकी उँचाई होती है १२ द्वारकी उँचाई की चौथाई के तुल्यशाखा (चौकठकीबाजू) औ उदुम्बर चौकठके ऊपरकेकाष्ठ) की चौड़ाई होती है। शाखाकी चौड़ाई को चौथाई के तुल्य शाखाओं की मोटाई होती है १३ शाखाकी जितनी चौड़ाई कही उसके बीच तीन पांच सात अथवा नौ शाखा होयँ तो द्वार श्रेष्ठहोता है। दोनोंशाखाओंके नीचेके चतुर्थांशमें देवताओं के दोप्रतीहारों की मूर्तिखोदनी चाहिये १४ शाखाओंके शेषतीन चतुर्थांशोंको हंस आदि मंगलदायक पक्षी श्रीवृक्ष (बेल) स्वस्तिक (साथिया) कलश मिथुन (स्त्रीपुरुषकाजोड़ा) पत्र लता औ गणों करके शोभितकरै अर्थात् इनके चित्रखोदै १५ द्वारकी उंचाई के प्रमाणमें उसकाअष्टमांश घटाकर जो शेषरहै वहपिंडिका (देवतास्थापनकी पीठ) सहित देवप्रतिमाकी उंचाई का प्रमाण होताहै अर्थात् उस प्रासादमें पीठसहित उतनी ऊंची प्रतिमा स्थापन करनी चाहिये। उसपीठ सहित प्रतिमाकी उँचाई के तीन भागकर दो भागके तुल्य ऊंची प्रतिमा औ एक भागके तुल्य ऊंची पिंडिका (पीठ) बनानी चाहिये । यहप्रमाण सबप्रासादों के लिये कहा है १६ ॥

मेरुमन्दरकैलासविमानच्छन्दनन्दनाः ॥ समुद्गपद्मगरुडनन्दिवर्धनकुंजराः १७ गुहराजोवृषोहंसःसर्वतोभद्रकोघटः॥सिंहोवृत्तश्चतुष्कोणःषोडशाऽष्टाश्रयस्तथा १८ इत्येतेविंशतिःप्रोक्ताःप्रासादाःसंज्ञयामया ॥ यथोक्तानुक्रमेणैवलक्षणानिवदाम्यतः १९ ॥

मेरु मंदर कैलास विमानच्छंद नंदन समुद्ग पद्म गरुड़ नंदिवर्धन कुंजर १७ गुहराज वृष हंस सर्वतोभद्र घट सिंह वृत्त चतुष्कोण षोडशाश्रि औ अष्टाश्रि १८ ये बीस नाम हमने प्रासादोंके कहे अब नाम क्रमसे इनके लक्षण कहते हैं १९ ॥

तत्रषडश्रिर्मेरुर्द्वादशभौमोविचित्रकुहरश्च ॥
द्वारैर्युतश्चतुर्भिर्द्वात्रिंशद्धस्तविस्तीर्णः २० ॥

छः कोणका मेरुनामक प्रासाद होताहै जिसमें बारह भूमिका (खंड)होतीहै औ अनेक भांतिके कुहर अर्थात् भीतर के गवाक्षोंकरके युक्त होता है। उसमें चारद्वार चारोंदिशाओं में होतेहैं औ बत्तीसहाथ उस प्रासाद का विस्तार होताहै। औ चौसठहाथ उंचाई होती है २० ॥

त्रिंशद्धस्तायामोदशभौमोमन्दरःशिखरयुक्तः ॥

कैलासोऽपिशिखरवानष्टाविंशोऽष्टभौमश्च २१ ॥

षट्कोण तीसहाथ विस्तारवाला दशभूमिकाओं करके युक्त औ शिखरोंकर के युक्त मंदर प्रासाद होताहै। कैलास प्रासाद भी शिखरों करके युक्त अट्ठाईस हाथ विस्तृत आठभूमिकाओं करकेयुक्त औ षट्कोण होता है २१ ॥

जालगवाक्षकयुक्तोविमानसंज्ञस्त्रिसप्तकायामः ॥
नन्दनइतिषड्भौमोद्वात्रिंशःषोडशाण्डयुतः २२ ॥

जालों झरोखों करके युक्त इक्कीसहाथ विस्तीर्ण औ आठ भूमिकाओंकर के युक्त षट्कोणविमानच्छंद नामप्रासाद होताहै । नन्दनप्रासाद षट्कोण छः भूमिकाओं करके युक्त बत्तीसहाथ विस्तारवाला औ सोलह अंडोंकरके युक्त होताहै । अंडप्रासादके ऊपर होते हैं जो शिखर अथवा शृंगकहाते हैं २२ ॥

वृत्तःसमुद्गनामापद्मःपद्माकृतिःशयानष्टौ ॥
शृङ्गेणैकेनभवेदेकैवचभूमिकातस्य २३ ॥

समुद्गनाम प्रासाद गोल होताहै औ पद्मप्रासाद कमलके आकार आठ दलों करकेयुक्त होताहै । ये दोनों प्रासाद आठहाथ चौड़े होतेहैं । एकही शृंग इनके होताहै औ दोनों एक २ भूमिका करके युक्तहोतेहैं २३ ॥

गरुडाकृतिश्चगरुडोनन्दीतिचपट्चतुष्कविस्तीर्णः ॥
कार्यस्तुसप्तभौमोविभूषितोऽण्डैश्चविंशत्या २४ ॥

गरुड़प्रासाद गरुड़के आकारपक्ष औ पुच्छकरके युक्त होताहै । नंदिवर्धनप्रासादभी गरुड़के आकारही होताहै परंतु उसके पक्षऔ पुच्छनहीं होते । ये दोनों प्रासाद चौवीस हाथ विस्तीर्ण सातभूमिकाओं करके युक्त औ वीस अंडोंसे भूषितकरने चाहिये २४ ॥

कुंजरइतिगजपृष्ठःषोडशहस्तःसमन्ततोमूलात् ॥
गुहराजःषोडशकस्त्रिचन्द्रशालाभवेद्वलभी २५ ॥

कुंजर प्रासाद हाथीकी पीठके आकार होता है औ मूलसे चारों ओरसोलहहाथ विस्तीर्ण होता है । गुहराज प्रासादगुह (कार्तिकेय) के आकार बनताहै औ सोलहहाथ इसका विस्तारहोताहै । इनदोनों प्रासादों की वलभी तीन२ चन्द्रशालाओं करके युक्तहोती है २५ ॥

वृषएकभूमिशृङ्गोद्वादशहस्तःसमन्ततोवृत्तः ॥
हंसोहंसाकारोघटोऽष्टहस्तःकलशरूपः २६ ॥

वृषनाम प्रासाद एक भूमिका औ एक शृंगकरके युक्तहोताहै । इसका विस्तार बारहहाथहै औ यह प्रासाद चारोंओरसे वर्तुलहोताहै हंस प्रासाद हंस

पक्षिके आकार चोंचपक्ष औ पुच्छकरके युक्तहोताहै यहभी बारह हाथचौड़ा एकभूमिका औ एकशृंगकरके युक्तहोताहै। घटनामक प्रासाद कलशके आकार होताहै औ आठ हाथउसका विस्तारहोताहै। यहभी एकभूमिका औ एक शृंगकरके युक्त होता है २६॥

द्वारैर्युतश्चतुर्भिर्बहुशिखरोभवतिसर्वतोभद्रः॥
बहुरुचिरचन्द्रशालःषड्विंशःपञ्चभौमश्च २७॥

सर्वतोभद्रनाम प्रासाद चारोंदिशाओं में चारद्वारों करके युक्त बहुतसे शिखरोंकरके शोभित बहुत औ सुन्दर चंद्रशालाओं से भूषित छब्बीसहाथ विस्तृत चतुरस्र औपांच भूमिकाओं करके युक्त होताहै २७॥

सिंहःसिंहाक्रान्तोद्वादशकोणोऽष्टहस्तविस्तीर्णः॥
चत्वारोऽञ्जनरूपाःपञ्चाऽण्डयुतस्तुचतुरस्रः २८॥

सिंहनामक प्रासाद सिंहकी प्रतिमाकरके भूषित बारहकोणों करके युक्त औ आठहाथ चौड़ा होता है शेषचार प्रासाद वृक्ष चतुष्कोण षोडशास्र औ अष्टास्र अपने नामके समान आकारवाले होतेहैं। येचारोंअंजन रूपहोते हैं अर्थात् इनके भीतर अंधकार रहताहै बाहिरसे प्रकाश नहीं पहुंचता। यह तात्पर्य है कि इनचारों प्रासादों के चारों ओर भित्तिबनाकर पश्चिमकी ओर बाहिरका द्वाररक्खै औ उन भित्तियोंको ऊपरबढ़ाकर प्रासादसे लगादेवै जिस से प्रासाद से भिन्न न देखपड़ें। औ प्रासादका मुख्य द्वार पूर्वमें रक्खै। फिर बाहिरके पश्चिम द्वारसे प्रवेशकर प्रासादके वामभागसे आकर प्रासादके मुख्य पूर्वद्वार में आद्य देवताका दर्शनकरै। इनअंधेरे प्रासादों में मणिमय प्रतिमा स्थापन करनी चाहिये जिसकी कांतिसे प्रकाशरहै। येसबप्रासाद एकभूमिका औ एकअंडकरके युक्त करने चाहिये चतुरस्र प्रासाद पांच अण्डोंकरके युक्त बनाना चाहिये २८॥

भूमिकाऽङ्गुलमानेनमयस्याऽष्टोत्तरंशतम्॥
सार्धहस्तत्रयंचैवकथितंविश्वकर्मणा २९॥

मयके मतसे एकभूमिकाका प्रमाण एकसौ आठअंगुल होताहै औ विश्वकर्माने एक १ भूमिकाका प्रमाण साढ़ेतीन हाथ कहा है २९॥

प्राहुःस्थपतयश्चात्रमतमेकंविपश्चितः॥
कपोतपालिसंयुक्तान्यूनागच्छातितुल्यताम् ३०॥

विद्वान् स्थपति (कारीगर) मय औ विश्वकर्मा के मतको एकही कहतेहैं। उनका यह कथनहै कि विश्वकर्माने साढ़ेतीनहाथ अर्थात् चौरासी अंगुल

भूमिका का प्रमाण कहा वह कपोतपालिको छोड़कर कहाहै जो उसमें कपोतपालिका प्रमाण जोड़दिया जावे तो वहमयके कहेप्रमाणकेतुल्य होजाताहै। कपोतपालि शब्दकरके वाहिर निकलेहुये सिंहमुख कापोंका ग्रहणहोताहै३०॥

प्रासादलक्षणमिदंकथितंसमासाद्गर्गेणयद्विरचितंतदिहास्ति सर्वम् ॥ मन्वादिभिर्विरचितानिपृथूनियानि तत्संस्मृतिंप्रतिमयात्र कृतोऽधिकारः ३१ ॥

इतिश्रीवराहमिहिरकृतौबृहत्संहितायांप्रासादलक्षणंनाम षट्पंचाशोऽध्यायः ५६ ॥

यहप्रासादलक्षण हमने संक्षेपसे कहाहै परंतु गर्गमुनिने जो प्रासादलक्षण रचा वह सब इसमें आगया है। औ मनु वसिष्ठ मय नग्नजित् आदि आचार्यों ने जो बड़े २ प्रासादलक्षण ग्रंथ रचे हैं उनकी स्मृतिकेलिये हमने यहां अधिकार किया है अर्थात् इसहमारे प्रासाद लक्षणको मनुष्यपढ़कर मनुआदि आचार्योंके रचे बड़े २ ग्रंथोंका अधिकारी होजाता है ३१ ॥

श्रीवराहमिहिराचार्यकीवनाईबृहत्संहितामेंप्रासादलक्षण नामछप्पनवांअध्यायसमाप्तहुआ ॥ ५६ ॥

सत्तावनवांअध्याय ॥

वज्रलेपलक्षण ॥

आमन्तिन्दुकमामंकपित्थकंपुष्पमपिचशाल्मल्याः ॥ बीजानिसल्लकीनांधन्वनवल्कोवचाचेति १ एतैःसलिलद्रोणःक्राथयितव्योऽष्टभागशेषश्च ॥ अवतार्योऽस्यचकल्कोद्रव्यैरेतैःसमनुयोज्यः २ श्रीवासकरसगुग्गुलभल्लातककुन्दरूकसर्जरसैः ॥ अतसीविल्वैश्चयुतःकल्कोऽयंवज्रलेपाख्यः ३ ॥

तेंदूके कच्चेफल कैथके कच्चेफल शाल्मलि (सेमल) के पुष्प सल्लकीवृक्ष के बीज धंवन वृक्षकी छाल औ वच १ इनसवको एकद्रोण जलमें क्राथकरै जबअष्टमांश शेपरहजाय तब उतारै २ पीछे उसमें श्रीवास (सरलवृक्षकागोंद) रस (बोल) गूगल भिलावे कुंदरू (देवदारुवृक्षकानिर्यास) राल अलसी औ वेलकी गिरी इनसवको घोटकर डाले यह वज्रलेपनाम कल्क है ३ ॥

प्रासादहर्म्यवलभीलिङ्गप्रतिमासुकुड्यकूपेषु ॥
संतप्तोदातव्योवर्षसहस्रायुतस्थायी ४ ॥

इस वज्रलेपको देवप्रासाद हर्म्य (हवेली) वलभी शिवलिंग देवप्रतिमा

भित्ति औ कूपोंमें गर्मकरके लगावे अर्थात् इससे उनको लीपै। यह लेपहज़ार दशहज़ार वर्ष अर्थात् करोड़ वर्ष पर्यन्त ठहरताहै ४ ॥

लाक्षाकुन्दरुगुग्गुलगृहधूमकपित्थबिल्वसध्यानि॥ नागबलाफलतिन्दुकमदनफलमधूकमंजिष्ठाः ५ सर्जरसरसामलकानिचेतिकल्कःकृतोद्वितीयोऽयम्॥ वज्राख्यःप्रथमगुणैरयमपितेष्वेवकार्येषु६॥

लाख कुन्दरु गूगल गृहधूम (घरकेधुएंका जाला) कैथके फल बेल की गिरी नागबला (गंगेरण) के फल तेंदूके फल मैनफल महुआके फल मजीठ ५ राल बोल आंवले इन सब वस्तुओं के कल्ककोभी पहिली भांति सिद्धकिये द्रोणभर जलमें मिलानेसे दूसरा वज्रलेप सिद्धहोता है इसमें भी वहीगुण हैं जो पहिले वज्रलेप में कहे हैं औ यह भी प्रासाद आदिके लेप में हो पहिले वज्रलेपकी भांति काम आता है ६ ॥

गोमहिषाऽजविषाणैःखररोम्णामहिषचर्मगव्यैश्च॥
निम्बकपित्थरसैःसहवज्रतरोनामकल्कोन्यः ७॥

गौ भैंस औ बकरा इनतीनोंके सींग गर्दभ महिष औ गौ इनतीनोंके चर्म नींबके फल कैथके फल औ बोल इनं सबकरके पहिली भांति तीसरा कल्क सिद्धहोताहै इसका नाम वज्रतरहै। इसमें भी पहिले कहेहुये गुणहैं औ पूर्वोक्त कार्योंमें कामआताहै ७॥

अष्टौसीसकभागाःकांस्यस्यद्वौतुरीतिकाभागः॥
मयकथितोयोगोयंविज्ञेयोवज्रसंघातः ८॥
इतिश्रीवराहमिहिरकृतौबृहत्संहितायांवज्रलेपो
नामसप्तपंचाशोऽध्यायः॥ ५७॥

आठभाग सीसा दोभाग कांसी औ एकभाग पीतल इनसबको इकट्ठागलावै। यह मयका कहाहुआ योगहै औ इसकानाम वज्रसंघात है ८॥
श्रीवराहमिहिराचार्यकीबनाईबृहत्संहितामेंवज्रलेपनामसत्तावनवांअध्यायसमाप्तहुआ॥ ५७॥

अट्ठावनवां अध्याय॥

प्रतिमालक्षण॥

जालान्तरगेभानौयदणुतरंदर्शनंरजोयाति॥
तद्विन्द्यात्परमाणुंप्रथमंतद्धिप्रमाणानाम् १॥

जाली के बीचसे सूर्य का प्रकाश आता है उसमें जो सूक्ष्मतर रज देखप-

पड़ा है उसको परमाणु जानै। वही सब प्रमाणों में पहिला है अर्थात् सब प्रमाणों का आरम्भ परमाणुसे होता है १॥

परमाणुरजोवालाग्रलिक्षायूकायवोऽगुलंचेति॥
अष्टगुणानियथोत्तरमंगुलमेकंभवतिसंख्या २॥

आठ परमाणुका रज आठ रजका वालाग्र आठ वालाग्रकी लिक्षा आठ लिक्षाकी यूका आठ यूकाका यव औ आठयवका एकअंगुल होताहै इसभांति ये प्रमाण उत्तरोत्तर आठगुणे हैं। एकअंगुल संख्याहोती है २॥

देवागारद्वारस्याष्टांशोनस्ययस्तृतीयोऽशः॥
तत्पिण्डिकाप्रमाणंप्रतिमातद्द्विगुणपरिमाणा ३॥

देवमन्दिर के द्वारकी उंचाईमें उसका अष्टमांश घटाकर जो शेषरहै उस की जो तिहाई वह पिण्डिका (मूर्तिकीपीठ) का प्रमाण है अर्थात् उतनी ऊंची पिण्डिका बननी चाहिये औ पिण्डिकासे दूनीऊँची देवप्रतिमाचाहिये ३॥

स्वैरंगुलप्रमाणैर्द्वादशविस्तीर्णमायतंचमुखम्॥
नग्नजितातुचतुर्दशदैर्घ्येणद्राविडंकथितम् ४॥

प्रतिमाकी जितनी उंचाई आवे उसके वारह भागकर एकएक भागके फिर नौनौ भागकरे वह एक अंगुल होता है क्योंकि सब प्रतिमा अपने २ अंगुल प्रमाणमें एकसौ आठ अंगुल होती हैं। प्रतिमाका मुख अपने अंगुल प्रमाण से बारह अंगुल चौड़ा औ चौदह अंगुल लम्बा नग्नजित् नाम आचार्यने कहा है। यह मान द्रविड़देश का है ४॥

नासाललाटचिबुकग्रीवाश्चतुरंगुलास्तथाकर्णौ॥
द्वेअंगुलेचहनुकेचिबुकंचद्व्यंगुलंप्रसृतम् ५॥

प्रतिमा के नासिका ललाट चिबुक (ठोडी) ग्रीवा औ कर्ण अपने अंगुल प्रमाणसे चार २ अंगुल लम्बे बनाने चाहिये। हनु दो२ अंगुल लम्बे बनावै। चिबुककी चौड़ाई दो अंगुल होती है ५॥

अष्टांगुलंललाटंविस्ताराद्व्यंगुलात्परेशंखौ॥
चतुरंगुलौतुशंखौकर्णौतुद्व्यंगुलंपृथुलौ ६॥

आठ अंगुल चौड़ा ललाट होता है ललाटसे दोनोंओर परे दो दो अंगुल प्रमाण शंख (कनपटी) बनावै शंखों की लम्बाई चार २ अंगुल रक्खे कर्ण दो २ अंगुल चौड़े बनावे ६॥

कर्णोपान्तःकार्योऽर्धपंचमोभ्रूसमेनसूत्रेण॥
कर्णस्रोतःसुकुमारकंचनेत्रप्रबन्धसमम् ७॥

कर्ण का उपान्त अर्थात् कर्णाग्र नेत्रांत से लेकर भ्रू सम सूत्रकरके साढ़े चार अंगुलका करनाचाहिये । कर्णस्रोत अर्थात् कर्णका छिद्र औ सुकुमारक अर्थात् कर्णस्रोत के समीप का उन्नतभाग नेत्र प्रबन्ध के समान अर्थात् एक अंगुल करना चाहिये ७ ॥

चतुरंगुलंवसिष्ठःकथयतिनेत्रान्तकर्णयोर्विवरम् ॥
अधरोंऽगुलप्रमाणस्तस्याऽर्धेनोत्तरोष्ठश्च ८ ॥

वसिष्ठ मुनि कहतेहैं कि नेत्र औ कर्णान्तका अन्तर चार अंगुल करनाचाहिये। नीचेका ओष्ठ एक अंगुल औ ऊपर का ओष्ठ आध अंगुल रखनाचाहिये८॥

अर्धाऽगुलंतुगोच्छावक्त्रंचतुरंगुलायतंकार्यम् ॥
विपुलंतुसार्धमंगुलंमध्यात्तत्त्र्यंगुलंव्यात्तम् ९ ॥

गोच्छा आधअंगुल विस्तीर्ण करनी चाहिये मुख चार अंगुल लम्बा औ डेढ़ अंगुल चौड़ा रखना चाहिये। औ व्यात्तमुख अर्थात् नृसिंह आदि देवताओं का फैलाहुआ मुख तीन अंगुल चौड़ाकरै ९॥

द्व्यंगुलतुल्यौनासापुटौचनासापुटाग्रतोज्ञेया ॥
स्याद्द्व्यंगुलमुच्छ्रायश्चतुरंगुलमन्तरंचाक्ष्णोः १० ॥

नासिका के दोनों पुट दो २ अंगुल के करै औ पुटों के अग्रसे नासिकाभी दो अंगुल जानै । नासिका की उँचाई दो अंगुलरक्खै औ दोनों नेत्रोंके बीच चार अंगुल अन्तर रक्खै १० ॥

द्व्यंगुलमितोऽक्षिकोशोद्वेनेत्रेतत्त्रिभागिकातारा ॥
दृक्तारापंचांशोनेत्रविकाशोऽगुलंभवति ११ ॥

नेत्रका कोश दो अंगुल नेत्र दोनों दो २ अंगुल नेत्रकी तिहाईके तुल्य तारा अर्थात् नेत्रके मध्यका कृष्णभाग औ ताराके पंचमांशके तुल्य दृक् अर्थात् नेत्र की कनीनिका बनावै औ नेत्रकी चौड़ाई एक अंगुलकरै ११ ॥

पर्यन्तात्पर्यन्तन्दशभ्रुवोऽर्धाऽगुलम्भ्रुवोर्लेखा ॥
भ्रूमध्यंद्व्यंगुलकंभ्रूर्दैर्घ्येणांगुलचतुष्कम् १२ ॥

एक भ्रू के अन्तसे दूसरे भ्रू के अन्त पर्यंत दशअंगुल रखना चाहिये। आध अंगुल भ्रू की चौड़ाई दोनों भ्रू का मध्यभाग दो अंगुल औ एकएक भ्रू की लम्बाई चार चार अंगुल करनी चाहिये १२ ॥

कार्यातुकेशरेखाभ्रूबन्धसमांऽगुलाऽर्धविस्तीर्णा ॥
नेत्रान्तेकरवीरकमुपन्यसेदंगुलप्रतिमम् १३ ॥

ललाट के ऊपर केशरेखा भ्रूबन्ध के तुल्य अर्थात् दश अंगुलकरै औ आध

अंगुल चौड़ी केशरेखा रक्खै नेत्रके अन्तमें एकअंगुलका करवीरक करै जिस को नूपिका भी कहते हैं १३ ॥

द्वात्रिंशत्परिणाहाच्चतुर्दशायामतोऽगुलानिशिरः ॥
द्वादशतुचित्रकर्मणिदृश्यन्तेविंशतिरदृश्याः १४ ॥

बत्तीस अंगुल लम्बा औ चौदह अंगुल चौड़ा शिरबनाना चाहिये जो चित्र बनायाजाय तो उसमें शिर बारहअंगुल देखपड़ताहै औ बीस अंगुल जो पिछली ओर रहते हैं वे नहीं देखपड़ते हैं १४ ॥

आस्यंसकेशनिचयंषोड़शदैर्घ्येणनग्नजित्प्रोक्तम् ॥
ग्रीवादशविस्तीर्णापरिणाहाद्विंशतिःसैका १५ ॥

नग्नजित् आचार्यने केशरेखा सहित मुखका विस्तार सोलह अंगुलकहाहै ग्रीवाका विस्तार दशअंगुल औ उसकी लंबाई इक्कीसअंगुलकरनीचाहिये १५ ॥

कण्ठाद्द्वादशहृदयंहृदयान्नाभिश्चतत्प्रमाणेन ॥
नाभीमध्यान्मेढ्रान्तरंचतत्तुल्यमेवोक्तम् १६ ॥

कंठके अधोभागसे हृदयपर्य्यंत बारहअंगुल अंतररक्खै हृदयसे नाभिपर्य्यन्त औ नाभिके मध्यसे लिंगके मध्यपर्य्यन्त बारह २ अंगुलही अंतरकहाहै १६॥

ऊरूचांगुलमानेश्चतुर्युताविंशतिस्तथाजंघे ॥
जानुकपित्थेचतुरंगुलेचपादौचतत्तुल्यौ १७ ॥

ऊरू औ जंघा चौबीस २ अंगुललम्बे करने चाहिये। जानु कपित्थ (गोड़ों के ऊपरकी पाली) चार अंगुल औ पादभी चार अंगुल करै अर्थात् टँकने के नीचेका भाग चार अंगुल रक्खे १७ ॥

द्वादशदीर्घौषट्पृथुतयाचपादौत्रिकायतांऽगुष्ठौ ॥
पञ्चांगुलपरिणाहोप्रदेशिनीत्र्यंगुलन्दीर्घा १८ ॥

बारह अंगुल लम्बे औ छःअंगुल चौड़े पैर बनाने चाहिये दोनों पैरोंके अँगूठे तीन अंगुल चौड़े औ पांच अंगुललम्बे बनावे औ प्रदेशिनी (अंगुष्ठकेसमीपकी अंगुली) तीन अंगुल लंबीरक्खे १८ ॥

अष्टांशाऽष्टांशोनाः शेषांगुलयः क्रमेण कर्तव्याः ॥
सचतुर्थभागमंगुलमुत्सेधोऽगुष्ठकस्योक्तः १९ ॥

शेष तीनअंगुली प्रदेशिनी से अष्टांश अष्टांश न्यून करके क्रमसे बनावै अंगुष्ठकी उँचाई सवाअंगुल कही है। इसी हिसाब से और अंगुलियों की भी उँचाई जाने १९ ॥

अंगुष्ठनखःकथितश्चतुर्थभागोनमंगुलंतज्ज्ञैः ॥

शेषनखानामर्धांगुलंक्रमात्किञ्चिदूनंवा २० ॥

अँगूठेके नखकी लंबाई पौनअंगुल प्रतिमालक्षण जाननेवालोंने कहीहै औ शेष अंगुलियोंके नखोंकी लंबाई आधआध अंगुलकरै अथवा क्रमसे किंचित् किंचित् न्यूनकरताजाय जिसमें अंगुली औ नखसुन्दर देखपड़ैं २० ॥

जङ्घाग्रेपरिणाहश्चतुर्दशोक्तस्तुविस्तरःपञ्च ॥
मध्येतुसप्तविपुलापरिणाहात्त्रिगुणिताःसप्त २१ ॥

जंघाके अग्रभागकी विशालता चौदह अंगुल औ बिस्तार पांच अंगुल कहा है औ जंघा के मध्य भागका विस्तार सात अंगुल औ विशालता इक्कीस अंगुल कही है २१ ॥

अष्टौतुजानुमध्येवैपुल्यंत्र्यष्टकन्तुपरिणाहः ॥
विपुलौचतुर्दशोरूमध्येद्विगुणश्चतत्परिधिः २२ ॥

जानु के मध्यका विस्तार आठ अंगुल औ विशालता चौवीस अंगुलहोती है औ ऊरु मध्यभाग में चौदह अंगुल विस्तीर्ण होते हैं औ अट्ठाईस अंगुल उनकी परिधि होती है २२ ॥

कटिरष्टादशविपुलाचत्वारिंशच्चतुर्युतापरिधौ ॥
अंगुलमेकंनाभिर्वेधेनतथाप्रमाणेन २३ ॥

कटिका विस्तार अठारह अंगुल औ कटिकी परिधि चवालीस अंगुल होती है। नाभिका विस्तार औ वेध (गहराई) एकएक अंगुल होते हैं २३ ॥

चत्वारिंशद्द्वियुतानाभीमध्येनमध्यपरिणाहः ॥
स्तनयोःषोडशचान्तरमूर्ध्वंकक्षेषडंगुलिके २४ ॥

नाभिको वीचमें लेकर मध्यभाग का परिणाह बयालीस अंगुल होताहै। दोनों स्तनोंका अन्तर सोलह अंगुल औ स्तनोंके ऊपर तिरछे छः छः अंगुल के कक्ष (काख) होते हैं २४ ॥

कार्यावष्टावंसौद्वादशबाहूतथाप्रबाहूच ॥
बाहूषड्विस्तीर्णौप्रतिबाहूत्वंगुलचतुष्कम् २५ ॥

कंधोंकी लंबाई ग्रीवा से लेकर आठ अंगुल रखनी चाहिये औ बारह २ अंगुललम्बे बाहु औ प्रबाहु करने चाहिये बाहूका विस्तार छः अंगुल औ प्रबाहूका चार अंगुल रखना चाहिये कन्धेसे कुहनी पर्यन्त बाहु औ कुहनी के नीचे प्रबाहु कहाते हैं २५ ॥

षोडशबाहूमूलेपरिणाहाद्द्वादशाग्रहस्तेच ॥
विस्तारेणकरतलंषडंगुलंसप्तदैर्घ्येण २६ ॥

बाहुके मूल में सोलह अंगुल अग्रहस्त में अर्थात् प्रकोष्ठ के समीप बारह अंगुल परिणाह रखना चाहिये। औ हथेली की चौड़ाई छः अंगुल औ लंबाई सात अंगुल रखनी चाहिये २६ ॥

पञ्चाऽङ्गुलानिमध्याप्रदेशिनीमध्यपर्वदलहीना ॥
अनयातुल्याचानामिकाकनिष्ठातुपर्वोना २७ ॥

अंगुष्ठ के समीप की अंगुली प्रदेशिनी उसके आगे मध्यमा उससे आगे अनामिका औ अनामिका से आगे की अंगुली कनिष्ठा कहाती है। औ एक२ अंगुली में तीन २ पर्व होते हैं। मध्यमा पांच अंगुल लम्बी करै मध्यमा के बिचले पर्वका आधा घटा देवे तो प्रदेशिनी की लम्बाई होती है औ प्रदेशिनी के तुल्यही अनामिका होती है। अनामिका में एक पर्व घटाने से कनिष्ठा की लम्बाई होती है २७ ॥

पर्वद्वयमंगुष्ठःशेषांगुलयस्त्रिभिस्त्रिभिःकार्याः ॥
नखपरिमाणंकार्यंसर्वासांपर्वणोऽर्धेन २८ ॥

अंगुष्ठके दोपर्व औ शेषचार अंगुलियों के तीन २ पर्व करने चाहिये। औ सब अंगुलियोंके नखों की लम्बाई अपने २ पर्वके अर्धके तुल्यकरै २८ ॥

देशानुरूपभूषणवेषालङ्कारमूर्तिभिःकार्या ॥
प्रतिमालक्षणयुक्तासन्निहितावृद्धिदाभवन्ति २९ ॥

अपने २ देशके अनुसार प्रतिमा के भूषण वेष अलंकार (शृंगार) औ शरीर बनावे। लक्षण युक्त प्रतिमा में देवताका सान्निध्य होता है इसी से वह बनानेवालेकी सब प्रकार से वृद्धि करती है २९ ॥

दशरथतनयोरामोबलिश्चवैरोचनिःशतंविंशम् ॥
द्वादशहान्याशेषाःप्रवरसमन्यूनपरिमाणाः ३० ॥

दशरथ के पुत्र श्रीरामचन्द्रजीकी औ विरोचन के पुत्र बलिकी प्रतिमा एक सौ बीस अंगुल लम्बी बनावै। और सब प्रतिमा एक सौ आठ अंगुल लम्बी उत्तम छियानवें अंगुल लम्बी मध्यम चौरासी अंगुल लम्बी प्रतिमा निकृष्ट होती है। पहिले जो अंगोंका प्रमाण कहा वह एक सौ आठ अंगुल लम्बी प्रतिमा का कहा है औ प्रतिमाओंका अङ्ग प्रमाण त्रैराशिक से जानलेवै ३० ॥

कार्योऽष्टभुजोभगवांश्चतुर्भुजोद्विभुजएववाविष्णुः ॥ श्रीवत्साङ्कितवक्षाःकौस्तुभमणिभूषितोरस्कः ३१ अतसीकुसुमश्यामःपीताम्बरनिवसनःप्रसन्नमुखः ॥ कुण्डलकिरीटधारीपीनगलोरःस्थलांसभुजः ३२ खड्गगदाशरपाणिर्दक्षिणतःशांतिदश्चतुर्थकरः ॥ वामक

रेपुचकार्मुकखेटकचक्राणिशङ्खश्च ३३ अथचचतुर्भुजमिच्छतिशान्तिदएकोगदाधरश्चान्यः॥ दक्षिणपार्श्वेह्येवंवामेशङ्खश्चचक्रंच३४ द्विभुजस्यतुशान्तिकरोदक्षिणहस्तोऽपरश्चशङ्खधरः ॥ एवंविष्णोः प्रतिमाकर्तव्याभूतिमिच्छद्भिः ३५ ॥

विष्णु भगवान्‌की प्रतिमा अष्टभुज चतुर्भुज अथवा द्विभुज बनावै। श्रीवत्सनामक चिह्न करके औ कौस्तुभ मणि करके प्रतिमाके वक्षस्थलको शोभितकरै ३१ अलसीके पुष्पके समान प्रतिमाका रंगकरै पीतवस्त्र पहिनावै। प्रतिमा प्रसन्न मुखहोय। कुंडल औ किरीट पहिने होय। औ प्रतिमाके गल उरस्थल (छाती) कंधे औ भुजापुष्टहोने चाहिये ३२ अष्टभुज प्रतिमाके दहिने तीन हाथोंमें खड्गगदा वाण धारण करावै औ चौथाहाथ शांतिको देनेवाला अर्थात् अभय मुद्रा करके युक्त बनावै। बाईं ओरके चार हाथों में धनुष ढाल चक्र औ शंख धारण करावै ३३ चतुर्भुज मूर्तिबनाना चाहे तो दक्षिण एकहाथ शांतिदरक्खै औ दूसरेमें गदाधारण करावै औ दोनों वाम हस्तों में शंख औ चक्र धारणकरावै ३४ द्विभुज मूर्तिका दक्षिण हाथ शांतिद करै औ वाम हस्तमें शंख धारण करावै। ऐश्वर्य के चाहने वाले पुरुष इसभांति विष्णु प्रतिमा बनवावैं ३५ ॥

बलदेवोहलपाणिर्मदविभ्रमलोचनश्चकर्त्तव्यः ॥
बिभ्रत्कुण्डलमेकंशंखेन्दुमृणालगौरवपुः ३६ ॥

बलदेवजी की प्रतिमाके हाथमेंहल धारण करावै औ मदकरके घूर्णितनेत्र प्रतिमाके बनावै एककानमें कुंडल धारण करावै प्रतिमाका वर्ण शंख चंद्रमा अथवा मृणाल (कमलकीजड़) के तुल्यश्वेतकरै ३६ ॥

एकानंशाकार्यादेवीबलदेवकृष्णयोर्मध्ये ॥ कटिसंस्थितवामकरा सरोजमितरेणचोद्वहती ३७ कार्याचतुर्भुजायावामकराभ्यांसपुस्तकं कमलम् ॥ द्वाभ्यान्दक्षिणपार्श्वेवरमर्थिष्वक्षसूत्रञ्च ३८ वामेष्वष्ट भुजायाःकमण्डलुश्चापमम्बुजंशास्त्रम् ॥ वरशरदर्पणयुक्ताःसव्यभुजाःसाक्षसूत्राश्च ३९ ॥

बलदेव औ श्रीकृष्णकी प्रतिमाके बीच एकानंशादेवी की प्रतिमा बनावै जिसने अपना वाम हस्तकटि पररक्खाहो और दहिने हाथमें कमल धारणकररक्खा होय ३७ चतुर्भुज मूर्ति एकानंशाकी बनावै तो दोनों वामहस्तोंमें पुस्तक औ कमलदहिने दोनों हाथोंमें अर्थियोंकोवर अर्थात् वर मुद्रा औ अक्षसूत्र (माला) धारण करावै ३८ एकानंशाकी अष्टभुज मूर्तिके बायें चारहाथों में कमण्डलु

...कमल औ पुस्तक दहिने चारहाथों में वरमुद्रा वाण दर्पण औ अक्षसूत्र धारण करावै ३९॥

साम्बश्चगदाहस्तःप्रद्युम्नश्चापभृत्सुरूपश्च ॥
अनयोस्त्रियौचकार्येखेटकनिस्त्रिंशधारिण्यौ ४० ॥

साम्बकी प्रतिमाको गदा औ प्रद्युम्नकी प्रतिमाको धनुष औ वाण धारण करावै ये दोनों प्रतिमा द्विभुज औ सुन्दर रूप करके युक्त वनावै। साम्ब औ प्रद्युम्नकी स्त्रियोंकी प्रतिमा खड्ग औ खेटक (ढाल) धारणकिये वनावै ४०॥

ब्रह्माकमण्डलुकरश्चतुर्मुखःपङ्कजासनस्थश्च ॥
स्कन्दःकुमाररूपःशक्तिधरोबर्हिकेतुश्च ४१ ॥

ब्रह्माकी प्रतिमाके एकहाथमें कमण्डलु धारण करावै। चार मुख वनावै औ कमल रूप आसनपर वैठी प्रतिमावनावै। कार्तिकेयकी प्रतिमावालक रूप शक्ति (वर्छी) हाथमें लिये औ मयूर युक्त ध्वजा धारणकिये वनावै ४१॥

शुक्लश्चतुर्विषाणोद्विपोमहेन्द्रस्यवज्रपाणित्वम् ॥
तिर्यग्ललाटसंस्थंतृतीयमपिलोचनंचिह्नम् ४२ ॥

इन्द्रके हाथी ऐरावतकी प्रतिमा शुक्लवर्ण औ चार दन्तों करके युक्त वनावै इन्द्रकी प्रतिमाके हाथमें वज्र धारण करावै औ ललाटके वीच स्थित तिरछा तीसरा नेत्र वनावै वह उस प्रतिमाका चिह्नहै ४२॥

शम्भोःशिरसीन्दुकलावृषध्वजोऽक्षिचतृतीयमप्यूर्ध्वम् ॥
शूलंधनुःपिनाकंवामार्धेवागिरिसुतार्धम् ४३ ॥

शिवजीकी प्रतिमाके मस्तकपर चन्द्रकला धारण करावै ध्वज में वृषका चिह्न करै। ललाटमें खड़ा तीसरा नेत्र वनावै। एक हाथमें त्रिशूल औ दूसरे हाथमें पिनाक नामक धनुष धारण करावै। अथवा शिवजी की प्रतिमा के वाम अर्ध भागमें पार्वतीका वाम अर्धभाग वनावै अर्थात् अर्धनारीश्वरकी प्रतिमा वनावै ४३॥

पद्माङ्कितकरचरणःप्रसन्नमूर्तिःसुनीचकेशश्च ॥
पद्मासनोपविष्टःपितेवजगतोभवेद्बुद्धः ४४ ॥

बुद्ध भगवान्की प्रतिमाके हाथपैर कमल रेखाओंसे चिह्नित करै प्रतिमा प्रसन्न होय केश (दाढ़ी आदि) नीचेको झुके होयँ पद्मासनके ऊपर वैठी होय जो ऐसी बुद्धप्रतिमाहोय मानों जगत् का साक्षात्पिताहै ४४॥

आजानुलम्बबाहुःश्रीवत्साङ्कःप्रशान्तमूर्तिश्च ॥
दिग्वासास्तरुणोरूपवांश्चकार्योऽर्हतांदेवः ४५ ॥

जानु पर्यन्त लम्बे भुजों करके युक्त श्रीवत्स चिह्न करके शोभित शान्त स्वरूप दिगम्बर तरुण औ उत्तम रूप करके युक्त अर्हत्देव(जिन) की प्रतिमा बनावे ४५ ॥

नासाललाटजङ्घोरुगण्डवक्षांसिचोन्नतानिरवेः ॥ कुर्यादुदीच्यवेषंगूढ़म्पादादुरोयावत् ४६ बिभ्राणःसकररुहेबाहुभ्याम्पङ्कजेमुकुटधारी ॥ कुण्डलभूषितवदनःप्रलम्बहारोविहङ्गवृतः ४७ कमलोदरद्युतिमुखःकञ्चुकगुप्तःस्मितप्रसन्नमुखः ॥ रत्नोज्ज्वलप्रभामण्डलश्चकर्तुःशुभकरोऽर्कः ४८ ॥

सूर्यकी प्रतिमाके नासिका ललाट जंघा ऊरु कपोल औ उरस्थल ऊंचे बनावै। उत्तर दिशाके निवासी मनुष्योंका वेष सूर्य की प्रतिमा का बनावे। पैरोंसे लेकर छाती पर्यंत प्रतिमा चोलक से गुप्तरहै ४६ दोनों भुजाओं में नखों सहित दो कमल धारण करावै मुकुट पहिनावै। मुखको कुण्डलों से मण्डितकरै लम्बाहार गले में पहिनावै औ विहंग अर्थात् सारसन को कटि में वेष्टितकरै ४७ कमल के उदरकी कान्ति के तुल्य मुखकी कान्ति बनावै। कंचुककरके प्रतिमा गुप्तरहै। मन्दहास करके प्रतिमाका मुख प्रसन्न देखपडै औ रत्नोंकरके देदीप्यमानहै कान्ति समूह जिसका। ऐसी सूर्यप्रतिमाबनवाने वालेको शुभ करतीहै ४८ ॥

सौम्यातुहस्तमात्रावसुदाहस्तद्वयोच्छ्रिताप्रतिमा ॥ क्षेमसुभिक्षायभवेत्त्रिचतुर्हस्तप्रमाणाया४९ नृपभयमत्यङ्गायांहीनांगायामकल्पताकर्तुः ॥ शातोदर्यांक्षुद्भयमर्थविनाशःकृशाङ्गायाम् ५० मरणन्तुसक्षतायांशस्त्रनिपातेननिर्दिशेत्कर्तुः ॥ वामावनतापत्नींदक्षिणविनताहिनस्त्यायुः ५१ अन्धत्वमूर्ध्वदृष्ट्याकरोतिचिन्तामधोमुखीदृष्टिः ॥ सर्वप्रतिमास्वेवंशुभाशुभंभास्करोक्तसमम् ५२ ॥

सूर्यकी प्रतिमा एकहाथ ऊँचीहोय तो शुभ होतीहै दो हाथ ऊँची प्रतिमा धन देती है तीनहाथ ऊँची क्षेम औ चारहाथ ऊँची सूर्यप्रतिमा सुभिक्ष करती है ४९ अधिक अंग प्रतिमा राजासे भय करती है हीनांग प्रतिमा बनानेवाले को रोगी रखती है। कृश उदरवाली प्रतिमा क्षुधासे भय करती है कृश अंगों वाली प्रतिमा बनानेसे धनका नाशहोताहै ५० क्षतयुक्त प्रतिमा बनानेवाले काशस्त्रसे मृत्यु कहनाचाहिये। बाईं ओर झुकी हुई प्रतिमा बनानेवाले की पत्नीका औ दहिनीओर झुकी प्रतिमा आयुष्का नाशकरती है ५१ प्रतिमा की दृष्टि ऊपरकोहोय तो बनानेवाला अन्धाहोजाय। औ सूर्य की प्रतिमा की दृष्टि

[illegible] को होय तो बनानेवाले को चिन्ताहोय ॥ यह सूर्यकी प्रतिमाका शुभ-अशुभ फल कहा इसीके तुल्य फल और प्रतिमाओं काभीजाने ५२ ॥

लिंगस्यवृत्तपरिधिंदैर्घ्येणासूत्र्यतत्त्रिधाविभजेत् ॥ मूलेतच्चतुरस्रंमध्येत्वष्टाश्रिवृत्तमतः ५३ चतुरस्रमवनिखातेमध्यङ्कार्यंतुपिण्डिकाश्वभ्रे ॥ दृश्योच्छ्रायेणसमासमन्ततःपिण्डिकाश्वभ्रात् ५४ ॥

लिंगकी वृत्तरूप परिधिको लम्बाईमें सूत्रसे मापकर उससूत्रके तीनभाग करे औ उन भागोंके तुल्य लिंगकेभी तीनभाग करलेवै पीछे लिंगके नीचले तृतीयांश को चतुरस्र मध्यके तृतीयांश को अष्टास्र औ ऊपरके तृतीयांश को वर्तुल (गोल) बनावे ५३ लिंगके चतुरस्र भाग को भूमि में गाडै मध्य के अष्टास्र भागको पिण्डिका (जलहरी) के गढ़ेमें रक्खै शेषवर्तुल तीसराभाग ऊपर रक्खे लिंगके दीखतेहुये उस वर्तुलभागकी उँचाईके तुल्य गढ़ेसे चारों ओर पिण्डिका बनावे ५४ ॥

कृशदीर्घंदेशघ्नंपार्श्वविहीनम्पुरस्यनाशाय ॥
यस्यक्षतम्भवेन्मस्तकेविनाशायतल्लिङ्गम् ५५ ॥

पतला औ लम्बा शिव लिङ्ग देशका नाश करताहै दोनों ओरसे हीनहोय तो नगरका नाशकरे जिस लिङ्गके मस्तक पर क्षतहोय वह लिङ्ग स्वामी का नाश करताहै ५५ ॥

मातृगणःकर्तव्यःस्वनामदेवानुरूपकृतचिह्नः ॥
रेवन्तोऽश्वारूढोमृगयाक्रीडादिपरिवारः ५६ ॥

अपने नाम देवताके तुल्य किये हैं चिह्न जिनके ऐसे मातृगण करने चाहिये जैसे ब्राह्मीकारूप ब्रह्माके तुल्य इन्द्राणीका इन्द्रके तुल्य इत्यादि और भी जानो परन्तु इनके स्तन आदि अंगभी बनावै जिससे स्त्रीरूपकी शोभाहोय रेवन्त (सूर्यकाएकपुत्र) की प्रतिमा घोड़ेपरचढ़ी बनावे औ मृगया (आखेट) खेलताहै परिकर जिसका ऐसा बनावे ५६ ॥

दण्डीयमोमहिषगोहंसारूढश्चपाशभृद्वरुणः ॥
नरवाहनःकुबेरोवामकिरीटीबृहत्कुक्षिः ५७ ॥

यमकी प्रतिमा के हाथ में दण्ड धारण करावे औ महिषपर चढ़ी प्रतिमा बनावे हंसपर चढ़ी औ पाश धारण किये वरुणकी प्रतिमा बनावै । मनुष्य पर आरूढ़ वामभाग में मुकुट धारण किये औ बड़े उदर वाली कुबेर की प्रतिमा बनावे ५७ ॥

प्रमथाधिपोगजमुखःप्रलम्बजठरःकुठारधारीस्यात् ॥

एकविषाणोबिभ्रन्मूलककन्दंसुनीलदलकन्दम् ५८ ॥

इतिश्रीवराहमिहिरकृतौबृहत्संहितायांप्रतिमालक्षणं
नामाऽष्टपंचाशोध्यायः ५८ ॥

गणपतिकी प्रतिमा का हाथीका मुख औ लम्बा पेट बनावै हाथ में कुठार धारण करावै। एकदन्त प्रतिमाका बनावै मूलककन्द औ नीलदलकन्द धारण किये गणपतिकी प्रतिमा बनावै यह आर्या क्षेपकहै ५८ ॥

श्रीवराहमिहिराचार्यकीबनाईबृहत्संहितामें
अट्ठावनवांअध्यायसमाप्तहुआ ५८ ॥

उनसठवांअध्याय ॥

वनसंप्रवेश ॥

कर्तुरनुकूलदिवसेदैवज्ञविशोधितेशुभनिमित्ते ॥
मङ्गलशकुनैःप्रास्थानिकैश्चवनसंप्रवेशःस्यात् १ ॥

प्रतिमा बनानेवाले को अनुकूल दिन होय अर्थात् उपचय स्थान स्थित ग्रहका बारहोय नक्षत्र अच्छाहोय चन्द्र तारा शुद्धि होय उस दिन ज्योतिषी के बताये शुभ मुहूर्त में यात्राके समय कहे मंगल औ शकुन देखकर प्रतिमा बनानेवाला काष्ठके लिये वनमें प्रवेश करै १ ॥

पितृवनमार्गसुरालयवल्मीकोद्यानतापसाश्रमजाः ॥ चैत्यसरित्संगमसंभवाश्चघटतोयसिक्ताश्च २ कुब्जानुजातवल्लीनिपीडिता वज्रमारुतोपहताः ॥ स्वपतितहस्तिनिपीडितशुष्काऽग्निप्लुष्टमधुनिलयाः ३ तरवोवर्जयितव्याःशुभदाःस्युःस्निग्धपत्रकुसुमफलाः ॥ अभिमतवृक्षंगत्वाकुर्यात्पूजांसबलिपुष्पाम् ४ ॥

श्मशान मार्ग देवालय वल्मीक (बांबी) उद्यान (बाग) तपस्वियों के आश्रम चैत्य औ नदियों के संगम इन स्थानों में उत्पन्नहुये वृक्ष घड़ोंके जल से सिंचेहुये वृक्ष २ कुबड़े वृक्ष एक वृक्ष के सहारे से उपजेहुये वृक्ष वेलों से पीड़ित वृक्ष अर्थात् जिनके ऊपर बहुत वेल लपटी होय बिजली के मारेवृक्ष पवन करके तोड़ेहुये वृक्ष आपही गिरेहुये वृक्ष हाथियोंसे ताड़ेहुये सूखे अग्नि से जलेहुये वृक्ष औ मधुनिलय अर्थात् जिनमें शहतका छत्ता लगाहोय ऐसे वृक्ष त्यागने चाहिये इनकाकाष्ठ प्रतिमा बनाने में अशुभ होताहै। जिनवृक्षों के पत्ते फूल फल स्निग्ध होयँ वे वृक्ष शुभहोते हैं। बनमें इसभांति शुभ वृक्ष देख उसके समीपजाय बलि औ पुष्पोंकरके उस वृक्षकी पूजाकरै ३। ४ ॥

सुरदारुचन्दनशमीमधूकतरवःशुभाद्विजातीनाम् ॥ क्षत्रस्याऽरि

...वत्थखदिरबिल्वाविवृद्धिकराः ५ वैश्यानांजीवकखदिरसिन्धुकस्यन्दनाश्चशुभफलदाः ॥ तिन्दुककेसरसर्जाऽर्जुनाम्रशालाश्च शूद्राणाम् ६ ॥

देवदारु चन्दन शमी औ महुआ ये वृक्ष ब्राह्मणोंके लिये शुभहैं अर्थात् ब्राह्मण इनके काष्ठकी देवप्रतिमा बनावें। नींव पीपल खैर औ बेल ये क्षत्रियों को वृद्धि करनेवाले वृक्ष हैं ५ जीवक खैर सिन्धुक औ स्यन्दन ये वृक्ष वैश्यों को शुभफल देतेहैं तेंदू नागकेसर सर्ज अर्जुन आंब औ साल ये वृक्ष शूद्रों के लिये शुभहैं ६ ॥

लिङ्गंवाप्रतिमावाद्रुमवत्स्थाप्यायथादिशंयस्मात् ॥
तस्माच्चिह्नयितव्यादिशोद्रुमस्योर्ध्वमथवाऽधः ७ ॥

लिंग अथवा प्रतिमा को वृक्षकी दिशाओं के अनुसार स्थापनकरै अर्थात् वृक्षका जो पूर्व आदि भागहो वही प्रतिमा अथवा लिङ्गकाभी पूर्व आदिभाग होनाचाहिये। इसी भांति वृक्षके ऊपरके भागमें प्रतिमाका शिर औ नीचे जड़की ओर के भागमें प्रतिमा के पादबनाने चाहिये इस कारण काटने से पहिले वृक्ष में चारों दिशाओं के औ ऊर्ध्वभाग अथवा अधोभागके चिह्न करदेने चाहिये ७ ॥

परमान्नमोदकौदनदधिपललोल्लोपिकादिभिर्भक्ष्यैः ॥ मद्यैःकुसुमैर्धूपैर्गन्धैश्चतरुंसमभ्यर्च्य ८ सुरपितृपिशाचराक्षसभुजगासुरगणविनायकाद्यानाम् ॥ कृत्वारात्रौपूजांवृक्षंसंस्पृश्यचब्रूयात् ९ ॥

खीर लड्डू भात दही मांस उल्लोपिका (एकप्रकारका भक्ष्य) आदिभक्ष्य मद्य पुष्प धूप औ गन्धकरके वृक्षकी पूजाकर ८ देवता पितर पिशाच राक्षस नाग असुर गण औ विनायक आदि की रात्रि के समय पूजाकर वृक्षको स्पर्श कर ये मन्त्रपढ़े ९ ॥

अर्चार्थममुकस्यत्वंदेवस्यपरिकल्पितः ॥ नमस्तेवृक्षपूजेयंविधिवत्संप्रगृह्यताम् १० यानीहभूतानिवसन्तितानिबलिंगृहीत्वाविधिवत्प्रयुक्तम्॥अन्यत्रवासंपरिकल्पयन्तुक्षमंतुतान्यद्यनमोस्तुतेभ्यः ११

वृक्षको स्पर्शकर ये मन्त्रपढ़ै (अमुकस्य) के स्थानमें षष्ठ्यन्त देवता का नाम लगालेवे १० । ११ ॥

वृक्षंप्रभातेसलिलेनसिक्त्वापूर्वोत्तरस्यांदिशिसन्निकृत्य ॥
मध्वाज्यलिप्तेनकुठारकेणप्रदक्षिणंशेषमतोऽभिहन्यात् १२ ॥

प्रभातके समय वृक्षको जलसे सींचकर कुठारको शहत औ घी से ...

कर उस कुठारसे ईशानकोण में पहिले वृक्षको काटै पीछे प्रदक्षिण क्रम से शेष वृक्षको काटलेवैं १२ ॥

पूर्वेणपूर्वोत्तरतोऽथवोदक्पतेद्यदावृद्धिकरस्तदास्यात् ॥ आग्नेयकोणात्क्रमशोऽग्निदाहोरुग्रोगरोगास्तुरगक्षयश्च १३ ॥

कटाहुआ वृक्ष जो पूर्व ईशान कोण अथवा उत्तर दिशामें गिरै तो वृद्धि करनेवाला होताहै। अग्निकोण आदि पांच दिशाओंमें गिरे तो क्रमसे अग्निदाह रोग रोग रोग औ घोड़ोंका नाश ये फल होते हैं १३ ॥

यन्नोक्तमस्मिन्वनसंप्रवेशेनिपातविच्छेदनवृक्षगर्भाः ॥ इन्द्रध्वजेवास्तुनिचप्रदिष्टाः पूर्वमयातेत्रतथैवयोज्याः १४ ॥

इतिश्रीवराहमिहिरकृतौबृहत्संहितायांवनसंप्रवेशोनामैकोनषष्टितमोऽध्यायः ५९ ॥

इस बन संप्रवेशाध्यायमें जो हमने नहीं कहा अर्थात् वृक्षके निपात विच्छेदन वृक्ष गर्भ आदिके शुभअशुभफल नहींकहे वे सब पहिले इंद्रध्वजाध्याय औ वास्तुविद्याध्यायमें हम कह आयेहैं उसीभांति यहांभी उनकीयोजना करनी चाहिये अर्थात् वैसाही शुभअशुभफल यहांभीजानै १४ ॥

श्रीवराहमिहिराचार्यकीवनाईबृहत्संहितामेंवनसंप्रवेशनामकउनसठवांअध्यायसमाप्तहुआ ५९ ॥

साठवांअध्याय ॥

प्रतिमाप्रतिष्ठापन ॥

दिशिसौम्यायांकुर्यादधिवासनमण्डपंबुधःप्राग्वा ॥ तोरणचतुष्टययुतंशतद्रुमपल्लवच्छन्नम् १ पूर्वेभागेचित्राःस्रजःपताकाश्चमण्डपस्योक्ताः ॥ आग्नेय्यांदिशिरक्ताःकृष्णाःस्युर्याम्यनैर्ऋतयोः २ श्वेतादिश्यपरस्यांवायव्यायान्तुपाण्डुराएव ॥ चित्राश्चोत्तरपार्श्वेपीताःपूर्वोत्तरेकार्याः ३ ॥

प्रतिष्ठा करने वाला विद्वान् उत्तर दिशामें अथवा पूर्व दिशामें अधिवासन नामक प्रतिमाके संस्कारके लिये मंडप बनावै। वह मण्डप चारों दिशाओंमें चार तोरणों करके युक्तहो औ उत्तम वृक्षोंके कोमल पत्रोंसे ढकाहोय १ उस मंडपकी पूर्व दिशामें पुष्प माला औ पताका चित्रवर्ण की लगावै अग्निकोण में लालरंगकी दक्षिण औ नैर्ऋतकोणमें कृष्णवर्ण २ पश्चिममें श्वेत वायव्य कोणमें पांडुर उत्तरमें चित्रवर्ण औ मंडपके ईशानकोणमें शोभाके लिये पीले रंगकी पुष्पमाला औ पताका लगानी चाहिये ३ ॥

आयुःश्रीवलजयदादारुमयीमृन्मयीतथाप्रतिमा ॥ लोकहिता मणिमयीसौवर्णीपुष्टिदाभवति ४ रजतमयीकीर्तिकरीप्रजाविवृद्धिंक रोतिताम्रमयी ॥ भूलाभन्तुमहान्तंशैलीप्रतिमाऽथवालिंगम् ५ ॥

काष्ठकी औ मृत्तिकाकी देव प्रतिमा आयुष् लक्ष्मी वल औ जय देती है। मणिकी वनाई देवप्रतिमा लोकोंका हित करती है। सुवर्ण की प्रतिमा शरीर पुष्टिदेती है ४ चांदीकी प्रतिमा कीर्तिकरतीहै। तांवेकी देवप्रतिमा संतानकी वृद्धि करती है। शिला अर्थात् पाषाणकी वनी देवप्रतिमा अथवा शिवलिंग वहुत भूमिका लाभ करते हैं ५॥

शंकूपहताप्रतिमाप्रधानपुरुषंकुलंचघातयति ॥
श्वभ्रोपहतारोगानुपद्रवांश्चाक्षयान्कुरुते ६ ॥

शंकु करके उपहत प्रतिमा अर्थात् जिसके किसी अंगमें कील जैसा खड़ा रहजाय वह प्रतिमा मुख्य पुरुषका औ वंशका नाशकरतीहै। औ जिस प्रतिमा में गढ़ाहोय वह असाध्यरोग औ अनेकप्रकारके उपद्रव करती है ६॥

मण्डपस्यमध्येस्थण्डिलमुपलिप्यास्तीर्यसिकतयाऽथकुशैः ॥
भद्रासनकृतशीर्षोपधानपादांन्यसेत्प्रतिमाम् ७ ॥

अधिवासन मंडपके वीच स्थंडिल वनाय उसको गोवर आदिसे लीप उस के ऊपर वालूरेत औ वालूरेतके ऊपर कुशा विछाय प्रतिमाको उसके ऊपर सुलादेवे प्रतिमाका शिर भद्रासन (राजाकासिंहासन) के ऊपररक्खे औ प्रतिमाके पैर उपधानतकिया (अथवा सिराहना) के ऊपररक्खै ७॥

प्लक्षाऽश्वत्थोदुम्बरशिरीपवटसंभवैःकषायजलैः ॥ मंगल्यसंज्ञिताभिःसर्वोषधिभिःकुशाद्याभिः ८ द्विपवृषभोद्धृतपर्वतवल्मीकसरित्समागमतटेषु ॥ पद्मसरःसुचमृद्भिःसपंचगव्यैश्चतीर्थजलैः ९ पूर्वशिरस्कांस्नातांसुवर्णरत्नाम्बुभिश्चससुगन्धैः ॥ नानातूर्यनिनादैःपुण्याहैर्वेदनिर्घोषैः १० ॥

प्लक्ष (पाकर) पीपल गूलर सिरस औ वड़ इनवृक्षोंके पत्तोंका कषायजल (क्वाथ) कुशाको आदि लेकर मंगलनामवाली जया पुनर्नवा विष्णुक्रांता आदि औषधि ८ हाथी औ वृषभकी उखाड़ी मृत्तिका पर्वतकी मृत्तिका वल्मीक की मृत्तिका नदी संगमके तटोंकी मृत्तिका कमलयुक्त सरोवरों की मृत्तिका पंचगव्य सहिततीर्थोंके जल ९ सुवर्ण औरत्नयुक्तजल सुगन्धयुक्त जल इनसव करके प्रतिमाको स्नानकराय उसका शिर पूर्वकीओर करके स्थापनकरै। उस समयभांति२ के तुरहीआदि वाजेवजैं पुण्याहवाचन औ वेदघोष ब्राह्मणकरें१०॥

ऐन्द्र्यांदिशीन्द्रलिंगामंत्राःप्राग्दक्षिणेग्निलिंगाश्च ॥
जप्तव्याद्विजमुख्यैःपूज्यास्तेदक्षिणाभिश्च ११ ॥

उत्तम ब्राह्मण पूर्वदिशामें इन्द्रकेमंत्र औ अग्निकोण में अग्निके मंत्र जपें यजमान उन ब्राह्मणोंका दक्षिणाकरके पूजनकरै ११ ॥

योदेवःसंस्थाप्यस्तन्मन्त्रैश्चानलंद्विजोजुहुयात् ॥ अग्निनिमित्तानिमयाप्रोक्तानीन्द्रध्वजोच्छ्राये १२ धूमाकुलोऽपसव्योमुहुर्मुहुश्चद्ःस्फुलिंगकृन्नशुभः॥ होतुःस्मृतिलोपोवाप्रसर्पणंवाशुभंप्रोक्तम्१३

जिस देवताकी प्रतिष्ठा करनीहो उसकेमंत्रों करके ब्राह्मण अग्निमें हवन करै अग्निके शुभअशुभलक्षण हमने इन्द्रध्वजाध्यायमें कहेहीहैं १२ जो हवन के समय अग्निधूम करके आकुलहोय अपसव्यहो अर्थात् उसकी ज्वालावाईं ओर घूमतीहोयँ मुहुमुहुऐसा शब्दकरै औ उसमें स्फुलिंग (अग्निकण)उड़ें तो वह शुभनहीं होता हवनकरनेवाले का स्मृतिलोप होजाय अर्थात् उसको मंत्र आदि का स्मरण न रहै अथवा उसका प्रसर्पण होय अर्थात् जहां हवन करने पहिले बैठा है वहां से सरकजाय तो भी अशुभ कहाहै १३ ॥

स्नातामभुक्तवस्त्रांस्वलंकृतांपूजितांकुसुमगन्धैः ॥
प्रतिमांस्वास्तीर्णायांशय्यायांस्थापकःकुर्यात् १४॥

प्रतिमाको स्नानकराय नयेवस्त्र पहिनाय भूषण आदिसे अलंकृतकर पुष्प औ गन्ध से उसका पूजनकर उत्तम रीतिसे विछीहुई शय्याके ऊपर उस प्रतिमाको प्रतिष्ठा करनेवाला पुरुष स्थापन करै १४ ॥

सुप्तांसनृत्यगीतैर्जागरणैःसम्यगेवमाधिवास्य ॥
दैवज्ञसंप्रदिष्टेकालेसंस्थापनंकुर्यात् १५ ॥

सोई हुई उस प्रतिमाका नृत्यगीत सहित जागरणों करके इसप्रकार भली भांति अधिवासन कर ज्योतिषी के वतलाये हुये शुभमुहूर्त में उसका स्थापन करै १५ ॥

अभ्यर्च्यकुसुमवस्त्रानुलेपनैःशंखतूर्यनिर्घोषैः ॥ प्रादक्षिण्येननयेदायतनस्यप्रयत्नेन १६ कृत्वाबलिंप्रभूतंसंपूज्यब्राह्मणांश्चसभ्यांश्च ॥ दत्वाहिरण्यशकलंविनिक्षिपेत्पिण्डिकाश्वभ्रे १७ स्थापकदैवज्ञद्विजसभ्यस्थपतीन्विशेषतोऽभ्यर्च्य ॥ कल्याणानांभागीभवतीहपरत्रचस्वर्गी १८ ॥

उस प्रतिमा को पुष्प वस्त्र औ चन्दन आदि अनुलेपनों करके पूजितकर अधिवासन मण्डपसे उठाय प्रासादसे प्रदक्षिण होकर प्रयत्नपूर्वक गर्भगृहमें

होजावै उससमय शंखतूर्य आदि बाजे बजाये जावें १६ वहांजाय बहुत सा सोना देकर ब्राह्मण औ सभ्य अर्थात् उससभा में स्थित मनुष्यों का वस्त्रदक्षिणा आदि से पूजनकर पिंडिका (पीठ) के गढ़ेमें सोनेका टुकड़ाडाल उस के ऊपर प्रतिमाको स्थापनकरै १७ स्थापक (प्रतिष्ठाकरनेवाला) ज्योतिषी ब्राह्मण सभ्य औ स्थपति (कारीगर) इनसबका विशेष पूजनकरै। इसभांति देवप्रतिष्ठा करनेवाला पुरुष इसलोक में कल्याणों का भागी होताहै औ परलोक में स्वर्गवास पाता है १८ ॥

विष्णोर्भागवतान्मगांश्चसवितुःशम्भोःसभस्मद्विजान् मातॄणामपिमण्डलक्रमविदोविप्रान्विदुर्ब्रह्मणः ॥ शाक्यान्सर्वहितस्यशांतमनसोनग्नाञ्जिनानांविदुर्येयंदेवमुपाश्रिताः स्वविधिनातैस्तस्यकार्याःक्रियाः १९ ॥

विष्णुकी प्रतिष्ठा भागवत (वैष्णव) करें। सूर्य की प्रतिष्ठा मग (शाकद्वीपीयब्राह्मण) करें। शिवकी प्रतिष्ठा भस्मधारण करनेवाले ब्राह्मणकरें। ब्राह्मी आदि मातृकाओं की प्रतिष्ठा मण्डलक्रम अर्थात् उनके पूजनका विधान जाननेवाले ब्राह्मणकरें। ब्रह्मा की प्रतिष्ठा वैदिक ब्राह्मणकरें। सर्वहितकी अर्थात् बुद्धकी प्रतिष्ठा शांतचित्तवाले शाक्य (रक्तपट) करें। जिनकी प्रतिष्ठा नग्न (दिगम्बर क्षपणक) करें। जो मनुष्य जिस देवताके उत्तमभक्त होयँ वे उस देवताकी प्रतिष्ठा आदि सब क्रिया स्वकल्पोक्त विधानसे करें १९ ॥

उदगयनेसितपक्षेशिशिरगभस्तौचजीववर्गस्थे ॥ लग्नेस्थिरेस्थिरांशेसौम्यैर्धीधर्मकेन्द्रगतैः २० पापैरुपचयसंस्थैर्ध्रुवमृदुहरितिष्यवायुदेवेषु ॥ विकुजेदिनेऽनुकूलेदेवानांस्थापनंशस्तम् २१ ॥

उत्तरायणहो शुक्लपक्षहो चन्द्रमा बृहस्पति के षड्वर्गमें स्थितहो स्थिरलग्न औ स्थिरनवांशहो सौम्यग्रह पंचम नवमलग्न चतुर्थ सप्तम औ दशम स्थानमें होयँ २० पापग्रह तृतीय षष्ठ दशम औ एकादश स्थानमें होयँ तीनों उत्तरा रोहिणी मृगशिरा रेवती चित्रा अनुराधा श्रवण पुष्य औ स्वाति ये नक्षत्रहोयँ मंगल बिना और बारहोयँ प्रतिष्ठा करनेवालेका अनुकूल दिन होय अर्थात् उनको चन्द्रतारा शुद्धिहोय ऐसे समय में देवस्थापन शुभ है २१ ॥

सामान्यमिदंसमासतोलोकानांहितदंमयाकृतम् ॥
अधिवासनसन्निवेशनेसावित्रेपृथगेवविस्तरात् २२ ॥

इतिश्रीवराहमिहिरकृतौबृहत्संहितायांप्रतिमाप्रतिष्ठापनं नामषष्टितमोऽध्यायः ॥ ६० ॥

यह सर्वदेव साधारण प्रतिमाप्रतिष्ठा विधान लोकों को कल्याण देनेवाला हमने संक्षेप से कहाहै। सूर्य प्रतिमाका अधिवासन औ प्रतिष्ठापन विधान विस्तार पूर्वक पृथक्‌ही है॥ अथवा सावित्र (सौरशास्त्र) में सब देवताओं का अधिवासन औ प्रतिष्ठापन पृथक् २ विस्तारसे कहाहै २१ ॥

श्रीवराहमिहिराचार्यकीबनाईबृहत्संहितामेंप्रतिमाप्रतिष्ठापन नामसाठवांअध्यायसमाप्तहुआ ॥ ६० ॥

इकसठवांअध्याय ॥

गोलक्षण ॥

पराशरःप्राहबृहद्रथायगोलक्षणंयत्क्रियतेततोऽयम् ॥
मयासमासःशुभलक्षणास्ताःसर्वास्तथाप्यागमतोऽभिधास्ये १ ॥

पराशर मुनिने अपने शिष्य बृहद्रथको जो गोलक्षण कहाहै। उस ग्रंथसे हम संक्षेप करते हैं। सबही गौ शुभलक्षण होती हैं तो भी शास्त्रसे उनके शुभ अशुभ लक्षण कहते हैं १ ॥

साश्राविलरूक्षाक्ष्योमूषकनयनाश्चनशुभदागावः॥ प्रचलच्चिपिट विषाणाःकरटाःखरसदृशवर्णाश्च २ दशसप्तचतुर्दन्त्यःप्रलंबमुंडान नाविनतपृष्ठाः॥ ह्रस्वस्थूलग्रीवायवमध्यादारितखुराश्च ३ श्यावाति दीर्घजिह्वागुल्फैरतितनुभिरतिबृहद्भिर्वा ॥ अतिककुदाःकृशदेहानेष्टा हीनाधिकांग्यश्च ४ ॥

जिनगौओंके नेत्र अश्रुओंसे भरे रहें गधलेहोयं औ रूखेहोयं वेगौशुभनहीं होतीं। औ मूषकके समान जिनके नेत्रहोयं वेभीशुभनहीं। जिनके सींगहिलते होयं औ चपटेहोयं वे गौ शुभनहीं। करट अर्थात् काला औ लाल मिलाहुआ जिनका रंगहो औ गर्दभके तुल्य जिनका रंगहो वे गौभी शुभ नहीं होती हैं २ जिनके मुखमें दश सात अथवा चारदांतहों जिनका मुखलंबा औ मुंड अर्थात् शृंगोंसे रहितहो जिनकीपीठझुकीहुईहो जिनकी ग्रीवाछोटी औमोटीहो जिन-का मध्यभागयव के तुल्यहो अर्थात् बीचसे बहुत मोटाहोय जिनके खुरबहुत फटरहेहोयं ३ जिनकी जिह्वाश्याम रंगकी औ बहुतलंबीहो जिनके गुल्फ (टंकने) बहुतछोटेअथवा बहुतबड़ेहोयं जिनका ककुद (थूही) बहुतऊंचाहो जिनका देह सदाकृशरहै औ जिनका कोई अंगहीन अथवा अधिकहो ऐसी गौ शुभनहीं होती हैं ४ ॥

वृषभोऽप्येवंस्थूलातिलम्बवृषणःशिराततक्रोडः ॥ स्थूलशिरा

[illegible]ग्रावडाक्षिस्थानंमेहतेयश्च ५ मार्जाराक्षःकपिलःकरटोवानशुभ
[illegible]द्विजस्यैव ॥ कृष्णोष्ठतालुजिह्वस्त्रसनोयूथस्यनाशकरः ६ ॥

पहिले कहेहुये लक्षणोंकरके युक्तवृषहोय तो वहभी शुभनहींहोता औ स्थूल औ बहुत लंबे हैं वृषण (अंडकोश) जिसके शिरा (नाड़ी) ओं करके व्याप्त है (क्रोड अगले दोनोंपैरों काभाग) जिसका स्थूल शिराओं करके व्याप्त हैं कपोल जिसके तीन स्थानोंसे जो मेहनकरै अर्थात् जिसके दोनोंनेत्रोंसे आंसू टपकें औ शिश्नसे मूत्रगिरै ५ विडालकेसे जिसके नेत्रहों जिसका कपिल अथवा करट (नीलरक्त) रंगहो ऐसा वृष ब्राह्मणकोभी शुभनहीं होता और वर्णों की तो क्या कथाहै। जिसके ओष्ठतालु औ जिह्वाकाले रंगके होयं औ जो वृष त्रसन अर्थात् डरने वालाहो वहजिस यूथमें रहे उस यूथका नाशकरताहै ६ ॥

स्थूलसकृन्मणिशृङ्गःसितोदरःकृष्णसारवर्णश्च ॥
गृहजातोऽपित्याज्योयूथविनाशावहोवृषभः ७

जिसका गोवर मणि (लिंगकाअग्रभाग) औ शृंग स्थूल होयं श्वेतवर्णका पेट होय औ शरीरका रंग कृष्ण औ श्वेत मिलकरहो ऐसा वृषवरमें उत्पन्न हुआहोय तो भी उसका त्याग करना चाहिये। वह यूथका नाशकरनेवाला होता है ७ ॥

श्यामकपुष्पचिताङ्गोभस्माऽरुणसन्निभोविडालाक्षः ॥
विप्राणामपिनशुभंकरोतिवृषभःपरिगृहीतः ८ ॥

जिसके शरीरमें काले फूलपड़ रहेहों भस्मका रंग औलाल रंगमिलाहुआ जिसका रंगहो औ बिल्ली के समान जिसके नेत्रहों ऐसा वृप ग्रहण कियाहुआ ब्राह्मणोंको भी शुभ नहीं होता ८ ॥

येचोद्धरन्तिपादान्पङ्कादिवयोजिताकृशग्रीवाः ॥
काचरनयनाहीनाश्चपृष्ठतस्तेनभारसहाः ९ ॥

जो बैल भारके नीचे जोड़ेहुये ऐसे पैर उठावें जैसे कर्दम में गड़ेहुये पैरों को बड़े यत्नसे उखाड़ते हैं। जिनकी ग्रीवा दुर्बल होय नेत्र काचरे होयं औ पीठ छोटी अथवा दबी हुई होय वे बैल भार उठाने में समर्थ नहीं होतेहैं९॥

मृदुसंहतताम्रोष्ठास्तनुस्फिजस्ताम्रतालुजिह्वाश्च ॥ ह्रस्वतनूच्च श्रवणासुकुक्षयःस्पष्टजङ्घाश्च १० आताम्रसंहतखुराव्यूढोरस्कान्बृहत्ककुद्युक्ताः ॥ स्निग्धश्लक्ष्णतनुत्वग्रोमाणस्ताम्रतनुशृङ्गाः ११ तनुभूस्पृग्वालधयोरक्तान्तविलोचनामहोच्छ्वासाः ॥ सिंहस्कन्धास्तन्वल्पकम्बलाःपूजिताःसुगताः १२ ॥

कोमल मिले हुये औ तांबेके रंगके जिनके ओष्ठहों छोटी स्फिक (कटिस्थमांसपिंड) होंतांबेके रंगके तालु औ जीभहों छोटे पतले औ ऊंचे जिनके कानहों सुन्दर पेटहो सीधी जंघाहोयं १० तांबेके वर्ण औ मिलेहुये खुरहोयं छाती दृढ होय बडा ककुद (थूही) होय स्निग्ध (चिकने) श्लक्ष्ण (कोमल) औ तनु (पतले) जिनके त्वचा औ रोम होयं तांबेके रंगके शरीर औ सींगहोयं ११ पतली औ भूमिको स्पर्शकरनेवाली जिनकी पूंछहो जिनके नेत्रोंके अंत लाल होयं बड़ा श्वास लेने वाले होयं सिंहके से जिनके कंधे होयं पतला औ छोटा जिनका गल कंबल होय औ सुन्दर जिनकी गतिहोय ऐसे वृषभ अच्छे होते हैं १२ ॥

वामावर्तैर्वामेदक्षिणपार्श्वेचदक्षिणावर्तैः ॥
शुभदाभवन्त्यनडुहोजंघाभिश्चैडकनिभाभिः १३ ॥

जिनके वाम भागमें बाईं ओर घूमे हुये आवर्त (भौंरी) औ दक्षिण भाग में दहिनी ओर घूमेहुये आवर्तहों औ जिनकी जंघामेढ़ेकी जंघाओं के समान हों अर्थात् मांससे पूर्णहों ऐसे बैल शुभ होते हैं १३ ॥

वैदूर्यमल्लिकाबुद्बुदेक्षणाःस्थूलनेत्रवर्ष्माणः ॥
पार्ष्णिभिरस्फुटिताभिःशस्ताःसर्वेऽपिभारसहाः १४ ॥

वैदूर्य मणिके तुल्य जिनके नेत्रहोयं मल्लिका पुष्पके समान जिनके नेत्रहों अर्थात् नेत्रोंके बाहिर चारों ओर शुक्ल रेखाहों जलबुद्बुदके समान जिनकेनेत्र हों जिनके नेत्र औ शरीर स्थूलहो खुरके पिछले भाग जिनके फूटेहुये नहोयं येसब बैल शुभ होतेहैं औ भार उठासक्ते हैं १४ ॥

घ्राणोद्देशेसवलिर्मार्जारमुखःसितश्चदक्षिणतः ॥कमलोत्पललाक्षाभःसुवालधिर्वाजितुल्यजवः १५ लम्बैर्वृषणैर्मेषोदरश्चसंक्षिप्तवंक्षणक्रोडः ।। ज्ञेयोभाराध्वसहोजवेऽश्वतुल्यश्चशस्तफलः १६ ॥

जिस बैल की नासिका में वलिपड़ें मार्जार तुल्य के जिसका मुखहो दहिनाभाग जिसका श्वेतहो कमल नीलकमल अथवा लाक्षाके समान जिस की कांतिहो अच्छी पूँछहोय गमनमें घोड़ेकासा वेगहोय १५ लम्बे वृषणहोयँ मेंढ़ेकासा पेटहोय वंक्षण (पिछली जंघाओं वृषणों का मध्यभाग) औ क्रोड़ (अगली जंघाओं का मध्यभाग) जिसके संकुचित होयँ ऐसा बैल भार उठानेमें औ मार्ग चलने में समर्थ होताहै। अश्व के तुल्य जिसका वेगहोय वह बैल शुभही होताहै १६ ॥

सितवर्णःपिङ्गाक्षस्ताम्रविषाणेक्षणोमहावक्त्रः ॥

हंसोनामशुभफलोऽयूथस्यविवर्धनःप्रोक्तः १७

जिस बैलका श्वेतवर्णहो पिङ्गल नेत्रहोयँ तांवे के रंगके शृंग औ नेत्रहोयँ औ मुखहोय उसको हंस कहतेहैं वह शुभ होताहै औ जिसयूथमें रहै उसकी वृद्धि करता है १७॥

भूस्पृग्वालधिराताम्रविषाणोरक्तदृक्ककुद्मीच॥
कल्माषश्चस्वामिनमचिरात्कुरुतेपतिंलक्ष्म्याः १८॥

जिस बैलकी पूँछ भूमिको स्पर्श करती होय तांवे के रंगके जिसके सींग ... ककुद (थूहीं) करके युक्तहो औ जिसका रंग कल्मापहो अर्थात् ... कृष्ण मिलाहोय ऐसा बैल अपने स्वामी को शीघ्रही लक्ष्मीका पति करदताहै १८॥

योवासितैश्चरणैर्यथेष्टवर्णश्चसोऽपिशस्तफलः॥
मिश्रफलोऽपिग्राह्योयदिनैकान्तप्रशस्तोऽस्ति १९॥

इतिश्रीवराहमिहिरकृतौबृहत्संहितायांगोलक्षणं
नामैकपष्टितमोऽध्यायः ६१॥

... बैल होय परन्तु जिसके चारों पैर श्वेत होयँ वह शुभ ही होताहै। जो केवल शुभ लक्षणों वाला बैल न मिलै तो मिश्र फल अर्थात् जिसमें कोई लक्षण शुभ औ कोई अशुभहो ऐसाही बैल लेवै। परन्तु शुभ लक्षण अधिकहोने चाहिये १९॥

श्रीवराहमिहिराचार्यकीवनाईबृहत्संहितामेंगोलक्षणनाम
इकसठवांअध्यायसमाप्तहुआ ६१॥

बासठवांअध्याय।

श्वानलक्षण॥

पादाःपंचनखास्त्रयोऽग्रचरणः षड्भिर्नखैर्दक्षिणस्ताम्रोष्ठाग्रनसो मृगेश्वरगतिर्जिघ्रन्भुवंयातिच॥ लांगूलंससटंदृगृक्षसदृशीकर्णौच लम्बौमृदूयस्यस्युःसकरोतिपोष्टुरचिरात्पुष्टांश्रियंश्वागृहे १॥

जिसकुत्तेके तीन पैर पांच २ नखोंकरके युक्त होयँ औ आगेका दहिनापैर छःनखोंकरके युक्तहो ओष्ठ औ नासिका का अग्र तांवे के तुल्य लालरंगहोयँ सिंहके तुल्य जिसकी गतिहोय औ भूमिको सूँघता हुआ चलै। जिसकी पूंछ सटाकरके युक्त अर्थात् बहुत बालोंसे झबरीहोय रीछकेसे नेत्रहोयँ दोनोंकान लम्बे औ कोमल होयँ ऐसा कुत्ता अपने पोषण करने वाले स्वामी के घर में लक्ष्मी को बढ़ाताहै १॥

पादेपादेपंचपंचाग्रपादेवामेयस्याःषण्नखामल्लिकाक्ष्याः ॥
वक्रंपुच्छंपिङ्गलालम्बकर्णीयासाराष्ट्रंकुक्कुरीपातिपोष्टुः २ ॥
इतिश्रीवराहमिहिरकृतौवृहत्संहितायांश्वलक्षणं
नामद्वाषष्टितमोऽध्यायः ६२ ॥

जिस कुत्तीके तीन पैरोंमें पांच २ नखहोयँ औ अगले वांयें पैरमें छनखहोयँ औ मल्लिकाक्षी होय अर्थात् जिसके नेत्रोंके बाहिर मल्लिका पुष्पकीसी श्वेत रेखाहोयँ पूँछ टेढ़ाहोय पिंगलवर्णहोय औ लम्बेकान होयँ ऐसी कुत्ती अपना पोषण करनेवाले राजाके राज्यकी रक्षा करतीहै २ ॥

श्रीवराहमिहिराचार्यकीवनाईबृहत्संहितामेंश्वलक्षणनाम
वासठवांअध्यायसमाप्तहुआ ६२ ॥

तरेसठवांअध्याय ॥

कुक्कुटलक्षण ॥

कुक्कुटस्त्वृजुतनूरुहांगुलिस्ताम्रवक्त्रनखचूलिकःसितः ॥
रौतिसुस्वरमुषात्ययेचयोवृद्धिदःसनृपराष्ट्रवाजिनाम् १ ॥

जिस कुक्कुट (मुर्गा) के पक्ष औ अंगुली सीधीहोयँ मुखनख औ चोटीजिस के तांबेके समान लालरंग होयँ श्वेत वर्णहोयं रात्रिकी समाप्तिमें अच्छेस्वरसे बोलै ऐसा कुक्कुट राजाके राज्य औ घोड़ोंकी वृद्धि करताहै १ ॥

यवग्रीवोयोवाबदरसदृशोवापिविहगोवृहन्मूर्धावर्णैर्भवतिबहुभिर्य श्चरुचिरः ॥ सशस्तःसंग्रामेमधुमधुपवर्णश्चजयकृन्नशस्तोऽतो योऽन्यःकृशतनुरवःखंजचरणः २ ॥

जिसकुक्कुटकी ग्रीवा जौके आकार हो पकेहुये वदरीफल (वेर) के तुल्य जिसका लालरंग होय वड़ा मस्तकहोय वहुतसे श्वेतपीत रक्त कृष्ण आदि वर्णोंकरके युक्तहोय औ सुन्दर होय ऐसा कुक्कुट युद्धमें शुभहोता है। शहद के तुल्य जिसका रंगहो अथवा भ्रमरके तुल्य जिसका रंगहो वह कुक्कुट भी युद्ध में जय करता है। इससे भिन्न जो और भांति कुक्कुट होय वह शुभ नहींहोता। औ जिसका शरीर कृशहोय शब्द मन्दहोय औ पैर से लंगड़ाहोय वह कुक्कुट भी शुभ नहीं होता २ ॥

कुक्कुटीचमृदुचारुभाषिणीस्निग्धमूर्तिरुचिराननेक्षणा ॥
सादादातिसुचिरंमहीक्षितांश्रीयशोविजयवीर्यसम्पदः ३ ॥
इतिश्रीवराहमिहिरकृतौवृहत्संहितायांकुक्कुटलक्षणं
नामत्रिषष्टितमोऽध्यायः ॥ ६३ ॥

जो कुक्कुटी (मुर्गी) मृदु औ सुन्दर शब्दकरै शरीर जिसका स्निग्ध होय मुख औ नेत्र सुन्दर होयँ ऐसी कुक्कुटी राजाओंको चिरकालपर्यन्त लक्ष्मी यश विजय बल औ संपत्ति देती है ३ ॥

श्रीवराहमिहिराचार्यकीबनाईवृहत्संहितामेंकुकुटलक्षण
नामतरेसठवांअध्यायसमाप्तहुआ ॥ ६३ ॥

चौंसठवांअध्याय ॥

कूर्मलक्षण ॥

स्फटिकरजतवर्णोनीलराजीविचित्रः कलशसदृशमूर्तिश्चारुवंशश्चकूर्मः ॥ अरुणसमवपुर्वासर्षपाकारचित्रःसकलनृपमहत्त्वंमंदिरस्थःकरोति १ ॥

जो कूर्म (कछुआ) स्फटिक अथवा चांदी के तुल्य शुक्लवर्णहो औ नीली रेखाओं करके चित्रितहोय कलश के समान जिसका आकारहोय सुन्दर जिस का वंश (पीठकीहड्डी) हो। अथवा लालरंगका कूर्म होय औ सर्षपसे बिंदुओं करके चित्रित होय ऐसा कूर्मघरमें स्थितहोय तो सब राजाओं में महत्त्व (बड़ाई) करता है १ ॥

अंजनभृङ्गश्यामतनुर्वाविन्दुविचित्रोऽव्यङ्गशरीरः ॥
सर्पशिरावास्थूलगलोयःसोपिनृपाणांराष्ट्रविवृद्ध्यै २ ॥

अंजन अथवा भ्रमर के तुल्य जिस कूर्म का श्याम शरीर होय औ बिंदुओं करके विचित्रहो सब अंग पूर्णहोयँ सर्पके समान जिसका शिर होय औ गला स्थूल होय ऐसा कूर्म राजाओंका राज्य बढ़ाने के लिये होता है २ ॥

वैदूर्यत्विट्स्थूलकण्ठस्त्रिकोणोगूढच्छिद्रश्चारुवंशश्चशस्तः ॥
क्रीडावाप्यांतोयपूर्णेमणौवाकूर्मःकार्योमङ्गलार्थंनरेन्द्रैः ३ ॥

इतिश्रीवराहमिहिरकृतौवृहत्संहितायांकूर्मलक्षणंनाम
चतुःषष्टितमोऽध्यायः ॥ ६४ ॥

जिस कूर्म की वैदूर्य मणि के समान कांति होय कण्ठस्थूल होय त्रिकोण आकार होय सब छिद्र उसके गुप्त होयँ औ पृष्ठवंश सुन्दर होय ऐसे कूर्म को मंगल के लिये राजा अपनी क्रीडा वापी में अथवा जल से भरे बड़े मट के में रक्खै ३ ॥

श्रीवराहमिहिराचार्यकीबनाईवृहत्संहितामेंकूर्मलक्षण
नामचौंसठवांअध्यायसमाप्तहुआ ॥ ६४ ॥

पैंसठवां अध्याय ॥

छागलक्षण ॥

छागशुभाशुभलक्षणमभिधास्येनवदशाष्टदन्तास्ते ॥
धन्याःस्थाप्यावेश्मनिसंत्याज्याःसप्तदन्ताये १ ॥

अब बकरे का शुभ अशुभ लक्षण कहते हैं। जिसके नव दश अथवा आठ दांत होयँ वे छाग शुभ होते हैं औ घरमें रखने चाहिये। जिनके सातदांतहोयँ उनको न रक्खै वे अशुभ होते हैं १ ॥

दक्षिणपार्श्वेमण्डलमसितंशुक्लस्यशुभफलंभवति ॥
ऋष्यनिभकृष्णलोहितवर्णानांश्वेतमपिशुभदम् २ ॥

श्वेतरंगका छाग होय औ उसके दहिने पार्श्व में काले रंगका मंडल होय तो शुभ होता है। जिस छागका रंग ऋष्य मृगके तुल्य नीला हो काला हो अथवा लालहो उसके दक्षिण पार्श्वमें श्वेतमण्डल भी शुभहोताहै २ ॥

स्तनवदवलम्बतेयःकण्ठेऽजानांमणिःसविज्ञेयः ॥
एकमणिःशुभफलकृद्धन्यतमाद्वित्रिमणयोये ३ ॥

छागोंके गलेमें जो स्तनकी भांति लटकताहै उसको मणि कहतेहैं। जिस छागके एक मणि हो वह शुभफल करताहै। औ जिनके दो अथवा तीनमणि होयँ वे छागतो बहुतही शुभहोते हैं ३ ॥

मुण्डाःसर्वेशुभदाःसर्वसिताःसर्वकृष्णदेहाश्च ॥
अर्धाऽसिताःसितार्धाःधन्याःकपिलार्धकृष्णाश्च ४ ॥

मुण्ड अर्थात् जिनके सींग न होयं ऐसे सब छाग शुभ होतेहैं। जिनका सब शरीरश्वेतहो अथवा सब शरीर कृष्णहो वे छाग शुभहोते हैं। जो छागआधे काले औ आधे श्वेतहोयं वे शुभ होते हैं। जो छाग आधे कपिल औ आधे कृष्णहोयं वेभी शुभ होते हैं ४ ॥

विचरतियूथस्याग्रेप्रथमंचाऽम्भोऽवगाहतेयोऽजः ॥
सशुभःसितमूर्धावामूर्धनिवाकृत्तिकायस्य ५ ॥

जो छाग अपने यूथ के आगेचले औ सब से पहिले जल में घुसै वह शुभ होता है। अथवा जिसका शिर श्वेत होय अथवा जिस के शिर में कृत्तिका नक्षत्रकी भांति टीका होय अर्थात् छः विंदु होयँ वह शुभ होता है। ऐसे छाग को कुट्टक कहते हैं ५ ॥

सपृषतकण्ठशिरावातिलपिष्टनिभश्चताम्रदृक्शस्तः ॥
कृष्णचरणःसितोवाकृष्णोवाश्वेतचरणोयः ६ ॥

जो छाग उत्तमरंग औ कण्ठ मणियों करके युक्त होयँ मुण्ड अर्थात् विना सींगों के होयँ औ जिनके लाल नेत्रहोयँ वे छाग मनुष्योंके घरमें शुभहोतेहैं। औ सुखयश औ लक्ष्मीको करते हैं ११॥

श्रीवराहमिहिराचार्यकी बनाईबृहत्संहितामेंछागलक्षण
नामपैंसठवांअध्यायसमाप्तहुआ ६५॥

छियासठवांअध्याय॥

अश्वलक्षण॥

दीर्घग्रीवाऽक्षिकूटस्त्रिकहृदयपृथुस्ताम्रताल्वोष्ठजिह्वः सूक्ष्मत्वक्केशवालःसुशफगतिमुखोह्रस्वकर्णोष्ठपुच्छः॥ जंघाजानूरुवृत्तःसमसितदशनश्चारुसंस्थानरूपो वाजीसर्वाङ्गशुद्धोभवतिनरपतेःशत्रुनाशायनित्यम् १॥

जिसघोड़ेकी ग्रीवा औ अक्षिकूट अर्थात् नेत्रोंका कोश दीर्घ होयँ त्रिक (कटिभाग) औ हृदय विस्तीर्ण होयँ तालु ओष्ठ औ जिह्वा तांबे के तुल्य लाल रंगकेहोयँ शरीरकी त्वचा मस्तकके केश औ पूँछके वाल सूक्ष्महोयँ शफ(सुम्म) गति औ मुखसुन्दर होयँ कान ओष्ठ औ पूँछ ह्रस्व अर्थात् छोटे होयँ यहांपुच्छ शब्दकरके पूँछके बीचकी हड्डी का ग्रहण होताहै। जंघा जानु औ ऊरु जिसके गोल होयँ सम (बराबर) औ श्वेतदन्त होयँ जिसका आकार औ रूप सुन्दरहोय ऐसा घोड़ाहोय औ वहसर्वांग शुद्धहोय अर्थात् किसी अंगमें कोई अशुभ आवर्त न होय वह घोड़ा जिस राजाके होय नित्य उसके शत्रुओंका नाश करताहै१॥

अश्रुपातहनुगण्डहृद्गलप्रोथशंखकटिवस्तिजानुनि॥
मुष्कनाभिककुदेतथागुदेसव्यकुक्षिचरणेषुचाशुभाः २॥

अश्रुपात जहांआंसूगिरें अर्थात् नेत्रोंका अधोभाग हनुमुखगंड (कपोल) हृदय गल प्रोथ (नासिकाका अधोभाग) शंख (कनपटी कर्णके समीप) कटि वस्ति (नाभिलिंगका मध्यभाग) जानु अंडकोश नाभि ककुद (बाहुके पृष्ठभागमें कृकाटिकाके समीप) गुदा दक्षिण कुक्षि औ पैर इनमें जो आवर्त (भौंरी) होयं वे अशुभ होते हैं २॥

येप्रपानगलकर्णसंस्थिताःपृष्ठमध्यनयनोपरिस्थिताः॥
ओष्ठसक्थिभुजकुक्षिपार्श्वगास्तेललाटसहिताःसुशोभनाः ३॥

जो आवर्त (भौंरी) प्रपान (ऊपरके ओष्ठका तल) कंठ कर्ण पीठिका मध्यभाग नेत्रोंके ऊपर भ्रुवोंके समीप ओष्ठ सक्थि (पिछलाभाग) भुज (अगलेपैर) वामकुक्षि पार्श्व औ ललाट इनस्थानोंमें होयँ वे शुभहोते हैं ३॥

तेषांप्रधानएकोललाटकेशेषुचध्रुवावर्त्तः ॥
रन्ध्रोपरन्ध्रमूर्धनिवक्षसिचेतिस्मृतौद्वौद्वौ ४ ॥

दश आवर्त घोड़ोंके शरीरमें ध्रुव अर्थात् अवश्यहोतेहैं उनको ध्रुवावर्त्तकहते हैं। उनमें एक आवर्त प्रधान (ऊपरकेओष्ठका अधोभाग) में औ केशोंके नीचे ललाटमें एक आवर्त होताहै। रंध्र (कुक्षिऔ नाभिकामध्यभाग) उपरंध्र (रंध्र से ऊपर) मस्तक औ छाती इनचार स्थ नें दो दो आवर्त होते हैं इसभांतिये दशध्रुवावर्त हैं ४ ॥

षड्भिर्दन्तैःसिताभैर्भवतिहयशिशुस्तैःकषायैर्द्विवर्षःसंदंशैर्मध्यमान्त्यैःपतितसमुदितैस्त्र्यब्दिपञ्चाब्दिकोऽश्वः॥संदंशानुक्रमेणत्रिकपरिगणिताःकालिकापीतशुक्लाः काचामाक्षीकशङ्खाछिद्रंचलनमतोदन्तपातंचविद्धि ५ ॥

इतिश्रीवराहमिहिरकृतौबृहत्संहितायामश्वलक्षणं
नामषट्षष्टितमोऽध्यायः ६६ ॥

घोड़ोंकी दंतपंक्तिमें दोदंष्ट्रा (दाढ़) ओंकेबीचके छःदांत घोड़ेकी अवस्था बताते हैं। ऊपरकी औ नीचेकी दोनों दंतपंक्तियों में जो वे छःदांत श्वेतवर्ण होवैं तो एकवर्षका बछेराहोताहै। वेहीछःदांत कषायरंग (कालाऔलालमिला) के होवें तो दोवर्षका घोड़ाहोता है। दोनों दंतपंक्तियों में बीचके समान दो २ दांत संदंशकहातेहैं संदंशोंकेदोनोंओरका एक२ दांतमध्य औ मध्योंके दोनोंओर का एक २ दांतअंत्यकहाताहै। संदंशगिरकर फिर जमे होयँ तो तीनवर्ष का अश्व मध्य गिरकर फिर जमेहोयँ तो चार वर्षका औ अंत्यगिरकर फिर जमे होयँ तो पांच वर्षका अश्व होताहै। संदंशके अनुक्रमसे कालिका आदि रंगों करके तीन २ वर्ष कहते हैं। इसका यह तात्पर्य है कि संदंशोंकेऊपर कालिका (कालेबिंदु) होय तो छःवर्ष मध्यमों के ऊपर कालिका होयतो सातवर्ष औ अंत्योंके ऊपर कालिकाहोय तो आठवर्ष अश्वकी अवस्थाजानो। इसीप्रकार संदंशोंपर पीतविन्दुहोयँ तो नौवर्ष मध्यों पर पीतविन्दु होयं तो दशवर्ष अंत्योंपर पीतविंदुहोयं तो ग्यारह वर्षजानो। संदंश आदिके ऊपर शुक्ल विन्दु होनेसे बारह तेरह औ चौदह वर्ष क्रमसेजानो संदंश आदिके ऊपर काचकेरंग विंदुहोनेसे पंद्रह सोलह औ सत्रह वर्ष क्रमसे जानो। माक्षीक (शहत) के रंग बिन्दुहोने से क्रमपूर्वक अठारह उन्नीस औ बीसवर्ष जानो संदंश आदिके ऊपर शंखरंग बिंदु होनेसे इक्कीस बाईस औ तेईस वर्षक्रमसेजानो। संदंश आदिमें छिद्र होने से क्रमपूर्वक चौबीस पचीस औ छब्बीस वर्षजानो संदंश आदि के हिलने से क्रमपूर्वक सत्ताईस अट्ठाईस औ उनतीसवर्ष जानो औ

संदंश आगे दांतों के गिरने से अर्थात् संदंश गिरजाय तो तीसवर्ष मध्यागिर जायंते हैकतीसवर्ष औ अंत्य गिरजायँ तो बत्तीसवर्ष अश्वका आयुष् होता है यहजा०। घोड़ों का पर मायुष् बत्तीसवर्ष है इसलिये बत्तीसवर्षपर्यन्त अवस्था जानने्के चिह्न लिखे हैं ५ ॥

श्रीवराहमिहिराचार्यकीवनाईबृहत्संहितामेंअश्वलक्षणनाम छियासठवांअध्यायसमाप्तहुआ ६६ ॥

सतसठवांअध्याय ॥

हस्तिलक्षण ॥

मध्वाभदन्ताःसुविभक्तदेहानचोपदिग्धाश्चकृशाःक्षमाश्च ॥
गात्रैःसमैश्चापसमानवंशावराहतुल्यैर्जघनैश्चभद्राः १

चारि जातिके हाथी होतेहैं भद्र मंद मृग औ संकीर्ण अब इनके क्रमसे लक्षण कहतेहैं । जिन हाथियों के दांत शहतके रंगहोयं शरीरके सब अंगभली भांति विभक्तहोयं न बहुत स्थूल औ न दुर्बल जिनका देह होय क्षमअर्थात् कार्य के योग्यहोयं तुल्य अंगोंकरके युक्तहोयं धनुषके आकार जिनका पृष्ठवंश (पीठकी हड्डी) होय औ सूकरके तुल्य जिनके जघन (कटिभाग) होयं अर्थात् वर्तुलहोयं वे हाथी भद्रजातिके होते हैं १ ॥

वक्षोऽथकक्षावलयःश्लथाश्चलम्बोदरस्त्वग्बृहतीगलश्च ॥
स्थूलाचकुक्षिःसहपेचकेनसैंहीचदृङ्मन्दमतङ्गजस्य २ ॥

मंदजातिके हाथीकी छाती औ मध्यभागकी वलि ढीली होती है पेटलंबा होता है चर्म औ कंठ स्थूल होतेहैं कुक्षि औ पेचक (पुच्छमूल) भी स्थूलहोता है औ सिंहके समान दृष्टि होती है ॥ यहमंदका लक्षणहै २ ॥

मृगास्तुह्रस्वाधरबालमेढ्रास्तन्वंघ्रिकण्ठद्विजहस्तकर्णाः ॥
स्थूलेक्षणाश्चेतियथोक्तचिह्नैःसंकीर्णनागाव्यतिमिश्रचिह्नाः ३ ॥

मृग जातिके हाथियोंके नीचेका ओष्ठ पुच्छके बाल औ मेढ्र (लिंग) छोटे होते हैं । पैर कंठ दांत शुंड औ कर्णभी छोटेहोतेहैं । नेत्रबड़ेहोते हैं । ये मृगके लक्षणहैं । इनतीन जातिके हाथियोंके जो चिह्नकहे वे सब चिह्न जिनहाथियोंमें मिलतेहोयं वे संकीर्ण जातिके हाथी होते हैं ३ ॥

पञ्चोन्नतिःसप्तमृगस्यदैर्घ्यमष्टौचहस्ताःपरिणाहमानम् ॥
एकद्विवृद्धावथमन्दभद्रौसंकीर्णनागोऽनियतप्रमाणः ४ ॥

मृगजातिके हाथीकी उँचाई पांचहाथ पुच्छ मूलसेलेकर मस्तकके कुम्भ तक लम्बाई सातहाथ औ परिणाह अर्थात् मध्य भागकी मोटाई आठ हाथ

होते हैं। एक हाथ बढ़ानेसे मन्दका औ दो हाथ बढ़ाने से भद्रका प्रमाण होताहै अर्थात् छः हाथ उँचाई आठहाथ लम्बाई औ नौ हाथ परिणाह मन्द जाति के हाथीका होताहै। औ सातहाथ उँचाई नौहाथ लम्बाई औ दशहाथ परिणाह भद्रजातिके हाथीका होताहै। संकीर्ण जातिके हाथियोंकी उंचाई आदिका कुछ नियम नहीं है। वे अनियत प्रमाण होते हैं ४ ॥

भद्रस्यवर्णोहरितोमदस्यमन्दस्यहारिद्रकसन्निकाशः ॥
कृष्णोमदश्चाऽभिहितोमृगस्यसंकीर्णनागस्यमदोविमिश्रः५॥

भद्रजाति के हाथीका मद हरेरंगका होताहै मन्द जातिके हाथीका मद हल्दीके समान पीलेरंगका औमृगजातिके हाथीकामद कालेरंगका होताहै ॥ संकीर्णजातिके हाथीका मद मिश्रवर्ण होताहै अर्थात् कईरंग उसमें होतेहैं५॥

ताम्रोष्ठतालुवदनाःकलविङ्कनेत्राःस्निग्धोन्नताग्रदशनाःपृथुलायताम्याः ॥ चापोन्नतायतनिगूढनिमग्नवंशास्तन्वेकरोमचितकूर्मसमानकुम्भाः ६ विस्तीर्णकर्णहनुनाभिललाटगुह्याःकूर्मोन्नतद्विनवविंशतिभिर्नखैश्च ॥ रेखात्रयोपचितवृत्तकराःसुवालाधन्याःसुगन्धिमदपुष्करमारुताश्च ७ ॥

जिन हाथियों के ओष्ठ तालु औ मुख तांबे के समान लालरंगहोयं नेत्र कलविंक पक्षी (घरोंमें रहनेवालीचिड़िया) के समहोयं स्निग्ध औ ऊंचे अग्रभाग करके युक्त दांत होयं विस्तीर्ण औ लम्बा मुखहोय धनुषके समान ऊंचा दीर्घ निगूढ औ निमग्न पृष्ठवंश होय कूर्म के समान कुम्भहोयं जिन कुम्भों के रोम कूपोंमें एक २ सूक्ष्मरोम होयं ६ कर्ण हनु नाभिललाट गुह्य (लिंग) विस्तीर्ण होयँ कूर्म के समान मध्यसे ऊंचे अठारह अथवा वीस नख होयं खड़ी तीनरेखाओं करके युक्त औ गोल शुण्ड होयं जिनकामद औ पुष्कर (शुंडकाअग्रभाग) का पवन अर्थात् शुंडसे जो पवन निकले वह सुगन्धयुक्त होय ऐसे हाथी उत्तम होते हैं ७ ॥

दीर्घाऽङ्गुलिरक्तपुष्कराःसजलाऽम्भोदनिनादबृंहिणः ॥
बृहदायतवृत्तकन्धराधन्याभूमिपतेर्मतङ्गजाः ८ ॥

शुंडके अग्रको पुष्कर कहते हैं औ पुष्कर के आगे अंगुली होती है। जिन हाथियों की अंगुली दीर्घ होय पुष्कर लालरंगका होय जलसे भरे मेघके गर्जनेकी भांति जिनका बृंहित (हाथीकेगलकाशब्द) होय बड़ी दीर्घ औ गोल जिनकी ग्रीवाहोय ऐसे हाथी राजाके लिये शुभ होते हैं ८ ॥

निर्मदाभ्यधिकहीननखांगान्कुब्जवामनकमेषविषाणान् ॥ ...

कोशफलपुष्करहीनान्श्यावनीलशबलाऽसिततालून् ९ स्वल्पवक्त्ररुहमत्कुणषण्ढान्हस्तिनींचगजलक्षणयुक्ताम् ॥ गर्भिणींचनृपतिः परदेशंप्रापयेदतविरूपफलास्ते १० ॥

श्रीवराहमिहिरकृतौबृहत्संहितायांहस्तिलक्षणंनामसप्तषष्टितमोऽध्यायः ६७ ॥

जो हाथीकभी मस्त न होयं जिनके नख अथवा अंगहीन अधिक होयं अर्थात् नख अठारहसे न्यून अथवा बीससे अधिकहों अंगभी शरीरकी अपेक्षा छोटे बड़े होयं जो हाथी कुब्जहोयं मेढ़के सींगोंके तुल्य जिनकेदांत होयं जिनके अंडकोश देख पड़ते होयं पुष्करसे हीन होयं श्यावरंग नीलरंग चित्रवर्ण औ कालेरंग का जिनकातालु होय ९ छोटेदांत होयं जो हाथी मत्कुण होयं षंढ होयं इन सबको औ जो हथिनी हाथीके लक्षणों करके युक्त होय अर्थात् बड़े २ दांत उसके होयं मस्त होती होय इत्यादि औ जो हथिनी गर्भिणी होजाय उसको राजा अपने राज्यसे बाहिर भेजदेवै। ये जो राज्यमें रहैं तो बहुत बुरा फल करते हैं ॥ जिसहाथी के छाती औ जघनसंकुचित होयं पीठ ऊंची होय प्रमाणसे हीन होय औनाभि जिसकी ऊंची हो वह हाथी कुब्ज कहाता है। जिसकी लम्बाई औ परिणाह तो ठीकहो परन्तु उँचाई बहुतही न्यूनहो उस हाथीको वामन कहतेहैं। जिसमें संपूर्ण लक्षण ठीक २ होयँ परन्तु दांत न होयँ वह हाथी मत्कुण (मकना) कहाताहै। चलनेके समय जिस हाथी के पैर मिलते होयँ उसको षंढ कहते हैं १० ॥

श्रीवराहमिहिराचार्यकीबनाईबृहत्संहितामेंहस्तिलक्षणनाम सतसठवांअध्यायसमाप्तहुआ ६७ ॥

अठसठवांअध्याय ॥

पुरुषलक्षण ॥

उन्मानमानगतिसंहतिसारवर्णस्नेहस्वरप्रकृतिसत्वमनूकमादौ ॥ क्षेत्रंमृजांचविधिवत्कुशलोऽवलोक्यसामुद्रविद्वदतियातमनागतंच १

उन्मान (अंगुलात्मकउच्चता) मान (तोल) गमन संहति (अंगसंधियों कीसुश्लिष्टता) सार वर्ण शब्द प्रकृति सत्व एकप्रकारका चित्तका धर्म जिस के होनेसे कभी विषाद और भय नहींहोता (अनूक (पूर्वजन्म) क्षेत्र जो दश प्रकारके पादआदि आगेकहेंगे मृजा (पंचमहाभूतमयीशरीरछाया) इनसब बातोंको सामुद्रिक शास्त्रजाननेवाला चतुरपुरुष पहिले देखकर मनुष्यों को व्यतीत औ भविष्य शुभ अशुभ फल कहसकता है १ ॥

अस्वेदनौमृदुतलौकमलोदराभौश्लिष्टांगुलीरुचिरताम्रनखौस

पार्ष्णी ॥ उष्णौशिराविरहितौसुनिगूढगुल्फौकूर्मोन्नतौचचरणौमनुजेश्वरस्य २ ॥

स्वेद (पसीना) से हीन कोमलतलोंकरकेयुक्त कमल के मध्यभाग के समान कांतिवाले परस्पर मिलीहुई अंगुलियोंकरकेयुक्त चमकदार औ लाल रंगके नखोंकरकेयुक्त सुन्दर एड़ियोंवाले उष्ण (गरम) शिराओंकरकेरहित (जिनमें नाड़ी न देखपड़ें) निगूढ़ गुल्फ (जिनकेटंकनेऊंचेनहोयँ) औ कूर्मके समान ऊपरसेऊंचे ऐसेचरण राजाकेहोतेहैं। अर्थात् जिसपुरुष के चरण इन लक्षणों करके युक्तहों वह राजाहोता है २ ॥

शूर्पाकारविरूक्षपांडुरनखौवक्रौशिरासन्ततौसंशुष्कौविरलांगुलीचचरणौदारिद्र्यदुःखप्रदौ ॥ मार्गायोत्कटकौकषायसदृशौवंशस्यविच्छित्तिदौ ब्रह्मघ्नौपरिपक्वमृद्द्युतितलौपीतावगम्यारतौ ३ ॥

शूर्प (छाज) के आकार आगेसे चौड़े श्वेतरंगके नखोंकरकेयुक्त टेढ़ेनाड़ियों से व्याप्त सूखे औ विरल अंगुलियों करकेयुक्त चरणहोयँ तो दारिद्र्य औ दुःख देते हैं। मध्यसे ऊंचे मण्डक के आकार चरणहोयँ तो सदामार्गमें चलातेहैं। कषायरंग (थोड़ेसेलाल) के चरण होयँ तो वंशका विच्छेद करते हैं अर्थात् जिस पुरुष के कषाय रंग के चरण होयँ उसका वंश नहीं चलता। परिपक्व (अग्निमेंपकीहुई) मृत्तिकाके तुल्य जिसके पादतलों की कांति होय वह पुरुष ब्रह्म हत्या करता है। औ पीले रंगके चरण जिस पुरुषके होयँ वह अगम्यास्त्री में आसक्त होता है ३ ॥

प्रविरलतनुरोमवृत्तजंघाद्विरदकरप्रतिमैर्वरोरुभिश्च ॥
उपचितसमजानवश्चभूपाधनरहिताःश्वशृगालतुल्यजंघाः ४ ॥

विरल औ सूक्ष्म रोमों करके युक्त औ वर्तुल जिनकी जंघा होयँ हाथीकी शुण्डके समान जिनके सुन्दर ऊरुहोयँ मांसयुक्त औ समान जिनके जानुहोयँ वे राजाहोतेहैं स्वान औ शृगालके तुल्य जिनकी जंघाहोयँ वे धनहीनहोतेहैं ४ ॥

रोमैकैकंकूपकेपार्थिवानांद्वेद्वेज्ञेयेपण्डितश्रोत्रियाणाम् ॥
त्र्याद्यैर्निःस्वामानवादुःखभाजःकेशाश्चैवंनिन्दिताःपूजिताश्च५

जिनकी जंघाओं के रोमकूपों में एकएक रोम होय वे राजा होते हैं जिनके एक रोमकूपमें दो२ रोम होयँ वे पण्डित औ श्रोत्रिय होतेहैं। जिनके एक२ रोम कूपमें तीन२ चार२ आदि रोमहोयँ वे मनुष्य निर्धन औ दुःखी होतेहैं। इसीभांति मस्तक के केशोंका भी शुभअशुभफलजानै ५ ॥

निर्मांसजानुर्म्रियतेप्रवासेसौभाग्यमल्पैर्विकटैर्दरिद्राः ॥

कोशफलपुष्करहीनान्श्यावनीलशबलाऽसिततालून् ९ स्वल्पवक्त्ररुहमत्कुणषण्ढान्हस्तिनींचगजलक्षणयुक्ताम् ॥ गर्भिणींचनृपतिः परदेशंप्रापयेदतविरूपफलास्ते १० ॥

श्रीवराहमिहिरकृतौबृहत्संहितायांहस्तिलक्षणंनामसप्तषष्टितमोऽध्यायः ६७ ॥

जो हाथीकभी मस्त न होयं जिनके नख अथवा अंगहीन अधिक होयं अर्थात् नख अठारहसे न्यून अथवा बीससे अधिकहों अंगभी शरीरकी अपेक्षा छोटे बड़े होयं जो हाथी कुब्जहोयं मेढ़के सींगोंके तुल्य जिनकेदांत होयं जिनके अंडकोश देख पड़ते होयं पुष्करसे हीन होयं श्यावरंग नीलरंग चित्रवर्ण औ कालेरंग का जिनकातालु होय ९ छोटेदांत होयं जो हाथी मत्कुण होयं पंढ होयं इन सबको औ जो हथिनी हाथीके लक्षणों करके युक्त होय अर्थात् बड़े २ दांत उसके होयं मस्त होती होय इत्यादि औ जो हथिनी गर्भिणी होजाय उसको राजा अपने राज्यसे बाहिर भेजदेवै। ये जो राज्यमें रहैं तो बहुत बुरा फल करते हैं॥ जिसहाथी के छाती औ जघनसंकुचित होयं पीठ ऊंची होय प्रमाणसे हीन होय औनाभि जिसकी ऊंची हो वह हाथी कुब्ज कहाता है। जिसकी लम्बाई औ परिणाह तो ठीकहो परन्तु उँचाई बहुतही न्यूनहो उस हाथीको वामन कहतेहैं। जिसमें संपूर्ण लक्षण ठीक २ होयँ परन्तु दांत न होयँ वह हाथी मत्कुण (मकना) कहाताहै। चलनेके समय जिस हाथी के पैर मिलते होयँ उसको पंढ कहते हैं १० ॥

श्रीवराहमिहिराचार्यकीबनाईबृहत्संहितामेंहस्तिलक्षणनाम सतसठवांअध्यायसमाप्तहुआ ६७ ॥

अठसठवांअध्याय ॥

पुरुषलक्षण ॥

उन्मानमानगतिसंहतिसारवर्णस्नेहस्वरप्रकृतिसत्वमनूकमादौ ॥ क्षेत्रंमृजांचविधिवत्कुशलोऽवलोक्यसामुद्रविद्वदतियातमनागतंच १

उन्मान (अंगुलात्मकउच्चता) मान (तोल) गमन संहति (अंगसंधियों कीसुश्लिष्टता) सार वर्ण शब्द प्रकृति सत्व एकप्रकारका चित्तका धर्म जिस के होनेसे कभी विषाद और भय नहींहोता (अनूक (पूर्वजन्म) क्षेत्र जो दश प्रकारके पादआदि आगेकहेंगे मृजा (पंचमहाभूतमयीशरीरछाया) इनसब बातोंको सामुद्रिक शास्त्रजाननेवाला चतुरपुरुष पहिले देखकर मनुष्यों को व्यतीत औ भविष्य शुभ अशुभ फल कहसकता है १ ॥

अस्वेदनौमृदुतलौकमलोदराभौश्लिष्टांगुलीरुचिरताम्रनखौस

पार्ष्णी ॥ उष्णौशिराविरहितौसुनिगूढगुल्फौकूर्मोन्नतौचचरणौमनुजेश्वरस्य २ ॥

स्वेद (पसीना) से हीन कोमलतलोंकरकेयुक्त कमल के मध्यभाग के समान कांतिवाले परस्पर मिलीहुई अंगुलियोंकरकेयुक्त चमकदार औ लाल रंगके नखोंकरकेयुक्त सुन्दर एड़ियोंवाले उष्ण (गरम) शिराओंकरकेरहित (जिनमें नाड़ी न देखपड़ें) निगूढ गुल्फ (जिनकेटंकनेऊंचेनहोयँ) औ कूर्मके समान ऊपरसेऊंचे ऐसेचरण राजाकेहोतेहैं । अर्थात् जिसपुरुष के चरण इन लक्षणों करके युक्तहों वह राजाहोता है २ ॥

शूर्पाकारविरूक्षपांडुरनखौवक्रौशिरासन्ततौसंशुष्कौविरलांगुलीचचरणौदारिद्र्यदुःखप्रदौ ॥ मार्गायोत्कटकौकषायसदृशौवंशस्यविच्छित्तिदौ ब्रह्मघ्नौपरिपक्वमृद्द्युतितलौपीतावगम्यारतौ ३ ॥

शूर्प (छाज) के आकार आगेसे चौड़े श्वेतरंगके नखोंकरकेयुक्त टेढ़ेनाड़ियों से व्याप्त सूखे औ विरल अंगुलियों करके युक्त चरणहोयँ तो दारिद्र्य औ दुःख देते हैं। मध्यसे ऊंचे मण्डक के आकार चरणहोयँ तो सदामार्गमें चलातेहैं। कषायरंग (थोड़ेसेलाल) के चरण होयँ तो वंशका विच्छेद करते हैं अर्थात् जिस पुरुष के कषाय रंग के चरण होयँ उसका वंश नहीं चलता । परिपक्व (अग्निमेंपकीहुई) मृत्तिकाके तुल्य जिसके पादतलों की कांति होय वह पुरुष ब्रह्म हत्या करता है । औ पीले रंगके चरण जिस पुरुषके होयँ वह अगम्यास्त्री में आसक्त होता है ३ ॥

प्रविरलतनुरोमवृत्तजंघाद्विरदकरप्रतिमैर्वरोरुभिश्च ॥
उपचितसमजानवश्चभूपाधनरहिताःश्वशृगालतुल्यजंघाः ४ ॥

विरल औ सूक्ष्म रोमों करके युक्त औ वर्तुल जिनकी जंघा होयँ हाथीकी शुण्डके समान जिनके सुन्दर ऊरुहोयँ मांसयुक्त औ समान जिनके जानुहोयँ वे राजाहोतेहैं श्वान औ शृगालके तुल्य जिनकी जंघाहोयँ वे धनहीनहोतेहैं ४ ॥

रोमैकैकंकूपकेपार्थिवानांद्वेद्वेज्ञेयेपण्डितश्रोत्रियाणाम् ॥
त्र्याद्यैर्निःस्वामानवादुःखभाजःकेशाश्चैवंनिन्दिताःपूजिताश्च५

जिनकी जंघाओं के रोमकूपों में एकएक रोम होय वे राजा होते हैं जिनके एक रोमकूपमें दो२ रोम होयँ वे पण्डित औ श्रोत्रिय होते हैं । जिन के एक२ रोम कूपमें तीन२ चार२ आदि रोमहोयँ वे मनुष्य निर्धन औ दुःखी होतेहैं । इसीभांति मस्तक के केशोंका भी शुभअशुभफलजानै ५ ॥

निर्मांसजानुर्म्रियतेप्रवासेसौभाग्यमल्पैर्विकटैर्दरिद्राः ॥

स्त्रीनिर्जिताश्चापिभवन्तिनिम्नैराज्यंसमांसैश्चमहद्भिरायुः६॥

जिसके जानुओंपर मांस न होय वहपुरुष प्रवास (सफर) में मरता है। छोटे जानु होयँ तो सौभाग्य होताहै जिन पुरुषोंके जानु विकट होयँ वे दरिद्र होतेहैं। जिनके जानु निम्न (नीचे) होयँ वे पुरुष स्त्रीजित होते हैं। मांसयुक्त जिनके जानु होयँ उनको राज्य मिलताहै। औ बड़े जानु जिनपुरुषों के होयँ वे दीर्घ आयुष् पाते हैं ६॥

लिङ्गेऽल्पेधनवानपत्यरहितःस्थूलेविहीनोधनैर्मेढ्रेवामनते सुतार्थरहितोवक्रेऽन्यथापुत्रवान्॥ दारिद्र्यंविनतेत्वधोऽल्पतनयोलिंगेशिरासंततेस्थूलग्रन्थियुतेसुखीमृदुकरोत्यन्तंप्रमेहादिभिः ७॥

छोटा लिंगहोय तो पुरुष धनवान् औ सन्तानहीन होता है। स्थूललिंग होय तो धनहीन होता है। बाईंओरको लिंग झुका होय तो पुरुष धन औ पुत्रोंसे हीन होता है। दहिनी ओर लिंग झुकाहोय तो पुत्रवान् होताहै। लिंग नीचेको बहुत झुकाहोय तो दरिद्र होता है। नाड़ियों करके व्याप्त लिंगहोय वह पुरुष अल्पपुत्र होताहै अर्थात् उसके थोड़े पुत्र होते हैं। स्थूल ग्रन्थिकरके युक्त जिसका लिंगहोय वह सुखी होता है। जिस पुरुषका लिंग मृदुहोय वह प्रमेहआदि रोगोंसे मरता है ७॥

कोशनिगूढैर्भूपादीर्घैर्भग्नैश्चवित्तपरिहीनाः॥
लघुवृत्तशेफसोलघुशिरालशिश्नाश्चधनवन्तः ८॥

कोश (चर्म की थैलीसी) में जिनका लिंग निगूढ हो वे राजा होते हैं दीर्घ औ टूटे हुये लिंग जिनके होयँ वे धनहीन होते हैं सीधा औ वर्तुल जिनका लिंग होय औ छोटा औ नाड़ियों करके व्याप्त जिनका लिंग होवे पुरुष धनवान् होते हैं ८॥

जलमृत्युरेकवृषणोविषमैःस्त्रीचञ्चलःसमैःक्षितिपः॥
ह्रस्वायुश्चोद्बद्धैःप्रलम्बवृषणस्यशतमायुः ९॥

जिसका एकही वृषण होय वह पुरुष जलमें डूबकर मरताहै। विषम (छोटेबड़े) वृषण होयँ तो स्त्री लम्पट होता है। दोनों वृषण समान होयँ तो राजा होताहै। ऊपरको खिंचेहुये वृषण होयँ तो अल्पायुष् होता है। औ जिस पुरुषके वृषण लम्बे होयँ उसका आयुष् सौ वर्ष होता है ९॥

रक्तैराढ्यामणिभिर्निर्द्रव्याःपांडुरैश्चमलिनैश्च॥सुखिनःसशब्दमूत्रनिःस्वानिःशब्दधाराश्च १० द्वित्रिचतुर्धाराभिःप्रदक्षिणावर्तवलितमूत्राभिः॥ पृथ्वीपतयोज्ञेयाविकीर्णमूत्राश्चधनहीनाः ११ एकैवमूत्र

धारावलिताद्रूपप्रधानसुतदात्री ॥ स्निग्धोन्नतसममणयोधनवनिता रत्नभोक्तारः १२ मणिभिश्चमध्यनिम्नैःकन्यापितरोभवन्तिनिःस्वाश्च ॥ वहुपशुभाजोमध्योन्नतैश्चनात्युल्बणैर्धनिनः १३ ॥

लिंगके अग्रभाग का नाम मणिहै जिसको सुपारी कहते हैं। लाल रंगका मणि होय तो पुरुष धनवान् होते हैं। श्वेत औ मलिन मणि होयं तो धन हीन होतेहैं। मूत्र करने के समय शब्द होय वे पुरुष सुखी होतेहैं औ शब्दर हित जिनकी मूत्र धाराहोय वे निर्धन होते हैं १० जिनके मूत्र की धारा दो तीन अथवा चारहोयँ औ दक्षिणावर्त करके वेधारा मूत्रको गेरें वे पुरुष राजा होते हैं मूत्रकरनेके समय जिनका मूत्रबिखरता होय वे धनहीन होते हैं ११ एक मूत्रधारा होय औ वह वलित (वेष्टित) होय तो रूपवान् पुत्रदेती है जिनपुरुषों के मणि स्निग्ध ऊंचे औ समान होयं वे पुरुष धन स्त्री औ रत्नोंका भोग करनेवाले होतेहैं १२ जिनके मणिमध्यभागमें निम्न होयं वे कन्याओंके पिता होतेहैं अर्थात् उनके घरमें कन्याही जन्मती हैं। औ वे पुरुष निर्धनभी होतेहैं जिनके मणिमध्यमें ऊंचे होयं वेबहुत पशुओं के स्वामी होतेहैं। अत्युल्वण (बहुतस्थूल) जिनके मणि न होयं वे धनी होतेहैं १३ ॥

परिशुष्कवस्तिशीर्षाधनरहितादुर्भगाश्चविज्ञेयाः ॥ कुसुमसमगन्धशुक्राविज्ञातव्यामहीपालाः १४ मधुगंधेबहुवित्तामत्स्यसगंधेबहून्यपत्यानि ॥तनुशुक्रःस्त्रीजनकोमांससगंधेमहाभोगी १५ मदिरागंधेयज्वाक्षारसगंधेचरेतसिदरिद्रः ॥ शीघ्रम्मैथुनगामीदीर्घायुरतोऽन्यथाल्पायुः १६ ॥

लिंग औ नाभिके अंतरको वस्ति कहते हैं जिनके वस्तिका उपरि भाग निर्मांस होय वे पुरुष धनहीन औ दुर्भग (सबमनुष्योंके अप्रिय) होतेहैं पुष्प के समान सुगंध जिनका वीर्य होय वे राजा होते हैं १४ शहतके समान गंध वीर्य होय तो बहुत धनवान् होयं मत्स्योंके समान गंध वीर्य होय तो बहुत संतान होयं थोड़ा वीर्य होय तो कन्याओंका पिता होय मांसके समान गंध वीर्य होय तो महा भोगी होय १५ मद्यके समान गन्ध वीर्य होय तो यज्ञ करने वाला होय । खारके तुल्य गंध वीर्य होय तो पुरुष दरिद्र होय। शीघ्रही जो पुरुष मैथुन करै वह दीर्घायुष् होताहै। औ जो पुरुष बहुत काल पर्यंत मैथुन करै वह अल्पायुष् होता है १६ ॥

निःस्वोऽतिस्थूलस्फिकसुमांसलस्फिक्सुखान्वितोभवति ॥
व्याघ्रांतोऽध्यर्धस्फिङ्मण्डूकस्फिङ्नराधिपतिः १७ ॥

अतिस्थूल जिस पुरुषके स्फिक् (कटिस्थमांसपिंड) होयँ वह निर्धनहोता है। सुन्दरमांस युक्त जिसके स्फिक् होयँ वह सुखी होताहै। जो पुरुष अध्यर्ध-स्फिक् होय अर्थात् जिसके स्फिक् ड्योढे होयँ उसको व्याघ्र मारताहै मेंडक के समान जिसके स्फिक् होयँ वह पुरुषराजा होताहै १७॥

सिंहकटिर्मनुजेन्द्रः कपिकरभकटिर्धनैः परित्यक्तः॥
समजठराभोगयुताघटपिठरनिभोदरानिःस्वाः १८॥

सिंहके समान जिसकी कटि होय वह राजा होता है। वानर अथवा उष्ट्र के तुल्य जिसकी कटि होय वह धनहीन होता है। सम अर्थात् न ऊंचा औ न नीचा जिनका उदर होय वे पुरुष भोगी होते हैं घंड़े अथवा हांड़ीके समान जिनका पेट होय वे पुरुष निर्धन होते हैं १८॥

अविकलपार्श्वाधनिनोनिम्नैर्वक्रैश्चभोगसंत्यक्ताः॥ समकक्ष्या भोगाढ्यानिम्नाभिर्भोगपरिहीनाः १९ उन्नतकक्ष्याःक्षितिपाःकठिना स्युर्मानवाविषमकक्ष्याः॥सर्पोदरादरिद्राभवन्तिबह्वाशिनश्चैव२०॥

कटिके ऊपर चार अंगुल भागको पार्श्वकहते हैं औ उदरके मध्यभागको कक्ष्या कहते हैं। अविकल अर्थात् मांससे पुष्ट जिनके पार्श्व होयँ वे धनी होते हैं। निम्न औ टेढे पार्श्व होयँ तो धनहीन होते हैं। जिनकी कक्ष्यासम होय वे पुरुष भोगी होते हैं निम्न कक्ष्या होय तो भोग से हीन होते हैं १९ उन्नत कक्ष्या होयँ तो राजा होते हैं विषम (घाट बाध) जिनकी कक्ष्याहोय वे मनुष्यकठोर होते हैं जिनपुरुषों का उदर सर्पके उदरकी भांति बहुत लंबा होय वे पुरुष दरिद्र होते हैं औ बहुतभोजन करते हैं २०॥

परिमण्डलोन्नताभिर्विस्तीर्णाभिश्चनाभिभिः सुखिनः॥ स्वल्पा त्वदृश्यनिम्नानाभिःक्लेशावहाभवति २१ बलिमध्यगताविषमाशूला बाधांकरोतिनैःस्व्यंच॥ शाठ्यंवामावर्ताकरोतिमेधांप्रदक्षिणतः २२ पार्श्वायताचिरायुषमुपरिष्टाच्चेश्वरंगवाढ्यमधः॥ शतपत्रकर्णिकाभा नाभिर्मनुजेश्वरंकुरुते २३॥

गोल ऊंची औ विस्तीर्ण जिनपुरुषोंकी नाभिहोय वे सुखीहोते हैं। छोटी अदृश्य अर्थात् न देखपडै औ अनिम्न अर्थात् गहरी न होय ऐसी नाभि दुःख दायकहोती है २१ जिसकी नाभिपेटकी बलिके बीचआवै औ विषमहोय वह पुरुष सूलीपर चढायाजाताहै औ निर्धनभी होता है॥ बामावर्त जिसकी ना-भिहो वहपुरुष शठ होताहै। दक्षिणावर्तनाभिहोयतो उत्तम बुद्धिकरती है २२ दोनों ओर लंबी नाभिदीर्घआयुष् करतीहै। ऊपर को नाभि दीर्घ होय तो

ऐश्वर्य युक्त पुरुषको करती है। नीचेको लंबीहोय तो बहुतगौओं करके युक्त करतीहै। कमलकी कर्णिकाके तुल्य नाभिहोय तो पुरुषको राजा करतीहै २३ ॥

शस्त्रांतंस्त्रीभोगिनमाचार्यंबहुसुतंयथासंख्यम्॥ एकद्वित्रिचतुर्भिर्वलिभिर्विद्यान्नृपंत्ववलिम् २४ विषमवलयोमनुष्याभवंत्यगम्याऽभिगामिनःपापाः॥ ऋजुवलयःसुखभाजःपरदारद्वेषिणश्चैव २५ ॥

उदर के मध्यमें जो रेखाहोयँ उनको वलिकहतेहैं। जिस पुरुषके एकवलि होय उसकाशस्त्र से मृत्युहोता है। दो वलिहोयँ तो वह पुरुष बहुत स्त्रियोंसे भोग करनेवाला होताहै। तीन वलिहोयँ तो आचार्य (उपदेशकर्ता) होता है औ चारवलि जिसपुरुष के उदरमें होयँ उसके बहुत पुत्रहोते हैं। जिसके उदरमें एकभी वलि न होय वह राजा होताहै २४ जिनके उदरमें विषम अर्थात् कोई छोटी कोई बड़ी वलि होयँ वे पुरुष अगम्या स्त्री में गमन करते हैं औ पापी होते हैं। जिनके उदरमें सीधी वलि होयँ वे सुखी औ पर स्त्री से विमुख होते हैं २५ ॥

मांसलमृदुभिःपार्श्वैःप्रदक्षिणावर्तरोमभिर्भूपाः ॥
विपरीतैर्निर्द्रव्याःसुखपरिहीनाःपरप्रेष्याः २६ ॥

मांस करके पुष्ट कोमल औ दक्षिणावर्त रोमों करके युक्त जिनके पार्श्व होयँ वे पुरुष राजा होतेहैं। औ मांसकरके हीन कठोर औ वामावर्त रोमों करके युक्त जिनके पार्श्व होयँ वे निर्धन सुखसे हीन औ और पुरुषोंके दास होते हैं २६ ॥

सुभगाभवंत्यनुद्बद्धचूचुकानिर्धनाविषमदीर्घैः ॥
पीनोपचितनिमग्नैःक्षितिपतयश्चूचुकैःसुखिनः २७ ॥

स्तन के अग्रभागको चूचुक कहते हैं। जिनके चूचुक अनुद्बद्ध अर्थात् ऊपर को नहीं खिचेहुये होयँ वे पुरुष सुभग होते हैं। जिनके चूचुक विषम (छोटे बड़े) औ लम्बे होयँ वे निर्धन होते हैं। औ जिनके चूचुक कठिन पुष्ट औ निमग्न अर्थात् ऊंचे नहीं ऐसेहोयँ वे राजा होते हैं औ सुखी रहते हैं २७ ॥

हृदयंसमुन्नतंपृथुनवेपनंमांसलंचनृपतीनाम्॥
अधमानांविपरीतंखररोमचितंशिरालंच २८ ॥

ऊंचा विस्तीर्ण कंपसे हीन औ मांसल हृदय राजाओंका होता है। औ निम्न संकुचित औ कृश हृदय अधम पुरुषोंका होताहै। कठोर रोमों करके युक्त औ नाड़ियों करके व्याप्त हृदयभी अधमोंकाही होताहै २८ ॥

समवक्षसोऽर्थवन्तःपीनैःशूरास्त्वकिंचनास्तनुभिः ॥
विषमंवक्षोयेषांतेनिःस्वाःशस्त्रनिधनाश्च २९ ॥

सम (नऊंचीननीची) जिनकी छाती होय वे धनवान् होते हैं। पुष्ट औ कठोर छाती होय तो शूर वीर होते हैं। छोटी छाती होय तो अकिंचन अर्थात् पुरुषार्थ से हीनहोते हैं। जिनकी छाती विषम होय वे धनहीन होते हैं औ शस्त्र से उनका मृत्युहोताहै २९॥

विषमैर्विषमोजत्रुभिरर्थविहीनोऽस्थिसंधिपरिणद्धैः॥
उन्नतजत्रुर्भोगीनिम्नैर्निःस्वोऽर्थवान्पीनैः ३०॥

कंधों की संधियों को जत्रुकहतेहैं। विषम जत्रुहोयँ तो पुरुष क्रूर होताहै। अस्थियों की संधिमें बँधेहुये जत्रुहोयँ तो धनहीन होताहै। ऊंचे जत्रुहोयँ तो भोगी निम्नजत्रुहोयँ तो निर्धन औ पीनजत्रुहोय तो पुरुष धनवान् होताहै ३०॥

चिपटग्रीवोनिःस्वःशुष्कासशिराचयस्यवाग्रीवा॥ महिषग्रीवःशूरःशस्त्रान्तोवृषसमग्रीवः ३१ कम्बुग्रीवोराजाप्रलम्बकण्ठःप्रभक्षणोभवति॥ पृष्ठमभग्नमरोमशमर्थवतामशुभदमतोऽन्यत् ३२॥

चपटी जिसकी ग्रीवाहोय वह पुरुष निर्धन होताहै। सूखी औ नाड़ियों कर के युक्त जिसकी ग्रीवा होय वह भी निर्धन होताहै। महिष के समान ग्रीवा होय तो शूर वीर होता है। वृषके समान जिसकी ग्रीवाहोय उसका शस्त्र से मृत्युहोताहै। शंखकेतुल्य तीनरेखाओं करके युक्त जिसकी ग्रीवाहोय वह राजा होताहै ३१ जिसका कण्ठ लम्बाहोय वह प्रभक्षण (खाऊ) होताहै संचय नहींकरता। अभग्न (टूटीहुईनहीं) औ रोमों से रहित पीठधनवानोंकी होती है। भग्न औ रोमों करके युक्त पीठ निर्धनों की होती है ३२॥

अस्वेदनपीनोन्नतसुगंधिसमरोमसंकुलाःकक्षाः॥
विज्ञातव्याधनिनामतोऽन्यथाऽर्थविहीनानाम् ३३॥

स्वेद से रहित पीन ऊंची सुगन्ध युक्त सम औ रोमयुक्त कक्षा (कांख) धनवानों की होती हैं। औ इससे विपरीत कक्षा निर्धनों की होती हैं ३३॥

निर्मांसौरोमचितौभग्नावल्पौचनिर्धनस्यांऽसौ॥
विपुलावव्युच्छिन्नौसुश्लिष्टौसौख्यवीर्यवताम्॥ ३४

मांस रहित रोमोंसे व्याप्त भग्न औ छोटे कन्धे निर्धन के होते हैं। विस्तीर्ण अभग्न औ सुसंलग्न कन्धेसुखी औ बली पुरुषों के होते हैं ३४॥

करिकरसदृशौवृत्तावाजान्ववलम्बिनौसमौपीनौ॥
बाहूपृथिवीशानामधमानांरोमशौह्रस्वौ ३५॥

हाथी की शुंडके समान गोल जानुपर्यंत लम्बी सम औ पीन भुजा राजाओं की होती हैं। औ रोमोंकरके युक्त छोटीभुजा अधमपुरुषों की होती हैं ३५॥

हस्तांगुलयोदीर्घाश्चिरायुषामवलिताश्चसुभगानाम् ॥ मेधाविनांचसूक्ष्माश्चिपिटाःपरकर्मनिरतानाम् ३६ स्थूलाभिर्धनरहितावहिर्नताभिश्चशस्त्रनिर्याणाः ॥ कपिसदृशकराधनिनोव्याघ्रोपमपाणयःपापाः ३७ ॥

दीर्घायुष्वाले पुरुषों की अंगुली लंबी होती हैं। अवलित(सीधी) अंगुली सुभगपुरुषों की होती हैं। बुद्धिमानोंकी अंगुली पतली होती हैं। पर सेवाकरनेवालों की अंगुली चपटी होतीहैं ३६ मोटी अंगुली होयँ तो निर्धन होते हैं जिनकी अंगुली बाहरको झुकी होयँ उनका शस्त्र से मृत्यु होता है बन्दरके तुल्य जिनके हाथ होयँ वे धनवान् होते हैं औ व्याघ्र के तुल्य जिन के हाथ होयँ वे पापी होते हैं ३७ ॥

मणिबन्धनैर्निगूढैर्दृढैश्चसुश्लिष्टसंधिभिर्भूपाः ॥
हीनैर्हस्तच्छेदःश्लथैःसशब्दैश्चनिर्द्रव्याः ३८ ॥

हस्तके मूलको मणिबन्ध (पहुँचा) कहते हैं । जिनके मणिबन्ध निगूढ दृढ औ सुश्लिष्ट सन्धिहोयँ वे राजा होतेहैं। छोटेमणिबन्ध होयँ तो हाथकाटे जातेहैं श्लथ (ढीले) औ शब्दकरके सहित जिनके मणिबन्ध होयँ वे निर्धन होते हैं ३८।

पितृवित्तेनविहीनाभवन्तिनिम्नेनकरतलेननराः ॥ संवृतनिम्नैर्धनिनःप्रोत्तानकराश्चदातारः ३९ विषमैर्विषमानिःस्वाश्चकरतलैरीश्वरास्तुलाक्षाभैः ॥ पीतैरगम्यवनिताभिगामिनोनिर्धनारूक्षैः ४०॥

जिनके करतल (हथेली) निम्नहोयँ वे पिताके धनसे रहितहोते हैं सम वर्तुल औ निम्न जिनके करतल होयँ वे धनवान् होतेहैं। ऊँचा जिनका करतल होय वे पुरुष दाता होतेहैं ३९ विषम करतल जिन के होयँ वे क्रूर औ निर्धन होते हैं। लाक्षा (लाख) के समान लालरंगके जिनके करतल होयँ वे ऐश्वर्यवान होतेहैं। पीले रंगके करतल होयँ तो अगम्या स्त्रीमें गमनकरते हैं रूखे करतल होयँ तो निर्धन होतेहैं ४० ॥

तुषसदृशनखाःक्लीबाश्चिपटैःस्फुटितैश्चवित्तसंत्यक्ताः ॥
कुनखविवर्णैःपरतर्ककाश्चताम्रैश्चमूपतयः ४१ ॥

तुषोंके समान रेखाओंकरके युक्त जिनके नखहोयँ वे नपुंसक होतेहैं। चपटे औ फूटे जिनके नखहोयँ वे निर्धनहोते हैं। बुरेनखहोयं औ रंगसेहीनहोयँ वे पुरुष परतर्कक अर्थात् दूसरेकी बातमें तर्ककरनेवाले होते हैं। तांबेकेसमान लालरंगके जिनके नखहोयँ वे सेनापति होते हैं ४१ ।

अंगुष्ठयवैराढ्याःसुतवन्तोऽगुष्ठमूलगैश्चयवैः ॥
दीर्घांगुलिपर्वाणःसुभगादीर्घायुषश्चैव ४२ ॥

अंगुष्ठों के मध्यमें जिनके जौहोयँ वे धनाढ्य होते हैं। अंगुष्ठमूलमें जौके चिह्नहोयँ तो पुत्रवान् होतेहैं। जिनकी अंगुलियों के पर्व (पोरी) लम्बेहोयँ वे पुरुष सुभग औ दीर्घायुष् होतेहैं ४२ ॥

स्निग्धानिम्नारेखाधनिनांतद्व्यत्ययेनविःस्वानाम् ॥
विरलांगुलयोनिःस्वाधनसंचयिनोघनांगुलयः ४३ ॥

जिनके हाथकी रेखा स्निग्ध औ निम्न (गहरी) होयँ वे धनवान् होते हैं। औ जिनकी रेखारूक्ष औ अनिम्नहोयँ वे निर्धनहोतेहैं जिनके हाथोंकी अंगुली विरलहोयँ वे निर्धनहोतेहैं औ घन अंगुलियें वाले धनका संचयकरतेहैं ४३ ॥

तिस्रोरेखामणिबन्धनोत्थिताःकरतलोपगानृपतेः॥ मीनयुगांकितपाणिर्नित्यंसत्रप्रदोभवति ४४ वज्राकाराधनिनांविद्याभाजांतुमीनपुच्छनिभाः ॥ शङ्खातपत्रशिविकागजाश्चपद्मोपमानृपतेः ४५ कलशमृणालपताकांऽकुशोपमाभिर्भवन्तिनिधिपालाः॥ दामनिभाभिश्चाढ्याःस्वस्तिकरूपाभिरैश्वर्यम् ४६ चक्रासिपरशुतोमरशक्तिधनुःकुन्तसन्निभारेखाः ॥ कुर्वंतिचमूनाथंयज्वानमुलूखलाकाराः ४७ मकरध्वजकोष्ठागारसन्निभाभिर्महाधनोपेताः॥ वेदीनिभेनचैवाऽग्निहोत्रिणोब्रह्मतीर्थेन ४८ वापीदेवकुलाद्यैर्धर्मंकुर्वंतिचत्रिकोणाभिः ॥ अंगुष्ठमूलरेखाःपुत्राःस्युर्दारिकाःसूक्ष्माः ४९ रेखाःप्रदेशिनीगाः शतायुषांकल्पनीयमूनाभिः ॥ छिन्नाभिर्द्रुमपतनम्बहुरेखाऽरेखिणोनिःस्वाः ५० ॥

मणिवन्धन से निकलकर तीनरेखा जिसके करतलमेंजायँ वह राजाहोता है। जिसके हाथमें दो मत्स्यरेखाहोयँ वह नित्य सत्र (सदावर्त) देनेवालाहोताहै ४४ वज्रके आकार (मध्यसे पतली औ दोनोंओर मोटी) रेखा हाथमें होयँ तो धनवान् होताहै मत्स्यके पुच्छके समानरेखा हाथमें होय तो विद्वान् होतेहैं। शंख छत्र पालकी हाथी घोड़ा औ कमल के आकार की रेखाहाथ में होयँ तो राजाहोते हैं ४५ कलश मृणाल (कमलकी जड़) के आकार अर्थात् मध्य में ग्रंथि युक्त रेखा जिनके हाथमें होयँ पताका अंकुश के आकार जिनके हाथ में रेखा होयँ वे निधिपाल होते हैं अर्थात् भूमिमें धन गाड़ते हैं हैं। दाम (रस्सी)के आकार रेखाहाथमें होयँ तो धनाढ्य होतेहैं। स्वस्तिक

के आकार रेखाहोय तो ऐश्वर्यहोता है ४६ चक्र खड्ग परशु (फरसा)तोमर (एकप्रकारकाबाण)शक्ति (बर्छी) धनुष कुन्त (भाला) के आकार रेखा हाथमें होयँ तो सेनापति होताहै। ऊखल के आकार रेखाहाथमें होयँ तो यज्ञकरनेवाला होताहै ४७ मकरध्वज कोष्ठागारके आकार रेखाहाथमें होयँ तो बहुत धनवान् होतेहैं। वेदीके आकार जिनका ब्रह्मतीर्थ होय वे अग्निहोत्री होतेहैं। अंगुष्ठमूलको ब्रह्मतीर्थ कहते हैं ४८ वापी देवमन्दिर आदिके समान आकार की रेखाहोयँ औ त्रिकोण रेखाहोयँ तो धर्मकरते हैं। अर्थात् वे पुरुष धर्मात्मा होतेहैं। अंगुष्ठमूलकी रेखा सन्तानकी हैं उनमें जितनी रेखा सूक्ष्महोयँ उतनी कन्या होती हैं। अर्थात् जितनी रेखा स्थूलहोयँ उतने पुत्रहोते हैं ४९ तर्जनी अंगुलीपर्यन्त जिनकी रेखापहुंचें वे सौवर्ष आयुष्पाते हैं। छोटीरेखाहोयँ तो अनुमानसे आयुष्जानै टूटीरेखा हाथमेंहोयँ तो वृक्षसेगिरैं। जिनके हाथ में बहुत रेखाहोयँ अथवा रेखा न होयँ वे निर्धन होतेहैं ५० ॥

अतिकृशदीर्घैश्चिबुकैर्निर्द्रव्यामांसलैर्धनोपेताः ॥ बिम्बोपमैरवक्रै रधरैर्भूपास्तनुभिरस्वाः ५१ ओष्ठैःस्फुटितविखण्डितविवर्णरूक्षैश्च धनपरित्यक्ताः ॥ स्निग्धाघनाश्चदशनाः सुतीक्ष्णदंष्ट्राःसमाश्च शुभाः ५२ ॥

बहुतकृश औ लम्बा चिबुक (ठोढ़ी) होय तो निर्धन होते हैं। मांस करके पुष्ट चिबुकहोय तो धनवान् होतेहैं। बिम्बफल के समान रक्तवर्ण औ अवक्र नीचे का ओष्ठहोय तो राजा होते हैं। छोटा अधर (नीचेकाओष्ठ) होय तो निर्धनहोते हैं ५१ फूटेहुये खण्डित बुरे रंगके औ रूखेओष्ठहोयँ तो धनसे हीनहोते हैं। स्निग्ध घन (गहरे) तीखी दाढ़ों करके युक्त औ समान दांत शुभ होते हैं ५२ ॥

जिह्वारक्तादीर्घाश्लक्ष्णासुसमाचभोगिनांज्ञेया ॥
श्वेताकृष्णापरुषानिर्द्रव्याणान्तथातालु ५३ ॥

रक्तवर्ण लम्बी श्लक्ष्ण औ समान जिह्वाहोय तो भोगीहोते हैं। श्वेतकृष्ण औ रूखी जिह्वाहोय तो धनहीन होतेहैं। यहीलक्षण तालुकाभीजानै ५३ ॥

वक्त्रंसौम्यंसंवृतममलंश्लक्ष्णंसमंचभूपानाम् ॥
विपरीतंक्लेशभुजांमहामुखंदुर्भगाणांच ५४ ॥

सौम्य संवृत निर्मल श्लक्ष्ण औ समवक्त्र (चेहरा) राजाओंका होताहै। इससे विपरीत अर्थात् असौम्य असंवृत अश्लक्ष्ण औ विषमवक्त्र क्लेशभोगने वाले पुरुषोंकाहोताहै।महामुख (बहुतफैलाहुआ) दुर्भग पुरुषोंकाहोताहै ५४ ॥

स्त्रीमुखमनपत्यानांशाठ्यवताम्मण्डलम्परिज्ञेयम्॥ दीर्घंनिर्द्रव्याणांभीरुमुखाःपापकर्मणः ५५ चतुरस्रंधूर्तानांनिम्नंवक्त्रञ्चतनयरहितानाम्॥ कृपणानामतिह्रस्वंसम्पूर्णंभोगिनाङ्कान्तम् ५६॥

स्त्रीकासामुख जिन पुरुषोंकाहोय वे सन्तानहीन होते हैं। गोलमुखहोय वे पुरुष शठहोतेहैं। लम्बामुखहोय वे धनहीन होतेहैं। जिनकामुख भयभीत देखपड़े वे पापी होतेहैं ५५ धूर्तोंकामुख चतुष्कोण होताहै। निम्नमुख पुत्रहीन पुरुषोंका होताहै अर्थात् उनपुरुषोंके पुत्रउत्पन्न नहीं होते कृपणोंकामुख बहुतछोटाहोताहै। सम्पूर्ण औ मनोहर जिनका मुखहोय वे भोगीहोतेहैं ५६॥

स्फुटिताग्रंस्निग्धंश्मश्रुशुभम्मृदुचसन्नतञ्चैव॥
रक्तैःपरुषैश्चौराश्मश्रुभिरल्पैश्चविज्ञेयाः ५७॥

अस्फुटिताग्रहोय अर्थात् जिसके बाल आगेसे फटे न होवैं स्निग्धहोय कोमल औ सन्नत अर्थात् भलीभांति नीचेको झुकाहुआ ऐसाश्मश्रु (दाढ़ी) होय तो शुभ होता है। लालरंगका रूखा औ अल्पश्मश्रु जिन के होय वे चोरहोते हैं ५७॥

निर्मांसैःकर्णैःपापमृत्यवश्चचर्पटैःसुबहुभोगाः॥ कृपणाश्चह्रस्वकर्णाशंकुश्रवणाश्चभूपतयः ५८ रोमशकर्णादीर्घायुषस्तुधनभागिनोविपुलकर्णाः॥ क्रूराशिरावनद्धैर्व्यालम्बैर्मांसलैःसुखिनः ५९॥

जिनके कर्ण निर्मांसहोवैं उनका पापकर्मसे मृत्युहोता है। चपटेकानहोवैं तो बड़ेभोगी होतेहैं। छोटेकानोंवाले कृपणहोते हैं। शंकुकेतुल्य आगेसेतीखे कर्णहोवैं तो सेनापति होते हैं ५८ रोमोंकरके युक्त कानहोवैं तो दीर्घ आयुष पाते हैं। बड़े कानहोवैं तो धनवान्होते हैं। नाड़ियों करके व्याप्त जिनके कानहोवैं वे पुरुष क्रूरहोते हैं। लम्बे औ मांसकरके पुष्ट जिनके कानहोवैं वे सुखी होते हैं ५९॥

भोगीत्वनिम्नगण्डोमन्त्रीसम्पूर्णमांसगण्डोयः॥ सुखभाक्शुकसमनासश्चिरजीवीशुष्कनासश्च ६० छिन्नानुरूपयाऽगम्यगामिनोदीर्घयातुसौभाग्यम्॥ आकुञ्चितयाचौरस्त्रीमृत्युःस्याच्चिपिटनासः ६१ धनिनोऽग्रवक्रनासादक्षिणवक्राःप्रभक्षणाःक्रूराः॥ ऋज्वीस्वल्पच्छिद्रासुपुटानासासभाग्यानाम् ६२॥

जिसके कपोल ऊंचेहोवैं वह भोगीहोता है। मांससेपुष्ट जिसके गण्डहोवैं वह राजाका मन्त्री होता है शुक (तोता) के समान जिसकी नासिकाहोय वह भोगी होता है। सूखी अर्थात् निर्मांस जिसकी नासिका होय वह

दीर्घजीव होता है ६० जिनकी नासिका कटीसी देखपड़े वे अगम्या स्त्री से गमन करनेवाले होते हैं। लम्बी नासिकाहोय तो सौभाग्य होताहै। आकुं-चित (ऊपरकोखिचीहुई) नासिकाहोय तो चोरहोता है। चपटी नासिका होय तो स्त्रीके हाथ मारा जाताहै ६१ आगे से टेढ़ी जिनकी नासिका होय वे धनी होतेहैं। दहिनीओर टेढ़ी जिनकी नासिका होय वे अभक्षण (खाऊ) औ क्रूर होते हैं। सीधी छोटे छिद्रों करकेयुक्त सुन्दर पुटोंवाली नासिका होय तो भाग्यवान् होते हैं ६२ ॥

धनिनांक्षुतंसकृद्द्वित्रिपिण्डितंह्रादिसानुनादञ्च ॥
दीर्घायुषांप्रमुक्तंविज्ञेयंसंहतञ्चैव ६३ ॥

एकवारछींकें वे धनवान् होते हैं दोतीनवार मिलाहुआ ह्रादी अनुनाद करके युक्त प्रमुक्त (अतिदीर्घ) औ संहत जो पुरुषछींकें वे दीर्घायुष् होते हैं ६३ ॥

पद्मदलाभैर्धनिनोरक्तान्तविलोचनाःश्रियोभाजः ॥ मधुपिङ्गलैर्महार्थामार्जारविलोचनाःपापाः ६४ हरिणाक्षामण्डललोचनाश्चजिह्मैश्चलोचनैश्चौराः ॥ क्रूराःकेकरनेत्रागजसदृशदृशश्चमूपतयः ६५ऐश्वर्यंगम्भीरैर्नीलोत्पलकान्तिभिश्चविद्वांसः ॥ अतिकृष्णतारकाणामक्ष्णामुत्पाटनम्भवति ६६ मन्त्रित्वंस्थूलदृशांश्यावाक्षाणांचभवति सौभाग्यम् ॥ दीनाद्दृङ्निःस्वानांस्निग्धाविपुलार्थभोगवताम् ६७॥

कमलदलके तुल्य नेत्रहोयँ तो धनवान् होतेहैं। जिनके नेत्रोंके अंत लाल होयं वे लक्ष्मीवान् होते हैं। शहतके तुल्य पिंगलरंगके नेत्रहोयँ तो बड़े धन-वान् होते हैं। बिल्लीके तुल्य काचर नेत्रहोयँ तो पापी होते हैं ६४ हरिण के तुल्य नेत्रहोयँ गोलनेत्र होयँ औ जिह्म (चचल) नेत्र जिनके होयँ वे चोर होते हैं केकर (भैंगे) नेत्रहोयँ तो क्रूर होते हैं। हाथीके तुल्य नेत्रहोयँ तो सेनापति होतेहैं ६५ गहरे नेत्रहोयँ तो ऐश्वर्य होताहै। नीलकमलके समान कान्तिके नेत्र होयँ तो विद्वान् होते हैं। जिन नेत्रोंकी तारा अतिकृष्णहोय वे नेत्र उखाड़े जाते हैं ६६ मोटेनेत्र होयँ तो राजाके मंत्री होते हैं। कपिश रंग के नेत्रहोयँ तो सौभाग्यहोता है। जिनके नेत्रदीनहोयँ वे निर्धन होते हैं। स्निग्ध औ बड़े नेत्र जिनके होयँ वे धनवान् औ भोगी होते हैं ६७ ॥

अभ्युन्नताभिरल्पायुर्विशालोन्नताभिरतिसुखिनः ॥ विषमभ्रुवोदरिद्राबालेन्दुनतभ्रुवःसधनाः ६८ दीर्घासंसक्ताभिर्धनिनःखण्डाभिरर्थपरिहीनाः ॥ मध्यविनतभ्रुवोयेतेसक्ताःस्त्रीष्वगम्यासु ६९ ॥

मध्यसे जिनकी भ्रू ऊंची होयँ वे अल्पायुष होते हैं। बड़ी औ ऊंची भ्रूहोयं

तो अतिसुखी होते हैं। छोटी बड़ी भ्रूहोयँ तो दरिद्री होते हैं। बाल चन्द्रमा की भांति जिनकी नतभ्रू होयँ वे धनवान् होते हैं ६८ लम्बी औ परस्पर न मिली हुई जिनकी भ्रूहोयँ वे धनवान् होते हैं खण्ड (टूटी हुई) भ्रू होयँ तो धनहीन होते हैं। मध्यसे जिनकी भ्रूनत होयँ वे पुरुष अगम्य स्त्रियोंमें आसक्तहोते हैं ६९॥

उन्नतशङ्खैर्विपुलैर्धनिनोनिम्नैःसुतार्थसंत्यक्ताः॥ विषमललाटाविधनाधनवन्तोऽर्धेन्दुसदृशेन ७० शुक्तिविशालैराचार्यताशिरासन्ततैरधर्म्मरताः॥ उन्नतशिराभिराढ्याःस्वस्तिकवत्संस्थिताभिश्च ७१ निम्नललाटावधबन्धभागिनःक्रूरकर्मनिरताश्च॥ अभ्युन्नतैश्चभूपाःकृपणाःस्युःसंवृतललाटाः ७२॥

ऊंचे औ बड़े शंख (कनपटी) होयँ तो धनी होते हैं। निम्नशंख होयँ तो पुत्र औ धनसे हीन होते हैं। जिनका ललाट विषम होय वे निर्धन होते हैं अर्धचन्द्र के तुल्य जिनका ललाट होय वे धनवान् होते हैं ७० शुक्ति (सीप) के समान विस्तीर्ण जिनके ललाटहोयँ उनको आचार्यता होती है अर्थात् वे पुरुष आचार्य (परोपदेशकर्ता) होतेहैं। नाड़ियों करके व्याप्त जिनका ललाट होय वे अधर्म करनेमें तत्पर रहते हैं। ललाटके बीच ऊंची नाड़ी होयँ औ वे स्वस्तिक की भांति स्थित होयँ तो धनाढ्य होते हैं ७१ जिनके ललाटनिम्न होयँ वे बध औ बंधन के भागी होते हैं। औ क्रूरकर्म करने में तत्पर रहतेहैं। ऊंचे ललाट होयँ तो सेनापति होते हैं। जिनके ललाट संवृत (गोल औ छोटे) होयँ वे पुरुष कृपण होते हैं ७२॥

रुदितमदीनमनश्रुस्निग्धंचशुभावहंमनुष्याणाम्॥
रूक्षंदीनंप्रचुराऽश्रुचैवनशुभप्रदंपुंसाम् ७३॥

दीनता करके रहित अश्रुओं से हीन औ स्निग्ध रोदन (रोना) मनुष्यों को शुभ होताहै। रूक्ष दीन औ बहुत अश्रुओं करके युक्त रोदन पुरुषों को शुभप्रदनहीं ७३॥

हसितंशुभदमकम्पंसनिमीलितलोचनंचपापस्य॥
दुष्टस्यहसितमसकृत्सोन्मादस्याऽसकृत्प्रान्ते ७४॥

हँसनेके समय शरीर न कांपै तो हँसना शुभ होता है। नेत्रमूँदकर हँसै वह पापी होताहै। दोषयुक्त पुरुष वारम्वार हँसता है। हँसनेके अन्तमें वारम्वार हँसना उन्मादयुक्त पुरुषका होता है ७४॥

तिस्रोरेखाःशतजीविनांललाटायताःस्थितायदिताः॥ चतस्र

भिरवनीशत्वंनवतिचायुःसपंचाब्दा ७५ विच्छिन्नाभिश्चागम्यगामिनोनवतिरप्यरेखेण ॥ केशान्तोपगताभीरेखाभिरशीतिवर्षायुः७६ पंचभिरायुःसप्ततिरेकाग्रावस्थिताभिरपिषष्टिः ॥ बहुरेखेणशतार्धं चत्वारिंशच्चवक्राभिः ७७ त्रिंशद्भ्रूलग्नाभिर्विंशतिभिश्चैववामवक्राभिः ॥ क्षुद्राभिःस्वल्पायुर्न्यूनाभिश्चान्तरेकल्प्यम् ७८ ॥

ललाट में लम्बी तीन रेखाहोयँ तो पुरुषका आयुष्शतवर्ष होताहै चार रेखा ललाट में होयँ तो राजा होता है । औ पंचानवे वर्ष आयुष् होताहै ७५ टूटीहुई रेखा ललाट में होयँ तो पुरुष अगम्या स्त्री में गमन करनेवाले होते हैं औ नब्बेवर्ष उनका आयुष् होताहै । ललाट में एक भी रेखा न होय तोभी नब्बेवर्ष आयुष् होताहै । केशोंकी जहांसे उत्पत्तिहोय उसको केशांत कहतेहैं । ललाटमें केशांत पर्यंत रेखापहुंचीहोयँ तो अस्सीवर्ष आयुष्होताहै ७६ पांचरेखा ललाटमें होयँ तो सत्तर वर्षका आयुष्होता है । सब रेखाओंके अग्र मिलगये होयँ तो साठवर्ष आयुष् होता है । छः सातआदि बहुत रेखा ललाट में होयँ तो पंचासवर्ष आयुष् होताहै । टेढ़ी रेखा ललाट में होयँ तो चालीसवर्ष आयुष् होता है ७७ भ्रूसे रेखालगजायँ तो तीसवर्ष आयुष् होता है । वामभाग में टेढ़ी रेखा होयँ तो बीसवर्ष । आयुष् होता है । छोटी रेखाहोयँ तो बीसवर्ष से भी न्यून आयुष् होताहै न्यूनरेखा अर्थात् एक दोरेखा होयँ तो भी बीस से न्यूनही आयुष् होता है । इन रेखाओं से मध्यमें कल्पना करके आयुष्जानै । जैसा तीनरेखा होने से सौवर्ष औ चार रेखा होनेसे पंचानवे वर्ष आयुष् कहा तो साढ़ेतीन रेखा होने से साढ़े सत्तानवे वर्ष आयुष् कल्पना करना चाहिये अर्थात् दोनोंका आयुष् मिलाकर आधाकरलेवे । ऐसेही औरभी जानो ७८ ॥

परिमण्डलैर्गवाढ्याश्छत्राकारैःशिरोभिरवनीशाः ॥ चिपिटैःपितृमातृघ्नाःकरोटिशिरसांचिरान्मृत्युः ७९ घटमूर्धाध्वानरुचिर्द्विमस्तकःपापकृद्धनैस्त्यक्तः॥निम्नन्तुशिरोमहतांबहुनिम्नमनर्थदम्भवति८०

गोलशिर जिनका होय वे बहुत गौओं करके युक्त होते हैं । छत्रके आकार ऊपरसे विस्तीर्ण शिरहोय तो राजा होतेहैं । चपटे शिरवाले पुरुष माता पिताका वध करते हैं । करोटि के आकार जिनका शिरहोय वे बहुतदिन जीते हैं ७९ घटके आकार जिसका शिरहोय उसकी शब्दमें रुचि रहती है । दो शिर जिसके होयँ वह पापी औ निर्धन होता है । निम्न शिर जिनकाहोय वे प्रतिष्ठित पुरुष होतेहैं परन्तु अतिनिम्नहोय तो अनर्थ करता है ८० ॥

एकैकभवैःस्निग्धैःकृष्णैराकुंचितैरभिन्नाग्रैः ॥ मृदुभिर्नचाति

बहुभिःकेशैःसुखभाङ्नरेन्द्रोवा ८१ बहुमूलविषमकपिलाःस्थूलस्फुटिताग्रपरुषह्रस्वाश्च ॥ अतिकुटिलाश्चातिघनाश्चमूर्धजावित्तहीनानाम् ८२ ॥

एकरोम कूपमें एक२ उत्पन्नहोयँ स्निग्ध कृष्ण आकुंचित (थोड़ेसे कुटित) अग्र जिनके नहीं फूटेहुये कोमल औ बहुत घनेनहीं ऐसे केश जिन मनुष्यों के होयँ वे सुखी होते हैं अथवा राजा होते हैं ८१ एक २ रोम कूपसे बहुत से उत्पन्नहुयेहोयँ विषम (कोईबड़े कोईछोटे) कपिलरंग मोटे आगे से फटेहुये रूक्ष छोटे बहुत कुटिल औ बहुत घनेकेश निर्धनों के होतेहैं ८२ ॥

यद्यद्गात्रंरूक्षंमांसविहीनंशिरावनद्धंच ॥
तत्तदनिष्टंप्रोक्तंविपरीतमतःशुभंसर्वम् ८३ ॥

जो२ अंग रूखा मांससेहीन औ नाड़ियोंसे व्याप्तहो वह२ अंग अशुभहोता है औ जो२ अंग स्निग्ध पुष्ट औ नाड़ियोंसे रहितहो वह शुभ होताहै ८३ ॥

त्रिषुविपुलोगम्भीरस्त्रिष्वेवषडुन्नतश्चतुर्ह्रस्वः ॥
सप्तसुरक्तोराजापंचसुदीर्घश्चसूक्ष्मश्च ८४ ॥

जिसके तीन अंग विस्तीर्णहोयँ तीनअंग गम्भीरहोयँ छःअंग ऊंचेहोयँ चार अंग ह्रस्व (छोटे) होयँ सातअंग रक्तवर्ण होयँ पांचअंग दीर्घहोयँ औ पांचअंग सूक्ष्महोयँ वह राजा होता है ८४ ॥

उरोललाटंवदनंचपुंसांविस्तीर्णमेतत्त्रितयंप्रशस्तम् ॥ नाभिस्वरःसत्वमितिप्रदिष्टंगम्भीरमेतत्त्रितयंनराणाम् ८५ वक्षोऽथकक्ष्यानखनासिकास्यं कृकाटिकाचेतिषडुन्नतानि ॥ ह्रस्वानिचत्वारिचलिङ्गपृष्ठंग्रीवाचजङ्घेचहितप्रदानि ८६ नेत्रान्तपादकरताल्वधरोष्ठजिह्वारक्तानखाश्चखलुसप्तसुखावहानि ॥ सूक्ष्माणिपंचदशनांगुलिपर्वकेशाः साकंत्वचाकररुहाश्चनदुःखितानाम् ८७ हनुलोचनबाहुनासिकाःस्तनयोरन्तरमत्रपंचमम् ॥ इतिदीर्घमिदन्तुपंचकं नभवत्येवनृणामभूभृताम् ८८ इतिक्षेत्रम् ॥

छाती ललाट औ वदन (चेहरा) ये तीनअंग विस्तीर्णहोयँ तो श्रेष्ठहोते हैं। नाभि शब्द औ सत्व (एकप्रकारकाचित्तकागुण) ये तीन गम्भीरहोयँ तो मनुष्योंके श्रेष्ठहोते हैं ८५ छातीकक्ष्या(शरीरकामध्यभाग,नख नासिका मुख कृकाटिका (घेंटू) ये छः ऊंचे चाहिये। लिंग पीठ ग्रीवा औ जंघा ये चार ह्रस्व होयँ तो शुभहोतेहैं ८६ नेत्रोंके अन्तपादतलहस्ततालु अधरोष्ठ (नीचेकाओष्ठ) जिह्वा नख ये सातरक्त वर्णहोयँ तो सुखदेते हैं । दांत अंगुलियों के पर्व केश

त्वचा (चर्म) नख ये पांचसूक्ष्म (पतले) दुःखी पुरुषोंके नहीं होते अर्थात् ये पांच जिनके सूक्ष्महोयँ वे सुखी रहते हैं ८७ हनु नेत्र भुजा नासिका दोनों स्तनोंका मध्यभाग ये पांच अंग दीर्घ राजाओं विना और मनुष्योंके नहींहोते अर्थात् जिन पुरुषों के ये अंग दीर्घहोयँ वे राजा होतेहैं यह शरीर के अंगोंका शुभ अशुभ फलकहा ८८ ॥

छायाशुभाशुभफलानिनिवेदयन्ती लक्ष्यामनुष्यपशुपक्षिषुलक्षणज्ञैः ॥ तेजोगुणान्बहिरपिप्रविकासयन्ती दीपप्रभास्फटिकरत्नघटस्थितेव ८९ ॥

लक्षण जाननेवाले पुरुषोंको मनुष्य पशु औ पक्षियों में शुभ अशुभ फल सूचन करतीहुई औ स्फटिक रत्नके घटमें स्थित दीपप्रभाकी भांति शरीर के भीतर स्थित होकर भी तेज के गुणोंको बाहिर प्रकाशकरतीहुई छाया (शरीरकांति) देखनी चाहिये । अर्थात् छाया से शुभ अशुभ फलका विचार करना चाहिये ८९ ॥

स्निग्धद्विजत्वङ्नखरोमकेशाछायासुगन्धाचमहीसमुत्था ॥
तुष्ट्यर्थलाभाऽभ्युदयान्करोतिधर्मस्यचाहन्यहनिप्रवृत्तिम् ९० ॥

जिससमय पुरुषआदि के ऊपर भूमिकी छायाहोय तब उसके दांत त्वचा नख रोम शिरके केश स्निग्ध रहते हैं । औ शरीर में सुगन्धरहताहै । वहभूमिकी छाया तुष्टि (चित्तपरितोष) धनकालाभ अभ्युदय करती है औ दिन २ धर्मकी प्रवृत्ति करती है ९० ॥

स्निग्धासिताऽच्छहरितानयनाभिरामासौभाग्यमार्दवसुखाऽभ्युदयान्करोति ॥ सर्वार्थसिद्धिजननीजननीवचाप्याछायाफलंतनुभृतांशुभमादधाति ९१ ॥

जलकी छाया स्निग्ध श्वेत स्वच्छ औ हरी औ नेत्रोंको प्रियलगनेवाली होती है । वहछाया सौभाग्य (सबमनुष्यों की प्रियता) कोमलता सुख औ अभ्युदय करती है । सबकार्यों की सिद्धिकरनेवाली होती है । औ माता की भांति पुरुषआदि जीवोंको शुभफलदेती है ९१ ॥

चण्डाऽधृष्यापद्महेमाग्निवर्णायुक्तातेजोविक्रमैःसप्रतापैः ॥
आग्नेयीतिप्राणिनांस्याज्जयायक्षिप्रंसिद्धिंवाञ्छितार्थस्यधत्ते ९२ ॥

अग्निकी छाया चंडा (क्रोधशील) अधृष्या (जिसका कोई तिरस्कार नकरसके) कमल सुवर्ण औ अग्निके तुल्य वर्ण तेज पराक्रम औ प्रतापकरके

युक्तहोती है। ऐसी आग्नेयी छाया जीवोंको जयदेती है। औ शीघ्रही वांछित अर्थको सिद्धिकरती है ९२ ॥

मलिनपरुषकृष्णापापगन्धोऽनिलोत्था जनयतिवधबन्धव्याध्य नर्थार्थनाशान्॥ स्फटिकसदृशरूपाभाग्ययुक्ताऽत्युदारानिधिरिवगगनोत्थाश्रेयसांस्वच्छवर्णा ९३ ॥

वायुकीछाया मलिन रूखी काली औ दुर्गंधयुक्त होतीहै। वह छाया मरण बंधन रोग अनर्थ औ धनका नाश करती है। आकाशकी छाया स्फटिकके समान अतिनिर्मल होती है। वहछाया भाग्ययुक्त औ अति उदार होती है। औ कल्याणोंका मानोंनिधानहोती है। औ स्वच्छवर्ण होती है ९३ ॥

छायाःक्रमेणकुजलाऽग्न्यऽनिलाऽम्बरोत्थाः केचिद्वदन्तिदशताश्चयथानुपूर्व्या ॥ सूर्याऽब्जनाभपुरुहूतयमोडुपानां तुल्यास्तुलक्षणफलैरितितत्समासः ९४ ॥

क्रमसे भूमि जल अग्नि वायु औ आकाशकी पांचछाया कही औगर्ग आदि कोई मुनि दशछाया कहतेहैं। उनके मतमें पांचछाया तो भूमि आदिकी औ पांचछाया सूर्य विष्णु इन्द्र यम औ चन्द्रकी हैं। परन्तु इनछायाओंके लक्षण औ फल भूमिआदिकी छायाओं के तुल्यही हैं अर्थात् सूर्यआदि छाया क्रमसे अग्नि आकाश भूमि वायु औ जलकी छायाके तुल्य हैं। इसलिये हमने दश-छायाका संक्षेप करके पांचछाया रक्खी हैं॥ यह मृजा (पंचमहाभूतमयीछाया) का लक्षण कहाहै ९४ ॥

करिवृषरथौघभेरीमृदङ्गसिंहाऽब्दनिःस्वनाभूपाः ॥
गर्दभजर्जररूक्षस्वराश्चधनसौख्यसंत्यक्ताः ९५ इतिस्वरः ॥

हाथी वृष रथसमूह भेरी मृदंग सिंह औ मेघके तुल्य जिनका शब्द होय वे राजा होते हैं। गर्दभकेतुल्य जिनका शब्दहोय जर्जर (फटाहुआ) औ रूखा जिनकास्वर होय वे धन औ सुखसे हीन होते हैं। यहस्वरका लक्षणहै ९५ ॥

सप्तभवन्तिचसारामेदोमज्जात्वगस्थिशुक्राणि ॥
रुधिरंमांसंचेतिप्राणभृतांतत्समासफलम् ९६ ॥

मेद (अस्थियोंके भीतरका स्नेह) मज्जा (कपालकेभीतरकास्नेह) त्वचा (चर्म) अस्थि वीर्य रुधिर औ मांसये सातप्राणियोंके शरीर में सार होते हैं। अब संक्षेपसे इनका फल कहते हैं ९६ ॥

ताल्वोष्ठदन्तपालीजिह्वानेत्रान्तपायुकरचरणैः ॥
रक्तैस्तुरक्तसाराबहुसुखवनितार्थपुत्रयुताः ९७ ॥

जिनके तालु ओष्ठ दंतमांस जिह्वा नेत्रों के अंत गुदा हाथ औ पैर रक्तवर्ण होयं वे रुधिरसार होते हैं अर्थात् उनके शरीरमें रुधिरसार होताहै। रुधिरसार वाले पुरुष बहुत सुख स्त्री धन औ पुत्रोंकरके युक्तहोते हैं ९७॥

स्निग्धत्वक्काधनिनोमृदुभिःसुभगाविचक्षणास्तनुभिः॥
मज्जामेदःसाराःसुशरीराःपुत्रवित्तयुताः ९८॥

स्निग्धत्वचा होय तो धनी होते हैं मृदुत्वचाहोय तो सुभग होते हैं औ तनु (पतली) त्वचाहोय तो पंडित होतेहैं। मज्जा औ मेद जिनके शरीरमें सार होयँ उनका देह सुन्दर होता है औ पुत्र औ धनकरके युक्त होते हैं ९८॥

स्थूलास्थिरस्थिसारोबलवान्विद्यान्तगःसुरूपश्च॥
बहुगुरुशुक्राःसुभगाविद्वांसोरूपवन्तश्च ९९॥

जिसके शरीरमें अस्थिसारहोय उसके हाडमोटे होते हैं वह पुरुषबलवान् विद्याके अंतको पहुंचनेवाला औ सुरूप होताहै। जिनका वीर्य बहुत औ घना होय वे वीर्यसार होतेहैं। वीर्यसार पुरुष सुभग विद्वान् औ रूपवान् होते हैं ९९॥

उपचितदेहोविद्वान्धनीसुरूपश्चमांससारोयः॥ इतिसारः॥
सङ्घातइतिचसुश्लिष्टसन्धितासुखभुजोज्ञेयाः १०० इतिसंहतिः॥

पुष्टशरीरवाला प्राणी मांससार होता है। मांससार मनुष्य विद्वान् धनी औ सुरूप होताहै। यह सारका लक्षणकहा॥ अंगोंकी संधियोंकी सुश्लिष्टता को संघात (संहति) कहतेहैं। संघातवाले पुरुष सुखभोगी होते हैं १००॥

स्नेहःपंचसुलक्ष्योवाग्जिह्वादन्तनेत्रनखसंस्थाः॥
सुतधनसौभाग्ययुतास्निग्धैस्तैर्निर्धनारूक्षैः १०१॥इतिस्नेहः॥

वचन जिह्वा दांत नेत्र औ नख इनपांचों में स्थितस्नेहदेखनाचाहिये। ये पांचों जिनके स्निग्ध होयँ वे पुत्र धन औ सौभाग्य करके युक्त होते हैं औ ये पांचों जिनके रूक्षहोयँ वे निर्धन होते हैं १०१॥

द्युतिमान्वर्णःस्निग्धःक्षितिपानांमध्यमःसुतार्थवताम्॥
रूक्षोधनहीनानांशुद्धःशुभदोनसंकीर्णः १०२॥ इतिवर्णः॥

गौरश्याम चाहे जो वर्ण शरीर का होय परन्तु वहवर्ण स्निग्ध औ कांतिमान् राजाओंका होताहै। मध्यम (न रूखा न स्निग्ध) वर्ण पुत्र औ धनवालोंका होताहै रूक्षवर्ण धनहीन पुरुषोंका होता है। स्निग्धवर्ण शुभहोताहै संकीर्ण (कहींरूक्षकहींस्निग्ध) वर्ण शुभ नहींहोता॥ यहवर्णका लक्षणहै १०२॥

साध्यमनूकंवक्काद्गोवृषशार्दूलसिंहगरुडमुखाः॥ अप्रतिहत प्रतापाजितरिपवोमानवेन्द्राश्च १०३ वानरमहिषवराहाऽजतुल्य

वदनाःश्रुतार्थसुखभाजः ॥ गर्दभकरभप्रतिमैर्मुखैश्शरीरैश्चनिस्वसुखाः १०४ ॥ इत्यनूकम् ॥

मुखको देखकर पूर्वजन्म जानै। गौ बैल व्याघ्र सिंह औ गरुड़ के तुल्य जिनके मुख होयँ उनका पूर्वजन्म शुभहोता है औ वे पुरुष अप्रतिहत प्रताप शत्रुओं को जीतनेवाले औ राजा होते हैं १०३ बन्दर महिष सूकर औ बकरे के तुल्य जिनके मुख होयँ वे शास्त्र धन औ सुख करके युक्त होते हैं। इनका पूर्वजन्म मध्यमहै। गर्दभ औ ऊंट के तुल्य जिनके मुख औ शरीर होयँ वे पुरुष निर्धन औ सुखहीन होते हैं इनका पूर्वजन्म अशुभहै यह अनूक पूर्वजन्म का लक्षण कहाहै १०४ ॥

अष्टशतंषएणवतिःपरिमाणंचतुरशीतिरितिपुंसाम् ॥
उत्तमसमहीनानामंगुलसंख्यास्वमानेन १०५ ॥ इत्युन्मानम् ॥

अपने अंगुलों से एकसौ आठ अंगुल ऊँचाहोय वह पुरुष उत्तम होता है छियानवे अंगुल ऊंचाहोय वह मध्यम औ जो पुरुष अपने अंगुलों से चौरासी अंगुल ऊंचाहोय वह अधम होताहै। यह उँचाईका लक्षण कहाहै। पैरके अग्रसे शिरके मध्यमभाग पर्यंत मापना चाहिये १०५ ॥

भारार्धतनुःसुखभाक्तुलितोऽतोदुःखभाग्भवत्यूनः ॥
भारोऽतीवाढ्यानामध्यर्धःसर्वधरणीशः १०६ ॥

दोहजार पलका एकभार होताहै तोलने से जिसपुरुषका बोझआधाभार होय वह सुखभोगताहै। इससे न्यूनहोय तो दुःखीरहताहै एकभार (दोहज़ार पल) जिनका बोझहोय वे अति धनवान् होतेहैं। डेढ़भार (तीनहजारपल) जिनके शरीरका बोझहोय वे चक्रवर्तीराजा होते हैं १०६ ॥

विंशतिवर्षानारीपुरुषःखलुपंचविंशतिभिरब्दैः ॥
अर्हतिमानोन्मानजीवितभागेचतुर्थेवा १०७ ॥ इतिमानम् ॥

बीसवर्षकी अवस्थामें स्त्री औ पचीसवर्षकी अवस्थामें पुरुष मापने औ तोलने चाहिये। अथवा गणित आदिसे जितना उनका आयुष् निश्चितहुआ हो उसकी चौथाई बीतचुके उससमय मापै औ तोलै १०७ ॥

भूजलशिख्यऽनिलाऽम्बरसुरनररक्षःपिशाचकतिरश्चाम् ॥
सत्वेनभवतिपुरुषोलक्षणमेतद्भवत्येषाम् १०८ ॥

भूमि जल अग्नि वायु आकाश देवता मनुष्य राक्षस पिशाच औ तिर्यक् (पशुपक्षी) इनकातत्व (प्रकृति) पुरुषमें होताहै उनका यहलक्षणकहतेहैं १०८॥

महीस्वभावःशुभपुष्पगन्धःसम्भोगवान्सुश्वसनःस्थिरश्च ॥

तोयस्वभावोबहुतोयपायीप्रियाभिभाषीरसभोजनश्च १०९ ॥

भूमि प्रकृतिवाले मनुष्यका सुन्दर कमल आदि पुष्पोंके समान गंधहोता है वह पुरुष भोगी सुगन्धश्वास करकेयुक्त औ स्थिर स्वभाव होताहै । जल प्रकृतिका मनुष्य बहुत जल पीता है । मीठा बोलनेवाला होताहै औ मधुर आदि रसभोजन करने में उसकी रुचि होती है १०९ ॥

अग्निप्रकृत्याचपलोऽतितीक्ष्णश्चण्डःक्षुधालुर्बहुभोजनश्च ॥
वायोःस्वभावेनचलःकृशश्चक्षिप्रंचकोपस्यवशंप्रयाति ११० ॥

अग्नि प्रकृतिका मनुष्य चपल अतितीक्ष्ण औ क्रूर होताहै। क्षुधाको नहीं सहसक्ता औ बहुत भोजन करता है । वायु प्रकृतिका मनुष्य चंचल औ दुर्बलहोता है औ शीघ्रही क्रोधवश होजाता है ११० ॥

खप्रकृतिर्निपुणोविवृतास्यःशब्दगतौकुशलःसुषिराङ्गः ॥
त्यागयुतःपुरुषोमृदुकोपःस्नेहरतश्चभवेत्सुरसत्वः १११ ॥

आकाश प्रकृतिका मनुष्य सब काममें निपुण होताहै । मुखखुला रखता है शब्दगति (गीतविद्या) में कुशल होताहै औ उसके अंग सुषिर (छिद्र)युक्त होते हैं । देवप्रकृतिका मनुष्यत्यागी अल्पक्रोध औ प्रीतियुक्त होता है १११ ॥

मर्त्यसत्वसंयुतोगीतभूषणप्रियः ॥
संविभागशीलवाञ्चित्यमेवमानवः ११२ ॥

मनुष्य प्रकृति के मनुष्यको गीत औ भूषण प्रिय होते हैं । औ नित्य वह मनुष्य संविभागवाला (बांधवों के ऊपर उपकार करनेवाला) औ शीलवान् होता है ११२ ॥

तीक्ष्णप्रकोपःखलचेष्टितश्चपापश्चसत्वेननिशाचराणाम् ॥
पिशाचसत्वश्चपलोमलाक्तोबहुप्रलापीचसमुल्वणाङ्गः ११३॥

राक्षस प्रकृतिका मनुष्य बहुत क्रोधी दुष्टस्वभाव औ पापी होताहै पिशाच प्रकृतिका मनुष्य चंचल मलिन शरीर बहुत बकनेवाला औ स्थूल अंगों करके युक्तहोता है ११३ ॥

भीरुःक्षुधालुर्बहुभुक्चयःस्याज्ज्ञेयःससत्वेननरास्तिरश्चाम्॥ एवंनराणांप्रकृतिःप्रदिष्टायल्लक्षणज्ञाःप्रवदन्तिसत्वम्११४॥इतिप्रकृतिः॥

तिर्यक् प्रकृतिका मनुष्यभीरु (डरनेवाला) क्षुधालु (भूखनसहनेवाला) औ बहुत भोजन करनेवाला जानना चाहिये । इसभांति मनुष्योंकी प्रकृति कही है । जिसप्रकृतिको पुरुष लक्षण जाननेवाले विद्वान् सत्व कहते हैं ॥ यह प्रकृतिका लक्षण कहाहै ११४ ॥

शार्दूलहंससमदद्विपगोपतीनांतुल्याभवन्तिगतिभिःशिखिनांच भूपाः ॥ येषांचशब्दरहितंस्तिमितंचयातंतेऽपीश्वराद्रुतपरिप्लुतगा दरिद्राः ११५ ॥ इतिगतिः ॥

शार्दूल हंस मस्तहाथी वृष औ मयूर के समान जिनकी गतिहोय वे राजा होतेहैं। जिनकी गति शब्दरहित औ मन्दहोय वे भी धनवान् होते हैं। शीघ्र औ मेंड़ककी भांति उछलतेहुये जो पुरुष गमनकरें वे दरिद्र होतेहैं। यह गति का लक्षण कहा है ११५ ॥

श्रान्तस्ययानमशनंचवुभुक्षितस्य पानंतृषापरिगतस्यभयेषु रक्षा ॥ एतानियस्यपुरुषस्यभवन्तिकालेधन्यंवदन्तिखलुतंनरलक्ष णज्ञाः ११६ ॥

थकेहुयेको यान (सवारी) भूखेको भोजन प्यासेको जलआदि पान औ भयके समय रक्षा ये सबबात जिसपुरुष को अवसर के ऊपर प्राप्तहोजायँ मनुष्य लक्षण जाननेवाले उसपुरुषको धन्य (शुभलक्षण) कहते हैं ११६ ॥

पुरुषलक्षणमुक्तमिदंमयामुनिमतान्यवलोक्यसमासतः ॥
इदमधीत्यनरोनृपसंमतोभवतिसर्वजनस्यचवल्लभः ११७ ॥

इतिश्रीवराहमिहिरकृतौवृहत्संहितायां पुरुषलक्षणं
नामाऽष्टषष्टितमोऽध्यायः ६८ ॥

अनेक मुनियों के मतदेखकर संक्षेपसे यहपुरुष लक्षण हमने कहाहै। इस को पढ़कर मनुष्य राजाका मान्य औ सबमनुष्योंका प्याराहोता है ११७ ॥

श्रीवराहमिहिराचार्यकीबनाईवृहत्संहितामें पुरुषलक्षणनाम
अठसठवांअध्यायसमाप्तहुआ ६८ ॥

उनहत्तरवांअध्याय ॥

पञ्चमहापुरुषलक्षण ॥

ताराग्रहैर्बलयुतैःस्वक्षेत्रस्वोच्चगैश्चतुष्टयगैः ॥
पञ्चपुरुषाःप्रशस्ताजायन्तेतानहंवक्ष्ये १ ॥

भौमआदि पांचग्रह स्थान दिक् चेष्टा औ काल बल करके युक्तहोयं अपने राशि अथवा उच्चमें स्थितहोकर लग्न चतुर्थ सप्तम अथवा दशमस्थान में बैठें तो पांच उत्तम पुरुष उत्पन्न होते हैं अर्थात् एक२ ग्रहकरके एक२ पुरुष होता है उनको हम कहते हैं १ ॥

जीवेनभवतिहंसःसौरेणशशःकुजेनरुचकश्च ॥
भद्रोवुधेनवलिनामालव्योदैत्यपूज्येन २ ॥

बृहस्पति बलवान् होकर स्वराशि अथवा स्वोच्च में स्थितहोकर जिसके केन्द्रमें बैठेहों वह पुरुष हंसहोता है। शनैश्चर के बैठनेसे शश होताहै मंगल से रुचक बुध बलवान् हो तथा भद्र औ शुक्र के होने से मालव्यनाम पुरुष होता है २ ॥

सत्वमहीनंसूर्याच्छारीरंमानसंचचन्द्रबलात् ॥ यद्राशिभेदयुक्तावेतौतल्लक्षणःसपुमान् ३ तद्धातुमहाभूतप्रकृतिद्युतिवर्णसत्वरूपाद्यैः ॥ अबलरवीन्दुयुतैस्तैःसंकीर्णालक्षणैःपुरुषाः ४ ॥

सूर्य के बलसे उस पुरुषका परिपूर्ण सत्व औ चन्द्रके बलसे शरीर के औ मनके गुणहोते हैं । सूर्य चन्द्र जिस ग्रह के राशि द्रेष्काण नवांश द्वादशांश त्रिंशांश में बैठेहोयँ उसग्रहके धातु महाभूत प्रकृति कांति वर्ण सत्व रूपआदि लक्षणों करके युक्त वहपुरुष होता है। (धातुआदि बृहज्जातकादि ग्रन्थों में लिखेहैं) बलयुक्त सूर्य चन्द्र जिसग्रहके राशि भेदमें बैठें उस ग्रहके धातुआदि लक्षणों करके युक्त वह पुरुष होता है परन्तु निर्बल सूर्य चन्द्रहोकर राशिभेद में बैठें तो संकीर्ण (मिलेहुये) लक्षणों करके युक्त पुरुषहोते हैं ३ । ४ ॥

भौमात्सत्वंगुरुताबुधात्सुरेज्यात्स्वरःसितात्स्नेहः ॥
वर्णःसौरादेषांगुणदोषैःसाध्वसाधुत्वम् ५ ॥

मंगलसे सत्व (शौर्य) बुधसे गुरुता बृहस्पतिसे स्वर शुक्रसे स्नेह औ शनैश्चरसे कांति होती है। भौमआदि ग्रह बलवान् होयँ तो सत्व आदि अच्छे होते हैं निर्बल होयं तो सत्व आदिका अभाव होता है ५ ॥

संकीर्णाःस्युर्नन्नृपादशासुतेषांभवन्तिसुखभाजः ॥
रिपुगृहनीचोच्चच्युतसत्पापनिरीक्षणैर्भेदः ६ ॥

संकीर्ण लक्षणवाले पुरुष राजानहीं होते केवल पूर्वोक्त भौमआदि ग्रहोंकी दशामें सुख भोगते हैं। शत्रु क्षेत्रमें स्थिति नीचसे औ उच्चसे निकलना शुभ ग्रह औ पापग्रहोंकी दृष्टि इनसबकरकेभेद अर्थात् पुरुषोंकी संकीर्णताहोतीहै ६

षण्णवतिरंगुलानांव्यायामोदीर्घताचहंसस्य ॥
शशरुचकभद्रमालवसंज्ञितास्त्र्यंऽगुलविवृद्ध्या ७ ॥

छियानवेअंगुल उंचाई औछियानवेअंगुल व्यायाम (दोनोंभुजा पसार कर चौडाई) हंसका होताहै। इनमें तीन२ अंगुल बढ़ाते जायँ तो क्रमसे शश रुचक भद्र औ मालवकी उंचाई औ व्यायामका मान होताहै ७ ॥

यःसात्विकस्तस्यदयास्थिरत्वंसत्वार्जवंब्राह्मणदेवभक्तिः ॥ रजोऽधिकःकाव्यकलाक्रतुस्त्रीसंसक्तचित्तःपुरुषोऽतिशूरः ८ तमोऽधिको

वञ्चयितापरेषांमूर्खोऽलसःक्रोधपरोऽतिनिद्रः ॥ मिश्रैर्गुणैःसत्वरज स्तमोभिर्मिश्रास्तुतेसप्तसहप्रभेदैः ९ ॥

सात्विक पुरुषको दया स्थिरता जीवों के साथ सरलता ब्राह्मण औ देवताओं में भक्ति होती है । रजोगुणी पुरुष काव्य नृत्त गीत आदि कला यज्ञ औ स्त्रियोंमें आसक्त होता है औ अत्यन्त शूरवीर होता है ८ तमोगुणी पुरुष औरोंको ठगनेवाला मूर्ख आलसी क्रोधी औ बहुत सोनेवाला होता है। सत्व रज तम ये तीनों गुण मिलनेसे मिश्रस्वभावके पुरुष होते हैं जैसा सत्व रज। सत्वतम। रजतम। सत्व रजतम। चारभेद ये औ तीन भेद एक२गुण करके पहिले कहे इसभांति सातप्रकारके पुरुषहोते हैं ९ ॥

माल्व्योनागनासासमभुजयुगलोजानुसंप्राप्तहस्तोमांसैःपूर्णाङ्ग सन्धिःसमरुचिरतनुर्मध्यभागेकृशश्च ॥ पञ्चाऽष्टौचोर्ध्वमास्यंश्रुति विवरमपित्र्यंगुलोनंचतिर्यग्दीप्ताक्षंसत्कपोलं समसितदशनंनाति मांसाऽधरोष्ठम् १० ॥

माल्व्य पुरुषके दोनों भुजहाथीकी शुंडके समान समान होते हैं। जानु पर्यंत उसके हाथ पहुंचते हैं अर्थात् वह पुरुष आजानुबाहु होताहै अंगोंकी सब संधिमांससे पुष्टहोती हैं। शरीर उसका समान औ सुन्दरहोताहै। मध्यभाग कृश होताहै। ऊर्ध्व मान् करके ठोड़ीसे ललाट पर्यन्त मुखकी उंचाई तेरह अंगुल होतीहै। औ ठोड़ीसे कर्णच्छिद्र पर्यंत तिरछी चौड़ाई दशअंगुल होती है। औ उस पुरुष का मुखदीप्त नेत्र सुन्दर कपोल समान औ श्वेतदांत औ पतले नीचे के ओष्ठ करके युक्त होताहै १० ॥

मालवान्समरुकच्छसुराष्ट्रान्लाटसिन्धुविषयप्रभृतींश्च ॥
विक्रमार्जितधनोऽवतिराजापारियात्रनिलयान्कृतबुद्धिः ११ ॥

वहमाल्व्य पुरुष मालव मरु कच्छ (भड़ौंच) सुराष्ट्र लाट सिंधु आदि देशोंका पालन करताहै। पराक्रमसे धन संपादन करता है राजा होता है। पारियात्र पर्वतमेंनिवास करनेवालोंका भी रक्षणकरताहै औसुबुद्धिहोताहै ११॥

सप्ततिवर्षोमाल्व्योऽयंत्यक्ष्यतिसम्यक्प्राणांस्तीर्थे ॥
लक्षणमेतत्सम्यक्प्रोक्तंशेषनराणांचातोवक्ष्ये १२ ॥

सत्तरवर्ष आयुष् भोगकर यह माल्व्य पुरुष भलीभांति तीर्थपर प्राणत्या-गताहै। यह माल्व्यका लक्षण अच्छे प्रकार से कहा अब भद्र आदि शेपम-नुष्यों का लक्षण कहते हैं १२ ॥

उपचितसमवृत्तलम्बबाहुर्भुजयुगलप्रमितःसमुच्छ्रयोऽस्य ॥

मृदुतनघनरोमनद्धगण्डोभवतिनरःखलुलक्षणेनभद्रः १३ ॥

भद्रपुरुषके पुष्ट सम वर्तुल औ लंबे बाहु होतेहैं। भुजा पसारने से जितनी चौड़ाई होय उतनीही उसकी उंचाई होतीहै। कोमल सूक्ष्म औ घने रोमों करके युक्त उसके कपोल होते हैं। इन लक्षणों करके बुधके योगसे भद्र संज्ञक पुरुष होताहै १३ ॥

त्वक्शुक्रसारःपृथुपीनवक्षाःसत्वाधिकोव्याघ्रमुखःस्थिरश्च ॥ क्षमान्वितोधर्मपरःकृतज्ञोगजेन्द्रगामीबहुशास्त्रवेत्ता १४ प्राज्ञोवपुष्मांसुललाटशङ्खःकलासुभिज्ञोधृतिमान्सुकुक्षिः ॥ सरोजगर्भःद्युतिपाणिपादोयोगीसुनासःसमसंहतभ्रूः १५ ॥

भद्रपुरुष त्वक्सार औ वीर्यसार होताहै विस्तीर्ण औ पुष्ट उसका वक्षस्थल होताहै सत्व अधिक होताहै व्याघ्रके समान उसका मुख होता है। वह पुरुष स्थिरस्वभाव क्षमायुक्त धर्मात्मा कृतज्ञ गजेन्द्रके समानगतिवाला बहुतशास्त्र जानने वाला १४ बुद्धिमान सुन्दर शरीर वाला सुन्दर ललाट औ शंखों (कंनपटी) वाला नृत्यगीत आदि कलाओं में अभिज्ञ धैर्ययुक्त सुकुक्षि कमल गर्भ के समान कांति युक्त हस्तपादों करके युक्त योगी सुन्दर नासिका करके युक्त समान औ मिलेहुये भ्रुओं करके युक्त होताहै १५ ॥

नवाऽम्बुसिक्ताऽवनिपत्रकुंकुम द्विपेन्द्रदानाऽगुरुतुल्यगन्धिता ॥
शिरोरुहाश्चैकजकृष्णकुंचितास्तुरंगनागोपमगूढगुह्यता १६ ॥

नयेजल करके सिंचीहुई भूमिकेगन्धके समान पत्र (तजपत्र) केसर हाथी कामद अगर अथवा इनके गंधकेतुल्य गंध उसके शरीरमेंहोय शिरकेकेश एक२ रोम कूपमें एक २ उत्पन्न होयँ काले औ कुंचित होयँ घोड़े अथवा हाथी के तुल्य उसका गुह्य (लिंग) गुप्तहै १६ ॥

हलमुसलगदासिशङ्खचक्रद्विपमकराऽब्जरथाङ्किताऽङ्घ्रिहस्तः ॥
विभवमपिजनोऽस्यभुजीतिक्षमतिहिनस्वजनंस्वतन्त्रबुद्धिः १७॥

हल मुसल गदा खड्ग शंख चक्र हाथी मकर कमल औ रथके तुल्यरेखा उसके हाथ पैरोंमें होती हैं । इसके ऐश्वर्य को और भी मनुष्य भोगते हैं अपने बंधुजनोंको नहीं सहता औ स्वच्छन्दचारी होता है १७ ॥

अंगुलानिनवतिश्चषड्नान्युच्छ्रयेणतुलयापिहिभारः ॥
मध्यदेशनृपतिर्यदिपुष्टास्त्र्यादयोऽस्यसकलाऽवनिनाथः १८ ॥

चौरासी अंगुल ऊंचा होता है औ उसपुरुषके शरीरका भार एक तुला (दोहज़ारपल) होताहै औ मध्यदेशकाराजा होताहै । पहिले तीन २ अंगुलकी

वृद्धिसे शश आदि पुरुषोंकी उंचाई एकसौ आठ अंगुल पर्यंत कही यदि वह एकसौआठ अंगुल उंचाई इसभद्र पुरुषकी होय तो चक्रवर्ती राजाहोताहै १८॥

भुक्त्वासम्यग्वसुधांशौर्येणोपार्जितामशीत्यब्दः ॥
तीर्थेप्राणांस्त्यक्त्वाभद्रोदेवालयंयाति १९ ॥

शौर्य से संपादन करेहुये भूमंडलको भली भांति भोगकर अस्सीवर्ष की अवस्थामें तीर्थपर प्राण त्यागकर भद्र पुरुष स्वर्गको जाताहै १९ ॥

ईषद्दन्तुरकस्तनुद्विजनखःकोशेक्षणःशीघ्रगोविद्याधातुवणिक्क्रियासुनिरतःसम्पूर्णगण्डःशठः ॥ सेनानीःप्रियमैथुनःपरजनस्त्रीसक्तचित्तश्चलश्शूरोमातृहितोवनाचलनदीदुर्गेषुसक्तःशशः २० ॥

शनैश्चर के योग से उत्पन्न हुये शशनामक पुरुष के दांत कुछ ऊंचे होते हैं नख औ दांत छोटे होते हैं। कोशेक्षण होता है अर्थात् उसके नेत्रकोश पुष्ट होते हैं। शीघ्रगामी होता है विद्या धातु औ वणिक् क्रिया (व्यापारआदि) में आसक्त होताहै कपोल पुष्ट होते हैं वह पुरुष शठ (स्वकार्य साधक) होता है सेनाका अधिपति प्रिय मैथुन परस्त्री सक्त चञ्चल शूर माताका भक्त वनपर्वत नदी औ दुर्ग (किला) में आसक्त होता है अर्थात् इनस्थानों में पुरुषको रहने की रुचिहोती है २० ॥

दीर्घोऽगुलानांशतमष्टहीनं साशंकचेष्टःपररन्ध्रविच्च ॥
सारोऽस्यमज्जानिभृतप्रचारःशशोह्ययंनातिगुरुःप्रदिष्टः २१॥

शश पुरुष बानवे अंगुल ऊंचा होता है सब कार्यों में शंकित रहता है औरों के छिद्र जानता है मज्जासार होताहै स्थिरगति होताहै औ बहुत स्थूल नहीं होता २१ ॥

मध्येकृशःखेटकखड्गवीणा पर्यङ्कमालामुरजाऽनुरूपाः ॥
शूलोपमाश्चोर्ध्वगताश्चरेखाःशशस्यपादोपगताःकरेवा २२ ॥

शश पुरुष का मध्यभाग कृश होता है औ उसके पैरों में अथवा हाथों में ढाल तरवार बीणा पर्यंक (पलंग) माला मृदंग औ त्रिशूल के आकार रेखा औ ऊर्ध्वरेखा होती हैं २२ ॥

प्रात्यन्तिकोमाण्डलिकोऽथवायं स्फिक्स्रावशूलाऽभिभवार्त्तमूर्त्तिः ॥
एवंशशःसप्ततिहायनोऽयं वैवस्वतस्यालयमभ्युपैति २३ ॥

शशपुरुष म्लेच्छ देशका राजाहोताहै अथवा और कहीं मांडलिक राजा होताहै स्फिक् स्रावरोगकी पीडाकरके पीडित शरीर रहताहै। इसप्रकार यह शशपुरुष सत्तर बर्ष की अवस्था में मृत्युवशहोता है २३ ॥

रक्तंपीनकपोलमुन्नतनसंवक्रंसुवर्णोपमं वृत्तंचाऽस्यशिरोऽक्षिणी मधुनिभेसर्वेचरक्तानखाः ॥ स्रग्दामांऽकुशशंखमत्स्ययुगलक्रत्वङ्ग कुम्भाऽम्बुजै श्चिह्नैर्हंसकलस्वनःसुचरणोहंसःप्रसन्नेन्द्रियः २४ ॥

बृहस्पति के योगसे उत्पन्नहुये शशपुरुष का मुखरक्तवर्ण पुष्ट कपोलोंकरकेयुक्त ऊंची नासिका वाला औ सुवर्ण के समान कांतियुक्त होता है। शिर उसका गोल होताहै शहत के रंगके नेत्र होते हैं। सब नखरक्तवर्ण होते हैं। माला रस्सी अंकुश शंख दो मत्स्य यज्ञ के अंगस्रुक आदि कलश औ कमलके तुल्यरेखा उसके हाथ पैरोंमें होती हैं हंसके समान मधुर स्वरहोता है सुन्दर चरणहोते हैं औ हंसपुरुष के सब इन्द्रिय निर्मल होते हैं २४ ॥

रतिरम्भसिशुक्रसारता द्विगुणेश्चाष्टशतैःपलैर्मितिः ॥
परिमाणमथाऽस्यषड्युता नवतिःसंपरिकीर्त्तिताबुधैः २५ ॥

इस की जल में प्रीतिहोती है शुक्रसार होता है सोलह सौपल इस हंस पुरुष के शरीर का भार होता है औ छियानवे अंगुल इसकी उंचाई पण्डितों ने कही है २५ ॥

भुनक्तिहंसःखशशूरसेनान्गान्धारगंगायमुनान्तरालम् ॥
शतंदशोनंशरदांनृपत्वं कृत्वावनान्तेसमुपैतिमृत्युम् २६ ॥

हंस पुरुष खश शूर सेन गांधार औ अंतर्वेद देशको भोगता है। नब्बे वर्ष राज्य भोगकर वनमें मृत्यु वश होता है २६ ॥

सुभ्रूकेशोरक्तश्यामःकम्बुग्रीवोव्यादीर्घास्यः ॥
शूरःक्रूरःश्रेष्ठोमन्त्रीचौरस्वामीव्यायामीच २७ ॥

भौमके योग से उत्पन्न हुआ रुचकनाम पुरुष सुन्दर भ्रू औ केशों करके युक्तहोता है रक्त श्याम वर्ण होता है। शंख के तुल्य ग्रीवा वाला औ लम्बे मुख करके युक्त होता है शूर क्रूर श्रेष्ठ मंत्री चोरों का स्वामी औ परिश्रमी होता है २७ ॥

यन्मात्रमास्यंरुचकस्यदीर्घं मध्यप्रदेशेचतुरस्रतासा ॥
तनुच्छविःशोणितमांससारो हन्ताद्विषांसाहससिद्धकार्यः २८ ॥

रुचक के मुखकी जितनी लम्बाई होय वही मध्य भागकी चतुरस्रता का प्रमाण होता है। अर्थात् मुखकी उंचाई को चौगुणा करने से मध्यभागकी मोटाई होती है उसकी थोड़ी कांति होती है रुधिर मांससार होता है शत्रुओं को मारनेवाला होताहै औ उसके कार्य साहस से सिद्ध होतेहैं। बिनाबिचारे करना साहस कहाता है २८ ॥

खट्वाङ्गवीणावृषचापवज्र शक्तीन्दुशूलाऽङ्कितपाणिपादः ॥
भक्तोगुरुब्राह्मणदेवतानां शतांगुलःस्यात्तुसहस्रमानः २९ ॥

खट्वांग वीणा वृष धनुष बज्र बर्छी चन्द्रमा औ त्रिशूल के आकार की रेखाओं करके रुचक पुरुषके हाथ पैर चिह्नित होते हैं गुरु ब्राह्मण औ देवताओं का वह भक्त होताहै सौ अंगुल ऊंचा होता है औ हजार पल उसके शरीरका भार होता है २९ ॥

मन्त्राभिचारकुशलःकृशजानुजङ्घो विन्ध्यंससह्यगिरिमुज्जयिनींचभुक्त्वा ॥ सम्प्राप्यसप्ततिसमारुचकोनरेन्द्रः शस्त्रेणमृत्युमुपयात्यथवाऽनलेन ३० ॥

वह रुचक पुरुष मंत्र औ मारण उच्चाटन आदि अभिचार कर्ममें कुशल होताहै उसके जानु औ जंघा कृश होतेहैं। विंध्याचल सह्याद्रि औ उज्जयिनी के देशों में राजभोगकर सत्तरवर्षकी अवस्थामें रुचक राजा शस्त्रकरके अथवा अग्नि करके मृत्युको प्राप्तहोता है ३० ॥

पंचापरेवामनकोजघन्यःकुब्जोऽपरोमण्डलकोथऽसामी ॥
पूर्वोक्तभूपाऽनुचराभवन्ति संकीर्णसंज्ञाःशृणुलक्षणैस्तान् ३१ ॥

इन पांच महापुरुषोंको छोड और पांच पुरुष संकीर्ण संज्ञक होतेहैं वामनक जघन्य कुब्ज मण्डलक औ सामी ये पूर्वोक्त पांच राजाओंके सेवक होते हैं अब इन पांचोंके लक्षण सुनो ३१ ॥

सम्पूर्णाङ्गोवामनोभग्नपृष्ठः किंचिच्चोरूमध्यकक्ष्यान्तरेषु ॥
ख्यातोराज्ञांह्येषभद्रानुजीवीस्फीतोदातावासुदेवस्यभक्तः३२॥

वामनके सबअंग सम्पूर्ण होते हैं पीठ टूटीहुई होती है ऊरु मध्यभाग औ कक्ष्यान्तर में किंचित् (असम्पूर्ण) होताहै अर्थात् ये अंग उसके कृशहोते हैं वह वामन नामक पुरुष प्रसिद्धहोताहै पांच राजाओंके बीच भद्रनामक राजा का अनुजीवी होताहै। स्फीतदाता औ नारायणका भक्तहोता है ३२ ॥

मालव्यसेवीतुजघन्यनामाखण्डेन्दुतुल्यश्रवणःसुगन्धिः ॥ शुक्रेणसारःपिशुनःकविश्चरूक्षच्छविःस्थूलकरांगुलीकः ३३ क्रूरोधनीस्थूलमतिःप्रतीतस्ताम्रच्छविःस्यात्परिहासशीलः ॥ उरोऽघ्रिहस्तेष्वसिशक्तिपाशपरश्वधाङ्कश्चजघन्यनामा ३४ ॥

जघन्यनामक पुरुष मालव्य राजाका सेवक होताहै उसके कर्ण अर्धचन्द्र के तुल्य होतेहैं सुन्दर गन्धकरके युक्त वह होता है। शुक्रसार होता है पिशुन (सूचक) औ पण्डित होता है। शरीरकांति रूखी होती है। उसके हाथोंकी

अंगुली मोटी होती हैं ३३ वह पुरुष क्रूर धनवान् स्थूलबुद्धि औ प्रसिद्ध होता है। तांबेके रंग उसका रंग होता है हंसनेमें उसकी रुचि रहती है । औ उस जघन्यनाम पुरुष के छाती पैर औ हाथों में तरवार वर्छी पाश औ परशु के आकारकी रेखा होती हैं ३४ ॥

कुब्जोनाम्नायःसशुद्धोह्यधस्तात्क्षीणःकिंचित्पूर्वकायेनतश्च ॥
हंसासेवीनास्तिकार्थैरुपेतो विद्वान्शूरःसूचकःस्यात्कृतज्ञः ३५ ॥

कुब्ज नामक पुरुष नाभिसे नीचे परिपूर्णांग औ नाभिसे ऊपर कुछ क्षीण औ नत होताहै हंसनामक राजाका सेवन करता है । वह नास्तिक धनवान् विद्वान् शूर सूचक औ कृतज्ञ होताहै ३५ ॥

कलास्वभिज्ञःकलहप्रियश्च प्रभूतभृत्यःप्रमदाजितश्च ॥
संपूज्यलोकंप्रजहात्यकस्मात् कुब्जोऽयमुक्तःसततोद्यतश्च ३६ ॥

वह कुब्ज पुरुष कलाओं में अभिज्ञ कलहप्रिय बहुत सेवकों करके युक्त स्त्रीजित होताहै लोकका सत्कार करके अकस्मात् छोड़देता है। यहकहाहुआ कुब्ज पुरुष सबकालमें उत्साहयुक्त रहताहै ३६ ॥

मण्डलकनामधेयोरुचकानुचरोऽभिचारवित्कुशलः ॥ कृत्यावेतालादिपुकर्मसुविद्यासुचानुरतः ३७ वृद्धाकारःखररूक्षमूर्धजःशत्रुनाशनेकुशलः ॥ द्विजदेवयज्ञयोगप्रसक्तधीःस्त्रीजितोमतिमान्३८॥

मण्डलकनाम पुरुष रुचकनाम राजाका सेवक होताहै । वह अभिचार कर्म जाननेवाला कुशल कृत्या वेतालोत्थापन आदि कर्मोंमें औ विद्याओं में अनुरक्त होता है ३७ वृद्धकेतुल्य उसका आकार होता है । कठोर औ रूखे उसके केशहोते हैं शत्रुनाश करनेमें कुशल होताहै । ब्राह्मण देवता यज्ञ औ योगमें उसकी बुद्धिलगी रहती है। स्त्रीजित् औ बुद्धिमान् होताहै ३८ ॥

सामीतियःसोऽतिविरूपदेहःशशानुगामीखलुदुर्भगश्च ॥
दातामहारम्भसमाप्तकार्योगुणैःशशस्यैवभवेत्समानः ३९ ॥

इतिश्रीवराहमिहिरकृतौबृहत्संहितायांपंचमहापुरुष
लक्षणंनामैकोनसप्ततितमोऽध्यायः ६९ ॥

सामीनामक पुरुष अतिकुरूप देहहोताहै । वह शशनामक राजाका सेवक होता है। दानी होताहै। बड़े २ कार्योंका आरम्भकरके उनकार्योंका समाप्त करता है। गुणोंकरके शशकेही समान वहसामी पुरुष होताहै ३९ ॥

श्रीवराहमिहिराचार्यकीबनाईबृहत्संहितामेंपंचमहापुरुष
लक्षणनामउनहत्तरवांअध्यायसमाप्तहुआ ६९ ॥

सत्तरवांअध्याय ॥

स्त्रीलक्षण ॥

स्निग्धोन्नताग्रतनुताम्रनखौकुमार्याः पादौसमोपचितचारुनिगूढगुल्फौ ॥ श्लिष्टांगुलीकमलकान्तितलौचयस्यास्तामुद्वहेद्यदिभुवोऽधिपतित्वमिच्छेत् १ ॥

जिसकन्या के पाद स्निग्ध ऊंचे आगेसे पतले औ लालरंग के नखोंकरके युक्तहोयँ समानपुष्ट सुन्दर औ निगूढ़ (छिपेहुये) गुल्फों करके युक्तहोयँ अंगुली उनकी परस्पर श्लिष्टहोयँ औ कमलकी कान्तिके तुल्य जिनके तलोंकी कांति होय उसकन्यासे विवाहकरै जो भूमिपति बननाचाहै १ ॥

मत्स्यांऽकुशाऽब्जयववज्रहलासिचिह्नावस्वेदनौमृदुतलौचरणौप्रशस्तौ ॥ जंघेचरोमरहितेविशिरेसुवृत्ते जानुद्वयंसममनुल्बणसन्धिदेशम् २ ऊरूघनौकरिकरप्रतिमावरोमावश्वत्थपत्रसदृशंविपुलंचगुह्यम् ॥ श्रोणीललाटमुरुकूर्मसमुन्नतंच गूढोमणिश्चविपुलांश्रियमादधाति ३ ॥

मत्स्य अंकुश कमल यव वज्र हल औ खड्गके आकारकी जिनमें रेखा होयँ पसीनानहीं आताहोय कोमल जिनके तलहोयँ ऐसेचरण श्रेष्ठहोते हैं। रोमरहित। नाड़ियोंसे रहित औ सुन्दर वर्तुल जंघाहोयँ दोनोंजानु समान होयँ औ उनकी संधि (जोड़) स्थूल न होयँ दोनों ऊरु पुष्ट हाथी की शुंडके आकार औरोम हीनहोयँ पीपलके पत्तेके आकार औ विस्तीर्ण गुह्य (भग) होय श्रोणी (कटि) का उपरिभाग विस्तीर्ण औ कूर्मके समान उन्नतहोय मणि गूढ़होय ऐसे लक्षण होयँ तो बहुतलक्ष्मी प्राप्तहोती है २।३ ॥

विस्तीर्णमांसोपचितोनितम्बोगुरुश्चधत्तेरसनाकलापम् ॥
नाभिर्गभीराविपुलाऽङ्गनानांप्रदक्षिणावर्तगताप्रशस्ता ४ ॥

विस्तीर्ण मांस करके पुष्ट औ गुरु (भारी) नितंबहोय जो कांची कलाप को धारणकरै। गंभीर विस्तीर्ण औ दक्षिणावर्त नाभिहोय तो स्त्रियोंको शुभ होती है ४ ॥

मध्यंस्त्रियास्त्रिवलियुक्तमरोमशंच वृत्तौघनावविषमौकठिनावुरस्यौ ॥ रोमापवर्जितमुरोमृदुचाऽङ्गनानां ग्रीवाचकम्बुनिचिताऽर्थसुखानिधत्ते ५ ॥

स्त्रीका मध्यभाग त्रिवलि करके युक्त औ रोमों से हीन होय दोनों स्तन गोल पुष्ट समान औ कठोर होयँ रोमरहित औ कोमल छाती होय ग्रीवा

शंखके तुल्य तीन रेखाओं करकेयुक्त होय तो धन औ सुख देती है ५॥

बन्धुजीवकुसुमोपमोऽधरोमांसलोरुचिरबिम्बरूपभृत्॥

कुन्दकुड्मलनिभाःसमाद्विजायोषितांपतिसुखाऽमितार्थदाः ६॥

बंधुजीव पुष्प (गुलदुपहर) के तुल्य अति रक्तवर्ण मांसल सुन्दर बिंब फलकेरूपको धारणेवाला अधर (नीचेकाओष्ठ) होय कुंदपुष्पकी कलीकेतुल्य औ समान दांतहोयँ तो स्त्रियोंकोपति सुख औ बहुतधन देनेवालेहोते हैं ६॥

दाक्षिण्ययुक्तमशठंपरपुष्टहंसवल्गुप्रभाषितमदीनमनल्पसौख्यम्॥ नासासमासमपुटारुचिराप्रशस्ता दृङ्नीलनीरजदलद्युतिहारिणीच ७॥

सरलता युक्त शठता से रहित कोकिल औ हंसके शब्दके तुल्य रम्य औ दीनतासे रहित वचन होय तो बहुत सुख देती है समान समपुटों करके युक्त औ सुन्दर नासिका होय तो श्रेष्ठ होती है। नील कमल के दलों की कांति को हरनेवाली दृष्टि शुभहोती है ७॥

नोसंगतेनातिपृथूनलम्बेशस्तेभ्रुवाबालशशाङ्कवक्रे॥

अर्धेन्दुसंस्थानमरोमशंचशस्तंललाटंननतंनतुङ्गम् ८॥

दोनों भ्रू मिले न होयँ बहुत चौड़े न होयँ लंबे न होयँ औ बाल चन्द्रके आकार टेढ़े होयँ तो शुभ होते हैं। अर्ध चन्द्रके आकार रोमहीन न नीचा औ न ऊंचा ललाट शुभ होताहै ८॥

कर्णयुग्ममपियुक्तमांसलंशस्यतेमृदुसमंसमाहितम्॥

स्निग्धनीलमृदुकुञ्चितैकजामूर्धजाःसुखकराःसमंशिरः ९॥

दोनों कान थोड़े मांस करके युक्त होयँ कोमल समान औ संलग्न होयँ तो शुभ होते हैं। स्निग्ध अति कृष्ण वर्ण कोमल कुंचित एक २ रोम कूपमें एक २ उत्पन्न ऐसे केश सुख करते हैं। शिरभी सम अर्थात् न तो निम्नहोय न उन्नत होय तो शुभ होता है ९॥

भृङ्गारासनवाजिकुंजररथश्रीवृक्षयूपेषुभिर्मालाकुंडलचामरांकुशयवैःशैलैर्ध्वजैस्तोरणैः॥ मत्स्यस्वस्तिकवेदिकाव्यजनकःशङ्खातपत्राऽम्बुजैः पादेपाणितलेऽथवायुवतयोगच्छन्तिराज्ञीपदम् १०॥

जिन स्त्रियोंके पाद तलों में अथवा हस्ततलों में भृंगार (झारी) आसन घोड़ा हाथी रथ बिल्व वृक्ष यूप (यज्ञस्तंभ) बाण माला कुंडल चामर अंकुश यव पर्वत ध्वज तोरण मत्स्य स्वस्तिक यज्ञवेदी व्यजन (पंखा) शंख छत्र औ कमलके आकारकीरेखा होयँ वे स्त्री राजाकी रानी होती हैं १०॥

निगूढमणिबन्धनौ तरुणपद्मगर्भोपमौकरौनृपतियोषितां तनुविकृष्टपर्वांगुली ॥ ननिम्नमतिनोन्नतंकरतलंसुरेखान्वितंकरोत्यऽविधवांचिरसुतसुखाऽर्थसम्भोगिनीम् ११ ॥

निगूढ मणिबंधन अर्थात् जिनके मणि बंध ऊंचे न होवैं नवीन कमल के गर्भ समान पतले औ लंबे पर्वोवाली अंगुलियों करकेयुक्त ऐसे हाथ रानियोंके होतेहैं न वहुतनीचा न ऊंचा औ उत्तम रेखाओंकरकेयुक्त करतल जिसस्त्रीका होय वह विधवा नहींहोती औ बहुतकाल पुत्रसुख औ धनकाभोगकरतीहै ११॥

मध्यांगुलियामणिबन्धनोत्थारेखागतापाणितलेऽङ्गनायाः ॥
ऊर्ध्वस्थितापादतलेऽथवायापुंसोऽथवाराज्यसुखायसास्यात् १२ ॥

स्त्री के अथवा पुरुषके हाथमें मणि बंधसे निकल कर मध्यमा अंगुलि पर्यंत जो रेखा जाय अथवा पादतलमें जो ऊर्ध्वरेखा होय वह रेखा राज्य सुख करती है १२ ॥

कनिष्ठिकामूलभवागतायाप्रदेशिनीमध्यमिकान्तरालम् ॥
करोतिरेखापरमायुषःसाप्रमाणमूनातुतदूनमायुः १३ ॥

कनिष्ठाके मूल से निकल कर तर्जनी औ मध्यमा के मध्यभाग पर्यंत जो रेखाजाय उससे आयुष्का प्रमाण होता है जो वह रेखा पूरी होय तो आयुष् पूरा होता है औ न्यूनरेखा होय तो उसके अनुसार आयुष् भी न्यूनजानै १३॥

अंगुष्ठमूलेप्रसवस्यरेखाः पुत्राबृहत्यःप्रमदास्तुतन्व्यः ॥
अच्छिन्नमध्याबृहदायुषांताः स्वल्पायुषांछिन्नलघुप्रमाणाः१४॥

अंगुष्ठ के मूल में संतानकी रेखा होती हैं उन में वड़ीरेखा पुत्रों की औ छोटी रेखा कन्याओं की होती हैं मध्यसे जो रेखा टूटी न होवैं वे दीर्घ आयुष् वालोंकी होतीहै। टूटी औ छोटी रेखा अल्पायुष् संतानों की होती है १४ ॥

इतीदमुक्तंशुभमङ्गनाना मतोविपर्यस्तमनिष्टमुक्तम् ॥
विशेषतोऽनिष्टफलानियानि समासतस्तान्यनुकीर्तयामि १५ ॥

ये स्त्रियों के शुभलक्षण कहे इससे विपरीत लक्षण होवैं तो अशुभहोते हैं। विशेष करके जो अशुभ लक्षणहैं उनको हम संक्षेप से कहते हैं १५ ॥

कनिष्ठिकावातदनन्तरावा महींनयस्याःस्पृशतीस्त्रियाःस्यात् ॥
गताऽथवांगुष्ठमतीत्ययस्याः प्रदेशिनीसाकुलटाऽतिपापा १६ ॥

जिसस्त्री के पैर की कनिष्ठिका अथवा कनिष्ठिकाके समीपकी अंगुलीअनामिका भूमिको स्पर्श न करै अथवा जिसके पैर की तर्जनी अंगूठे से अधिक लम्बीहो वह स्त्री व्यभिचारिणी औ पापिनहोती है १६ ॥

उद्बद्धाभ्यांपिण्डिकाभ्यांशिराले शुष्केजङ्घेरोमशेचातिमांसे ॥
वामावर्तंनिम्नमल्पंचगुह्यं कुम्भाकारंचोदरंदुःखितानाम् १७ ॥

ऊपर को खिचीहुई पिंडलियों करके युक्त नाड़ियों से व्याप्त सूखी रोमों करके व्याप्त अथवा बहुत पुष्ट जंघा जिन स्त्रियों की होयँ। वामावर्त वाले रोमों करके युक्त निम्न औ छोटा गुह्य (भग) जिनका होय औ घटके आकार जिनका पेटहोय वे स्त्री दुःख भोगती हैं १७ ॥

ह्रस्वयाऽतिनिस्वतादीर्घयाकुलक्षयः ॥
ग्रीवयापृथूत्थयायोषितःप्रचण्डता १८ ॥

जिसस्त्रीकी ग्रीवा छोटी होय वह निर्धन होती है बहुत लम्बी ग्रीवा होय तो कुलक्षय होता है औ जिस की ग्रीवा मोटी होय वह स्त्री क्रूर स्वभाव होती है १८ ॥

नेत्रेयस्याःकेकरेपिंगलेवा सादुःशीलाश्यावलोलेक्षणाच ॥
कूपौयस्यागण्डयोश्चस्मितेषुनिःसन्दिग्धंबन्धकींतांवदन्ति १९ ॥

जिसस्त्री के नेत्रकेकर (भेंगे) अथवा पिंगल होयँ वह स्त्री औ जिस के नेत्रश्याव रंगके औ चञ्चल होयँ वह स्त्री व्यभिचारिणी होती है। हँसने के समय जिसस्त्री के कपोलों पर गढ़ेपड़ें वह स्त्री निःसंदेह व्यभिचारिणी होती है १९ ॥

प्रविलम्बिनिदेवरंललाटेश्वशुरंहन्त्युदरेस्फिजोःपतिंच ॥
अतिरोमचयान्वितोत्तरोष्ठी नशुभाभर्तुरतीवयाचदीर्घा २० ॥

जिसका ललाट लम्बमान होय वह स्त्री देवरको मारती है। उदर लम्बमान होय तो श्वशुर को औ जिसस्त्री के स्फिकलम्बमान होयँ वह पतिको मारती है। जिसस्त्री के ऊपरले ओष्ठपर बहुत रोमहोयँ औ जो स्त्री बहुत लम्बीहोय वह पतिके लिये शुभनहीं होती है २० ॥

स्तनौसरोमौमलिनोल्बणौच क्लेशंदधातेविषमौचकर्णौ ॥
स्थूलाःकरालाविषमाश्चदन्ताः क्लेशायचौर्यायचकृष्णमांसाः २१ ॥

जिस स्त्री स्तन औ कर्ण रोमयुक्त मलिन उत्कट औ विषम (छोटेबड़े) होयँ वे क्लेशदेते हैं। जिसके दांत स्थूल कराल औ विषम होयँ वह स्त्री क्लेशभोगती है। काले मांसकरके युक्त जिसके दांतहोयँ वह चोरहोती है २१ ॥

क्रव्यादरूपैर्वृककाककङ्क सरीसृपोलूकसमानचिह्नैः
शुष्कैःशिरालैर्विषमैश्चहस्तै र्भवन्तिनार्यःसुखवित्तहीनाः २२ ॥

मांसखानेवाले गीध आदि पक्षी वृक (भेड़िया) काक कंक सर्प उल्लू के

आकारकी जिनस्त्रियोंके हाथमें रेखाहोयं जिनके हाथ सूखे नाड़ियों से व्याप्त औ विषमहोयं वे स्त्री सुख औ धनसे हीन होती हैं २२ ॥

यातूत्तरोष्ठेनसमुन्नतेन रूक्षाग्रकेशीकलहप्रियासा ॥
प्रायोविरूपासुभवन्तिदोषा यत्राकृतिस्तत्रगुणाभवन्ति २३ ॥

जिसस्त्रीका ऊपरला ओष्ठ ऊचा होय औ केशों के अग्र रूखे होयं वहस्त्री कलह प्रिया (कलिहारी) होती है। प्रायः कुरूपा स्त्रियोंमें दोष होते हैं जिनका उत्तम रूप होय उनमें गुणहोते हैं २३ ॥

पादौसगुल्फौप्रथमंप्रदिष्टौजङ्घेद्वितीयंचसजानुचक्रे ॥ मेढ्रोरुमुष्कंचततस्तृतीयंनाभिःकटिश्चेतिचतुर्थमाहुः २४ उदरंकथयन्ति पंचमंहृदयंषष्ठमथस्तनान्वितम् ॥ अथसप्तमसजत्रुणीकथयंत्यष्टमोष्ठकन्धरे २५ नवमंनयनेचसभ्रुणीसललाटंदशमंशिरस्तथा ॥ अशुभेष्वशुभंदशाफलंचरणाद्येषुशुभेषुशोभनम् २६ ॥
इतिश्रीवराहमिहिरकृतौबृहत्संहितायांस्त्रीलक्षणंनामसप्ततितमोऽध्यायः ७०

दशाभागकेलिये शरीरके दशभाग कहते हैं पाद औ गुल्फ (टंकने) पहिला भाग जानुचक्रों सहित जंघा दूसराभागलिंग ऊरु वृषण तीसरा भाग नाभि कटिचौथाभाग २४ उदर पांचवां भाग स्तनसहित हृदय छठांभाग कंधे औ जत्रु (कंधोंकीसंधि) सातवांभाग ओष्ठ औ ग्रीवा आठवां भाग २५ भ्रू सहित नेत्र नवमभाग औ ललाट सहित शिर दशवां भाग है। पाद आदिक अंग अशुभ लक्षणों करके युक्तहोयं तो उनकी दशाका फल अशुभ औ शुभ लक्षणों करके युक्तहोयं तो उनकी दशाका फल शुभ होता है। यहतात्पर्य है कि जन्म से लेकर बारह २ वर्ष पाद आदि दशभागोंकी दशा होती हैं उनमें जो पाद आदि अंगरूक्ष नाड़ियों करके व्याप्त औ बुरे लक्षणों करके युक्त होयँ उनकी दशा अशुभ औ जो अंग पुष्ट नाड़ियों सेरहित औउत्तम लक्षणोंकरके युक्त होयँ उनकी दशा शुभहोती है। यह बारहवर्ष दशाप्रमाण एकसौ बीस वर्ष का होता आयुष् मानकर कहा है गणितसे जितना आयुष् आवे उसका दशांश दशाप्रमाण होता है २६ ॥

श्रीवराहमिहिराचार्यकीबनाईबृहत्संहितामेंस्त्रीलक्षण
नामसत्तरवांअध्यायसमाप्तहुआ ७० ॥

इकहत्तरवां अध्याय ॥

वस्त्रच्छेदलक्षण ॥

वस्त्रस्यकोणेषुवसन्तिदेवानराश्चपाशान्तदशान्तमध्ये ॥

शेषास्त्रयश्चात्रनिशाचरांशास्तथैवशय्यासनपादुकासु १ ॥

नये वस्त्रके नौभागकर विचारकरै वस्त्रकेकोणों के चारभागों में देवता पाशांत औ दशांत के दोभागों में मनुष्य औमध्यके तीनभागोंमें राक्षस वसते हैं वस्त्रके मूलको पाशांत औ अग्रको दशांत कहते हैं। इसीप्रकार शय्या आसन औ पादुका (खड़ाऊं) केभी नौभागकर फलका विचारकरै १ ॥

लिप्तेमषीगोमयकर्दमाद्यैश्छिन्नेप्रदग्धेस्फुटितेचविन्द्यात् ॥
पुष्टंनवेऽल्पाल्पतरंचभुक्तेपापंशुभंवाऽधिकमुत्तरीये २ ॥

नयावस्त्र स्याही गोवर कर्दमआदि करके लिप्तहोजाय कटजाय जलजाय अथवा फटजाय तो पूरा अशुभफल होताहै कुछ पुराना वस्त्रहोय तो थोड़ा अशुभ होताहै औ बहुत पुरानावस्त्र होय तो बहुतन्यून अशुभफल होताहै। उत्तरीय (ऊपर ओढ़ने का वस्त्र) में इसका फल अधिक होताहै २ ॥

रुग्राक्षसांशेष्वऽथवापिमृत्युःपुंजन्मतेजश्चमनुष्यभागे ॥
भागेऽमराणामथभोगवृद्धिःप्रान्तेषुसर्वत्रवदन्त्यऽनिष्टम् ३ ॥

रक्षसोंके भागों में वस्त्रमें छेदआदि होयँ तो वस्त्रस्वामी को रोगहोय अथवा मृत्युहोय मनुष्य भागों में छेदआदि होयँ तो पुत्रजन्महोय औ कांति होय देवताओं के भागोंमें छेदआदि होयँ तो भोगोंकी वृद्धिहोय। सबभाग के प्रान्तों में छेदआदि होयँ तो गर्गआदि मुनि उसका अनिष्टफल कहते हैं ३ ॥

कङ्कप्लवोलूककपोतकाकक्रव्यादगोमायुखरोष्ट्रसर्पैः ॥
छेदाकृतिर्दैवतभागगापिपुंसांभयंमृत्युसमंकरोति ४ ॥

कंकपक्षी मेंड़क उल्लू कपोत काक मांस खानेवाले गृद्धआदि जंबुक गर्दभ ऊंट औ सर्पके आकारका छेद देवताओं के भागमेंभी होय तोभी पुरुषों को मृत्युकेसमान भयकरताहै। और भागोंमें होय तो क्या कहनाहै ४ ॥

छत्रध्वजस्वस्तिकवर्द्धमानश्रीवृक्षकुम्भाऽम्बुजतोरणाद्यैः ॥
छेदाकृतिर्नैर्ऋतभागगापि पुंसांविधत्तेनचिरेणलक्ष्मीम् ५ ॥

छत्र ध्वज स्वस्तिक वर्धमान (मिट्टीका सिकोरा) बिल्ववृक्ष कलश कमल तोरण आदि के आकारका छेद राक्षस भागमें भी होय तो पुरुषों को शीघ्रही लक्ष्मी देताहै। और भागोंमेंहोय तो क्या कहनाहै ५ ॥

प्रभूतवस्त्रदाश्विनीभरण्यथापहारिणी ॥ प्रदह्यतेऽग्निदैवतेप्रजेश्वरेऽर्थसिद्धयः ६ मृगेतुमूषकाद्भयंव्यसुत्वमेवशाङ्करे ॥ पुनर्वसौशुभागमस्तदग्रभेधनैर्युतिः ७ भुजङ्गभेविलुप्यतेमघासुमृत्युमाप्नु

शेत्॥ भगाह्वयेन्द्रपाद्धयंधनागमायचोत्तरा ८ करेणकर्मसिद्धयःशुभा गमस्तुचित्रया॥ शुभंचभोज्यमानिलेद्विदैवतेजनप्रियः ९ सुहृद्युतिश्चमित्रभेपुरन्दरेऽम्बरक्षयः॥ जलप्लुतिश्चनैर्ऋतेरुजोजलाधिदैवते १० मिष्टमन्नमथविश्वदैवतेवैष्णवेभवतिनेत्ररोगता॥ धान्यलब्धिमपिवासवेविदुर्वारुणेविषकृतंमहद्भयम् ११ भद्रपदासुभयं सलिलोत्थंतत्परतश्चभवेत्सुतलब्धिः॥ रत्नयुतंकथयन्तिचपौष्णे योऽभिनवाऽम्बरमिच्छतिभोक्तुम् १२॥

अश्विनी नक्षत्र में नयावस्त्र पहिने तो बहुत वस्त्रमिलते हैं। भरणी में पहिने तो वस्त्रोंकी हानिहोती है। कृत्तिका में वस्त्र दग्धहोजाताहै। रोहिणी में धनप्राप्ति होतीहै ६ मृगशिरा में वस्त्रको मूषकका भय होताहै। आर्द्रा में वस्त्रपहिने तो मृत्युहीहोय। पुनर्वसुमें शुभकी प्राप्तिहोती है पुष्यमें धनलाभ होताहै ७ श्लेषा में पहिने तो वस्त्र नष्टहोजाय। मघा में मृत्युहोताहै। पूर्वा-फाल्गुनी में राजा से भयहोताहै। उत्तराफाल्गुनी में धनकी प्राप्तिहोती है ८ हस्तमें वस्त्र धारण करनेसे कार्य सिद्धहोते हैं। चित्रामें शुभकी प्राप्तिहोती है स्वातिमें वस्त्र धारणकरनेसे उत्तम भोजन मिलताहै। विशाखा में वस्त्र धारण करै तो मनुष्योंका प्रिय होताहै ९ अनुराधामें मित्रका समागम होताहै ज्येष्ठा में वस्त्रका क्षयहोता है। मूलमें वस्त्रधारणकरै तो जलमें डूबजाय। पूर्वाषाढ़ा में रोगहोवैं १० उत्तराषाढ़ा में मीठा भोजनमिलै। श्रवण में नेत्ररोग होते हैं। धनिष्ठामें अन्नका लाभहोताहै। शतभिषामें विषका बहुत भयहोता है ११ पूर्वा भाद्रपदा में जलका भयहोता है। उत्तरा भाद्रपदा में पुत्र लाभ होताहै। औ रेवती नक्षत्रमें जो पुरुष नयावस्त्र धारणकरै उसको रत्न लाभ होताहै १२॥

विप्रमतादथभूपतिदत्तं यच्चविवाहविधावभिलब्धम्॥
तेषुगुणैरहितेष्वऽपिभोक्तुं नूतनमम्बरमिष्टफलंस्यात् १३॥

ब्राह्मणकी आज्ञासे बुरे नक्षत्र में भी नयावस्त्र धारणकरै तो शुभही फल होताहै। राजाने वस्त्र दियाहोय उसको औ विवाहमें जो वस्त्र प्राप्तहुआहोय उसको बुरेनक्षत्रोंमें भी धारलेवै तो शुभही फलहोताहै। यह श्लोकक्षेपकहै१३॥

भोक्तुंनवाम्बरंशस्तमृक्षेऽपिगुणवर्जिते॥
विवाहेराजसन्मानेब्राह्मणानांचसम्मते १४॥

इतिश्रीवराहमिहिरकृतौबृहत्संहितायांवस्त्रच्छेदलक्षणं नामैकसप्ततितमोऽध्यायः ७१॥

विवाहमें राजाके सत्कारमें औ ब्राह्मणोंकी आज्ञासे बुरे नक्षत्रमें भी वस्त्र धारण करै तो शुभही फल होताहै १४ ॥

श्रीवराहमिहिराचार्यकीवनाईवृहत्संहितामेंवस्त्रच्छेदलक्षण नामइकहत्तरवांअध्यायसमाप्तहुआ ७१ ॥

बहत्तरवांअध्याय ॥

चामरलक्षण ॥

देवैश्चमर्यःकिलवालहेतोःसृष्टाहिलक्ष्माधरकन्दरेषु ॥
आपीतवर्णाश्चभवन्तितासांकृष्णाश्चलांगूलभवाःसिताश्च १ ॥

देवताओंने हिमालयपर्वतकी कन्दराओंमें चामरोंके लिये चमरी उत्पन्न करी हैं। उनकी पूंछके वाल पीले होते हैं कालेहोते हैं औ श्वेतहोते हैं १ ॥

स्नेहोमृदुत्वंवहुवालताचवैशद्यमल्पास्थिनिबन्धनत्वम् ॥
शौक्ल्यंचतेषांगुणसंपदुक्ताविद्धाल्पलुप्तानिनशोभनानि २ ॥

चामरोंके वालस्निग्धहोयं कोमलहोयं बहुतहोयं विशद अर्थात् निर्मलहों औ परस्पर अलभेहुये न होयं उनके बीचकी हड्डी छोटीहोय जिसमें वाललगे रहतेहैं। औ श्वेतवर्णके वाल होयं यह उन चामरोंके गुणोंकी सम्पत्ति कहीहै अर्थात् ऐसे वालहोयं तो शुभहोते हैं। औ चामरके वाल विद्ध (टूटे औ फटे हुये) छोटे औ लुप्त (उखड़ेहुये) शुभ नहीं होतेहैं २ ॥

अध्यर्धहस्तप्रमितोऽस्यदण्डोहस्तोऽथवारत्निसमोऽथवाऽन्यः ॥
काष्ठाच्छुभात्कांचनरूप्यगुप्ताद्रत्नैर्विचित्रैश्चहितायराज्ञाम् ३ ॥

उस चामरका दंड डेढ़हाथ एकहाथ अथवा रत्निके तुल्य लम्बा बनावै। उत्तम काष्ठका दंड बनाय सुवर्ण अथवा चांदीसे मढ़कर उसपर रत्नजड़े ऐसा दंड राजाओंको शुभ होताहै। मुट्ठी बँधे हाथको रत्नि कहते हैं ३ ॥

यष्ट्यातपत्रांऽकुशवेत्रचाप वितानकुन्तध्वजचामराणाम् ॥
व्यापीततन्त्रीमधुकृष्णवर्णावर्णक्रमेणैवहितायदण्डाः ४ ॥

यष्टि (लाठी) छत्र अंकुश वेत्र (छड़ी) धनुप वितान (चंदुआ) कुंत (भाला) ध्वज औ चामर इन सबके दंड ब्राह्मणोंको पीतवर्ण बनाने चाहिये क्षत्रियोंको तंत्री (तांत) के रंग अर्थात् पीले औ लाल रंग मिलेहुये। वैश्यों को सहतके रंग और शूद्रोंको काले रंगके दंड बनाने चाहिये ४ ॥

मातृभूधनकुलक्षयावहारोगमृत्युजननाश्चपर्वभिः ॥
द्व्यादिभिर्द्विकविवर्धितैःक्रमाद्द्वादशान्तविरलैःसमैःफलम् ५ ॥

इनदंडोंके दोपर्व (पोरी) से लेकर दो २ बढ़ातेजायं तो बारह पर्व पर्यंत

सम पर्वों के ये फल क्रमसे होते हैं जैसा दोपर्व का दंडहोय तो माताका क्षय चार पर्वका होय तो भूमिक्षय छःपर्वका होय तो धनक्षय आठपर्वका होय तो कुलक्षय होताहै। दशपर्व का होय तो रोगकी उत्पत्ति होती है औ बारहपर्व का दंडहोय तो मृत्यु होताहै ५॥

यात्राप्रसिद्धिर्द्विषतांविनाशोलाभःप्रभूतोवसुधागमश्च ॥
वृद्धिःपशूनामभिवांछितातिस्त्र्याद्येष्वयुग्मेषुतदीश्वराणाम् ६ ॥

इतिश्रीवराहमिहिरकृतौबृहत्संहितायांचामरलक्षणं
नामद्वासप्ततितमोऽध्यायः ७२ ॥

तीनपर्वसे लेकर दो २ पर्वोंकी वृद्धिसे विषम पर्वोंके ये फल क्रमसे उनके स्वामियोंको होतेहैं। जैसा तीनपर्वका दंडहोय तो यात्रामें जयहोय पांचपर्व का होय तो शत्रुओंका नाशहोय सातपर्वका होय तो बहुतलाभ होय नवपर्व का होय तो भूमिका लाभ होय ग्यारहपर्व का होय तो पशुओं की वृद्धिहोय औ तेरहपर्वका दंडहोय तो अभीष्ट वस्तुका लाभ होताहै ६ ॥

श्रीवराहमिहिराचार्यकीबनाईबृहत्संहितामेंचामरलक्षण
नामबहत्तरहवांअध्यायसमाप्तहुआ ७२ ॥

तिहत्तरवांअध्याय ॥

छत्रलक्षण ॥

निचितंतुहंसपक्षैःकृकवाकुमयूरसारसानांच ॥ दौकूलेननवेनतुसमन्ततश्छादितंशुक्लम् १ मुक्ताफलैरुपचितंप्रलम्बमालाविलंस्फटिकमूलम् ॥ षड्ढस्तशुद्धहैमंनवपर्वनगैकदण्डंच २ दण्डार्धविस्तृतंतत्समावृतंरत्नभूषितमुदग्रम् ॥ नृपतेस्तदातपत्रंकल्याणकरंविजयदंच ३ ॥

हंस कुक्कुट मयूर औ सारसपक्षी के पक्षोंसे बना नयेदुकूल (दुपट्टा) से चारोंओरढका श्वेतवर्ण मोतियों करकेव्याप्त १ चारोंओर लटकतीहुई मोतियोंकी मालाओं करके युक्त स्फटिककी मूठकरके शोभित ऐसा छत्रबनावै औ छः हाथ लम्बा एक काष्ठकादण्ड सोनेसे मढ़ा नव अथवा सातपर्वों करकेयुक्त छत्रके लगावै २ दंडके अर्धके तुल्य अर्थात् तीनहाथ छत्रका व्यास रक्खै। वह छत्र सुश्लिष्ट संधिहोय रत्नोंसे भूषित औ उन्नत होय। ऐसा छत्र राजाको कल्याण करताहै औ विजय देताहै ३ ॥

युवराजनृपतिपत्न्योःसेनापतिदण्डनायकानांच ॥
दण्डोऽर्धपञ्चहस्तःसमपञ्चकृतार्धविस्तारः ४ ॥

युवराज राजाकी रानी सेनापति औ दंडनायक (कोतवाल) के छत्रका डंड साढ़ेचारहाथ औ छत्रका व्यास अढाईहाथ होताहै ४ ॥

अन्येषामुष्णघ्नंप्रासादपट्टैर्विभूषितशिरस्कम् ॥
व्यालम्बिरत्नमालंछत्रंकार्यंचमायूरम् ५ ॥

युवराज आदिको छोड़ और राजपुत्र आदिके लिये मयूर पक्षोंका बना प्रसाद पट्ट जो पट्ट लक्षणाध्याय में कहआयेहैं उन करके भूपितहै शिर जिसका रत्नमाला जिसमें लटकतीहै ऐसाछत्र आतप (धूप) की निवृत्तिके लिये होताहै ५ ॥

अन्येषांतुनराणांशीतातपवारणंतुचतुरस्रम् ॥
समवृत्तदण्डयुक्तंछत्रंकार्यंतुविप्राणाम् ६ ॥

इतिश्रीवराहमिहिरकृतौबृहत्संहितायांछत्रलक्षणं
नामत्रिसप्ततितमोऽध्यायः ७३ ॥

साधारण मनुष्योंकेलिये शीत और धूपको रोकनेवाला चतुरस्र छत्रहोताहै। औ ब्राह्मणोंके लिये चारोंओरसे वर्तुल औ दण्डयुक्तछत्रवनाना चाहिये ६ ॥

श्रीवराहमिहिराचार्यकी बनाईबृहत्संहितामेंछत्रलक्षण
नाम तिहत्तरवांअध्यायसमाप्तहुआ ७३ ॥

चौहत्तरवांअध्याय ॥

स्त्रीप्रशंसा ॥

जित्वाधरित्र्याःपुरमेवसारंपुरेगृहंसद्मनिचैकदेशः ॥
तत्रापिशय्याशयनेवरास्त्रीरत्नोज्ज्वलाराज्यसुखस्यसारः १ ॥

राजा सम्पूर्ण पृथ्वीको जीतलेवै उसमें अपनी राजधानी का नगरहीसार है। उस नगरमें अपना गृह (महल) सारहै गृहमें अपने रहनेका एकमुख्य स्थान सारहै उस स्थानमें शय्या सारहै । औ उस शय्याके ऊपर रत्नों से भूपित उत्तमस्त्री सारहै । राज्य सुखमें इतनाही सार है और सब पदार्थ निःसार हैं १ ॥

रत्नानिविभूषयन्तियोषाभूष्यन्तेवनितानरत्नकान्त्या ॥
चेतोवनिताहरन्त्यरत्नानोरत्नानिविनाऽङ्गनाऽङ्गसङ्गात् २ ॥

रत्नोंको स्त्री भूपित करतीहैं रत्नकांति करके स्त्री भूपित नहीं होती हैं। क्योंकि स्त्री तो विना रत्न भी होयं तो भी चित्त हर लेती हैं औ रत्न स्त्रियों के अंग संग हुये विना चित्त नहीं हरसक्ते २ ॥

आकारंविनिगूहतांरिपुवलंजेतुंसमुत्तिष्ठतां तन्त्रंचिन्तयतांकृता

ङ्कृतशतव्यापारशाखाकुलम्॥ मन्त्रिप्रोक्तनिषेविणांक्षितिभुजामाश ङ्कितांसर्वतोदुःखाम्भोनिधिवर्तिनांसुखलवःकान्तासमालिङ्गनम् ३॥

हर्ष शोक आदिके आकारको छिपाते हुये शत्रु बल जीतने के लिये उठते हुये किये न किये सैकड़ों व्यवहारोंकी शाखाओं करके व्याकुल राज्य तंत्रका चिंतन करतेहुये मंत्रियोंकी कही नीति पर चलते हुये पुत्र स्त्री आदि से भी शंकित रहतेहुये औ दुःख समुद्र में डूबे हुये राजाओं के लिये उत्तम स्त्री का आलिंगन करनाही थोड़ासा सुख है ३॥

श्रुतंदृष्टंस्पृष्टंस्मृतमपिनृणांह्लादजननंनरत्नंस्त्रीभ्योऽन्यत्क्वचिद पिकृतंलोकपतिना॥ तदर्थंधर्मार्थौसुतविषयसौख्यानिचततोगृहे लक्ष्म्योमान्याःसततमबलामानविभवैः ४॥

बिधाताने स्त्रियोंके विना और कोई भी कहींभी ऐसा रत्न नहींबनाया जिस के सुननेसे स्पर्शकरनेसे देखनेसे अथवा स्मरणही करनेसे चित्तमें आह्लाद होजाय। धर्म औ अर्थकासेवन स्त्रीके लिये ही करतेहैं पुत्रोंका औ विषयसु-खोंकालाभ स्त्रीसेही होता है। स्त्रीघरकी लक्ष्मी है इसलिये मानकरके औ ऐश्वर्य करके सबकालमें स्त्रियोंका सत्कार करना चाहिये ४॥

येप्यंगनानांप्रवदन्तिदोषान्वैराग्यमार्गेणगुणान्विहाय॥
तेदुर्जनामेमनसोवितर्कःसद्भाववाक्यानिनतानितेषाम् ५॥

जोपुरुष स्त्रियोंके गुणोंको छोड़ वैराग्य मार्ग करके उनके दोष कहते हैं वे पुरुष दुष्टहैं यह हमारे मनका निश्चय है। इसीलिये उनदुष्टों के वे वचनभी प्रामाणिक नहीं हैं ५॥

प्रब्रूतसत्यंकतरोऽङ्गनानांदोषोऽस्तियोनाचरितोमनुष्यैः॥
धार्ष्ट्येनपुम्भिःप्रमदानिरस्तागुणाधिकास्तामनुनात्रचोक्तम् ६॥

आपविरक्तहैं तो आपही सत्यकहैं कि ऐसा स्त्रियों में कौनसा दोषहै जो पुरुषों ने पहिलेही न किया होय अर्थात् सब दोष पहिले पुरुषों ने कियेपीछे स्त्रियोंने पुरुषों से सीखे। पुरुषोंने धृष्टता करके स्त्रियोंको जीतलिया अर्थात् स्त्रियों की अपेक्षा पुरुष अधिक धृष्ट होते हैं। वास्तव में पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों में अधिक गुण हैं। धर्मशास्त्र के मुख्य आचार्य मनुने भी जो इस विषय में कहाहै वह कहते हैं ६॥

सोमस्तासांददौशौचंगन्धर्वाःशिक्षितांगिरम्॥
अग्निश्चसर्वभक्षित्वंतस्मान्निष्कसमाःस्त्रियः ७॥

स्त्रियोंको चन्द्रमाने शुद्धता दीहै। गंधर्वोंने शिक्षित (चतुराईसेभरे) वचन

दियेहैं औ अग्निने सर्वभक्षित्व दिया है इस लिये स्त्रीसुवर्ण के तुल्य हैं ७ ॥

ब्राह्मणाःपादतोमेध्यागावोमेध्यास्तुपृष्ठतः ॥
अजाश्वामुखतोमेध्याःस्त्रियोमेध्यास्तुसर्वतः ८ ॥

ब्राह्मणोंके पैर पवित्र हैं गौओं की पीठ पवित्र हैं। बकरे औ घोड़ोंका मुख पवित्र है। औ स्त्रियों के सब अंग पवित्र हैं ८ ॥

स्त्रियःपवित्रमतुलंनैतादुष्यन्तिकर्हिचित् ॥
मासिमासिरजोह्यासांदुष्कृतान्यपकर्षति ९ ॥

स्त्री ऐसी पवित्रहैं कि उनके तुल्य कोई दूसरा पदार्थ पवित्र नहीं है। औ वे कभी दूषित नहीं होसक्ती हैं क्योंकि महीनेके महीने उनको ऋतु होताहै वह उनके सब पाप हरलेता है ९ ॥

जामयोयानिगेहानिशपन्त्यप्रतिपूजिताः ॥
तानिकृत्याहतानीवविनश्यन्तिसमन्ततः १० ॥

बिना आदर कीहुई कुलस्त्री जिनघरोंको शापदेती हैं वे घर मानों कृत्या करके हतहुये २ चारोंओर से नाशको प्राप्त होते हैं १० ॥

जायावास्याज्जनित्रीवासंभवःस्त्रीकृतोनृणाम् ॥
हेकृतघ्नास्तयोर्निन्दांकुर्वतांवःकुतःशुभम् ११ ॥

भार्या होय चाहे माताहोय पुरुषोंकी उत्पत्ति स्त्रियों से होती है। अर्थात् भार्या से पुत्ररूप करके उत्पन्न होता है औ माता से साक्षात् आप उत्पन्न होता है। हे कृतघ्न पुरुषो भार्या औ माता की निन्दा करने से तुम्हारा भला कहां से होगा ११ ॥

दम्पत्योर्व्युत्क्रमेदोषःसमःशास्त्रेप्रतिष्ठितः ॥
नरानतमवेक्षंतेतेनात्रवरमङ्गनाः १२ ॥

स्त्री पुरुषों के परस्पर व्युत्क्रम में अर्थात् पुरुषों को पर स्त्री संग में औ स्त्रीको पर पुरुष संग में तुल्यही दोष धर्मशास्त्र में कहाहै। परन्तु पुरुष पर-स्त्री संग में कुछ दोष नहीं देखते औ स्त्री परपुरुष संग में दोष देखती हैं इसलिये पुरुषों से स्त्री उत्तम हैं १२ ॥

बहिर्लोम्नातुषण्मासान्वेष्टितःखरचर्मणा ॥
दारातिक्रमणेभिक्षांदेहीत्युक्त्वाविशुद्ध्यति १३ ॥

जो पुरुष दारातिक्रमण करै अर्थात् अपनी भार्या को छोड़ दूसरी स्त्री से संगकरै वह पुरुष बाहिरकीओर रोमोंको करके गर्दभकाचमड़ा ओढ़ छःमहीने पर्यन्त (भिक्षांदेहि) यह कहै अर्थात् भीख मांगता फिरै तब शुद्धहोताहै १३ ॥

नशतेनापिवर्षाणामपैतिमदनाशयः ॥
तत्राऽशक्त्यानिवर्तन्तनराधैर्येणयोषितः १४ ॥

सौ वर्ष बीतजायँ तौ भी पुरुषों की काम वासना निवृत्त नहीं होती है। परन्तु शरीर की शक्ति घटजाने से पुरुष निवृत्त होते हैं औ स्त्री धैर्यसे निवृत्त होती हैं १४ ॥

अहोधाष्ट्यमसाधूनांनिन्दतामनघाःस्त्रियः ॥
मुष्णतामिवचौराणांतिष्ठचौरेतिजल्पताम् १५ ॥

निर्दोष स्त्रियोंकी निन्दा करतेहुये दुष्टोंकी कैसी धृष्टताहै देखो जैसा चोरी करते हुये चोर और किसी पुरुष (घरके स्वामी आदि) को कहते होयँ कि अरे चोर खड़ाहो ॥ ये सब धर्मशास्त्रके वाक्य हैं १५ ॥

पुरुषश्चटुलानिकामिनीनांकुरुतेयानिरहोनतानिपश्चात् ॥
सुकृतज्ञतयाऽङ्गनागतासूनवगूह्यप्रविशन्तिसप्तजिह्वम् १६ ॥

पुरुष कामातुर होकर एकांत में स्त्रियों को जो मीठे २ वचन बोलता है पीछे वे वचन नहीं बोलता औ स्त्री अपनी कृतज्ञता करके मृतपति को आलिंगन कर अग्नि में प्रवेश करती हैं १६ ॥

स्त्रीरत्नभोगोऽस्तिनरस्ययस्यनिःस्वोऽपिसंप्रत्यऽवनीश्वरोऽसौ ॥
राज्यस्यसारोऽशनमङ्गनाश्चतृष्णानलोद्दीपनदारुशेषम् १७ ॥

जिस पुरुष को उत्तम स्त्री का भोगहै वह निर्धन होय तौभी राजाहै क्योंकि राज्यका सार भोजन औ उत्तम स्त्री ये दोही हैं। और सब हाथी घोड़े रत्न सुवर्ण आदि सामग्री तृष्णारूप अग्नि को प्रज्वलित करनेका काष्ठहै अर्थात् इनके लाभ से तृष्णाही बढ़ती है १७ ॥

कामिनींप्रथमयौवनान्वितांमन्दवल्गुमृदुपीडितस्वनाम् ॥
उत्स्तनींसमवलम्ब्ययारतिःसानधातृभवनेऽस्तिमेमतिः १८ ॥

नये यौवन करके युक्त मंद सुन्दर कोमल औ स्तब्ध ऐसा शब्द करतीहुई औ ऊंचे स्तनोंवाली कामिनी को आलिंगन करके जो सुख होताहै वह सुख ब्रह्मलोकमें भी नहीं यह हमारी बुद्धि है १८ ॥

तत्रदेवमुनिसिद्धचारणैर्मान्यमानायितृसेव्यसेवनात् ॥
ब्रूतधातृभवनेऽस्तिकिंसुखंयद्रहःसमवलम्ब्यनास्त्रियम् १९ ॥

उस ब्रह्मलोकमें देवता मुनि सिद्ध औ चारण मान्योंकामान करते हैं औ सेव्योंका सेवन करतेहैं। इससे बढ़कर और ब्रह्मलोक में ऐसाकौन सुखहै जे स्त्रीको एकान्तमें आलिंगन करके न प्राप्त होय १९ ॥

आब्रह्मकीटान्तमिदंनिबद्धंपुंस्त्रीप्रयोगेणजगत्समस्तम् ॥
व्रीडात्रकायत्रचतुर्मुखत्वमाशोऽपिलोभाद्गमितोयुवत्याः २० ॥

इतिश्रीवराहमिहिरकृतौबृहत्संहितायामन्तःपुरचिन्तायांस्त्रीप्रशंसानामचतुःसप्ततितमोऽध्यायः ७४ ॥

ब्रह्मासे लेकर कीट पर्यन्त सब जगत् पुरुष स्त्री प्रयोगसे बँधा है। इसमें क्या लज्जाहै जहां जगत्प्रभु महादेवजी भी स्त्री के देखने के लोभसे चतुर्मुख होगये। ऐसी कथाहै कि पार्वतीको अंकमें लिये महादेवजी कैलासमें विराजमानथे उससमय तिलोत्तमानाम अप्सरा महादेवजीकी प्रदक्षिणा करनेलगी तब पार्वती जीके भयसे महादेवजी चारों ओर मुख फेरकर तो उसका मनोहर रूप न देख सके परन्तु जिधर वहगई उसी ओर नया मुख उत्पन्न होता गया इसभांति महादेवजी के चार मुखहोगये २० ॥

श्रीवराहमिहिराचार्यकीबनाईबृहत्संहितामेंअंतःपुरचिंतामेंस्त्रीप्रशंसानामचौहत्तरवांअध्यायसमाप्तहुआ ७४ ॥

पचहत्तरवांअध्याय ॥

सौभाग्यकरण ॥

जात्यंमनोभवसुखंसुभगस्यसर्वमाभासमात्रमितरस्यमनोवियोगात् ॥ चित्तेनभावयतिदूरगताऽपियंस्त्री गर्भंबिभर्तिसदृशंपुरुषस्य तस्य १ ॥

सुभग पुरुषको सब कामदेवका सुख श्रेष्ठ है। अर्थात् सुभग पुरुषके साथ रति करने के समय स्त्री का चित्त ठिकाने रहताहै अर्थात् सुभग पुरुष के ऊपर उसका चित्त अनुरक्त होता है इसीसे पूरा सुख होता है। औ स्त्री का चित्त अनुरक्त न होनेसे दुर्भग पुरुषको रतिमें सुखका आभासमात्र होता है वास्तव सुखनहीं होता। रतिके समय दूरस्थित भी स्त्री चित्त से जिस पुरुषका ध्यान करै उसी के सदृश गर्भ धारती है १ ॥

भङ्क्त्वाकाण्डंपादपस्योप्तमुर्व्यांबीजंवास्यांनान्यतामेतियद्वत् ॥
एवंह्यात्माजायतेस्त्रीषुभूयःकश्चित्तस्मिन्क्षेत्रयोगाद्विशेषः २ ॥

जिस वृक्षका कांड (कलम) अथवा बीज भूमिमें बोवैं वहीवृक्ष जमता है दूसरा वृक्षनहीं जमता इसीभांति स्त्रियोंमें फिरभी संतानरूपसे आत्माही उत्पन्न होताहै। केवल क्षेत्रके योगसे कुछविशेष होता है जैसा किसी क्षेत्रमें वृक्ष आदि उत्तम उत्पन्नहोते हैं किसीमें सामान्य होते हैं ऐसेही स्त्रियों में भी जानो २ ॥

आत्मासहेतिमनसामनइन्द्रियेणस्वार्थेनचेन्द्रियमितिक्रमएषशीघ्रः॥ योगोऽयमेवमनसःकिमगम्यमस्तियस्मिन्मनोव्रजतितत्रगतोयमात्मा ३॥

आत्मा मनकेसाथ जाताहै मन इन्द्रियकेसाथ जाता है औ इन्द्रिय अपने विषय शब्द आदिकेसाथ जाताहै यह आत्माके जानेका शीघ्र क्रम औ यही योगहै। मनको कोई स्थान अगम्य नहीं। औजहां मनजाय वहां यहआत्मा चला जाता है ३॥

आत्मायमात्मनिगतोहृदयेपिसूक्ष्मोग्राह्योऽचलेनमनसासतताभियोगात्। योयंविचिन्तयतियातिसतन्मयत्वंयस्मादतःसुभगमेवगतायुवत्यः ४॥

अति सूक्ष्म यह जीवात्मा हृदयमें परमात्माके बीच स्थितहै। निरंतर अभ्याससे निश्चलचित्त करके उसका ग्रहण करना चाहिये ४॥

जो जिसका चिंतनकरै वह तन्मयहोजाताहै। इस लिये स्त्री भी सुभग पुरुषकाही चिंतन करती हैं ४॥

दाक्षिण्यमेकंसुभगत्वहेतुर्विद्वेषणंतद्विपरीतचेष्टा॥
मन्त्रौषधाद्यैःकुहकप्रयोगैर्भवन्तिदोषाबहवोनशर्म ५॥

दाक्षिण्य अर्थात् स्त्रियोंके चित्तके अनुकूल आचरण सुभगपने का मुख्य हेतुहै। अर्थात् दाक्षिण्य से पुरुष सुभग होताहै। औ स्त्रियोंके चित्तसेविपरीत आचरण करने करके विद्वेषण होताहै अर्थात् वह पुरुष दुर्भग होजाताहै॥ वशीकरण आदि के लिये मन्त्र औषध और भी इन्द्रजाल आदि कुहक प्रयोग करनेसे अनेक दोषही उत्पन्नहोते हैं भला नहीं होता। अर्थात् स्त्री वशीकरण का मुख्यउपाय दाक्षिण्य है मन्त्र औषध आदि नहीं ५॥

वाल्लभ्यमायातिविहायमानं दौर्भाग्यमापादयतेऽभिमानः॥
कृच्छ्रेणसंसाधयतेऽभिमानी कार्याण्ययत्नेनवदन्प्रियाणि ६॥

अहंकारको त्यागनेसे मनुष्य सबकाप्रिय होजाताहै। अहंकारसे पुरुष दुर्भग (सबको अप्रिय) होताहै। अभिमानी पुरुष अपने कार्य कष्टसे साधताहै औ मीठा बोलनेवाला पुरुष सहजमें कार्य साधलेताहै ६॥

तेजोनतद्यत्प्रियसाहसत्वंवाक्यंनचानिष्टमसत्प्रणीतम्॥
कार्यस्यगत्वाऽन्तमनुद्धतायेतेजस्विनस्तेनविकत्थनाये ७॥

प्रियसाहसत्व अर्थात् बिनाविचारे करनेमें प्रीति तेजनहीं है। औ दुष्टों के कहे दुर्वचनभी तेजनहीं अर्थात् साहसी औ दुर्वचन बोलनेवाले तेजस्वीनहीं

कहाते। जो पुरुष कार्यका समाप्तकरके भी अभिमान न करें वे तेजस्वी होतेहैं। विकत्थन पुरुष (वाचाल) तेजस्वी नहीं कहाते ७ ॥

यःसार्वजन्यंसुभगत्वमिच्छेद्गुणान्ससर्वस्यवदेत्परोक्षे ॥
प्राप्नोतिदोषानसतोप्यनेकान् परस्ययोदोषकथांकरोति ८ ॥

जो पुरुष सबका प्याराहोनाचाहै वह परोक्षमें सबकी स्तुतिकरै। जो पुरुष पराई निंदाकरतेहैं उनकेऊपर अनहुयेभी अनेकदोष मनुष्य लगादेतेहैं ८ ॥

सर्वोपकारानुगतस्यलोकःसर्वोपकारानुगतोनरस्य ॥
कृत्वोपकारंद्विषतांविपत्सुयाकीर्तिरल्पेननसाशुभेन ९ ॥

जो पुरुष सबके ऊपर उपकारकरने में तत्पररहै सबमनुष्य उसकेऊपर भी उपकारकरते हैं। शत्रुके ऊपर विपत्तिकालमें उपकार करने से जो कीर्ति होती है वह थोडेसे पुण्यका फलनहीं है ९ ॥

तृणैरिवाग्निःसुतरांविवृद्धिमाच्छाद्यमानोऽपिगुणोऽभ्युपैति ॥
सकेवलंदुर्जनभावमेति हन्तुंगुणान्वाञ्छतियःपरस्य १० ॥

इतिश्रीवराहमिहिरकृतौबृहत्संहितायामन्तःपुरचिन्तायांसौभाग्यकरणंनामपंचसप्ततितमोऽध्यायः ७५ ॥

दुष्टमनुष्य चाहे जितना सज्जनोंके गुणोंको छिपावें परन्तु उनकेगुण तृणों से ढकेहुये अग्निकीभांति वृद्धिकोही प्राप्तहोते हैं जो पराये गुणोंको मिटाया चाहताहै वही केवल दुर्जनताको प्राप्त होजाता है औ गुण तो किसीके मिटाये नहीं मिटसकते १० ॥

श्रीवराहमिहिराचार्यकीबनाईबृहत्संहितामेंअन्तःपुरचिन्तामेंसौभाग्यकरणनामपचहत्तरवांअध्यायसमाप्तहुआ ७५ ॥

छिहत्तरवांअध्याय ॥

कान्दर्पिक ॥

रक्तेऽधिकेस्त्रीपुरुषस्तुशुक्रे नपुंसकंशोणितशुक्रसाम्ये ॥
यस्मादतःशुक्रविवृद्धिदानि निषेवितव्यानिरसायनानि १ ॥

गर्भधारण के समय स्त्रीकारज अधिकहोय तो कन्या पुरुषका वीर्य अधिक होय तो पुत्र औ दोनों तुल्यहोवैं तो नपुंसक उत्पन्न होता है। इसलिये वीर्य के बढानेवाले रसायन सेवनकरने चाहिये १ ॥

हर्म्यपृष्ठमुडुनाथरश्मयः सोत्पलंमधुमदालसाप्रिया ॥
वल्लकीस्मरकथारहःस्रजोवर्गएषमदनस्यवागुरा २ ॥

हर्म्यपृष्ठ (महलकीछत) चन्द्रमा के किरण नीलोत्पल सहित मधु म-

र्थात् मध्यसे भरे पानपात्र में नीलकमल रक्खाहोय मदकरके आलस्य युक्त प्राणप्रिया वीणा कामदेवकी चर्चा एकान्त पुष्पमाला यह सवसामग्री कामदेवके बांधनेकी रस्सी है अर्थात् इससामग्रीसे कामदेव स्थिर होता है २ ॥

माक्षीकधातुमधुपारदलोहचूर्णं पथ्याशिलाजतुविडङ्गघृतानियोऽद्यात् ॥ सैकानिविंशतिरहानिजरान्वितोपिसोशीतिकोऽपिरमयत्यबलांयुवेव ३ ॥

सोनामक्खी शहत पारा लोहचून हरड़ शिलाजीत वायविडंग औ घृत इनको जो पुरुष खाय अर्थात् सववस्तुओं को समभाग लेकर चूर्णकर शहत औ घृतमें मिलाय गोलीकरै उनगोलियों को इक्कीसदिनखाय वह अस्सीवर्ष का वृद्धाभीहोय तोभी तरुण पुरुषकीभांति स्त्रीसे रमणकरता है ३ ॥

क्षीरंशृतंयःकपिकच्छुमूलैः पिवेत्क्षयंस्त्रीषुनसोऽभ्युपैति ॥
माषान्पयःसर्पिषिवाविपक्कान् षड्ग्रासमात्रांश्चपयोऽनुपानान्४॥

कौंचकी जड़केसाथ औटायकर दूधको जो पानकरै वह पुरुष स्त्रीसंग करनेमें क्षीणनहींहोता । अथवा दूधसे निकले घृतमें उड़दों को पक्ककरै पीछे छःग्रास उनउड़दों को भक्षणकर ऊपर से दूधपीवे वहभी स्त्रीसंग करने से क्षीणनहीं होताहै ४ ॥

विदारिकायाःस्वरसेनचूर्णं मुहुर्मुहुर्भावितशोषितंच ॥
शृतेनदुग्धेनसशर्करेणपिवेत्सयस्यप्रमदाःप्रभूताः ५ ॥

विदारीकन्द के चूर्णको विदारीकन्दकेही रसकी वारम्वार भावनादेकर सुखाताजावै । उसचूर्णको भक्षणकर ऊपरसे औटायादूध मिश्रीडाल वह पुरुष पानकरै जिसके वहुत स्त्रीहोयँ । अर्थात् इस चूर्ण के भक्षण करने से पुरुष वहुतस्त्रियोंके साथ रतिकरसक्ता है ५ ॥

धात्रीफलानांस्वरसेनचूर्णं सुभावितंक्षौद्रसिताज्ययुक्तम् ॥
लीढ्वानुपीत्वाचपयोऽग्निशक्त्याकामंनिकामंपुरुषोनिषेवेत् ६ ॥

आमलेके चूर्णमें आमलेकेरसकी वार२ भावनादेकर सुखावै पीछे उसचूर्ण में शहत घृत औ मिश्री मिलाकरचाटै औ ऊपर से अपनी अग्निके अनुसार अर्थात् जितना पचसकै उतना दूधपीवै तो वहुत मैथुनकरसक्ता है ६ ॥

क्षीरेणवस्ताऽण्डयुजाशृतेनसंस्राव्यकामीवहुशस्तिलान्यः ॥
सुशोषितानत्तिपिवेत्पयश्चतस्याग्रतःकिंचटकःकरोति ७॥

वकरे के अण्ड दूधमें डाल औटावै पीछे उस दूधकी तिलों में वहुतवार भावनादेवै औ सुखावै । जो कामी पुरुष उनतिलों को भक्षणकर ऊपर से

दूध पीवै उस के आगे चटक (चिडा) भी क्या कर सक्ताहै अर्थात् चटक पक्षी बहुत मैथुन करताहै परंतु यह पुरुष चटक सेभी अधिक मैथुन करने में समर्थ होजाताहै ७ ॥

माषसूपसहितेनसर्पिषा षष्टिकौदनमदन्तियेनराः ॥
क्षीरमप्यनुपिबन्तितासुतेशर्वरीषुमदनेनशेरते ८ ॥

जिन रात्रियोंमें घृतसे युक्त उड़दकी दालके साथ साठी चावलों का भात खायकर जो पुरुष पीछेदूध पीतेहैं वे उन रात्रियोंमें कामदेवके साथ शयन करते हैं अर्थात् रात्रिभर उनको कामोद्दीपन होताहै औबहुत स्त्रीसंगकरतेहैं ८ ॥

तिलाऽश्वगन्धाकपिकच्छुमूलैर्विदारिकाषष्टिकपिष्टयोगः ॥
आजेनपिष्टःपयसाघृतेन पक्वाभवच्छष्कुलिकाऽतिवृष्या ९ ॥

तिल असगंध कौंचकीजड़ विदारीकंद इन सबको बराबरले चूर्ण कर इन सबके समान साठीकेचावलों का आटा मिलावै पीछे उसको बकरीके दूधमें उसनकर पूरीबनाय बकरीकेघृतमें पक्करै वहपूरी अति वृष्या होतीहै अर्थात् उसके खानेसे वीर्यकी बहुत वृद्धि होती है ९ ॥

क्षीरेणवागोक्षुरकोपयोगं विदारिकाकन्दकभक्षणंवा ॥
कुर्वन्नसीदेद्यदिजीर्यतेऽस्य मन्दाग्निताचेदिदमत्रचूर्णम् १० ॥

गोखरूका चूर्ण खाकर दूध पीवै अथवा विदारीकंदका चूर्ण भक्षण कर दूध पीवै तो स्त्री संगसे क्षीण नहीं होय परन्तु जो ये चूर्ण पचजावें ॥ औ जो मंदाग्नि होय अर्थात् चूर्ण न पच सकै तो पहिले इस चूर्णका सेवन करै जो कहते हैं १० ॥

साजमोदलवणाहरीतकी शृंगवेरसहिताचपिप्पली ॥
मद्यतक्रनरलोष्णवारिभिश्चूर्णपानमुदराग्निदीपनम् ११ ॥

अजवायन लवण हरड़ सोंठ पीपरि इनको समभाग ले चूर्ण करै। पीछे उस चूर्णको मद्य तक्र (छाछ) कांजी अथवा गरम जलके अनुपानसे लेवै। यह चूर्ण जठराग्निको दीपन करताहै ११ ॥

अत्यम्लतिक्तलवणानिकटूनिवाऽत्ति यःक्षारशाकबहुलानिचभोजनानि ॥ दृक्शुक्रवीर्यरहितःसकरोत्यनेकान्व्याजान्जरन्निवभुवा प्रवलामवाप्य १२ ॥

इतिश्रीवराहमिहिरकृतौवृहत्संहितायामन्तःपुरचिन्तायांकान्दर्पिकं नामपटलसप्ततितमोऽध्यायः ॥७६॥

जो पुरुष बहुत खट्टे बहुत तिक्त बहुत लवण करके युक्त अथवा बहुत कटु लाल मिरच आदि करके युक्त भोजन करै औ बहुत क्षार अथवा बहुतशाक करके युक्त भोजन करै वह पुरुष दृष्टि वीर्य औ बलसे हीन होकर स्त्री संगके समय वृद्धकी भांति अनेक व्याज (बहाने)करताहै। अर्थात् खटाई आदि पदार्थोंका जो पुरुष बहुत सेवनकरै उसके दृष्टि वीर्य बल नष्ट होजाते हैं औ स्त्रीके कामका नहीं रहता है ११ ॥

श्रीवराहमिहिराचार्यकीबनाईबृहत्संहितामेंअन्तःपुरचिन्तामेंकांदर्पिकनामछिहत्तरवांअध्यायसमाप्तहुआ ७६ ॥

सतहत्तरवांअध्याय ॥

गन्धयुक्ति ॥

स्रग्गन्धधूपाऽम्बरभूषणाद्यं नशोभतेशुक्लशिरोरुहस्य ॥
यस्मादतोमूर्धजरागसेवां कुर्याद्यथैवांऽजनभूषणानाम् १ ॥

श्वेत केशोंवाले पुरुषके माला गन्ध (अतरआदि) धूप वस्त्र भूषणआदि नहीं सजते इसलिये जिसभांति आंखों में अंजन डालने औ भूषण पहिनने में यत्नकरता है इसीभांति केशरंगनेका भी यत्नकरै १ ॥

लोहेपात्रेतण्डुलान्कोद्रवाणांशुक्तेपक्कॉंल्लोहचूर्णेनसाकम् ॥ पिष्टान्सूक्ष्मंमूर्ध्निशुक्ताम्लकेशे दत्वातिष्ठेद्वेष्टयित्वार्द्रपत्रैः २ यातेद्वितीयेप्रहरेविहाय दद्याच्छिरस्यामलकप्रलेपम् ॥ संछाद्यपत्रैःप्रहरद्वयेनप्रक्षालितंकार्ष्ण्यमुपैतिशीर्षम् ३ ॥

लोहके पात्रमें शुक्त (सिर्का) के बीच कोद्रव (कोदों) के चावलरांधै। पीछे उनचावलों में लोह चून मिलाय बहुत सूक्ष्म पीसकररक्खै। फिर केशों को सिर्के से खट्टेकर उनपर पहिले पीसकर रक्खाहुआ लेपकरै औ ऊपर एरण्डआदि के हरेपत्ते लपेटकर बैठ२ दोपहर बीतने के अनन्तर इसलेपको धोय आमलोंका लेपकर पत्तोंसे लपेट फिर दोपहर बैठारहै पीछे शिरकोधोवै तो कृष्णवर्ण के केश होजाते हैं ३ ॥

पश्चाच्छिरःस्नानसुगन्धतैलैर्लोहाम्लगन्धंशिरसोपनीय ॥
हृद्यैश्चगन्धैर्विविधैश्चधूपैरन्तःपुरेराज्यसुखंनिषेवेत् ४ ॥

केश काले होने के अनन्तर शिरः स्नान सुगन्ध तैल मनोहर गन्ध औ भांति २ के धूपों करके शिर से लोहे औ सिर्केका दुर्गन्ध दूरकर अन्तःपुर में जाय अपनी रानियों के साथ राजा राज्य के सुखका सेवनकरै ४ ॥

त्वक्कुष्ठरेणुनलिकास्पृक्कारसतगरवालकैस्तुल्यैः ॥

केसरपत्रविमिश्रैर्नरपतियोग्यंशिरःस्नानम् ५ ॥

त्वक् (दालचीनी) कूट रेणुका नलिका स्पृक्का बोल तगर नेत्रवाला नागकेशर गंधपत्र इन सबको समभागले पीसकर शिरमें लगाय शिर धोवे। यह राजाओंके योग्य शिरःस्नान है ५॥

मंजिष्ठयाव्याघ्रनखेनशुक्त्या त्वचासकुष्ठेनरसेनचूर्णः ॥
तैलेनयुक्तोऽर्कमयूखतप्तः करोतितच्चम्पकगन्धितैलम् ६ ॥

मंजीठ व्याघ्रनख शुक्ति त्वक् कूट औ बोल इन सबको समभाग ले चूर्ण कर मीठे तेलमें डाल धूपमें तपावे तो उसतेलमें चम्पे के पुष्पों का गन्ध होजाता है ६॥

तुल्यैःपत्रतुरुष्कवालतगरैर्गन्धःस्मरोद्दीपनः सव्यामोबकुलोऽयमेवकटुकाहिंगुप्रधूपान्वितः ॥ कुष्ठेनोत्पलगन्धिकःसमलयःपूर्वोभवेच्चम्पकोजातीत्वक्सहितोऽतिमुक्तकइतिज्ञेयःसकुस्तुम्बुरुः ७ ॥

पत्र सिह्लक नेत्रवाला औ तगर इनको समभाग मिलावे तो कामदेव को उद्दीपन करनेवाला गन्ध होता है। इसगन्धमें व्याम (गंधद्रव्यविशेष) मिलावे औ कटुका हिंगु (गुग्गुल) का धूपदेवे तो वकुल पुष्पके समान गंधवाला गन्धद्रव्य बनताहै। इसमें कूट मिलावे तो नीलकमलके तुल्यगन्ध होजाय। श्वेतचन्दन मिलावे तो चंपे के तुल्य गन्धहोय। इसमें जायफल त्वक् औ धनियां मिलादेवे तो अतिमुक्तक पुष्प के समान गन्ध होजाय ७॥

शतपुष्पाकुन्दरकौपादेनार्धेननखतुरुष्कौच ॥
मलयप्रियंगुभागौगन्धोधूप्योगुडनखेन ८ ॥

सौंफ कुन्दरक (देवदारुवृक्षका निर्यास) ये दोनों एक चतुर्थांश नख औ सिह्लक ये दोनों अर्ध अर्थात् दो चतुर्थांश श्वेतचन्दन औ गन्ध प्रियंगु ये दोनों एक चतुर्थांश लेकर गंध द्रव्य बनावे औ इसको गुडका औ नखका धूपदेवै ८॥

गुग्गुलुवालकलाक्षा मुस्तानखशर्कराःक्रमाद्धूपः ॥
अन्योमांसीवालकतुरुष्कनखचन्दनैःपिण्डः ९ ॥

गूगल नेत्रवाला लाख मोथा नख औ शर्करा (खांड) इनसबको समभाग लेकर धूपबनावे। जटामांसी नेत्रवाला सिह्लक नख औ चन्दन इनको समभाग लेने से दूसरा पिंड धूप बनताहै ९॥

हरीतकीशङ्खनखद्रवाम्बुभिर्गुडोत्पलैःशैलकमुस्तकान्वितैः ॥
नवान्तपादादिविवर्धितैःक्रमाद्भवन्तिधूपाबहवोमनोहराः १० ॥

हरड़ शंख नख द्रव (बोल) नेत्रवाला गुड़ कूट शैलक मोथा इन [illegible]

च्योंको एकपादसे लेकर नवतक बधावै जैसे हरड़ एकभाग शंख दो भाग नख तीनभाग इत्यादि एक औगुड़ कूठ को पाद आदि बधाने से दूसरा शैलक औ मोथाकी पाद वृद्धि से तीसरा। अथवा हरड़ एकभाग शंख दोभाग यहएकधूप हुआ इसमें नखके तीन भाग मिलनेसे दूसरा धूप बोलके चारभाग मिलाने से तीसरा धूप इसीभांति बहुत से मनोहर धूप बन जाते हैं १० ॥

भागैश्चतुर्भिःसितशैलमुस्ताः श्रीसर्ज्जभागौनखगुग्गुलूच ॥
कर्पूरबोधोमधुपिण्डितोऽयं कोपच्छदोनामनरेन्द्रधूपः ११ ॥

शर्करा शैलेय औ मोथा इनके चारभाग श्रीवाम औ सर्ज (राल) केदोभाग नख औ गुग्गुलु के दोभाग इनको पीस कर्पूरका बोध देवै अर्थात् कपूरके चूर्ण से उसको सुगन्धित करै पीछे शहत मिलाय उसका पिंडकर लेवै। यह को-पच्छद नाम धूप राजाओं के योग्य होता है ११ ॥

त्वगुशीरपत्रभागैःसूक्ष्मैलार्धेनसंयुतैश्चूर्णः ॥
पटवासःप्रवरोऽयंमृगकर्पूरप्रबोधेन १२ ॥

त्वक् उशीर (खस) गंधपत्र इनके तीन भाग औ सबसे आधी छोटी इला-यची लेकर सबका चूर्णकर कस्तूरी औ कपूरका बोध देवै। यह उत्तम पटवा-स अर्थात् वस्त्रोंको सुगन्धित करनेवाला चूर्ण बनता है १२ ॥

घनबालकशैलेयककर्चूरोशीरनागपुष्पाणि॥ व्याघ्रनखस्पृक्काऽगुरुदमनकनखतगरधान्यानि १३ कर्पूरचोरमलयैःस्वेच्छापरिवर्तितैश्चतुर्भिरतः ॥ एकद्वित्रिचतुर्भिर्भागैर्गन्धार्णवोभवति १४ ॥

मोथा नेत्रबाला शैलेयक कचूर खस नागकेसरके पुष्प व्याघ्र नख स्पृक्का अगुरु दमनक नख तगर धनियां १३ कपूर चोर औ श्वेत चन्दन ये सोलह गन्ध द्रव्य हैं इन में से चाहे जौनसे चार द्रव्यलेकर उनके एक दो तीन औ चारभाग अदल बदल करलेनेसे गन्धार्णव होता है अर्थात् बहुत भांति के गन्ध बनते हैं १४ ॥

अत्युल्बणगन्धत्वादेकांशोनित्यमेवधान्यानाम् ॥
कर्पूरस्यतदूनोनैतौद्वित्र्यादिभिर्देयौ १५ ॥

धनियें में अति उत्कट गन्ध होता है इसलिये धनियेंका नित्य एकही भा-गलेना चाहिये। औ कपूर भी बहुत उत्कट गन्ध होता है इसलिये एकभाग से भी न्यून लेना चाहिये। इनदोनोंके कभी दो तीन भाग न लेवे नहीं तो सब द्रव्यों के गन्धको दबालेते हैं १५ ॥

श्रीसर्जगुडनखैस्तैर्धूपयितव्याःक्रमान्नपिण्डस्थैः ॥

बोधःकस्तूरिकयादेयःकर्पूरसंयुतया १६ ॥

सब गन्धद्रव्यों को श्रीबास राल गुड़ औ नखका धूपदेवै । परन्तु इनचारोंका पृथक् २ धूप देवै सबको मिलाकर न देवै । पीछे से कपूर औ कस्तूरी का बोध देवै १६ ॥

अत्रसहस्रचतुष्टयमन्यानिचसप्ततिसहस्राणि ॥
लक्षंशतानिसप्तविंशतियुक्तानिगन्धानाम् १७ ॥

इनही गन्ध द्रव्योंसे एकलाख चौहत्तर हजार सातसौ बीस १७४७२० प्रकार के गन्ध बनते हैं १७ ॥

एकैकमेकभागंद्वित्रिचतुर्भागिकैर्युतंद्रव्यैः ॥
षड्गन्धकरंतद्वद्द्वित्रिचतुर्भागिकंकुरुते १८ ॥

एक२ द्रव्यका एक२ भाग औ अन्यद्रव्यों के दोतीन औ चारभागलेवें तो छःप्रकारके गन्धहोतेहैं । इसीभांति उस द्रव्यके क्रमसे दो तीन औ चार भाग लेवें औ अन्यद्रव्यों के दोआदि भागमिलावें तो छःगन्ध होते हैं १८ ॥

द्रव्यचतुष्टययोगाद्गन्धचतुर्विंशतिर्यथैकस्य ॥
एवंशेषाणामपिषण्णवतिःसर्वपिण्डोऽत्र १९ ॥

चारद्रव्यों के योगसे एकद्रव्य के चौवीसभेद होतेहैं । इसीभांति शेष तीन द्रव्योंकेभी चौवीस२ भेदहोंगे । ये सबमिलकर छियानवे भेदहोते हैं १९ ॥

षोडशकेद्रव्यगणेचतुर्विकल्पेनभिद्यमानानाम् ॥
अष्टादशजायन्तेशतानिसहितानिविंशत्या २० ॥

सोलह प्रकार के जो गन्ध द्रव्यकहे उनमेंसे चार२ द्रव्यलेकर भेदकरें तो अठारहसौ बीस १८२० गंध होतेहैं २० ॥

षण्णवतिभेदभिन्नश्चतुर्विकल्पोगणोयतस्तस्मात् ॥
षण्णवतिगुणःकार्यःसासंख्याभवतिगन्धानाम् २१ ॥

चारद्रव्य के गन्ध के छियानवे भेद कहआये हैं औ अठारहसौ बीसभेद चार२ द्रव्यके मिलानेसे होतेहैं इसलिये छियानवेसे अठारहसौबीसको गुण देवें पूर्वोक्त गन्ध संख्या १७४७२० सिद्धहोती है २१ ॥

पूर्वेणपूर्वेणगतेनयुक्तंस्थानंविनाऽन्त्यंप्रवदन्तिसंख्याम् ॥
इच्छाविकल्पैःक्रमशोऽभिनीयनीतेनिवृत्तिःपुनरन्यनीतिः २२ ॥

गन्धों के भेदजाननेकेलिये गणितका प्रकार औ प्रस्तार दोनों कहते हैं । सब जितने द्रव्यहोयँ उनकी संख्यापर्यंत एकसेलेकर नीचेसे ऊपरको खड़ी पंक्ति लिखे पीछे नीचेके एकको अपने ऊपर के दोमेंजोड़े तो हुये तीन पीछे

इन तीनको अपने ऊपर के तीनमें जोड़ेहुये छः उनको अपने ऊपर के चार में जोड़ेहुये दश इसभांति सबका संकलन करता आवै अन्त्यकी संख्या को छोड़देवै। पीछे इस संकलित पंक्तिका संकलनकरै अन्त्य संख्या छोड़देवै। इसभांति उतनी पंक्तियों में संकलन करताजाय जितने२ द्रव्यलेकर भेदजानना चाहता है तो पिछली पंक्तिके ऊपर अन्त्यकी संख्याकोछोड़ जो संख्या होगी वही भेदसंख्याजानो जैसा सोलहगन्ध द्रव्यहैं उनमेंसे चार२ मिलावें तो कितने भेदहोंगे यह जानना चाहते हैं तो १ से लेकर १६ पर्यंत अंक नीचेसे ऊपरको खड़ी पंक्तिमें लिख पूर्वोक्तरीति से उनका योगकिया तो पंद्रहवें स्थानमें १०५ हुये अन्त्यकी संख्याको न जोड़ा। फिर इस संकलित पंक्तिका योगकिया तो तीसरी पंक्तिबनी उसके चौदहवें स्थानमें ५६० हुये अन्त्यकी पन्द्रहवीं संख्याको न जोड़ा फिर चौथीपंक्तिमें इसतीसरी पंक्ति में संकलनकिया तो तेरहवें स्थानमें १८२० हुये अन्त्यकी चौदहवीं संख्याको न जोड़ा। चारचार द्रव्योंके मिलानेसे भेदजानना चाहते हैं इसलिये चौथीपंक्ति के ऊपरका अंक १८२० यहीभेद संख्याहुई अर्थात् सोलह द्रव्योंसे चार२द्रव्य मिलाकर गन्धबनावें तो१८२०प्रकारके गन्ध बनेंगे इसका न्यास लिखतेहैं॥

१ पंक्ति	२ पंक्ति	३ पंक्ति	४ पंक्ति
१६			
१५	१२०		
१४	१०५	५६०	
१३	९१	४५५	१८२०
१२	७८	३६४	१३६५
११	६६	२८६	१००१
१०	५५	२२०	७१५
९	४५	१६५	९९५
८	३६	१२०	३३०
७	२८	८४	२१०
६	२१	५६	१२६
५	१५	३५	७०
४	१०	२०	३५
३	६	१०	१५
२	३	४	५
१	१	१	१

इन्हीं भेदोंके जानने के लिये प्रस्तार प्रकार लिखतेहैं। जितने इच्छा विकल्प होयँ उनकरके एक २ द्रव्य को समाप्ति पर्यन्त पहुंचाय निवृत्ति करना औ दूसरे द्रव्यको लेजाना। उनसब भेदोंका योग इष्टसंख्या होगी। इसका यह तात्पर्यहै कि सोलहद्रव्योंमें चार २ मिलानेसे कितनेभेद होतेहैं औ क्या२ भेदहोतेहैं। यह जाननेकेलिये प्रस्तारकरना चाहिये। तो पहिले सोलहद्रव्योंकेनामके आदिअक्षर लिखै पहिले तीनअक्षर तो वेहीरक्खै चौथाअक्षर बदल २ कर मिलाताजाय। योंकरनेसे तेरहभेदहोतेहैं न फिर पहिले दूसरे औ चौथेअक्षरको स्थिररक्खै अर्थात् वेही तीनअक्षर सबभेदोंमें रक्खै औ पांचवेंआदि सबअक्षरों को उनतीनों में बदल २कर मिलाताजायतो बारहभेदहोते हैं इसीप्रकार पांचवेंअक्षरकोस्थिरकरनेसे

ग्यारह भेद छठे को स्थिरकरने से दश सातवें को स्थिरकरने से नव आठवें को स्थिरकरने से आठ नवेंको स्थिरकरने से सात दशवें को स्थिरकरनेसे छः ग्यारहवें को स्थिरकरनेसे पांच वारहवेंको स्थिरकरने से चार तेरहवेंको स्थिर करने से तीन चौदहवें को स्थिरकरने से दो औ पन्द्रहवें अक्षरको स्थिरकरने से एकभेद होता है। इनसब में पहिला औ दूसरा तो स्थिरही हैं। इनसब भेदों कायोग ९१ हुआ। फिर प्रथम द्वितीय औ चतुर्थ को स्थिरकर पंचम आदि को बदलते गये तो वारहभेद हुये पहिली रीतिसे सब भेदलाकर उनका योग किया तो ७८ हुये फिर प्रथम द्वितीय औ पंचम को स्थिरकर षष्ठआदिको बदलनेसे ग्यारह आदि भेदहुये उनका योग ६६ हुआ। इसप्रकार पंद्रहवें पर्यन्त पहुँचकर भेदलाये। फिर यहांसे निवृत्तहोय आरम्भ के अक्षरको छोड़ दूसरा तीसरा औ चौथा इनतीनों को स्थिरकरके पांचवें आदि को चलाया औ पूर्वोक्त रीति से पंद्रहवें स्थान पर्यन्त पहुँचे। फिर यहांसे निवृत्तहो दूसरे अक्षर को छोड़ तीसरे चौथे औ पांचवेंको स्थिरकर छठे आदिको चलाने से भेदलाये इसीभांति जो अक्षर पंद्रहवेंस्थान पर्यंत पहुँचे उसको छोड़देना औ ऊपर से और अक्षर को लेचलना यह (नीतेनिवृत्तिःपुनरन्यनीतिः) इसका तात्पर्य है। इच्छा विकल्पका यह तात्पर्यहै कि जिसप्रकारयहां सोलह द्रव्यों से चार २ द्रव्यलेकर भेदलाये। इसीभांति पांच छः आदि द्रव्यलेकर भेदलासक्तेहैं॥ यद्यपि बुद्धिमान्‌को यह प्रस्तार कुछ कठिननहीं प्रतीत होता परंतु मन्दमति पुरुषों को यही पर्वत है २२॥

द्वित्रीन्द्रियाऽष्टभागैरगुरुःपत्रंतुरुष्कशैलेयौ ॥ विषयाऽष्टपक्षदहनाःप्रियंगुमुस्तारसाःकेशः २३ स्पृक्कात्वक्तगराणांमांस्याश्चकृतैकसप्तषड्भागाः ॥ सप्तर्तुवेदचन्द्रैर्मलयनखश्रीककुन्दरुकाः २४ षोड़शकेकच्छपुटेयथातथामिश्रितैश्चतुर्द्रव्यैः ॥ येऽत्राष्टादशभागास्तेऽस्मिन्गन्धाढ्ययोगाः २५ नखतगरतुरुष्कयुताजातीकर्पूरमृगकृतोद्बोधाः ॥ गुड़नखधूप्यागन्धाःकर्तव्याःसर्वतोभद्राः २६ ॥

अगर पत्र (गंधपत्र) तुरुष्क (सिह्लक) शैलेय इन चारोंके दो तीन पांच औ आठ भाग लेवै। प्रियंगुमुस्ता (मोथा) रस (वोल) केश (ह्रीबेर) इनके पांच आठ दो औ तीनभाग २३ स्पृक्का त्वक् तगर मांसी इनके चार एक सात औ छःभाग मलय (श्वेतचंदन) नख श्रीक (श्रीवास) कुंदरू इनकेसात छः चार औ एकभागलेवै २४ इनसोलह द्रव्योंके कच्छपुटमें जैसानीचे लिखा है जिन २ भागोंका योग अठारहहोय उन २ चार द्रव्योंके उतने २ भागलेकर

अगुरु	पत्र	तुरुष्क	शैलेय
२	३	५	८
प्रियंगु	मुस्ता	रस	केश
५	८	२	३
स्पृक्का	त्वक्	तगर	मासी
४	१	७	६
मलय	नख	श्रीक	कुंदरक
७	६	४	१

अनेक प्रकारके गंध योग वनतेहैं। जैसा इस कच्छपुटमें खड़ेकोष्ठोंकी चारपंक्तिमें चाहै जिस पंक्तिका योगकरैं अठारहहोते हैं इसीप्रकार आड़ी पंक्तिके चारकोष्ठ कर्णकार चारकोष्ठ और भी परस्पर मिले चारकोष्ठोंका योग अठारहके तुल्यहोताहै इसलिये जिन चार कोष्ठोंका योग अठारहहोय उनमें स्थित द्रव्यों के उतने २ भागलेकर गंध वनावै २५ पीछे उनगंधोंको नख तगर सिह्लक करके युक्त करै। जाती (जायफल) कपूर कस्तूरी करके उनका उद्बोधनकरै औ गुड़ औ नख का धूपदेवै । कच्छपुटमें सब ओर जोड़ने से योग अठारह होता है इसलिये इनगंधोंको सर्व तो भद्र कहते हैं २६ ॥

जातीफलमृगकर्पूरबोधितैःससहकारमधुसिक्तैः ॥
बहवोऽत्रपारिजाताश्चतुर्भिरिच्छापरिगृहीतैः २७ ॥

इसी कच्छ पुटमें चाहे जौनसे चारद्रव्य लेकर उनको जायफल कस्तूरी औ कपूर करके बोधन करै औ सहकार (बहुत सुगन्धयुक्त आम्र) का रस औ शहत करके उनको भिगोवै तो पारिजात पुष्प के समान गन्ध अनेक गंध वनते हैं। ये सब मुख वासहैं अर्थात् इन पारिजात नाम गंधों से मुख सुगंध युक्त होता है २७ ॥

सर्जरसश्रीवासकसमन्वितायेऽत्रधूपयोगास्ते ॥
श्रीसर्जरसवियुक्तैःस्नानानिसबालकत्वग्भिः २८ ॥

पहिले कच्छपुट में जितने गंध कहे उनमें सर्ज रस (राल) औ श्रीवास के मिलान से अनेक प्रकारके धूपवनते हैं। औ उनमें श्रीवास औ सर्ज रस न मिलावे औ नेत्रवाला औ त्वक् मिलादेवैं तो स्नानके योग्यचूर्णवनते हैं। अर्थात् उनको शिर आदि में लगाय स्नानकरै २८ ॥

रोध्रोशीरनतागुरुमुस्तापत्रप्रियंगुवनपथ्याः ॥ नवकोष्ठात्कच्छपुटाद्द्रव्यत्रितयंसमुद्धृत्य २९ चन्दनतुरुष्कभागौशुक्त्यर्धपादिकातुशतपुष्पा॥ कटुहिंगुलगुडधूप्याःकेसरगन्धाश्चतुरशीतिः३०॥

रोध्र (लोध) उशीर (खस) नत (तगर) अगुरु मुस्ता पत्र प्रियंगु वन (परिपेलवनाम गन्धद्रव्य) पथ्या (हरड़) इन नौ द्रव्यों के कच्छपुट से चाहे जो तनिद्रव्य लेकर गन्धवनावै २९ उनमें एकभाग चन्दन एकभाग सिह्लक आ-

भाग नख औ एकभाग का चतुर्थांश सौंफ मिलाकर गुग्गुलु औ गुड़का धूप उनको देवै। तो ये वकुल पुष्पके तुल्य गंधवाले चौरासी गन्ध द्रव्यवनते हैं। नौद्रव्यों से तीन २ द्रव्यलेकर गन्धवनावें तो चौरासी भेद होते हैं यह पूर्वोक्त रीतिसे प्रस्तार करके देखलेना चाहिये ३० ॥

सप्ताहंगोमूत्रेहरीतकीचूर्णसंयुतेक्षिप्त्वा ॥ गन्धोदकेचभूयोविनिक्षिपेद्दन्तकाष्ठानि ३१ एलात्वक्पत्राऽञ्जनमधुमरिचैर्नागपुष्पकुष्ठैश्च ॥ गन्धाम्भःकर्तव्यंकिंचित्कालंस्थितान्यस्मिन् ३२ जातीफलपत्रैलाकर्पूरैःक्रतयमैकशिखिभागैः ॥ अवचूर्णितानिभानोर्मरीचिभिःशोषणीयानि ३३ ॥

दन्तकाष्ठों (दतौन) को लेकर हरड़के चूर्णयुक्त गोमूत्रमें सात दिन भिगोवै पीछे उनको गन्धोदकमें डालै ३१ इलायची त्वक् पत्र अंजन शहत कालीमिरच नागकेसर औ कूठ इनसबके समभागलेकर गंधजल वनावै उसगंधजलमें कुछकाल उन दन्तकाष्ठों को भिगोयरक्खै ३२ पीछे जायफल चारभाग पत्र दोभाग इलायची एकभाग औ कपूर तीनभाग लेकर इनका सूक्ष्म चूर्ण कर उन दन्तकाष्ठोंके ऊपर मसलदेवे पीछे उनको धूपमें सुखाकर रक्खै ३३॥

वर्णप्रसादंवदनस्यकान्तिंवैशद्यमास्यस्यसुगन्धितांच ॥
संसेवितुःश्रोत्रसुखांचवाचंकुर्वन्तिकाष्ठान्यसकृद्भवानाम् ३४ ॥

असकृद्भव अर्थात् दन्त उनके काष्ठ अर्थात् दन्तकाष्ठ पहिले जो दन्तकाष्ठ सिद्ध किये उनको सेवन करनेवाले पुरुषके शरीरका रंग उत्तम होताहै मुख की कान्ति उत्तम होती है भीतर से मुख निर्मल औ सुगन्धयुक्त होता है। औ उस पुरुष की वाणी मीठी होजाती है कि जिसके सुननेसे सुखहोताहै ३४ ॥

कामंप्रदीपयतिरूपमभिव्यनक्ति सौभाग्यमावहतिवक्त्रसुगन्धितां च ॥ ऊर्जंकरोतिकफजांश्चनिहन्तिरोगांस्तांबूलमेवमपरांश्चगुणान्करोति ३५ ॥

तांबूल (पान) कामदेवका दीप्तकरता है रूपको उत्पन्न करताहै सौभाग्य कर्त्ता है। मुखको सुगन्धयुक्त करताहै वलकरताहै कफके रोगोंको हरताहै पानखानेसे ये गुणहोतेहैं और जो पहिले दन्तकाष्ठके गुणकहे वेभीहोतेहैं ३५॥

युक्तेनचूर्णेनकरोतिरागंरागक्षयंपूगफलातिरिक्तम् ॥
चूर्णाधिकंवक्त्रविगन्धिकारिपत्राधिकंसाधुकरोतिगन्धम् ३६॥

पान में ठीकचूना लगायाजाय कि न बहुत होय औ न थोड़ाहोव तो राग (रंग) करता है। सुपारी अधिक होयं तो रागका क्षयहोताहै । चूना अधिक

होय तो मुखमें दुर्गंध करताहै। औ पत्र (पान) अधिक होय तो मुखमें उत्तम गन्ध करताहै ३६ ॥

पत्राधिकंनिशिहितंसफलंदिवाचप्रोक्तान्यथाकरणमस्यविडम्बनैव॥
कक्कोलपूगलवलीफलपारिजातैरामोदितंमदमुदामुदितंकरोति ३७॥

इतिश्रीवराहमिहिरकृतौबृहत्संहितायामन्तःपुरचिन्तायां
गन्धयुक्तिर्नामसप्तसप्ततितमोऽध्यायः ७७ ॥

रातिको पानखाय तो सुपारी थोड़ीडाले औ पान अधिकरक्खे औ दिनमें खाय तो सुपारी अधिकडाले औ पान थोड़ारक्खे तो उत्तम होता है। इससे बिपरीत रीतिकरके पानखाय तो पानखाना विडम्बनाही है। कक्कोल सुपारी लवलीफल औ पारिजात करके युक्त तांबूल खानेवाले पुरुषका मदके हर्ष करके प्रसन्न करताहै ३७ ॥

श्रीवराहमिहिराचार्य्यकीबनाईबृहत्संहितामेंअन्तःपुरचिन्तामेंगन्ध
युक्तिनामसतहत्तरवांअध्यायसमाप्तहुआ ७७ ॥

अठहत्तरवां अध्याय ॥

पुंस्त्रीसमायोग

शस्त्रेणवेणीविनिगूहितेनविदूरथंस्वामहिषीजघान॥ विषप्रदिग्धेनचनूपुरेण देवीविरक्ताकिलकाशिराजम् १ एवंविरक्ताजनयन्तिदोषान्प्राणच्छिदोऽन्यैरनुकीर्त्तितैःकिम् ॥ रक्ताविरक्ताःपुरुषैरतोऽर्थात् परीक्षितव्याःप्रमदाःप्रयत्नात् २ ॥

विदूरथ राजाको उसकी रानी अपनी वेणी (चोटी) में छिपायेहुये शस्त्र करके मारदिया। औ काशीके राजाको उसकी विरक्त रानीने विषसेलिप्त नूपुर करके मारा १ इसभांति विरक्तस्त्री प्राण हरनेवाले दोष करतीहैं और तो उनके दोष वर्णन करने से क्या प्रयोजन है। इसकारण पुरुषोंको प्रयत्न से अनुरक्त औ विरक्त स्त्रियोंकी परीक्षा करनी चाहिये २ ॥

स्नेहंमनोभवकृतंकथयन्तिभावानाभीभुजस्तनविभूषणदर्शनानि॥व
स्त्राऽभिसंयमनकेशविमोक्षणानिभ्रूक्षेपकम्पितकटाक्षनिरीक्षणानि ३

अनुरक्त स्त्रीके लक्षण कहते हैं। हृदयकी अवस्था को सूचन करनेवाले शरीरकम्प रोमांच स्वेदमुखकी विवर्णता इत्यादि सात्विकभाव कामदेवके किये स्नेहको सूचन करते हैं अर्थात् इनभावों को देख स्त्रीको अनुरक्त जानै औ नाभि भुजा कुच औ भूषणोंका दिखाना वस्त्रका समेटना केशोंकाखोलना भ्रू चढ़ाना कांपना कटाक्ष से देखना ये सब अनुरक्त स्त्रीकी चेष्टा हैं ३ ॥

उच्चैःष्ठीवनमुत्कटप्रहसनंशय्यासनोत्सर्पणंगात्रास्फोटनजृम्भणा निभुलभद्रव्यालपसंप्रार्थना ॥ बालालिङ्गनचुम्बनान्यभिमुखेसख्याः समालोकनंदक्पातश्चपराङ्मुखेगुणकथाकर्णस्यकण्डूयनम् ४ इमां चविन्द्यादनुरक्तचेष्टांप्रियाणिवक्तिस्वधनंददाति ॥ विलोक्यसंहृष्य तिवीतरोषाप्रमार्ष्टिदोषान्गुणकीर्त्तनेन ५ तन्मित्रपूजातदरिद्विषत्वं कृतस्मृतिःप्रोषितदौर्मनस्यम् ॥ स्तनौष्ठदानान्युपगूहनंचस्वेदोऽथ चुम्बाप्रथमाभियोगः ६ ॥

स्त्री पुरुषको देख ऊंचे स्वरसेष्ठीवन (खँखारना) करै ऊंचे शब्दसे हँसै शय्या औ आसन के समीपजावै अंगोंको तोड़ैजृंभा (उवासी) लेवै पुरुष से सुलभवस्तु थोड़ीसी मांगै पुरुषके संमुख बालकको आलिंगनकरै औ उसका मुखचूमें सखीकी ओर देखै पुरुष दूसरीओर मुखकरै तव उसको देखै पुरुषके गुण वर्णनकरै पुरुषको देख कान खुजावै ये सवचेष्टा अनुरक्त स्त्रीकी हैं ४ अनुरक्त स्त्री अपने पतिसे मीठे वचन बोलती है। अपना धनपतिको देती है देखकर प्रसन्न होती हैं। क्रोधहीन रहती हैं औ गुण वर्णन करके पतिके दोषों को छिपाती है ५ पतिकेमित्रोंका आदरकरती है पतिकेशत्रुसे द्वेषरखतीहै पति केकिये कार्योंको स्मरणरखती है पति विदेशमें जाय तो उदास रहती है आ लिंगन आदिकेलिये स्तन औ पानकेलिये अधरदेती है आलिंगन करती है पतिके समागममें प्रस्वेदयुक्त होजाती है। पहिले आपही पतिकामुख चुम्बन करती है ये सव अनुरक्त स्त्रियोंकी चेष्टाहैं ६ ॥

विरक्तचेष्टाभृकुटीमुखत्वं पराङ्मुखत्वंकृतिविस्मृतिश्च ॥ असं भ्रमोदुष्परितोषताच तद्द्विष्टमैत्रीपरुषंचवाक्यम् ७ स्पृष्ट्वाऽथ वालोक्यधुनोतिगात्रं करोतिगर्वंनरुणद्धियान्तम् ॥ चुम्बाविरामेव दनंप्रमार्ष्टिपश्चात्समुत्तिष्ठतिपूर्वसुप्ता ८ ॥

विरक्तस्त्रीकी ये चेष्टाहैं कि पुरुषको देख मुखमें भृकुटीचढ़ावे मुखफेरलेवे पुरुषके किये कार्योंको भूलजावे पुरुष के आनेपर आदरनकरै बहुतसादेनेपर भी संतुष्टनहोय पतिके शत्रुओंसे प्रीतिकरै कठोर वचनबोलै ७ पतिको स्पर्श कर अथवा देखकर हाथआदि अंगों को फटकारै पतिचुम्बन करचुकै तो अ- पने मुखको पोंछडालै पतिसे पहिले सोवै औ पीछे सोतीउठै। ये विरक्त स्त्रीकी चेष्टाहैं ८ ॥

भिक्षुकिकाप्रव्रजितादासीधात्रीकुमारिकारजिका ॥ मालाकारी दुष्टांगनासखीनापितीदूत्यः ९ कुलजनविनाशहेतुर्दूत्योऽ[illegible]तः

प्रयत्नेन ॥ ताभ्यःस्त्रियोऽधिरक्ष्यावंशयशोमानवृद्ध्यर्थम् १० ॥

भिक्षुकी प्रव्रजिता (संन्यासिन) दासी धात्री (धाय) कुमारी रजिका (धोबिन) मालाकारी (मालिन) दुःशीलास्त्री सखी औ नापिती (नाइन) ये दूतीहोती हैं अर्थात् स्त्रियोंको परपुरुषसे मिलाती हैं ९ ये दूती कुलस्त्रियों के नाशकाहेतुहैं इसलिये पुरुषको वंशयश औ मानकी वृद्धिकेलिये प्रयत्न से स्त्रियोंको इनदूतियोंके संगसे बचाना चहिये १० ॥

रात्रीविहारजागररोगव्यपदेशपरगृहेक्षणिकाः ॥
व्यसनोत्सवाश्चसंकेतहेतवस्तेषुरक्ष्याश्च ११ ॥

रात्रिको घरके बाहिरजाना जागरण करना रोगका बहानालेना दूसरे के घरजाय नृत्यआदि प्रेक्षणक (तमाशे) देखना देशोपद्रव आदि विपत्ति औ विवाहआदि उत्सवों का होना ये सबस्त्रियों के संकेत समय हैं अर्थात् इन समयों में परपुरुषों से समागम होता है । इसलिये इनसमयों में स्त्रियोंकी रक्षाकरनी चहिये ११ ॥

आदौनेच्छतिनोज्झतिस्मरकथांव्रीडाविमिश्रालसा मध्येह्रीपरिवर्जिताऽभ्युपरमेलज्जाविनम्रानना । भावैर्नैकविधैःकरोत्यभिनयंभूयश्चयासादरा बुद्ध्वापुंप्रकृतिंचयानुचरतिग्लानेतरैश्चेष्टितैः १२॥

शय्याके ऊपर शयनकरतेही सुरतकरना स्त्रीनहीं चाहै कामकथाको न छोड़ै सुरतके आरम्भमें लज्जायुक्त औ अलसहोय सुरत के मध्य में निर्लज्ज होजाय औ सुरतसमाप्ति में लज्जासे मुखनीचे करलेवै फिरभी अनेकप्रकार के भावोंकरके युक्त सुरतकरै आदरयुक्तहोय पुरुषकी प्रकृतिको समझ दुःख सुखकी चेष्टाओंकरके पुरुषका अनुकरणकरै अर्थात् पुरुष दुःखीहोय तो आप भी दुःखयुक्तहोय औ पुरुष सुखीहोय तो आपभी सुखयुक्तरहै । ये सब अनुरक्त स्त्रियों के लक्षण हैं १२ ॥

स्त्रीणांगुणायौवनरूपवेषदाक्षिण्यविज्ञानविलासपूर्वाः ॥
स्त्रीरत्नसंज्ञाचगुणान्वितासु स्त्रीव्याधयोन्याश्चतुरस्यपुंसः १३ ॥

यौवन रूप वेष दाक्षिण्य (चतुरता) काम शास्त्रोक्त कलाओंका जानना औ विलासआदि स्त्रियों के गुण हैं । इनगुणोंकरके युक्त स्त्री रत्नकहाती हैं अर्थात् वे स्त्रियों में उत्तम स्त्रीहोतीहैं । ये गुण जिन स्त्रियोंमें न होयँ वे स्त्री चतुरपुरुष के लिये व्याधि हैं अर्थात् चतुर मनुष्यको ऐसीस्त्री मिलजाय तो वह सदादुःखी रहता है १३ ॥

नग्नास्यवर्णैर्मलदिग्धकाया निन्द्यांगसम्बन्धिकथांनकुर्यात् ॥

नचान्यकार्यस्मरणंरहस्थामनोहिमूलंहरदग्धमूर्तेः १४ ॥

पति के समीप स्त्री ग्रामीण बोली न बोलै अर्थात् चतुराई से बातचीत करै। शरीर मलिन न रक्खै। निंद्य अंग गुदआदि सम्बन्धी बात न करै एकांत में पतिके समीप बैठ घरके धन्धोंका प्रसंग न करै क्योंकि कामदेवका मूल मनहै मन ठिकाने रहै तो कामका उद्दीपन होताहै १४ ॥

इवासंमनुष्येणसमंत्यजन्ती बाहूपधानस्तनदानदक्षा ॥
सुगन्धकेशासुसमीपरागा सुप्तेऽनुसुप्ताप्रथमंविबुद्धा १५ ॥

स्त्री अपने पतिके साथ इवासलेवै अपनी भुजाका उपधान (सिरहना) पतिकोदेवै औ अपने स्तन पतिको देनेमें चतुरहो केशोंको सुगन्धयुक्तरक्खै अनुरागयुक्तरहै पतिके पीछेसोवै औ पाहिले सोनेसे उठै १५ ॥

दुष्टस्वभावाःपरिवर्जनीया विमर्दकालेपुचनक्षमायाः ॥ यासाम सृग्वासितनीलपीत माताम्रवर्णंचनताःप्रशस्ताः १६ यास्वप्नशी लाबहुरक्तपित्त प्रवाहिनीवातकफातिरिक्ता ॥ महाशनास्वेदयुतांऽग दुष्टायाह्रस्वकेशीपलितान्विताच १७ मांसानियस्याश्चचलन्तिना यामहोदराखिखिणिनीचयास्यात् ॥ स्त्रीलक्षणेयाःकथिताश्चपापा स्ताभिर्नकुर्यात्सहकामधर्मम् १८ ॥

दुष्ट स्वभाववाली स्त्री त्यागनी चहिये। औ रतिविमर्दमें जो समर्थनहोयँ वेभी त्यागनी चाहिये। जिन स्त्रियोंके ऋतुका रुधिर काला नीला पीला अथवा थोड़ासा लालरंगकाहोय वे स्त्री अच्छीनहीं होती हैं १६ जो स्त्री बहुत सोवै जिसके शरीर में बहुत रक्त अथवा पित्तहोय जिसके सदा रुधिर गिरतारहै जिसके शरीरमें वातकफ अधिकहोयँ जो स्त्री बहुत भोजनकरै जिसका शरीर प्रस्वेद (पसीना) युक्तरहै जिसके अंग दोषों करके युक्त होयँ जिसके केश छोटे होयँ श्वेतकेश होयँ १७ जिसके शरीरका मांस ढीलाहोय जिसका पेट बड़ाहोय जो स्त्री नाकमें बोलै अर्थात् गुनगुनी होय औ पीछे स्त्रीलक्षणाध्यायमें जो स्त्री दोष कहे उनकरके जो स्त्री युक्तहोयँ इनसबके साथकाम धर्म (रति) न करे। अर्थात् ऐसी स्त्री सर्वथा त्याज्य हैं १८ ॥

शशशोणितसंकाशंलाक्षारससन्निकाशमथवायत् ॥ प्रक्षालितंविरज्यतियच्चाऽसृक्तद्भवेच्छुद्धम् १९ यच्छब्दवेदनावर्जितंत्र्यहात्संनिवर्ततेरक्तम् ॥ तत्पुरुषसंप्रयोगादविचारंगर्भतांयाति २० ॥

जो स्त्री के ऋतुका रुधिर शशके रक्तकेतुल्य अतिरक्तवर्ण होय अथवा लाखके रसके समान होय औ धोने से उसका दाग वस्त्र आदि से निकलजावै

जाय वह रुधिर शुद्धहोता है अर्थात् उसमें कुछ विकार नहीं होता १९ जिस ऋतुके रुधिर निकलने के समय शब्द न होय पीला न होय औ तीन दिनमें रुधिर बंदहोजाय वह रुधिर पुरुष का समागम होने से निश्चयही गर्भ रूप को प्राप्त होताहै २० ॥

नदिनत्रयंनिषेवेतस्नानंमाल्यानुलेपनंचस्त्री ॥ स्नायाच्चतुर्थदिवसेशास्त्रोक्तेनोपदेशेन २१ पुष्यस्नानौषधयोयाःकथितास्ताभिरम्बुमिश्राभिः ॥ स्नायात्तथात्रमन्त्रःसएवयस्तत्रनिर्दिष्टः २२ ॥

रजस्वला स्त्री तीनदिन पर्यंत स्नान न करै पुष्प माला अनुलेपन आदि का सेवन न करै। चौथेदिन शास्त्रोक्तरीतिसे स्नानकरै २१ पुष्यस्नानके प्रकरणों में जो औषधी कहीहैं उनको जलमें मिलाय स्नानकरै औ पुष्यस्नान में जो मंत्र कहाहै वहीमंत्र यहांभी पढ़ना चाहिये २२ ॥

युग्मासुकिलमनुष्यानिशासुनार्योभवन्त्ययुग्मासु ॥
दीर्घायुषःसुरूपाःसुखिनश्चविकृष्टयुग्मासु २३ ॥

ऋतुसे चौथी छठी आदि समरात्रियोंमें पुरुपका संयोगहोय तोपुत्रउत्पन्न होय औ पांचवीं सातवीं आदि विषम रात्रियोंमें पुरुपसंग होय तो कन्या उत्पन्नहोती है। आठवीं दशवीं आदि दूरकी समरात्रियोंमें पुरुपसेसंग होय तो दीर्घआयुष्वाले रूपवान् औ सुखीपुत्र उत्पन्नहोतेहैं २३ ॥

दक्षिणपार्श्वेपुरुषोवामेनारीयमावुभयसंस्थौ ॥
यद्घुदरमध्योपगतंनपुंसकंतन्निबोद्धव्यम् २४ ॥

स्त्रीके दक्षिणभागमें गर्भस्थितहोय तोबालक बामपार्श्वमें होय तो कन्या औ दोनों पार्श्वोंमें होय तो दो गर्भजानै। औ जो गर्भउदरके मध्यभाग में स्थितरहै उसको नपुंसक जानना चाहिये २४ ॥

केन्द्रत्रिकोणेषुशुभस्थितेषुलग्नेशशाङ्केचशुभैःसमेते ॥
पापैस्त्रिलाभारिगतैश्चयायात्पुंजन्मयोगेषुचसंप्रयोगम् २५ ॥

लग्नके केन्द्र स्थानोंमें शुभग्रह बैठेहोयं लग्न औ चंद्रमा शुभग्रहों करके युक्त होयँ पापग्रह तीसरे ग्यारहवें औ छठे बैठेहोयं ऐसे लग्नमें औ जातकमें जो पुरुप जन्म होनेके योग्य कहेहैं उनमें पुरुप स्त्री से संगकरै २५ ॥

ननखदशनविक्षतानिकुर्यादृतुसमयेपुरुषःस्त्रियाःकथंचित् ॥
ऋतुरपिदशषट्चवासराणिप्रथमनिशात्रितयंनतत्रगम्यम् २६ ॥

इतिश्रीवराहमिहिरकृतौबृहत्संहितायामन्तःपुरचिन्तायांपुंस्त्रीसमायोगोनामाऽष्टसप्ततितमोऽध्यायः ७८ ॥

पुरुष ऋतुके समय स्त्री के शरीर में नखक्षत औ दंतक्षत कभी न करे। ऋतु सोलहदिन पर्यंत रहताहे उसमें पहिली तीन रात्रियोंमें स्त्री से संग न करना चाहिये २६ ॥

श्रीवराहमिहिराचार्यकीवनाईवृहत्संहितामेंअंतःपुरचिंतामेंपुंस्त्रीसमायोगनामअठहत्तरवांअध्यायसमाप्तहुआ ७८ ॥

उनासीवांअध्याय ॥

शय्यासन लक्षण

सर्वस्यसर्वकालंयस्मादुपयोगमेतिशास्त्रमिदम् ॥
राज्ञांविशेषतोऽतःशयनासनलक्षणंवक्ष्ये १ ॥

सबको सब कालमें इस शास्त्रका उपयोग होताहै औ राजाओंको तो विशेष करके इसका उपयोग पड़ताहे इसलिये शय्या औ आसनका लक्षण हम कहते हैं १ ॥

असनस्पन्दनचंदनहरिद्रसुरदारुतिन्दुकीशालाः ॥
काश्मर्यंजनपद्मकशाकावाशिंशिपाचशुभाः २ ॥

असन स्पंदन चंदन देवदारु हरिद्र तिंदुकी साल काश्मरी अंजन पद्मक शाक औ सीसम इन वृक्षों का काष्ठ शय्या (खाट) औ आसन (चौकीआदि) के लिये शुभ होताहै २ ॥

अशनिजलानिलहस्तिप्रपातितामधुविहङ्गकृतनिलयाः॥ चैत्यश्मशानपथिजोर्ध्वशुष्कवल्लीनिबद्धाश्च ३ कंटकिनोवायेस्युर्महानदीसंगमोद्भवायेच ॥ सुरभवनजाश्चनशुभायेचाऽपरयाम्यदिक्पतिताः ४ ॥

बिजली जल पवन औ हाथी के गिरायेहुये वृक्ष शहत का छत्ता औ पक्षियों के घोंसले जिनमें होयं वे वृक्ष चैत्य श्मशान औ मार्ग में उत्पन्न हुये वृक्ष खड़े २ ही सूखगये होयं ऐसे वृक्ष जिनपर वेल लिपट रही होयं ३ जो कांटों करके युक्त होयं महानदियों के संगम पर जो उत्पन्न हुये होयं औ देवताओं के मन्दिरमें जो उत्पन्न हुयेहोयं ये सब वृक्ष औ काटने के अनन्तर जो वृक्ष पश्चिम अथवा दक्षिणकी ओर गिरें वे वृक्ष शुभ नहींहोते। अर्थात् इनके काष्ठसे शय्या और आसन न बनवावै ४ ॥

प्रतिषिद्धवृक्षनिर्मितशयनासनसेवनात्कुलविनाशः ॥
व्याधिभयव्ययकलहाभवन्त्यनर्थाश्चनैकविधाः ५ ॥

इन अशुभ वृक्षोंके काष्ठसेवने शय्या औ आसनके सेवनसे कुलका नाश

होताहै रोगका भय धनका व्यय कलह औ अनेकभांतिके अनर्थ होतेहैं ५॥

पूर्वच्छिन्नंयदिवादारुभवेत्तत्परीक्ष्यमारम्भे॥
यद्यारोहेत्तस्मिन्कुमारकःपुत्रपशुदंतत् ६॥

जो पहिलेसे कटाहुआ काष्ठही पड़ाहोय तो शय्या आदि बनानेके प्रारंभ मेंही उस काष्ठकी परीक्षा करै जो उस काष्ठके ऊपर कोई लड़काचढ़ै तो वह काष्ठ शुभ होताहै उस काष्ठके बने शय्या औ आसन पुत्र औ पशु देने वाले होतेहैं ६॥

सितकुसुममत्तवारणदध्यऽक्षतपूर्णकुम्भरत्नानि॥
मङ्गल्यान्यन्यानिचदृष्ट्वारम्भेशुभंज्ञेयम् ७॥

शय्या आदि बनाने के आरम्भ में श्वेतपुष्प मस्तहाथी दही अक्षत पूर्ण कलश रत्न और भी दूर्वा आदि मंगलद्रव्य देखपड़ैं तो शुभ जानै ७॥

कर्माऽगुलंयवाष्टकमुदरासक्तंतुषैःपरित्यक्तम्॥
अंगुलशतंनृपाणांमहतीशय्याजयायकृता ८॥

तुष रहित आठजौका पेट मिलाकर बराबर रक्खैं तो एक कर्मांगुल होताहै। राजाओं के लिये एकसौ अंगुल लम्बी शय्या बनावै तो जय देने वाली होतीहै ८॥

नवतिःसैवषडूनाद्वादशहीनात्रिषट्कहीनाच॥
नृपपुत्रमन्त्रिबलपतिपुरोधसांस्युर्यथासंख्यम् ९॥

नब्बे अंगुल लम्बी शय्या राजपुत्रकी चौरासी अंगुल लम्बी राजा के मंत्री की अठहत्तर अंगुल लम्बी सेनापतिकी औ बहत्तर अंगुल लम्बी शय्या राज-पुरोहित की बनानी चाहिये ९॥

अर्धमतोऽष्टांशोनंविष्कम्भोविश्वकर्मणाप्रोक्तः॥
आयामत्र्यंशसमःपादोच्छ्रायःसकुक्षिशिराः १०॥

शय्याकी लम्बाई के आधे में उसका अष्टांश घटादेने से जो शेष रहै वह शय्याकी चौड़ाई विश्वकर्माने कहीहै। औ आयामकी तिहाई के तुल्य पादों की ऊँचाई कुक्षि औ शिर सहित होतीहै १०॥

यःसर्वःश्रीपर्ण्यापर्यंकोनिर्मितःसधनदाता॥ असनकृतोरोगहर स्तिन्दुकसारेणवित्तकरः ११ यःकेवलशिंशिपयाविनिर्मितोबहुविधं सवृद्धिकरः॥ चन्दनमयोरिपुघ्नोधर्मयशोदीर्घजीवितकृत् १२ यःप द्मकपर्यंकःसदीर्घमायुःश्रियंसुतंवित्तम्॥ कुरुतेशालेनकृतःकल्या

...शाकरचितश्च १३ केवलचन्दनरचितंकांचनगुप्तंविचित्ररत्नयु
तम्॥ अध्यासनपर्यङ्कंविबुधैरपिपूज्यतेनृपतिः १४॥

जो सब पर्यंक (पलँग) श्रीपर्णी के काष्ठका बनाहोय वह धन देनेवाला होताहै। असनके काष्ठका बना पर्यंक रोग हरताहै। तेंदूके काष्ठका बना धन करताहै ११ जो पर्यंक केवल सीसमके काष्ठका बनाहोय वह अनेकप्रकार वृद्धि करताहै। चन्दनका पर्यंक शत्रुनाश करताहै औ धर्म यश औ दीर्घआयुष करताहै १२ शालके औ सागवान्‌के काष्ठका बना पर्यंक कल्याण करताहै१३ चन्दनके काष्ठका पलँग बनाय सुवर्णसे उसको मढ़कर उसके ऊपर भांति २ के रत्न जड़े। ऐसे पर्यंकपर जो राजासोवै उसको देवताभी पूजन करतेहैं १४॥

अन्येनसमायुक्तानतिन्दुकीशिंशपाचशुभफलदा॥ नश्रीपर्णीन
चदेवदारुवृक्षोनचाप्यसनः १५ शुभदौतुशाकशालौपरस्परंसंयुतौ
पृथक्चैव॥ तद्वत्पृथक्प्रशस्तौसहितौचहरिद्रककदम्बौ १६ सर्व
स्स्पन्दनरचितोनशुभःप्राणान्हिनस्तिचाम्बकृतः॥ असनोऽन्यदारु
सहितःक्षिप्रंदोषान्करोतिबहून् १७ अम्बस्पन्दनचन्दनवृक्षाणांस्प
न्दनाच्छुभाःपादाः॥फलतरुणाशयनासनमिष्टफलंभवतिसर्वेण १८

तेंदू औ सीसमके साथ दूसरा काष्ठ मिलावें तो शुभ नहीं होता अर्थात् केवल तेंदूके अथवा केवल सीसमके काष्ठका पर्यंक बनावैं। इसीभांति श्रीपर्णी देवदारु औ असनके काष्ठसे भी दूसरा काष्ठ न मिलावै १५ सागवान् औ सालके काष्ठको मिलाकर पर्यंक बनावै चाहे इनमेंसे एक केही काष्ठ का पर्यंक बनावे तो शुभ होताहै। इसीभांति हरिद्रकवृक्ष औ कदंब वृक्ष का काष्ठ भी चाहे मिलाकर पर्यंक बनावे चाहे एकके काष्ठका बनावें वह भी शुभ होता है १६ सब पर्यंक स्पंदनके काष्ठका बनाहोय तो शुभ नहीं होता औ उसपर सोनेवालेके प्राण हरताहै। इसीभांति अंब वृक्षके काष्ठका पर्यंक भी प्राणहर है। असन वृक्षके काष्ठके साथ और वृक्षका काष्ठ मिलावै तो शीघ्रही बहुत दोष करताहै १७ अंब स्पंदन औ चन्दन इन तीनों वृक्षोंके काष्ठसे बने पर्यंकोंके पाद (पाये) स्पंदन वृक्षके काष्ठके बनावै तो शुभ होतेहैं फलनेवाले चाहे जिस वृक्षके काष्ठसे शय्या औ आसन बनावें वह शुभ होताहै १८॥

गजदन्तःसर्वेषांप्रोक्ततरूणांप्रशस्यतेयोगे॥
कार्योऽलंकारविधिर्गजदन्तेनप्रशस्तेन १९॥

इन सब वृक्षोंके काष्ठमें हाथी दांतका योगहोय तो शुभ होताहै। ...

उत्तम हाथी दांत करके अलंकार विधि करना चाहिये अर्थात् काष्ठमें हाथीदांत के बने बेल बूटे जड़कर उसको शोभित करना चाहिये १९ ॥

दन्तस्यमूलपरिधिद्विरायतंप्रोज्झ्यकल्पयेच्छेषम् ॥
अधिकमनूपचराणांन्यूनंगिरिचारिणांकिंचित् २० ॥

हाथीके दांतके मूल में जितनी परिधि होय उससे दूना मूलकी ओर से छोड़कर शेष दांतको काम में लावे। अनूपदेश (जलप्राय) के हाथियोंके दांत में इससे भी अधिक छोड़े औ पर्वतचारी हाथियों के दांत में मूलकी परिधि के दूनेसे कुछ न्यून छोड़कर शेष दांतको काममें लावै २० ॥

श्रीवत्सवर्धमानच्छत्रध्वजचामराऽनुरूपेषु ॥ छेदेदृष्टेष्वारोग्यविजयधनवृद्धिसौख्यानि २१ प्रहरणसदृशेषुजयोनन्द्यावर्तेप्रणष्टदेशाप्तिः ॥ लोष्टेतुलब्धपूर्वस्यभवतिदेशस्यसंप्राप्तिः २२ स्त्रीरूपेऽश्वविनाशोभृङ्गारेऽभ्युत्थितेसुतोत्पत्तिः ॥ कुम्भेननिधिप्राप्तिर्यात्राविघ्नंच दण्डेन २३ कृकलासकपिभुजङ्गेष्वसुभिक्षव्याधयोरिपुवशत्वम् ॥ गृध्रोलूकध्वांक्षश्येनाकारेषुजनमरकः २४ पाशेऽथवाकबन्धेनृपमृत्युर्जनविपत्स्रुतेरक्ते ॥ कृष्णेश्यावेरूक्षेदुर्गन्धेचाशुभंभवति २५ ॥

हाथीके दांतके काटनेके समय जो उसमें बिल्ववृक्ष वर्धमान (मट्टीकासिकोरा) छत्र ध्वज अथवा चामरके आकार के चिह्न देखपड़ें तो आरोग्य विजय धनकी वृद्धि औ सुख होते हैं २१ शस्त्रके आकार चिह्नहोयँ तो युद्धमेंजय होता है। नन्द्यावर्त नामक प्रासादके आकार का चिह्न होय तो नष्टहुये राज्यकी प्राप्ति होती है। लोष्ट (ढेला) के आकार का चिह्न होय तो पहिले प्राप्तहुये देशकीही प्राप्ति होती है २२ स्त्रीके आकार का चिह्न होय तो घोड़ों का नाश होताहै। भृंगार (झारी) के आकार का चिह्न होय तो पुत्रकी उत्पत्ति होती है कलशके आकार का चिह्न होय तो निधि (भूमिमेंगड़ाहुआद्रव्य) का लाभहोय। दंडके आकार का चिह्न होय तो यात्रामें विघ्न होय २३ कृकलास (गिरगिट) बन्दर औ सर्पके आकार के चिह्न होयँ तो दुर्भिक्षव्याधि औ शत्रु वशत्व होय अर्थात् शत्रुके वश होनापड़ै। गीध उल्लू काक औ श्येन (बाज) के आकारके चिह्नहोयँ तो मनुष्यों में मरीपड़ै २४ पाश अथवा कबन्ध (शिरकटापुरुष) के आकार के चिह्न होयँ तो राजा का मृत्यु होय काटने के समय हाथी के दांत से रुधिर टपकने लगै तो मनुष्योंको विपत्ति होती है। काटने का छेदस्थान काला श्यामवर्ण रूक्ष औ दुर्गन्धयुक्तहोय तो अशुभ होता है २५ ॥

शुक्लःसमःसुगन्धिःस्निग्धश्चशुभावहोभवेच्छेदः ॥
अशुभशुभच्छेदायेशयनेष्वपितेततथाफलदाः २६ ॥

जो दांतका छेद श्वेतवर्ण समान सुगन्धयुक्त औ स्निग्ध होय तो शुभहोता है। ये जो अशुभ औ शुभछेदों का फल कहा वैसाही फल शय्याके काष्ठमेंभी वे छेददेते हैं अर्थात् श्री वृक्षआदि आकारके छेदहोयँ तो शुभ फल होताहै औ रुकलास काक आदि रूपके छेद होयँ तो अशुभ फल होता है २६ ॥

ईषायोगेदारुप्रदक्षिणाग्रंप्रशस्तमाचार्यैः ॥
अपसव्यैकदिगग्रेभवतिभयंभूतसंजनितम् २७ ॥

पर्यंक के दोनों ओर की दो वाही औ दोनों ओरके दोसेरू इनचारों काष्ठों को ईषा कहते हैं। उनदो काष्ठों का जहां योगहोय वह ईषा योग कहाता है। ईषा योग में काष्ठका प्रदक्षिण अग्र होय तो आचार्योंने श्रेष्ठ कहाहै। अर्थात् सिरहनेवाले काष्ठके अग्रकेसाथ दहिनी ओरवाले काष्ठ का मूल मिलावे इसीभांति चारोकाष्ठों को जोड़े तो शुभ होता है। इससे विपरीत क्रमसेकाष्ठोंका योगहोय अथवा शिरःपाद काष्ठोंके अग्रएकही दिशा में होयँ तो उस पर्यंकपर सोनेवाले को भूतकाभय होता है २७ ॥

एकेनाऽवाक्छिरसाभवतिहिपादेनपादवैकल्यम् ॥
द्वाभ्यांनजीर्यतेऽन्नंत्रिचतुर्भिःक्लेशवधबन्धाः २८ ॥

जिस पलंग का एक पाया अधोमुख होय अर्थात् काष्ठ के मूलकी ओर पायेका अग्र बनाया जाय औ काष्ठके अग्रकी ओर पायेका मूलहोय ऐसेपलंग पर सोनेवाले के पैर विकल होजाते हैं। दोपाये जिस पलंगके अधोमुखहोयँ उसपर सोनेवालों को अन्ननहीं पचता। तीन अथवा चारोपाये अधोमुखहोयँ तो क्लेश मृत्यु औ बन्धन होते हैं २८ ॥

सुषिरेऽथवाविवर्णेग्रंथौपादस्यशीर्षगेव्याधिः ॥ पादेकुम्भोयश्च ग्रंथौतस्मिन्नुदररोगः २९ कुम्भाधस्ताज्जंघातत्रकृतोजंघयोःकरोति भयम् ॥ तस्याश्चाधारोऽधःक्षयकृद्द्रव्यस्यतत्रकृतः ३० खुरदेशे योग्रंथिःखुरिणांपीडाकरःसनिर्दिष्टः ॥ ईषाशीर्षण्योश्चत्रिभागसंस्थोभवेन्नशुभः ३१ ॥

पाये का शिर छिद्रयुक्त होय अथवा बुरेरंगकी गांठ उसमें होय तो व्याधि होय पायेके कुम्भमें ग्रंथिहोय तो उदररोग होता है २९ कुम्भके नीचे जंघा होती है पायेकी जंघा में ग्रंथि होय तो सोनेवाले की जंघाओं में रोगहोय। जंघाके नीचे आधार होता है आधारमें ग्रंथिहोय तो धनका नाश होताहै ३०

आधारके नीचे पायेमें खुरहोता है खुरमें ग्रन्थिहोय तो खुरवाले जीव घोडे आदिको पीडा देता है । ईषा (दोनोंओर की बाही) औ शीर्षण्य (सिरहने का सेरू) के तिहाई पर ग्रन्थिहोय तो शुभ नहीं होता ३१ ॥

निष्कुटमथकोलाक्षंसूकरनयनंचवत्सनाभंच ॥
कीलकमन्यद्धुन्धुकमितिकथितश्छिद्रसंक्षेपः ३२ ॥

निष्कुटकोलाक्ष सूकर नयनवत्सनाभ कीलक औ धुंधुक यहछिद्रोंका संक्षेपहम नेकहाहै अर्थात् काष्ठमें इतनी भांतिके छिद्रहोतेहैं अब इनकेलक्षणकहतेहैं३२॥

घटवत्सुषिरंमध्येसंकटमास्येचनिष्कुटंछिद्रम् ॥ निष्पावमाषमात्रं नीलंछिद्रंचकोलाक्षम्३३सूकरनयनंविषमंविवर्णमध्यर्धपर्वदीर्घंच॥ वामावर्तंभिन्नंपर्वमितंवत्सनाभाख्यम् ३४ कीलकसंज्ञंकृष्णंधुन्धुक मितियच्चवेद्धिनिर्भिन्नम् ॥ दारुसवर्णंछिद्रंनतथापापंसमुद्दिष्टम् ३५

जो छिद्र घटकीभांति भीतर से चौडाहोय औ मुख उसका सकडाहोय वह निष्कुट कहाता है । मटर अथवा उडद के तुल्य औ नीलवर्ण छिद्रको कोलाक्षकहतेहैं ३३ विषम विवर्ण औ डेढपर्व लम्बा छिद्र सूकरनयन कहाता है ॥ जो छिद्र बामावर्तहोय भिन्न अर्थात् दूसरीओर पर्यंत रन्ध्रहोय औ एक पर्वलम्बाहोय उसकानाम वत्सनाभ है ३४ कालेरंगके छिद्रको कीलक कहते हैं । जो छिद्र कालेरंगका होय औ भिन्नहोय उसको धुंधुक कहते हैं । अशुभ भी छिद्रहोय परन्तु काष्ठके रंगकाहोय तो बहुत अशुभ नहीं होता ३५ ॥

निष्कुटसंज्ञेद्रव्यक्षयस्तुकोलेक्षणेकुलध्वंसः ॥ शस्त्रभयंसूकरके रोगभयंवत्सनाभाख्ये ३६ कालकधुन्धुकसंज्ञंकीटैर्विद्धंचनशुभदं छिद्रम् ॥ सर्वग्रन्थिप्रचुरंसर्वत्रनशोभनंदारु ३७ ॥

निष्कुट नाम छिद्रहोय तो द्रव्यका क्षय कोलाक्षछिद्रहोय तो कुलकानाश सूकर नयन छिद्रहोय तो शस्त्रभय बत्सनाभ छिद्रहोय तो रोगभय ३६ का-लकछिद्रहोय तो अशुभ औ धुंधुकनाम छिद्रहोय तो अशुभहोता है । कीड़ोंका खाया अर्थात् घुनाहुआ छिद्रभी अशुभहोता है । जिसकाष्ठमें सबगांठही गांठ होय वह किसी बस्तुकेलिये भी शुभनहीं ३७ ॥

एकद्रुमेणधन्यंवृक्षद्वयनिर्मितंचधन्यतरम् ॥ त्रिभिरात्मजवृद्धि करंचतुर्भिरर्थोयशश्चाग्र्यम् ३८ पञ्चवनस्पतिरचितेपंचत्वंयाति तत्रयःशेते ॥ षट्सप्ताऽष्टतरूणांकाष्ठैर्घटितेकुलविनाशः ३९ ॥

इतिश्रीवराहमिहिरकृतौबृहत्संहितायांशय्यासनलक्षणंनामै-
कोनाशीतितमोऽध्यायः ७९ ॥

पूर्वोक्त शुभवृक्षों के काष्ठका बना पर्यंक शुभहोता है दो वृक्षोंके काष्ठ से बना बहुतही शुभ होताहै । तीनवृक्षों के काष्ठसे बना पर्यंक सन्तानकी वृद्धि करता है । चारवृक्षोंके काष्ठकाबना पर्यंक धन औ उत्तमयशकी प्राप्तिकरता है २८ पांचवृक्षों के काष्ठसे बने पर्यंकपर जो सोवै वह मृत्युको प्राप्तहोय । छः सात अथवा आठवृक्षोंके काष्ठोंसे पर्यंक बनवावै तो कुलका नाश होताहै २९॥

श्रीवराहमिहिराचार्यकीबनाईवृहत्संहितामेंशय्यासनलक्षण नामउनासीवांअध्यायसमाप्तहुआ ७९ ॥

अस्सीवांअध्याय ॥

वज्रपरीक्षा ॥

रत्नेनशुभेनशुभंभवतिनृपाणामनिष्टमशुभेन ॥
यस्मादतःपरीक्ष्यंदैवंरत्नाश्रितंतज्ज्ञैः १ ॥

राजाओं को शुभलक्षणवाले रत्नों करके शुभ औ अशुभ लक्षणवाले रत्नों करके अशुभ होताहै । इसलिये रत्न लक्षण जाननेवाले पुरुषों को रत्न के आश्रित दैव (प्राक्तन शुभाशुभकर्म) की परीक्षा करनी चाहिये १ ॥

द्विपहयवनितादीनांस्वगुणविशेषेणरत्नशब्दोऽस्ति ॥
इहतूपलरत्नानामधिकारोवज्रपूर्वाणाम् २ ॥

हाथी घोड़ा स्त्री आदिको भी उनमें उत्तमगुण होनेसे रत्न कहते हैं अर्थात् हाथियों में उत्तम हाथीहोय उसको हस्तिरत्न कहते हैं इसीभांति अश्व रत्न स्त्रीरत्न आदि कहाते हैं परन्तु यहां तो हीराआदि पाषाण रत्नोंका अधिकार है अर्थात् हीरेआदि रत्नों के गुणदोषोंको यहां कहते हैं २ ॥

रत्नानिबलाद्दैत्याद्दधीचतोऽन्येवदन्तिजातानि ॥
केचिद्भुवःस्वभावाद्वैचित्र्यंप्राहुरुपलानाम् ३ ॥

कोई मुनिकहते हैं कि वलनामक दैत्यके शरीरसे रत्न उत्पन्नहुयेहैं । कोई कहते हैं कि दधीचिमुनि के देहसे रत्नउपजे हैं । औ कोई कहते हैं कि भूमिके स्वभावसे पाषाणही विचित्ररूप के होकर रत्नबनगये हैं ३ ॥

वज्रेन्द्रनीलमरकतकर्केतनपद्मरागरुधिराख्याः ॥ वैदूर्यपुलकविमलकराजमणिस्फटिकशशिकान्ताः ४ सौगन्धिकगोमेदकशंखमहानीलपुष्परागाख्याः॥ब्रह्ममणिज्योतीरससस्यकमुक्ताप्रवालानि ५

वज्र (हीरा) इन्द्र नील (नीलम) मरकत (पन्ना) कर्केतन पद्मराग (लाल)रुधिर वैदूर्य पुलक विमलक राजमणि स्फटिक चन्द्रकान्त४सौगं[illegible]

गोमेदक शंख महानील पुष्पराग (पुखराज) ब्रह्ममणि ज्योतीरस सस्यक मोती प्रवाल (मूंगे) ये सब रत्नहैं ५ ॥

वेणातटेविशुद्धंशिरिषकुसुमोपमंचकौशलकम् ॥ सौराष्ट्रकमाताम्रं कृष्णंसौर्पारकंवज्रम् ६ ईषत्ताम्रंहिमवतिमतङ्गजेवल्लपुष्पसंकाशम्॥ आपीतंचकलिंगेश्यामंपौण्ड्रेषुसंभूतम् ७॥

वेणानदी के तटपर शुद्ध अर्थात् श्वेतरंगका हीरा होताहै । कोशलदेशमें सिरस के पुष्पकेसमान हरेरंगका हीरा उत्पन्न होताहै। सुराष्ट्र देशका हीरा आताम्र (थोड़ालाल) रंग होताहै। सूर्पारक देशमें उपजाहुआहीरा कृष्णवर्ण होताहै ६ हिमवान् पर्वतका हीरा थोड़ासालाल होताहै। मातंग देशकाहीरा वल्लपुष्प के समान थोड़ासा पांडुर रंग होताहै। कलिंग देशका हीरा पीलेरंग का होताहै। औ पौंड्र देशमें उत्पन्न हुआ हीरा श्याम वर्ण होताहै ७॥

ऐंद्रंषडश्रिशुक्लंयाम्यंसर्पास्येरूपमासितंच ॥ कदलीकाण्डनिकाशंवैष्णवमितिसर्वसंस्थानम् ८ वारुणमबलागुह्योपमंभवेत्कर्णिकारपुष्पनिभम्॥ शृङ्गाटकसंस्थानंव्याघ्राक्षिनिभंचहौतभुजम् ९ वायव्यंचयवोपममशोककुसुमप्रभंसमुद्दिष्टम् ॥ स्रोतःखनिःप्रकीर्णकमित्याकरसंभवस्त्रिविधः १० ॥

जो हीरा षट्कोण औ श्वेतवर्ण होय वह ऐंद्रहोताहै अर्थात् उसका इन्द्र देवता होताहै। सर्पके मुखके आकार औ कृष्णवर्ण हीरेका देवता यमहै। कदली (केला) के कांडके रंग अर्थात् नीले औ पीले रंगका मिलाहुआ चाहे जिस आकारका होय वह वैष्णव हीराहोता है ८ स्त्रीके भगकेआकार औ कर्णिकार पुष्पके समान पीतरंग हीरा वारुणहै। व्याघ्रके नेत्रके समान रंग औ सिंगाड़ेके आकारका हीरा आग्नेयहै ९ जौके आकार औ अशोक पुष्प के समान रक्तवर्ण हीरा वायव्य होताहै। हीरोंकी उत्पत्ति के आकार तीनहैं एक तो नदी आदिके प्रवाह खान औ प्रकीर्णक अर्थात् किसी२ भूमिके ऊपर विखरे हुये इन तीन स्थानों में हीरे मिलते हैं १० ॥

रक्तंपीतंचशुभंराजन्यानांसितंद्विजातीनाम् ॥
शैरीषंवैश्यानांशूद्राणांशस्यतेऽसिनिभम् ११ ॥

रक्तवर्ण औ पीतवर्ण का हीरा क्षत्रियोंको श्वेतवर्ण का ब्राह्मणोंको सिरस के पुष्पकेसमान हरेरंगका वैश्योंको औ खड्गके समान नीलवर्ण हीरा शूद्रों को शुभ होता है ११ ॥

सितसर्षपाष्टकंतंडुलोभवेत्तण्डुलैस्तुविंशत्या॥तुलितस्यद्वेलक्षेमूल्य

द्विकृतानितेचैतत् १२ पादत्र्यंशार्धोनंत्रिभागपंचांशषोडशांशाश्च॥ भागश्चपंचविंशःशतिकःसाहस्त्रिकश्चेति १३ ॥

आठ श्वेत सरसों के दानेकेतुल्य एक चावल होताहै। बीसचावलकेतुल्य जोहीरा तोलमें होय उसकामूल्य दोलाख कार्पापण (रुपया) होताहै। जोहीरा अठारह चावलभरहोय उसका मूल्य पादोन दोलक्षकार्पापणहोताहै जो हीरा सोलह चावलभर होय उसकामूल्य तृतीयांशोन दोलक्ष होताहै। चौदह चावलभर हीरेकामूल्य अर्धोन दोलक्ष बारह चावलभर हीरेकामूल्य दो लक्ष का तृतीयांश दशचावलभर हीरेका मूल्य दो लक्षका पंचमांश आठचावलभर हीरेकामूल्य दो लक्षका षोडशांश छःचावलभर हीरेकामूल्य दो लक्षका पचीसवां भाग चारचावलभर हीरेकामूल्य दो लक्षका शतांश औ दो चावलभर हीरेकामूल्य दोलक्ष कार्पापण का सहस्रांश होताहै बीचमें त्रैराशिक करके अपनी बुद्धिसे मूल्यजाने १२। १३ ॥

सर्वद्रव्याभेद्यंलघ्वऽम्भसितरतिरश्मिवत्स्निग्धम्॥
तडिदनलशक्रचापोपमंचवज्रंहितायोक्तम् १४ ॥

जो हीरा किसी वस्तुसे न टूटै हलकाहोय जल के ऊपरतैरै किरणों करके युक्तहोय स्निग्धहोय बिजली अग्नि अथवा इंद्रधनुष के समान होय वह शुभ होताहै १४ ॥

काकपदमक्षिकाकेशधातुयुक्तानिशर्कराविद्धम्॥
द्विगुणाश्रिदग्धकलुषत्रस्तविशीर्णानिनशुभानि १५ ॥

काकपद मक्षिका औ केशके आकारके चिह्न जिन हीरोंमें होयँ मृत्तिका आदि धातु जिनमें होयँ शर्करा (कंकर) करके जो विद्धहोयँ पहिले कहीहुई अश्रियों (पहल)से दूनी अश्रि जिनकीहोयँ अग्निसे जलेहोयँ कलुषहोयँ त्रस्त (कांतिहीन) होयँ औ जो हीरे जर्जरहोयँ वे शुभ नहींहोते १५ ॥

यानिचबुद्बुददलिताग्रचिपिटवासीफलप्रदीर्घाणि॥
सर्वेषांचैतेषांमूल्याद्भागोऽष्टमोहानिः १६ ॥

जो हीरेजलके बुद्बुद (बुलबुला) के आकारहोयँ आगेसे फटेहोयँ चपटेहोयँ अथवा वासीफल की भांति लम्बेहोयँ उनका पूर्वोक्तरीति से जो मूल्य ठहरे उसमें उसका अष्टमांश घटानेसे उनका ठीक२ मूल्य होताहै १६ ॥

वज्रंनकिंचिदपिधारयितव्यमेके पुत्रार्थिनीभिरबलाभिरुशन्तितज्ज्ञाः ॥ शृङ्गाटकत्रिपुटधान्यकवत्स्थितंयच्छ्रोणीनिभंचशुभदन्तनयार्थिनीनाम् १७ ॥

कोई आचार्य हीरेके लक्षण जाननेवाले कहते हैं कि पुत्रकी इच्छा वाली स्त्रियों को हीरा नहीं धारण करना चाहिये चाहे जैसा होय । शृंगाटक के आकार जो हीरा होय त्रिपुट होय धान्यक के आकार से स्थित होय औ श्रोणी के आकार का जो हीरा होय वह पुत्र की इच्छावाली स्त्रियोंके लिये शुभ होता है १७॥

स्वजनविभवजीवितक्षयंजनयतिवज्रमनिष्टलक्षणम् ॥
असनविषभयारिनाशनंशुभमूरुभोगकरंचभूभृताम् १८ ॥

इतिश्रीवराहमिहिरकृतौबृहत्संहितायांवज्रपरीक्षानामा-
ऽशीतितमोऽध्यायः ८० ॥

अशुभ लक्षणोंवाला हीरा धारण करनेवाले पुरुष के वन्धु ऐश्वर्य औ आयुष्काक्षय करता है। औ शुभहीरा राजाओंको बिजली के भय विष के भय औ शत्रुभयको निवृत्त करताहै। औ बहुतसा भोग देता है ॥ १८ ॥

श्रीबराहमिहिराचार्यकीबनाईबृहत्संहितामेंवज्रपरीक्षा
नामअस्सीवांअध्यायसमाप्तहुआ ८० ॥

इक्यासीवांअध्याय ॥

मुक्तालक्षण ॥

द्विपभुजगशुक्तिशङ्खाऽभ्रवेणुतिमिसूकरप्रसूतानि ॥
मुक्ताफलानितेषांवहुसाधुचशुक्तिजंभवति १ ॥

हाथी सर्प सीप शंख बद्दल बांस मच्छी औ सूकर इन सबसेमोती उत्पन्न होते हैं परंतु इन सबमें सीपके मोती बहुत होते हैं औ अच्छे होते हैं १ ॥

सिंहलकपारलौकिकसौराष्ट्रकताम्रपर्णिपारशवाः ॥
कौवेरपाण्ड्यवाटकहैमाइत्याकराह्यष्टौ २ ॥

सिंहलद्वीप पारलौकिक देश सौराष्ट्र देशताम्रपर्णीनदी पारशवदेश कौवेर देश पांड्यवाटक देश औ हिमवान्पर्वत ये आठ स्थान मोती उत्पन्न होने के आकर हैं २ ॥

बहुसंस्थानाःस्निग्धाहंसाभाःसिंहलाकराःस्थूलाः ॥ ईषत्ताम्राः श्वेतास्तमोवियुक्ताश्चताम्राख्याः ३ कृष्णाःश्वेताःपीताःसशर्कराः पारलौकिकाविषमाः॥ नस्थूलानात्यल्पानवनीतनिभाश्चसौराष्ट्राः ४ ज्योतिष्मन्तःशुभ्रागुरवोऽतिमहागुणाश्चपारशवाः॥ लघुजर्जरंदधिनिभंबृहद्विसंस्थानमपिहैमम् ५ विषमंकृष्णंश्वेतंलघुकौवेरंप्रमाणतेजोवत् ॥ निम्बफलत्रिपुटधान्यकचूर्णाःस्युःपाण्ड्यवाटभवाः ६ ॥

सिंहलद्वीप में उत्पन्न हुये मोती बहुत आकार के होतेहैं औ स्निग्ध हंसके समान शुक्लवर्ण औ स्थूल होतेहैं। ताम्रपर्णीनदीके मोतीथोडेसेताम्र वर्णश्वेत औ निर्मल होते हैं ३ पारलौकिक देशके मोती कृष्ण श्वेत पीत शर्करा करके युक्त औ विषम होते हैं। सौराष्ट्रदेशके मोती न मोटे न बहुत छोटे औ नवनीत (मक्खन) केतुल्य श्वेतवर्ण होते हैं ४ पारशव देश केमोती तेजकरके युक्त श्वेतवर्ण भारे औ बडेगुणों करकेयुक्तहोते हैं। हिमवान् पर्वतका मोतीहलका जर्जर दहीके रंग बडा औ दोआकारका होताहै ५ कौबेर देशका मोती विषम कृष्णवर्ण श्वेत हलका प्रमाण औ तेज करके युक्तहोताहै। पांड्यवाट देशमें उत्पन्न हुयेमोती निम्बफलके आकार तीनपुटों करकेयुक्त धान्यफल (धनियां) के समान औचूर्ण (बूका) होते हैं ६ ॥

अतसीकुसुमश्यामंवैष्णवमैन्द्रंशशाङ्कसंकाशम् ॥ हरितालनिभंवारुणमसितंयमदैवतंभवति ७ परिणतदाडिमगुलिकागुंजाताम्रंचवायुदैवत्यम् ॥ निर्धूमानलकमलप्रभंचविज्ञेयमाग्नेयम् ८ ॥

अलसी के पुष्पके समान श्यामरंगके मोती का देवता विष्णुहै। चंद्रके आकार का मोती इंद्र देवताका होताहै। हरितालके रंगका मोती वरुणका होताहै। कालेरंगकामोती यमराजकाहै ७ पकेहुये अनारके बीजके तुल्य अथवा गुंजा (रत्ती) के समान ताम्रवर्ण मोती का देवता वायुहै। निर्धूम अग्नि अथवा कमल पुष्पके समान जिसकी प्रभाहोय उस मोतीका देवता अग्नि होताहै ८ ॥

माषकचतुष्टयधृतस्यैकस्यशताहतात्रिपंचाशत् ॥ कार्षापणानिगदितामूल्यंतेजोगुणयुतस्य ९ माषकदलहान्याऽतोद्वात्रिंशद्विंशतिस्त्रयोदशच ॥ अष्टौशतानिचशतत्रयंत्रिपंचाशतासहितम् १० पंचत्रिंशंशतमितिचत्वारःकृष्णलानवतिमूल्याः ॥ सार्धास्तिस्रोगुंजाःसप्ततिमूल्यंधृतरूपम् ११ गुंजात्रयस्यमूल्यंपंचाशद्रूपकागुणयुतस्य ॥ रूपकपंचत्रिंशत्त्रयस्यगुंजार्धहीनस्य १२ ॥

जो मोती तोलमें चारमासे होय औ तेज औ गुणोंकरके युक्तहोय उसका मूल्य पांचहजार तीनसौ कार्षापण (रुपया) होताहै ९ साढे तीनमासेहोय तो बत्तीससौ रुपया तीनमासे मोतीहोय तो बीससौरुपया अढाईमासेकामोती होय तो तेरहसौ रुपया दोमासे मोती होय तो आठ सौ रुपया डेढ माले के मोतीका मूल्य तीनसौ तरेपनरुपया १० एकमासेके मोतीका मूल्य एकसौ पैंतीस रुपये चाररत्तीके मोतीका मूल्य नब्बे रुपये होतेहैं। जिस मोती का

तोल साढ़े तीनरत्ती ठहराहोय वह सत्तर रुपये का होता है ११ तीनरत्ती का तोल मोतीहोय औ गुणयुक्तहोय तो पचास रुपयेका होताहै। औ अढ़ाई रत्तीका मोती पैंतीस रुपयेका होताहै। परन्तु तेज औ गुणों करके युक्त मोती होयँ तब यह मूल्य होताहै नहीं तो मूल्य घट जाताहै १२ ॥

पलदशभागोधरणंतद्यदिमुक्तास्त्रयोदशसुरूपाः ॥ त्रिशतीसपञ्चविंशारूपकसंख्याकृतंमूल्यम् १३ षोडशकस्यद्विशतीविंशतिरूपस्यसप्ततिःसशता ॥ यत्पञ्चविंशतिधृतंतस्यशतंत्रिंशतासहितम् १४ त्रिंशत्सप्ततिमूल्याचत्वारिंशच्छतार्धमूल्याच ॥ षष्टिःपंचोनावाधरणंपंचाष्टकंमूल्यम् १५ मुक्ताशीत्यास्त्रिशच्छतस्यसापंचरूपकविहीना ॥ द्वित्रिचतुःपंचशताद्वादशषड्पंचकत्रितयम् १६ ॥

पांच रत्तीका मासा सोलहमासे का कर्ष औ चार कर्ष का एक पल होता है। पलका दशवां भाग एक धरण कहाता है। जो अच्छे (आबदार) तेरह मोती एक धरण तोलमें होयँ तो उनका मूल्य तीनसौ पचीस रुपये होताहै १३ सोलह मोती एक धरण में चढ़ें तो उनका मूल्य दोसौ रुपये होताहै। बीस मोती एक धरणभर होयँ तो एकसौ सत्तर रुपयेके होते हैं। पचीस मोती एक धरणभर तोलमें होयँ तो एकसौ तीस रुपयेके होतेहैं १४ तीसमोती एक धरण पर चढ़ें तो सत्तर रुपयेके होतेहैं। चालीस मोती एक धरण भर होयँ तो पचासरुपयेके होते हैं। पचपन मोती एक धरण होयँ तो चालीस रुपये के होतेहैं १५ अस्सी मोती एक धरणभर होयँ तो तीसरुपयेके होतेहैं। सौमोती एक धरण होयँ तो पचीस रुपये के होते हैं। दोसौ मोती एक धरण होयँ तो बारह रुपये उनका मूल्य होताहै। तीन सौ मोती एक धरण होयँ तो छः रुपये उनका मूल्य होताहै। चारसौ मोती एक धरण होयँ तो पांच रुपये के होतेहैं। औ पांचसौ मोती एक धरण तोल में चढ़ें तो वे सब मोती तीन रुपये के होतेहैं १६ ॥

पिक्कापिच्चार्घार्धारवकःसिक्थंत्रयोदशाद्यानाम् ॥
संज्ञाःपरतोनिगराश्चूर्णाश्चाशीतिपूर्वाणाम् १७ ॥

जो तेरह मोती एक धरणमें चढ़ते हैं उनकी पिक्का संज्ञाहै सोलह मोती एक धरणमें चढ़ें उनको पिच्चा कहते हैं। बीस मोती चढ़ें उनको अर्घ पचीस मोती चढ़ें उनको अर्ध तीस चढ़ें उनको रवक चालीस मोती एक धरण पर चढ़ें उनको सिक्थ औ पचपन मोती एक धरण में चढ़ें उनको निगर कहतेहैं इससे आगे अस्सी आदि मोती एक धरणमें चढ़ें तो उनको चूर्ण कहते हैं।

इनकोही लोकमें बूकामोती कहते हैं। ये संज्ञामोतियों के आकरमें व्यवहार के लिये काम आती हैं १७॥

एतद्गुणयुक्तानांधरणधृतानांप्रकीर्तितंमूल्यम्॥ परिकल्प्यमन्तरालेहीनगुणानांक्षयःकार्यः १८ कृष्णश्वेतकपीतकताम्राणामीषदपिचविषमाणाम्॥ त्र्यंशोनंविषमकपीतयोश्चषड्भागदलहीनम्१९॥

यह धरण भर उत्तमगुणयुक्त मोतियों का मूल्य कहा बीचमें त्रैराशिक से मूल्य की कल्पना करै जैसा तेरह मोती एक धरण होयँ तो तीन सौ पचास रुपयेके औ सोलह मोती एक धरण होयँ तो दोसौ रुपये के इनके बीच चोदह मोती अथवा पन्द्रह मोती एक धरणमें चढ़ैं तो त्रैराशिकसे उनका मूल्य जानै ऐसेही आगे भी त्रैराशिकसे मूल्य जानना चाहिये परन्तु गुणहीन मोतियों का मूल्य घटाना चाहिये १८ जो मोती थोडे से भी काले श्वेत पीत अथवा ताम्रवर्ण होयँ अथवा विषम होयँ उनका मूल्य जो पूर्वोक्त रीतिसे आवे उसका तृतीयांश घटाकर ठीक २ मूल्य होताहै। रंग अच्छा होय औ विषम होयँ तो षष्ठांश हीन मूल्य होताहै औ बहुत पीले मोती का मूल्य आधा रहजाताहै १९॥

ऐरावतकुलजानांपुष्यश्रवणेन्दुसूर्यदिवसेषु॥ येचोत्तरायणभवाग्रहणेर्केन्दोश्चभद्रेभाः २० तेषांकिलजायन्तेमुक्ताःकुम्भेषुसरदकोशेषु॥ बहवोबृहत्प्रमाणाबहुसंस्थानाःप्रभायुक्ताः २१ नैषामर्घःकार्योनचवेधोऽतीवतेप्रभायुक्ताः॥ सुतविजयारोग्यकरामहापवित्राधृताराज्ञाम् २२॥

ऐरावत हस्तीके वंशमें जो हाथी उत्पन्नहुये हैं औ भद्रजातिके हाथी पुष्य औ श्रवण नक्षत्र में सोमवार अथवा रविवार को उत्तरायण में सूर्य चन्द्रके ग्रहणकालमें उत्पन्न होयँ २० उनके कुम्भोंमें औ दन्त कोशोंमें बहुतसे बडे २ अनेक आकारके औ प्रभायुक्त मोती निकलते हैं २१ येमोती बहुत प्रभायुक्त होतेहैं इसलिये इनका मोल न आंकै औ इनमें छिद्रभी न करै। येमोती महा पवित्रहोतेहैं इनकाधारण जो राजाकरै उसको पुत्रविजय औ आरोग्यदेतेहैं२२॥

दंष्ट्रामूलेशशिकान्तिसप्रभंबहुगुणंचवाराहम्॥
तिमिजंमत्स्याक्षिनिभंबृहत्पवित्रंबहुगुणंच २३॥

सूकरोंकी दाढ़के मूलमें चन्द्रकी कान्ति के समान कान्तिवाला औ बहुत गुणोंकरकेयुक्त मोती निकलताहै। औ मच्छीका मोती मच्छीके नेत्रके समान होताहै औ वह मोती बड़ा पवित्र औ बहुत गुणोंकरके युक्त होताहै २३॥

वर्षोपलवज्जातंवायुस्कन्धाच्चसप्तमाद्भ्रष्टम्॥
ह्रियतेकिलखाद्दिव्यैस्तडित्प्रभंमेघसंभूतम् २४॥

मेघमें ओलेकी भांति मोती उत्पन्न होताहै। वह सातवें वायु स्कन्द से गिरताहै परन्तु उसको देवता आकाशसेही हर ले जाते हैं। वह मेघ सम्भूत मोती बिजली की भांति चमकीला होताहै २४॥

तक्षकवासुकिकुलजाःकामगमायेचपन्नगास्तेषाम्॥ स्निग्धानीलद्युतयोभवन्तिमुक्ताःफणस्यान्ते २५ शस्तेऽवनिप्रदेशेरजतमयेभाजनेस्थितेचयदि॥ वर्षतिदेवोऽकस्मात्तज्ज्ञेयंनागसंभूतम् २६ अपहरतिविषमलक्ष्मींक्षपयतिशत्रून्यशोविकाशयति॥ भौजङ्गंनृपतीनां धृतमकृतार्घंविजयदंच २७॥

जो तक्षक नाग औ वासुकि नाग के कुल में उत्पन्न स्वेच्छाचारी सर्प हैं उनके फणके अग्रभाग में स्निग्ध औ नीलकांतिवाली मोती होतीहैं २५ उस मोती की यह परीक्षा है कि प्रशस्त भूमिमें चांदीके पात्र के बीच उस मोती के रखनेसे अकस्मात् वर्षा होनेलगे तो जानै कि यह सर्प का मोती है २६ राजा उस मोतीको बिना मूल्य किये धारण करै वह सर्प का मोती विष औ अलक्ष्मी को हरता है शत्रुओं का क्षय करता है यशका विस्तार करता है औ विजय देता है २७॥

कर्पूरस्फटिकनिभंचिपिटंविषमंचवेणुजंज्ञेयम्॥
शङ्खोद्भवंशशिनिभंवृत्तंभ्राजिष्णुरुचिरंच २८॥

कर्पूर अथवा स्फटिक के समान श्वेत चपटा औ विषम मोती बांसमें उत्पन्न हुआ जानै। औ शंख से उपजा मोती चांद की भांति कांतियुक्त गोल चमकीला औ सुन्दर होता है २८॥

शङ्खतिमिवेणुवारणवराहभुजगाभ्रजान्यऽवेध्यानि॥
अमितगुणत्वाच्चैषामर्घःशास्त्रेणनिर्दिष्टः २९॥

शंख मत्स्य वेणु हस्ती सूकर सर्प औ मेघ से उत्पन्न हुये मोतियोंमें छिद्र नहीं करना चाहिये। इन सबके गुण बहुत हैं इसलिये शास्त्र में इनका मूल्य नहीं कहाहै २९॥

एतानिसर्वाणिमहागुणानिसुतार्थसौभाग्ययशस्कराणि॥
रुक्छोकहन्तॄणिचपार्थिवानांमुक्ताफलानीप्सितकामदानि ३०॥

शंख आदि से उत्पन्न हुये ये सब मोती बहुत गुणों करके युक्त होतेहैं पुत्र

पत्र सौभाग्य औ यश देते हैं। रोग औ शोक का नाश करते हैं औ राजाओं को मनोवांछित फल देते हैं ३० ॥

सुरभूषणंलतानांसहस्रमष्टोत्तरंचतुर्हस्तम्॥ इन्द्रच्छन्दोनाम्ना विजयच्छन्दस्तदर्धेन ३१ शतमष्टयुतंहारोदेवच्छन्दोह्यशीतिरेकयुता॥ अष्टाष्टकोऽर्धहारोरश्मिकलापश्चनवषट्कः ३२ द्वात्रिंशतातुगुच्छोविंशत्याकीर्तितोऽर्धगुच्छाख्यः॥ षोडशभिर्माणवकोद्वादशभिश्चार्धमाणवकः ३३ मन्दरसंज्ञोऽष्टाभिःपंचलताहारफलकमित्युक्तम्॥ सप्तविंशतिमुक्ताहस्तोनक्षत्रमालेति ३४ अन्तरमणिसंयुक्तामणिसोपानंसुवर्णगुलिकैर्वा॥ तरलकमणिमध्यंतद्विज्ञेयंचाटुकारमिति ३५ एकावलीनामयथेष्टसंख्याहस्तप्रमाणामणिविप्रयुक्ता॥ संयोजितायामणिनातुमध्येयष्टीतिसाभूषणविद्भिरुक्ता ३६॥

इतिश्रीवराहमिहिरकृतौबृहत्संहितायांमुक्ताफलपरीक्षानामैकाशीतितमोऽध्यायः॥ ८१॥

चार हाथ लम्बा औ एकहजार आठलड़ीका मोतियोंका हार देवताओंका भूषण बनता है उसका नाम इन्द्रच्छन्द है उसका आधा अर्थात् दोहाथ लंबा पांचसौ चारलड़ीका विजयच्छन्द कहाता है ३१ एकसौ आठ लड़ीका औ दो हाथ लंबा हार कहाता है। इक्यासी लड़ीका औ दो हाथ लम्बा देवच्छन्द कहाता है। चौंसठ लड़ीका अर्धहार चौवन लड़ीका रश्मिकलाप ३२ बत्तीस लड़ीका गुच्छ बीस लड़ीका अर्धगुच्छ सोलह लड़ीका माणवक बारहलड़ीका अर्धमाणवक ३३ आठ लड़ीका मन्दर औ पांच लड़ीका हारफलक कहाताहै ये सब दो २ हाथ लम्बे होते हैं। एकहाथ लम्बी सत्ताइस मोतियों की नक्षत्र माला कहातीहै ३४ उसी एकलड़ीके बीच २ मोतियोंके साथ औ मणि अथवा सुवर्णके दाने पिरोयेजायँ तो उसको मणि सोपान कहते हैं। वही तरल मणि करके मध्यभाग में युक्तहोय तो चाटुकारक होताहै ३५ हारके बीचमें जो बड़ामणिहोय उसको तरलक कहते हैं। एकहाथ लम्बी चाहे जितनी लड़ी होय औ उसमें मध्यमणि न होय उसका नाम एकावली है। औ जो उसके मध्य में मणिहोय तो उसको भूषण लक्षण जाननेवाले यष्टि कहतेहैं ३६॥

श्रीवराहमिहिराचार्यकीबनाईबृहत्संहितामेंमुक्तालक्षण नामइक्यासीवांअध्यायसमाप्तहुआ॥ ८१॥

बयासीवांअध्याय ॥

पद्मरागलक्षण ॥

सौगन्धिककुरुविन्दस्फटिकेभ्यःपद्मरागसंभूतिः॥ सौगन्धिकजाभ्रमरांजनाब्भ्रजम्बूरसद्युतयः १ कुरुविन्दभवाःशबलामन्दद्युतयश्चधातुभिर्विद्धाः॥ स्फटिकभवाद्युतिमन्तोनानावर्णाविशुद्धाश्च २॥

सौगंधिक कुरु विंदक औ स्फटिक इन तीनप्रकारके पाषाणों से पद्मराग (लाल) की उत्पत्ति होती है। सौगंधिक से उत्पन्न हुआ पद्मराग भ्रमर अंजन मेघ अथवा जम्बूफल (जामुन) के रसके समान कांतिवाले होते हैं १ कुरुविंदसे उत्पन्न हुये पद्मराग शबल अर्थात् शुक्ल कृष्ण आदि अनेक रंग मिले हुये मन्दकांति औ मृत्तिकाआदि धातुओंकरके विद्ध (दागी) होतेहैं। स्फटिक से उत्पन्न हुये पद्मराग कांतियुक्त अनेक रंगके औ निर्मल होते हैं २॥

स्निग्धःप्रभानुलेपीस्वच्छोऽर्चिष्मान्गुरुःसुसंस्थानः॥
अन्तःप्रभोतिऽरागोमणिरत्नगुणाःसमस्तानाम् ३॥

स्निग्ध अपनी प्रभाकरके लीपताहुआ निर्मल दीप्तियुक्त भारी सुन्दर आकारका भीतर कांति करकेयुक्त औ बहुत रंगवाला ये सब पद्मरागमणि और रत्नों के गुण हैं अर्थात् ये गुण जिनमें होयँ वे उत्तमहोते हैं ३॥

कलुषामन्दद्युतयोलेखाकीर्णाःसधातवःखण्डाः॥
दुर्विद्धानमनोज्ञाःसशर्कराश्चेतिमणिदोषाः ४॥

अनिर्मल मन्दकांति रेखाओं करकेव्याप्त मृत्तिकाआदि धातुओंकरके युक्त फूटेहुये दुर्विद्ध अर्थात् अच्छीरीति से नहीं विंधेहुये चित्तको नहीं आह्लाद देनेवाले औ शर्करा (कंकर) करकेयुक्त ये सब मणिदोष हैं। अर्थात् जिन मणियों में ये दोषहोयँ वे अच्छे नहीं होते ४॥

भ्रमरशिखिकण्ठवर्णोदीपशिखासप्रभोभुजङ्गानाम्॥
भवतिमणिःकिलमूर्धनियोऽनर्घेयःसविज्ञेयः ५॥

सर्पों के मस्तकपर भ्रमर अथवा मयूरकेकण्ठकेरंगका औ दीपकी शिखाके तुल्य कांतियुक्त जो मणिहोता है वह अमूल्य जानना चाहिये ५॥

यस्तंबिभर्तिमनुजाधिपतिर्नतस्यदोषाभवन्तिविषरोगकृताःकदाचित्॥ राष्ट्रेचनित्यमभिवर्षतितस्यदेवःशत्रूंश्चनाशयतितस्यमणेःप्रभावात् ६॥

जो राजा उससर्प मणिको धारणकरै उसकोविष औ रोगकेकिये दोष कभी

नहीं होते। नित्य उस राजाके राज्यमें देववर्षता है। औ उस मणिके प्रभाव से वह राजा अपने शत्रुओं का भी नाशकरता है ६ ॥

षड्विंशतिःसहस्राण्येकस्यमणेःपलप्रमाणस्य ॥ कर्षत्रयस्यविंशतिरुपदिष्टःपद्मरागस्य ७ अर्धपलस्यद्वादशकर्षस्यैकस्यषट्सहस्राणि ॥ यश्चाष्टमाषकधृतंतस्यसहस्रत्रयंमूल्यम् ८ माषकचतुष्टयंदशशतत्रयंद्वौतुपञ्चशतमूल्यौ ॥ परिकल्प्यमन्तरालेमूल्यंहीनाधिकगुणानाम् ९ वर्णन्यूनस्यार्धंतेजोहीनस्यमूल्यमष्टांशः॥ अल्पगुणोबहुदोषोमूल्यात्प्राप्नोतिविंशांशम् १० आधूम्रंव्रणबहुलंस्वल्पगुणंचाप्नुयाद्द्विशतभागम् ॥ इतिपद्मरागमूल्यंपूर्वाचार्यैःसमुद्दिष्टम् ११ ॥

इतिश्रीवराहमिहिरकृतौबृहत्संहितायांपद्मरागलक्षणं नामद्व्यशीतितमोऽध्यायः ८२ ॥

जो पद्मराग एकपल अर्थात् चारकर्ष तोलमेंहोय उसकामूल्य छब्बीसहजार रुपये होता हैं। तीनकर्ष तोलमें पद्मराग होय तो बीसहजार रुपया उसका मूल्यकहाहै ७ दो कर्षका पद्मराग बारह हजार रुपयेका औ एककर्षका पद्मराग छःहजार रुपयेका होताहै। जो पद्मराग आठमासे अर्थात् आधाकर्षहोय उसका मूल्य तीनहजार रुपये होताहै ८ चारमासे का पद्मराग एकहजार रुपयेका औ दो मासेका पद्मराग पांचसौ रुपयेका होताहै। इस के बीच में त्रैराशिकसे मूल्य कल्पना करना चाहिये। औ हीनगुण औ अधिक गुणके मूल्यकीभी हानि औ वृद्धि करनी चाहिये ९ जो पद्मराग रंगमें न्यूनहोय उसका मूल्य आधाहोजाताहै औ जो तेजकरके हीनहोय उसका मूल्य अष्टमांश रहजाता हैं। जिस पद्मराग में गुण थोड़ेहोयँ औ दोष बहुत होयँ उसका मूल्य बीसवांहिस्सा रहजाता है १० थोड़ासा धूम्रवर्ण जो पद्मरागहोय जिस में बहुतसे व्रणहोयँ औ थोड़ेगुण होयँ वह अपने मूल्यका दोसौवां भाग मूल्य पाता है। इसभांति पद्मराग का मूल्य पूर्वाचार्योंने कहाहै ११ ॥

श्रीवराहमिहिराचार्यकीबनाईबृहत्संहितामेंपद्मरागलक्षण नामबयासीवांअध्यायसमाप्तहुआ ८२ ॥

तिरासीवां अध्याय ॥

मरकत लक्षण ॥

शुकवंशपत्रकदलीशिरीषकुसुमप्रभंगुणोपेतम् ॥
सुरपितृकार्येमरकतमतीवशुभदंनृणांविधृतम् १

श्रीवराहमिहिरकृतौबृहत्संहितायांमरकतलक्षणंनामत्र्यशीतितमोऽध्यायः ८३ ॥

शुकपक्षी (तोता) वांसकापत्ता कदली (केला) अथवा सिरसका पुष्प इनके समान जिसकी हरी प्रभाहोय औ गुणोंकरके युक्तहोय उसमरकत (पन्ना) को मनुष्य देवकार्य औ पितृकार्यमें धारणकरै तो वह बहुतही शुभफल करताहै १॥

श्रीवराहमिहिराचार्यकीबनाईबृहत्संहितामेंमरकतलक्षण नामतिरासीवांअध्यायसमाप्तहुआ ८३ ॥

चौरासीवां अध्याय ॥

दीपलक्षण ॥

वामावर्तोमलिनकिरणःसस्फुलिङ्गोऽल्पमूर्तिः क्षिप्रंनाशंव्रजतिविमलस्नेहवर्त्यन्वितोऽपि ॥ दीपःपापंकथयतिफलंशब्दवान्वेपनश्च व्याकीर्णार्चिर्विशलभमरुद्यश्चनाशंप्रयाति १ ॥

जो दीप वामावर्त होय अर्थात् उसकी शिखाबाईं ओर घूमतीहोय मलिन किरणोंकरके युक्तहोय स्फुलिंग (अग्निकण) उससे झड़तेहोयं छोटी मूर्तिका होय अर्थात् लंबीशिखा जिसकी न उठै। निर्मल तेल औवत्तीसे युक्तभीहो परंतु जल्दी बुझजाय वहदीप अशुभफलको सूचनकरताहै औ जो दीप शब्द युक्तहोयं कांपतेहोयं किरण जिसके बिखररहेहोयं औ पतंग कीट के गिरने बिना औपवनके विनाही बुझजाय वहभी अशुभफल सूचनकरताहै १ ॥

दीपःसंहतमूर्तिरायततनुर्निर्वेपनोदीप्तिमान्निःशब्दोरुचिरःप्रदक्षिणगतिर्वैदूर्यहेमद्युतिः॥ लक्ष्मींक्षिप्रमभिव्यनक्तिसुचिरंयश्चोद्यतं दीप्यतेशेषंलक्षणमग्निलक्षणसमंयोज्यंयथायुक्तितः २ ॥

श्रीवराहमिहिरकृतौबृहत्संहितायांदीपलक्षणंनामचतुरशीतितमोऽध्यायः८४॥

जो दीप संहत मूर्तिहोय अर्थात् जिसकी शिखाफटै नहीं दीर्घ मूर्तिहोय अर्थात् लंबी शिखाकरके युक्तहोय कांपता न होय दीप्तिमान् होय शब्द न करै बहुत प्रकाश करै दक्षिणावर्त होय वैडूर्यमणि अथवा सुवर्णके समान जिस की द्युतिहोय औ जो दीपक बहुतकालतक अति तेज करके दीप्त रहै वहदीपक शीघ्रही लक्ष्मी को प्रकाशकरता है। और जो दीपका लक्षण विशेषकरके यहां नहीं कहा वह सबपूर्वोक्त अग्निलक्षणके समान यथासंभवदीपकमें भी विचारना चाहिये २ ॥

श्रीवराहमिहिराचार्यकीबनाईबृहत्संहितामेंदीपलक्षण नामचौरासीवांअध्यायसमाप्तहुआ ८४ ॥

पचासीवांअध्याय ॥

दंतकाष्ठलक्षण ॥

वल्लीलतागुल्मतरुप्रभेदैःस्युर्दन्तकाष्ठानिसहस्रशोयैः ॥

फलानिवाच्यान्यथतिंतत्प्रसङ्गोमाभूदतोवच्म्यथकाम्रिकानि १॥
वल्लीलता गुल्म औ वृक्षइनके भेद करके हजारों प्रकारके दंतकाष्ठ (दातोन) होते हैं । उनकरके फलकहने चाहिये परन्तु वहुत विस्तार न होव इसलिये अभीष्ट फलको देनेवाले दंतकाष्ठ कहते हैं १ ॥

अज्ञातपूर्वाणिनदन्तकाष्ठान्यद्यान्नपत्रैश्चसमन्वितानि ॥
नयुग्मपर्वाणिनपाटितानिनचोर्ध्वशुष्काणिविनात्वचावा २ ॥
जिन दंतकाष्ठोंको पहिले न जानते होयँ उनको भक्षण न करे । पत्तोंकर केयुक्त दंतकाष्ठ न भक्षण करे । युग्म (दोआदिसम) पर्वयुक्त दंतकाष्ठ भक्षण न करे फटेहुये वृक्षके ऊपरही सूखेहुये औ त्वचाकरके हीन जो दंतकाष्ठ होयँ उनकोभी भक्षण न करे २ ॥

वैकङ्कतश्रीफलकाश्मरीषुब्राह्मीद्युतिःक्षेमतरौसुदाराः ॥ वृद्धिर्वटेऽर्केप्रचुरंचतेजःपुत्रामधूकेककुभेप्रियत्वम् ३ लक्ष्मीःशिरीषेचतथाकरंजेप्लक्षेऽर्थसिद्धिःसमभीप्सितास्यात्॥मान्यत्वमायातिजनस्यजात्यांप्राधान्यमश्वत्थतरौवदन्ति ४ आरोग्यमायुर्बदरीबृहत्योरैश्वर्यवृद्धिःखदिरेसबिल्वे ॥ द्रव्याणिचेष्टान्यतिमुक्तकेस्युःप्राप्नोतितान्येवपुनःकदम्बे ५ निम्बेऽर्थाप्तिःकरवीरेऽन्नलब्धिर्भाण्डीरेस्यादिदमेवप्रभूतम्॥शम्यांशत्रूनपहन्त्यर्जुनेचश्यामायांचद्विषतामेवनाशः ६ शालेऽश्वकर्णेचवदन्तिगौरवंसभद्रदारावपिचाटरूषके ॥ वाल्लभ्यमायातिजनस्यसर्वतःप्रियंग्वपामार्गसजम्बुदाडिमैः ७ ॥

वकंकत श्रीफल औकाश्मरीके काष्ठकी दांतनकरनेसे ब्राह्मकांति ब्रह्मवर्चस होती है । क्षेमवृक्ष के काष्ठकी दांतनसे सुंदर भार्या मिलती है । वड़के काष्ठकी दांतनसे वृद्धि होती है अर्क वृक्षके काष्ठकी दांतनसे वड़ा तेज होता है महुयेके काष्ठकी दांतन करनेसे पुत्र होते हैं औ अर्जुन वृक्षके काष्ठ की दांतन करनेसे सबका प्यारा होताहै ३ सिरस औ करंज वृक्षके काष्ठकी दांतनकरनेसे लक्ष्मी होती है प्लक्षके काष्ठकी दांतनसे मनोरथसिद्धि होती है चमेलीकी दांतनकरनेसे लोकमें मान्य होजाताहै । औ पीपलके काष्ठ की दांतनकरनेसे मनुष्य प्रधानताको प्राप्तहोताहै ४ वेर के काष्ठकी दांतनसे आरोग्य कटेलीकी दांतनसे आयुष् खैर औ बिल्वकी दांतनकरनेसे ऐश्वर्य की वृद्धि होती है । अतिमुक्तककी दांतनसे इष्टवस्तुकी प्राप्ति होती है । औ कदंबके काष्ठकी दांतनसे भी इष्टद्रव्योंकी प्राप्ति होती है ५ नींवकी दांतनसे धनकीप्राप्ति करवीर की दांतनसे अन्नका लाभ औ भांडीरवृक्षके काष्ठकी दांतन

करनेसेभी बहुत अन्नकी प्राप्ति होती है। शमी वृक्ष औ अर्जुनवृक्षके काष्ठकी दांतन करने से शत्रुओंको मारताहैं। औ श्यामा वृक्षके काष्ठ की दांतन करनेसे भी शत्रुओंका क्षय होताहै ६ शाल वृक्ष औ अश्वकर्ण वृक्षके काष्ठकी दांतन करनेसे सम्मान होताहै। देवदारु औ वांसाकी दांतनसे भी सम्मान होताहै। प्रियंगु अपामार्ग जम्बू औ दाडिम इन वृक्षोंके काष्ठकी दांतन करने से सब मनुष्योंका प्रिय होजाताहै ७ ॥

उदङ्मुखःप्राङ्मुखएववाऽब्दंकामंयथेष्टंहृदयेनिवेश्य ॥
अद्यादनिन्दंश्चसुखोपविष्टःप्रक्षाल्यजह्याच्चशुचिप्रदेशे ८ ॥

उत्तराभिमुख अथवा पूर्वाभिमुख सुखपूर्वक बैठकर अपना अभीष्ट मनोरथ हृदयमें करके दंतकाष्ठकी निन्दा नहीं करता हुआ एक वर्ष दंतकाष्ठ भक्षण करै पीछे उसको जलसे धोयकर शुचि स्थानमें फेंकदेवे ८ ॥

अभिमुखपतितंप्रशान्तदिक्स्थंशुभमतिशोभनमूर्ध्वसंस्थितंयत्॥
अशुभकरमतोन्यथाप्रदिष्टंस्थितपतितंचकरोतिमिष्टमन्नम् ९ ॥

इतिश्रीवराहमिहिरकृतौबृहत्संहितायांदन्तकाष्ठलक्षणंनामपंचाशीतितमोऽध्यायः ८५ ॥

फेंका हुआ दन्तकाष्ठ सम्मुख गिरै औ शांतदिशामें स्थितहोय तो शुभ होताहै। औ जो फेंकाहुआ दन्तकाष्ठ खडा होकर स्थितरहै तो बहुतही शुभ होताहै इससे विपरीत अर्थात् सम्मुख न गिरे शांतदिशामें न गिरै खड़ा न होय तो अशुभ फल करताहै। जो फेंका हुआ दन्तकाष्ठ खड़ा होकर गिरजाय तो उस दिन मीठा भोजन मिलताहै ९ ॥

श्रीवराहमिहिराचार्यकीबनाईबृहत्संहितामेंदन्तकाष्ठलक्षणनाम पचासीवांअध्यायसमाप्तहुआ ८५ ॥

छियासीवांअध्याय ॥

शाकुन ॥

मिश्रकाऽध्याय ॥

यच्छुक्रशक्रवागीशकपिष्ठलगरुत्मताम् ॥ मतेभ्यःप्राहऋषभो भागुरेर्देवलस्यच १ भारद्वाजमतंदृष्ट्वायच्चश्रीद्रव्यवर्धनः ॥ आवन्तिकःप्राहनृपोमहाराजाधिराजकः २ सप्तर्षीणांमतंयच्चसंस्कृतंप्राकृतंचयत् ॥ यानिचोक्तानिगर्गाद्यैर्यात्राकारेश्चभूरिभिः ३ तानिदृष्ट्वाचकारेमंसर्वशाकुनसंग्रहम् ॥ वराहमिहिरःप्रीत्याशिष्याणांज्ञानमुत्तमम् ४ ॥

शुक्र इन्द्र वृहस्पति कपिष्ठल गरुड़ भागुरि औ देवलके मतोंको देख जो ऋषभाचार्य ने शकुनसंग्रह वनाया है उसको देखकर १ भारद्वाज मुनि के मतको देख उज्जयिनी के महाराजाधिराज राजा श्रीद्रव्यवर्धनने शकुनसंग्रह वनायाहै उसको देखकर २ सप्तर्षियोंका मत जो शकुनसंग्रह है संस्कृत में औ प्राकृत में जो शकुनसंग्रह है इन सवको देखकर औ गर्ग आदि यात्रा शास्त्र के वनानेवाले वहुतसे मुनियोंने जो शकुन कहे हैं ३ उन सवको देखकर यह सर्व शाकुनसंग्रह नामक उत्तम ज्ञान शिष्यों की प्रसन्नताके लिये वराहमिहिराचार्य ने कियाहै ४ ॥

अन्यजन्मान्तरकृतंकर्मपुंसांशुभाशुभम् ॥
यत्तस्यशकुनःपाकंनिवेदयतिगच्छताम् ५ ॥

पूर्वजन्म में मनुष्योंने जो शुभ अशुभ कर्म कियाहै उसके फलको यात्राके समय शकुन सूचन करताहै ५ ॥

ग्रामारण्याम्बुभूव्योमद्युनिशोभयचारिणः ॥
रुतयातेक्षिताक्तेषुग्राह्यास्त्रीपुंनपुंसकाः ६ ॥

ग्राम वन जल भूमि (विल आदि) औ आकाशमें रहनेवाले जीव दिन में रात्रिमें औ दिन रात्रि दोनोंमें विचरनेवाले जीव, शब्द गमन ईक्षण औ उक्त (वाहरका शब्द) इन करके स्त्री पुरुष औ नपुंसक जानने चाहिये अर्थात् शकुनके समय उस जीवको जानै कि स्त्रीहै पुरुष है कि नपुंसकहै । उन जीवोंके रुत आदिसे जानै औ उस शकुनके समय स्त्री आदिका दर्शन शब्द आदि होय उससे भी उस शकुन देनेवाले जीव को स्त्री पुरुष अथवा नपुंसक समझै ६ ॥

पृथग्जात्यनवस्थानादेषांव्यक्तिर्नलक्ष्यते ॥
सामान्यलक्षणोद्देशेश्लोकावृषिकृताविमौ ७ ॥

पृथक् जातिकी अनवस्थिति होनेसे इन जीवों के स्वरूपमें स्त्री पुरुष आदि का भेद नहीं ज्ञात होता । सामान्य लक्षणके उद्देश में ये दो श्लोक मुनिप्रणीत हैं ७ ॥

पीनोन्नतविकृष्टांसाःपृथुग्रीवाःसुवक्षसः ॥ स्वल्पगम्भीरविरुताः पुमांसःस्थिरविक्रमाः ८ तनूरस्कशिरोग्रीवाःसूक्ष्मास्यपदविक्रमाः ॥ प्रसक्तमृदुभाषिण्यःस्त्रियोऽतोऽन्यन्नपुंसकम् ९ ॥

पुष्ट ऊंचे औ विस्तीर्ण जिनके कंधेहोयँ मोटी ग्रीवाहोय सुन्दर छातीहोय स्वल्प औ गंभीर जिनका शब्दहोय औ जिनका पराक्रम स्थिरहोय वे जीव

पुरुष होतेहैं ८ जिनके छाती शिर औ ग्रीवा छोटेहोयँ जिनके मुख पैर औ पराक्रम छोटेहोयँ निरन्तर मीठाशब्द बोलैं वे स्त्री होते हैं । जिन जीवों में स्त्री औ पुरुष दोनोंके लक्षण मिलैं उनको नपुंसक जानना चाहिये ९ ॥

ग्रामारण्यप्रचाराद्यंलोकादेवोपलक्षयेत्॥
संचिक्षिप्सुरहंवच्मियात्रामात्रप्रयोजनम् १० ॥

येशकुनके जीव कौन २ ग्राममें रहते हैं कौनसे अरण्यमें रहते हैं इत्यादि सबबातें लोकसे जानलेवै क्योंकि हमतोसंक्षेप करनेकी इच्छावाले हैं इसलिये केवलयात्रामें जिनका उपयोगहै उनको कहते हैं १० ॥

पथ्यात्मानंनृपंसैन्येपुरेचोद्दिश्यदेवताम्॥
सार्थेप्रधानंसाम्येस्याज्जातिविद्यावयोऽधिकम् ११ ॥

मार्गमें अपने ऊपर शकुनका फलदेखै सेनामें राजाके उद्देशसे शकुनका फलजाने नगरमें देवता (नगरस्वामी) को शकुन का फलजानै। बहुतसेमनुष्योंके साथमें जो प्रधानहोय उसको शकुनका फल जानै। कोई भी उनमें प्रधान न होय सब समानहोय तो जातिकरके विद्याकरके औ अवस्थाकरके जो बड़ाहोय उसको फल जानै ११ ॥

मुक्तप्राप्तैष्यदर्कासुफलंदिक्षुतथाविधम्॥
अङ्गारिदीप्तधूमिन्यस्ताश्चशान्तास्ततोऽपरम् १२ ॥

सूर्योदयसे लेकर पहरदिनचढ़े पर्यंत ईशानीदिशा मुक्तसूर्या पूर्वदिशा प्राप्तसूर्या औ आग्नेयीदिशा एष्यत्सूर्या होतीहै इसीप्रकार आठपहरमें एक २ पहरसूर्य उदयसे लेकर पूर्वआदि दिशाओं में घूमताहै जिसदिशाको सूर्यछोड़कर आयाहो वह मुक्तसूर्यादिशा अंगारिणी कहाती है। जिसमें स्थितहोय वह प्राप्त सूर्यादिशा दीप्ता कहाती है औ जिसमें सूर्य जानेवाला हो वह एष्यत्सूर्यादिशा धूमिता कहाती है।शेषपांच दिशा शांता होती हैं मुक्तसूर्यामें अशकुनहोय तो उसकाफल पहिलेहोचुका जानै प्राप्तसूर्यामें होय तो उसकाफल उसीदिन जानैऔ एष्यत्सूर्यामें जो अशकुनहोय उसका फल आगेहोगा यहजानै १२ ॥

तत्पञ्चमदिशांतुल्यंशुभंत्रैकाल्यमादिशेत्॥
परिशेषदिशोर्वाच्यंयथासन्नंशुभाशुभम् १३ ॥

अंगारिता आदि दिशाओं से पांचवीं दिशाका शुभफल तीनों कालमें तुल्य कहै। अर्थात् अंगारितासे पांचवीं दिशामें शुभशकुन होय तो उसका फलहोचुका जानै दीप्तासे पांचवीं में शुभशकुन होय तो उसकाफल वर्तमान जानै औ धूमितासे पांचवींमें शुभशकुनहोय तो उसका फलआगे होगा यहजानै।

... दो दिशाओं का शुभ अशुभ फलसमीपकी दिशाके अनुसार कहै १३ ॥

शीघ्रमासन्ननिम्नस्थैश्चिराद्दुन्नतदूरगैः ॥
स्थानवृद्ध्युपघाताच्चतद्वद्ब्रूयात्फलंपुनः १४ ॥

जो शकुन समीप होय औ निम्न (नीचे) स्थानमें होय उसकाफल शीघ्र-होताहै औ जो शकुन दूरहोय औ ऊंचे स्थानपरहोय. उसकाफल विलम्बसे होताहै। स्थानकी वृद्धि औ उपघातसेभी उसीभांति फल कहै अर्थात् जिसवृक्ष आदिस्थानपर वह शकुन स्थितहोय जो उसकी नित्यवृद्धि होती होय तो शकुनका फल शुभ औ उस स्थानका नित्यह्रासहोता होय तो उस शकुनका फल अशुभ जाने १४ ॥

क्षणतिथ्युडुवातार्कैर्दैवदीप्तोयथोत्तरम् ॥
क्रियादीप्तोगतिस्थानभावस्वारविचेष्टितैः १५ ॥

मुहूर्तदीप्त नक्षत्रदीप्त तिथिदीप्त पवनदीप्त औ सूर्यदीप्त ये पांच प्रकार का दीप्तशकुन दैवदीप्त कहाता है औ येपांचों उत्तरोत्तर बलवान् हैं। औ गमन स्थिति भाव स्वर औ चेष्टा इनके दीप्तहोनेसे क्रियादीप्त होताहै। ये दशप्रकार दीप्त हैं १५ ॥

दशधैवप्रशान्तोऽपिसौम्यस्तृणफलाशनः ॥
मांसाऽमेध्याशनोरौद्रोविमिश्रोऽन्नाशनःस्मृतः १६ ॥

इसी प्रकार शांतशकुनभी मुहूर्त तिथिआदिके भेदकरके दशप्रकार का होता है। जो वहशकुन तृण अथवा फल खानेवाला होय तो सौम्यमांस औ विष्ठादिक अशुचि पदार्थ खाने वालाहोय तो रौद्र औ अन्नखानेवालाहोय तो मिश्र अर्थात् न सौम्य औ न रौद्र होता है १६ ॥

हर्म्यप्रासादमङ्गल्यमनोज्ञस्थानसंश्रिताः ॥
श्रेष्ठामधुरसक्षीरफलपुष्पद्रुमेषुच १७ ॥

हर्म्य (महल) देवता आदिका प्रसाद ब्राह्मण गौ आदिके मंगल स्थान औ सुन्दर स्थानोंमें जो शकुन स्थितहोंय अमधुरक्षीरयुक्त औ फल पुष्प युक्त वृक्षोंपर जो शकुनहोयं वे शुभ होते हैं १७ ॥

स्वकालेगिरितोयस्थाबलिनोद्युनिशाचराः ॥
क्लीबस्त्रीपुरुषाश्चैषांबलिनःस्युर्यथोत्तरम् १८ ॥

दिवाचर जीव दिनमें औ पर्वत (ऊंचाप्रदेश) परस्थितहोयँ औ रात्रि-चर जीवरात्रिमें औ जलके समीप स्थितहोयँ तो बलवान् होते हैं। औ इन जीवोंमें नपुंसकसे स्त्री औ स्त्रीसे पुरुष बलवान् होते हैं १८ ॥

जवजातिबलस्थानहर्षसत्वस्वरान्विताः ॥
स्वभूमावनुलोमाश्चतदूनाःस्युर्विवर्जिताः १९ ॥

वेगजाति बलस्थान हर्षसत्व औ स्वर इनकरके युक्त औ अपनी भूमि में अनुलोम होकर स्थित जो शकुन देनेवाले जीवहोयँ तो बलवान् शकुनहोता है औ वेगआदिसे हीनहोयँ तो निर्बल होते हैं १९ ॥

कुक्कुटेभपरिल्यश्चशिखिवंजुलछिक्कराः ॥
बलिनःसिंहनादश्चकूटपूरीचपूर्वतः २० ॥

कुक्कुट हाथी परिली (एकपक्षी) मयूर वंजुल (खदिरचंचुपक्षी) छिक्कर (एकमृग) सिंहनाद (एकपक्षी) कूटपूरी (करायिका) ये सब पूर्वदिशा में बलवान् होतेहैं २० ॥

क्रोष्टुकोलूकहारीतकाककोकर्क्षपिंगलाः ॥
कपोतरुदिताक्रन्दक्रूरशब्दाश्चयाम्यतः २१ ॥

शृगाल उल्लू हारीत (हरियलपक्षी) काक चक्रवाक रीछ पिंगला(पक्षी) कपोत ये सब जीव औ रोदन आक्रंदन औ क्रूरशब्द दक्षिणदिशा में बलवान् होते हैं २१ ॥

गोशशक्रौञ्चलोमाशहंसोत्कोशकपिंजलाः ॥
बिडालोत्सववादित्रगीतहासाश्चवारुणाः २२ ॥

गौ शश क्रौंचपक्षी लोमाश (लोमड़ी) हंस उत्क्रोश (कुररपक्षी) कपिंजल (श्वेततित्तिर) मार्जार ये सबजीव विवाह आदि उत्सव बाजे गीत औ हास्य पश्चिम में बली होते हैं २२ ॥

शतपत्रकुरङ्गाखुमृगैकशफकोकिलाः ॥
चाषशल्यकपुण्याहघण्टाशङ्खरवाउदक् २३ ॥

शतपत्र (दार्वाघाटपक्षी) हरिण मूषक मृग घोड़ाआदि एक खुरवाले जीव कोकिल चाप (नीलकंठपक्षी) शल्यक (सेह) ये सबजीव औ पुण्याह शब्द घंटा औ शंखका शब्द उत्तर में बलीहोते हैं २३ ॥

नग्राम्योऽरण्यगोग्राह्योनारण्योग्रामसंस्थितः ॥
दिवाचरोनशर्वर्य्यांनचनक्तंचरोदिवा २४ ॥

ग्राममें रहनेवाला शकुन वनमेंहोय तो ग्रहणनहीं करनाचाहिये इसीभांति वनमें रहनेवाला ग्राममेंहोय दिन में बिचरनेवाला रात्रिको होय औ रात्रिमें बिचरनेवाला दिनमें होय तोभी ग्रहणनहीं करनाचाहिये २४ ॥

द्वन्द्वरोगार्दितत्रस्ताःकलहामिषकांक्षिणः ॥

आपगान्तरितामत्तानग्राह्याःशकुनाःक्वचित् २५ ॥

जो शकुन के जीव द्वन्द्व अर्थात् स्त्रीपुरुष के जोड़ेहोयँ रोगपीड़ितहोयँ भय युक्तहोयँ कलह करनेकी इच्छावालेहोयँ मांसकी इच्छाकरके युक्तहोयँ नदी के दूसरे तटपरहोयँ औ ऋतु के वशसे मस्त होरहेहोयँ उनके शकुन कहीं भी ग्रहण न करने चाहिये २५ ॥

रोहिताश्वाजबालेयकुरंगोष्ट्रमृगाःशशः ॥
निष्फलाःशिशिरेज्ञेयावसन्तेकाककोकिलौ २६ ॥

रोहित (एकमृग) घोड़ा बकरा गर्दभ हरिण ऊंट मृग औ शशक ये सब शिशिरऋतु में मस्तहोते हैं इसलिये उनदिनों में इनका शकुन निष्फलहोता है । वसन्तऋतु में काक औ कोकिला निष्फल होते हैं २६ ॥

नतुभाद्रपदेग्राह्याःसूकरश्वव्रकादयः ॥
शरद्यब्जादगोक्रौञ्चाःश्रावणेहस्तिचातकौ २७ ॥

सूकर श्वान वृक (भेड़िया) आदि भाद्रपद में नहीं ग्रहण करनेचाहिये शरत्ऋतुमें जलके जीवोंको भक्षण करनेवाले बकआदि गौ औ क्रौंचपक्षी औ श्रावणमास में हाथी औ चातक (पपीहा) नहीं ग्रहणकरने चाहियें२७ ॥

व्याघ्रर्क्षवानरद्वीपिमहिषाःसबिलेशयाः ॥
हेमन्तेनिष्फलाज्ञेयाबालाःसर्वेविमानुषाः २८ ॥

व्याघ्र रीछ वंदर चीता महिषा बिलमें रहनेवाले नकुलआदि औ मनुष्यों के बालकोंबिना और सब बालक हेमन्तऋतु में निष्फल होतेहैं २८ ॥

ऐन्द्र्यानलदिशोर्मध्येत्रिभागेषुव्यवस्थिताः ॥
कोशाध्यक्षानलाजीवितपोयुक्ताःप्रदक्षिणम् २९ ॥

पूर्व औ अग्निकोण के मध्य के तीनभागों में प्रदक्षिण क्रमसे कोशाध्यक्ष अग्निजीवी सुनार लुहारआदि औ तपस्वी ये तीन स्थित हैं २९ ॥

शिल्पीभिक्षुर्विवस्त्रास्त्रीयाम्यानलदिगन्तरे ॥
परतश्चापिमातंगगोपधर्मसमाश्रयाः ३० ॥

अग्निकोण औ दक्षिण के मध्य तीनभागों में क्रमसे शिल्पी (कारीगर) भिक्षुक औ नग्न स्त्री स्थित हैं । दक्षिण औ नैर्ऋत्य के मध्यके तीन भागों में हाथी गोवाल औ धर्मके आश्रित पुरुष स्थित हैं ३० ॥

नैर्ऋतीवारुणीमध्येप्रमदासूतितस्कराः ॥
शौण्डिकःशाकुनोहिंस्रोवायव्यापश्चिमान्तरे ३१ ॥

नैर्ऋत्य औ पश्चिमके मध्य के तीनभागों में क्रम से उत्तमस्त्री प्रसूता [illegible]

औ चोर स्थित हैं। वायव्य औ पश्चिम के मध्य तीनभागों में क्रमसे शौंडिक (कलाल) शाकुन (पक्षीमारनेवाला) औ हिंसाकरनेवाला स्थितहै ३१॥

विषघातकगोस्वामिकुहकज्ञास्ततःपरम्॥
धनवानीक्षणीकश्चमालाकारःपरंततः ३२॥

वायव्य औ उत्तरके मध्य तीनभागोंमें क्रमसे विषसे मारनेवाला गौओंका स्वामी औ इन्द्रजाल जाननेवाला स्थित हैं। उत्तर औ ईशान के मध्य तीन भागों में धनवान् ईक्षणीक(दैवज्ञ) औ मालाकार (माली) स्थितहैं ३२॥

वैष्णवश्चरकश्चैववाजिनांरक्षणेरतः॥
एवंद्वात्रिंशतोभेदाःपूर्वदिग्भिःसहोदिताः ३३॥

ईशान औ पूर्वके मध्य तीनभागोंमें क्रमसे वैष्णव चरक (बौद्धभेद) औ घोड़ोंकी रक्षाकरनेवाला क्रम से स्थित हैं। चौबीस भेद तो ये हुये औ पूर्व आदि आठ दिशाओं के आठभेद मिलकर सब बत्तीस भेदकहे हैं ३३॥

राजाकुमारोनेताचदूतःश्रेष्ठीचरोद्विजः॥
गजाध्यक्षश्चपूर्वाद्याःक्षत्रियाद्याश्चतुर्दिशम् ३४॥

राजा राजकुमार सेनापति दूत श्रेष्ठी (सेठ) चर (गुप्तपुरुष) ब्राह्मण औ हाथियोंका अध्यक्ष ये पूर्व आदि आठ दिशाओं में जाने। औ पूर्व आदि चारों दिशाओं में क्षत्रिय वैश्य शूद्र औ ब्राह्मण क्रमसे जानै ३४॥

गच्छतस्तिष्ठतोवापिदिशियस्यांव्यवस्थितः॥
विरौतिशकुनोवाच्यस्तद्दिग्जेनसमागमः ३५॥

चलतेहुये का अथवा स्थित पुरुष को इन पूर्वोक्त बत्तीस दिग्विभागों में जिस दिग्भाग के बीचस्थित शकुन का जीव शब्दकरै उसदिन उसदिशामें जो पहिले कोशाध्यक्ष आदि कहे उनसे समागम होता है ३५॥

भिन्नभैरवदीनार्तपरुषक्षामजर्जराः॥
स्वरानेष्टाःशुभाःशान्ताहृष्टप्रकृतिपूरिताः ३६

जो जीवों के स्वर भिन्न भयंकर दीन पीड़ित रूखे क्षाम औ जर्जरहोयँ वे शुभनहीं होते। औ जो स्वरशांत होयँ औ हृष्टप्रकृति अर्थात् सहर्ष जीवों ने किये होयँ वे शुभ होते हैं ३६॥

शिवाश्यामारलाछुच्छुःपिङ्गलागृहगोधिका॥
सूकरीपरपुष्टाचपुंनामानश्चवामतः ३७॥

शिवा (सृगाली) श्यामा (पातकी) रला (कलहकारिका) छुछुंदरी गृह-

गोधिका (छपकली) सूकरी कोकिला औ पुरुष नामक जो पक्षी होयँ ये सब यात्रा करनेवाले पुरुष के बाईं ओर होयँ तो शुभ होते हैं २७ ॥

स्त्रीसंज्ञाभासभषककपिश्रीकर्णछिक्कराः ॥
शिखिश्रीकण्ठपिप्पीकरुरुश्येनाश्चदक्षिणाः ३८ ॥

स्त्री संज्ञक पक्षी भासपक्षी भषक बंदर श्रीकर्ण पक्षी छिक्कर (एकमृग) मयूर श्रीकंठपक्षी पिप्पीकपक्षी रुरुमृग औ श्येन (बाज) येसब दक्षिणभाग में शुभ होते हैं ३८ ॥

क्ष्वेडास्फोटितपुण्याहगीतशङ्खाम्बुनिःस्वनाः ॥
सतूर्याध्ययनाःपुंवत्स्त्रीवदन्यागिरःशुभाः ३९ ॥

क्ष्वेडा (मुखशब्द) आस्फोटित (भुजठोकनेकाशब्द) पुण्याहवाचनका शब्दगीत शंख का शब्द जलका शब्द तूर्य (एकप्रकार का बाजा) का शब्द औ वेदपाठ का शब्द येसब शब्द पुरुषवत् जानै अर्थात् ये बाईं ओर शुभहोते हैं। और शब्द स्त्रीकी भांति अर्थात् दक्षिण भागमें शुभहोते हैं ३९ ॥

ग्रामौमध्यमषड्जौतुगान्धारश्चेतिशोभनाः ॥
षड्जमध्यमगान्धारऋषभाश्चस्वराहिताः ४० ॥

यात्राके समय मध्यम षड्ज औ गांधार ये तीन ग्राम शुभ हैं। औ षड्ज मध्यम गांधार औ ऋषभ ये चार स्वर शुभ हैं ४० ॥

रुतकीर्तनदृष्टेषुभारद्वाजाजबर्हिणः ॥
धन्यानकुलचाषौचसरटःपापदोऽग्रतः ४१ ॥

भारद्वाज पक्षी अज (बकरा) मयूर नकुल औ चाप पक्षी इनसबका यात्रा के समय शब्द नाम ग्रहण औ दर्शन शुभहै। औ सरट (गिरगट) यात्रा के समय आगे आवे तो अशुभफल करता है ४१ ॥

जाहकाहिशशक्रोडगोधाभंकीर्तनंशुभम् ॥
रुतसंदर्शनंनेष्टप्रतीपंवानरर्क्षयोः ४२ ॥

यात्राके समय जाहक सर्प शश सूकर औ गोधा (गोह) इनका नाम लेना शुभहै शब्द औ दर्शन इनका शुभ नहीं। वन्दर और रीछका शब्द औ दर्शन शुभ औ नाम लेना शुभनहीं होता है ४२ ॥

ओजाःप्रदक्षिणंशस्तास्मगाःसनकुलाण्डजाः ॥
चापःसनकुलोवामोभृगुराहाऽपराह्णतः ४३ ॥

मृग नकुल औ पक्षी एक तीनपांच आदि विषम होयँ औ बाईं ओर से आगेहोकर दहिनेआवें तो शुभहोते हैं औ नकुलके सहित चापपक्षी [illegible]

तो शुभ होताहै भृगुमुनि कहते हैं कि चाष नकुल अपराह्णमें वायें आवें तो शुभहोते हैं पूर्वाह्णमें शुभनहीं होते हैं ४३॥

छिक्करःकूटपूरीचपिरलीचाह्निदक्षिणाः॥
अपसव्याःसदाशस्तादंष्ट्रिणःसबिलेशयाः ४४॥

छिक्कर कूटपूरी औ पिरली ये दिनके समय दहिने आवें तो शुभ होते हैं। दंष्ट्रावाले श्वानसृगाल आदि औ विलमें रहनेवाले सेह नकुल आदि वाम भागमें शुभ होते हैं ४४॥

श्रेष्ठेहयसितेप्राच्यांशवमांसेचदक्षिणे॥
कन्यकादधिनीपश्चादुदग्गोविप्रसाधवः ४५॥

घोड़ा औ श्वेतरंग का पदार्थ पूर्वमें शव (मुर्दा) औ मांस दक्षिण में कन्या औ दही पश्चिममें औ गो ब्राह्मण औ साधु उत्तरमें शुभ होते हैं ४५॥

जालश्वचरणौनेष्टौप्राग्याम्यौशस्त्रघातकौ॥
पश्चादासवषण्ढौचखलासनहलान्युदक् ४६॥

जालकरके जो पक्षी औ मत्स्य आदि पकड़े औ कुत्ते करके जो मृगआदि मारे वेदोनों पुरुष पूर्वमें शुभनहीं होते शस्त्र औ घातक पुरुष दक्षिणमें मद्य औ नपुंसक पश्चिममें दुष्टपुरुष आसन औ हलउत्तरमें अशुभ होते हैं ४६॥

कर्मसंगमयुद्धेषुप्रवेशेनष्टमार्गणे॥
यानव्यस्तगताग्राह्याविशेषश्चात्रवक्ष्यते ४७॥

कर्म किसी बंधु आदि से समागम युद्ध गृहप्रवेश खोई वस्तु का ढूंढना इन सब बातोंमें यात्रासे उलटे शकुन लेने चाहिये अर्थात् यात्रामें जो वाम शकुन शुभकहा सो इनकार्यों में दक्षिण लेना इत्यादि इसमें जो कुछ विशेष है वह भी कहते हैं ४७॥

दिवाप्रस्थानवद्ग्राह्याःकुरङ्गरुरुवानराः॥ अह्नश्चप्रथमेभागे चाषवंजुलकुक्कुटाः ४८ शर्वरीपश्चिमेभागनप्तृकोलूकपिङ्गलाः॥ सर्व एवविपर्यस्ताग्राह्याःसार्थेषुयो[illegible]ताम् ४९॥

दिनके समय हरिण रुरुमृग औ बन्दर इनका शकुन यात्राकी भांतिही ग्रहणकरना चाहिये अर्थात् विपरीत ग्रहण न करै दिनके प्रथम भागमें चाष वंजुल औ कुक्कुट का शकुन यात्रा के तुल्यही ग्रहणकरै ४८ रात्रि के पिछले भागमें नप्तृका उलूक औ पिंगला का शकुनयात्रा के समानही देखै। केवल स्त्रियों काही साथ होय तो सब शकुन उलटेही देखने चाहियें ४९॥

नृपसंदर्शनेग्राह्याःप्रवेशेपिप्रयाणवत्॥ गिर्यरण्यप्रवेशेचनदीनां

चावगाहने ५० वामदक्षिणगौशस्तौयौतुतावग्रपृष्ठगौ ॥ क्रियादीप्तौ विनाशाययातुःपरिघसंज्ञितौ ५१ तावेवतुयथाभागंप्रशान्तरुतचेष्टितौ ॥ शकुनौशकुनद्वारसंज्ञितावर्थसिद्धये ५२ ॥

राजाके दर्शनके लिये जो राजगृहमें प्रवेश उस समय यात्राके तुल्यही शकुन देखने चाहियें पर्वत औ वनमें प्रवेशके समय औ नदी उतरनेके समय ५० यात्रामें जो शकुन बायें औ दहिने कहे हैं वे अग्रभाग में औ पृष्ठ भाग में क्रमसे होयँ तो शुभ होते हैं । यात्राकरनेवाले पुरुषके दोशकुन परिघसंज्ञक होयँ अर्थात् दोनों ओर स्थित होयँ औ पूर्वोक्त रीतिसे क्रिया दीप्तहोयँ तो यात्राकरनेवाले का नाश करनेवाले होते हैं ५१ औ वही दोनों शकुन जो यथाभाग अर्थात् वामभाग वाला बायें औ दक्षिण भागवाला दहिने स्थितहोयँ औ शांतशब्द औ चेष्टा करकेयुक्त होयँ तो वे शकुन द्वार संज्ञक शकुन यात्रा करनेवाले पुरुषका कार्य सिद्ध करते हैं ५२ ॥

केचित्तुशकुनद्वारमिच्छन्त्युभयतःस्थितैः ॥
शकुनैरेकजातीयैःशान्तचेष्टाविराविभिः ५३ ॥

कोई आचार्य कहते हैं कि एक जाति के दो शकुन शांत शब्द औ चेष्टा करके युक्त होकर यात्रा करने वाले के दोनों ओर स्थित होयँ तो शकुनद्वार होते हैं ५३ ॥

विसर्जयतियद्येकएकश्चप्रतिषेधति ॥
सविरोधोऽशुभोयातुर्ग्राह्योवाबलवत्तरः ५४ ॥

एक शकुन तो यात्राकी आज्ञा देवै अर्थात् शुभ होय औ दूसरा शकुन यात्राले रोके अर्थात् अशुभ होय तो वह यात्रा करनेवालेके लिये विरोध संज्ञक शकुन अशुभ होता है । अथवा इनदोनोंमें जो बलवान् होय उसका ग्रहणकरना चाहिये ५४ ॥

पूर्वंप्रावेशिकोभूत्वापुनःप्रास्थानिकोभवेत् ॥
सुखेनसिद्धिमाचष्टेप्रवेशेतद्विपर्ययः ५५ ॥

पहिले शकुन प्रावेशिकहोय अर्थात् प्रवेशके समय जैसा शुभशकुन कहाहै वैसा होय औ पीछे वही शकुन प्रास्थानिक होय अर्थात् यात्राके समय जैसा शुभकहा है वैसाहोजाय तो यात्रा करनेवालों को सुखसे कार्यसिद्धि कहता है प्रवेश के समय इससे विपरीत होय तो कार्य सिद्धि होती है ५५ ॥

विसर्ज्यशकुनःपूर्वंसएवनिरुणद्धिचेत् ॥
प्राह्ययातुररेर्मृत्युंडमरंरोगमेववा ५६ ॥

यात्रा के समय पहिले जो शुभ शकुन होय वही फिर अशुभ होजाय तो यात्राकरनेवाले पुरुषका शत्रुके हाथसे मृत्युहोय शस्त्रकलह होय औ रोग होय यह बात वह शकुन कहता है ५६ ॥

अपसव्यास्तुशकुनादीप्ताभयनिवेदिनः ॥
आरम्भेशकुनोदीप्तोवर्षान्तस्तद्भयङ्करः ५७ ॥

अप्रदक्षिण शकुन होयँ औ दीप्त होयँ तो भयको सूचन करते हैं। जिस कार्यके आरम्भ में दीप्त शकुन होय वर्षके भीतर उसकार्यमें भयकरताहै ५७॥

तिथिवाय्वर्कभस्थानचेष्टादीप्तायथाक्रमम् ॥
धनसैन्यबलाङ्गेष्टकर्मणांस्युर्भयंकराः ५८ ॥

तिथि दीप्त शकुन धनको भय करताहै वायुदीप्त सेनाको अर्कदीप्तबलकोनक्षत्र दीप्त अंगको स्थान दीप्त इष्टको औ चेष्टादीप्त शकुन कर्मको भयकरताहै ५८ ॥

जीमूतध्वनिदीप्तेषुभयंभवतिमारुतात् ॥
उभयोःसंध्ययोर्दीप्ताःशस्त्रोद्भवभयंकराः ५९ ॥

मेघोंके शब्द करके दीप्त शकुन होयँ तो पवन से भयहोता है। औ दोनों सन्ध्याओं में दीप्त शकुन होय तो शस्त्रभयकरते हैं ५९ ॥

चितिकेशकपालेषुमृत्युबन्धवधप्रदाः ॥ कण्टकीकाष्ठभस्मस्थाः कलहायासदुःखदाः ६० अप्रसिद्धिंभयंवापिनिःसाराश्मव्यवस्थिताः ॥ कुर्वन्तिशकुनादीप्ताःशान्तायाप्यफलास्तुते ६१ ॥

चिता केश औ कपालके ऊपर स्थित शकुन होय तो क्रमसे मृत्यु बन्धन औ वध करताहै। कांटोंवाला वृक्ष काष्ठ औ भस्मके ऊपर शकुन स्थित होय तो कलह परिश्रम औ दुःख क्रमसे देताहै ६० निःसार पाषाणके ऊपर स्थित शकुन अप्रसिद्धि अथवा भयकरताहै यह फलदीप्त शकुनोंकाकहा। जोइन स्थानोंमें स्थितशांत शकुनहोयँ तो याप्य अर्थात् थोड़ाफल देनेवाले होते हैं ६१ ॥

असिद्धिसिद्धिदौज्ञेयौ निर्हादाहारकारिणौ ॥
स्थानाद्रुवन्व्रजेद्यात्रांशंसतेत्वन्यथागमम् ६२ ॥

विष्ठा करताहुआ शकुन कार्य सिद्धि नहीं करता औ भोजन करता हुआ शकुनकार्य सिद्धिकरताहै। जहां बैठाहोय वहांसे शब्द करताहुआ शकुन जो गमन करै तो यात्राको कहताहै औ लौटकर फिर उसी स्थानपर आजाय तो किसीका आगमन सूचन करताहै ६२ ॥

कलहःस्वरदीप्तेषुस्थानदीप्तेषुविग्रहः ॥
उच्चमादौस्वरंकृत्वा नीचंपश्चाच्चमोषकृत् ६३ ॥

स्वर करके दीप्त शकुन होयँ तो कलह औ स्थानकरके दीप्तहोयँ तो विग्रह होताहै । पहिले ऊंचे स्वरसे बोलकरपीछे नीचे स्वरसे शकुन बोलै तो यात्रा करनेवाले के चोरी होतीहै ६३ ॥

एकस्थानेरुवन्दीप्तःसप्ताहाद्ग्रामघातकृत् ॥
पुरदेशनरेन्द्राणांम्रत्वर्षायनवत्सरात् ६४ ॥

दीप्त शकुन सब दिन एकस्थानमें बोलतारहै तो सात दिनमें ग्रामकानाश करताहै । दो महीने में नगरका तीन महीनेमें देश औ बारह महीने में राजा का नाश करताहै ६४ ॥

सर्वेदुर्भिक्षकर्तारःस्वजातिपिशिताशनाः ॥
सर्पमूषकमार्जारपृथुरोमविवर्जिताः ६५ ॥

सर्प मूषक बिड़ाल औ मत्स्यों को छोड़ और सब जीव जो अपनी जाति के जीवका मांस भक्षण करें तो दुर्भिक्ष करतेहैं ६५ ॥

परयोनिषुगच्छन्तो मैथुनंदेशनाशनाः ॥
अन्यत्रवेशरोत्पत्तेर्नृणांचाजातिमैथुनात् ६६ ॥

सब जीव दूसरे जातिकी योनिमें मैथुन करें तो देशका नाशकरते हैं । वेसर (खच्चर) की उत्पत्तिको छोड़ औ मनुष्योंके और योनिमें मैथुनको छोड़ कर । अर्थात् खच्चर उत्पन्न होनेके लिये घोड़ीसे गधेका मैथुन होताहै । औ मनुष्यभी काम पीड़ितहोकर घोड़ी आदि से मैथुन क्वचित् करते हैं ये उत्पात नहीं हैं ६६ ॥

बन्धघातभयानिस्युःपादोरूमस्तकातिगैः ॥
अप्शष्पपिशितान्नादैर्वर्षमोषक्षतग्रहाः ६७ ॥

पैरोंके समीप शकुन आजावे तो बन्धन ऊरुओं के समीप शकुन आजाय तो घात औ मस्तकको शकुन अतिक्रमणकरै तो भयहोता है । जलपीताहुआ शकुन देखपड़ै तो वृष्टि करताहै घासखाता शकुनहोय तो चोरीकराताहै । मांस खाताहोय तो शरीरमें क्षतकरता है औ अन्न खाता हुआ शकुन होय तो ग्रह अर्थात् किसी बन्धुसे समागम करताहै ६७ ॥

क्रूरोग्रदोषदुष्टैश्चप्रधाननृपवृत्तकैः ॥
चिरकालैश्चदीप्ताद्यास्वागमोदिक्षुतान्नृणाम् ६८ ॥

दीप्तदिशा में शकुन स्थित होय तो किसी क्रूरके साथ मनुष्य का आगमन होय धूमिता दिशामें शकुन स्थित होय तो तीव्रतर दोषसे दुष्टपुरुष के सहित आगमनहोय शान्तादिशामें शकुन स्थितहोय तो प्रधान राजाका वृत्त कहने

वालेके सहित पुरुषका आगमन होय औ अंगारिता दिशामें शकुन स्थितहोय तो चिरकाल करके सहित पुरुषका आगमन होय ६८ ॥

सद्रव्योबलवांश्चस्यात्सद्रव्यस्यागमोभवेत् ॥
द्युतिमान्विनतप्रेक्षीसौम्योदारुणवृत्तकृत् ६९ ॥

जो शकुन किसीभक्ष्य आदि द्रव्यकरके युक्तहोय औ बलवान्होय तो उस दिन द्रव्यसहित मनुष्यका आगमन होताहै सौम्यशकुन भी जो नीचेको देखताहोय तो दारुण वृत्तान्त करताहै अर्थात् जो आवै वह उपद्रव करै ६९ ॥

विदिक्स्थःशकुनोदीप्तोवामस्थेनानुवाशितः ॥
स्त्रियाःसंग्रहणप्राहतद्दिगाख्यातयोनितः ७० ॥

दीप्तशकुन विदिशामें स्थितहोय औ बाईं ओर स्थित दूसराशकुन उसके पीछे शब्दकरै तो उस दिशामें प्रसिद्ध जिसका जन्महै ऐसे पुरुषसे स्त्री की प्राप्तिको कहताहै ७० ॥

शान्तःपंचमदीप्तेन विरुतोविजयावहः ॥
दिङ्नरागमकारीवादोषकृत्तद्विपर्यये ७१ ॥

शान्त शकुनहोय औ उससे पांचवीं दिशामें स्थित दीप्तशकुन उसके पीछे शब्दकरताहोय तो विजय करताहै। अथवा उस दिशाके मनुष्यका आगमन करताहै। औ उससे विपरीत होय तो दोषकरताहै ७१ ॥

वामसव्यरुतोमध्यःप्राहस्वपरयोर्भयम् ॥
मरणंकथयन्त्येतेसर्वेसमविराविणः ७२ ॥

मध्यका शकुन वामभाग स्थित शकुनकरके विरुत होय अर्थात् वामभाग का शकुन उसके पीछे बोले तो अपने पक्षसे भयहोताहै। औ मध्यका शकुन दक्षिण भागके शकुनकरके विरुतहोय तो शत्रुसे भय होताहै । जो ये तीनों एक कालमें शब्दकरैं तो मरणको सूचन करते हैं ७२ ॥

वृक्षाग्रमध्यमूलेषुगजाश्वरथिकागमः ॥
दीर्घाब्जमुषिताग्रेषुनरनौशिविकागमः ७३ ॥

वृक्षके अग्र मध्यऔ मूलमें शकुन स्थितहोय तो क्रमसे हाथीपर चढ़े घोड़े पर चढ़े औ रथपरचढ़े मनुष्यका आगमन होताहै। औ लंबी वस्तुपर शकुन होय तो मनुष्यपर चढ़े मनुष्यका आगमन कमल आदिपर शकुनहोय तो नावपरचढ़ेहुये का औ कटे अग्रके वस्तुपर शकुन बैठाहोय तो पालकीमें चढ़े मनुष्यका आगमन होताहै ७३ ॥

शकटेनोन्नतस्थेचछायास्थेछत्रसंयुतः ॥

एकत्रिपंचसप्ताहात्पूर्वाद्यास्वन्तरासु च ७४ ॥

ऊंचे स्थानपर शकुन स्थित होय तो शकट (गाड़ी) परचढा पुरुष आताहै छत्रामें शकुन बैठाहोय तो छत्रकरके युक्त मनुष्यका आगमन होताहै। पूर्व दिशामें स्थित शकुन होने से जो शुभ अशुभफल किसीका आगमन अथवा किसीसे संयोग कहा यह सब एक दिनमें होताहै। दक्षिणमें शकुनस्थित होय तो उसका फल तीन दिनमें पश्चिममें होय तो पांचदिनमें औ उत्तरमें शकुन होय तो सातदिनमें उसका फल होताहै। इसीप्रकार आग्नेय आदि चारों कोणोंमें स्थित शकुनका फलभी क्रमसे एक तीन पांच औ सात दिनमेंहोताहै७४॥

सुरपतिहुतवहयमनिर्ऋतिवरुणपवनेन्दुशङ्कराः ॥
प्राच्यादीनांपतयोदिशःपुमांसोऽङ्गनाविदिशः ७५ ॥

पूर्व आदि आठों दिशाओं के क्रमसे इन्द्र अग्नि यम निर्ऋति वरुण वायु सोम औ शिव ये आठ स्वामी हैं। पूर्व आदि चार दिशा पुरुषहैं औ आग्नेयी आदि चार विदिशास्त्री हैं ७५॥

तरुतालीविदलाऽम्बरसलिलजशरचर्मपट्टलेखाःस्युः ॥
द्वात्रिंशत्प्रविभक्तेदिक्चक्रेतेषुकार्याणि ७६ ॥

बत्तीस भागमें बटे हुये दिक्चक्र में शकुन होयँ तो क्रमसे तरु आदि के ऊपर कार्यों का लेख होताहै अर्थात् पूर्व के भागोंमें शकुन स्थित होय तो वृक्ष की त्वचा अथवा पत्रपर शुभ अशुभ कार्य लिखाहोय अग्निकोणमें शकुनहोय तो तालपत्र पर दक्षिण में शकुन होय तो बांस के त्वचा आदिपर नैर्ऋत्य में होय तो वस्त्रपर पश्चिम होय तो जलसे उत्पन्न कमल आदि के पत्रपर वायव्य में होय तो शरकाण्ड के ऊपर उत्तर में चर्म के ऊपर औ ईशानकोण में शकुन स्थित होय तो पट्ट वस्त्र पर कार्य का लेख होताहै ७६॥

व्यायामशिखिनिकूजितकलहाम्भोनिगडमन्त्रगोशब्दाः ॥
वर्णाश्चरक्तपीतककृष्णसिताःकोणगामिश्राः ७७ ॥

पूर्व में जो शकुन होय उसका शुभ अशुभ फल व्यायाम (कसरत) के स्थानमें होताहै। अग्निकोणके शकुनका फल अग्निके समीप दक्षिणके शकुन का फल निकूजित अर्थात् किसीका शब्द सुने उसके समीप होताहै नैर्ऋत्य के शकुनका फल कलह (झगड़ा) के स्थानमें पश्चिमके शकुनका फल जलके समीप वायव्यके शकुनका फल निगड़ (बंधनकी बेड़ी आदि) के समीप उत्तर के शकुनका फल वेदपाठके स्थानमें औ ईशानकोण के शकुनका फल औ गौओंका जहां शब्द होय उस स्थानमें होताहै । रक्त पीत कृष्ण औ श्वेत

पूर्व आदि चार दिशाओं के रंग हैं ॥ औ रक्तपीत पीतकृष्ण कृष्ण श्वेत औ श्वेत रक्त मिलकर आग्नेयी आदि विदिशाओं के रंगहैं ७७ ॥

चिह्नंध्वजोदग्धमथश्मशानंदरीजलंपर्वतयज्ञघोषाः ॥
एतेषुसंयोगभयानिविद्यादन्यानिवास्थानविकल्पितानि ७८ ॥

ध्वज अग्निसे दग्ध श्मशान गुफा जल पर्वत यज्ञ स्थान औ घोष (अहीरोंकीपल्ली) ये आठ पूर्व आदि दिशाओं के चिह्नहैं। पूर्व आदि दिशाओं में शकुन होने से इन स्थानों में संयोग अथवा भय जानै। और भी स्थान वशसे कल्पना करै अर्थात् शुभ शकुन का फल शुभस्थानमें औ अशुभ का फल अशुभ स्थानमें होताहै यह जानै ७८ ॥

स्त्रीणांविकल्पाबृहतीकुमारीव्यङ्गाविगन्धात्वथनीलवस्त्रा ॥
कुस्त्रीप्रदीर्घाविधवाचताश्चसंयोगचिन्तापरिवेदिकाःस्युः७९॥

स्त्रियों के ये विकल्प हैं कि ईशानकोणमें बडी स्त्री औ कुमारी अग्निकोण में अंगहीन स्त्री औ दुर्गंधयुक्त स्त्री नैर्ऋत्य कोण में नीले वस्त्रोंवाली स्त्री औ बुरी स्त्री औ वायव्यकोण में लंबी स्त्री औ विधवा स्त्री हैं जिस दिशा में शकुनहोय उस दिशाकी स्त्रीसे संयोग होता है अथवा वह स्त्रीः चिंता उत्पन्न करती है ७९ ॥

पृच्छास्तुरूप्यकनकातुरभामिनीनां पेयाद्ययानमखगोकुलसंश्रयाश्च ॥ न्यग्रोधरक्ततरुरोध्रककीचकाख्याश्चूतद्रुमाःखदिरबिल्वनगार्जुनाश्च ८० ॥

इतिसर्वशाकुनेमिश्रकाध्यायःप्रथमः १ ॥
इतिश्रीवराहमिहिरकृतौवृहत्संहितायांषडशीतितमोऽध्यायः ८६ ॥

प्रश्न के समय पूर्व आदि दिशाओं में शकुन स्थित होय तो क्रमसे चांदी सुवर्ण रोगी स्त्री पान करनेके पदार्थ वाहन यज्ञ औ गौओं के समूह की प्रश्न करनेवाले पुरुष को चिन्ता होती है। औ वड़ रक्त वर्ण का वृक्ष लोध का पेड की चक (पोलावांस) आम्र वृक्ष खदिरका वृक्ष विल्व वृक्ष औ अर्जुन वृक्ष ये आठ वृक्ष आठदिशाओं के हैं अर्थात् जिस दिशामें शकुनहोय उसदिशा केवृक्ष के नीचे चांदी सुवर्ण आदिका लाभ अथवा हानि शकुन के अनुसार होतीहै ८० ॥

सर्वशाकुनमेंमिश्रकाध्यायनामकपहिलाअध्यायसमाप्तहुआ ॥ १ ॥
श्रीवराहमिहिराचार्यकीवनाईवृहत्संहितामेंछियासीवांअध्याय
समाप्तहुआ ॥८६ ॥

सतासीवांअध्याय ॥

शाकुन ॥

अन्तरचक्र ॥

ऐन्द्र्यांदिशिशान्तायांविरुवन्नृपसंश्रितागमंवक्ति ॥
शकुनःपूजालाभंमणिरत्नद्रव्यसंप्राप्तिम् १ ॥

शांत पूर्वदिशामें शब्दकरताहुआ शकुनराजाकेआश्रित पुरुषका आगमन कहताहै । औपूजाकी प्राप्ति औमणि रत्न औसुवर्ण आदि द्रव्यकी प्राप्ति कहता है ॥ शुभशकुनहोय तो पूर्णफल मध्यमहोय तो मध्यमफल औ अशुभहोय तो किंचित् फल करताहै १ ॥

तदनन्तरदिशिकनकागमोभवेद्वांछितार्थसिद्धिश्च ॥
चाप्तुयधनपूगफलागमस्तृतीयेभवेद्भागे २ ॥

पूर्व दिशाके तीनभागोंमें प्रथमभागकाफल पहिलेकहा । द्वितीयभागमेंश-कुनहोय तो सुवर्ण की प्राप्तिऔवांछित कार्यकी सिद्धि होतीहै । औतीसरे भाग में शकुनहोय तो शस्त्रधन औ पूगफलों (सुपारी) की प्राप्तिहोय २ ॥

स्निग्धद्विजस्यसंदर्शनंचतुर्थेतथाहिताग्नेश्च ॥
कोणेऽनुजीविभिक्षुप्रदर्शनंकनकलोहाप्तिः ३ ॥

चौथेभागमें शकुन होय तो अपने प्यारेब्राह्मणका दर्शनहोय औअग्निहोत्री का दर्शनहोय । अग्निकोणमें शकुनहोय तो अपना अनुजीवी सेवक आदि औ भिक्षुक देखपडै औ सुवर्णकी औलोहकी प्राप्तिहोय ३ ॥

याम्येनाद्येनृपपुत्रदर्शनंसिद्धिरभिमतस्याप्तिः ॥
परतःस्त्रीधर्माप्तिःसर्षपयवलब्धिरप्युक्ता ४ ॥

दक्षिण दिशाके पहिलेभागमें शकुन होय तोराजपुत्रका दर्शन होताहै कार्य सिद्धि औइष्टवस्तकी प्राप्तिहोतीहै । दूसरेभागमें शकुनहोय तोस्त्रीकीऔधर्मकी प्राप्ति होतीहै । औसरसों औ जौका लाभभी कहाहै ४ ॥

कोणाच्चतुर्थखण्डेलब्धिर्द्रव्यस्यपूर्वनष्टस्य ॥
यद्वातद्वाफलमपियात्रायांप्राप्नुयाद्याता ५ ॥

कोणसे चौथेखंडमें शकुन होय तो पहिले नष्टहुये द्रव्यकी प्राप्तिहोतीहै । औ यात्रा करनेवाले पुरुषको थोड़ा बहुतफल होताहै ५ ॥

यात्रासिद्धिःसमदक्षिणेनशिखिमहिषकुक्कुटाप्तिश्च ॥
याम्याद्द्वितीयभागेचारणसंगःशुभंप्रीतिः ६ ॥

समदक्षिण भागमें शकुन होय तो यात्राकी सिद्धि होती है । मयूर [illegible]

औ कुक्कुटकी प्राप्तिहोतीहै । दक्षिणसे दूसरेभागमें शकुनहोय तोचारणों (नट नर्तकआदि) का संगहोय शुभहोय औप्रीति होय ६ ॥

ऊर्ध्वंसिद्धिःकैवर्तसंगमोऽसीनांतित्तिराद्याप्तिः ॥
प्रव्रजितदर्शनंतत्परेचपक्वान्नफललब्धिः ७ ॥

तीसरे भागमें शकुन होय तो कार्य सिद्धि होय कैवर्त (धीवर) से समागम होय औ अच्छी तीतर आदिकी प्राप्तिहोय । चौथेभागमें शकुन होय तो संन्यासीका दर्शनहोय औपक्वान्न औ फलका लाभहोय ७ ॥

नैर्ऋत्यांस्त्रीलाभस्तुरगालङ्कारदूतलेखाप्तिः ॥
परतोऽस्यचर्मतच्छिल्पिदर्शनंचर्ममयलब्धिः ८ ॥

नैर्ऋत्यकोणमें शकुनहोय तो स्त्री का लाभहोय घोड़ा भूषण दूत औ लिखा हुआ इनकी प्राप्तिहोय । नैर्ऋत्यके अगले भागमें शकुनहोय तो चर्म औ चमारके दर्शनहोयँ औ चमड़े से बनी वस्तुका लाभ होय ८ ॥

वानरभिक्षुश्रवणावलोकनंनैर्ऋतात्तृतीयांशे ॥
फलकुसुमदन्तघटितागमश्चकोणाच्चतुर्थांशे ९ ॥

नैर्ऋत्य से तीसरे भागमें शकुन होय तो बन्दर भिक्षुक औ श्रमण (बौद्धभिक्षु) का दर्शन होय । नैर्ऋत्य कोण से चौथेभागमें शकुन होय तो फल पुष्प औ हाथीदांतसे गढ़ीहुई वस्तुकी प्राप्तिहोय ९ ॥

वारुण्यामर्णवजातरत्नवैदूर्यमणिमयप्राप्तिः ॥
परतोऽतःशबरव्याधचौरसंगःपिशितलब्धिः १० ॥

पश्चिममें शकुन होय तो समुद्रसे उत्पन्नहुये रत्न वैदूर्य (पन्ना) औ मणिमय पदार्थों का लाभ होय । पश्चिम से अगलेभागमें शकुनहोय तो भील व्याध औ चोर का संगहोय औ मांसका लाभ होय १० ॥

परतोऽपिदर्शनंवातरोगिणांचन्दनागुरुप्राप्तिः ॥
आयुधपुस्तकलब्धिस्तद्वृत्तिसमागमश्चोर्ध्वम् ११ ॥

उससे अगले भागमें शकुन होय तो वात व्याधिवाले का दर्शन होय औ चंदन औ अगरुकी प्राप्तिहोय । इससे भी अगले भागमें शकुन होय तो शस्त्र औ पुस्तक का लाभ होय औ शस्त्र औ पुस्तकवृत्ति करनेवालों से समागम होय ११ ॥

वायव्येफेनकचामरौर्णिकाप्तिःसमेतिकायस्थः ॥
कृन्मयलाभोऽन्यस्मिन्वैतालिकडिण्डिभाण्डानाम् १२ ॥

वायव्य में शकुन होय तो समुद्रफेन चामर औ ऊनके वस्त्रों की प्राप्तिहो-

न तो कायथका दर्शन होय । अगले भागमें शकुन होय तो मृत्तिका से बनी वस्तुका लाभ होय औ वैतालिक (राजाओं की स्तुति पढ़नेवाले)औ डिंडिभांडका दर्शन होय । जिसमें पटह मृदंग औ करारनाम वाद्य इकट्ठे वजाये जावें उसबाजाको डिंडिभांड कहते हैं १२ ॥

वायव्याद्यत्तृतीयेमित्रेणसमागमोधनप्राप्तिः ॥
वस्त्राश्वाप्तिरतःपरमिष्टसुहृत्संप्रयोगश्च १३ ॥

वायव्य कोण से तीसरे भागमें शकुन होय तो मित्रसे समागम होय औ धनकी प्राप्ति होय । इससे अगले भाग में शकुन होय तो वस्त्र औ घोडे की प्राप्ति होय औ इष्ट मित्रसे समागम होय १३ ॥

दधितण्डुललाजानांलब्धिरुदग्दर्शनंचविप्रस्य ॥
अर्थाप्तिरनन्तरमुपगच्छतिसार्थवाहश्च १४ ॥

उत्तर दिशामें शकुन होय तो दही चावल औ लाजा (धानकी खील) का लाभ होय औ ब्राह्मण का दर्शन होय । उत्तर के पहिले भागमें शकुन होय तो धनकी प्राप्ति होय औ सार्थवाह (व्यापारी) का दर्शन होय १४ ॥

वेश्यावटुदाससमागमःपरेशुष्कपुष्पफललब्धिः ॥
अतऊर्ध्वंचित्रकरस्यदर्शनंचित्रवस्त्राप्तिः १५ ॥

उससे अगले भागमें शकुन होय तो वेश्या बालक औ दाससे समागम होय औ सूखेहुये पुष्प औ फलों का लाभ होय । इससे अगले भागमें शकुन होय तो चित्र बनाने वाले का दर्शन होय औ चित्र वस्त्र (छींटआदि) की प्राप्ति होय १५ ॥

ऐशान्यांदेवलकोपसंगमोधान्यरत्नपशुलब्धिः ॥
प्राक्प्रथमेवस्त्राप्तिःसमागमश्चापिबन्धक्यां १६ ॥

ईशान कोण में शकुन होय तो देवल (देवताका पुजारी) का समागम होय धान्य रत्न औ पशुका लाभहोय । पूर्व दिशाके पहिले भागमें शकुनहोय तो वस्त्रकी प्राप्ति होय औ व्यभिचारिणी स्त्री से समागम होय १६ ॥

रजकेनसमायोगोजलजद्रव्यागमश्चपरतोऽतः ॥
हस्त्युपजीविसमाजश्चास्माद्धस्त्यश्वलब्धिश्च १७ ॥

उससे अगले भागमें शकुन होय तो रजक (धोबी) से समागम होय औ जलसे उत्पन्नहुये द्रव्यों का लाभहोय । इससे अगले भागमें शकुन होय तो हाथीसे जीविकाकरनेवालेसे समागमहोय औ हाथी औ घोडेकालाभहोय १७ ॥

द्वात्रिंशत्प्रविभक्तंदिक्चक्रंवास्तुवन्धनेप्युक्तम् ॥

अरनाभिस्थैरन्तःफलानिनवधाविकल्प्यानि १८ ॥

दिक्चक्र के बत्तीस भागकिये ये भाग वास्तु के अध्यायमें भी कहेहैं। उस के बीचमें आठअर औ एक नाभि मानकर इनके बीचहुये शकुन के फल नौ प्रकारसे विचारने चाहियें। अब वे फल कहते हैं १८॥

नाभिस्थेबन्धुसुहृत्समागमस्तुष्टिरुत्तमाभवति ॥
प्राग्रक्तपट्टवस्त्रागमस्त्वरिनृपतिसंयोगः १९ ॥

नाभि में स्थित शकुन होय तो बन्धु औ मित्रों से समागम होय। औ उत्तम तुष्टि होय पूर्वभागके अरके ऊपर शकुन स्थित होय तो लालरेशम के वस्त्रकी प्राप्ति होय औ राजा से समागम होय १९॥

आग्नेयेकौलिकतक्षपारिकर्माश्वसूतसंयोगः ॥
लब्धिश्चतत्कृतानांद्रव्याणामश्वलब्धिर्वा २० ॥

अग्निकोण के अरके ऊपर शकुन होय तो कौलिक (जुलाहा) तक्षा (खाती) पारिकर्म (कारीगर) घोड़ा औ सूत (सारथि) इनका समागम होय। औ कौलिक आदि के बनाये वस्त्र आदि का लाभ होय अथवा घोड़ेका लाभ होय २०॥

नेमीभागंबुद्ध्वानाभीभागंचदक्षिणेयोऽरः ॥
धार्मिकजनसंयोगस्तत्रभवेद्धर्मलाभश्च २१ ॥

नेमिभाग (चक्रकी परिधि) औ नाभिभाग (चक्रकामध्य) को जानकर दक्षिण में जो अरहै उसके ऊपर शकुन होय तो धर्मात्मा मनुष्योंसे समागम होय औ धर्मका लाभ होय २१॥

उस्राक्रीडककापालिकागमोनैर्ऋतेसमुद्दिष्टः ॥
वृषभस्यचात्रलब्धिर्माषकुलत्थाद्यमशनंच २२ ॥

गौ क्रीड़ा करने वाला औकापालिक इनसे नैर्ऋत्यमें शकुन होनेसे समागम होता है। बैलका लाभ होता है औ उड़द कुलथी आदि का भोजन मिलता है २२॥

अपरस्यांदिशियोऽरस्तत्रासक्तिःकृषीबलैर्भवति ॥
सामुद्रद्रव्यमसारकाचफलमद्यलब्धिश्च २३ ॥

पश्चिम दिशा के अर के ऊपर शकुन होय तो खेती करनेवालों से समागमहोय। औ समुद्रसे उत्पन्नहुये द्रव्यमसार (एकप्रकारकामणि) काचफल औ मद्यका लाभहोय २३॥

भारवहतक्षभिक्षुकसंदर्शनमपिचवायुदिक्संस्थे ॥

कोणादपिद्वितीयेधनक्षयोनृपसुतविनाशः ३१ ॥

पूर्वके चौथे भागमें शकुन होय तो अग्निका भय होताहै। अग्निकोण में शकुन होय तो चोरोंसे भय होताहै। औ अग्निकोण से दूसरे भागमें शकुन होय तो धन का क्षय औ राजपुत्र का मृत्युहोताहै ३१ ॥

प्रमदागर्भविनाशस्तृतीयभागेभवेच्चतुर्थेच ॥
हैरण्यककारुकयोःप्रध्वंसःशस्त्रकोपश्च ३२ ॥

अग्निकोणसे तृतीयभाग में शकुन स्थितहोय तो स्त्री के गर्भका नाशहोय। औ चौथेभागमें शकुन होय तो हैरण्यक (सुनारआदि) औ कारुक (कारीगर) का नाश औ शस्त्रकोप होय ३२ ॥

अथपञ्चमेनृपभयंमारीमृतदर्शनंचवक्तव्यम् ॥
षष्ठेतुभयंज्ञेयंगान्धर्वाणांसडोम्बानाम् ३३ ॥

पांचवें भाग में शकुन होय तो राजासे भय होय औ मरीसे मृतहुये पुरुष का दर्शनहोय। छठेभागमें शकुनहोय तो गांधर्व (गवैये) औ डोमों से भय होता है ३३ ॥

धीवरशाकुनिकानांसप्तमभागेभयंभवतिदीप्ते ॥
भोजनविघातउक्तोनिर्ग्रन्थभयंचतत्परतः ३४ ॥

सातवें भागमें दीप्त शकुन होय तो धीवर औ शाकुनिक (पक्षीमारने वाला)से भय होय। आठवें भागमें शकुन होय तो भोजन का नाशकहाहै। औ निर्ग्रंथ (नग्नक्षपणक) से भय होताहै ३४ ॥

कलहोनैर्ऋतभागेरक्तस्रावोऽथशस्त्रकोपश्च ॥
अपराधेचर्मकृतंविनश्यतेचर्मकारभयम् ३५ ॥

नैर्ऋत्यकोणमें शकुन होय तो कलह होय रुधिर का स्राव होय औ संग्राम होय। पश्चिमके पहिले भागमें शकुन होय तो चमड़े से बनीवस्तु का नाश होय औ चमारसे भय होय ३५ ॥

तदनन्तरेपरिव्राट्श्रमणभयंतत्परेत्वनशनभयम् ॥
वृष्टिभयंवारुण्यांश्वतस्कराणांभयंपरतः ३६ ॥

पश्चिमके दूसरे भाग में शकुन होय तो संन्यासी औ श्रमण (बौद्धभिक्षु) से भय होय। उससे अगले भागमें शकुन होय तो उपवास से भयहोय। पश्चिममें शकुन होय तो वर्षा का भय होय उससे अगले भागमें शकुनहोय तो कुत्ते औ चोरों का भय होय ३६ ॥

वायुग्रस्तविनाशःपरेपरेशस्त्रपूस्तवार्तानाम् ॥

कोणेपुस्तकनाशःपरेविषस्तेनवायुभयम् ३७ ॥

अगले भाग में शकुन होय तो वात व्याधि से पीड़ित पुरुष का नाश होय। उससे अगले भागमें शकुन होय तो शस्त्र औ पुस्तकसे जीविका करने वालों से भय होय। वायव्य कोण में शकुन होय तो पुस्तक का नाश होय दूसरे भाग में शकुन होय तो विष औ उससे वायु का भय होय ३७ ॥

परतोवित्तविनाशोमित्रैःसहविग्रहश्चविज्ञेयः ॥
तस्यासन्नेऽश्ववधोभयमपिचपुरोधसःप्रोक्तम् ३८ ॥

उससे अगले भाग में शकुनहोय तो धनका नाश होय औ मित्रों से कलह होय। औ उससे दूसरे भाग में शकुन होय तो घोड़ेका मृत्यु होय औ पुरोहित को भय होय ३८ ॥

गोहरणशस्त्रघातावुदक्परेसार्थघातधननाशौ ॥
आसन्नेचश्वभयंव्रात्यद्विजदासगणिकानाम् ३९ ॥

उत्तर में शकुन होय तो गौओं का हरण होय औ शस्त्रघात होय। उससे दूसरे भागमें शकुन होय तो सार्थ का नाश होय औ धनका नाश होय। उस के समीप के भाग में शकुन होय तो कुत्तों का भय होय औ व्रात्य द्विज दास औ वेश्या से भी भय होय। जिस ब्राह्मण को उपनयनादि संस्कार न होयँ उसको व्रात्य कहते हैं ३९ ॥

ऐशानस्यासन्नेचित्राम्बरचित्रकृद्भयंप्रोक्तम् ॥
ऐशानेत्वग्निभयंदूषणमप्युत्तमस्त्रीणाम् ४० ॥

ईशान कोण के समीप शकुन होय तो चित्र वस्त्र औ चित्रकारसे भय होय। ईशान कोण में शकुन होय तो अग्नि का भय होय औ उत्तम स्त्रियों को दूषण लगे ४० ॥

प्राक्तस्यैवासन्नेदुःखोत्पत्तिःस्त्रियाविनाशश्च ॥
भयमूर्ध्वरजकानांविज्ञेयंकाच्छिकानांच ४१ ॥

पूर्व दिशा में ईशान कोण के समीप शकुन होय तो दुःख की उत्पत्तिहोय औ स्त्री का मृत्यु होय। उससे अगले भागमें शकुन होय तो धोबी औ काछी से भय होय ४१ ॥

हस्त्यारोहभयंस्याद्द्विरदविनाशश्चमण्डलसमाप्तौ ॥
अभ्यन्तरेतुदीप्तेपत्नीमरणंध्रुवंपूर्वे ४२ ॥

बत्तीस भागों में बटे हुये दिक् चक्रकी समाप्ति पर शकुन होयँ। तो हाथी-

वान्से भयहोय औ हाथीका मृत्युहोय मध्यमें पूर्वके अरके ऊपर दीप्त शकुन होय तो भार्याका मृत्यु होय ४२ ॥

शस्त्रानलप्रकोपावाग्नेयेवाजिमरणशिल्पिभयम् ॥ याम्येधर्मविनाशःपरेऽग्न्यवस्कन्दचौरधूर्तवधः ४३ अपरेतुकर्मिणांभयमथकोणे चानिलेखरोष्ट्रवधः ॥ अत्रैवमनुष्याणांविषूचिकाविषभयंभवति ४४ उदगर्थविप्रपीडादिश्यैशान्यान्तुचित्तसंतापः ॥ग्रामीणगोपपीडाचतत्रनाभ्यांतथात्मवधः ४५ ॥

इतिसर्वशाकुनेऽन्तरचक्रंनामद्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

इति श्रीवराहमिहिरकृतौबृहत्संहितायांसप्ताशीतितमोऽध्यायः ॥ ८७ ॥

अग्नि कोण के अरके ऊपर दीप्त शकुन होय तो शस्त्र कोप औ अग्निकोपहोय। घोड़ेका मृत्यु होय औ शिल्प जाननेवालों (कारीगर) से भयहोय। दक्षिण में शकुन होय तो धर्मका नाश होय। नैर्ऋत कोण में शकुन होय तो अग्नि अवस्कन्द (धाड़ा) चोर औ धूर्त इनसे मृत्यु होय ४३ पश्चिम भाग के अरपर दीप्त शकुन होय तो कामकरनेवालों से भय होय। वायव्य कोणके अरके उपर शकुन होय तो गधे औ ऊंटों का मृत्यु होय। औ इसी कोण में शकुन होनेसे मनुष्योंको विषूचिका (हैजा) औ विषका भी भय होताहै ४४ उत्तर दिशा में शकुन होय तो धनका नाश औ ब्राह्मणों को पीड़ा होय। ईशान कोण में शकुन होय तो मनको सन्तापहोय। ग्रामीणोंसे औ गोपालों से पीड़ा होय। औ नाभिपर दीप्त शकुन होय तो यात्रा करने वाले काही मृत्यु होय ४५ ॥

सर्वशाकुनमेंअन्तरचक्रनामदूसराअध्यायसमाप्तहुआ ॥ २ ॥

श्रीवराहमिहिराचार्यकीवनाईबृहत्संहितामेंसत्तासीवां अध्यायसमाप्तहुआ ॥ ८७ ॥

अट्ठासीवांअध्याय ॥

शाकुनविरुताध्याय ॥

श्यामाश्येनशशघ्नवंजुलशिखिश्रीकर्णचक्राह्वयाश्चाषाण्डीरकखंजरीटकशुकध्वाङ्क्षाःकपोतास्त्रयः ॥ भारद्वाजकुलालकुक्कुटखराहारीतगृध्रोकपिः फेण्टःकुक्कुटपूर्णकूटचटकाश्चोक्तादिवासंचराः १ ॥

पोतकी श्येन शशघ्न वंजुल मयूर श्रीकर्ण चक्रवाक चाष अण्डीरक खंजन तोता काक तीनप्रकार के कपोत भारद्वाज कुलाल कुक्कुट गर्दभ हारीत गीध बन्दर फेंटपक्षी कुक्कुट कराधिका औ चटक ये सबजीव दिन में विचरनेवाले कहे हैं १ ॥

...नाशिकापिङ्गलछिप्पिकाख्यौ वल्गुल्युलूकौशशकश्चरात्रौ ॥ ...स्वकालोत्क्रमचारिणःस्युर्देशस्यनाशायनृपान्तदावा २ ॥

...मड़ी पिंगला छिप्पिकपक्षी वल्गुली (वागल) उलूक औ शशक ये सब जीव रात्रिको विचरनेवाले हैं ये जीव अपने कालको छोड़कर विचरैं अर्थात् दिवाचर जीव रात्रिके समय औरात्रिचर जीव दिनके समय विचरैं तो देशका नाशहोय अथवा राजाका मृत्युहोय २ ॥

हयनरभुजगोष्ट्रद्वीपिसिंहर्क्षगोधावृकनकुलकुरङ्गश्वाजगोव्याघ्रहंसाः ॥ पृषतमृगसृगालश्वाविदाख्यान्यपुष्टाद्युनिशमपिविडालःसारसःसूकरश्च ३ ॥

घोड़ा मनुष्य सर्प ऊंट चीता सिंह रीछ गोह भेड़िया नकुल हरिण कुत्ता बकरा गौ व्याघ्र हंस पृषत् मृग सृगाल सेह कोयल विल्ली सारस औ सूकर ये सबजीव दिनमें भी औ रात्रिमें भी विचरते हैं ३ ॥

भपकूटपूरिकरवककरायिकाःपूर्णकूटसंज्ञाःस्युः ॥ नामान्युलूकचेट्याःपिङ्गलिकापेचिकाहक्का ४ पोतकीचश्यामावंजुलकःकीर्त्यतेखदिरचंचुः ॥ छुछुन्दरीनृपसुतावालेयोगर्दभःप्रोक्तः ५ स्रोतस्तड़ागभेद्येकपुत्रकःकलहकारिकाचरला ॥ भृङ्गारवच्चवाशतिनिशिभूमौद्व्यंगुलशरीरा ६ दुर्बलिकोभाण्डीकःप्राच्यानांदक्षिणःप्रशस्तोऽसौ ॥ छिक्कारोमृगजातिःकृकवाकुःकुक्कुटःप्रोक्तः ७ गर्ताकुक्कुटकस्यप्रथितंतुकुलालकुक्कुटोनाम ॥ गृहगोधिकेतिसंज्ञाविज्ञेयाकुड्यमत्स्यस्य ८ दिव्योधन्वनउक्तःक्रोडःस्यात्सूकरोऽथगोरुस्रा ॥ श्वासारमेयउक्तोजात्याचटिकाचसूकरिका ९ एवंदेशेदेशेतद्विद्भ्यःससुपलभ्यनामानि ॥ शकुनरुतज्ञानार्थंशास्त्रेसञ्चिन्त्ययोज्यानि १० ॥

व्यवहारके लिये कई जीवोंके नामांतर कहते हैं। भप कूटपूरी करवक औ करायिका ये पूर्णकूट पक्षीकी संज्ञा हैं। पिंगलिका पेचिका औ हक्का ये नाम उलूक चेटी (कोचरी) के हैं ४ पोतकीनाम श्यामा चिड़ीका है वंजुलक पक्षीको खदिरचंचु कहते हैं। छुछुन्दरी को नृपसुता कहते हैं ॥ वालेयनाम गर्दभका है ५ स्रोतोभेदी तड़ागभेदी एकपुत्रक कलहकारिक ये सब नाम रलाके हैं। उस रलाका शरीर दोअंगुल होताहै ६ औ भूमिके ऊपर रात्रि के समय भृंगारकी भांति शब्द करती है। भांडीक का नाम दुर्बलिकहै। वह पूर्व देशके मनुष्योंको दहिनेआवे तो शुभ होताहै अर्थात् औरोंको वाममार्गमें शुभ

है। छिक्कार एकप्रकारका मृगहै। कुकवाकुनाम कुक्कुटका है ७ गर्तीकुक्कुटको कुलालकुक्कुट कहते हैं। गृहगोधिका नाम कुड्यमत्स्य (छिपकली) काहै ८ दिव्यको धन्वन कहते हैं। क्रोडनाम सूकर काहै। उस्रा गौकोकहतेहैं। श्वान को सारमेयकहते हैं। जातिकरके चटिकाको सूकरिका कहते हैं ९ इसभांति देशदेशमें शकुनोंके जाननेवालों से जीवों के नाम जानकर शकुनोंका शब्द जानने के लिये बिचारकर शास्त्रमें उनका योजन करै १० ॥

वञ्जुलकरुतंतित्तिडितिदीप्तमथकिल्किलीतितत्पूर्णम् ॥
श्येनशुकगृध्रकङ्काःप्रकृतेरन्यस्वरादीप्ताः ११ ॥

वञ्जुलकका शब्द तित्तिड ऐसाहोय तो दीप्त होताहै। औ किल्किली ऐसा होय तो पूर्ण अर्थात् शुभ होता है। श्येन (बाज) तोता गीध औ कंकपक्षी ये जैसा नित्य बोलते हैं उससे और भांतिका शब्द बोलैं तो उनका स्वरदीप्त होता है ११ ॥

यानासनशय्यानिलयनंकपोतस्यसद्मविशनंवा ॥ अशुभप्रदंनराणांजातिविभेदेनकालोऽन्यः १२ आपाण्डुरस्यवर्षाच्चित्रकपोतस्य चैवषण्मासात् ॥ कुंकुमधूम्रस्यफलंसद्यःपाकंकपोतस्य १३ ॥

वाहन आसन औ शय्याके ऊपर कपोत बैठे अथवा घरके भीतर प्रवेशकरै तो मनुष्योंको अशुभ होताहै। कपोतके फलका और काल जातिभेदसे हैं १२ श्वेतरंगके कपोतकाफल एकवर्ष में चित्र वर्णके कपोतका फलछःमहीने में औ कुंकुमके तुल्य धूम्रवर्णके कपोतका फलशीघ्रही अर्थात् उसी दिनहोताहै१३॥

चिचिदितिशब्दःपूर्णःश्यामायाःशूलिशूलितिचधन्यः ॥
चच्चेतिचदीप्तःस्यात्स्वप्रियलाभायचिक्चिगिति १४ ॥

श्यामाका चिचित् यह शब्द पूर्णहोता है। शूलि शूल् ऐसा शब्द शुभ है चच्च ऐसा शब्द दीप्त है। औ चिक् चिक् ऐसा शब्द श्यामाबोलै तो जानो कि यह अपने पतिसे मिलना चाहती है १४ ॥

हारीतस्यतुशब्दोगुंगुपूर्णोपरेऽप्रदीप्ताःस्युः ॥
स्वरवैचित्र्यंसर्वंभारद्वाज्याःशुभंप्रोक्तम् १५ ॥

हारीतका गुंगुः ऐसा शब्द पूर्णहोता है और सबभांतिके हारीतके शब्द दीप्तहैं। भारद्वाजी जितने प्रकारके शब्द बोलै सब शुभही होते हैं १५ ॥

किष्किषिशब्दःपूर्णःकरायिकायाःशुभःकहकहेति ॥ क्षेमायकेवलं करकरेतिनत्वर्थसिद्धिकरः १६ कोटुक्लीतिक्षेम्यःस्वरःकटुक्लीतिदृष्टये तस्याः ॥ अफलःकोटिकिलीतिचदीप्तःखलुगुक्रतःशब्दः १७ ॥

कराधिकाका किष्किपि ऐसाशब्द पूर्णहोता है। कहकह ऐसा शब्द शुभ होताहै। करकर ऐसाशब्द केवल क्षेमके लिये होताहै कुछ कार्यसिद्धि नहीं करता १६ कोटुक्की यह शब्द क्षेम करताहै कटुक्की ऐसा शब्दकरायिका बोले तो वर्षा होती है। कोटिकिली यहशब्द निष्फल होता है। औगु ऐसाशब्द करायिका का दीप्त होता है १७॥

शस्तंवामेदर्शनंदिव्यकस्यसिद्धिर्ज्ञेयाहस्तमात्रोच्छ्रितस्य॥
तस्मिन्नेवप्रोन्नतस्थेशरीराद्धात्रीवश्यंसागरान्ताऽभ्युपैति १८॥

वामभाग में दिव्यकका दर्शनहोय तो शुभ होता है। औ वह दिव्यक एक हाथ ऊंचा उठाहोय तो कार्यसिद्धि होती है। औ उसी वामभाग में दिव्यक यात्रा करनेवाले के शरीरसे ऊंचाहोकर स्थित होय तो समुद्र पर्यंत पृथिवी उसके वश होजाती है १८॥

फणिनोऽभिमुखागमोऽरिसङ्गंकथयतिबन्धवधात्ययंचयातुः॥
अथवामसुपैतिसव्यभागान्नसमिद्धैकुशलोगमागमेच १९॥

यात्रा करनेवाले के संमुख सर्प आवै तो शत्रुसे समागम होताहै औ बंधन औ वधसे नाश होताहै। अथवा यात्रा करनेवालेके वामभागसे सर्प आवै तो वहभी गमन औ आगमनमें कार्यसिद्धि करने के लिये समर्थ नहीं होता१९॥

अब्जेषुमूर्धसुचवाजिगजोरगाणांराज्यप्रदःकुशलकृच्छुचिशाद्वलेषु॥ भस्मास्थिकाष्ठतुषकेशतृणेषुदुःखदृष्टःकरोतिखलुखंजनकोऽब्दमेकम् २०॥

कमलोंके ऊपर हाथीके घोडे के अथवा सर्पके मस्तकके ऊपर खंजनबैठा हुआ देखपड़े तो राज्य देताहै। औ पवित्र स्थानमें औ हरी दूर्वाके ऊपरबैठा देखपड़े तो कुशल करताहै। भस्म हाड़ काष्ठ तुष केश औ तृणोंके ऊपर बैठा हुआ खञ्जन देखपड़े तो एकवर्ष पर्यंत दुःखकरता है २०॥

किलिकिल्किलितितरिस्वनःशान्तःशस्तफलोऽन्यथापरः॥
शशकोनिशिवामपार्श्वगोवाशाऽऽस्तफलोनिगद्यते २१॥

तीतर का किलिकिल्किलि यह शब्द शांत है औ यात्रा करने वाले को शुभ फल करता है। इसको छोड़ और शब्द तीतरका दीप्त होता है। औ अशुभ होता है। रात्रि के समय वाम भागमें शशक आवै औ शब्द करै तो शुभ कहाहै २१॥

किलिकिलिविरुतंकपेःप्रदीप्तंनशुभफलप्रदमुदिशन्तियातुः॥
शुभमपिकथयन्तिचुग्लुशब्दंकपिसदृशंचकुलालकुक्कुटस्य २२॥

वन्दरका किलिकिलि ऐसा शब्द दीप्त होता है वह यात्रा करनेवाले को शुभफल नहीं देता। औ वन्दरका चुग्लु ऐसा शब्द शुभ कहते हैं। वन्दर के शब्दके समानही कुलाल कुक्कुटका शब्दजानो २२ ॥

पूर्णाननःकृमिपतङ्गपिपीलिकाद्यैश्चाषःप्रदक्षिणमुपैतिनरस्ययस्य ॥ खेस्वस्तिकंयदिकरोत्यथवापियासोस्तस्याऽर्थलाभमचिरात्सुमहत्करोति २३ ॥

कीड़े पतंग चींटी आदिसे जिसका मुखभराहो ऐसा चापपक्षी (नीलकंठ) जिसयात्रा करनेवाले पुरुषके दहिने आवे। अथवा जिसयात्रा करने वाले के ऊपर आकाश में चापपक्षी उड़ता हुआ स्वस्तिक वनावे उसयात्रा करनेवाले मनुष्य को शीघ्रही वहुत धनका लाभ करता है २३ ॥

चाषस्यकाकेनविरुध्यतश्चेत्पराजयोदक्षिणभागगस्य ॥
वधःप्रयातस्यतदानरस्यविपर्ययेतस्यजयःप्रदिष्टः २४ ॥

काकके साथ दक्षिण भाग में स्थित होकर चाप पक्षी लड़ता होय औ उसका पराजय होजाय तो उस समय यात्रा करनेवाले मनुष्यका मृत्यु होता है। औ चापपक्षी उत्तर भागमें होकर काकसे जीते उस समय यात्रा करने वालेका जय होता है २४ ॥

केकेतिपूर्णकुटवद्यादिवामपार्श्वेचाषःकरोतिविरुतंजयकृत्तदास्यात्॥
क्रक्रेतितस्यविरुतंनाशिवायदीप्तंसंदर्शनंशुभदमस्यसदैवयातुः २५

चापपक्षी वाम भागमें केक यह शब्दकरै अथवा करायिकाके तुल्य किप्किपि औ कहकह यह शब्द करै तो यात्राकरनेवाले का जयकरताहै क्रक्र यहचाप का शब्द दीप्तहोता है इसलिये शुभनहीं है। यात्रा करने वालेको चापका दर्शन सदाही शुभहै २५ ॥

अण्डीरकष्टीतिरुतेनपूर्णष्टिष्टिष्टिशब्देनतुदीप्तउक्तः ॥
फेण्टःशुभोदक्षिणभागसंस्थोनवाशितेतस्यकृतोविशेषः२६॥

अंडीरकटी ऐसा शब्द वोलै तो पूर्ण औ टिट्टिट्टि ऐसा शब्द वोलै तो दीप्त कहाहै। फेंट यात्रा करनेवाले के दक्षिण भागमें होय तो शुभ होता है फेंटके शब्दमें कुछ विशेप फल नहीं कहाहै २६ ॥

श्रीकर्णरुतंतुदक्षिणेकक्केतिशुभंप्रकीर्तितम् ॥
मध्यंखलुचिक्चिकीतियच्छेषंसर्वमुशान्तिनिष्फलम् २७ ॥

श्रीकर्णका क क्क क्कु ऐसा शब्द यात्रा करनेवाले के दक्षिण भागमें होय तो

शुभ होताहै। चिक्विकी ऐसा शब्द मध्यमहै। इनको छोड़ और श्रीकर्ण के सब भांति के शब्द निष्फल कहे हैं २७॥

दुर्बलेरपिचिरल्विरिल्विविप्रोक्तनिष्टफलदंहिवामतः॥
वामतश्चयदिदक्षिणंव्रजेत् कार्यसिद्धिमचिरेणयच्छति२८॥

भांडीक वामभागमें चिरल्विरिल्वि ऐसा शब्द बोलै तो अभीष्ट फलदेने वाला कहाहै। जो यात्रा करनेवाले पुरुष के वायें भाग से दहिने आजावे तो शीघ्रही कार्यसिद्धि करता है २८॥

चिक्चिकिवाशितमेवतुकृत्वादक्षिणांभागमुपैतिचवामात्॥
क्षेमकृदेवनसाधयतेऽर्थान्व्यत्ययगंवधबन्धभयाय २९॥

वह भांडीक चिक्चिकि ऐसा शब्द करके वामभाग से दक्षिण को आवै तो केवल क्षेमही करताहै कार्यसिद्धि नहीं करता। औ दहिने वायें आवै तो वध बन्धन औ भय करता है २९॥

क्रक्रेतिचसारिकाद्रुतंत्रेत्रेवाप्यऽभयाविरौतिया॥
सावक्तियियासतोऽचिराद्गात्रेभ्यःक्षतजस्यविस्रुतिम् ३०॥

जो सारिका (मैना) क्रक्र अथवा त्रेत्रे ऐसा शब्द निर्भय होकर जल्दी बोले वह यह कहती है कि यात्रा करनेवाले पुरुष के शरीर से शीघ्रही रुधिर बहैगा ३०॥

फेण्टकस्यवामतश्चिरिल्विरिल्विरिल्वितिस्वनः॥
शोभनोनिगद्यतेप्रदीप्तउच्यतेपरः ३१॥

फेंटकके वामभाग में चिरिल्वि रिल्वि ऐसा शब्दकरै तो शुभ कहाहै। इसके विना और शब्द बोलै तो दीप्त होताहै ३१॥

श्रेष्ठंखरंस्थास्नुमुशन्तिवाममोकारशब्देनहितंचयातुः॥
अतःपरंगर्दभनादितंयत्सर्वाश्रयंतत्प्रवदन्तिदीप्तम् ३२॥

यात्रा करनेवाले पुरुषके वामभाग में खर (गधा) एकस्थानमें खड़ाहोय तो शुभहोता है। औ ऐसा शब्दबोलै तो यात्राकरनेवालेकेलिये हितहै इसके विना और सबप्रकार के शब्द गर्दभ के दीप्त हैं ३२॥

ओकाररावीसमृगःकुरंगओकाररावीपृषतश्चपूर्णः॥
येऽन्येस्वरास्तेकथिताःप्रदीप्ताःपूर्णाःशुभाःपापफलाःप्रदीप्ताः ३३॥

मृग औ कुरंग ओ ऐसा शब्द करैं औ पृषतमृग ओ ऐसा शब्दकरै तो पूर्ण होताहै। इनके विना और शब्द दीप्त कहेहैं। पूर्णस्वर शुभ होते हैं औ दीप्त-स्वर अशुभ हैं ३३॥

भीतारुवन्तिकुकुकुक्वितिताम्रचूडास्त्यक्त्वारुतानिभयदान्यपराणिरात्रौ ॥ स्वस्थैःस्वभावविरुतानिनिशावसानेताराणिराष्ट्रपुरपार्थिववृद्धिदानि ३४ ॥

कुक्कुट रात्रि के समय भययुक्त होकर कुकु कुकु ऐसाशब्द करते हैं इन शब्दोंको छोड़ कुक्कुटों के और शब्द भयके देनेवाले हैं । जो कुक्कुट स्वस्थ होकर प्रभात के समय ऊंचे स्वरसे अपने स्वाभाविक शब्दबोलैं वे राज्य नगर औ राजा की वृद्धि करते हैं ३४ ॥

नानाविधानिविरुतानिहिछिप्पिकायास्तस्याःशुभाकुलुकुलुर्नशुभास्तुशेषाः ॥ यातुर्बिडालविरुतंनशुभंसदैवगोस्तुक्षुतंमरणमेवकरोतियातुः ३५ ॥

छिप्पिका अनेकप्रकार के शब्द करती है परन्तु उसका कुलुकुलु ऐसाशब्द शुभ है और शब्द कोई भी शुभनहीं । यात्रा करनेवालेका बिल्लीका शब्द कभीभी शुभनहीं गौकी छींक यात्राकरनेवालेका मृत्युही करतीहै ३५ ॥

हुंहुंगुग्लुगितिप्रियामभिलषन्क्रोशत्युलूकोमुदापूर्णस्याद्गुरुलुप्रदीप्तमपिचज्ञेयंसदाकिस्किसि ॥ विज्ञेयःकलहोयदाबलबलंतस्याऽसकृद्वाशितंदोषायैवटटट्टटेतिनशुभाःशेषाश्चदीप्ताःस्वराः ३६ ॥

उलूक अपनी प्रियाको चाहता हुआ हर्ष करके हुंहुं गुग्लुग् ऐसा शब्द बोलता है गुरुलु यह शब्द उलूकका पूर्णहै । औ किस्किसि यह शब्द सदा दीप्त है जो उलूक बारम्बार बल बल ऐसा शब्द बोलै तो कलहजानै । टट ट्ट ऐसाशब्द उलूकबोलै तो दोषकेलिये होता है । उलूक के और सब स्वर दीप्त हैं ३६ ॥

सारसकूजितमिष्टफलंतद्युगपद्विरुतंमिथुनस्य ॥
एकरुतंनशुभंयदिवास्यादेकरुतेप्रतिरौतिचिरेण ३७ ॥

सारसोंका जाड़ेमें दोनों एकवारही शब्दकरैं तो दोनोंका वह इकट्ठा शब्द अभीष्ट सिद्धिकरनेवाला होताहै । जो एकही सारसबोलै उसके जोड़ेका न बोलै अथवा एकके बोलनेके अनन्तर दूसरा चिरकालपीछेबोलै तो शुभनहीं ३७॥

चिरिल्विरिल्वितिस्वनैःशुभंकरोतिपिंगला ॥
अतोऽपरेतुयेस्वराःप्रदीप्तसंज्ञकास्तुते ३८ ॥

पिंगला जो चिरिल्वि रिल्वि ऐसा शब्द बोलै तो शुभकरती है । इस के विना और सब स्वर पिंगला के दीप्त हैं अर्थात् अशुभ हैं ३८ ॥

इशिविरुतंगमनप्रतिषेधिकुशुकुशुचेत्कलहंप्रकरोति ॥

अभिमतकार्यगतिंचयाथासाकथयतितंचविधिंकथयामि ३९ ॥
पिंगलाका इशि ऐसाशब्द यात्राको रोकता है अर्थात् ऐसा शब्द पिंगला करै तो यात्रा नहीं करनी चाहिये। जो कुशुकुशु ऐसाशब्द पिंगला बोलै तो कलह करती है। वह पिंगला जिसविधि के करनेसे अभीष्ट कार्यका होना न होना कहती है उसविधिको कहते हैं ३९ ॥

दिनान्तसन्ध्यासमयेनिवासमागम्यतस्याःप्रयतश्चवृक्षम् ॥ देवान्समभ्यर्च्यपितामहादीन्नवाम्बरैस्तंचतरुंसुगन्धैः ४० एकोनिशीथेऽनलदिक्स्थितश्चदिव्येतरैस्तांशपथैर्नियोज्य ॥ पृच्छेद्यथाचिन्तितमर्थमेवमनेनमन्त्रेणयथाशृणोति ४१ ॥
सायंकाल के समय पिंगला जिस वृक्ष में रहतीहोय उस वृक्ष के समीप जाकर पवित्रहो ब्रह्मा आदि देवताओं का पूजनकर नये वस्त्र औ केसर कस्तूरीआदि सुगन्ध द्रव्योंसे उसवृक्षका पूजनकरै ४० फिर अर्धरात्रके समय अकेला उस वृक्षसे अग्निकोण में खड़ाहोकर देवता सम्बन्धी औ लौकिक शपथ (कसम) पिंगला को देकर इसमन्त्रको पढ़कर अपना मनोरथ पिंगला से पूछै। मन्त्र ऐसे स्वर से पढ़ना चाहिये जिसमें पिंगला उसको सुनलेवै अब मंत्र कहते हैं ४१ ॥

विद्धिभद्रेमयायत्त्वमिममर्थंप्रचोदिता ॥ कल्याणिसर्ववचसांवेदित्रीत्वंप्रकीर्त्यसे ४२ आपृच्छेद्यगमिष्यामिवेदितश्चपुनस्त्वहम् ॥ प्रातरागम्यपृच्छेत्वामाग्नेयींदिशमाश्रितः ४३ प्रचोदयाम्यहंयत्त्वांतन्मेव्याख्यातुमर्हसि॥स्वचेष्टितेनकल्याणियथावेद्मिनिराकुलम् ४४॥
ये सब मन्त्र पढ़कर पिंगलासे अपना कार्य पूछै ४२। ४३। ४४ ॥

इत्येवमुक्तेतरुमूर्धगायाश्चिरिल्विरिल्वीतिरुतेऽर्थसिद्धिः ॥ अत्याकुलत्वंदिशिकारशब्देकुचाकुचत्येवमुदाहृतेवा ४५ अवाक्प्रदानेपिहितार्थसिद्धिःपूर्वोक्तदिक्चक्रफलैरथान्यत् ॥ वाच्यंफलंचोत्तममध्यनीचशाखास्थितायांवरमध्यनीचम् ४६ ॥
इसप्रकार मंत्र पढ़नेके अनन्तर वृक्षके ऊपर स्थित पिंगला जो चिरल्वि रिल्वि ऐसाशब्दकरै तो कार्य सिद्धहोताहै। दिशिकार ऐसाशब्द अथवा कुचाकुच ऐसाशब्द पिंगला बोलै तो अति व्याकुलता होती है ४५ जो कुछ भी शब्द पिंगला न करै चुपरहै तो भी अभीष्टकार्य सिद्धहोता है। और विशेषफल पूर्वोक्त बत्तीस दिग्विभागों के अनुसार जानै। उत्तम शाखाके ऊपर पिं...

बैठीहोय तो उत्तमफल मध्यम शाखापर बैठीहोय तो मध्यम फल औ नीच शाखापर पिंगला बैठीहोय तो नीचफल करतीहै ४६ ॥

दिङ्मण्डलेऽभ्यन्तरबाह्यभागेफलानिविद्याद्गृहगोधिकायाः ॥
छुच्छुन्दरीचिच्चिडितिप्रदीप्तापूर्णातुसातित्तिडितिस्वनेन ४७ ॥

इतिसर्वशाकुनेविरुताध्यायस्तृतीयः ३ ॥

इतिश्रीवराहमिहिरकृतौबृहत्संहितायामष्टाशीतितमोऽध्यायः ८८ ॥

गृहगोधिका (छपकली) का फल बत्तीसभागों में बटेहुये दिक्चक्र औ मध्यभाग के अनुसार जानै। अर्थात् जो शांतदिशा में स्थित गृहगोधा मधुर शब्द बोलै तो शुभ होताहै । औ दीप्तदिशामें स्थित होकर दीप्तही शब्द करै तो अशुभ जानै। छुच्छुन्दरी जो चिच्चिड् ऐसा शब्दबोलै तो दीप्त औ तित्तिड् ऐसा शब्द बोलै तो पूर्ण अर्थात् शुभ होती है ४७ ॥

सर्वशाकुनमेंविरुतनामतीसराअध्यायसमाप्तहुआ ३ ॥

श्रीवराहमिहिराचार्यकीबनाईबृहत्संहितामेंअठासीवां
अध्यायसमाप्तहुआ ८८ ॥

नवासीवां अध्याय ॥

शाकुन ॥

श्वचक्र ॥

नृतुरंगकरिकुम्भपर्याणसक्षीरवृक्षेष्टकासंचयच्छत्रशय्यासनोलूखलानिध्वजंचामरंशाद्वलंपुष्पितंवा प्रदेशंयदाश्वाऽवमूत्र्याऽग्रतोयातियातुस्तदाकार्यसिद्धिर्भवेदार्द्रकेगोमयेमृष्टभोज्यागमः शुष्कसंमूत्रणेशुष्कमन्नंगुडोमोदकावाप्तिरेवाऽथवा ॥ अथविषतरुकण्टकीकाष्ठपाषाणशुष्कद्रुमास्थिश्मशानानिमूत्र्याऽवहत्याऽथवायायिनोऽग्रेसरोऽनिष्टमाख्यातिशय्याकुलालादिभाण्डान्यभुक्तान्य भिन्नानिवामूत्रयन्कन्यकादोषकृद् भुज्यमानानिचेद्दुष्टतांतद्गृहिण्यास्तथास्याद्रुपानत्फलंगोस्तसंमूत्रणेवर्णजःसङ्करः॥गगनमुखउपानहंसंप्रगृह्योपतिष्ठेद्यदास्यात्तदासिद्धये मांसपूर्णाननेऽर्थाप्तिरार्द्रेणचास्थ्नाशुभंसाग्न्यऽलातेनशुष्केणचास्थ्नागृहीतेनमृत्युःप्रशान्तोल्मुकेनाऽभिघातोऽथपुंसःशिरोहस्तपादादिवक्त्रेभुवोह्यागमोवस्त्रचीरादिभिर्व्यापदः केचिदाहुःसवस्त्रेशुभम् ॥ प्रविशतितुगृहंसशुष्कास्थिवक्त्रेप्रधानस्यतस्मिन्वधः शृङ्खलाशीर्णवल्लीवरत्रादिवाबन्धनचोपगृह्योपतिष्ठेद्यदास्यात्त

सूर्योदयेऽर्काभिमुखोविरौतिग्रामस्यमध्येयदिसारमेयः ॥
एकोयदावाबहवःसमेताः शंसन्तिचैवाधिपमन्यमाशु २ ॥
एक अथवा बहुतसे इकट्ठे होकर श्वान सूर्योदयके समय ग्रामके बीचसूर्य की ओर मुखकरके रोवें तो शीघ्रहीग्रामका स्वामी दूसरा होताहै २ ॥

सूर्योन्मुखःश्वाऽनलदिक्स्थितश्चचौराऽनलत्रासकरोऽचिरेण ॥
मध्याह्नकालेऽनलमृत्युशंसीसशोणितःस्यात्कलहोऽपराह्णे ३ ॥
अग्निकोणमें स्थितश्वान सूर्यकी ओर मुखकरके रोवै तो शीघ्रही चोरों से औ अग्निसेभय करताहै । मध्याह्नके समय सूर्यकी ओर मुखकरके श्वानरोवै तो अग्निकेभय औ मृत्युको सूचन करताहै। मध्याह्न के अनन्तर सूर्यकी ओर मुखकरके रोवै तो लड़ाई होय जिसमें रुधिर बहै ३ ॥

रुवन्दिनेशाभिमुखोऽस्तकाले कृषीबलानांभयमाशुदत्ते ॥
प्रदोषकालेऽनलदिङ्मुखश्च दत्तेभयंमारुततस्करोत्थम् ४ ॥
सूर्यास्तके समय सूर्यकी ओर मुखकरके श्वानरोवे तो शीघ्रहीखेती करने वालोंको भय देता है। प्रदोषके समय अग्निकोणको मुखकरके श्वान रोवै तो पवनसे औ चोर से भय देता है ४ ॥

उदङ्मुखश्चापिनिशार्धकाले विप्रव्यथांगोहरणंचशास्ति ॥
निशावसानेशिवदिङ्मुखश्च कन्याभिदूषाऽनलगर्भपातान् ५ ॥
आधीरातके समय उत्तरको मुखकरके श्वानरोवै तो ब्राह्मणोंको पीड़ा औ गौओंका हरणा सूचन करताहै। रात्रिकी समाप्ति के समय ईशान कोणका मुखकरके श्वानरोवै तो कन्याको दूषण अग्निकाभय औ स्त्रियों का गर्भपात होय यह सूचन करताहै ५ ॥

उच्चैःस्वराःस्युस्तृणकूटसंस्थाः प्रासादवेश्मोत्तमसंस्थितावा ॥
वर्षासुवृष्टिंकथयन्तितीव्रामन्यत्रमृत्युंदहनंरुजश्च ६ ॥
तृणोंके ढेरपर प्रासादपर अथवा उत्तम घरके ऊपर बैठेहुये श्वान ऊंचे स्वरसे बोलें तो वर्षा ऋतुमें प्रचंडवर्षाको कहते हैं । जो वर्षा ऋतुको छोड़ और ऋतुमें बोलें तो मृत्यु अग्नि औ रोगसे भय होय ६ ॥

प्रावृट्कालेऽवग्रहेम्भोऽवगाह्य प्रत्यावर्तैरेचकैश्चाप्यभीक्ष्णम् ॥
आधुन्वन्तोवापिवन्तश्चतोयं वृष्टिंकुर्वन्त्यन्तरेद्वादशाहात् ७ ॥
वर्षाऋतुमें वर्षाका अभाव होरहाहोय उससमय श्वानजलके बीचप्रवेश करके वारम्वार प्रत्यावर्त रेचकोंकरके युक्त होयँ अथवा जलको कंपाते हुये जलपीवें तो बारहदिनके भीतरवर्षा होजाती है।एकपार्श्व (करवट)को बदल

कर शिर व्यत्ययकरके उसीपाश्वंपर होना उसको प्रत्यावर्तरेचक कहते हैं ७॥

द्वारेशिरोन्यस्यबहिःशरीरं रोरूयतेश्वागृहिणींविलोक्य ॥

रोगप्रदःस्यादथमन्दिरान्तर्बहिर्मुखःशंसतिबन्धकींताम् ८ ॥

घरके द्वारकी देहलीपर अपना शिर औ बाहिर शरीर रखकर श्वान घर के स्वामीकी भार्याको देखकर रोवै तो उसको रोगहोताहै औ घरके भीतर शरीर औ बाहिर मुखरखकर रोवै तो वह स्त्री व्यभिचारिणी है यह सूचन करताहै८॥

कुड्यमुत्किरतिवेश्मनोयदा तत्रखानकभयंभवेत्तदा ॥

गोष्ठमुत्किरतिगोग्रहंवदेद्धान्यलब्धिमपिधान्यभूमिषु ९ ॥

घरकी भीतिको श्वानखोदै तो सेंधलगानेवाले चोरकाभय होताहै गोष्ठ (गौओं के रहनेका स्थान) कोखोदै तो गौवें हरीजावें धान्यजहां होते हैं उस भूमिको श्वानखोदै तो धान्यलाभ कहना चाहिये ९॥

एकेनाक्ष्णासाश्रुणादीनदृष्टिर्मन्दाहारोदुःखकृत्तद्गृहस्य ॥

गोभिःसार्धंक्रीडमाणःसुभिक्षं क्षेमारोग्यंचाभिधत्तेमुदंच १० ॥

श्वानकी एक आंख आंसुओंसे भरी होय दीनदृष्टि होय औ वह श्वान थोड़ा भोजनकरै तो जिसघरमें वह रहताहै उसघरमें दुःखकरता है गौओंके साथ श्वानखेलै तो सुभिक्षक्षेम आरोग्य औ हर्षको सूचन करताहै १०॥

वामंजिघ्रेज्जानुवित्तागमाय स्त्रीभिःसार्कविग्रहोदक्षिणंचेत् ॥

ऊरुंवामंचेन्द्रियार्थोपभोगाः सव्यंजिघ्रेदिष्टमित्रैर्विरोधः ११ ॥

वामजानुको श्वान सूंघे तो धनका लाभहोता है। दक्षिण जानुको सूंघे तो स्त्रियों के साथ कलहहोय। वामऊरु को सूंघै तो इन्द्रियों के विषयों का भोग होय। औ जो दक्षिण ऊरुको श्वानसूंघै तो इष्ट मित्रोंसे विरोध होय ११ ॥

पादौजिघ्रेद्यायिनश्चेदयात्रां प्राहाऽर्थाप्तिंवाञ्छितांनिश्चलस्य ॥

स्थानस्थस्योपानहौचेद्विजिघ्रेत् क्षिप्रंयात्रांसारमेयःकरोति १२ ॥

यात्रा करनेवाले पुरुषके पैरोंको श्वानसूंघै तो यह कहताहै कि यात्रामत कर यहांही मनमांगा धन मिलैगा। औ स्थान में स्थित पुरुष के जूतेको स्वानसूंवै तो शीघ्रही यात्रा करताहै १२ ॥

उभयोरपिजिघ्रणेहिवाह्वोर्विज्ञेयोरिपुचौरसंप्रयोगः ॥

अथभस्मनिगोपयतिभक्षान्मांसास्थीनिशीघ्रमग्निकोपः १३ ॥

दोनों भुजाओं को श्वान सूंवै तो शत्रु औ चोर से समागम होय। जो श्वान भक्षण करने के पदार्थ अपूप आदि मांस औ हड्डियों को भस्म में छिपावै तो शीघ्रही अग्नि का भय होता है १३ ॥

ग्रामेभषित्वाचबहिःश्मशानेभषन्तिचेदुत्तमपुंविनाशः ॥
यियासतश्चाभिमुखोविरौतियदातदाश्वानिरुणद्धियात्राम् १४ ॥

श्वान पहिले ग्राम में भूँककर पीछे बाहिर श्मशान में जाकर भूंकै तो ग्राममें उत्तम पुरुषका मृत्यु होताहै। यात्रा करनेवालेके सन्मुखरोवै तो यात्रा को रोकता है १४ ॥

ऊकारवर्णेनरुतेऽर्थसिद्धिरोकारवर्णेनचवामपार्श्वे ॥
व्याक्षेपमौकाररुतेनविद्यान्निषेधकृत्सर्वरुतैश्चपश्चात् १५ ॥

जो श्वान ऊ ऐसा शब्द करै तो अर्थ सिद्धिहोती है। औ यात्रा करनेवाले के वाम भाग में ओ ऐसा शब्द करैं तो भी अर्थ सिद्धि होतीहै। औ ऐसा शब्द करै तो व्याकुलता करता है। औ यात्रा करनेवाले के पीछे सबभांतिके शब्द श्वान करै तो यात्रा का निषेध करताहै १५ ॥

खंखेतिचोच्चैश्चमुहुर्मुहुर्येरुवन्तिदण्डैरिवताड्यमानाः ॥
श्वानोऽभिधावन्तिचमण्डलेनतेशून्यतांमृत्युभयंचकुर्युः १६ ॥

जो श्वान ऊंचे स्वर से वारम्वार खंख ऐसा शब्द करै मानों इनको कोई लाठीसे मारताहै। औ मण्डल के आकार दौड़ैं वे नगर आदि को शून्य करते हैं औ मृत्यु का भय करते हैं १६ ॥

प्रकाश्यदन्तानभिलेढिसृक्किणीतदाशनंमृष्टमुशन्तितद्विदः ॥
यदाननंचावलिहेन्नसृक्किणीप्रवृत्तभोज्येपितदाऽन्नविघ्नकृत् १७ ॥

जो श्वान दांत निकालकर अपनी सृक्कियों (ओष्ठोंकेप्रांत) को चाटै तो श्वान लक्षण जानने वाले मीठे भोजन की प्राप्ति कहते हैं। जो मुख कोही चाटै औ सृक्कियों को न चाटै तो सिद्ध भोजन में भी विघ्न करताहै अर्थात् भोजन न मिलै १७

ग्रामस्यमध्येयदिवापुरस्यभषन्तिसंहत्यमुहुर्मुहुर्ये ॥
तेक्लेशमाख्यान्तितदीश्वरस्यश्वारण्युसंस्थामृगवद्विचिन्त्यः १८ ॥

ग्रामके अथवा नगरके बीच बहुत से श्वान इकट्ठे होकर वारवार भूँकै वे उस ग्राम के अथवा नगरके स्वामी को क्लेश सूचन करते हैं। जंगल में स्थित श्वानका फल मृग के फलके तुल्य जानना चाहिये १८ ॥

वृक्षोपगेक्रोशतितोयपातःस्यादिन्द्रकीलेसचिवस्यपीडा ॥ वायो र्गृहेसस्यभयंगृहान्तःपीडापुरस्यैवचगोपुरस्थे १९ भयंचशय्यासुत

दीप्तस्वराणांयानेभषन्तोभयदाश्चपश्चात् ॥ अथाऽपसव्याजनसन्निवेशेषुभषन्तःकथयन्त्यरीणाम् २० ॥

इतिसर्वशाकुनेश्वचक्रंनामचतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

इतिश्रीवराहमिहिरकृतौबृहत्संहितायामेकोननवतितमोऽध्यायः ८९ ॥

वृक्षके समीप श्वान भूँके तो वर्षा होती है। द्वारके अर्गल के समीप भूँके तो राजा के मंत्री को पीड़ा होती है। घर के बीच वायुकोण में श्वान भूँके तो खेती को भय होताहै। नगरके द्वारमें भूँकै तो नगरकोही पीड़ाहोती है१९ शय्या के ऊपर भूँकै तो शय्याके स्वामियों को भय होताहै। यात्रा में पीछेसे भूँकै तो यात्रा करनेवाले का भय होताहै मनुष्योंके समीप वामभागमें भूँकते हुये श्वान शत्रुओंका भय कहते हैं २० ॥

सर्वशाकुनमेंश्वचक्रनामचौथाअध्यायसमाप्तहुआ ॥ ४ ॥

श्रीवराहमिहिराचार्यकीबनाईबृहत्संहितामेंनवासीवांअध्याय समाप्तहुआ ॥ ८९ ॥

नव्वेवांअध्याय ॥

शाकुन ॥

शिवारुत ॥

श्वभिःसृगालाःसदृशाःफलेनविशेषएषांशिशिरेमदाप्तिः ॥
हूहूरुतान्तेपरतश्चटाटापूर्णःस्वरोऽन्येकथिताःप्रदीप्ताः १ ॥

सृगालों का फल श्वानों केही तुल्य है इतनाही विशेष है कि शिशिरऋतु में सृगाल मस्तहोते हैं अर्थात् शिशिर में इनके शब्द आदि निष्फल हैं। हूहू ऐसा शब्द बोलकर पीछे टाटा ऐसा शब्द सृगाल बोलै तो पूर्ण है और सब भांति के शब्द दीप्त हैं १ ॥

लोमाशिकायाःखलुकक्कशब्दःपूर्णःस्वभावप्रभवःसतस्याः ॥
येऽन्येस्वरास्तेप्रकृतेरपेताःसर्वेचदीप्ताइतिसंप्रदिष्टाः २ ॥

लोमाशिका (लोमड़ी) का कक्क ऐसा शब्द पूर्ण है यह शब्द उसका स्वाभाविकहै इसको छोड़ और सब शब्द स्वाभाविक नहींहैं इसलिये सब दीप्तकहेहैं २ ॥

पूर्वोदीच्योःशिवाशस्ताशान्तासर्वत्रपूजिता ॥
धूमितांभिमुखीहन्तिस्वरदीप्तादिगीश्वरम् ३ ॥

पूर्व औ उत्तर में शिवा (सृगाली) शुभ फल देतीहै। शांतस्वर [illegible] सबही दिशाओं में शुभहै। धूमिता दिशाकी ओर मुखकरके दीप्तस्वर [illegible]

उसदिशाके स्वामीका नाशकरतीहै। दिशाओंके स्वामी मिश्रकाध्यायमें (राजा कुमारों नेताच) इत्यादि कहआये हैं ३॥

सर्वदिक्ष्वशुभादीप्ताविशेषेणाऽह्न्यशोभना॥
पुरेसैन्येऽपसव्याचकष्टासूर्योन्मुखीशिवा ४

दीप्तशिवा सब दिशाओंमें अशुभहै। दिनमें बोलै तो बिशेषकरके अशुभ होतीहै। नगरके अथवा सेनाके दक्षिणभागमें स्थितहोकर सूर्यकी ओरमुख करके शिवाबोलै तो अशुभ फल करतीहै ४॥

याहीत्यग्निभयंशास्तिटाटेतिमृतवेदिका॥
धिग्धिग्दुष्कृतमाचष्टेसज्वालादेशनाशिनी ५॥

याहि ऐसाशब्द शिवाबोलै तो अग्निके भयको कहतीहै। टाटाऐसा शब्द बोलै तो कोई बन्धु आदि मरगया यह सूचन करतीहै। धिग्धिग् ऐसाशब्द बोलै तो दुष्कृत (अतिकष्ट) को कहतीहै। बोलनेके समय उसके मुख से अग्निज्वाला निकलती होय तो देशका नाश करतीहै ५॥

नैवदारुणतामेकेसज्वालायाःप्रचक्षते॥
अर्काद्यनलवत्तस्यावक्त्रंलालास्वभावतः ६॥

ज्वाला सहित शिवाको कोई २ आचार्यदारुण नहींकहते। वेकहते हैं कि सूर्यादिकों में जिसभांति अग्निसाजलता देखपड़ता है इसीप्रकार उसकेमुख के लालके स्वभावसे उसकेमुखमें अग्निदेखपड़ताहै इसलिये दारुणनहींहै ६॥

अन्यप्रतिरुतायाम्यासोद्बन्धमृतशंसिनी॥
वारुण्यनुरुतासैवशंसतेसलिलेमृतम् ७॥

दक्षिणदिशामें शिवाबोलै औ उसके पीछे दूसरी शिवा शब्द करै तो फांसीलगाकर मरेमनुष्य को सूचनकरतीहै औ दक्षिण दिशामें शिवाबोलै औ दूसरी शिवा उसके पीछे पश्चिम में बोलै तो जलमें डूबकर मरे मनुष्य को सूचन करती है ७॥

अक्षोभःश्रवणंचेष्टंधनप्राप्तिःप्रियागमः॥ क्षोभःप्रधानभेदश्च वाहनानांचसम्पदः ८ फलमासप्तमादेतदग्राह्यम्परतोरुतम् ॥ या म्यायांतद्विपर्यस्तंफलंषट्पञ्चमादृते ९॥

एकवार शिवाबोलकर चुपहोजाय तो अक्षोभ दोवारबोलै तो भलीवार्त्ता का श्रवण तीनवारबोलै तो धनकी प्राप्ति चारवारबोलै तो प्रियका आगमन पांचवार बोलै तो क्षोभ छःवारबोलै तो प्रधान पुरुषों में भेद औ सातबारबोलै तो वाहनोंकी संपत्ति होतीहै ८ सातवारबोलने पर्यंत येफल कहे इससे आगे

दिशामेंबोले तो उसके शब्दका कुछ विचार न करै वह निष्फलहोताहै । दक्षिण दिशामें स्थितहोकर शिवाबोलै तो छठे औ पांचवें फलको छोड़ और सब फल विपरीत होजाते हैं ९ ॥

यारोमाञ्चंमनुष्याणांशकृन्मूत्रंचवाजिनाम् ॥
रावात्त्रासंचजनयेत्साशिवानशिवप्रदा १० ॥

जिस शिवाके बोलनेसे मनुष्योंको रोमांच होजाय घोड़े मूत्र औ विष्ठाकर देवें औ त्रासहोय वहशिवा कल्याण नहीं करती १० ॥

मौनंगताप्रतिरुतेनरद्विरदवाजिनाम् ॥
याशिवासाशिवंसैन्येपुरेवासंप्रयच्छति ११ ॥

शिवाबोले औ उसके अनंतर कोई मनुष्य हाथी अथवा घोड़ा शब्दकरे औ शिवा चुपहोजाय फिरनबोलैतो वहशिवासेनामें अथवा नगरमेंकल्याणकरतीहै ११॥

भेभेतिशिवाभयंकरीभोभोव्यापदमादिशेच्चसा ॥
मृतबन्धनिवेदिनीफिफेहूहूचात्महिताशिवास्वरे १२ ॥

भेभे ऐसाशब्द शिवाबोले तो भयकरती है। भोभो ऐसाशब्द बोलै तो विपत्तिको कहती है। फिफे ऐसाशब्द बोलै तो मृत्यु औ बंधनको कहतीहै हूहू ऐसाशब्दशिवाबोले तो उसशब्दको सुननेवाले मनुष्यका हितकरतीहै १२ ॥

शान्तात्ववर्णात्परमोरुवन्तीटाटामुदीर्णामितिवाश्यसाना ॥
टेटेचपूर्वंपरतश्चथेथेतस्याःस्वतुष्टिप्रभवंरुतंतत् १३ ॥

जोशिवा शान्त दिशामें स्थित होकर शांतस्वरसे अ ऐसाशब्द करके औ ऐसा शब्दकरे। अथवा टाटा ऐसा उत्कट शब्दकरै अथवा पहिले टेटे ऐसाशब्द करके पीछे थेथे ऐसा शब्दकरै । येशब्द शिवाके प्रसन्नताके हैं अर्थात् प्रसन्न होती है तब ऐसे शब्द बोलती है इसलिये ये शब्दशुभ हैं १३ ॥

उच्चैर्घोरंवर्णमुच्चार्यपूर्वंपश्चात्क्रोशेत्क्रोष्टुकस्यानुरूपम् ॥
यासाक्षेमंप्राहवित्तस्यचाप्तिंसंयोगंवाप्रोषितेनप्रियेण १४ ॥

इतिसर्वशाकुनेशिवारुतंनामपंचमोऽध्यायः ५ ॥

इतिश्रीवराहमिहिरकृतौबृहत्संहितायांनवतितमोऽध्यायः ९० ॥

जो शिवा पहिले ऊंचेस्वरसे भयंकर अक्षरको उच्चारणकर पीछे शृगाल के तुल्य शब्द करनेलगे वह शिवाक्षेम औ धन के लाभको कहती है अथवा विदेश में गये प्रियसे समागमको कहती हैं १४ ॥

सर्वशाकुनमेंशिवारुतनामपांचवांअध्यायसमाप्तहुआ ५ ॥

श्रीवराहमिहिराचार्यकीबनाईबृहत्संहितामेंनब्बेवांअध्यायसमाप्तहुआ

इक्यानवेका अध्याय ॥

शाकुन ॥

मृगचेष्टित ॥

सीमागतावन्यमृगारुवन्तः स्थिताव्रजन्तोऽथसमापतन्तः ॥
संप्रत्यतीतैष्यभयानिदीप्ताः कुर्वन्तिशून्यंपरितोभ्रमन्तः १ ॥

वनके मृग ग्रामकी सीमामें दीप्तहोकर शब्द करतेहुये स्थितहोयँ तो उसी कालमें भयको सूचन करते हैं जातेहुये होयँ तो व्यतीत भयको कहते हैं औ ग्रामकी ओर आतेहोयँ तो आगे होनेवाले भयको कहते हैं। औ ग्रामआदिके चारोंओर घूमैं तो उसको शून्य करदेते हैं १ ॥

तेग्राम्यसत्त्वैरनुवाश्यमाना भयायरोधायभवन्तिवन्यैः ॥
द्वाभ्यामपिप्रत्यनुवाशितास्ते वन्दिग्रहायैवमृगाभवन्ति २ ॥

ग्रामकी सीमा में स्थित उनदीप्त मृगों के शब्द के पीछे ग्रामके जीवशब्द करैं तो भयहोता है। वनकेही जीव उनकेपीछे शब्दकरैं तो नगरआदिको शत्रु घेरते हैं। वनके औ ग्रामके दोनोंही जीव उनकेपीछे शब्दकरैं तो उस नगरसे शत्रु मनुष्योंको कैदकरके लेजावैं २ ॥

वन्येसत्त्वेद्वारसंस्थेपुरस्य रोधोवाच्यःसंप्रविष्टेविनाशः ॥
सूतेमृत्युःस्याद्भयंसंस्थितेचगेहंयातेबन्धनंसंप्रदिष्टम् ३ ॥

इतिसर्वशाकुनेमृगचेष्टितंनामषष्ठोऽध्यायः ६ ॥

इतिश्रीवराहमिहिरकृतौबृहत्संहितायामेकनवतितमोऽध्यायः ९१ ॥

वनकाजीव नगरके द्वारपर खड़ाहोय तो नगरको शत्रुघेरैं। नगर के भीतर वनकाजीव प्रवेश करआवै तो नगरका नाशहोता है। जो उस वनके जीव को प्रसवहोजाय तो मृत्युहोताहै। जो वह वनकाजीव नगरमें आकर मरजाय तो भयहोताहै। घरमें वनकाजीव आजावै तो घरके स्वामीका बन्धनहोताहै ३ ॥

सर्वशाकुनमेंमृगचेष्टितनामछठाअध्यायसमाप्तहुआ ६ ॥

श्रीवराहमिहिराचार्यकीबनाईबृहत्संहितामेंइक्यानवेकाअध्यायसमाप्तहुआ ९१

बानवेका अध्याय ॥

शाकुन ॥

गवेंगित ॥

गावोदीनाःपार्थिवस्याऽशिवायपादैर्भूमिंकुट्टयन्त्यश्चरोगान् ॥
मृत्युंकुर्वन्त्यश्रुपूर्णायताक्ष्यःपत्युर्भीतास्तस्करानारुवन्त्यः १ ॥

गौदीन (उदास) होयँ तो राजाको अशुभहोता है अपने पैरोंसे भूमिको

कूटें तो रोग होतेहैं। गौओं के बड़े२ नेत्र आंसुओंसे भरेरहैं तो स्वामीका मृत्यु होताहै। जो गौ भयभीतहोकर बड़ाशब्दकरैं तो चोरआते हैं १॥

अकारणंक्रोशतिचेदनर्थोभयायरात्रौवृषभःशिवाय॥

भृशंनिरुद्धायदिमक्षिकाभिस्तदाशुवृष्टिंसरमात्मजैर्वा २॥

जो गौ विना कारण बोलै तो अनर्थ होता है। रात्रिको बोलै तो भयहोता है। बैल रात्रि के समय बोलै तो शुभहोता है। गौओंको बहुतसी मक्खीघेरैं अथवा श्वानघेरैं तो शीघ्रही वर्षाहोती है २॥

आगच्छन्त्योवेश्महम्भारवेणसंसेवन्त्योगोष्ठवृद्ध्यैगवांगाः॥

आर्द्राङ्ग्योवाहृष्टरोम्ण्यःप्रहृष्टाधन्यागावःस्युर्महिष्योऽपिचैवम् ३॥

इतिसर्वशाकुनेगवेङ्गितंनामसप्तमोऽध्यायः ७॥

इतिश्रीवराहमिहिरकृतौवृहत्संहितायांद्विनवतितमोऽध्यायः ९२॥

जो गौ हम्बा ऐसाशब्द बोलती हुई घरमें आवे औ घरका सेवनकरै तो गौओंके गोष्ठकी वृद्धिकरती हैं। जो गौओं के अंग जलसे भीगरहेहोयँ रोमांच होरहा होय औ गौ प्रसन्नहोयँ तो शुभहोती हैं इसीप्रकार महिषियों (भैंस) कोभी फलजानैं ३॥

सर्वशाकुनमेंगवेंगितनामसातवांअध्यायसमाप्तहुआ ७॥

श्रीवराहमिहिराचार्यकीवनाईवृहत्संहितामेंबानवेकाअध्यायसमाप्तहुआ ९२॥

तिरानवेका अध्याय॥

शाकुन॥

अश्वेंगित॥

उत्सर्गान्नशुभदमासनापरस्थंवामेचज्वलनमतोऽपरंप्रशस्तम्॥

सर्वाङ्गज्वलनमवृद्धिदंहयानांद्विवर्षेदहनकणाश्चधूपनंवा १॥

घोड़ोंके पर्याण स्थान से पश्चिम भागमें ज्वलनहोय तो सामान्यसे अशुभ होताहै। औ पर्याण स्थानके वामभागमें भी ज्वलन अशुभही है इससे और ज्वलन अर्थात् पर्याण स्थानके पूर्वमें अथवा दक्षिणभाग में ज्वलनहोय तो शुभहै। घोड़ोंके सब अंगोंमें ज्वलन होय तो क्षय करताहै। दो वर्ष पर्यंत घोड़ेके शरीर से अग्निकण निकलैं अथवा धूम निकलै तो भी क्षय करताहै। उत्पात वशसे घोड़ोंके अंगोंसे अग्नि ज्वाला सी निकलती हुई देखपड़ती है उसीको ज्वलन कहतेहैं १॥

अन्तःपुरंनाशमुपैतिमेढ्रेकोशःक्षयंयात्युदरेप्रदीप्ते॥

पायौचपुच्छेचपराजयःस्याद्वक्त्रोत्तमाङ्गज्वलनेजयश्च॥

घोड़ेका लिंग प्रदीप्तहोय अर्थात् उसमें ज्वलन होय तो राजाके अन्तःपुर का नाशहोताहै। पेट प्रदीप्तहोय तो कोश (खजाना) का क्षय होताहै गुदा औ पूँछ प्रदीप्तहोय तो युद्धमें पराजय होताहै। औ घोड़ेकामुख औ शिर ज्वलन युक्त होय तो युद्धमें जय होताहै २॥

स्कन्धासनांऽसज्वलनंजयायबन्धायपादज्वलनंप्रदिष्टम्॥
ललाटवक्षोक्षिभुजेषुधूमःपराजयायज्वलनंजयाय ३॥

स्कन्ध अर्थात् ग्रीवाके दोनों पार्श्वआसन (पर्याणस्थान) अंस (स्कन्धों के नीचे) अश्व के इन अंगोंका ज्वलनहोय तो जयहोता है। पादों (सुम) का ज्वलन होय तो स्वामी का बन्धन कहाहै। ललाट छाती नेत्र औ भुजा (अगले दोनों पैर) इन अंगोंसे धूम निकलै तो पराजय औ इन अंगों का ज्वलन होय तो जय होताहै ३॥

नासापुटप्रोथशिरोऽश्रुपातनेत्रेषुरात्रौज्वलनंजयाय॥
पालाशताम्रासितकर्बुराणांनित्यंशुकाभस्यसितस्यचेष्टम्४॥

नासिका के छिद्र प्रोथ (नासिकाका मध्यभाग) मस्तक अश्रुपात (गंडों का अधोभाग जहां घोड़ोंके आंसू गिरते हैं) औ नेत्र इन अंगोंका रात्रिके समय ज्वलनहोय तो जय होताहै। पलाशके रंग ताम्रवर्ण कृष्णवर्ण कर्बुर(अबलक) शुक के रंग (सबजा) औ श्वेत इन रंगोंके घोड़ेके अंगोंका ज्वलन सबकाल में शुभ होताहै ४॥

प्रद्वेषोयवसाऽम्भसांप्रपतनंस्वेदोनिमित्ताद्विनाकम्पोवावदनाच्चरक्तपतनंधूमस्यवासम्भवः॥ अस्वप्नश्चविरोधितानिशिदिवानिद्रालसध्यानतासादोऽधोमुखताविचेष्टितमिदंनेष्टंस्मृतंवाजिनाम्५॥

घास औ जल से द्वेष पतन (गिरना) कारण विना प्रस्वेद आना अथवा काँपना मुख से रक्त गिरना अथवा धूम निकलना रात्रिको नहीं सोना औ परस्पर लड़ना दिनमें निद्रासे आलस्ययुक्त होना औ चिन्तायुक्त होना साद (सुस्ती) नीचेको मुख रखना ये सब चेष्टा घोड़ोंकी शुभ नहीं हैं ५॥

आरोहणमन्यवाजिनांपर्याणादियुतस्यवाजिनः॥
उपवाह्यतुरङ्गमस्यवाकल्पस्यैवविपन्नशोभना ६॥

पर्याण आदि युक्त (कसाहुआ) घोड़े पर दूसरा घोड़ा चढ़ै तो शुभ नहीं होता औ नित्य जिस घोड़े पर चढ़ते हैं वह आरोग्यहो औ उसको अकस्मात् रोग आदि कुछ विपत्ति आजाय तो भी शुभ नहीं होताहै ६॥

क्रौञ्चवद्रिपुवधायहेषितंग्रीवयात्वचलयाचसोन्मुखम्॥

स्निग्धमुच्चमनुनादिहृष्टवद्ग्रासरुद्धवदनैश्चवाजिभिः ७ ॥

...पक्षीके तुल्य जो घोड़े शब्द करें ग्रीवा को स्थिर रखकर ऊंचा मुख उठाय जो शब्दकरें मधुर ऊंचा प्रतिध्वनियुक्त जो शब्दकरें प्रसन्नहोकर मुख में ग्रास भरे २ हो जो घोड़े शब्द करें तो शत्रुओं को जीतै ७ ॥

पूर्णपात्रदधिविप्रदेवतागन्धपुष्पफलकाञ्चनादिवा ॥
द्रव्यमिष्टमथवाऽपरंभवेद्धेषतांयदिसमीपतोजयः ८ ॥

घोड़े जिस समय शब्दकरें उस समय उनके समीप पूर्णपात्र दही ब्राह्मण देवता गन्ध पुष्प फल सुवर्ण आदि अथवा और कोई सर्षप गोरोचन आदि मंगल द्रव्यहोय तो जयहोताहै ८ ॥

भक्ष्यपानखलिनाऽभिनन्दिनःपत्युरौपयिकनन्दिनोऽथवा ॥
सव्यपार्श्वगतदृष्टयोऽथवावाञ्छितार्थफलदास्तुरङ्गमाः ९ ॥

घोड़े भक्षण करनेके द्रव्य पीने के द्रव्य औ खलीन (लगाम) को प्रसन्न होकर ग्रहण करें अथवा स्वामी को जो बात प्रसन्न होय उसको आनन्दसे ग्रहण करें । औ दक्षिण पार्श्व की ओर जिनकी दृष्टिहोय ऐसे घोड़े अभीष्ट फल के देने हैं ९ ॥

पादैश्चवामैरभिताडयन्तोमहींप्रवासायभवन्तिभर्तुः ॥
सन्ध्यासुदीप्तामवलोकयन्तोहेषन्तिचेद्बन्धपराजयाय १० ॥

जो घोड़े अपने वाम चरणों से भूमिको ताड़न करें तो स्वामी की विदेश में यात्रा होती है । सन्ध्या के समय दीप्त दिशाकी ओर मुख करके शब्द करें तो स्वामी का बन्धन औ पराजय होता है १० ॥

अतीवहेषन्तिकिरन्तिवालान्निद्रारताश्चप्रवदन्तियात्राम् ॥
रोमत्यजादीनखरस्वराश्चपांसून्ग्रसन्तश्चभयायदृष्टाः ११ ॥

घोड़े बहुतही शब्द करें पूंछ के वालों को फैलावें औ सोवें तो यात्रा को सूचन करते हैं । जो रोमों को गेरैंदीन औ रूखा शब्द करें औ धूलि को भक्षण करें तो स्वामी को भय होय यह सूचन करते हैं ११ ॥

समुद्गवद्दक्षिणपार्श्वशायिनःपदंसमुत्क्षिप्यचदक्षिणंस्थिताः ॥
जयायशेषेष्वपिवाहनेष्विदंफलंयथासम्भवमादिशेद्बुधः १२ ॥

जानु इकट्ठा करके सम्पुट के आकार दहिनी करवट से घोड़े सोवैं औ दहिना पैर उठाकर खड़े रहैं तो स्वामी का जय करतेहैं । बुद्धिमान् पुरुष और भी सब वाहनों में यह फल यथा संभव कथन करै १२ ॥

आरोहतिक्षितिपतौविनयोपपन्नोयात्रानुगोऽन्यतुरगंप्रतिहेषते ... ॥

वक्त्रेणवास्पृशतिदक्षिणमात्मपार्श्वं योऽश्वःसभर्तुरचिरात्प्रचिनोति लक्ष्मीम् १३ ॥

राजा जिस समय घोड़ेपर चढ़नेलगे उस समय घोड़ा विनयसे नम्रहोजाय जिस दिशाको यात्रा करनी है । उसी ओर चलै दूसरे घोड़े का शब्द सुन कर शब्द करै । अथवा मुखसे अपने दक्षिण पार्श्वको स्पर्श करै ऐसा घोड़ा शीघ्र ही अपने स्वामी की लक्ष्मी को बढ़ाताहै १३ ॥

मुहुर्मुहुर्मूत्रशकृत्करोतिनताड्यमानोप्यनुलोमयायी ॥
अकार्यभीतोऽश्रुविलोचनश्चशुभंनभर्तुस्तुरगोभिधत्ते १४ ॥

जो घोड़ा वारवार लीदकरै औ मूतै पीटनेसे भी सीधा न चलै विना कारण ही चमकै औ जिसके नेत्र आंसुओं से भरे होयँ ऐसा घोड़ा अपने स्वामी को शुभ नहीं करता १४ ॥

उक्तमिदंहयचेष्टितमतऊर्ध्वंदन्तिनांप्रवक्ष्यामि ॥
तेषांतुदन्तकल्पनभङ्गम्लानादिचेष्टाभिः १५ ॥

इतिसर्वशाकुनेऽश्वेङ्गितंनामाऽष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥
इतिश्रीवराहमिहिरकृतौबृहत्संहितायांत्रिनवतितमोऽध्यायः ॥ ९३ ॥

यह घोड़ों की चेष्टाका फलकहा अब हम हाथियोंकी चेष्टा आदिका फल कहते हैं । हाथियोंका शुभ अशुभफल दंतच्छेदकरके दंतके फटने करके दंतकी म्लानता आदि करके औ चेष्टा करके बिचारना चाहिये १५ ॥

सर्वशकुनमेंअश्वेङ्गितनामआठवांअध्यायसमाप्तहुआ ॥ ८ ॥
श्रीवराहमिहिराचार्यकीबनाईबृहत्संहितामेंतिरानबेका
अध्यायसमाप्तहुआ ॥ ९३ ॥

चौरानबेका अध्याय ॥

शाकुन ॥

हस्तींगित ॥

दन्तस्यमूलपरिधिंद्विरायतंप्रोज्झ्यमल्पयेच्छेषम् ॥ अधिकमनूपचराणांन्यूनंगिरिचारिणांकिञ्चित् १ श्रीवत्सवर्धमानच्छत्रध्वजचामरानुरूपेषु ॥ छेदेदृष्टेष्वारोग्यविजयधनवृद्धिसौख्यानि २ प्रहरणसदृशेषुजयोनन्द्यावर्तेप्रनष्टदेशाप्तिः ॥ लोष्टेतुलब्धपूर्वस्यभवतिदेशस्य संप्राप्तिः ३ स्त्रीरूपेऽस्वविनाशोभृंगारेऽभ्युत्थितेसुतोत्पत्तिः ॥ कुम्भेननिधिप्राप्तिर्यात्राविघ्नंचदण्डेन ४ कृकलासकपिभुजंगेष्वसुभिक्षव्याधयोरिपुवशत्वम् ॥ गृध्रोलूकध्वाङ्क्षश्येनाकारेषुजनमरकः ५ पा

दे०थवाक्रव्यगन्धेनृपमृत्युर्जनविपत्स्रुतेरक्ते ॥ कृष्णश्यावेरूक्षेदुर्गन्धेचा शुभंभवति ६ शुक्लःसमःसुगन्धिःस्निग्धश्चशुभावहोभवेच्छेदः ॥ ग लनम्लानफलानिचदन्तस्यसमानिभंगेन ७ ॥

इनसात आर्याओं में से साढे छः आर्या शय्यासन लक्षणाध्यायमें पहिले आचुकी हैं वहांही इनका अर्थ देखलो । सातवीं आर्याके उत्तरार्ध का यह तात्पर्य है कि हाथीका दांत गलजावै अथवा विवर्ण होजावै तो उनके फल दांत के टूटने के समानही जानने चाहिये ७ ॥

मूलमध्यदशनाग्रसंस्थिता देवदैत्यमनुजाःक्रमात्ततः ॥
स्फीतमध्यपरिपेलवंफलं शीघ्रमध्यचिरकालसंभवम् ८ ॥

हाथीके दंतके मूल मध्य औ अग्र भागमें देवता दैत्य औ मनुष्य स्थितहैं । इनभागोंमें जो दंतच्छेद आदि होयँ तो क्रमसे पूर्ण फल मध्यफल औ स्वल्प फल होताहै । औ शीघ्र मध्यकाल औ विलम्बसे क्रमकरके फलहोता है ८ ॥

दन्तभंगफलमत्रदक्षिणे भूपदेशबलविद्रवप्रदम् ॥
वामतःसुतपुरोहितेभपान् हन्तिसाटविकदारनायकान् ९॥

हाथी का दहिना दांत मूल मध्य औ अग्रसे टूटै तो क्रमसे राजा को देश को औ सेना को पलायन (शत्रुके भयसे भागना) करना पड़ै । वाम दन्त के मूल मध्य औ अग्र में टूटने से राजपुत्र पुरोहित औ हाथियों के स्वामी का क्रम से नाश होता है । औ वाम दंत के मूल मध्य औ अग्र के टूटने से आटविक (वनमें रहनेवाली सेना) राजाकी रानी औ प्रधान पुरुषोंका भी क्रमसे क्षय होता है ९ ॥

आदिशेद्दुभयभंगदर्शनात्पार्थिवस्यसकलकुलक्षयम् ॥
सौम्यलग्नतिथिभादिभिःशुभंवर्धतेऽशुभमतोऽन्यथाभवेत् १०॥

जो हाथीके दोनों दांत फूटजायँ तो यह कहै कि राजा के सब कुल का क्षय होजायगा । सौम्य ग्रहके लग्न सौम्यतिथि औ सौम्य नक्षत्र आदि में दंतभंगहोय तो शुभफल बढ़ता है औ क्रूरलग्न आदिमें दंतभंगहोय तो अशुभ फल होता है १० ॥

क्षीरवृक्षफलपुष्पपादपेष्वापगातटविघट्टितेनवा ॥
वाममध्यरदभंगखंडनंशत्रुनाशकृदतोऽन्यथाऽपरम् ११ ॥

क्षीरवृक्ष फल औ पुष्पयुक्त वृक्षोंके उखाड़ने से अथवा नदीके तटोंकेविघट्टनसे जो हाथीके वामदंतके मध्यका भंग अथवा खंडनहोय तो शत्रु नाशकरता है । इससे विपरीत होय तो शत्रु वृद्धि करता है ११ ॥

स्खलितगतिरकस्मात्त्रस्तकर्णोऽतिदीनः श्वसितिमृदुसुदीर्घंन्यस्तहस्तःपृथिव्याम् ॥ द्रुतमुकुलितदृष्टिःस्वप्नशीलोविलोमोभयकृदहितभक्षीनैकशोऽसृक्छकृच्च १२ ॥

जोहाथी बिनाकारण चलताहुआ ठोकरखाय कर्ण जिसके हिलने से बंद होजायँ अति दीनहोय धीरे २ लंबे श्वास लेवै शुंडको भूमिपर टेकदेवैचकित औ मुकुलित जिसके नेत्रहोयं बहुतसोवै जिधर लेजावें उधरन जाय नखाने के पदार्थोंको खानेलगे बारबार रुधिर टपकावै औ बिष्ठाकरै वह हाथी अपने स्वामीको भय करता है १२ ॥

वल्मीकस्थाणुगुल्मक्षुपतरुमथनःस्वेच्छयाहृष्टदृष्टिर्यायाद्यात्रानुलोमंत्वरितपदगतिर्वक्त्रमुन्नामचोच्चैः॥कक्षासन्नाहकालेजनयतिचमुहुःशीकरंबृंहितंवातत्कालंवामदन्तिर्जयकृदथरदंवेष्टयनदक्षिणंवा १३॥

जो हाथी अपनी इच्छासे वल्मीकस्थाणु (शाखाहीनवृक्ष) गुल्मक्षुप (छोटेवृक्ष) औ वृक्षोंकामर्दनकरै जिसकी दृष्टिप्रसन्नहोय जिधर जानाचाहते हैं उधरही ऊंचामस्तक उठाय शीघ्रगतिसेचलै हौदाकसने के समय शुण्ड से बारबार जलके बिन्दु उड़ावै अथवागर्जै अथवा उसीकालमें मदयुक्तहोजावै औ शुण्डसे अपने दहिनेदांतको लपेटै वहहाथी अपनेस्वामी का जय करताहै १३॥

प्रवेशनंवारिणिवारणस्यग्राहेणनाशायभवेन्नृपस्य ॥
ग्राहंगृहीत्वोत्तरणंद्विपस्यतोयात्स्थलंवृद्धिकरंनृभर्तुः १४ ॥

इतिसर्वशाकुनेहस्तींगितंनामनवमोऽध्यायः ९ ॥

इतिश्रीबराहमिहिरकृतौबृहत्संहितायांचतुर्नवतितमोऽध्यायः ९४ ॥

हाथीको ग्राह (घडियाल) पकडकर जलके भीतर लेघुसै तो राजाका मृत्युहोताहै । औ हाथी ग्राहको जलके भीतरसे लेकर बाहिर आजावै तो राजाकी वृद्धि होती है १४ ॥

सर्वशाकुनमेंहस्तींगितनामनवांअध्यायसमाप्तहुआ ९ ॥
श्रीवराहमिहिराचार्यकीबनाईबृहत्संहितामेंचौरानवेका
अध्याय समाप्तहुआ ९४ ॥

पञ्चानबेकाअध्याय ॥

शाकुन ॥

वायसविरुत ॥

प्राच्यानांदक्षिणतःशुभदःकाकःकरायिकावामा ॥
विपरीतमन्यदेशेष्ववधिर्लोकप्रसिद्ध्यैव १ ॥

पूर्वदेशके निवासी मनुष्योंको काकदहिने औ करायिका वायें होय तो शुभ होताहै और दिशा के देशोंमें काकवायें औ करायिका दहिने होयँ तो शुभहोते हैं। पूर्वआदिदेशोंकी अवधि लोक प्रसिद्धसे जानै १ ॥

वैशाखेनिरुपहतेवृक्षेनीडःसुभिक्षशिवदाता ॥
निन्दितकण्टकिशुष्केष्वसुभिक्षभयानितद्देशे २ ॥

वैशाखमहीनेमें निरुपद्रव वृक्षके ऊपर काककाघोंसला होय तो सुभिक्ष औ कल्याण होताहै। निन्दित काठोंकरके युक्त औ सूखेवृक्षपर काकका घोंसला होय उस देशमें दुर्भिक्ष औ भय होते हैं २ ॥

नीडेप्राक्शाखायांशरदिभवेत्प्रथमवृष्टिरपरस्याम् ॥ याम्योत्तरयोर्मध्याप्रधानवृष्टिस्तरोरुपरि ३ शिखिदिशिमण्डलवृष्टिर्नैर्ऋत्यां शारदस्यनिष्पत्तिः ॥ परिशेषयोःसुभिक्षंमूषकसम्पत्तुवायव्ये ४ ॥

वृक्षमें पूर्वदिशाकी शाखापर काक का घोंसलाहोय तो आश्विनकार्तिक में वर्षा होती है पश्चिम शाखापर होय तो श्रावण भाद्रपदमें वर्षा होती है। दक्षिण अथवा उत्तरकी शाखापर होय तो भाद्रपद आश्विन में वर्षा होती है वृक्षके ऊपर मुख्य शाखामें काकका घोंसलाहोय तो चारोंमहीने वर्षा होतीहै ३ अग्निकोणकी शाखाके ऊपरहोय तो खंडवृष्टि होती है। नैर्ऋत्यकोणकी शाखापर होय तो शरत्ऋतुकी खेती अच्छीहोती है वायव्य औ ईशानकोण की शाखापर काकका घोंसला होय तो सुभिक्ष होताहै वायव्यकोणमें होय तो मूषकभी बहुत होते हैं ४ ॥

शरदर्भगुल्मवल्लीधान्यप्रसादगेहनिम्नेषु ॥
शून्योभवतिसदेशश्चौरानावृष्टिरोगार्तः ५ ॥

शर कुश गुल्म वेल धान्यदेवप्रासाद घर औ गढ़ेमें जहां काकका घोंसला होय वह देशचोर अवृष्टि औ रोगोंकरके पीड़ित हुआ२ शून्य होजाता है ५ ॥

द्वित्रिचतुःशावत्वंसुभिक्षदंपञ्चभिर्नृपान्यत्वम् ॥
अण्डावकिरणमेकाण्डताऽप्रसूतिश्चनशिवाय ६ ॥

काकके दो अथवा तीनबच्चेहोयँ तो सुभिक्षहोय पांचबच्चे होयँ तो दूसरा राजा होय काकअपने अंडों को फेकदेवै एकही अण्डा देवै अथवा प्रसवहीन होय तो शुभ नहीं होता ६ ॥

चोरकवर्णैश्चौराश्चित्रैर्मृत्युःसितैश्चवह्निभयम् ॥
विकलैर्दुर्भिक्षभयंकाकानांनिर्दिशेच्छिशुभिः ७ ॥

काकके बच्चे चोरनामक गन्धद्रव्य के समान रंगहोयँ तो चोर[illegible] है

चित्रवर्ण होयँ तो मृत्यु होताहै श्वेतरंग होयँ तो अग्निभय होता है। औ काकोंके बच्चे अंगहीन होयँ तो दुर्भिक्षका भय कहना चाहिये ७॥

अनिमित्तसंहतैर्ग्राममध्यगैःक्षुद्भयंप्रवाशद्भिः॥
रोधश्चक्राकारैरभिघातोवर्गवर्गस्थैः ८॥

विना कारण ग्रामके मध्यमें इकट्ठे होकर काक शब्दकरैं तो दुर्भिक्ष भय होता है चक्रके आकार काक स्थित होयँ तो ग्राम घेराजाताहै। औ कई स्थान में समूह २ होकर काक बैठें तो उपद्रव होता है ८॥

अभयाश्चतुण्डपक्षैश्चरणविघातैर्जनानभिभवन्तः॥
कुर्वन्तिशत्रुवृद्धिंनिशिविचरन्तोजनविनाशम् ९॥

काक निर्भय होकर अपने चोंचसे परों से औ पंजों के मारने से मनुष्यों का पराभव करैं तो शत्रुओं की वृद्धि करते हैं। रात्रि के समय काक बिचरैं तो मनुष्यों का नाश करते हैं ९॥

सव्येनखेभ्रमद्भिःस्वभयंविपरीतमण्डलैश्चपरात्॥
अत्याकुलंभ्रमद्भिर्वातोद्भ्रामोभवतिकाकैः १०॥

आकाश में दक्षिण क्रम से अर्थात् पूर्व दक्षिण पश्चिम उत्तर इस क्रम से काक भ्रमण करैं तो अपनेही से भय होताहै वामक्रमसे भ्रमण करैं तो शत्रुसे भय होता है औ बहुत व्याकुल होकर काक आकाश में भ्रमण करैं तो अनवस्थिति होती है १०॥

ऊर्ध्वमुखाश्चलपक्षाःपथिभयदाःक्षुद्भयायधान्यमुषः॥
सेनाङ्गस्थायुद्धंपरिमोषंचान्यभृतपक्षाः ११॥

काक ऊपर को मुख किये पक्षों को हिलाते होयँ तो मार्गमें भयहोता है। अन्नको काक चोरकर लेजावैं तो दुर्भिक्ष होता है। सेना के अंगोंपर काक बैठें तो युद्ध होता है। कोकिल के तुल्य अतिकृष्ण काकोंके पक्षहोयँ तो चोरी होती है ११॥

भस्मास्थिकेशपत्राणिविन्यसन्पतिबधायशय्यायाम्॥
मणिकुसुमाद्यवहननेसुतस्यजन्मान्यथाङ्गनायाश्च १२॥

शय्या के ऊपर भस्म हड्डी केश अथवा पत्ते लाकर काक रक्खे तो शय्या के स्वामी का मृत्यु होता है। मणिपुष्प फल आदि करके शय्याको काक ताड़नकरैं तो पुत्र जन्महोय औ और किसी वस्तु से ताड़न करै तो कन्या का जन्म होता है १२॥

पूर्णाननेऽर्थलाभःसिकताधान्यार्द्रमृत्कुसुमपूर्वैः॥

भयदोजनसंवासाद्यदिभाण्डान्यपनयेत्काकः १३॥

...त थान गीली मृत्तिका पुष्प फल आदि से मुखभर कर काक आवै तो धनकालाभ होता है मनुष्यों के समीप से काक कुछ भांड (वस्तु) उठाले जावे तो भय होताहै १३॥

वाहनशस्त्रोपानच्छत्रछायाङ्गकुट्टनेमरणम्॥
तत्पूजायांपूजाविष्ठाकरणेऽन्नसंप्राप्तिः १४॥

वाहन शस्त्र जूता छत्र शरीर की छाया औ अंग इनको काक कूटै तो मृत्यु होताहै। इनकी पूजाकरै अर्थात् इनके ऊपर पुष्प आदि डालै तो पूजा होती है औ इनके ऊपर बीठकरै तो अन्नका लाभ होताहै १४॥

यद्द्रव्यमुपनयेत्तस्यलब्धिरपहरतिचेत्प्रणाशःस्यात्॥
पीतद्रव्येकनकंवस्त्रंकार्पासिकेसितेरूप्यम् १५॥

जो द्रव्य काकलेआवे उसका लाभ होता है औ जो द्रव्य उठालेजावे उसका नाश होताहै। पीत वस्तुसे सुवर्ण कपास से वस्त्र औ श्वेत वस्तु से चांदीका लाभ औ हानिजाने १५॥

क्षीरार्जुनवंजुलकूलद्वयपुलिनगारुवन्तश्च॥
प्रावृषिवृष्टिंदुर्दिनमनृतौस्नाताश्चपांशुजलैः १६॥

जो काक क्षीर वृक्षपर अर्जुनवृक्ष अशोक वृक्षपर अथवा नदी के दोनों ओर के तटोंपर बैठकर शब्दकरै तो वर्षाऋतु में वर्षा करते हैं और ऋतुमें शब्दकरैं तो बादल होतेहैं। इसीप्रकार धूलिसे अथवा जलसे काक स्नानकरै तो वर्षाऋतुमें वर्षा औ अन्यऋतु में दुर्दिन होताहै १६॥

दारुणनादस्तरुकोटरोपगोवायसोमहाभयदः॥
सलिलमवलोक्यविरुवन्वृष्टिकरोऽब्दानुरावीवा १७॥

जो काक वृक्षके कोटरमें बैठ क्रूरशब्दबोलै तो महाभयहोता है। जलको देखकर काक बोले अथवा बादल गर्जनेकेपीछे काकबोलै तो वर्षा होतीहै १७॥

दीप्तोद्विग्नेविटपेविकुट्टयन्वह्निकृद्विधुतपक्षः।
रक्तद्रव्यंदग्धंतृणकाष्ठंवागृहेविदधत् १८॥

जो काक लता वितान के ऊपर बैठ सूर्यकी ओर मुखकर दुःखितहो चोंच से कूटताहुआ पंख हिलावै तो अग्निका भय होताहै। लालरंगकी वस्तु जली वस्तु तृण अथवा काष्ठको लाकर काकघरमें रक्खे तोभी अग्निकाभयहोताहै १८॥

ऐन्द्र्यादिदिगवलोकीसूर्याभिमुखोरुवन्गृहेगृहिणः॥
राजभयचोरबन्धनकलहाःस्युःपशुभयंचेति १९॥

जोकाक घरमें सूर्यकी ओर मुखकर पूर्वआदि चार दिशाओंको देखताहुआ बोलै तो घरके स्वामीको क्रमसे राजभय चोरभय बंधन औ कलह होते हैं। औ चारों विदिशाओंकी ओर देखकरबोलै तो पशुओं को भयहोताहै १९॥

शान्तामैन्द्रीमवलोकयन्रूरुयाद्राजपुरुषमित्राप्तिः॥ भवतिचसुवर्णलब्धिःशाल्यन्नगुडाशनाप्तिश्च २० आग्नेय्यामनलाजीविकयुवतिप्रवरधातुलाभश्च॥ याम्येमापकुलत्थाभोज्यंगान्धर्विकैर्योगः २१ नैर्ऋत्यांदूताश्वोपकरणदधितैलपललभोज्याप्तिः॥ वारुण्यांमांससुरासवधान्यसमुद्ररत्नाप्तिः २२ मारुत्यांशस्त्रायुधसरोजवल्लीफलाशनाप्तिश्च॥ सौम्यायांपरमान्नाशनंतुरङ्गाऽम्बरप्राप्तिः २३ ऐशान्यांसंप्राप्तिर्घृतपूर्णानांभवेदनडुहश्च॥ एवंफलगृहपतेर्गृहपृष्ठसमाश्रितेभवति २४॥

शान्त पूर्वदिशाको देखताहुआ काक बोलै तो राज पुरुष औ मित्रका आगमन होताहै। सुवर्णका लाभहोताहै। शालीका भात औ गुड़युक्त भोजनभी मिलताहै २० शांतअग्निकोणको देखता हुआ काकबोलै तो अग्निसे जीविका करनेवाले सुनार आदि औ तरुण स्त्रीसे समागम औ उत्तम धातुका लाभहोता है। शांत दक्षिण दिशाको देखताहुआकाकबोलै तो उड़द औ कुलथ भोजन को मिलते हैं औ गानेवालों से समागम होताहै २१॥ शांतनैर्ऋत्य कोणको देखताहुआ काकबोलै तो दूत घोड़के उपकरण दहीतेल मांस औ भोजन करने के पदार्थोंका लाभहोताहै शांत पश्चिम दिशाको देखता हुआ काकबोलै तो मांस मद्य आसव धान्य औ समुद्रमें उत्पन्न हुये रत्नोंकी प्राप्ति होती है २२ शांत वायव्यकोणको देखता हुआ काकबोलै तो लोह आयुध (खड्गआदि) सरोवरमें उत्पन्नहुये द्रव्य वेलफल औ भोजनकी प्राप्ति होती है। शांत उत्तर दिशाको देखताहुआ काक बोलै तो खीर भोजन मिलै घोड़े औ वस्त्रकी प्राप्ति होय २३ शांत ईशानकोणको देखताहुआ काक बोलै तो घृतप्लुत भोजन मिलैं औ एक बैलका लाभभी होय। येसबफल घरके ऊपर बैठकर काकबोलै तब उसघरके स्वामीको होते हैं २४॥

गमनेकर्णसमश्चेत्क्षेमायनकार्यसिद्धयेभवति॥
अभिमुखमुपैतियातुर्विरुवन्विनिवर्तयेद्यात्राम् २५॥

यात्राके समय यात्रा करनेवाले पुरुषके कानके बराबर होकर काक उड़ जाय तो कल्याण करताहै कार्यसिद्धि नहीं होतीहै औ शब्द करताहुआ काक यात्रा करने वाले के संमुख आवै तो यात्रासे लौटाता है २५॥

वामेवाशित्वादौदक्षिणपार्श्वेऽनुवाशतेयातुः॥
अर्थापहारकारीतद्विपरीतोऽर्थसिद्धिकरः २६॥

यात्राकरनेवाले के वामभाग में पहिले शब्दकरके पीछे काक दक्षिणभाग में शब्दकरै तो धनको हरता है औ पहिले दहिने बोलकर पीछे बायेंबोलै तो धनलाभ होताहै २६॥

यदिवामएवविरुयान्मुहुर्मुहुर्यायिनोऽनुलोमगतिः॥
अर्थस्यभवतिसिद्ध्यैप्राच्यानांदक्षिणश्चैवम् २७॥

यात्राकरनेवाले के वामभागमेंही काकबोलै औ अनुलोम गतिहोय अर्थात् यात्राकरनेवाले के साथ२ चलै तो धनकालाभ करताहै। पूर्वदिशा के निवासी मनुष्योंके दहिने काकबोलै औ अनुलोमगतिहोय तो धनलाभ करताहै २७॥

वामःप्रतिलोमगतिर्वाशन्गमनस्यविघ्नकृद्भवति॥
तत्रस्थस्यैवफलंकथयतियद्वाञ्छितंगमने २८॥

यात्राकरनेवाले के वामभाग में शब्दकरताहुआ काक प्रतिलोमगति होय अर्थात् यात्राकरनेवाले के सम्मुख आवै तो यात्रा में विघ्न करता है। वह काक यह सूचन करता है कि यात्रा करके जो फल चाहता है वह घर बैठेही होजायगा २८॥

दक्षिणविरुतंकृत्वावामेविरुयाद्यथेप्सितावाप्तिः॥
प्रतिवाश्यपुरोयायाद्द्रुतमग्रेऽर्थागमोऽतिमहान् २९॥

यात्राकरनेवाले के दक्षिणभाग में शब्दकरके जो काक वामभाग में शब्द करै तो मनमाना कार्य सिद्धिहोय। यात्राकरनेवाले के पीछे शब्द करके जो काक शीघ्र आगेचलाजावै तो यात्राकरनेवालेको आगे बहुतधनमिलताहै२९॥

प्रतिवाश्यपृष्ठतोदक्षिणेनयायाद्द्रुतंक्षतजकर्ता॥
एकचरणोऽर्कमीक्षन्विरुवंश्चपुरोरुधिरहेतुः ३०॥

यात्राकरनेवाले के पीछे काक शब्द करके दहिने ओर होकर शीघ्र चला जाय तो यात्राकरनेवाले के शरीर से रुधिर निकलै। जो काक एकपैर स्थित हो सूर्य को देखताहुआ शब्दकरे तोभी यात्राकरनेवाले के शरीर से आगे रुधिर निकलताहै ३०॥

दृष्ट्वार्कमेकपादस्तुण्डेनालिखेद्यदास्वपिच्छानि॥
पुरतोजनस्यमहतोवधमभिधत्तेतदाबलिभुक् ३१॥

जो काक सूर्यकी ओर देख एकपैर के ऊपर स्थित होकर चोंचसे अपने पंखोंको लिखै तो आगे किसी प्रधान मनुष्य के वधको सूचन करता है ३१॥

सस्योपेतेक्षेत्रेविरुवतिशान्तेससस्यभूलब्धिः ॥
आकुलचेष्टोविरुवन्सीमान्तेक्लेशकृद्यातुः ३२ ॥
खेतीयुक्त खेतमें काकशांत होकर बोलै तो खेती सहित भूमिका लाभहोताहै। ग्रामकी सीमाके अंतमें स्थित होकर जो काक व्याकुल होकर शब्दकरै तो यात्राकरने वालेको क्लेश होताहै ३२ ॥

सुस्निग्धपत्रपल्लवकुसुमफलानम्रसुरभिमधुरेषु ॥
सक्षीराऽव्रणसुस्थितमनोज्ञवृक्षेषुचार्थकरः ३३ ॥
जो काक सुन्दर स्निग्ध वृक्षके ऊपर औ पत्र पल्लव (कोमलपत्र) पुष्प औ फलोंसे झुकेहुये वृक्षों के ऊपर सुगंध युक्त मधुर फलों वाले क्षीरयुक्तव्रण रहित भलीभांति स्थित औ मनोहर वृक्षों के ऊपर बैठा होय तो अर्थ सिद्धि करता है ३३ ॥

निष्पन्नसस्यशाद्वलभुवनप्रसादहर्म्यहरितेषु ॥
धन्योच्छ्रयमङ्गल्येषुचैवविरुवन्धनागमदः ३४ ॥
पकीहुई खेती हरीदूर्वा करके युक्त स्थल घर देवप्रासाद हर्म्य (महल) हरे वर्णके स्थान धन्य (शुभस्थान) ऊंचा स्थान औ मंगलस्थान इनमें से किसी स्थानपर बैठकर काकबोलै तो धनकी प्राप्ति करता है ३४ ॥

गोपुच्छस्थेवल्मीकगेऽथवादर्शनंभुजङ्गस्य ॥
सद्योज्वरोमहिषगेविरुवतिगुल्मेफलंस्वल्पम् ३५ ॥
गौकी पूंछपर अथवा वल्मीकपर बैठकर काक बोलै तो सर्पका दर्शन होता है। महिषके ऊपर बैठकर काकबोलै तो उसीदिन ज्वर चढ़ताहै। गुल्म (एक मूलकाशाखासमूह) पर बैठकर काकबोले तो शुभ अशुभफल थोड़ा होताहै ३५॥

कार्यस्यव्याघातस्तृणकूटेवामगेऽम्बुसंस्थेवा ॥
ऊर्ध्वाग्निप्लुष्टेऽशनिहतेचकाकेनधोभवति ३६ ॥
यात्राकरनेवाले के वाम भागमें तृणोंके ढेरपर अथवा जलपर बैठकरकाक बोलै तो कार्यकानाश होता है। ऊपरसे अग्निकरके जलेहुये अथवा बिजली से मारेहुये वृक्षपर काक बैठकर बोलै तो मृत्यु होता है ३६ ॥

कण्टकिमिश्रेसौम्येसिद्धिःकार्यस्यभवतिकलहश्च ॥
कण्टकिनिभवतिकलहोवल्लीपरिवेष्टितेबन्धः ३७ ॥
कांटवाले वृक्षोंकरके युक्त उत्तमवृक्षपर काक बैठाहोय तो कार्यसिद्धिहोजाताहै औ कलहभी होता है। कांटोंकरके युक्त वृक्षपर काक बैठा होय तो कलह

होताहै। जिसवृक्षको वेललिपट रहीहोयँ उसपर वैठकर काक बोलै तो बंधन होता है ३७ ॥

छिन्नाग्रेऽङ्गच्छेदः कलहः शुष्कद्रुमस्थिते ध्वाङ्क्षे ॥
पुरतश्च पृष्ठतो वा गोमयसंस्थे धनप्राप्तिः ३८ ॥

ऊपरसे कटेहुये वृक्षपर काकहोय तो यात्राकरनेवालेका अंगकटजाय ॥ सूखेवृक्षपर काकवैठा होय तो कलह होताहै। यात्रा करनेवालेके आगे अथवा पीछे गोबर पर काकवैठाहोय तो धनकी प्राप्ति होती है ३८॥

मृतपुरुषाऽङ्गावयवस्थितोऽभिवाशन्करोति मृत्युभयम् ॥
भंजन्नस्थि च चञ्च्वा यदि वाशत्यस्थिभङ्गाय ३९ ॥

मरेहुवे पुरुष के शरीर पर अथवा हाथ पैर आदि किसी अवयव परबैठ कर काकयात्राकरनेवालेके संमुख शब्दकरै तो मृत्युका भयहोता है । चोंच से हड्डीको फोड़ताहुआ काकशब्द करै तो यात्रा करनेवालेकीहड्डी टूटतीहै ३९॥

रज्ज्वऽस्थिकाष्ठकण्टकिनिःसारशिरोरुहानने रुवति ॥
भुजगगदद्रंष्ट्रितस्करशस्त्राऽग्निभयान्यनुक्रमशः ४० ॥

जो काकरस्सी हड्डी काष्ठ कांटोंवाली वस्तु निःसारवस्तु औ केश मुखमें ले कर शब्द करै तो क्रमसे सर्पका रोगका दाढ़वाले जीव सूकर आदि का चोर का शस्त्रका औ अग्निकाभय यात्राकरने वालेको होता है ४० ॥

सितकुसुमाऽशुचिमांसानने ऽर्थसिद्धिर्यथेप्सिता यातुः ॥
पक्षौ धुन्वत्यूर्ध्वानने च विघ्नं मुहुः क्वणति ४१ ॥

श्वेतपुष्प विष्ठा आदि अमेध्यवस्तु अथवा मांस मुखमें लेकर काकवोलै तो यात्रा करनेवालेका मनमाना कार्य सिद्ध होताहै । पंखों को हिलाता औ ऊपरको मुखकिये वारवार काकवोलै तो यात्रामें विघ्नकरताहै ४१ ॥

यदि शृङ्खलां वरत्रां वल्लीं वादाय वाशते बन्धः ॥
पाषाणस्थे च भयं क्लिष्टाऽपूर्वाऽध्विकयुतिश्च ४२ ॥

सांकल चमड़े की वद्धी अथवा वेलको ग्रहण करके काकवोलै तो यात्रा करने वालेका वंधन होताहै। पाषाणके ऊपर स्थित काक वोलै तो भयहोय औ क्लेशयुक्त औ अपूर्व पांथ (मुसाफ़िर) से समागम होय ४२ ॥

अन्योन्यभक्ष्यसंक्रामितानने तुष्टिरुत्तमा भवति ॥
विज्ञेयः स्त्रीलाभो दम्पत्योर्वाशतोर्युगपत् ४३ ॥

दो काक परस्पर भोजन मुखमें देवैं तो यात्राकरने वालेको उत्तमसंतो-

होता है। स्त्री औ पुरुष दोनोंकाकइकट्ठेही बोलैं तो यात्रा करनेवालेको स्त्री का लाभहोताहै ४३ ॥

प्रमदाशिरउपगतपूर्णकुम्भसंस्थेऽङ्गनार्थसंप्राप्तिः ॥
घटकुट्टनेसुतविपद्घटोपहदनेऽन्नसंप्राप्तिः ४४ ॥

स्त्रीके शिरके ऊपर जलसे भराघटहोय उसपर बैठकर काक शब्दकरै तो स्त्री का औधनका लाभहोता है। घटको चोंचसे कूटै तो पुत्रमरण होय औ घटके ऊपर काक विष्ठाकरै तो अन्नकालाभहोय ४४ ॥

स्कन्धावारादीनांनिवेशसमयेरुवंश्चलत्पक्षः ॥
सूचयतेऽन्यस्थानंनिश्चलपक्षस्तुभयमात्रम् ४५ ॥

स्कंधावार (लश्कर) आदिके प्रवेशके समय पंखहिलाताहुआ काकशब्द करै तो यह सूचन करताहै कि और स्थानपर जाकर रहनाहोगा। औ पंख-विना हिलाये शब्दकरै तो केवल भयको सूचनकरताहै ४५ ॥

प्रविशद्भिःसैन्यादीन्सगृध्रकङ्कैर्विनामिषंध्वाङ्क्षैः ॥
अविरुद्धैस्तैःप्रीतिर्द्विषताथुद्धंविरुद्धैश्च ४६ ॥

सेना नगर ग्राम आदिमें गीध औ कंक पक्षियों करके सहित काकमांस विनालिये प्रवेश करें औ आपुसमें विरोध न करें तो शत्रुके साथ प्रीति होजाय औ वे काक आदिपक्षी परस्पर विरोध करें तो शत्रुसे युद्धहोय ४६ ॥

बन्धःसूकरसंस्थेपङ्काक्तेसूकरेद्विकेऽर्थाप्तिः ॥
क्षेमंखरोष्ट्रसंस्थेकेचित्प्राहुर्वधंतुखरे ४७ ॥

सूकर के ऊपर काक बैठाहोय तो यात्राकरनेवालेका बन्धनहोय कर्दम से लिपेहुये सूकरपर काकबैठाहोय तो धनकालाभहोय । गर्दभ अथवा ऊंटपर काक बैठाहोय तो कल्याणहोय। कोई आचार्य कहते हैं कि गर्दभपर काक बैठाहोय तो यात्राकरनेवालेका मृत्युहोताहै ४७ ॥

वाहनलाभोऽश्वगतेविरुवत्यनुयायिनिक्षतजपातः ॥
अन्येप्यनुव्रजन्तोयातारंकाकवद्विहगाः ४८ ॥

घोड़ेपर बैठकर काक शब्दकरै तो घोड़ेआदि वाहनका लाभहोता है यात्रा करनेवाले के पीछे चलताहुआ काकबोलै तो रुधिर का पात होय। यात्रा करनेवाले के पीछे और भी कोई पक्षी गमनकरैं तो उनका फल काकके तुल्य जानना चाहिये ४८ ॥

द्वात्रिंशत्प्रविभक्तेदिक्चक्रेयद्यथासमुद्दिष्टम् ॥
तत्तत्तथाविधेयंगुणदोषफलंयियासूनाम् ४९ ॥

दिशाओं के बत्तीसभागकर जो फल जैसे पहिले कहहैं वे शुभ अशुभ फल निश्चयकरके यात्राकरनेवालोंको कहने चाहिये ४९ ॥

काइतिकाकस्यरुतंस्वनिलयसंस्थस्यनिष्फलंप्रोक्तम् ॥ कवइति चात्मप्रीत्यैकइतिरुतेस्निग्धमित्राप्तिः ५० करइतिकलहंकुरुकुरुच चहर्षमथकटकटेतिदधिभक्तम् ॥ केकवविरुतंकुकुवाधनलाभंयायि नःप्राह ५१ ॥

अपने घोसले में बैठा काकका ऐसा शब्द बोलै वह शब्द निष्फल होता है। कवऐसा शब्द अपना प्रीतिके लिये होताहै। क ऐसाशब्द बोलैतो प्यारे मित्रकी प्राप्ति होतीहै ५० कर ऐसा शब्द बोलै तो कलहहोताहै कुरुकुरु ऐसा शब्द बोले तोहर्षहोताहै। कटकट ऐसाशब्द बोलैतो दहीभात भोजन मिलता है। केकव ऐसाशब्द अथवा कुकु ऐसाशब्द काकबोलै तो यात्राकरने वालेको धनकालाभ सूचन करता है ५१ ॥

खरेखरेपथिकागममाहकखाखेतियायिनोमृत्युम् ॥
गमनप्रतिषेधिकमाखलखलसद्योऽभिवर्षाय ५२ ॥

खरे खरे ऐसाशब्द काकबोलै तो विदेश में गयाहुआ पथिक (मुसाफिर) आवै। कखाख ऐसाशब्द बोले तो यात्राकरनेवाले का मृत्युहोय। आ ऐसा शब्द काक बोले तो यात्रा में विघ्नकरता है। खलखल ऐसा शब्द करै तो उसीदिन वर्षाहोय ५२ ॥

काकेतिविघातंकाकटीतिचाहारदूषणंप्राह ॥
प्रीत्यास्पदंकवकवेतिबन्धमेवंकगाकुरिति ५३ ॥

का का ऐसा शब्द काक बोलै तो यात्राकरनेवाले का विघात (नाश) होय काकटी ऐसाशब्द काकबोलै तो यह सूचन करता है कि भोजन में विषआदि मिलाहै। कव कव ऐसा शब्द बोलै तो किसी के साथ प्रीति होती है। औ कगाकु ऐसा शब्द काक बोलै तो यात्रा करनेवाले का बन्धनहोय ५३ ॥

करकौविरुतेवर्षगुडवत्रासायवडितिवस्त्राप्तिः ॥
कलयेतिचसंयोगःशूद्रस्यब्राह्मणैःसाकम् ५४ ॥

करकौ ऐसाशब्द काकबोलै तो वर्षाहोय। गुडव ऐसा शब्द काकबोलै तो भयहोय। वड् ऐसा शब्द काकबोलै तो वस्त्रका लाभहोय। कलय ऐसाशब्द काकबोलै तो शूद्रका ब्राह्मणों के साथ समागमहोय ५४ ॥

फडितिफलाप्तिःफलवाहिदर्शनंटडितिप्रहाराःस्युः ॥
स्त्रीलाभःस्त्रीतिरुतेगडितिगवांपुडितिपुष्पाणाम् ५५ ॥

फड् ऐसाशब्द काकबोलै तो फलोंकी प्राप्तिहोय औ फलोंको लेजानेवाले का दर्शनहोय। टड् ऐसा शब्द काक बोलै तो यात्राकरनेवालेपर प्रहारहोयँ। स्त्री ऐसा शब्द काकबोलै तो स्त्रीकालाभ गड् ऐसा शब्दबोलै तो गौओं का लाभ औ पुड् ऐसाशब्द बोलै तो पुष्पोंका लाभ होताहै ५५॥

युद्धायटाकुटाकितिगुहुवह्निभयंकटेकटेकलहः॥
टाकुलिचिरिटिचिकेकेकेतिपुरंवेतिदोषाय ५६॥

टाकु टाकु ऐसा शब्द काक बोलै तो युद्ध होताहै। गुहु ऐसा शब्द काक बोलै तो अग्नि भय होताहै। कटे कटे ऐसा शब्द बोलै तो कलह होताहै। टाकुलि चिरिटचि के के के पुरंये शब्द काकबोलै तो दोषकेलिये होताहै ५६॥

काकद्वयस्यापिसमानमेतत्फलंयदुक्तंरुतचेष्टिताद्यैः॥
पतत्रिणोऽन्येऽपियथैवकाकोवन्याःश्ववच्चोपरिदंष्ट्रिणोये ५७॥

दो काक के शब्द चेष्टा आदि का भी यही फलहै जो एक काक का कहा है। और पक्षियों का फल भी काक के तुल्यही जानना चाहिये। बनमें रहने वाले जीव औ ऊपर जिनके दाढ़ होतीहैं वे सूकर आदि जीव उन सबका फल श्वानके तुल्य जानना चाहिये ५७॥

स्थलसलिलचराणांव्यत्ययोमेघकाले प्रचुरसलिलवृष्ट्यैशेषकालेभयाय॥ मधुभवननिलीनंतत्करोत्याशुशून्यंमरणमपिनिलीनामक्षिकामूर्ध्निनीला ५८॥

वर्षा ऋतु में स्थलचर औ जलचर जीवों का व्यत्यय होय अर्थात् स्थल पर रहने वाले जीव बकरा आदि जलमें प्रवेश करें औ जल में रहने वाले मत्स्य आदि स्थलपर आवैं तो बहुत वर्षा होती है वर्षा ऋतुको छोड़ अन्य ऋतुमें ऐसा व्यत्यय होय तो भय होताहै। जिस घर में शहत की मक्खी छत्तालगावैं वह घरशीघ्रही शून्य होजाताहै। नीलीमक्खी जिसके शिरके ऊपर बैठे उसका मृत्यु होता है ५८॥

विनिक्षिपन्त्यःसलिलेऽण्डकानिपिपीलिकावृष्टिनिरोधमाहुः॥
तरुंस्थलंवापिनयन्तिनिम्नाद्यदातदाताःकथयन्तिवृष्टिम् ५९॥

जो कीड़ी अपने अंडों को पानी में डालैं तो वर्षारुक जाती है। औ नीचे स्थान से जो कीडी अपने अंडों को वृक्ष के ऊपर अथवा ऊंचे स्थान पर उठा कर ले जावैं तो वर्षा होती है ५९॥

कार्येतुमूलशकुनेऽन्तरजेतदह्निविद्यात्फलंनियतमेवमिमेविचिन्त्याः॥
प्रारम्भयानसमयेषुतथाप्रवेशेग्राह्यंक्षुतंनशुभदंक्वचिदप्युशन्ति ६०॥

यात्रामें कार्य मूल शकुन के अधीनहै अर्थात् शुभ शकुन होय तो सफल यात्रा औ अशुभ शकुन होय तो निष्फल यात्रा होती है पूर्वोक्त रीतिसे अंतर शकुन होवें तो निश्चय करके उनका फल उसी दिन जाने। ये सब शकुन कार्य के प्रारंभ में यात्रा के समय औ प्रवेश के समय देखने चहिये। छींक होने पर कोई कार्य न करै क्योंकि छींक को किसी कार्य में भी शुभ नहीं कहते हैं ६० ॥

शुभंदशापाकमविघ्नसिद्धिंमूलाभिरक्षामथवासहायान् ॥
इष्टस्यसंसिद्धिमनामयत्वंवदन्तितेमानयितुर्नृपस्य ६१ ॥

जो राजा शकुनों को माने उसको वे शकुन शुभ दशाका फल निर्विघ्नसे कार्य सिद्धि मूलस्थान की रक्षा सहाय करनेवालों का समागम अभीष्टकार्य की सिद्धि औ आरोग्य को सूचन करते हैं ६१ ॥

क्रोशादूर्ध्वंशकुनविरुतंनिष्फलंप्राहुरेकेतत्राऽनिष्टेप्रथमशकुनेमानयेत्पञ्चपड्च ॥ प्राणायामान्नृपतिरशुभेषोडशैवद्वितीयेप्रत्यागच्छेत्स्वभवनमतोयद्यनिष्टस्तृतीयः ६२ ॥

इतिसर्वशाकुनेवायसविरुतंनामदशमोऽध्यायः ॥ १० ॥
इतिश्रीवराहमिहिरकृतौबृहत्संहितायांपञ्चनवतितमोऽध्यायः ॥ ९५ ॥

कश्यप आदि कोई आचार्य कहते हैं कि अपने स्थान से एक कोस चले जाने के अनंतर शकुन का शब्द होय तो निष्फल होता है अर्थात् कोस के भीतर शकुन होय तो सफल होता है। जो पहिले शकुन अशुभहोय तो ग्यारह प्राणायाम करके राजा यात्रा करै दूसरा शकुन अशुभ होय तो सोलह प्राणायाम करके यात्रा करे औ तीसरा भी शकुन अशुभ होय तो अपने घर को लौट आवै अर्थात् तीन अशकुन होयँ तो यात्रा न करै ६२ ॥

सर्वशाकुनमेंवायसविरुतनामदशवांअध्यायसमाप्तहुआ ॥ १० ॥
श्रीवराहमिहिराचार्यकीबनाईबृहत्संहितामेंपंचानवेकाअध्याय समाप्तहुआ ९५ ॥

छियानवेकाअध्याय ॥

शाकुन ॥

शाकुनोत्तर ॥

दिग्देशचेष्टास्वरवासरर्क्षमुहूर्तहोराकरणोदयांशान् ॥
चरस्थिरोन्मिश्रबलाबलंचबुद्ध्वाफलानिप्रवदेद्रुतज्ञः १ ॥

पूर्वआदि दिशा स्थान जीवकी चेष्टा दीप्त अथवा शांत स्वर औ नक्षत्र मुहूर्त होरा करण लग्न नवांश द्रेष्काण आदि अंश चरस्थिर औ [illegible] व

राशियों का वल अवल इन सवका विचार कर शकुनों के शब्दों को जानने वाला विद्वान् फल कहै १ ॥

द्विविधंकथयन्तिसंस्थितानामागामिस्थिरसंज्ञकंचकार्यम् ॥
नृपदूतचराऽन्यदेशजातान्यभिघातःस्वजनादिचागमाख्यम्२॥

एक स्थानमें स्थित पुरुषों को शकुन दोप्रकार के कार्योंका सूचन करतेहैं। एक आगामि अर्थात् आगे होनेवाले औ दूसरे स्थिर अर्थात् जो उसकाल में वर्तमान हैं। राजा दूत चर (गूढ़ पुरुप) इनसे उत्पन्न कार्य अभिघात (उपद्रव) औ वन्धुजनआदि से समागम ये सव कार्य आगामि संज्ञक हैं २ ॥

उद्वद्धसंग्रहणभोजनचौरवह्निवर्षोत्सवात्मजवधाःकलहोभयंच॥वर्गःस्थिरोऽयमुदयेन्दुयुतेस्थिरर्क्षेविद्यात्स्थिरंचरगृहेचचरंयदुक्तम्३॥

उदवद्ध (संलग्न) अर्थात् गमन आगमन रहित वहांही स्थित किसी के साथ संयोग भोजन चोर अग्नि वर्षा उत्सव पुत्र जन्म मृत्यु कलह औ भय यह कार्योंका समूह स्थिर कहाता है । स्थिर राशि लग्नहो उसमें चन्द्र वैठा होय औ उस लग्न में शकुनहोय तो स्थिर कार्यजानै औ चन्द्रयुक्त चरलग्न में शकुनहोय तो चरकार्य जो कहा उसको जानै ३ ॥

स्थिरप्रदेशोपलमन्दिरेषुसुरालयेभूजलसन्निधौच ॥
स्थिराणिकार्याणिचराणियानिचलप्रदेशादिषुचागमाय ४ ॥

निश्चल स्थान पत्थर मन्दिर औ देवालय पर अथवा भूमि औ जल के समीप शकुनहोयँ तो शुभ अशुभ स्थिर कार्य होते हैं । औ चलस्थान आदि में शकुन होयँ तो चर कार्यों के आगमन के लिये होते हैं ४ ॥

आप्योदयर्क्षक्षणदिग्जलेषुपक्षावसानेषुचयेप्रदीप्ताः ॥
सर्वेऽपितेवृष्टिकरारुवन्तःशान्तोऽपिवृष्टिंकुरुतेऽम्बुचारी ५ ॥

जलचर राशि लग्न होय जल नक्षत्र (पूर्वाषाढ़ा औ शतभिषक्) होय जल मुहूर्त (वारुण) जलदिशा (पश्चिम) होय औ जलयुक्त स्थानहोय इनमें जो शकुनहोयँ अमावास्या औ पूर्णिमाको जो शकुन होयँ औ दीप्तहोकर शब्दकरैं तो वे सव शकुन वर्षा करते हैं। औ जल में रहनेवाला शकुन शांत भी होय तोभी वर्षाकरताहै ५ ॥

आग्नेयदिग्लग्नमुहूर्तदेशेष्वर्कप्रदीप्तोऽग्निभयायरौति ॥
विष्टयांयमर्क्षोदयकण्टकेषुनिष्पत्रवल्लीषुचमोषकृत्स्यात् ६ ॥

अग्नि दिशा (पूर्व दक्षिण) अग्नि लग्न (क्रूर ग्रह राशि) अग्नि मुहूर्त औ अग्नियुक्त स्थान इनमें सूर्य प्रदीप्त शकुन शब्दकरै तो अग्निभय होताहै।

भद्रामें मकर कुम्भलग्न में कांटोंवाले वृक्षके ऊपर औ पत्रहीन वेल के ऊपर बैठकर जो शकुन शब्दकरै तो चोरीहोती है ६ ॥

ग्राम्यःप्रदीप्तःस्वरचेष्टिताभ्यामुग्रोरुवन्कण्टकिनिस्थितश्च ॥
भौमर्क्षलग्नेयदिनैर्ऋतींचस्थितोऽभितश्चेत्कलहायदृष्टः ७ ॥

ग्राममें रहनेवाला शकुन स्वर औ चेष्टाकरके दीप्ततीव्र होकर शब्दकरता हुआ कांटोंवाले वृक्षपर बैठा मेप वृश्चिक लग्न में बोलै औ दहिने वायें देख पड़ै तो कलह करता है ७ ॥

लग्नेऽथवेन्दोर्भृगुभांशसंस्थे विदिक्स्थितोऽधोवदनश्चरौति ॥
दीप्तःसचेत्संग्रहणंकरोतियोन्यातयायाविदिशिप्रदिष्टा ८ ॥

कर्क लग्नमें शुक्रके नवांशमें विदिशामें स्थित शकुन नीचेको मुखकिये शब्द करै औ वह दीप्त होय तो उसविदिशामें पहिले जिस स्त्रीकी उत्पत्ति कह आये हैं उसके साथ संयोग होताहै ८ ॥

पुंराशिलग्नेविषमेतिथौचदिक्स्थःप्रदीप्तःशकुनोनराख्यः ॥
वाच्यंतदासंग्रहणंनराणांमिश्रेभवेत्पण्डकसंप्रयोगः ९ ॥

पुरुष राशि लग्न होय प्रति पदा तृतीया आदि विषम तिथि होयँ इनमें औ चारों दिशाओं में से किसी दिशामें स्थित पुरुष शकुन दीप्त होकर बोलै तो पुरुषों से संयोग होताहै। पुरुष राशि आदि मिश्र होयँ तो नपुंसक से समागम होताहै ९ ॥

एवंरवेःक्षेत्रनवांशलग्नेलग्नेस्थितेवास्वयमेवसूर्ये ॥
दीप्तोऽभिधत्तेशकुनोभिवाशन्पुंसःप्रधानस्यहिकारणंतत् १० ॥

इसी भांति सूर्य की राशि (सिंह) का नवांश होय अथवा लग्न होय अथवा सूर्य ही लग्नमें बैठा होय उस समय दीप्त शकुन शब्द करै तो मुख्य पुरुपके आगमन को सूचन करताहै १० ॥

प्रारभ्यमाणेषुचसर्वकार्येष्वर्कान्विताद्भाद्गणयेद्विलग्नम् ॥
सम्पद्विपच्चेतियथाक्रमेणसम्पद्विपद्वापितथैववाच्या ११ ॥

किसी कार्यका आरम्भ करै तो जिस लग्नमें कार्य आरम्भ करना होय उसलग्नपर्यंत सूर्य की राशि से सम्पत् विपत् इस क्रमसे गिनै अर्थात् सूर्य जिस राशिपर होय उसपर सम्पत् दूसरी राशिपर विपत् तीसरी पर सम्पत् इसप्रकार लग्न पर्यंत गिनने से लग्न की राशिपर जो सम्पत् विपत् आवै वैसाही उसकार्य में संपत्ति औ विपत्ति जानै ११ ॥

काणेनाक्ष्णादक्षिणेनैतिसूर्येचन्द्रेलग्नाद्द्वादशेचेतरेण ॥ लग्न

स्थेऽर्केपापदृष्टेऽन्धएवकुब्जःस्वर्क्षेश्रोत्रहीनोजडोवा १२ क्रूरःषष्ठे क्रूरदृष्टोविलग्नाद्यस्मिन्राशौतद्गृहाङ्केव्रणःस्यात् ॥ एवंप्रोक्तं यन्मयाजन्मकाले चिह्नंरूपंतत्तदस्मिन्विचिन्त्यम् १३ ॥

जिस पुरुषके साथ संयोग होगा उसका स्वरूप कैसाहै यह जाननेका यह प्रकारहै। जो उस लग्न से बारहवां सूर्य होय तो वह पुरुष दहिनी आंख से काना होताहै चन्द्रमा लग्नसे बारहवां होय तो वामनेत्र से काना होता है। लग्नमें सूर्य होय औ पापग्रह उसको देखते होयं तो अंधा पुरुष आता है। सिंहलग्न में सूर्य स्थितहोय तो वहपुरुष कुबडा बहरा अथवा जड होताहै १२ लग्नसे छठे स्थानमें क्रूरग्रह बैठाहोय औ उसको क्रूरग्रह देखते होयं तोवह छठे स्थानकी राशिकाल पुरुषके जिस अंगमें स्थितहोय उस पुरुषके उस अंगमें व्रण होता है। इसी प्रकार और भीहमने बृहज्जातकके जन्माध्यायमें जो चिह्न औ रूप कहे हैं वेसब यहांभी विचारने चाहिये। काल पुरुषके अंगोंमें जो राशि जहां स्थित है यह भी बृहज्जातक में कहा है। वहां सेही जानना चाहिये १३ ॥

द्व्यक्षरंचरगृहांशकोदये नामचास्यचतुरक्षरंस्थिरे ॥
नामयुग्ममपिचद्विमूर्तिषुत्र्यक्षरंभवतिचास्यपंचभिः १४ ॥

चर लग्न औ चर नवांश होय तो उस पुरुषका नाम दोअक्षरका होता है, स्थिर लग्न औ स्थिर नवांश होय तो चार अक्षरका नाम होताहै द्विस्वभाव लग्न औ द्विस्वभाव नवांश होयं तो उस पुरुषके दो नाम होते हैं एक नाम तीन अक्षरका औ दूसरा नाम पांच अक्षरका होता है १४ ॥

काद्यास्तुवर्गाःकुजशुक्रसौम्यजीवार्कजानांक्रमशःप्रदिष्टाः ॥ वर्णाऽष्टकंयादिचशीतरश्मेरवेरकारात्क्रमशःस्वराःस्युः १५ नामानिचाग्न्यऽम्बुकुमारविष्णुशक्रेन्द्रपत्नीचतुराननानाम् ॥ तुल्यानिसूर्यात्क्रमशोविचिन्त्यद्वित्र्यादिवर्णैर्घटयेत्स्वबुद्ध्या १६ ॥

कवर्ग मंगलका चवर्ग शुक्रका टवर्ग बुधका तवर्ग बृहस्पतिका औ पवर्ग शनैश्चरका है यकार आदि आठ अक्षर चंद्रमाके हैं औ अकार आदि स्वर सूर्यके हैं। इससे यहप्रयोजनहै कि जिस पुरुषसे संयोगहोगा उसका नाम जानना। लग्नके केंद्रोंमें जोग्रह होयं औ जिसनवांशमें होयं उसके अनुसार अक्षरलेना फिर जो सूर्य लग्नका अथवा नवांशका पतिहोय तो अग्निके पर्याय शब्द नामकल्पना करै इसीभांति चंद्र आदिके स्वामी होनेसे जल कार्तिकेय विष्णु इंद्र शची औ ब्रह्मा इनके पर्याय नामजानै। औ दो तीन आदि अक्षरोंका नाम अपनी बुद्धिसे कल्पना करै १५। १६ ॥

वयांसितेषांस्तनपानबाल्यव्रतस्थितायौवनमध्यवृद्धाः ॥
अतीववृद्धाइतिचन्द्रभौमज्ञशुक्रजीवार्कशनैश्चराणाम् १७॥
इतिसर्वशाकुनेशाकुनोत्तरंनामैकादशोऽध्यायः ११ ॥
इतिसर्वशाकुनंसमाप्तम् ॥
इतिश्रीवराहमिहिरकृतौवृहत्संहितायांषण्णवतितमोऽध्यायः ९६ ॥

उनपुरुषों की अवस्था इस प्रकार जानै कि चंद्र बलवान् होय तो दुग्ध पीता हुआ बालक भौम होय तो बालक दोवर्षसे ऊपर छःवर्ष पर्यंत बुध बलवान् होय तो ब्रह्मचारी अर्थात् सात वर्षसे सोलह वर्ष पर्यंत शुक्रबलवान् होय तो युवा अर्थात् सोलह वर्षसे तीस वर्षपर्यंत वृहस्पति बलवान् होयतो मध्य अर्थात् पचास वर्षपर्यंत सूर्य बलवान् होय तो वृद्ध अर्थात् अस्सी वर्ष पर्यंत औ शनि बलवान होय तो अतिवृद्ध अर्थात् अस्सी वर्षसे सौ वर्ष पर्यंत अवस्था उनपुरुषों की जानै १७ ॥

सर्वशाकुनमेंशाकुनोत्तरनामग्यारहवांअध्यायसमाप्तहुआ ११ ॥
सर्वशाकुनसमाप्तहुआ ॥
श्रीवराहमिहिराचार्यकीवनाईवृहत्संहितामेंछियानवेका
अध्यायसमाप्तहुआ ९६ ॥

सतानवेंकाअध्याय ॥

पाकाध्याय ॥

पक्षाद्भानोःसोमस्यमासिकोऽङ्गारकस्यवक्रोक्तः ॥ आदर्शनाच्चपाकोबुधस्यजीवस्यवर्षेण १ षड्भिःसितस्यमासैरब्देनशनेःसुरद्विषोऽब्दार्धात् ॥ वर्षात्सूर्यग्रहणेसद्यःस्यात्त्वाष्ट्रकीलकयोः २ त्रिभिरेव धूमकेतोर्मासैःश्वेतस्यसप्तरात्रान्ते ॥ सप्ताहात्परिवेषेन्द्रचापसन्ध्याभ्रसूचीनाम् ३ ॥

अर्क चारमें सूर्यका जो शुभ अशुभफल कहा वह एक पक्ष (पन्द्रहदिन) में होता है । चंद्रका फल एक महीनेमें होता है । मंगलका फल वक्र में जैसा कहा उतने कालमें होता है । बुधकाफल जबतक बुध उदित रहै तब तक होताहै । वृहस्पतिका फल एक वर्षमें होताहै १ शुक्रका फल छः महीनेमें शनैश्चरका फल एक वर्षमें होताहै । राहुका अर्थात् चंद्रग्रहणका फल छः महीनेमें होताहै । सूर्यग्रहणका फल एक वर्षमें होताहै त्वष्टा नाम ग्रहका औ तामस कीलकोंका फल उसी दिन होताहै २ धूम केतुका फल तीन महीनेमें होताहै । श्वेत नाम केतुकाफल सात दिनमें होताहै । परिवेष इंद्रधनु संध्या औ अभ्रसूचीका फल सात दिन में होताहै ३ ॥

शीतोष्णविपर्यासःफलपुष्पमकालजंदिशांदाहः ॥
स्थिरचरयोरन्यत्वंप्रसूतिविकृतिश्चषण्मासात् ४ ॥

शीतकालमें गर्मी औ उष्णकाल में शीतपड़ै विनाऋतुके फल पुष्प उत्पन्नहोयं दिग्दाह होय वृक्ष आदि स्थिर पदार्थ चलने लगें औ पशु आदिचर स्थिर होजायं औ प्रसूतिके विकारहोयं इनसबका फल छःमहीनेमें होताहै४ ॥

अक्रियमाणककरणंभूकम्पोऽनुत्सवोदुरिष्टंच ॥
शोषश्चाशोष्याणांस्रोतोऽन्यत्वंचवर्षार्धात् ५ ॥

नहीं करनेके योग्य कार्यका करना भूकम्प उत्सव का न करना अनिष्ट का होना नहीं सूखनेवाले तडाग आदि का सूख जाना नदी आदि के प्रवाहों का उलटा चलना इन सबका फल छः महीने में होताहै ५ ॥

स्तम्भकुसूलाऽर्चानांजल्पितरुदितप्रकम्पितस्वेदाः ॥
मासत्रयेणकलहेन्द्रचापनिर्घातपाकाश्च ६ ॥

तम्भ कुसूल (मृत्तिका आदिकी बनी अन्न रखनेकी कोठी) औ प्रतिमा इनका भाषण रोदन कांपना औ इन को पसीना आना इन सबका फल तीन महीने में होताहै । कलह इन्द्रचाप औ निर्घात का फलभी तीन महीने में होताहै ॥ पहिले इन्द्रधनुष का फल सात दिन में कहा जो वहां न होय तो तीन महीने में होता है ६ ॥

कीटाखुमक्षिकोरगबाहुल्यंमृगविहङ्गविरुतंच ॥
लोष्टस्यचाप्सुतरणंत्रिभिरेवविपच्यतेमासैः ७ ॥

कीडे मूषक मक्खी औ सर्पोंका बहुत होना मृग औ पक्षियों के शब्द औ लोष्ट (ढेला) का जल में तरना इन सबका फल तीन महीने में होताहै ७॥

प्रसवःशुनामरण्येवन्यानांग्रामसंप्रवेशश्च ॥
मधुनिलयतोरणेन्द्रध्वजाश्चवर्षात्समधिकाद्वा ८ ॥

श्वानों का जंगल में प्रसव होय जंगल के जीव ग्राम में प्रवेश करें शहत का छत्ता लगे तोरण औ इन्द्रध्वज में कुछ उत्पात होय इन सबका फलएक वर्षमें अथवा वर्षसे कुछ अधिक कालमें होताहै ८ ॥

गोमायुगृध्रसङ्घादशाहिकाःसद्यएवतूर्यरवः ॥
आक्रुष्ट पक्षफलंवल्मीकोविदरणंचभुवः ९ ॥

सृगाल औ गीध इनके समूह का फल दश दिन में होता है । विना वजाये तूर्य बजै उसका फल उसी दिन होताहै । आक्रुष्ट (शाप) का फल पन्द्रह दिन में होताहै वल्मीक औ भूमिकाफटना इनकाभी फल पन्द्रहदिनमें होताहै ९ ॥

अहुताशप्रज्वलनंघृततैलवसादिवर्षणंचापि ॥
सद्यःपरिपच्यन्तेमासेऽध्यर्धेचजनवादः १० ॥

विना अग्निके अग्नि जलना घृत तेल औ वसा (चर्वी) की वर्षा होना इन सब का फल उसी दिन होता है औ लोकवाद (किंवदंती) का फल डेढ़ महीने में होताहै १० ॥

छत्रचितियूपहुतवहबीजानांसप्तभिर्भवतिपक्षैः ॥
छत्रस्यतोरणस्यचकेचिन्मासात्फलंप्राहुः ११ ॥

छत्र चिति यूप अग्नि औ बीज जो बोये जाते हैं इनमें कुछ विकृति हो तो उसका फल साढ़े तीन महीनेमें होता है। छत्रका औ तोरणका फल एक महीनेमें होता है ऐसाभी गर्ग आदि कोई मुनि कहते हैं ११ ॥

अत्यन्तविरुद्धानांस्नेहःशब्दश्चवियतिभूतानाम् ॥
मार्जारनकुलयोर्मूषकेनभङ्गश्चमासेन १२ ॥

जिन जीवोंका परस्पर बहुत वैर होय उनका स्नेह होजाय आकाशमें भूत शब्द करें बिल्ली औ नकुल लड़ने में मूषक से हारजावैं इन सबका फल एक महीनेमें होता है १२ ॥

गन्धर्वपुरंमासाद्रसवैकृत्यंहिरण्यविकृतिश्च ॥
ध्वजवेश्मपांशुधूमाकुलादिशश्चापिमासफलाः १३ ॥

गंधर्व नगर देखपड़े तो उसका फल एक महीनेमें होताहै। लवण आदि रसोंकी विकृति औ सुवर्णकी विकृतिका फलभी एक महीनेमें होताहै। ध्वज का टूटना आदि घरके उत्पात धूलिसे अथवा धूमसे दिशाओंका व्याप्त होना इनसबका फलभी एक महीनेमें होताहै १३ ॥

नवकैकाष्टदशैकषट्त्रिकत्रिकसंख्यमासपाकानि ॥
नक्षत्राण्यश्विनिपूर्विकानिसद्यःफलाश्लेषा १४ ॥

अश्विनी भरणी कृत्तिका रोहिणी मृगशीर्ष आर्द्रा पुनर्वसु औ पुष्य इन नक्षत्रोंके योग ताराको कुछ उत्पात होय तो उसका फल क्रमसे नौएकआठ दश एक छः तीन औ तीन महीनेमें होताहै। आश्लेषाके ताराको कुछ उत्पात होय तो उसी दिन फल होताहै १४ ॥

पित्र्यान्मासःषट्षट्त्रयोऽर्धमष्टौत्रिषडेकैकाः ॥
मासचतुष्केऽषाढसद्यःपाकाभिजित्तारा १५ ॥

मघा का फल एक महीनेमें पूर्वा फाल्गुनी औ उत्तराफाल्गुनी का छः छः महीनेमें हस्तका तीन महीनेमें चित्राका आधे महीनेमें स्वातिका आठ...

में विशाखाका तीन महीनेमें अनुराधाका छः महीनेमें ज्येष्ठाका एक महीनेमें मूल का एक महीनेमें पूर्वाषाढ़ा औ उत्तराषाढ़ा का चार महीनेमें औ अभिजित् की ताराका उसीदिन फल होता है १५ ॥

सप्ताऽष्टावध्यर्द्धत्रयस्त्रयःपञ्चचैवमासाःस्युः ॥
श्रवणादीनांपाकोनक्षत्राणांयथासंख्यम् १६ ॥

श्रवण आदि नक्षत्रोंका फल क्रम से सात आठ डेढ़ तीन तीन औ पांच महीनेमें होताहै १६ ॥

निगदितसमयेनदृश्यतेचेदधिकतरंद्विगुणेप्रपच्यतेतत् ॥
यदिनकनकरत्नगोप्रदानैरुपशमितंविधिवद्द्विजैश्चशान्त्या १७ ॥

इतिश्रीवराहमिहिरकृतौबृहत्संहितायांपाकाध्यायोनामसप्त
नवतितमोऽध्यायः ९७ ॥

कहेहुये समयपर जो फल न होय तो दूना समय वीतनेपर बहुत अधिक फल होता है । परन्तु जो सुवर्ण रत्न औ गौओं के दानकरके औ ब्राह्मणों से शान्ति कराकरके वहफल उपशमन न करदियाहोय तब होताहै । अर्थात् दान औ शान्ति करने से उत्पातों का फल नहीं होता १७ ॥

श्रीवराहमिहिराचार्यकीवनाईबृहत्संहितामेंपाकाध्यायनामक
सत्तानवेकाअध्यायसमाप्तहुआ ९७ ॥

अट्टानबेकाअध्याय ॥

नक्षत्रगुण ॥

शिखिगुणरसेन्द्रियानलशशिविषयगुणर्तुपञ्चवसुपक्षाः ॥ विषयैकचन्द्रभूतार्णवाग्निरुद्राश्विवसुदहनाः १ भूतशतपक्षवसवोद्वात्रिंशच्चेतितारकामानम् ।क्रमशोऽश्विन्यादीनांकालस्ताराप्रमाणेन२ नक्षत्रजमुद्वाहेफलमब्दैस्तारकामितैःसदसत् ॥ दिवसैर्ज्वरस्यनाशो व्याधेरन्यस्यवावाच्यः ३ ॥

अश्विनी नक्षत्र के तीनतारे हैं भरणी के तीन कृत्तिका के छः रोहिणी के पांच मृगशिरा के तीन आर्द्राका एक पुनर्वसु के पांच पुष्य के तीन श्लेषा के छः मघा के पांच पूर्वाफाल्गुनी के आठ उत्तराफाल्गुनी के दो हस्त के पांच चित्राका एक स्वाति का एक विशाखा के पांच अनुराधा के चार ज्येष्ठा के तीन मूल के ग्यारह पूर्वाषाढ़ा के दो उत्तराषाढ़ा के आठ श्रवण के तीन १ धनिष्ठा के पांच शतभिषक् के सौ पूर्वाभाद्रपदा के दो उत्तराभाद्रपदा के आठ औ रेवती नक्षत्रके बत्तीसतारे हैं । इन ताराओंकी संख्याके अनुसार कालजानै २ जिस

नक्षत्रमें विवाहहोय उसका शुभ अशुभ फल उस नक्षत्र के जितने तारेहोयँ उतने वर्षोंमें होताहै। जिस नक्षत्र में ज्वर अथवा और कोई रोगहोय उसकी निवृत्ति उस नक्षत्र के जितने तारेहोयँ उतने दिनों में होती है ३॥

अश्वियमदहनकमलजशशिशूलभृददितिजीवफणिपितरः॥योन्यर्यमदिनकृत्त्वष्टृपवनशक्राग्निमित्राश्च ४ शक्रोनिर्ऋतिस्तोयंविश्वे ब्रह्महरिर्वसुर्वरुणः॥ अजपादोऽहिर्बुध्न्यःपूषाचेतीश्वराभानाम् ५॥

अश्विनीकुमार यम अग्नि ब्रह्मा चन्द्रमा रुद्र अदिति बृहस्पति सर्प पितर भग अर्यमा सूर्य त्वष्टा वायु इन्द्राग्नी मित्र ४ इन्द्र निर्ऋति जलविश्वेदेव ब्रह्मा विष्णु वसु वरुण अजपाद अहिर्बुध्न्य औ पूषा ये अट्ठाईस देवता अभिजित् सहित अश्विनीआदि अट्ठाईस नक्षत्रों के कहेहैं ५॥

त्रीण्युत्तराणितेभ्योरोहिण्यश्चध्रुवाणितैःकुर्यात्॥
अभिषेकशान्तितरुनगरधर्मबीजध्रुवारम्भान् ६॥

उन नक्षत्रों में से तीनों उत्तरा औ रोहिणी ध्रुवसंज्ञक हैं। ध्रुवनक्षत्रों में अभिषेक शान्ति वृक्ष लगाना नगर बसाना धर्मक्रिया बीजबोना औ स्थिर कार्योंका आरम्भ ये सबकरे ६॥

मूलशिवशक्रभुजगाधिपानितीक्ष्णानितेषुसिद्ध्यन्ति॥
अभिघातमन्त्रवेतालबन्धवधभेदसम्बन्धाः ७॥

मूल आर्द्रा ज्येष्ठा औ आश्लेषा ये चारनक्षत्र तीक्ष्णसंज्ञक हैं इनमें अभिघात मन्त्रसाधन वेतालोत्थापन बन्धन वध भेद औ सम्बन्ध सिद्धहोते हैं ७॥

उग्राणिपूर्वभरणीपित्र्याण्युत्सादनाशशाठ्येषु॥
योग्यानिबन्धविषदहनशस्त्रघातादिषुचासिद्ध्यै ८॥

तीनों पूर्वा भरणी औ मघा ये पांच नक्षत्र उग्रसंज्ञकहैं इनमें उत्सादननाश शठता बन्धन विषदेना अग्निलगाना शस्त्रघात इत्यादि क्रूरकर्म सिद्धहोते हैं ८॥

लघुहस्ताश्विनपुष्याःपण्यरतिज्ञानभूषणकलासु॥
शिल्पौषधयानादिषुसिद्धिकराणिप्रदिष्टानि ९॥

हस्त अश्विनी औ पुष्य ये तीन नक्षत्र लघुसंज्ञक हैं। इनमें पण्य (सौदा) रति ज्ञान भूषण कला शिल्प औषध औ वाहनआदि कार्य सिद्धहोते हैं ९॥

मृदुवर्गस्त्वनुराधाचित्रापौष्णैन्दवानिमित्रार्थे॥
सुरतविधिवस्त्रभूषणमङ्गलगीतेषुचहितानि १०॥

अनुराधा चित्रा रेवती औ मृगशिरा ये चारनक्षत्र मृदुसंज्ञक हैं। इनमें मित्रकार्य सुरत विधि वस्त्र भूषण मंगल औ गीत के कार्य करने चाहिये १०॥

हौतभुजंसविशाखंमृदुतीक्ष्णंतद्धिमिश्रफलकारि ॥
श्रवणत्रयमादित्याऽनिलेचचरकर्मणिहितानि ११ ॥

कृत्तिका औ विशाखा ये दो नक्षत्र मृदु तीक्ष्ण संज्ञक हैं । ये मिश्रितफल करते हैं । श्रवण धनिष्ठा शतभिषक् पुनर्वसु औ स्वाति ये पांच नक्षत्र चर संज्ञक हैं । इनमें चरकर्म करने चाहिये ११ ॥

हस्तात्त्रयंमृगशिरःश्रवणात्त्रयंचपूषाश्विशक्रगुरुभानिपुनर्वसुश्च॥
क्षौरेतुकर्मणिहितान्युदयेक्षणेवायुक्तानिचोडुपतिनाशुभतारयाच १२

हस्त चित्रा स्वाति मृगशिरा श्रवण धनिष्ठा शतभिषक् रेवती अश्विनी ज्येष्ठा पुष्य औ पुनर्वसु ये नक्षत्र क्षौर करानेकेलिये शुभहैं । चाहे लग्नके अनुसार इनका उदय होय चाहे इन नक्षत्रोंके स्वामी का मुहूर्तहोय । परन्तु क्षैर करानेवालेको चन्द्र औ तारा शुभ होने चाहिये १२ ॥

नस्नातमात्रगमनोत्सुकभूषितानामभ्यक्तभुक्तरणकालनिरासनानाम्॥ सन्ध्यानिशोःकुजयमार्कदिनेचरिक्तेक्षौरंहितंननवमेऽह्निनचापिविष्ट्याम् १३ ॥

स्नान करलिया होय उसको यात्राको उत्सुकहोय उसको भूषितको तैलाभ्यंग कियेहुयेको भोजन करलिया होय उसको युद्धके समय औ आसनहीन होय उसको क्षौरकराना शुभ नहीं होता । संध्याके समय रात्रिके समय भौमवार शनिवार औ रविवारको रिक्तातिथिको जिसदिन क्षौर करायाहोय उससे नवेंदिन औ भद्रामें क्षौर नहीं कराना चाहिये १३ ॥

नृपाज्ञयाब्राह्मणसंमतेच विवाहकालेमृतसूतकेच ॥
बद्धस्यमोक्षेक्रतुदीक्षणासु सर्वेषुशस्तंक्षुरकर्मभेषु १४ ॥

राजाकी आज्ञासे ब्राह्मणोंकी सम्मतिसे विवाहके समय मृतसूतक होने पर बन्धन (कैद) से छुटनेपर औ यज्ञकी दीक्षा में क्षौर शुभही होता है चाहे कोई नक्षत्र होय १४ ॥

हस्तोमूलंश्रवणःपुनर्वसुर्मृगशिरस्तथापुष्यः ॥
पुंसंज्ञितेषुकार्येष्वेतानिशुभानिधिष्ण्यानि १५ ॥

हस्त मूल श्रवण पुनर्वसु मृगशिर पुष्य ये नक्षत्र पुरुष संज्ञक कार्य करने के लिये शुभहैं १५ ॥

सावित्रपौष्णाऽनिलमैत्रतिष्ये त्वाष्ट्रे तथाचोडुगणाधिपर्क्षे ॥
संस्कारदीक्षाव्रतमेखलादि कुर्याद्गुरौ शुक्रबुधेन्दुयुक्ते १६ ॥

हस्त रेवती स्वाती अनुराधा पुष्य चित्रा औ मृगशिरा इन नक्षत्रों में औ

बृहस्पति शुक्र बुध औ सोम इन वारों में संस्कार दीक्षा व्रत मेखला आदि कर्म करे १६॥

लाभतृतीयारिमतैःखलैश्च पापैर्विहीनेशुभराशिलग्ने॥
वेध्यौतुकर्णौत्रिदशेज्यलग्ने तिष्येन्दुचित्राहरिरेवतीषु १७॥

लग्नसे तीसरे ग्यारहवें औ छठे स्थानमें पापग्रह होयँ शुभराशि लग्न में होय जिसमें कोई पापग्रह न होय बृहस्पति लग्न में होय पुष्य मृगशिरा चित्रा श्रवण औ रेवती ये नक्षत्रहोयँ तव कर्णवेध करना चाहिये १७॥

शुद्धैर्द्वादशकेन्द्रनैधनगृहैःपापैस्त्रिषष्ठायगैर्लग्नेकेन्द्रगतेऽथवासुरगुरौदैत्येन्द्रपूज्येऽथवासर्वारम्भफलप्रसिद्धिरुदयेराशौचकर्तुःशुभेसग्राम्यस्थिरभोदयेचभवनंकार्यम्प्रवेशोऽपिवा १८॥

इतिश्रीवराहमिहिरकृतौबृहत्संहितायांनक्षत्रगुण
नामाऽष्टनवतितमोऽध्यायः ९८॥

लग्नसे बारहवां स्थान चारोंकेंद्र औ आठवां स्थान शुद्धहोयँ अर्थात् इनमें कोई ग्रह न होयँ तीसरे छठे औ ग्यारहवें पापग्रह होय लग्न में अथवा केंद्रमें बृहस्पति अथवा शुक्रहोय औ कार्य करनेवाले का शुभराशि लग्नहोय ऐसे लग्नमें जिस कार्यका आरम्भकरै वही सिद्ध होताहै। ग्राममें रहनेवाले राशि अर्थात् मेष वृष मिथुन कन्या तुला धनु औ कुम्भ औ स्थिर राशि अर्थात् सिंह औ वृश्चिक इन लग्नोंमें गृहारम्भ औ ग्रहप्रवेश करना चाहिये परन्तु चर लग्न में न करै केवल स्थिर औ द्विस्वभावमेंही करै १८॥

श्रीवराहमिहिराचार्यकीवनाई बृहत्संहितामें नक्षत्रगुण
नामक अट्ठानवेका अध्याय समाप्तहुआ ९८॥

निन्नानवेका अध्याय॥

तिथिगुण॥

कमलजविधातृहरियमशशाङ्कषड्वक्त्रशक्रवसुभुजगाः॥ धर्मेशसवितृमन्मथकलयोविश्वेचतिथिपतयः १ पितरोऽमावास्यायांसंज्ञासदृशाश्चतैःक्रियाःकार्याः॥ नन्दाभद्राविजयारिक्तापूर्णाचतास्त्रिविधाः २ यत्कार्यंनक्षत्रेतद्दैवत्यासुतिथिषुतत्कार्यम्॥ करणमुहूर्तेष्वपितत्सिद्धिकरंदैवतासदृशम् ३॥

इतिश्रीवराहमिहिरकृतौबृहत्संहितायांतिथिगुणनाम
नवनवतितमोऽध्यायः ९९॥

ब्रह्मा विधाता विष्णु यम चन्द्रमा कार्तिकेय शक्र वसु सर्प धर्म रुद्र [illegible]

कामदेव कलि औ विश्वेदेव ये पन्द्रह देवता प्रतिपदा आदि पूर्णिमापर्यंत पन्द्रह तिथियोंके हैं १ औ अमावास्याके देवता पितर हैं। तिथिके देवता का जैसा नाम है उस तिथिको वैसाकार्य करना चाहिये। नंदा भद्रा विजयारिक्ता औ पूर्णा ये तीन् आवृत्तिकरके पन्द्रह तिथियों की संज्ञा हैं २ जिस नक्षत्र में जोकार्य करना कहाहै वहकार्य उसनक्षत्रके देवता की तिथिमें करना चाहिये। इसभांति नक्षत्रके देवता का बव आदि जो करण होय औ शिव आदि जो मुहूर्त होय उसमें तन्नक्षत्रोक्त कार्य करने से सिद्धि होता है ३॥

श्रीवराहमिहिराचार्यकीबनाईबृहत्संहितामेंतिथिगुणनामक
निन्नानवेकाअध्यायसमाप्तहुआ ९९॥

सौवांअध्याय॥

करणगुण॥

बवबालवकौलवतैतिलाख्यगरवणिजविष्टिसंज्ञानाम्॥
पतयःस्युरिन्द्रकमलजमित्रार्यमभूश्रियःसयमाः १॥

बव बालव कौलव तैतिल गर वणिज औ विष्टि (भद्रा) ये सात करण हैं औ इन्द्र ब्रह्मा मित्र अर्यमा भूमि लक्ष्मी औ यम इनके क्रमसे स्वामी हैं१॥

कृष्णचतुर्दश्यर्धाद्ध्रुवाणिशकुनिश्चतुष्पदंनागम्॥
किंस्तुघ्नमितिचतेषांकलिवृषफणिमारुताःपतयः २॥

कृष्णचतुर्दशी के उत्तरार्द्धसे शकुनि चतुष्पद नाग औ किंस्तुघ्न ये चार स्थिरकरण हैं। औ कलिवृष सर्प औ पवन ये चार क्रमसे इनके स्वामी हैं २॥

कुर्याद्बवेशुभचरंस्थिरपौष्टिकानिधर्मक्रियाद्विजहितानिचबालवाख्ये॥ संप्रीतिमित्रवरणानिचकौलवेस्युः सौभाग्यसंश्रयगृहाणिच तैतिलाख्ये ३ कृषिबीजगृहाश्रयजानिगरेवणिजध्रुवकार्यवणिग्युतयः॥ नहिविष्टिकृतंविदधातिशुभंपरघातविषादिषुसिद्धिकरम् ४॥

बवकरण में शुभकार्य चरकार्य स्थिरकार्य औ पौष्टिककरै बालव में धर्म कार्य औ ब्राह्मणोंका हित करै। कौलव में प्रीति मित्र औ वरणकरै। तैतिल में सौभाग्य किसी का आश्रय औ घरका कृत्यकरै ३ गरकरण में खेती बीज औ घरके आश्रित कार्य करै। वणिज करण में स्थिर कार्य वाणिज्य औ किसी से संयोग करै। विष्टि करण में कियाकार्य शुभनहीं होता। शत्रुघात औ विप आदिका कार्य विष्टि में करै तो सिद्ध होते हैं ४॥

कार्यंपौष्टिकमौषधादिशकुनौमूलानिमन्त्रास्तथागोकार्याणिचतुष्पदेद्विजपितॄनुद्दिश्यराज्यानिच॥ नागेस्थावरदारुणानिहरणंदौर्भा

ग्यकर्मागयत:किंस्तुघ्नेशुभमिष्टिपुष्टकरणंमङ्गल्यसिद्धिक्रियाः ५ ॥
इतिश्रीवराहमिहिरकृतौबृहत्संहितायांकरणगुण
नामशततमोऽध्यायः ॥ १०० ॥

शकुनिकरण में पौष्टिक औषध आदि मूलोंका ग्रहण औ मंत्रसाधन करै। चतुष्पद करणमें गौओंके कार्य दान पालन आदि ब्राह्मण औ पितरों के उद्देशके कर्म औ राज्य कार्यकरै। नागकरणमें स्थिरकार्य क्रूरकर्म परधन आदि का हरण औ दौर्भाग्य कर्मकरै। औ किंस्तुघ्न करणमें शुभकर्म इष्टि (यज्ञ) पौष्टिककर्म औ मंगल कार्योंके सिद्धिकरने वाली क्रियाकरै ५ ॥

श्रीवराहमिहिराचार्यकीबनाईबृहत्संहितामेंकरणगुण
नामसौवांअध्यायसमाप्तहुआ ॥ १०० ॥

एकसौएकका अध्याय ॥

विवाहनिर्णय ॥

रोहिण्युत्तररेवतीमृगशिरोमूलानुराधामघाहस्तस्वातिषुषष्ठतौलिमिथुनेषूद्यत्सुपाणिग्रहः ॥ सप्ताऽष्टान्त्यबहिःशुभैरुडुपतावेकादशद्वित्रिगेक्रूरैस्त्र्यायषडष्टगैर्नतुभृगौषष्ठेकुजेचाष्टमे १ दम्पत्योर्द्विनवाष्टराशिरहितेताराऽनुकूलेरवौचन्द्रेचार्ककुजार्किशुक्रवियुतेमध्येऽथवापापयोः ॥ त्यक्त्वाचव्यतिपातवैधृतिदिनंविष्टिंचरिक्तांतिथिंक्रूराऽह्वाऽयनचैत्रपौषरहितेलग्नांऽशकेमानुषे २ ॥

इतिश्रीवराहमिहिरकृतौबृहत्संहितायांविवाहनिर्णयो
नामैकोत्तरशततमोऽध्यायः ॥ १०१ ॥

रोहिणी तीनोंउत्तरा रेवती मृगशिरा मूल अनुराधा मघा हस्त औ स्वाती इन नक्षत्रों में औ कन्या तुला औ मिथुन इन लग्नों में विवाह करना चाहिये। शुभग्रह विवाह लग्नसे सातवें आठवें औ बारहवें स्थानको छोड़ और स्थानोंमें बैठेहोयँ चन्द्रमा लग्नसे ग्यारहवें दूसरे अथवा तीसरे स्थान में होय क्रूरग्रह तीसरे ग्यारहवें छठे औ आठवें होयँ शुक्र छठे न होय औ मंगल लग्न से आठवें न होय १ वरवधूकी राशि परस्पर द्विद्वादश नवम पंचम औ षष्ठाष्ट में न होयँ गोचर में सूर्य शुभस्थानमें होय अर्थात् वरकी जन्मराशिसे तीसरे छठे दशवें अथवा ग्यारहवें सूर्य होय चन्द्रमा के साथ सूर्य मंगल शनि औ शुक्र न बैठेहोयँ दो पापग्रहोंकेबीच चन्द्रमा न होय अर्थात् चन्द्रमासे दूसरे औ बारहवें स्थानमें पापग्रह न होयँ व्यतिपात वैधृति भद्रा औ रिक्तातिथि न होयँ पापग्रहका वार दक्षिणायन चैत्र औ पौष न होयँ विवाह लग्न में मनुष्य...

शि (मिथुन कन्या औ तुला) का नवांश होय ऐसे समय में विवाह करना चाहिये २ ॥

श्रीवराहमिहिराचार्यकीवनाईवृहत्संहितामेंविवाहनिर्णय
नामएकसौएककाअध्यायसमाप्तहुआ ॥ १०१ ॥

एकसौदूसराअध्याय ॥

नक्षत्रजातक ॥

प्रियभूषणःसुरूपःसुभगोदक्षोऽश्विनीषुमतिमांश्च ॥
कृतनिश्चयसत्याऽरुग्दक्षःसुखितश्चभरणीषु १ ॥

अश्विनी नक्षत्रमें उत्पन्नहुआ पुरुष भूषण प्रिय सुन्दर सौभाग्य युक्त दक्ष (चतुर) औ बुद्धिमान् होताहै भरणीमें उत्पन्नहुआ पुरुष कृत निश्चय अर्थात् सवकार्यों का निश्चय करनेवाला सत्यवादी अरोग दक्ष औ सुखीहोता है १ ॥

बहुभुक्परदाररतस्तेजस्वीकृत्तिकासुविख्यातः ॥
रोहिण्यांसत्यशुचिःप्रियंवदःस्थिरसुरूपश्च २ ॥

कृत्तिका में उत्पन्नहुआ पुरुष बहुत भोजन करनेवाला परस्त्रीगामी तेजस्वी औ विख्यात होताहै । रोहिणीमें उत्पन्नहुआ पुरुष सत्यवादी शौचयुक्त प्रिय बोलनेवाला स्थिरबुद्धि औ सुरूप होताहै २ ॥

चपलश्चतुरोभीरुःपटुरुत्साहीधनीमृगेभोगी ॥
शठगर्वितचण्डकृतघ्नहिंस्रपापश्चरौद्रर्क्षे ३ ॥

मृगशिरामें उत्पन्नहुआ पुरुष चञ्चल चतुर डरनेवाला पटु उत्साही धनवान् औ भोगी होताहै । आर्द्रामें उत्पन्नहुआ पुरुष शठ (केवल स्वार्थसाधक) अहंकारी कलह करनेवाला कृतघ्न हिंसा करनेवाला औ पापीहोताहै ३ ॥

दान्तःसुखीसुशीलोदुर्मेधारोगभाक्पिपासुश्च ॥
अल्पेनचसंतुष्टःपुनर्वसौजायतेमनुजः ४ ॥

पुनर्वसु में उत्पन्नहुआ पुरुष जितेन्द्रिय सुखी सुशील दुष्टबुद्धि रोगी तृषा करके पीडित औ स्वल्प संतोषी होताहै ४ ॥

शान्तात्मासुभगःपण्डितोधनीधर्मसंश्रितःपुष्ये ॥
शठसर्वभक्षपापःकृतघ्नधूर्तश्चभौजङ्गे ५ ॥

पुष्यनक्षत्रमें उत्पन्नहुआ पुरुष शान्तचित्त सुभग (सर्वजनप्रिय) पण्डित धनवान् औ धर्मात्मा होताहै । आश्लेषा में उत्पन्नहुआ पुरुष शठ सर्वभक्षी पापी कृतघ्न औ धूर्त होताहै ५ ॥

बहुभृत्यधनोभोगीसुरपितृभक्तोमहोद्यमःपित्र्ये ॥

प्रियवाग्दाताद्युतिमानटनोनृपसेवकोभाग्ये ६ ॥

मघामें उत्पन्नहुआ पुरुष बहुत से सेवक औ धनकरके युक्त भोगी देवता औ पितरोंका भक्त औ बडा उद्यमी होताहै । पूर्वाफाल्गुनी में उत्पन्न हुआ पुरुषप्रियबोलनेवाला दानी कांतियुक्त भ्रमणशील औ राजाकासेवकहोताहै ६॥

सुभगोविद्याप्तधनोभोगीसुखभाग्द्वितीयफाल्गुन्याम् ॥
उत्साहीधृष्टःपानपोऽघृणीतस्करोहस्ते ७ ॥

उत्तराफाल्गुनी में उत्पन्नहुआ पुरुष सुभग विद्यासे धन सम्पादन करनेवाला भोगी औ सुखीहोता है । हस्तमें उत्पन्नहुआ पुरुष उत्साही धृष्टपान करनेमें आसक्त निर्दय औ चोर होता है ७ ॥

चित्राऽम्बरमाल्यधरःसुलोचनाऽङ्गश्चभवतिचित्रायाम् ॥
दान्तोवणिक्कृपालुःप्रियवाग्धर्माश्रितःस्वातौ ८ ॥

चित्रामें उत्पन्नहुआ पुरुष नानाप्रकारके वस्त्र औ माला पहिननेवाला सुन्दरनेत्र औ अंगों करकेयुक्त होताहै । स्वातीमें उत्पन्नहुआ पुरुष जितेन्द्रिय वणिक् (क्रयविक्रयमें चतुर)दयावान् प्रिय बोलनेवाला औ धर्मात्माहोताहै८॥

ईर्ष्युर्लुब्धोद्युतिमान्वचनपटुःकलहकृद्विशाखासु ॥
आढ्योविदेशवासीक्षुधालुरटनोऽनुराधासु ९ ॥

विशाखामें उत्पन्न पुरुष ईर्षायुक्त लोभी कांतियुक्त बोलनेमेंचतुर औ कलह करनेवाला होताहै । अनुराधामें उत्पन्नपुरुष धनवान् विदेशमें रहनेवाला भूखको नहीं सहनेवाला औ भ्रमणशील होता है ९ ॥

ज्येष्ठासुनबहुमित्रःसंतुष्टोधर्मकृत्प्रचुरकोपः ॥
मूलेमानीधनवान्सुखीनहिंस्रःस्थिरोभोगी १० ॥

ज्येष्ठामें उत्पन्नपुरुष बहुत मित्रों करके रहित संतोषी धर्म करनेवाला औ बड़ा क्रोधीहोता है । मूलमें उत्पन्न पुरुष मानी धनवान् सुखी हिंसा नहीं करने वाला स्थिरस्वभाव औ भोगी होताहै १० ॥

इष्टानन्दकलत्रोवीरोदृढसौहृदश्चजलदेवे ॥
वैश्वेविनीतधार्मिकबहुमित्रकृतज्ञसुभगश्च ११ ॥

पूर्वाषाढामें उत्पन्न पुरुष इष्टानन्द कलत्र (आनन्दयुक्तपत्नी उसको प्रिय होती है) वीर औ स्थिर स्नेह होता है । उत्तराषाढा में उत्पन्नपुरुषविनययुक्त धर्मात्मा बहुत मित्रों करकेयुक्त कृतज्ञ औ सुभग होताहै ११ ॥

श्रीमाञ्छ्रवणेश्रुतवानुदारदारोधनान्वितःख्यातः ॥
दाताढ्यशूरगीतप्रियोधनिष्ठासुधनलुब्धः १२ ॥

श्रवणमें उत्पन्न पुरुष श्रीमान् पण्डित उत्तमस्त्रीयुक्त धनवान् औ प्रसिद्ध होताहै । धनिष्ठा में उत्पन्न पुरुष दाता धनवान् शूर गीतप्रिय औ धनका लोभीहोताहै १२ ॥

स्फुटवाग्व्यसनीरिपुहासाहसिकःशतभिषक्षुदुर्ग्राह्यः ॥
भद्रपदासूद्विग्नःस्त्रीजितधनपटुरदाताच १३ ॥

शतभिषक् में उत्पन्न पुरुष स्पष्टबोलनेवाला व्यसनयुक्त शत्रुघातक साहसी औ दुर्ग्राह्य (दुःखसे आराधनकरनेयोग्य) होता है । पूर्वाभाद्रपदा में उत्पन्नपुरुष उद्विग्न (दुःखी) स्त्रीजित धन अर्थात् जिसकाधन स्त्रीजीतलेवें पटु (चतुर) औ नहीं देनेवाला होताहै १३ ॥

वक्तासुखीप्रजावान्जितशत्रुर्धार्मिकोद्वितीयासु ॥
सम्पूर्णाऽङ्गःसुभगःशूरःशुचिरर्थवान्पौष्णये १४ ॥
इतिश्रीवराहमिहिरकृतौबृहत्संहितायांनक्षत्रजातकंनाम
युग्मोत्तरशततमोऽध्यायः १०२ ॥

उत्तराभाद्रपदा में उत्पन्नपुरुष बोलनेमें चतुर सुखी सन्तानयुक्त शत्रुओं को जीतनेवाला औ धर्मात्मा होता है । औ रेवती नक्षत्र में उत्पन्न पुरुष सम्पूर्णांग सुभग शूर शौचयुक्त औ धनवान् होताहै १४ ॥

श्रीवराहमिहिराचार्यकीबनाईबृहत्संहितामेंनक्षत्रजातकनाम
एकसौदूसराअध्यायसमाप्तहुआ १०२ ॥

एकसौतीसराअध्याय ॥

राशिप्रविभाग ॥

अश्विन्योऽथभरण्योबहुलापादश्चकीर्त्यतेमेषः ॥ वृषभोबहुलाशेषंरोहिण्यर्धंचमृगशिरसः १ मृगशिरसोऽर्धंरौद्रंपुनर्वसोश्चांशत्रयंमिथुनम् ॥ पादश्चपुनर्वसुतस्तिष्योऽश्लेषाचकर्कटकः २ ॥

सवा दो नक्षत्रका एकराशि होताहै जिसमें अश्विनी भरणी औ कृत्तिका का एकपाद मेषराशि है । कृत्तिका के शेष तीनपाद रोहिणी औ मृगशिरा के दोपाद वृषराशि है १ मृगशिरा के शेष दोपाद आर्द्रा औ पुनर्वसु के तीनपाद मिथुनराशि है । पुनर्वसुका शेष एकपाद पुष्य औ श्लेषा कर्कटराशि है २ ॥

सिंहोऽथमघापूर्वाचफाल्गुनीपादउत्तरायाश्च ॥ तत्परिशेषंहस्तश्चित्रार्धंचकन्याख्यः ३ तौलिनिचित्रान्त्यार्धंस्वातिःपादत्रयंविशाखायाः ॥ अलिनिविशाखापादस्तथाऽनुराधान्विताज्येष्ठा ४ ॥

मघा पूर्वाफाल्गुनी औ उत्तराफाल्गुनी का एक पाद सिंहराशि होता है ।

उत्तराफाल्गुनी के शेष तीनपाद हस्त औ चित्रा के दोपाद कन्याराशि है ३ चित्रा के शेष दोपाद स्वाती औ विशाखा के तीनपाद तुलाराशि है। विशाखा का शेष एकपाद अनुराधा औ ज्येष्ठा वृश्चिक राशिहै ४॥

मूलमषाढापूर्वाप्रथमश्चाप्युत्तरांशकोधन्वी॥ मकरस्तत्परिशेषं श्रवणःपूर्वंधनिष्ठार्धम् ५ कुम्भोन्त्यधनिष्ठार्धंशतभिषगंशत्रयंचपूर्वा याः॥ भद्रपदायाःशेषंतथोत्तरारेवतीचझषः ६॥

मूल पूर्वाषाढा औ उत्तराषाढाका एकपाद धनुराशि है। उत्तराषाढा के शेष तीनपाद श्रवण औ धनिष्ठा के दोपाद मकरराशि है ५ धनिष्ठा के शेष दो पाद शतभिषक् औ पूर्वाभाद्रपदा के तीनपाद कुम्भराशि है। पूर्वाभाद्रपदाका शेष एकपाद उत्तराभाद्रपदा औ रेवती मीनराशि है ६॥

अश्विनीपित्र्यमूलाद्यामेषसिंहहयादयः॥
विषमर्क्षान्निवर्तन्तेपादवृद्ध्यायथोत्तरम् ७॥

इतिश्रीवराहमिहिरकृतौबृहत्संहितायांराशिप्रविभागोनाम त्र्युत्तरशततमोऽध्यायः १०३॥

अश्विनी से मेष आदि चार राशि मघा से सिंह आदि चार औ मूल से धनुष आदि चारि राशि होतेहैं। औ ये राशि विषम नक्षत्र से अर्थात् तीसरे पांचवें सातवें औ नवें नक्षत्र पर पादवृद्धि करके अर्थात् एकपाद दोपाद तीन पाद औ चारपाद करके निवृत्त अर्थात् समाप्त होतेहैं। जैसा अश्विनी से तीसरे नक्षत्र कृत्तिका के पहिलेपाद पर मेष समाप्त हुआ पांचवें नक्षत्र मृगशिरा के दूसरे चरण पर वृष समाप्त हुआ सातवें नक्षत्र पुनर्वसु के तीसरे पादपर मिथुन समाप्त हुआ औ नवे नक्षत्र श्लेषा के चौथे चरण पर कर्कट समाप्त हुआ। इसीभांति मघा आदि नव नक्षत्रोंमें सिंह आदि चार राशियों का औ मूल आदि नव नक्षत्रोंमें धनुष आदिचार राशियोंका प्रारम्भ औ समाप्तिजानो ७॥

श्रीवराहमिहिराचार्यकीबनाईबृहत्संहितामेंराशिप्रविभागनामएकसौ तीसराअध्यायसमाप्तहुआ १०३॥

एकसौचौथाअध्याय॥

विवाहपटल॥

मूर्त्तौकरोतिदिनकृद्विधवांकुजश्च राहुर्विपन्नतनयांरविजोदरिद्राम्॥ शुक्रःशशांकतनयश्चगुरुश्चसाध्वीमायुःक्षयंप्रकुरुतेऽथविभावरीशः १॥

लग्न में सूर्य मंगल होयं तो कन्या विधवा होती है। राहु लग्न में

तो मृतपुत्रा होती है। शनैश्चर लग्न में होय तो दरिद्रा होती है। शुक्र बुध औ बृहस्पति लग्न में होयँ तो पतिव्रता होतीहै। औ चन्द्रमा लग्नमें होय तो कन्याके आयुष् का क्षय होजाताहै १॥

कुर्वंतिभास्करशनैश्चरराहुभौमा दारिद्र्यदुःखमतुलंनियतंद्वितीये॥ वित्तेश्वरीमविधवांगुरुशुक्रसौम्या नारींप्रभूततनयांकुरुतेशशाङ्कः २॥

लग्नसे दूसरे स्थानमें सूर्य शनैश्चर राहु औ भौमहोयँ तो निश्चयसे बहुत दारिद्र्यदुःख करते हैं। बृहस्पति शुक्र औ बुध दूसरेस्थानमें होयँ तो कन्या धनवती औ सौभाग्यवती होती है। चन्द्रमा दूसरे स्थानमें होय तो बहुत पुत्रों वाली होती है २॥

सूर्येन्दुभौमगुरुशुक्रबुधास्तृतीये कुर्युःसदाबहुसुतांधनभागिनींच॥ व्यक्तांदिवाकरसुतःसुभगांकरोतिमृत्युंददातिनियमात्खलुसैंहिकेयः३

लग्न से तीसरे स्थानमें सूर्य चन्द्र मंगल बृहस्पति शुक्र औ बुध होयँ तो सदा बहुत पुत्रोंवाली औ धनवती कन्या होती है। शनैश्चर तीसरे होय तो कीर्तियुक्त औ सौभाग्यवती होती है। राहु तीसरे होय तो निश्चयही मृत्यु करताहै ३॥

स्वल्पंपयःस्रवतिसूर्यसुतेचतुर्थे दौर्भाग्यमुष्णकिरणःकुरुतेशशीच॥ राहुः सपत्नमपिचक्षितिजोऽल्पवित्तांदद्याद्भृगुः सुरगुरुश्चबुधश्चसौख्यम् ४॥

लग्न से चौथे शनैश्चर होय तो स्तनों में थोड़ा दूध उतरै सूर्य औ चंद्रमा चौथे होयँ तो दौर्भाग्य होता है। राहु चौथे होय तो उस कन्याके सपत्नी होती हैं। मंगल चौथे होय तो थोड़ा धन होता है। शुक्र बृहस्पति औ बुध चौथे होयँ तो सुख होता है ४॥

नष्टात्मजौरविकुजौखलुपंचमस्थौ चन्द्रात्मजोबहुसुतांगुरुभार्गवौच॥ राहुर्ददातिमरणंशनिरुग्ररोगंकन्याविनाशमचिरात्कुरुतेशशांकः ५॥

लग्न से पांचवें स्थान में सूर्य औ मंगल होयं तो मृतपुत्रा होती है। बुध बृहस्पति औ शुक्र पांचवें होयं तो बहुत पुत्रों वाली होती है। राहु पांचवें होय तो मृत्यु करता है। शनि पांचवें होय तो बड़ा रोग होता है। औ चंद्रमा पांचवें होय तो शीघ्रही कन्याका नाश होता है ५॥

षष्ठाश्रितःशनिदिवाकरराहुजीवाः कुर्युःकुजश्चसुभगांचसुरेषुभक्ताम्

मन्दः करोतिविधवामुशनाद्दरिद्रामृद्धांशशाङ्कतनयःकलहप्रियांच ६

लग्न से छठे स्थानमें शनि सूर्य राहु वृहस्पति औ मंगल होयं तो कन्या सौभाग्यवती औ देवताओं की भक्ता होती है ॥ चंद्र छठे होंय तो विधवा होती है। शुक्र छठे होय तो दरिद्रा होती है। औ वुध छठे स्थानमें होय तो कन्या धनवती औ कलह प्रिया होती है ६ ॥

सौरारजीवबुधराहुरवीन्दुशुक्राःकुर्युःप्रसह्यखलुसप्तमराशिसंस्थाः ॥ वैधव्यबन्धनवधक्षयमर्थनाशंव्याधिप्रवासमरणानियथाक्रमेण ७ ॥

लग्न से सातवें स्थानमें शनि मंगल वृहस्पति वुध राहु सूर्य चंद्र औ शुक्र होयं तो हठ से वैधव्य बन्धन मृत्यु क्षय धननाश रोग देशांतर में गमन औ मरण क्रमसे करते हैं ७ ॥

स्थानेऽष्टमेगुरुबुधौनियतंवियोगं मृत्युंशशीभृगुसुतश्चतथैवराहुः ॥ सूर्यःकरोत्यविधवांसरुजंमहीजःसूर्यात्मजोधनवतींपतिवल्लभांच ८

लग्न से आठवें स्थानमें वृहस्पति औ वुध होयँ तो पति के साथ निश्चय वियोग होय चंद्र शुक्र औ राहु आठवें होयँ तो मृत्यु करते हैं। सूर्य आठवें होय तो अविधवा (सौभाग्यवती) कन्याहोती है। मंगल आठवें होय तो रोगिणी होती है। औ शनैश्चर आठवें होय तो कन्या धनवती औ पति की प्यारी होती है ८ ॥

धर्मस्थिताभृगुदिवाकरभूमिपुत्राजीवश्चधर्मनिरतां शशिजस्त्व रोगाम् ॥ राहुश्चसूर्यतनयश्चकरोतिवन्ध्यांकन्याप्रसूतिमटनांकुरु तेशशांकः ९ ॥

लग्न से नवम स्थान में शुक्र सूर्य औ मंगल औ वृहस्पति होयँ तो कन्या धर्मनिष्ठा होती है। वुध नवम होय तो रोगहीन होती है। राहु औ शनैश्चर नवम होयँ तो वंध्या (बांझ) होती है। औ चंद्रमा नवम होय तो वह कन्या कन्या प्रसव करने वाली औ भ्रमणशील होती है ९ ॥

राहुर्नभस्थलगतोविधवांकरोति पापेरतांदिनकरश्चशनैश्चरश्च ॥ मृत्युंकुजोऽर्थरहितांकुलटांचचंद्रःशेषाग्रहाधनवतींसुभगांचकुर्युः १०

लग्न से दशम स्थान में राहु होय तो विधवा करता है सूर्य औ शनैश्चर दशवें होयँतो पाप करने में तत्पर रहती है। मंगल दशवें होय तो मृत्युकरता है। चंद्रमा दशवें होय तो धनहीन औ व्यभिचारिणी होतीहै। वुध वृहस्पति औ शुक्र दशवें होयँ तो धनवती औ सौभाग्यवती करते हैं १० ॥

आयेरविर्बहुसुतांधनिनींशशांकः पुत्रान्वितांक्षितिसुतोरविजो·

नाढ्याम् ॥ आयुष्मतींसुरगुरुःशशिजःसमृद्धांराहुःकरोत्यविधवांभृगुरर्थयुक्ताम् ११ ॥

लग्न से ग्यारहवें स्थानमें सूर्य होय तो बहु पुत्रा होती है। चंद्रमा होय तो धनवती होती है। मंगल होय तो पुत्रवती होती है। शनिहोय तो धनाढ्य होती है। बृहस्पति होय तो दीर्घआयुष वाली होती है बुध होय तो धनवती होती है। राहु होय तो भाग्यवती होती है। औ लग्न से ग्यारहवें स्थानमें शुक्र होय तो धनवती होती है ११ ॥

अन्तेगुरुर्धनवतींदिनकृद्दरिद्रांचंद्रोधनव्ययकरींकुलटांचराहुः ॥ साध्वींभृगुःशशिसुतोबहुपुत्रपौत्रांमानप्रसक्तहृदयांरविजःकुजश्च १२॥

लग्न से बारहवें बृहस्पति होय तो कन्या धनवती होती है। सूर्य होय तो दरिद्रा होती है। चंद्र होय तो धनका खर्च करनेवाली होती है राहु होय तो कुलटा होती है। शुक्र होय तो पतिव्रता होती है। बुध होय तो बहुतसे पुत्र औ पौत्रों करके युक्त होती है। औ लग्न से बारहवें शनि औ मंगल होयं तो कन्या मानवती होती है १२ ॥

गोपैर्यष्टयाहतानांखुरपुटदलितायातुधूलिर्दिनान्ते सोद्वाहेसुन्दरीणांविपुलधनसुतारोग्यसौभाग्यकर्त्री॥ तस्मिन्कालेनचर्क्षंनचतिथिकरणंनैवलग्नंनयोगः स्यातःपुंसांसुखार्थंशमयतिदुरितान्युत्थितंगोरजश्च १३ ॥

इतिश्रीवराहमिहिरकृतौबृहत्संहितायांविवाहपटलंनामचतुरुत्तरशततमोऽध्यायः॥ १०४ ॥

सायंकाल के समय गोप ग्रामको लाने के लिये लाठीसे गौओं को हांकै औ धूलि उठै उसको गोधूलि कहते हैं। वह गोधूलि कन्याओं को विवाह करनेसे बहुत धन पुत्र औ आरोग्य औ सौभाग्य करती है उस गोधूलि कालमें नक्षत्र तिथि करण लग्न औ योग का कुछ विचार न करै। पुरुषों के सुख के लिये वह काल कहाहै अर्थात् उस समय विवाह करने से वरको सुख होताहै वह गौओं करके उठाई हुई धूलि पापों को हरती है १३ ॥

श्रीवराहमिहिराचार्यकीबनाईबृहत्संहितामेंविवाहपटलनाम एकसौचौथाअध्यायसमाप्तहुआ १०४ ॥

एकसौपांचवांअध्याय ॥

ग्रहगोचर।

प्रायेणसूत्रेणविनाकृतानि प्रकाशरन्ध्राणिचिरन्तनानि ॥

रत्नानिशास्त्राणिचयोजितानि नवैर्गुणैर्भूषयितुंक्षमाणि १॥

अर्थः सूत्रहीन प्रकटच्छिद्र प्राचीन रत्न नयेगुणों (सूत्र) करके युक्त किये जायँ तब धारण करनेवाले पुरुषको भूषित कर सक्तेहैं इसी भांति प्राचीन शास्त्रभी सूत्रहीन औ प्रकाशरंध्र हैं, अर्थात् उनके अपशब्द आदि दोष प्रकट ही हैं। वेशास्त्र नये गुणों अर्थात् साधु शब्द औ उत्तम वृत्तों करके रचेजायँ तो पढ़नेवाले को शोभित करसक्ते हैं १॥

प्रायेणगोचरोव्यवहार्योऽतस्तत्फलानिवक्ष्यामि॥
नानावृत्तैस्तन्मेमुखचपलत्वंक्षमन्त्वार्याः २॥

लोक व्यवहार में प्रायः ग्रह गोचर का वहुत काम पड़ता है इस लिये गोचर फल अनेक भांति के वृत्तों करके कहते हैं पंडित जन हमारे मुखकी चंचलताको क्षमाकरें। यह आर्याछन्द है औ आर्या मेंभी मुखचपला नाम आर्या है। इसी भांति आगे भी सवश्लोकों में उनके छन्दका नाम आजायगा। इन छन्दोंके लक्षण वृत्त रत्नाकर आदि छन्दोग्रंथों से जानने चाहिये यहां उदाहरण मात्र हैं २॥

माण्डव्यगिरंश्रुत्वानमदीयारोचतेऽथवानैवम्॥
साध्वीतथानपुंसांप्रियायथास्याज्जघनचपला ३॥

मांडव्य मुनिकी वाणी सुनकर हमारी वाणी अच्छी न लगैगी। अथवा यह बातनहीं। क्योंकि साध्वी स्त्री मनुष्यों को ऐसी प्रिय नहीं होती जैसी जघन चपला स्त्री (पुंश्चली) प्रिय होतीहै। यह जघनचपला नाम आर्याहै ३॥

सूर्यःषट्त्रिदशास्थितस्त्रिदशषट्सप्ताद्यगश्चन्द्रमा जीवःसप्तनवद्विपञ्चमगतोवक्रार्कजौषट्त्रिगौ ॥ सौम्यःषड्द्विचतुर्दशाऽष्टमगताःसर्वेऽप्युपान्तेशुभाः ॥ शुक्रःसप्तमषड्दशर्क्षसहितःशार्दूलवत्त्रासकृत् ४॥

जन्म राशिसे सूर्यछठे तीसरे औ दशवें होय तो शुभहोता है। चन्द्रमा तीसरे दशवें छठे सातवें औ जन्मका शुभ होताहै। वृहस्पति सातवें नवें दूसरे औ पांचवें शुभ होता है। मंगल औ शनिछठे औ तीसरे शुभ होते हैं। बुधछठे दूसरे चौथे दशवें औ आठवें शुभ होताहै। ग्यारहवें स्थान में सवग्रह शुभ होते हैं। औ जन्मराशि सें शुक्र सातवें छठे औ दशवें स्थान में होय तो शार्दूल (व्याघ्र) की भांति भयदेता है। यह शार्दूलविक्रीड़ित छंद है ४॥

जन्मन्यायासदोऽर्कःक्षपयतिविभवान्कोष्ठरोगाऽध्वदाता वित्तभ्रंशंद्वितीयेदिशतिनचसुखंवञ्चनांदृग्रुजंच ॥ स्थानप्राप्तिंतृतीये...

निचयमुदाकल्यकृच्चारिहन्तारोगान्धत्तेचतुर्थेजनयतिचमुहुः स्रग्ध राभोगविघ्नम् ५ ॥

जन्मराशिपर सूर्य होय तो आयास (खेद) देता है । ऐश्वर्यका नाश करता है। उदर का रोग करता है । मार्ग में चलाता है । दूसरे सूर्य होय तो धनका नाश करता है। सुखनहीं देता ठगवाता है । औ नेत्र रोग करता है तीसरे सूर्य होय तो स्थानकी प्राप्ति करता है। धन संचय हर्ष औ आरोग्य करता है। शत्रुओं का नाश करता है। चौथे सूर्य होय तो रोग करता है स्रग्धरा (मालाधरनेवाली) जो स्त्री उस के भोग में भी विघ्न करता है। यह स्रग्धरावृत्त है ५ ॥

पीड़ाःस्युःपञ्चमस्थेसवितरिबहुशोरोगारिजनिताः षष्ठेऽर्कोहंतिरोगान्क्षपयतिचरिपूञ्छोकांश्चनुदति ॥ अध्वानंसप्तमस्थोजठरगदभयंदैन्यंचकुरुते रुक्कासौचाऽष्टमस्थेभवतिसुवदनानस्वापिवनिता ६ ॥

पांचवें सूर्य होय तो रोग औ शत्रु से उत्पन्न बहुतसी पीड़ा होयँ । छठेसूर्य होय तो रोग शत्रु औ शोक को निवृत्त करताहै । सातवां सूर्य मार्ग चलाता है उदर रोगका भय करता है औ दीनता करताहै। आठवां सूर्य होय तो रोग औ खांसी होते हैं औ अपनी स्त्री भी सूधा सुख नहीं रखती क्रोधयुक्त ही रहती है यह सुवदना छन्द है ६ ॥

स्वाबापदैन्यंरुगितिनवमेवित्तचेष्टाविरोधो जयंप्राप्नोत्युग्रंदशमगृहगेकर्मसिद्धिंक्रमेण ॥ जयंस्थानंमानंविभवमपिचैकादशेरोगनाशं सुवृत्तानांचेष्टाभवतिसफलाद्वादशेनेतरेषाम् ७ ॥

नवम सूर्य होय तो आपदा दीनता रोग औ धनकी चेष्टा में विघ्न होताहै दशवें सूर्य होय तो अप्रति हत जय होता है औ क्रमसे कार्य सिद्ध होते हैं। ग्यारहवें सूर्य होय तो जय स्थान मान ऐश्वर्य देता है औ रोग नाश करताहै। बारहवें सूर्यहोय तो सदाचार पुरुषोंकीही क्रिया सफल होतीहै औरोंकी नहीं होती। यहसुवृत्ता छन्दहै ७ ॥

शशीजन्मन्यन्नप्रवरशयनाच्छादनकरोद्वितीयेमानार्थौग्लपयतिसविघ्नश्चभवति ॥ तृतीयेवस्त्रस्त्रीधननिचयसौख्यानिलभते चतुर्थेऽविश्वासःशिखरिणभुजङ्गेनसदृशः ८ ॥

जन्मका चन्द्रमा होय तो भोजन उत्तम शय्या औ ओढ़ने के वस्त्रदेताहै। दूसरा चन्द्रहोय तो मान औ धन में ग्लानि करता है औ विघ्न करता है।

तीसरे चन्द्रहोय तो वस्त्र स्त्री धनकासमूह औ सुख मिलते हैं चौथे चन्द्रहोय तो जैसा सर्पयुक्त पर्वत में किसीका विश्वास नहीं होता ऐसेही उस पुरुष में किसीका विश्वास नहीं होता । यह शिखरिणी छन्दहै ८ ॥

दैन्यंव्याधिंशुचमपिशशीपंचमेमार्गविघ्नं षष्ठेवित्तंजनयतिसुखं शत्रुरोगक्षयंच ॥ यानंमानंशयनमशनंसप्तमेवित्तलाभं मन्दाक्रान्ते फणिनिहिभिगोचाष्टमेभीर्नकस्य ९ ॥

पांचवें चन्द्रहोय तो दीनता रोग शोक औ मार्ग में विघ्न करता है छठे चन्द्रहोय तो धन औ सुखदेताहै औ शत्रुओंका औ रोगोंका क्षय करता है । सातवें चन्द्रहोय तो वाहन मान शय्या औ भोजन मिलतेहैं औ धनका लाभ होताहै । आठवें चन्द्रहोय तो जैसे थोड़े दवाये हुये सर्पसे भय सबको होताहै ऐसे भय होता है । यह मन्दाक्रान्ताछन्द है ९ ॥

नवमगृहगोबन्धोद्वेगंश्रमोदररोगकृद्दशमभवनेचाज्ञाकर्मप्रसिद्धिकरःशशी ॥ उपचयसुहृत्संयोगार्थप्रमोदमपान्त्यगोवृषभचारितान्दोषान्नेकरोतिहिसव्ययान् १० ॥

नवम चन्द्रमा होय तो बन्धन उद्वेग श्रम औ उदर रोग करता है । दशम चन्द्रमा होय तो प्रभुत्व औ कार्य सिद्धि करता है । ग्यारहवें चन्द्रमा होय तो उपचय (वृद्धि) मित्रसमागम धन औ हर्ष करता है । बारहवें चन्द्रमा होय तो मत्त वृषभ की भांति अनेक दोष करता है औ धन का व्यय भी करताहै । यह वृषभ चरित छन्दहै १० ॥

कुजेऽभिघातःप्रथमेद्वितीयेनरेन्द्रपीडाकलहारिदोषैः ॥
भृशंचपित्ताऽनलरोगचौरैरुपेन्द्रवज्रप्रतिमोऽपियःस्यात् ११ ॥

जन्म में मंगल होय तो अभिघात होता है । औ दूसरे मंगल होय तो राजा से पीड़ा कलह शत्रु दोष पित्त अग्नि रोग औ चोरों करके बहुत उपद्रव होता है चाहे वह मनुष्य विष्णु के अथवा वज्र के तुल्य भी होय यह उपेन्द्रवज्रा छन्दहै ११ ॥

तृतीयगश्चौरकुमारकेभ्योभौमःसकाशात्फलमादधाति ॥
प्रदीप्तिमाज्ञांधनमौर्णिकानिधात्वाकराख्यानिकिलापराणि १२॥

तीसरे मंगल होय तो चोर औ कुमारों से फल होता है । कांति प्रभुत्व धन ऊन के वस्त्र सुवर्ण आदि धातु औ आकर (खानि) आदि और से भी फल देता है । यह उपजाति छन्द है १२ ॥

भवतिधरणिजेचतुर्थगेज्वरजठरगदाऽसृगुद्भवः ॥

कुपुरुषजनिताश्चसंगमात्प्रसभमपिकरोतिचाशुभम् १३॥
मंगल चौथे होय तो ज्वर उदरके रोग औ रुधिरके विकार होतेहैं औ दुष्ट पुरुष के संगसे बलात्कार करके अशुभ भी करताहै। यह प्रसभ छन्दहै १३॥

रिपुगदक्रोपभयानिपञ्चमेतनयकृताश्चशुचोमहीसुते॥
द्युतिरपिनास्यचिरंभवेत्स्थिराशिरसिकपेरिवमालतीकृता १४॥
पांचवें मंगल होय तो शत्रु रोग क्रोध औ भय होताहै औ उस पुरुष की शरीर कांति भी स्थिर नहीं रहती। जिसभांति बंदर के शिरपर मालती के फूलों की माला स्थिर नहीं रहती। यह मालती छन्दहै १४॥

रिपुभयकलहैर्विवर्जितःसकनकविद्रुमताम्रकागमः॥ रिपुभवनगते महीसुतेकिमपरवक्त्रविकारमीक्षते १५ कलत्रकलहाक्षिरुग्जठररोग कृत्सप्तमेक्षरत्क्षतजरूषितःक्षयितवित्तमानोऽष्टमे॥ कुजेनवमसंस्थि तेपरिभवार्थनाशादिभिर्विलम्बितगतिर्भवत्यबलदेहधातुक्लमैः १६॥
मंगल सातवें होय तो भार्या के साथ कलह होय नेत्र औ उदर में रोग होय। मंगल आठवें होय तो टपकतेहुये रुधिर से लिप्तहोय औ धन औ मान का क्षय होय मंगल नवम होय तो अनादर करके धननाशआदि करके देह की दुर्बलता करके औ रस रुधिरआदि धातुओं की म्लानता करके मन्दगति होजाय यह विलम्बितगति वृत्तहै १५। १६॥

दशमगृहगतेसमंमहीजेविविधधनाप्तिरुपान्त्यगेजयश्च॥
जनपदमुपरिस्थितश्चभुङ्क्तेवनमिवषट्चरणःसुपुष्पिताग्रम् १७॥
दशम मंगलहोय तो सम अर्थात् न शुभ औ न अशुभ फल होताहै ग्यारहवें मंगल होय तो अनेकभांति के धनकी प्राप्ति औ जयहोताहै। औ वह मनुष्य सबसे ऊंचेपदमें स्थितहोकर देशका भोगकरताहै। जिसभांति फूले वनको भ्रमर भोगकरै। यह पुष्पिताग्रा छन्द है १७॥

नानाव्ययैर्द्वादशगेमहीसुतेसंताप्यतेऽनर्थशतैश्चमानवः॥
स्त्रीकोपपित्तैश्चसनेत्रवेदनैर्योपीन्द्रवंशाऽभिजनेनगर्वितः १८॥
बारहवें मंगलहोय तो अनेक भांति के खर्च औ सैकडों उपद्रवों करके मनुष्य पीड़ित होताहै। औ स्त्रीकोप पित्त औ नेत्रपीड़ा करके भी होता है। इन्द्रकेतुल्य वंश औ अभिजनका जो पुरुष अहंकार रखताहो वह भी पीड़ित होताहै साधारण मनुष्यकी तो कथाही क्याहै। यह इन्द्रवंशाछन्दहै १८॥

दुष्टवाक्यपिशुनाहितभेदैर्बान्धवैःसकलहैश्चहतस्वः॥
जन्मगेशशिसुतेपथिगच्छन्स्वागतेऽपिकुशलंनशृणोति १९॥

लग्नका बुधहोय तो खोटेवाक्य औ पिशुन पुरुषों (चुगुलखोर) ने किया है जिनसे उन बांधवोंने हरा है धन जिसका ऐसाहोकर पुरुष मार्ग में चलताहुआ स्वागतमें भी कहीं कुशल शब्द नहीं सुनता । वास्तव में तो कुशल होने की क्याआशा है । यह स्वागता वृत्त है १९ ॥

परिभवोधनगतेधनलब्धिःसहजगेशशिसुतेसुहृदाप्तिः ॥
नृपतिशत्रुभयशङ्कितचित्तोद्रुतपदंव्रजतिदुश्चरितैःस्वैः २० ॥

दुसरे बुधहोय तो अनादरहोताहै औ धनका लाभ होताहै । तीसरे बुधहोय तो मित्रकालाभ होताहै । औ अपने दुष्कर्मोंकरके राजाके औ शत्रुओंके भयसे शंकित चित्त हुआ हुआ जल्दी जल्दी चलता है यह द्रुतपदछन्द है २० ॥

चतुर्थगेस्वजनकुटुम्बवृद्धयोधनागमोभवतिचशीतरश्मिजे ॥
सुतस्थितेतनयकलत्रविग्रहोनिषेवतेनचरुचिरामपिस्त्रियम् २१॥

बुध चौथे होय तो स्वजन औ कुटुम्ब की वृद्धि होती है । औ धन की प्राप्ति होती है । पांचवें बुध होय तो पुत्र औ स्त्री से कलह होय औ सुंदर स्त्री से भी भोग न कर सके । यह रुचिरा वृत्त है २१ ॥

सौभाग्यंविजयमथोन्नतिंचषष्ठेवैकल्यंकलहमतीवसप्तमेज्ञः ॥
मृत्युस्थेसुतजयवस्त्रवित्तलाभान्नैपुण्यंभवतिमतिप्रहर्षणीयम् २२॥

छठे बुध होय तो सोभाग्य विजय औ उन्नति को करता है । सातवें बुध होय तो विकलता होती है औ बहुत कलह होताहै । आठवां बुध होय तोपुत्र जय वस्त्र औ धनका लाभ होताहै । निपुणता होती है औ बुद्धि भी हर्ष देने वाली होती है । यह प्रहर्षिणी वृत्तहै २२ ॥

विघ्नकरोनवमःशशिपुत्रःकर्मगतोरिपुहाधनदश्च ॥
सप्रमदंशयनंचविधत्तेतद्गृहदोथकथास्तरणंच २३ ॥

नवां बुध सब कार्यों में विघ्न करताहै । दशवें बुध होय तो शत्रुका नाश करताहै धन देता है स्त्री सहित शयन देता है । उस स्त्री का घर देता है । कथा (इतिहास आदि) का श्रवण कराता है औ आस्तरण (बिछौना) देताहै ॥ यह दोधक वृत्त है २३ ॥

धनसुखसुतयोषिन्मित्रवाह्याप्तितुष्टिस्तुहिनकिरणपुत्रेलाभगेमृष्टवाक्यः ॥ रिपुपरिभवरोगैःपीडितोद्वादशस्थेनसहतिपरिभोक्तुंमालिनीयोगसौख्यम् २४ ॥

बुध ग्यारहवें होय तो धन सुख पुत्र स्त्री मित्र औ वाहनका लाभ होताहै तुष्टि (चित्तमें हर्ष) होती है । औ मीठे वचन बोलता है । बारहवें बु॰

तो शत्रु अपमान औ रोगों करके पीड़ित होता है स्त्री संयोग से सुख नहीं भोग सकता। यह मालिनी वृत्तहै २४॥

जीवेजन्मन्यपगतधनधीःस्थानभ्रष्टोबहुकलहयुतः॥
प्राप्यार्थेऽर्थान्व्यरिरपिकुरुतेकान्तास्याब्जेभ्रमरविलसितम् २५॥

जन्मका वृहस्पति होय तो धन औ बुद्धिसे हीनहोकर पुरुष स्थान च्युत होजाताहै। औ बहुतसे कलह करके युक्त होताहै दूसरे वृहस्पति होय तोपुरुष धन प्राप्तकरके औ शत्रुरहित होकर कांताके मुख कमल में भ्रमरके तुल्य विलास (चुंबन आदि) करताहै॥ यह भ्रमर विलसित वृत्तहै २५॥

स्थानभ्रंशात्कार्यविघाताच्चतृतीयेनैकैःक्लेशैर्बन्धुजनोत्थैश्चचतुर्थे॥
जीवेशान्तिंपीडितचित्तश्चसविन्देन्नैवग्रामेनापिवनेमत्तमयूरे २६॥

तीसरे वृहस्पति होय तो स्थान भ्रंश होनेसे औ कार्योंका नाशहोने से औ चौथे वृहस्पतिहोय तो बंधुजनोंसे उत्पन्न भांति २ के क्लेश होनेसे पीड़ितचित्त मनुष्य न तो ग्राम में औ न मत्त मयूरोंकरके युक्त वनमें शांति को प्राप्तहोता है। यह मत्तमयूर वृत्तहै २६॥

जनयतिचतनयभवनमुपगतःपरिजनशुभसुतकरितुरगवृषान्॥
सकनकपुरगृहयुवतिवसनकृन्मणिगुणनिकरकृदपिविबुधगुरुः २७॥

पांचवें वृहस्पतिहोयतो परिजन (सेवकादि) शुभ (धर्मआदि) पुत्रहाथी घोड़े औ बैल इनको देताहै। सुवर्ण नगर घर तरुणस्त्री औ वस्त्रदेताहै मणियों के समूह को औ गुणोंके समूह को करता है। यह मणिगुण निकरवृत्तहै २७॥

नसखीवदनंतिलकोज्ज्वलंनभवनंशिखिकोकिलनादितम्॥
हरिणप्लुतशावविचित्रितंरिपुगतेमनसःसुखदंगुरौ २८॥

छठे वृहस्पतिहोय तो तिलककरके शोभित सखीका मुख सुख नहीं देता औ मयूर औ कोकिलोंकरके नादित औ उछलतेहुये हरिण के बच्चोंकरके युक्त वनभी सुख नहीं देता। यह हरिणप्लुता वृत्तहै २८॥

त्रिदशगुरुःशयनंरतिभोगंधनमशनंकुसुमान्युपवाह्यम्॥
जनयतिसप्तमराशिमुपेतोललितपदांचगिरंधिषणांच २९॥

सातवें वृहस्पति होय तो शय्या रति भोग धन भोजन पुष्पवाहन देताहै ललित पदोंवाली वाणी देताहै औबुद्धिभीदेताहै। यह ललितपदवृत्तहै २९॥

बन्धंव्याधिंचाष्टमेशोकमुग्रंमार्गेक्लेशंमृत्युतुल्यांश्चरोगान्॥
नैपुण्याज्ञापुत्रकर्मोऽर्थसिद्धिंधर्मेजीवःशालिनीनांचलाभम् ३०॥

आठवें वृहस्पतिहोय तो बन्धन व्याधि बड़ाशोक मार्ग में क्लेश औ मृत्युके

तुल्य भंग करता है। नवम बृहस्पतिहोय तो निपुणता प्रभुता पुत्र कार्यों की औ अर्थों की सिद्धि इनको देता है औ शालियुक्त भूमिका लाभ करता है। यह शालिनी वृत्त है ३० ॥

स्थानकल्यधनहादशर्क्षगस्तत्प्रदोभवतिलाभगोगुरुः ॥
द्वादशेऽध्वनिविलोमदुःखभाग्यातियद्यपिनरोरथोद्धतः ३१ ॥

दशवें बृहस्पतिहोय तो स्थान आरोग्य औ धनका नाश करता है। ग्यारहवें बृहस्पतिहोय तो स्थान आरोग्य औ धनको देताहै। वारहवें बृहस्पति होय तो मनुष्य चाहे रथपर भी चढ़कर जाय तो भी मार्ग में उलटे दुःखपाताहै। यह रथोद्धता वृत्तहै २१ ॥

प्रथमगृहोपगोभृगुसुतःस्मरोपकरणैःसुरभिमनोज्ञगन्धकुसुमाऽम्बरैरुपचयम् ॥ शयनगृहासनाशनयुतस्सचानुकुरुतेसमदविलासिनीमुखसरोजषट्चरणताम् ३२ ॥

जन्म में शुक्र होय तो कामदेव के उपकरण वस्त्र भूषण अनुलेपन शय्या आदि करके सुगन्ध औ मनोहर गन्ध द्रव्य पुष्प औ वस्त्रों करके वृद्धि करता है। औ वह पुरुष शय्या घर आसन औ भोजन युक्त होकर मद युक्त कांताके मुख कमलमें भ्रमरता का अनुकरण करताहै। यह विलासिनीवृत्त है ३२ ॥

शुक्रेद्वितीयगृहगेप्रसवाऽर्थधान्यभूपालसन्नतिकुटुम्बहितान्यवाप्य ॥
संसेवतेकुसुमरत्नविभूषितश्चकामंवसन्ततिलकद्युतिमूर्धजोऽपि ३३

दूसरे शुक्र होय तो सन्तान धन धान्य राज सम्मान औ कुटुम्ब करके हित को प्राप्त होकर औ पुष्प औ रत्नों से भूषित होकर कामदेव का सेवन मनुष्य करताहै चाहे उसके केश वसन्त तिलक वृक्षके पुष्पके तुल्य (शुक्लवर्ण) भी होगये होयँ यह वसन्त तिलकवृत्तहै ३३ ॥

आज्ञार्थमानास्पदभूतिवस्त्रशत्रुक्षयान्दैत्यगुरुस्तृतीये ॥
धत्तेचतुर्थश्चसुहृत्समाजंरुद्रेन्द्रवज्रप्रतिमांचशक्तिम् ३४ ॥

तीसरे शुक्र होय तो प्रभुता धन मान स्थान सम्पत्ति औ वस्त्र देता है। औ शत्रुक्षय करताहै। चौथे शुक्रहोय तो मित्रोंसे समागम करताहै औ रुद्र इन्द्र औ वज्रके तुल्य सामर्थ्य करताहै। यह इन्द्रवज्रा वृत्तहै ३४ ॥

जनयतिशुक्रःपञ्चमसंस्थोगुरुपरितोषंबन्धुजनाप्तिम् ॥
सुतधनलब्धिंमित्रसहायानवसितत्वंचारिबलेषु ३५ ॥

पाँचवां शुक्र होय तो बड़े परितोषको देताहै। बन्धुजनों की प्राप्ति करके

है। पुत्र औ धनका लाभ करताहै मित्र औ सहायक मिलतेहैं औ शत्रुवर्गोंमें अनवसितत्व (असमाप्तता) करताहै॥ यह अनवसिता वृत्तहै ३५॥

षष्ठोभृगुःपरिभवरोगतापदःस्त्रीहेतुकंजनयतिसप्तमोशुभम्॥
यातोऽष्टमंभवनपरिच्छदप्रदोलक्ष्मीवतीमुपनयतिस्त्रियंचसः३६॥

छठाशुक्र अनादर रोग औ सन्तापको देताहै। सातवां शुक्रस्त्रीके निमित्त अशुभ करताहै। आठवें शुक्रहोय तो घर औ परिच्छद देताहै। औ लक्ष्मीयुक्त स्त्रीको वह पुरुष पाताहै॥ यह लक्ष्मी वृत्तहै ३६॥

नवमेतुधर्मवनितासुखभाग्भृगुजेऽर्थवस्त्रनिचयश्चभवेत्॥
दशमेऽवमानकलहान्नियमात्प्रमिताक्षराण्यऽपिवदन्लभते३७॥

नवम शुक्रहोय तो मनुष्य धर्म स्त्री औ सुखको प्राप्त होताहै। धन औ बहुतसे वस्त्र भी मिलतेहैं। दशवां शुक्रहोय तो अपमान औ कलहको मनुष्य निश्चयही पाताहै। चाहे वह थोड़ा भी भाषणकरै। यह प्रमिताक्षरावृत्तहै ३७॥

उपान्त्यगोभृगोःसुतःसुहृद्धनान्नगन्धदः॥
धनाम्बरागमोऽन्त्यगेस्थिरस्तुनाम्बरागमः ३८॥

ग्यारहवें शुक्रहोय तो मित्र धन अन्न औ सुगन्ध द्रव्य देताहै। बारहवां शुक्रहोय तो भी धन औ वस्त्रका आगमन होता है परन्तु वस्त्रका आगमन स्थिर नहीं रहता॥ यह स्थिर वृत्तहै ३८॥

प्रथमेरविजेविषवह्निहतःस्वजनैर्वियुतःकृतबन्धवधः॥
परदेशमुपेत्यसुहृद्भवनोविसुखार्थसुतोऽटकदीनमुखः ३९॥

जन्मका शनिहोय तो मनुष्य विष औ अग्नि करके पीड़ित होताहै। बंधुओं करके वियुक्त होता है। बन्धन औ बधकरके परदेश को जाताहै। मित्र औ गृहसे हीन होता है सुख धन औ पुत्र से हीन होता है। अटक (भ्रमणशील औ म्लानमुख रहताहै। यह तोटक छन्दहै ३९॥

चारवशाद्द्वितीयगृहगे दिनकरतनयेरूपसुखाऽपवर्जिततनुर्विगतमदबलः॥ अन्यगुणैःकृतवसुचयंतदपिखलुभवत्यऽस्थिरवंशपत्रपतितंनबहुनचचिरम् ४०॥

राशिचार क्रमसे शनैश्चर दूसरे होय तो रूप औ सुखसे हीन शरीर औ मद औ बलसे हीन मनुष्य होताहै। औ विद्या आदि और गुणों से संपादन किया धनभी बांसके पत्तेके ऊपर जलकी भांति बहुतसा औ चिरकालपर्यंत नहीं ठहर सकता॥ यह वंशपत्र पतित वृत्तहै ४०॥

सूर्यसुतेतृतीयगृहगेधनानिलभते हालपरिच्छदोष्ट्रमहिषाऽश्व

कुंजराश्वशान् ॥ सद्मविभूतिसौख्यममितंगदक्षयुपरमंभीरुरपिप्रशा
स्त्यऽरिरिपूंश्चवीरललितैः ४१ ॥

शनि तीसरे होय तो धन मिलता है। दास परिच्छद ऊंट महिष घोड़े हाथी औ गर्दभ मिलते हैं। घर ऐश्वर्य औ बहुत सुख मिलता है। रोग की शांति होती है। वह पुरुष भी रुभी होय तो भी वीरोंके चरित करके शत्रुओं के ऊपर शासना करता है॥ यह ललित वृत्तहै ४१॥

चतुर्थगृहेसूर्यपुत्रेऽभ्युपेतेसुहृद्वित्तभार्यादिभिर्विप्रयुक्तः ॥
भवत्यस्यसर्वत्रचासाधुदुष्टंभुजङ्गप्रयातानुकारंचचित्तम् ४२॥

चौथा शनैश्चर होयतो मित्र धन औ भार्या आदि से वियोग होताहै। औ उस मनुष्यका चित्त सब स्थानमें असाधु दुष्ट औ सर्पके गमन के समान अति कुटिल होजाताहै॥ यह भुजंग प्रयात छन्दहै ४२॥

सुतधनपरिहीनःपञ्चमस्थेप्रचुरकलहयुक्तश्चार्कपुत्रे ॥
विनिहतरिपुरोगःषष्ठयातेपिबतिचवनितास्यंश्रीपुटोष्ठम् ४३॥

पांचवांशनि होयतो पुत्र औधनसे हीन औबहुत कलह करके युक्त मनुष्य होताहै। छठा शनि होय तो शत्रु औ रोगों का नाशकर मनुष्य शोभायमान ओष्ठों वाले स्त्री के मुख कमल का पान करताहै॥ यह पुटवृत्तहै ४३॥

गच्छत्यध्वानंसप्तमेचाऽष्टमेवहीनःस्त्रीपुत्रैःसूर्यजेदीनचेष्टः ॥
तद्वद्धर्मस्थेवैरहृद्रोगबन्धैर्धर्मोप्युच्छिद्येद्वैश्वदेवीक्रियाद्यः ४४ ॥

सातवें औ आठवें शनि होय तो मनुष्य मार्ग में चलताहै। स्त्री औ पुत्रों से हीन होताहै। औ दीन चेष्टा करके युक्त होजाताहै। इसीभांति नवम शनि होय तो भी वैर हृदय रोग औ बंधन करके बलि वैश्वदेव क्रिया आदि धर्म भी उच्छिन्न होजाताहै। यह वैश्वदेवी वृत्तहै ४४॥

कर्मप्राप्तिर्दशमेऽर्थक्षयश्चविद्याकीर्त्योःपरिहानिश्चसौरे ॥
तैक्ष्ण्यंलाभेपरयोषाऽर्थलाभश्चान्तेप्राप्नोत्यपिशोकोर्मिमालाम्४५

दशवें शनि होय तो कार्य सिद्धि होती है औ धनका नाश होताहै। विद्या औ कीर्तिकी भी हानि होती है। ग्यारहवें शनि होय तो मनुष्य का स्वभाव क्रूर होजाताहै औ पर स्त्री औ परधनका लाभ होजाताहै। औबारहवें शनि होय तो शोकके तरंगोंकी पंक्ति मनुष्य को प्राप्त होतीहै। अर्थात् बहुत शोक होताहै। यह ऊर्मिमाला वृत्तहै ४५॥

अपिकालमपेक्ष्यचपात्रंशुभकृद्विदधात्यनुरूपम् ॥
नमधौबहुकंकुड्वेचविसृजत्यपिमेघवितानः ४६ ॥

शुभ फल देनेवाला ग्रह काल औ पात्र की अपेक्षा से अनुरूप फल देता है अर्थात् जन्म में शुभदशा होय औ उस पुरुषके स्वरूप पर वह शुभ फल युक्त होय तो गोचर में ग्रह शुभ फल देताहै । इसमें दृष्टांत कहते हैं कि बसंत ऋतुमें मेघों का समूह कुड़व (एक काष्ठका पात्र जिसमें अनुमान पाव अन्न आसके) में बहुत जल नहीं देसकता । अर्थात् बसंत ऋतु बहुत जल बरसने का काल नहीं औ कुड़व बहुत जलके योग्य पात्र नहीं है । यह मेघ वितान वृत्तहै ४६ ॥

रक्तैः पुष्पैर्गन्धैस्ताम्रैः कनकवृषवकुलकुसुमैर्दिवाकरभूसुतौभक्त्या पूज्याविन्दुर्धेन्वासितकुसुमरजतमधुरैः सितश्चमदप्रदैः॥ कृष्णद्रव्यैः सौरिः सौम्योमणिरजततिलककुसुमैर्गुरुः परिपीतकैः प्रीतैः पीडानस्या दुच्चाद्यदिपततिविशतियदिवाभुजङ्गविजृम्भितम् ४७ ॥

रक्त वर्ण के पुष्प रक्तचंदन सुवर्ण वृष औ वकुल (मौरसिरी) के पुष्पों करके भक्ति से सूर्य औ मङ्गलकी पूजा करनी चाहिये । गौ श्वेत पुष्प चांदी औ मीठे द्रव्यों करके चंद्रका पूजन करै मदको करनेवाले द्रव्यों करके शुक्रका पूजन करै । काले रङ्गके द्रव्यों करके शनिका पूजन करै । मणि चांदी औ तिलक वृक्षके पुष्पों करके बुधका पूजन करै । औ पीले रङ्गके द्रव्यों करके बृहस्पति का पूजन करै । ग्रह प्रसन्न होजायं तो पीड़ा नहीं होती चाहै मनुष्य ऊंचे स्थान से गिरै अथवा खेलते हुये सर्पोंमें प्रवेशकरै । यह भुजङ्ग विजृंभित वृत्तहै ४७ ॥

शमयोद्गतामशुभवृष्टिमपिविबुधविप्रपूजया ॥
शान्तिजपनियमदानदमैः सुजनाभिभाषणसमागमैस्तथा ४८ ॥

देवता औ ब्राह्मणों की पूजा करके शांति जप नियम दान दम (इंद्रिय निग्रह) सुजन पुरुषों के साथ भाषण औ सज्जनोंके समागम करके उठीहुई अशुभ फलकी वर्षा को भी शमन करो । अर्थात् इनसे बहुतभी अशुभ निवृत्त होजाताहै । यह उद्गता वृत्तहै ४८ ॥

रविभौमौपूर्वार्धेशशिसौरौकथयतोऽन्त्यगौराशेः ॥
सदसल्लक्षणमार्यागीत्युपगीत्योर्यथासंख्यम् ४९ ॥

सूर्य औ भौम राशिके पूर्वार्धमें रहें औ मङ्गल औ शनि राशिके उत्तरार्धमें रहें तब भला बुरा फल करते हैं । जैसे आर्या के पूर्वार्द्ध के तुल्य दोनों अर्ध होयँ तो गीति औ उत्तरार्ध के समान दोनों अर्ध होयँ तो उपगीति होती है ॥ यह आर्या है ४९ ॥

आदौयादक्सौम्यः पश्चादपितादृशोभवति ॥

उपगीतेर्मात्राणांगणवत्सत्संप्रयोगोवा ५० ॥

बुध जैसा फल राशि के पूर्वार्ध में करताहै वैसाही उत्तरार्ध में करता है। उपगीति की मात्राके गणोंकी भांति अर्थात् जैसा उपगीतिका पूर्वार्ध औ उत्तरार्ध समान होता है। अथवा जैसा सज्जन पुरुषों का समागम सदा एक रस रहताहै ऐसाही बुधका फल जानो ५० ॥

आर्याणामपिकुरुतेविनाशमन्तर्गुरुर्विषमसंस्थः ॥
गणइवषष्ठेदृष्टश्चसर्वलघुतांगतोनयति ५१ ॥

बृहस्पति अशुभ स्थान में होय तो राशि के मध्य में आयकर सत्पुरुषोंका नाशकरता है । औ वह बृहस्पति छठे स्थान में बैठा देखपड़ै तो मनुष्य को सबमें गौरव हीनकरदेता है । अन्तर्गुरु अर्थात् मध्यगुरु (जगण) जो आर्या के विषम स्थानमें होय तो आर्याछन्दको बिगाड़देताहै औ वह गण छठेस्थान में होय अथवा छठे स्थान में सर्वलघु (चारलघु) होयँ तो आर्या ठीकहोती है यह आर्याछन्द है ५१ ॥

अशुभनिरीक्षितःशुभफलोबलिनाबलवानशुभफलप्रदश्चशुभदृग्विषयोपगतः ॥ अशुभशुभावपिस्वफलयोर्व्रजतःसमतामिदमपिगीतकंचखलुनर्कुटकंचयथा ५२ ॥

शुभफल देनेवाले बलवान् ग्रहोंको बलवान् अशुभ ग्रह देखता होय औ अशुभ फल देनेवाले ग्रहको शुभग्रह देखता होय तो वे ग्रह अपने फल की समता को प्राप्त होते हैं अर्थात् न तो शुभ औ न अशुभ फल करते हैं । जैसे संस्कृत में नर्कुट छन्द औ प्राकृत में नर्कुट गीत समान लक्षण होते हैं । यह नर्कुटक वृत्त है ५२ ॥

नीचेऽरिभेऽस्तेचारिदृष्टस्यसर्वंवृथायत्परिकीर्तितम् ॥
पुरतोऽन्धस्येवभामिन्याःसविलासकटाक्षनिरीक्षणम् ५३ ॥

नीचराशि में स्थित शत्रुराशि में स्थित अस्तको प्राप्त औ शत्रुदृष्ट ग्रहहोय तो कहाहुआ सबफल वृथा होजाता है। जैसे अन्धेके आगे उत्तमस्त्रीका विलासयुक्त कटाक्षों से देखना निष्फलहोताहै यह विलास वृत्त है ५३ ॥

सूर्यसुतोऽर्कफलसमश्चन्द्रसुतश्छन्दतःसमनुयाति ॥
यथास्कन्धकमार्यागीतिर्वैतालीयंचमागधीगाथायाम् ५४ ॥

शनिका गोचरफल सूर्यके गोचर फलके समानहै । औ बुध अपना गोचर फल छन्द (परचितानुकूल) से करता है अर्थात् शुभग्रह के साथ बैठाहोय तो शुभ औ अशुभग्रह के साथ बैठाहोय तो अशुभ फलकी समता करता है

जैसे संस्कृत में आर्यागीति छन्द प्राकृत के स्कन्धक छन्दकी औ संस्कृत का वैतालीयच्छन्द मागधी गाथा की समता करता है ५४ ॥

सौरोऽर्करश्मियोगात्सविकारोलब्धवृद्धिरधिकतरम् ॥
पित्तवदाचरतिनृणांपथ्यकृतांनतुतथार्याणाम् ५५ ॥

शनि सूर्य किरणों के योग से अर्थात् अस्त होनेसे अधिक बलवान् होकर मनुष्यों को पित्तकी भांति अशुभ फल अधिक करताहै । धूप लगने से पित्त का भी अधिक कोप होताहै । परन्तु पथ्य में चलनेवालों को जैसे पित्तपीड़ा नहीं देसकता इसीभांति साधु पुरुषों को शनि भी पीड़ा नहीं देता । यहपथ्या आर्या है ५५ ॥

यादृशेनग्रहेणेन्दुर्युक्तस्तादृग्भवेत्सोऽपि ॥
मनोवृत्तिसमायोगाद्विकारइववक्त्रस्य ५६ ॥

चन्द्रमा जैसे ग्रह करके युक्त होय वैसाही वह फल करता है । जैसे चित्त वृत्ति के अनुसार मुखकी चेष्टा होतीहै । अर्थात् चित्तप्रसन्न होय तो मुखप्रसन्न औ चित्तदुःखी होय तो मुख मलिन होताहै । यह वक्त्र वृत्त है ५६ ॥

पञ्चमंसर्वपादेषुसप्तमंद्विचतुर्थयोः ॥
यद्वच्छ्लोकाक्षरंतद्वल्लघुतांयातिदुःस्थितैः ५७ ॥

श्लोक वृत्त के सब पादोंमें पांचवां अक्षर औ दूसरे औ चौथे पाद में सातवां अक्षर जिसभांति लघुता को प्राप्त होता है इसीप्रकार जो ग्रह अशुभ स्थानों में स्थितहोयँ तो मनुष्य लघुता को प्राप्तहोताहै । यह श्लोकहै ५७ ॥

प्रकृत्यापिलघुर्यश्चवृत्तबाह्येऽप्यवस्थितः ॥
सयातिगुरुतांलोकेयदास्युःसुस्थिताग्रहाः ५८ ॥

जो ग्रह अच्छे स्थानोंमें स्थितहोयँ तो मनुष्य स्वभाव करके लघु (तुच्छ) होय औ उसका आचरण भी अच्छा न होय तोभी वह मनुष्य लोकमें गौरव को प्राप्त होताहै । जैसे लघुअक्षर पादान्त में स्थित होय तो गुरुता को प्राप्त होता है । यह अनुष्टुप् वृत्तहै ५८ ॥

प्रारब्धमसुस्थितैर्ग्रहैर्यत्कर्मात्मविवृद्धयेबुधैः ॥
विनिहन्तितदेवकर्मतान्वैतालीयमिवायथाकृतम् ५९ ॥

बुरे ग्रह होनेपर पण्डितलोक अपनी वृद्धिकेलिये जिसकार्यका आरम्भकरै वहीकर्म उनका नाशकरताहै । जैसे बिना विधि के कियाहुआ वेताल साधन नाशकरता है । यह वैतालीय वृत्तहै ५९ ॥

सौस्थित्यमवेक्ष्ययोग्रहेभ्यःकालेप्रक्रमणंकरोतिराजा ॥

शुक्रवारके दिनचित्रकर्मवस्त्र वृष्य (वृषसंबंधी अथवा पौष्टिक) वेश्य (वेश्यासंबंधी) कामिनी के विलासहास यौवनका उपभोग रमणीय भूमि (उपवनआदि) स्फटिक चांदी कामदेवके उपचार वाहन इक्षु (ईख) शारद प्रकार (शरत्ऋतुमें उत्पन्न धान्यआदि) गौ वणिक्कर्म कृषीवलऔषध अंबुज (जलसे उत्पन्न कमलआदि) इनसबके कार्यकरने चाहिये ॥ शनिवारके दिन महिषी बकरी ऊंट कृष्णवस्तु लोह दास वृद्ध नीचकर्म करनेवाला पक्षीचोर पाशलगानेवाले विनयहीन पुरुष फूटेपात्रहाथी की अपेक्षा रखनेवाले औ विघ्नके कारण इनसबके कार्य करै। जोशनिवारको नकरै तो ये कार्य सिद्ध नहीं होते वह पुरुष चाहे समुद्रमेंभी जाय परन्तु एकबूंद जल न मिले। यह समुद्रनामक दंडकहै ६३ ॥

विपुलामपिबुद्ध्वाच्छन्दोविचितंभवतिकार्यमेतावत् ॥
श्रुतिसुखदवृत्तसंग्रहमिममाहवराहमिहिरोऽतः ६४ ॥

इतिश्रीवराहमिहिरकृतौबृहत्संहितायांग्रहगोचराध्यायो
नामपञ्चोत्तरशततमोऽध्यायः ॥ १०५ ॥

बहुतसे छंदोंका प्रस्तार जानकर भी इतनेही छन्द काममें आतेहैं इसलिये कानोंको मीठे लगनेवाले छन्दोंका संग्रह यह वराहमिहिराचार्यने कहा है। यह विपुला आर्या है ६४ ॥

श्रीवराहमिहिराचार्यकीबनाईबृहत्संहितामेंग्रहगोचर
नामएकसौपांचवांअध्यायसमाप्तहुआ १०५ ॥

एकसौछठांअध्याय ॥

रूपसत्र अथवा नक्षत्रपुरुषव्रत ॥

पादौमूलंजंघेचरोहिणीजानुनीतथाऽश्विन्यः ॥ ऊरूचाषाढद्वयमथगुह्यंफल्गुनीयुग्मम् १ कटिरपिचकृत्तिकापार्श्वयोश्चयमलाभवन्तिभद्रपदाः ॥ कुक्षिस्थारेवत्योविज्ञेयमुरोऽनुराधाच २ पृष्ठंविद्धिधनिष्ठाभुजौविशाखास्मृताकरौहस्तः ॥ अंगुल्यश्चपुनर्वसुराश्लेषासंज्ञिताश्चनखाः ३ ग्रीवाज्येष्ठाश्रवणौश्रवणःपुष्योमुखंद्विजाःस्वातिः॥ हसितंशतभिषगथनासिकामघाम्रृगशिरोनेत्रे ४ चित्राललाटसंस्थाशिरोभरण्यःशिरोरुहाश्चार्द्रा ॥ नक्षत्रपुरुषकोऽयंकर्तव्योरूपमिच्छद्भिः ५ ॥

नक्षत्र पुरुषके दोनों पैर मूल नक्षत्र दोनों जंघा रोहिणी दोनों जानु अश्विनी दोनोंऊरू पूर्वाषाढ औ उत्तराषाढ गुह्य पूर्वाफाल्गुनी औ उत्तराफाल्गुनी १

कटि कृत्तिका दोनोंपार्श्व पूर्वाभाद्रपदा औ उत्तराभाद्रपदा कुक्षि रेवती उर स्थल अनुराधा २ पीठ धनिष्ठा दोनोंभुजा विशाखा दोनों हाथ हस्त अंगुलि पुनर्वसु नखआश्लेषा३ग्रीवाज्येष्ठा दोनोंकानश्रवण मुखपुष्य दांतस्वातिहसना शतभिषक् नासिकामघा नेत्रमृगशिरा४ललाटचित्रा शिरभरणी औ नक्षत्र पुरु केकेश आर्द्रानक्षत्रहै। रूपकी इच्छावालोंको यहनक्षत्र पुरुषकरनाचाहिये५॥

चैत्रस्यबहुलपक्षेहंयष्टम्यांमूलसंयुतेचन्द्रे ॥
उपवासःकर्तव्योविष्णुंसंपूज्यधिष्ण्यंच ६ ॥

चैत्रमास के कृष्णपक्षकी अष्टमीको जब मूलनक्षत्रपर चन्द्रमा होय उस दिन विष्णुका औ नक्षत्रका पूजन करके इस उपवासका आरम्भकरै ६ ॥

दद्याद्व्रतेसमाप्तेघृतपूर्णंभाजनंसुवर्णयुतम् ॥
विप्रायकालविदुषेसरत्नवस्त्रंस्वशक्त्यावा ७ ॥

व्रतसमाप्त होनेपर सुवर्ण रत्न औ वस्त्रों सहित घृतसे भरापात्र ज्योतिषी ब्राह्मणको देवै। अथवा जितना अपना सामर्थ्य होय उतनाही देवै ७ ॥

अन्नैःक्षीरघृतोत्कटैःसहगुडैर्विप्रान्समभ्यर्चयेद् दद्यात्तेषुसुवर्णवस्त्ररजतंलावण्यमिच्छन्नरः ॥ पादर्क्षात्प्रभृतिक्रमादुपवसन्नंगर्क्षनामस्वपिकुर्यात्केशवपूजनंसुविधिनाधिष्ण्यस्यपूजांतथा ८ ॥

दूध घृतसे युत औ गुड करके युक्त भोजनोंसे ब्राह्मणों को तृप्त करै। औ लावण्य की इच्छावाला मनुष्य उन ब्राह्मणों को सुवर्ण वस्त्र औ चांदी दक्षिणादेवै। पैरके नक्षत्र मूलासे ले क्रमपूर्वक उपवास करताहुआ मनुष्य अंग नक्षत्रों के नामोंमें भी विधि पूर्वक नारायण का पूजन करै। औ नक्षत्र का भी पूजन करै ८ ॥

प्रलम्बबाहुःपृथुपीनवक्षाः क्षपाकरास्यःसितचारुदन्तः ॥
गजेन्द्रगामीकमलायताक्षः स्त्रीचित्तहारीस्मरतुल्यमूर्तिः ९ ॥

इस व्रत को करनेवाले मनुष्यके लम्बीभुजा विस्तीर्ण औ पुष्ट छाती चन्द्र के समान मुख श्वेत औ सुन्दर दांत हाथीके समान गति होतेहैं। वह मनुष्य स्त्रियों का चित्त हरने वाला औ कामदेव के समान रूपवान् होजाताहै ९ ॥

शरदमलपूर्णचन्द्रद्युतिसदृशमुखीसरोजदलनेत्रा ॥ रुचिरदशनासुकर्णाभ्रमरोदरसन्निभैःकेशैः १० पुंस्कोकिलसमवाणीताम्रोष्ठी पद्मपत्रकरचरणा ॥ स्तनभारानतमध्याप्रदक्षिणावर्तयानाभ्या ११ कदलीकाण्डनिभोरूःसुश्रोणीवरकुकुन्दरासुभगा ॥ सुश्लिष्टांऽगुलिपादाभवतिप्रमदामनुष्योवा १२ ॥

जो स्त्री इस व्रत को करै उसका मुख शरदऋतुके निर्मल पूर्ण चन्द्र के समान नेत्र कमल दलों के तुल्य सुन्दर दांत सुन्दर कान भ्रमरोदर के समान अतिकृष्ण केश १० पुंस्कोकिल के समान वाणी अति रक्तवर्ण ओष्ठ कमलदलसे कोमल हाथ औ पैर स्तनोंके भारसे झुकाहुआ मध्यभाग प्रदक्षिण आवर्तों करके युक्त नाभि ११ केले के स्तम्भसे ऊरू सुन्दर श्रोणी (कटि) सुन्दर कुकुन्दर (नितम्बस्थ कूप) होते हैं वह स्त्री सौभाग्यवती होती है। उसके पैर सुश्लिष्ट अंगुलियों करके युक्त होते हैं । इसव्रत के करनेसे स्त्री अथवा पुरुष ऐसे रूपवान् होते हैं १२ ॥

यावन्नक्षत्रमालाविचरतिगगनेभूषयन्तीहभासातावन्नक्षत्रभूतो विचरतिसहतैर्ब्रह्मणोऽह्नोऽवशेषम् ॥ कल्पादौचक्रवर्तीभवतिहिमतिमांस्तत्क्षयाच्चाऽपिभूयः संसारेजायमानोभवतिनरपतिर्ब्राह्मणोवाधनाढ्यः १३ मृगशीर्षाद्याःकेशवनारायणमाधवाःसगोविन्दाः ॥ विष्णुमधुसूदनाख्यौत्रिविक्रमोवामनश्चैव १४ श्रीधरनामातस्मात्सहृषीकेशश्चपद्मनाभश्च॥दामोदरइत्येतेमासाःप्रोक्तायथासंख्यम् १५

जबतक अपनी कांतिकरके भूषित करतीहुई नक्षत्रमाला आकाशमेंविचरती है तबतक इस व्रतको करनेवाला पुरुष नक्षत्ररूपहोकर नक्षत्रों के साथ ब्रह्माका दिन जितना शेषरहाहोय उतने काल पर्यन्त विचरताहै दूसरे कल्प के प्रारम्भ में बुद्धिमान् चक्रवर्ती राजाहोताहै । औ चक्रवर्ती होनेके अनन्तर इस संसारमें जन्मलेकर राजा अथवा धनाढ्य ब्राह्मणहोता है १३ मार्गशीर्ष आदि बारह महीनोंके केशव नारायण माधव गोविन्द विष्णु मधुसूदन त्रिविक्रम १४ वामन श्रीधर हृषीकेश पद्मनाभ दामोदर ये बारहनाम क्रमसे कहेहैं। अर्थात् प्रतिमासकी द्वादशीको इन नामोंसे नारायणका पूजनकरै १५ ॥

मासनामसमुपोषितोनरो द्वादशीषुविधिवत्प्रकीर्तयन् ॥
केशवंसमभिपूज्यतत्पदंयातियत्रनहिजन्मजंभयम् १६ ॥
इतिश्रीवराहमिहिरकृतौबृहत्संहितायांरूपसत्रन्नाम
षडुत्तरशततमोऽध्यायः १०६ ॥

द्वादशीकेदिन विधिपूर्वक उपवासकर भगवानका पूजनकरै औ उसमहीने का जो विष्णुनाम कहा है उसका कीर्तन करै तो ऐसेपदको प्राप्तहोताहै कि जहां फिर जन्मलेनेका भय नहींहोय । अर्थात् मुक्तहोजाय १६ ॥

श्रीवराहमिहिराचार्यकीबनाईबृहत्संहितामेंरूपसत्रनामएकसौ
छठांअध्यायसमाप्तहुआ १०६ ॥

एकसौसातवांअध्याय ॥

उपसंहार ॥

ज्योतिःशास्त्रसमुद्रंप्रमथ्यमतिमन्दराद्रिणाथमया ॥
लोकस्यालोककरःशास्त्रशशाङ्कःसमुत्क्षिप्तः १ ॥

ज्योतिःशास्त्ररूप समुद्रको बुद्धिरूप मन्दराचलसे मथनकरके हमने लोक में प्रकाश करनेवाला यहशास्त्ररूप चन्द्रमा निकालाहै १ ॥

पूर्वाचार्यग्रन्थानोत्सृष्टाःकुर्वतामयाशास्त्रम् ॥
तानवलोक्येदंचप्रयतध्वंकामतःसुजनाः २ ॥

इस शास्त्रको रचने के समय पूर्वाचार्यों के बनाये ग्रंथ हमने नहीं छोड़े अर्थात् प्राचीन ग्रंथोंका आशय लेकरही यह सुन्दर रीति से ग्रंथ रचाहै। इस लिये हे सज्जन पुरुषो प्राचीन ग्रंथोंको और इस ग्रंथको देखकर जो आपको प्रसन्नहोय उसको अपनी इच्छानुसार सेवनकरो २ ॥

अथवाकृशमपिसुजनःप्रथयतिदोषार्णवाद्गुणंदृष्ट्वा ॥
नीचस्तद्विपरीतःप्रकृतिरियंसाध्वऽसाधूनाम् ३ ॥

अथवा सज्जन पुरुष दोषोंके समुद्रसे छोटेसेभी गुणको निकालकर प्रसिद्ध करता है। औ नीच इससे विपरीत है अर्थात् गुणसमुद्र से छोटेसे भी दोषको बाहिर निकाल प्रसिद्ध करदेताहै। यही सज्जन औ दुर्जनोंका स्वभाव है ३ ॥

दुर्जनहुताशतप्तंकाव्यसुवर्णंविशुद्धिमायाति ॥
श्रावयितव्यंतस्माद्दुष्टजनस्यप्रयत्नेन ४ ॥

दुर्जनरूप अग्निमें तपाहुआ काव्यरूप सुवर्ण विशेषशुद्ध होजाताहै। इस लिये दुष्टमनुष्योंको अवश्यही काव्य श्रवण करना चाहिये ४ ॥

ग्रंथस्ययत्प्रचरतोस्यविनाशमेतिलेख्याद्बहुश्रुतमुखाधिगमक्रमेण॥
यद्वामयाकुकृतमल्पमिहाऽकृतंवा कार्यंतदत्रविदुषापरिहृत्यरागम्५॥

इस ग्रंथका बहुत प्रचार होनेसे लेखक दोष करके जो अंग नाशको प्राप्त होजाय उसको अथवा हमने जो कुछ अन्यथा किया होय थोड़ा किया होय अथवा नहीं कियाहोय उसको विद्वान्पुरुष मात्सर्य छोड़कर बहुश्रुत पण्डितों के मुख से जान क्रमसे पूराकरलेवैं ५ ॥

दिनकरगुरुमुनिचरणप्रणिपातकृतप्रसादमतिनेदम् ॥
शास्त्रमुपसंगृहीतंनमोऽस्तुपूर्वप्रणेतृभ्यः ६ ॥

इतिश्रीवराहमिहिरकृतौबृहत्संहितायामुपसंहारोनाम सप्तोत्तरशततमोऽध्यायः १०७ ॥

...गुरु ओ वसिष्ठ आदि मुनियों के चरणों में प्रणाम करने से हुई है निर्मल बुद्धि जिसकी ऐसे मैंने यह शास्त्र संक्षेपसे रचा है। पूर्वाचार्यों को नमस्कार होय ९ ॥

श्रीवराहमिहिराचार्यकीबनाईवृहत्संहितामेंउपसंहारनाम एकसौसातवांअध्यायसमाप्तहुआ १०७ ॥

एकसौआठवांअध्याय ॥

अनुक्रमणी ॥

शास्त्रोपनयः पूर्वं सांवत्सरसूत्रमर्कचारश्च॥शशिराहुभौमबुधगुरुसितमन्दशिखिग्रहाणांच १ चारश्चागस्त्यमुनेःसप्तर्षीणांचकूर्मयोगश्च॥ नक्षत्राणांव्यूहोग्रहभक्तिर्ग्रहविमर्दश्च २ ग्रहशशियोगःसम्यग्ग्रहवर्षफलंग्रहाणांच ॥ शृङ्गाटसंस्थितानांमेघानांगर्भधारणंचैव ३ धारणवर्षणरोहिणिवाय्वव्याषाढभाद्रपदयोगाः॥ क्षणवृष्टिःकुसुमलतासंध्याचिह्नंदिशांदाहः ४ भूकम्पोल्कापरिवेषलक्षणंशक्रचापखपुरंच ॥ प्रतिसूर्योनिर्घातःसस्यद्रव्याऽर्घकाण्डंच ५ इन्द्रध्वजनीराजनखंजनकोत्पातबर्हिचित्रंच ॥ पुष्याऽभिषेकपट्टप्रमाणमसिलक्षणंवास्तु ६ उदकार्गलमारामिकममरालयलक्षणंकुलिशलेपः॥प्रतिमावनप्रवेशः सुरभवनानांप्रतिष्ठाच ७ चिह्नंगवामथशुनांकुक्कुटकूर्माऽजपुरुषचिह्नंच ॥ पञ्चमनुष्यविभागःस्त्रीचिह्नंवस्त्रविच्छेदः ८ चामरदण्डपरीक्षास्त्रीस्तोत्रंचापिसुभगकरणंच ॥ कान्दर्पिकानुलेपनपुंस्त्रीकाध्यायशयनविधिः ९ वज्रपरीक्षामौक्तिकलक्षणमथपद्मरागमरकतयोः ॥ दीपस्यलक्षणंदन्तधावनंशाकुनंमिश्रम् १० अन्तरचक्रंविरुतंश्वचेष्टितंविरुतमथशिवायाश्च ॥ चरितंमृगाऽश्वकरिणांवायसविद्योत्तरंचततः ११ पाकोनक्षत्रगुणास्तिथिकरणगुणाःसधिष्ण्यजन्मगुणाः ॥ गोचरकंचग्रहाणांकथितोनक्षत्रपुरुषश्च १२ शतमिदमध्यायानामनुपरिपाटिक्रमादनुक्रान्तम् ॥ अत्रश्लोकसहस्राण्यात्वार्यन्यूनचत्वारि १३ ॥

इतिश्रीवराहमिहिराचार्यकृतौवृहत्संहितायामनुक्रमणी नामाऽष्टोत्तरशततमोऽध्यायः १०८ ॥

समाप्तेयंश्रीवराहमिहिराचार्यप्रणीतावृहत्संहिता ॥

वृहत्संहिता के अध्यायों का अनुक्रम कहते हैं । शास्त्रोपनयन सांव...

सूत्र अर्कचार चन्द्र राहु बुध बृहस्पति शुक्र शनि औ केतुग्रहों के चार १ अगस्त्यचार सप्तर्षिचार कूर्मविभाग नक्षत्रव्यूह ग्रहभक्ति ग्रहविमर्द २ शशिग्रहयोग ग्रहवर्षफल ग्रहशृङ्गाटक मेघगर्भधारण ३ धारण प्रवर्षण रोहिणी स्वाति आषाढी औ भाद्रपदाकेयोग सद्योवृष्टि कुसुमलता सन्ध्यालक्षण दिग्दाहलक्षण ४ भूकम्पलक्षण उल्कालक्षण परिवेषलक्षण शक्रचापलक्षण गन्धर्वनगरलक्षण प्रतिसूर्यलक्षण निर्घातलक्षण सस्यजातक द्रव्यनिश्चय अर्घकाण्ड ५ इन्द्रध्वजनीराजन खंजनलक्षण उत्पातलक्षण मयूरचित्र पुष्याभिषेक पट्टलक्षण खड्गलक्षण वास्तु ६ उदकार्गल वृक्षायुर्वेद प्रासादलक्षण वज्रलेप, प्रतिमालक्षण वनसंप्रवेश देवालयप्रतिष्ठा ७ गोलक्षण श्वानलक्षण कुक्कुटलक्षण कूर्मलक्षण अजलक्षण पुरुषलक्षण पंचमहापुरुषविभाग स्त्रीलक्षण वस्त्रच्छेद लक्षण ८ चामरदण्ड परीक्षा स्त्री प्रशंसा सौभाग्यकरण कांदर्पिकअनुलेपन पुंस्त्रीसमायोग शय्यालक्षण ९ वज्रपरीक्षा मुक्तालक्षण पद्मरागलक्षण मरकत लक्षण दीपलक्षण दन्तधावनलक्षण शाकुनमिश्राध्याय १० अन्तरचक्र विरुत श्वचेष्टित शिवारुत मृगचेष्टित अश्वचेष्टित हस्तिचेष्टित वायसविद्या शाकुनोत्तर ११ पाकाध्यायनक्षत्रगुण तिथिकरणगुण नक्षत्रजन्मगुण ग्रहगोचर नक्षत्र पुरुष १२ ये सौअध्यायइसग्रंथमें अनुक्रम से कहेहैं। इसग्रंथमें कुछन्यूनचार हजारश्लोकहैं १३ इसअनुक्रमणीमें सौ अध्याय कहे हैं और ग्रंथमें एकसौ आठअध्याय देखतेहैं इसकायही कारणहै कि वातचक्र रजोलक्षण अंगविद्या पिटकलक्षण अश्वलक्षण गजलक्षण गवेंगित विवाहनिर्णय ये आठअध्याय अनुक्रमणी में नहीं गिने हैं॥

श्रीवराहमिहिराचार्यकीबनाईबृहत्संहितामेंअनुक्रमणीनाम
एकसौआठवांअध्यायसमाप्तहुआ १०८॥

दोहा। भाषामाहिं विचारिकै तजिमनको परमाद॥
रची रुचिर यह संहिता बुध दुर्गापरसाद १
बनीरहै यह भूमि पर जबलौं सूरज चन्द॥
सज्जन पुरुष सुखीरहैं काटि दुःखके फन्द २
सुखीहोयँ शिवभक्तसब भूतिविभूषितभाल॥
जिन के दर्शन पायके कटैं पाप के जाल ३
सदा सदाशिवके तनय देवन के सिरताज॥
विघनहरैं सबजगतके अतिकृपालुगणराज ४

हसनापुरग्रामवासिपण्डितवरश्रीव्रजलालदैवज्ञसूनुश्रीपण्डितदुर्गाप्रसाद
काकियाबृहत्संहिताकाभाषाअनुवाद समाप्त हुआ॥

इसका अर्थ किया है प्रारम्भकरावें इसमें उक्त पण्डितजनों ने प्रथम मूल पदच्छेद, अन्वयकरके भाषामें इसभांतिसे अर्थ कियाहै कि जिसमें बालकों को सहजही में ज्ञानहोकर पूर्णबोधहोजावे इसभांति संज्ञाप्रक्रिया, स्वरसन्धि, प्रकृतिभाव, व्यञ्जनसन्धि, विसर्गसन्धि, स्वरान्तपुँल्लिंग, स्वरान्त स्त्रीलिंग, स्वरान्तनपुंसकलिंग, हसान्तपुँल्लिंग, हसान्तस्त्रीलिंग, हसान्त नपुंसकलिंग, युष्मद् अस्मद् शब्द, अव्यय, स्त्रीप्रत्यय, कारक, समास और तद्धितको पढ़ाकर तिसपीछे सिद्धान्तचन्द्रिका और रघुवंश और कुमारसम्भवादि काव्यों को पढ़ावें इसभांतिके पढ़ाने से बहुतशीघ्र विद्वान् होसक्ते हैं यही सोचकर श्रीभार्गववंशावतंस मुंशी नवलकिशोर (सी, आई, ई) ने बहुतसा द्रव्यव्ययकर उक्त पण्डितों से टीका रचाया है आशाहै कि जो विद्यार्थी इसपुस्तकको क्रमसे पढ़ेंगे वे शीघ्रहीपूर्ण बोधहोकर विद्वान् होजावेंगे अन्यथा पढ़ाने से बहुतसमय लगकर बोध नहीं होता है--क्योंकि बहुधा यही पण्डितों की रीतिहै कि वे स्वर व्यञ्जन नाममात्रको बालकों को पढ़ाकर व्याकरण का प्रारम्भकरादेतेथे और बालकोंको तोतेकी तरहसे कण्ठही करातेथे जब उन बालकोंको अच्छीभांति अक्षरके पहिचानका ज्ञान नहीं है तो वे कैसे पूर्ण विद्वान् रट २ के पढ़ने से होसक्तेथे–आशा है कि जो लोग इसपुस्तक के क्रम से व्याकरणका अध्ययन करेंगे वे थोड़ेही समयमें स्वल्प परिश्रमसे विद्वान् होजावेंगे— जब व्याकरणमें विद्वान् होजावेंगे तो उनको ज्योतिष वैद्यक और अठारहोपुराण काव्यादि में कुछभी परिश्रम न करनापड़ेगा थोड़ेहीपरिश्रमकरनेमें महान् विद्वान् होजावेंगे–

कैनिंगकालेजके संस्कृताध्यापक श्रीपण्डित गंगाधरशास्त्रीने भी इस पुस्तक को अवलोकनकर सार्टीफिकटके तौरपर अपनी सम्मति प्रकटकी है कि निश्चय यह पुस्तक उत्तम और बालकों को हितैषी है ॥

मिताक्षरा सटीकका विज्ञापन ॥

संसार में मर्यादा स्थितरखने के अभिप्राय और सर्वसाधारण के उपकार दृष्टि से भगवान् याज्ञवल्क्यने अनेकप्राचीन आचार्यों और महर्षियोंके मतलेकर मिताक्षरानामक धर्मशास्त्र "आचार" "व्यवहार" और "प्रायश्चित्त" नामक तीनभागों में निर्माण कियाथा । यह "याज्ञवल्क्य स्मृति" भारतवासी मात्र चतुर्वर्णों का मुख्य धर्मशास्त्र है और इसीके अनुसार यहांके निवासियोंके धर्मसम्बन्धी समस्तकार्य होतेचलेआते हैं ॥

आचाराध्याय नामक प्रथमखण्ड में गर्भाधानसे लेकर मरणपर्यन्तके

समस्त संस्कार चतुर्वर्णों और विविध जातियोंकी उत्पत्ति ब्राह्मण आदि चतुर्वर्णों और ब्रह्मचर्यादि चतुराश्रमों के धर्माचरण, साधारण शिक्षा, आठप्रकार के विवाहों के लक्षण, भक्ष्याभक्ष्य पदार्थोंका विवेक, दान लेने देनेकी विधि, सर्वप्रकार के श्राद्धोंका निर्णय, नवग्रहों की शांति राजाओं के धर्म आचारादि अनेक विषय विस्तारपूर्वक वर्णन किये गये हैं ॥

"व्यवहारकाण्ड" में न्यायसभा निरूपण, सबप्रकारके दीवानी और फौजदारी मुक़द्दमों के निर्णय करने की विधि; भूमिसम्बन्धी झगड़ों का विस्तार, ऋणलेने, देने, गिरवीरखने और ब्याज लगानेकी विधि, धरोहर का विवाद, साक्षियों के सत्यासत्यका विचार और दण्ड, दस्तावेजोंका विचार, खरे, खोंटे और कमतौल वस्तुओंकाविचार, विषदेनेवाले का विचार, नातेदारीकावृत्तान्त, हिस्सावांटकी विधि, संस्कार विहीन भाई-बहिनों के संस्कारके अधिकार और और विधि, २१ प्रकारके पुत्रोंका वर्णन, वारिस होनेका विचार, दत्तकलेनेकी विधि, स्त्रीधन और कन्याधनका निर्णय सी- माके झगड़ोंका निपटारा, पशु व्यतिक्रम विचार, परधन, परस्त्रीहरण आदि का विचार, देय अदेय दानोंका विचार, वस्तु क्रय विक्रय विचार, सेवाधर्म विचार, राजसम्बन्धी गूढ़संवित समय संकेतों के व्यतिक्रमका विचार वेतन, मजूरी, किराया आदि विषयक झगड़ोंका विचार, जुवारी आदि दुराचारियोंका विचार, गाली-गलौज तथा मार-पीटका विचार, चोर, डाकू, लुटेरे आदिकों का विचार और नाना अपराधों और कुकर्मों तथा राजा- श्रय नाना व्यवहारोंका अति विस्तार पूर्वक वर्णन है ॥

"प्रायश्चित्तकाण्ड,, में जलदानप्रकार व अशौच सूतक दिनावधि कथन व त्र्यहाशौच व्यवस्था जगदुत्पत्ति प्रपंच विस्तार व बुद्ध्यादि समवाय व प्रायश्चित्त करणदोष व नरकादिनामस्वरूप व अतिपातक और पातकादि लक्षणभेद व सकाम सुरापानादि महापातक प्रायश्चित्तकथन व स्वर्णा- पहारादिप्रायश्चित्त व अवकृष्टवध प्रायश्चित्त कथन और प्रत्येक वार्तों के स्वरूप व नियमादि वर्णनकियेगये हैं परन्तु यहविस्तृतग्रन्थ संस्कृतमें होनेके कारण सर्वसाधारणके देखने में न आताथा इसकारण भारतवासी पुरुषोंके उपकारार्थ यन्त्रालयाध्यक्ष श्रीमान् मुन्शीनवलकिशोरने बहुतसाधन पा- रितोषिककी रीतिपर देकर आगरा निवासी मर्यादाप्रिय पण्डित दुर्गाप्रसाद शुक्लसे सरलसाधारण भाषामें अनुवादकराय स्वयन्त्रालयमें मुद्रितकराया आशा है कि जो कोई मर्य्यादाप्रिय पुरुष इसको दृष्टिगोचर करेंगे वह प्रसन्नहोकर इसको ग्रहण करेंगे और यन्त्रालयाध्यक्षको धन्यवाददेंगे--

---